GURU NANAK DEV JI KI JANAM SAKHI

(PUNJABI)

(HINDI ANUVAD SAHIT)

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि॥

ततकरा

१ओ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

अथ

॥ जन्म साखी श्री गुरु नानक देव जी की प्रारंभः ॥

श्री वाहिगुरू जी सहायता करें।

संवत् १५६७ विक्रमी वैशाख शुक्लपक्ष की पंचमी को पैड़े मोखे सुलतान पुर के क्षत्री ने पुस्तक लिखी।

एक दिन श्री गुरु अंगद देव जी खडूर नगर में बैठे थे तथा श्री गुरु नानक जी महाराज के प्रेम का वियोग होने से गुरु महाराज के ध्यान में निमग्न थे। उस समय श्री गुरु अंगद देव जी के हृदय में विचार हुआ कि मेरे परम पूज्य श्री गुरु नानक देव जी महाराज पूर्ण ब्रहम रूप पुरुष थे। गुरु जी में तथा परमेश्वर में भेद नहीं है। अब मुझे किसी ऐसे सिख की आवश्यकता है जो पूज्य गुरु जी की कथा सुनाए।
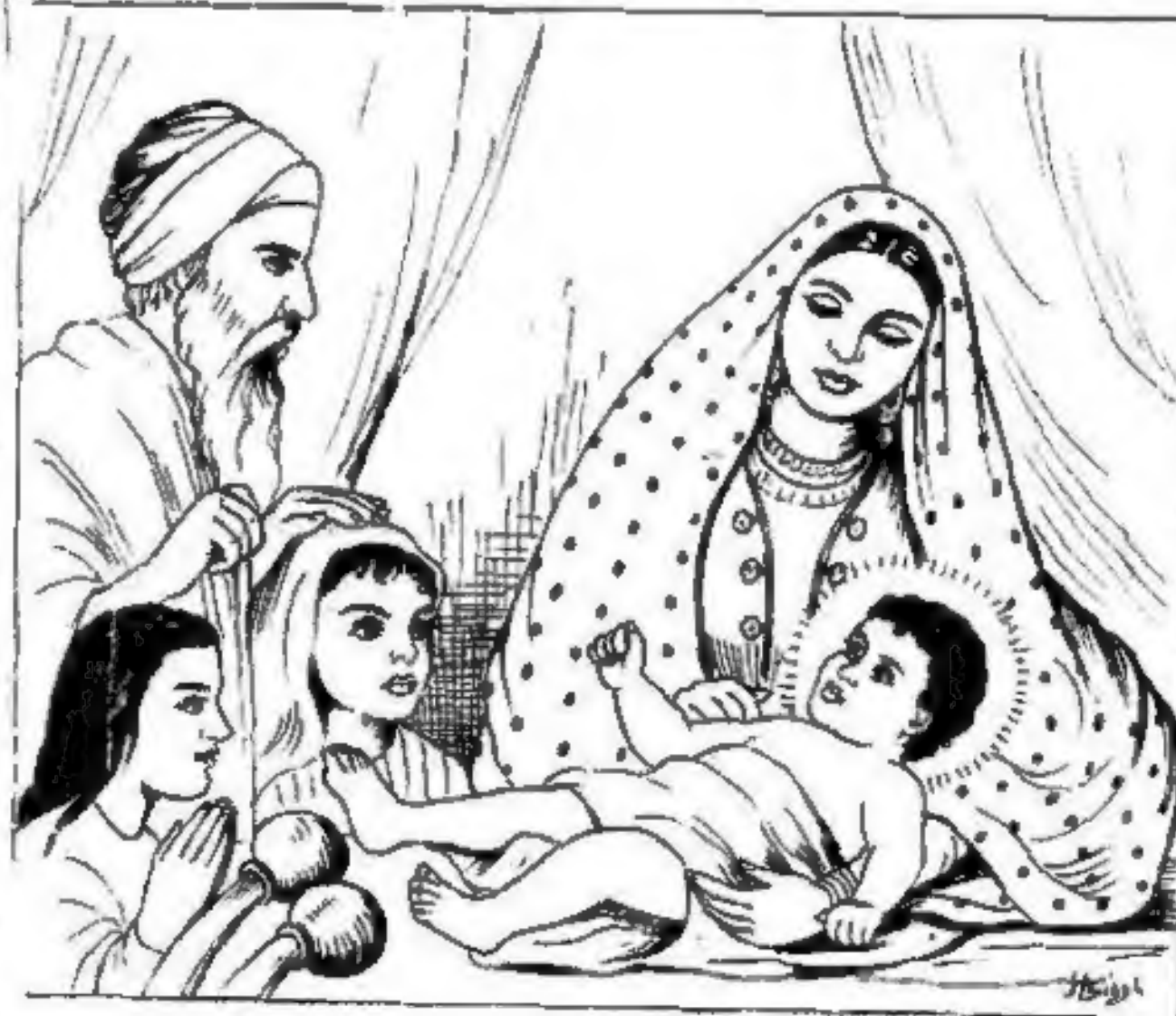
उस समय भाई बुढा जी जो गुरु अंगद देव जी के निकट ही बिराजमान थे। कहने लगे, हे गुरुदेव! इस प्रकार का सिख तो बाला संधू है जो तलवंडी राय भोय में निवास करता है और एक भाई मर्दाना

है यह दोनों गुरु नानक जी के साथ रहा करते थे। इन्हों ने गुरु लीला देखी है। आप उनको निमंत्रण दें। वह आप को गुरु कथा सम्पूर्ण सुनायेंगे।

यह सुन कर गुरु अंगद देव जी ने बाले का ध्यान किया। उस समय भाई बाला अपने नगर तलवंडी में बैठा था तथा गुरु नानक देव जी की कथा सिखों को सुना रहा था। अचानक बाले ने उन श्रोताओं से पूछा कि हे गुरु जी के प्यारे सिखो! गुरु जी तो बैकुंठ लोक को पधार गये हैं तो अपनी गद्दी पर किस को नियत कर गये हैं? तब एक प्रेमी ने कहा कि मैंने सुना है कि गुरु जी अपने स्थान पर एक अंगद नाम के त्रिहण क्षत्री को जो फेरु जी का सुपुत्र हैं नियत कर गए हैं। जब भाई बाला ने यह सुना तो हृदय में गुरु जी के उत्तराधिकारी गुरु अंगद जी के दर्शनों की लालसा उत्पन्न हुई तथा भाई बाला खडूर की ओर रवाना हुआ तथा श्रद्धा पूर्वक भेंट लेकर गुरु दर्शनों को चल दिया।

गुरु अंगद देव जी एकांत वास कर रहे थे। बाला पूछता हुआ गुरु जी के निकट उपस्थित हुआ। गुरु अंगद देव जी ध्यान अवस्था में थे। गुरु जी के चरणों में भाई बाले ने नमस्कार किया। गुरु जी ने बाले को उचित स्थान पर बैठने का संकेत किया। फिर गुरु जी बाले के साथ वार्तालाप करने लगे। गुरु जी बोले, हे सज्जन! आप कहां से आ रहे हो और अपने आने का कारण तथा अपना पूर्ण परिचय दो।

बाला कहने लगा- हे गुरु देव! मैं जाति का जाट हूं मेरा गोत्र सन्धू है तथा राय भोय तलवंडी का रहने वाला हूं। मेरा नाम बाला है तथा आप के दर्शनों को उपस्थित हुवा हूं। उत्तर में गुरु जी ने कहा कि आप का गुरु कौन है? नेत्रों में प्रेम आंसू भर कर बाले ने कहा कि मेरे पूज्य गुरु देव श्री कालू बेदी जी के सुपुत्र श्रद्धास्पद गुरु नानक देव जी महाराज हैं। अंगद जी ने प्रश्न किया हे बाला! आपने गुरु नानक देव जी का

दर्शन तो किया ही होगा! तब बाले ने कहा—हे महाराज! गुरु नानक देव जी मुझ से तीन वर्ष आयु में बड़े थे। मैं गुरु जी के ही पवित्र चरणों में रहा हूं। देशांतरों का भ्रमण भी मैंने गुरुदेव के साथ ही किया है। गुरु जी ने अनेक प्राणियों का उद्वार किया है। गुरु जी के साथ रहते हुये भी हम उनको पूर्णतया पहिचान नहीं सके। केवल देश देशांतरों का भ्रमण ही हमारा ध्येय रहा। यह सुन कर गुरु अंगद जी के हृदय में वैराग्य छूट गया तथा नेत्रों से जलधारा बहने लगी। कुछ काल निस्तब्धता रहने के पश्चात् रात्रि हो गई। भाई बाला आज्ञा लेकर निवास करने लगा।

दूसरे दिन गुरु जी ने भाई बाले को बुला कर अपने कंठ से लगा कर प्यार सहित बैठा कर पूछा—हे बाला! आप को यह तो ध्यान होगा कि गुरु नानक देव जी का जन्म किस दिन हुआ था। बाले ने हाथ जोड़ कर कहा—हे महाराज! मुझे अच्छी तरह स्मरण नहीं अपितु लोग कहते थे कि श्री गुरु नानक देव जी का जन्म कार्तिक शुकल पक्ष की पूर्णामाशी के दिन हुआ था मैंने गुरु जी की जन्म पत्रिका श्री कालू जी (गुरु नानक देव जी के पिता) से देखी थी। जो पंडित हरदयाल ने लिखी थी। हरदयाल ने फलादेश कहते हुए कहा था कि यह बालक जो श्री कालू जी के घर उत्पन्न हुआ है इसके ग्रह ऐसे हैं जिसे मैं अवतार कह सकता हूं, अर्थात यह बालक (गुरु नानक) ईश्वर अवतार है। यह सुन कर गुरु अंगद जी ने कहा—हे बाला! यह जन्म पत्री क्या हमें प्राप्त हो सकती है? तब बाले ने कहा कि यदि उस जन्म पत्री की देख भाल की जाय तो आशा है किमिल ही जायेगी। तब गुरु जी ने कहा-हे बाला! आप तो उसी नगर के निवासी हैं, सो इस कार्य को आप ही कर सकते हो। बाले ने कहा—हे गुरु देव! कालू बेदी तो स्वर्ग सिधार चुके हैं, उसका भाई जिसका नाम लालू जी है, उस से पता चल सकता है। तब गुरु जी ने कहा—कि यह काम आप ही कर सकते हो। बाले ने कहा—कि

एक पुरुष आप का यदि मेरे साथ हो तो हम दोनों लालू जी से प्रार्थना करें कि हे बेदी जी! आप की तो अब वृद्धावस्था है तथा गुरु नानक देव जी की आप पर अत्यन्त कृपा रही है। इस समय हम ने गुरु जी के उत्तराधिकारी प्राप्त कर लिये हैं। सो कृपया गुरु जी की जन्म पत्रिका हमें दे दो। गुरु जी के उत्तराधिकारी का शुभ नाम श्री गुरु अंगद देव जी है तथा खडूर में बिराज रहे हैं। श्री गुरु नानक तथा श्री गुरु अंगद में कोई अन्तर नहीं है।

हे लालू जी! प्रेमी जनता के कहने से गुरु अंगद जी ने पत्री लाने का कार्य मुझे सौंपा है। कृपया! गुरु नानक देव जी की जन्म पत्रिका आप मुझे दें।

इस प्रकार मैं लालू जी से आग्रह करूंगा। आशा है कि इस सेवा कार्य में मुझे सफलता प्राप्त होगी।

यह सुन कर अंगद देव जी ने प्रसन्न होकर कहा कि आप जिसको अपने साथ ले जाना चाहें ले जायें। तब बाला ने कहा कि जिसे आप उचित समझें मेरे साथ भेज दें। तब गुरु जी ने एक जाट जिसका नाम लाले पुनू था बुलाया और कहा कि भाई आप इस बाला जी के साथ जायें तथा तलवंडी से श्री गुरु नानक देव जी की जन्म पत्रिका ले आयें।

यह सुनकर लाले पुनू ने कहा कि हमारे अहोभाग्य हैं जो हम श्री गुरु नानक देव जी महाराज की जन्म पत्री का दर्शन करेंगे। यह हमें गुरु जी का ही दर्शन होगा। यह कह कर बाला और लाला पुनू तलवंडी में आये और महिता लालू के पास आकर प्रार्थना की कि आप कृपया गुरु जी की जन्म पत्रिका हमें दे दीजिये क्योंकि पत्रिका श्री गुरु अंगद देव जी ने मांगी है। हम ने सतिगुरू नानक देव जी के उत्तराधिकारी प्रयत्न से पाये हैं। यह सुन लालू ने कहा कि गुरु नानक जी की जन्म पत्रिका मेरे पास नहीं है। तब बाले ने कहा कि आप कालू जी के भाई

हैं पत्रिका को घर में देखो क्योंकि कालू जी और माता जी तो बैकुंठ को सिधार गये हैं। अब तो केवल आप ही इस घर में हैं। तब लालू जी ने कहा-हे बाला! इस नानक देव जी का एक तू भी मित्र हैं। गुरु नानक की गद्दी पर तो बाबा सिरी चंद जी हैं और तुम तो किसी और का ही नाम ले रहे हो जो अंगद कहते हो। बाला कहने लगा कि मैं सत्य कहता हूं कि गुरु नानक जी ने स्वयं अपने कर कमलों से पांच पैसे और नारियल रख कर श्री अंगद देव जी को अपना उत्तराधिकारी नियत किया था इस लिये गुरु नानक जी के स्थान पर श्री अंगद जी ही एक गुरु हैं। बाकी श्री चंद जी की पूजा केवल प्रथम गुरु पुत्र होने के नाते ही होगी।

तब लालू जी ने कहा कि भाई कालू और माता जी तो स्वर्ग सिधार चुके हैं अब मैं घर में कहीं देखूंगा। यह कह कर लालू जी घर में पत्री को खोजने लगे। अनेकों कागज देखे। पांच दिन के पश्चात् पत्रिका मिल गई, जो भाई को दे दी गई। लाले पुनू ने कहा—अब आप भी मेरे साथ ही गुरु अंगद के पास चलें। बाले ने स्वीकार किया। जब लाला पुनू और बाला चलने लगे तब लालू जी ने कहा कि आप तो पत्री लेकर चल पड़े हो। मैं चाहता हूं कि कुछ भेंट गुरु जी के लिए मेरी ओर से लेते जायें। तब बाला जी ने कहा कि जो कुछ आप देना चाहें दें। तब लालू जी ने भेंट करने के लिये पांच पैसे और नारियल दिया और कहा कि बस यह भेंट मेरी ओर से गुरु चरणों में अर्पण करके श्रद्धा से नमस्कार करना तथा प्रार्थना करनी कि यदि श्री चन्द जी कुछ कहें तो धैर्य से काम लेना। उत्तर में बाला जी ने कहा कि आप चिन्ता न करें। श्री गुरु अंगद देव परम शांत स्वरूप हैं।

यह कह कर बाला और लाला पुनू खडूर में वापस आ गये तथा श्री गुरु के आगे जन्म पत्री रखी। लालू जी की दी हुई भेंट रख कर

नमस्कार किया। इस पर गुरु जी ने प्रसन्न होकर बाले और लाला पुनू को आर्शीवाद दिया और कहा कि तुम्हारे प्रयत्न से आज हमने श्री गुरु नानक देव जी का दर्शन प्राप्त किया है। नानक देव जी की जन्म पत्रिका को नेत्रों से लगाया और सिर पर धर कर सन्मान किया। जब पत्रिका देखी तो उसके अक्षर हिंदी में देखकर कहा कि कोई ऐसा पुरुष हो जो दोनों में लिख सकता हो। यह सुन कर एक पुरुष जिसका नाम महिमा खहिरा जाट था जिस के घर में गुरु अंगद देव जी निवास करते थे वह कहने लगा कि सुलतानपुर में पैड़ा मोखा क्षत्री है जो दोनों प्रकार के अक्षर लिख पढ़ सकता है। तब गुरु जी ने कहा कि उस को जरूर यहां लाना चाहिये तब महिमा गुरु जी की आज्ञा से सुलतानपुर गया और पैड़े मोखे को लेकर आ गया। उसने गुरु चरणों में प्रणाम किया। गुरु जी का आर्शीवाद लेकर उसने गुरु नानक जी की जन्म पत्री देखी। उसने उस प्रकार पढ़ कर सुना दी जैसे कंठ होती है। गुरु अंगद देव जी बहुत प्रसन्न हुऐ फिर आज्ञा दी कि यह जन्म पत्रिका आप गुरमुखी अक्षरों में कर दें। तब भाई पैड़े ने कहा कि आप कागज कलम दवात वगैरा दें तो दास इसे गुरमुखी में करने को तैयार है। गुरु जी ने कागज आदिक मंगवा दिये, तो वह जन्म पत्रिका लिखने लगा। बाले संधू का कहना है कि गुरमुखी अक्षर श्री गुरु नानक देव जी ने बनाये तथा श्री गुरु अंगद देव जी ने इन का प्रचार किया। यह गुरु जी का एक बहुत भारी संसार पर उपकार है क्योंकि संस्कृत भाषा का समझना साधारण जनता के लिए बहुत कठिन था तथा गुरमुखी भाषा सुगम है। श्री गुरु नानक देव जी जानते थे कि कलियुग के जीव अलप बुद्धि होने से संस्कृत नहीं पढ़ सकेंगे। उन्हों ने गुरमुखी अक्षरों की रचना करके संसार का कल्याण किया है। गुरु जी ने गुरमुख मार्ग निर्माण करके संसारी जीवों के कल्याण की गाड़ी उस पर चलाई। वेमोक्ष नर नारी इस मार्ग

को अपना कर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। गुरमुखी भाषा सुगम कल्याणकारी मार्ग है संदेह नहीं। धन्य गुरुदेव॥

१ओं सतिगुर प्रसादि॥

॥ साखी श्री गुरु नानक देव जी के अवतार धारने की॥

श्री गुरु नानक देव जी की जन्म पत्रिका लिखने की विधि गुरु अंगद जी के दीवान में भाई बुढा जी से लेकर बहुत से श्रद्धालू सिख आदि उपस्थित थे। तब भाई पैड़ा मोखा लिखने लगा।

विक्रमी संवत् १५२६ कार्तिक मास की पूर्णामाशी के दिन श्री गुरु नानक देव जी महाराज का जन्म हुआ। उस समय आधी रात्रि से एक घड़ी ऊपर थी। नक्षत्र अनुराधा था। मुहूर्त अत्यन्त शुभ था। राय भोय की तलवंडी में माता तृप्ता के गर्भ से श्री कालू बेदी के गृह में गुरु प्रकट हुये। कालू जी ने पुत्र ज़न्म सुन कर अपने घर प्रोहित जिसका नाम पंडित हरदयाल था उसके घर जाकर नमस्कार करके कहा कि पंडित जी आप की कृपा से मेरे गृह में पुत्र उत्पन्न हुआ है। आप मेरे गृह में चल कर बालक की जन्म पत्रिका लिखें। पंडित जी ने कहा कि मैं पूजा पाट करके आपके घर में आता हूं। आप चलें। कालू जी अपने घर में पधारे। दो घंटे दिन चढ़ने के पश्चात् पंडित हरदयाल जी कालू के घर में पधारे। कालू जी ने पंडित जी का उचित सत्कार किया और सुन्दर आसन पर बैठाया। पंडित जी ने कहा-हे कालू! आप कागज़ केसर वगैरा ले आओ तब कालू जी कागज़ केसर चावल गुड़ आदिक थाली में घर ले गये।

पंडित जी ने कहा हे कालू! आप यह बताओ कि बालक ने जन्म समय क्या कुछ शब्द किया तथा समय कौन था। कालू जी कहने लगे कि उस समय दो पहर रात्रि व्यतीत हुए अभी एक घड़ी व्यतीत हुई थी तथा लड़के ने क्या शब्द किया यह मुझे स्मरण नहीं है। पंडित ने

कहा—दाई को बुलाओ। जब दौलतां नाम की दाई आई तो उससे पंडित जी ने पूछा कि हे दाई! लड़का जन्म समय किस शब्द द्वारा जन्मा था? तब दाई ने कहा, पंडित जी! मेरे हाथों अनेक बालक पैदा हुये हैं परन्तु यह बालक तो अलौकिक ही है इस बालक ने जन्म लेते समय इस प्रकार किया है जैसे कोई बुद्धिमान पुरुष प्रथम मिलाप पर हंस कर मिलता है, मुझे इस बालक के जन्म की हैरानी हो रही है। पंडित जी ने कहा—हे कालू जी! यह बालक सताईसवें नक्षत्र मे उत्पन्न हुआ है यदि रात्रि के प्रथम दो पहर में जन्मा है तो यह धनी होगा यदि दो पहर पश्चात् जन्म लिया है तो वह रात्रि एक महान् रात्रि है। इस के सिर छत्र झूलेगा। मुझे अब यह ध्यान नहीं है कि वह कौन सा छत्र होगा जो इस बालक के सिर पर होगा मैं चाहता हूं कि आप के इस बालक को मैं एक बार देख लूं तब कालू जी ने बालक को पंडित जी के सामने लाने के लिये मांगा। तृप्ता जी ने कहा कि शीत अधिक है। इस लिये बालक को बाहर ले जाना उचित नहीं।

जब पंडित जी ने बालक का कष्ट अपने ऊपर लिया तब माता तृप्ता जी मान गये। अतः वस्त्र के भीतर बालक को अच्छी प्रकार लपेट कर कालू जी बाहर लेकर आ गये। पंडित त्रिकालज्ञ था। उस ने बालक देख कर सन्मान के लिये उठ कर बालक को दंडवत प्रणाम किया तथा भली प्रकार देख कर कहा कि अब आप इसे भीतर ले जायें। लड़के को कालू ने भीतर जा दिया तथा स्वयं पंडित जी से लड़के के नामकरण के लिये अनुरोध किया तथा ग्रहों की दशा का फल सुनना चाहा। पंडित जी ने कहा हे कालू जी! मैं इस लड़के के बारे जल्दी नहीं कह सकता कुछ काल सोच कर उत्तर दूंगा। जब त्रियोदश दिन व्यतीत होंगे तब इस लड़के का नाम रखूंगा और इसे चोला भी पहनाऊंगा। यह कह कर पंडित जी चले गये और तेरह दिन इसी सोच में पड़े रहे।

जन्म साखी श्री गुरु नानक देव जी (भाई बाले वाला)

साखी गुरु जी के अवतार की (पन्ना १५)

साखी खरा सौदा (पन्ना ५४)
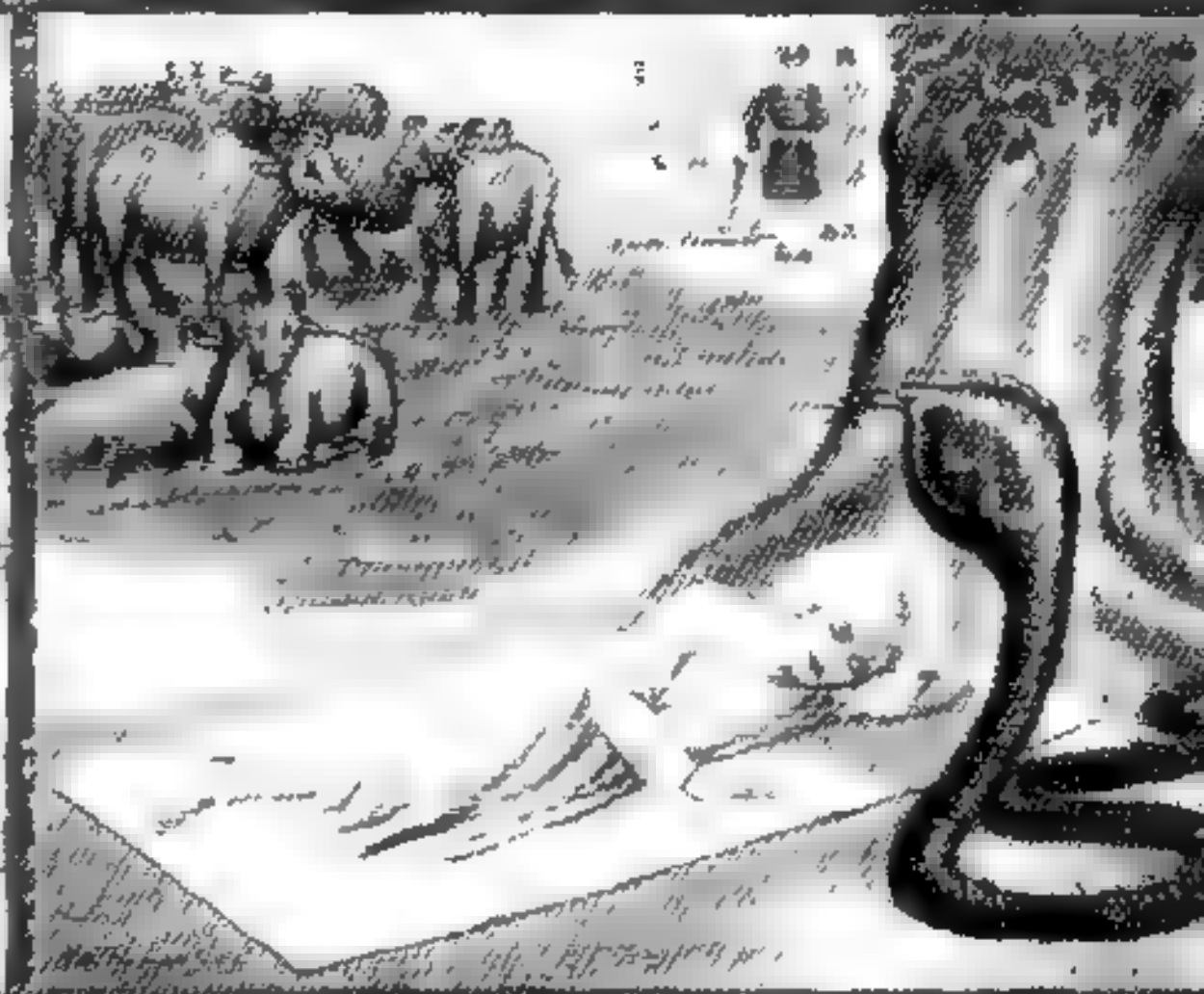
साखी पांधे के साथ (पन्ना २०)

साखी सर्प की (पन्ना ४६)

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, अमृतसर

दिन जाते देर नहीं लगती। तेरह दिनों के पश्चात् पंडित जी कालू बेदी के घर आये। शुभ लग्न देख कर बालक को चोला पहना कर उसका "नाम नानक निरंकारी" रखा। इस पर कालू जी ने आपती की और कहा- हे पंडित जी, यह नाम तो हिंदू और मुसलमानों का मिला जुला सा नाम है। नाम कोई और ही होना चाहिये। पंडित जी ने उत्तर दिया बेदी जी यह आप का पुत्र दिव्य ज्योति का अवतार है। ऐसा अवतार आज तक नहीं हुआ। राम चंद्र, कृष्ण चंद्रादिक जितने भी अवतार हुये हैं उनकी पूजा हिंदू करते हैं। परन्तु इस का पूजन हिंदू और मुसलमान दोनों ही करेंगे। इसका प्रताप सूर्य की भांति चमकेगा। जन स्थल तथा सभ इसकी स्तुति से भर जायेंगे। यदि वह बालक समुंद्र तट पर जायेगा तो सागर भी इसके लिये मार्ग छोड़ देगा। यहां तक कहा जाय यह बालक अद्वितीय होगा और एक पूर्ण ब्रह्म की पूजा तथा स्मरण का प्रचार करेगा, यह बालक पूर्ण धर्मात्मा तथा ज्ञान वैराग्य का अद्वितीय ज्ञाता होगा। परमात्मा के बिना और किसी की पूजा नहीं करेगा। हे परम मित्र बेदी! मुझे अब यह चिंता है कि इस लड़के के प्रताप का जब सूर्य चमकेगा उस समय स्वयं हम रहें अथवा न रहें, यह बालक पूर्ण अवतार है। नवनाथ चौरासी सिद्ध तथा बावन वीर, चौसठ योगनियें भूत प्रेत देवता दानव देवियें ऋषिमुनि तथा पीर पैगंबर सभी इसकी आज्ञा शिरोधार्य करेंगे। बालक साधारण बालक नहीं, वह जगत निर्माता स्वयं अवतार धार कर संसार का कल्याण करने के लिये प्रगट हुआ है, इस प्रकार कह कर पंडित जी अपने घर को गये।

इधर कालू जी अत्यन्त प्रसन्न हुओ। घर में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं थी। बालक के जन्मोत्सव की प्रसन्नता में वस्त्र अन्न स्वर्ण और गाय आदि अनेक प्रकार के दान किये। अनेक नर नारी कालू जी तथा तृप्ता जी को वधाई देने आने लगे। सब का उचित सन्मान किया।

अथ साखी दूसरी॥

गुरु जी ने बालकों के साथ खेलना

आनन्द मंगल के दिन शीघ्र ही व्यतीत हो जाते हैं। अब श्री नानक देव जी महाराज पांच वर्ष की आयु को प्राप्त हो गये। भाई बाला जी कहने लगे, जब नानक देव पांच वर्ष के हुये तो वयस्क बालकों के साथ खेलने लगे। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" इस उक्ति के अनुसार नानक देव जी जो वस्तु घर से ले जाते वह सब निधर्नों में बांट देते थे। उस के हृदय में दया तथा करुणा का सागर लहरें मारता था।

एक दिन किसी बहुमूल्य वस्तु को नानक ले गये और वह एक अपाहज निर्धन को दे आये। इस पर कालू जी कुछ क्रुधत होकर पंडित हरदयाल जी के घर गये तथा कहने लगे—पंडित जी! आप ने कहा था कि यह बालक छत्रपति होगा। परन्तु यह तो घर ही साफ करने लगा है। छत्रपति क्या होगा! पंडित ने कहा-महता जी आगे आगे देखना होता है क्या? जब इस बालक के जो दिन आयेंगे, तब आप ने तो हम जैसों से बात भी नहीं करनी।

नानक देव जी का बालकों के साथ खेलना भी विलक्षण ही था। आप जब कहीं बैठते तो सिद्धों की भांति चौंकड़ा मार कर बैठते थे और जब बातें करते तो सिवाय ईश्वर चर्चा के और कोई बात नहीं करते थे। जिस में भक्ति भाव ही प्रधान विषय होता था। नानक को देख कर हिंदू अनुमान करते थे कि यह बालक कोई देवता है तथा मुसलमान उसे कोई पैगंबर ख्याल करते थे।

जब नानक देव सात वर्ष की अवस्था में पहुंचे तब कालू जी ने पंडित जी से प्रार्थना की कि आप कृपया महूर्त देख कर बतायें कि नानक

को किस दिन अक्षरारंभ करवाया जाये। पांधा जी ने पत्री देखकर कहा कि महता जी! आज का दिन अत्युत्तम है क्योंकि आज मार्ग शीर्ष का मास है और तिथि पंचमी है वार भी बृहस्पति उत्तम है क्योंकि शास्त्र में कहा है कि विद्यारम्भे गुरु अर्थात् विद्या आरंभ करने के समय गुरुवार उत्तम होता है, इसी प्रकार रोहिनी नक्षत्र भी उत्तम है। यह सुनकर बेदी जी अपने घर आये।

अब कालू जी ने पंडित जी के लिये दक्षिणा तथा तिलक पुष्प माला आदि और नानक देव को संग लेकर पंडित जी के घर की ओर प्रस्थान किया।

पंडित जी के सामने नानक जी को बैठा कर कालू जी ने कहा - बेटा नानक ! अब तूं अपने इस गुरु जी से अक्षरों का बोध प्राप्त करो।

उस वेले पांधे ने गणेश पूजा करके फिर नानक की फट्टी के ऊपर कुछ अक्षर लिख दिये। जब नानक का ध्यान अक्षरों की ओर हुआ तब कालू जी प्रसन्न होकर अपने घर की ओर आ गये। समस्त दिन नानक जी पढ़ते रहे। जब सायं काल होने लगा तब छुट्टी लेकर नानक देव घर को आ गये। नानक को पढ़ कर आते देख कर माता जी अत्यंत प्रसन्न हुई। पुत्र का माथा चूमा और प्रेम पूर्वक अपनी गोदी में बैठा लिया। प्यार करने के पश्चात् भोजन करवाया तथा रात्रि को शयन किया।

प्रातः काल नानक देव जी जागे। माता जी ने हाथ मुख धुलाया। नित्य कर्म से फारग होकर नानक देव अपने पिता जी के साथ पाठशाला की ओर गये। पंडित जी ने नियम के अनुसार पट्टी लिख दी। तब नानक देव ने कहा कि हे पंडित जी! आप कुछ पढ़े लिखे हो अथवा नहीं? पंडित जी ने कहा हम तो कुछ कुछ जानते हैं। जमां खर्च लेन देन आदिक प्रत्येक विद्या हमें कंटस्थ है। फिर पूजा पाट वेद उपनिपदें आदिक भी

हमें याद हैं। तब नानक जी ने कहा-हे पंडित जी! इस विद्या के साथ तो बंधन होता है अर्थात यह विद्या बाप रूप है। उत्तर में पंडित कहने लगा कि वह कौन सी विद्या है जिस से बन्धन न हो? यदि तुझे कुछ ज्ञान है तो मुझे बता। यह समस्त संसार तो इसी विद्या के पढ़ने में कल्याण समझता है।

पंडित गोपाल को संवत् १५३३ मार्ग शीर्ष शुक्ला सप्तमी को श्री नानक देव ने निम्नलिखित सलोक कहा-

श्री राग महला १ ॥

जालु मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु॥ भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु॥ लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु॥ बाबा एहु लेखा लिखि जाणु॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसानु॥ १ ॥ रहाउ॥

अथ साखी पांधे के साथ—उपदेशादि ॥

श्री नानक देव जी ने कहा-हे पांधा जी! पढ़ना और लिखना सभी बाद में है। पढ़ना तो सार है अपितु वह जो संसार की पढ़ाई है वह तो दीये की कालख (स्याही) तथा कागज़ सन का और कलम काने की इसको लिखने वाला मन है। इसने लिखा तो क्या लिखा? केवल माया जंजाल ही लिखा है इसी के लिखने से इस जीव को माया जाल पड़ता है और बंधन का हेतु है, और विकार उत्पन्न होते हैं तथा जो सत्या की लीपि है वह माया के जाल को तथा मोह के जाल को समाप्त करने की स्याही है तथा

उस लीपि के भीतर जो प्रीति भाव है, वह एक लेखनी के तुल्य है तथा निर्मल मति ही पवित्र कागज़ है। तो महात्माओं से प्रथम समझ कर जब भी लिखने को यह जीव उद्यत होता है तो बस यह परमात्मा का नाम ही लिखता है। इस संसार के सभी विकार नष्ट हो जाते हैं तथा लोकपरलोक उज्वल होता है। उस अपार ईश्वर का पार नहीं पाया जाता और उसके गुण अंत से रहित हैं। हे पांधा जी! मुझे तो इस प्रकार का पढ़ना रुचिकर है, और जो विद्या आप को आती है, वह विद्या कृपया मुझे न पढ़ाओ। हे पांधा जी! जब आप का जीवात्मा परलोक वासी होगा तब मेरी कही हुई विद्या ही आपके काम आयेगी तथा ईश्वरीय नाम के यश की पताका आपके हाथ में होगी। तब आप को यम यातना का कष्ट वा दुःख नहीं होगा।

यह सुन कर पांधा जी हैरान हो गये और कहने लगे—हे बालक! इस प्रकार की बातें आप ने कहां से सीखी हैं? अभी तो तू अबोध बालक है। हे नानक! मैं पूछता हूं कि जो पुरुष परमात्मा का नाम जपता है, उसे किस फल की प्राप्ती होती है। तब श्री नानक देव जी ने दूसरी पउड़ी कही–

जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ॥
तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ॥
करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ॥ २ ॥

श्री नानक देव ने कहा, पांधा जी! जहां जीवात्मा जायगा तहां परमात्मा के नाम जपने का आप के पास पुण्य होगा। तहां आप का सत्कार होगा। सदैव खुशियें होगी तथा अत्यंत आनंद होगा। बहुत मंगल होंगे। समस्त प्रकार सुख प्राप्त होंगे। जिन्हों ने मन से ईश्वर स्मरण किया है उनकी परलोक में सदगति होगी तथा प्रताप का सूर्य चमकेगा। बातों से परमात्मा नहीं मिलता जब उसकी कृपा होती है तभी उस के

भजन में परिवर्तित होता है। यह सुन कर पांधा जी हैरान हो गये। पांधे ने कहा कि हे नानक! एक पुरुष वह है जो ईश भजन करते हैं परन्तु उनका कहीं कोई नाम नहीं लेता और उनको वस्तु तथा अन्न भी प्राप्त नहीं होता। एक वे भी हैं जो समस्त आयु ईश्वर से विमुख रहते हैं परन्तु वे सारी आयु राज्य करते हैं। सारी आयु मौज ही मनाते हैं। वे ईश्वर से डरते भी नहीं। उनका क्या बनेगा? तब बालक नानक ने तीसरी पउड़ी इस प्रकार कही-

इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार॥
इकि उपाए मंगते इकना वडे दरबार॥
अगै गइआ जाणीऐ विणु नावै वेकार॥ ३॥

नानक जी ने कहा, पांधा जी! एक आते हैं और कहे जाते हैं। एक महाराजा हैं और एक भीख मांगते हैं। जो यहां सुख भोगते हैं, ईश्वर स्मरण नहीं करते उनका परलोक में वह हाल होगा। उन्हों को दंड मिलेगा। जिस प्रकार चक्की अन्न के दानों को पीस देती है तथा तेली तिली को दंड देता है। जैसे मथनी मथन को दंड देती है। जिस प्रकार धोबी कपड़ा धोता है। पांधा जी! उसी प्रकार उन पुरुषों को दंड मिलेगा जो परमेश्वर से विमुख हैं और जो यहां ईश्वर स्मरण करते हैं परन्तु भीख से गुजारा करते हैं उनको परलोक में बहुत ही बढ़ाई और सुख प्राप्त होगा। धर्मराज उनका सत्कार करेगा। यह सुनकर पांधा जी हैरान हो गये और कहा हे नानक! तूं तो महान् भक्तों जैसी वार्ता करता हैं। अभी तो तुम बालक हो अभी माता पिता तथा कुटुंब से सुख प्राप्त करो। अभी तो तुमने गृहस्त आश्रम का आनंद भोग करना है। अभी अभी तू ऐसी बातें मत कर। यह सुन कर श्री नानक ने नीचे लिखी पउड़ी उच्चारण की-

मै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह॥
नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह॥
नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह॥ ४॥ ६॥

नानक जी ने कहा कि मुझे इस साहिब का इतना डर है कि मेरी बुद्धि भयभीत हो रही है तथा शरीर कांप रहा है। मेरा जीव थरथरा रहा है। जो यहां बादशाह चक्रवरती कहलाते हैं वह मरने के पश्चात् मिट्टी में मिल जाते हैं जिन की आज्ञा को संसार मानता था, जिनके भय से धरती भयभीत रहा करती थी। वह सब संसार से चल दिये और मर कर मिट्टी में मिल गये। हे पांधा जी! मैं असत्य सनेह किस के साथ करूँ। जब हम सब ने शरीर त्याग जाना है और यह शरीर मिट्टी में मिल जायेगा। इस लिये संसार के साथ जो मिथ्या प्रेम है उसे क्या करना है? उस परमात्मा का नाम स्मरण ही उत्तम है जो सब को उत्पन्न करता है। पालन करता है तथा फिर संहार करने वाला है उसी परमात्मा से प्रेम करना उचित है। यह बाणी के अर्थ सुना कर नानक देव अपने घर को चल दिये।

घर आकर अन्न पाया तथा प्रेम पूर्वक विश्राम किया। प्रातःकाल माता जी ने नानक जी को मीठी स्वर से जगाया। नित्य कर्म करके नानक देव उस दिन पाठशाला न जाकर घर में ही कागज़ कलम दवात लेकर एक चौंकी पर बैठे जिस प्रकार कोई पंडित कथा करने के लिए व्यास गद्दी पर शोभायमान होता है। जब कोई बालक इनका मित्र इन्हें बुलाने के लिए आये तो कहें कि मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ।

एक दिन आप के माता पिता ने आप से पूछा कि तुम आज कल कौन सी पुस्तक पढ़ा करते हैं? जो पढ़ते हो वह हमें भी सुनाओ। उत्तर दिया—हे पिता जी! मैं सप्त सलोकी गीता पढ़ा करता हूं।

सलोक

ओ मित्येकाक्षर ब्रह्म व्याहरण मा मनु स्मरन् ॥
यः प्रयाति त्या जां देहि सयाती परमां गतीम् ॥
॥ अर्जुनोवाच ॥
स्थान रिषि केश तब प्रकीर्त्या जगत प्रहिशबत्यनु यरत्येतेच ॥
रक्षायस्यांसि भीतानि द्रिशो प्रर्वति सर्व्रे नमस्यंतिच सिद्ध संघाः ॥
सर्वतः पाणि पांत तत सर्व तोखिओ मुखम् ॥
सर्वतः श्रुतिमल्लो मब्रह्मा बृत्यतिकृति ॥
कवि पुराण मनुशा सितार मेणो रणीयां मनुस्वरेधं ॥
सर्वस्य धाता रखचित्य रूपमादित्य वर्णतम सः परस्तास् ॥
उर्धव मूल मधः शाख अश्वस्त्य प्राह रव्यय ॥
छदासि यस्य पर्णानि यस्तं वेद से पेद वित् ॥

इस प्रकार सत्य सलोकी श्री मद् भगवत् गीता का जब नानक देव जी ने सरल और शुद्ध कंठ पाठ सुनाया तब माता पिता अत्यंत प्रसन्न हुये। माता पिता ने कहा, बेटा! यह संस्कृत में होने से हमें इसका ज्ञान नहीं होता इसका अर्थ बताओ।

यह सुन कर नानक देव जी ने इस प्रकार अर्थ कहा-श्री कृष्ण भगवान अपने मित्र अर्जुन को कहते हैं कि हे अर्जुन! जो वेदों के भीतर ओंकार शब्द है उसे प्रणव भी कहा जाता है वह जो परम पुरूष है उस ओंकार को पुरुषोतम भी कहा जाता है, वही बाणी रुप होकर ब्रह्मा रूप होकर प्रवेश करता है। उसी बाणी के बल से संसार की रचना की तथा संसार को वेद का ज्ञान दिया। उसी की भक्ती और भजन पवित्र है। मैं परमेश्वर हूं जो मेरा ध्यान करता है वह जब देह का त्याग करेगा तो वह मेरे ही धाम को प्राप्त करता है। मैं सदैव एक रस हूँ तथा सूक्ष्म से भी सूक्ष्म हूँ। मैं निश्चित रूप से समस्त संसार का स्वामी हूं। मेरा

स्वरूप तथा मेरा भय सब के सिर पर सवार है। कोटि सूर्य के सदृश्य मेरा प्रकाश है। वह प्रकाश रात्रि काल में दूसरे भूमि मंडल को प्रकाशित करने चला जाता है। मेरा प्रकाश युगांतर में एक रस रहता है क्योंकि मेरे प्रकाश को अंधेरा स्पर्श नहीं कर सकता। हे अर्जुन! जो मेरे भक्त हैं वह मेरी कथा तथा मेरा ही कीर्तन अनन्य प्रेम से सदैव करते हैं तथा संसार को सुना कर पवित्र करते हैं। जो प्रीति से श्रवण करते हैं, मैं उनकी सदैव रक्षा करता हूँ। हे अर्जुन! जो मेरा हृदय से भक्त है तथा मुझे सच्चिदानन्द जान कर तथा सभी कामनायें त्याग कर मेरा स्मरण करते हैं उनकी रक्षा हर एक दिशा से करता हूँ।

हे प्यारे पिता जी! जब श्री कृष्ण जी ने इस प्रकार अर्जुन को कहा तब अर्जुन का भ्रम मोह तत्काल दूर हो गया।

इस प्रकार श्री नानक देव जी अपने माता पिता को गीता अर्थों के सहित सुनाई तो माता पिता अत्यन्त प्रसन्न हुए। पहले तो माया की निवृति हुई थी। परन्तु फिर माया ने भ्रम में डाल दिया।

दूसरे दिन नानक देव को साथ लेकर श्री कालू जी पांधा जी के पास पाठशाला में गये। प्रतिप्ठाबाद पश्चात् पांधा जी ने नानक देव से कहा, बेटा नानक! तुम कल नहीं आये। आओ मैं आज तुम को फट्टी लिख देता हूँ। उत्तर में श्री नानक देव जी ने निम्नलिखित शब्द उच्चारण किया-

आसा महला १ पटी लिखी

ससै सोइ स्रिसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ ॥
सेवत रहे चितु जिन्ह का लागा आइआ तिन्ह का सफलु भइया ॥
मन कहे भूले मूढ़ मना ॥ जब लेखा देवहि बीरा तउ पढ़िया ॥ १ ॥ रहाउ ॥

तब गुरु जी ने कहा- जिसने सृष्टि की रचना की है वही कर्ता है सभ का स्वामी एक ही है तो उस एक की भक्ति करते हैं उसका

आना सफल होता है। उसको त्याग जो और विद्या पढ़ते हैं वह यमलोक में हिसाब देंगे तथा यह भूला हुआ मन समय को गंवा रहा है। यदि प्रभु भक्ति हृदय में हो, तब यह जीव यम धाम नहीं जाता।

ईवड़ी आदि पुरखु है दाता आपे सचा सोई॥
एना अखरा महि जो गुरमुखि बूझै तिसु सिरि लेखु न होई॥ १॥

श्री नानक देव जी ने फुर्माया-ईवड़ी जो है वह उस अमर परमात्मा की महान् शक्ति है। वह सब को देने वाला और सत्य रूप है। जो इन अक्षरों में उसका स्मरण करते हैं वह धर्मराज के ऋणि नहीं होते।

ऊड़ै उपमा ता की कीजै जा का अंतु न पाइआ॥
सेवा करहि सेई फलु पावहि जिन्ही सचु कमाइआ॥ ३॥

नानक देव कहते हैं—हे पंडित जी! ऊड़ा अक्षर ओंकार का ही रूप है। इसकी उत्पन्न की हुई सृष्टि का अंत नहीं देखा जाता। ऊड़ा कहता है कि उसकी उपमा करो। जिन प्राणियों ने गुरु आज्ञा से प्रभु भक्ति की है तिन को ज्ञान की प्राप्ति हुई है। सत्य मन से नाम लेने वाले सदैव प्रसन्न रहते हैं।

ङंङै ङिआनु बूझै जे कोई पढ़िया पंडितु सोई॥
सरब जीआ महि एको जाणै ता हउमै कहै न कोई॥ ४॥

ङ अक्षर कहता है जो पुरुष सत्य शब्द का विचार करता है वहीं विज्ञानी है। जिसने सब जीवों में उस परमात्मा का निवास जाना है। उसका अहंकार नाश होता है।

ककै केस पुंडर जब हूये विणु साबूणै उजलिआ॥
जम राजे के हेरु आए माइआ कै संगलि बंधि लइआ॥ ५॥

क अक्षर कहता है कि मन के कालेपन को मल मल कर धोता जाये फिर भी इसका साफ होना कठिन है। जब श्वेत केश हो जायें सब से प्रथम कानों के ऊपर थोड़े से केश होते हैं। मालूम होता है कि

वे भगवान का संदेश लेकर आये हैं और कहते हैं कि जैसे खेती पक्क कर श्वेत हो जाती है उसी प्रकार अब युवा अवस्था समाप्त हो गई है। अब तो सन्त सेवा तथा प्रभु नाम स्मरण ही मुख को उज्ज्वल करने का साधन हैं। यदि अब भी उसी प्रकार तृष्णा ही रही तो यमदूत तुझे बेड़ी डाल कर ले जायेंगे तथा पश्चाताप होगा।

खखै खुंदकारु साह आलमु करि खरीदि जिनि खरचु दीआ॥
बंधनि जा के सभु जगु बाधिआ अवरी का नही हुकमु पइआ ॥६॥

खखा अक्षर कहता है सम्पूर्ण संसार का मालक श्री वाहिगुरु है। जिन्हों ने नाम रूपी धन देकर समस्त जगत को मोल लिया है वह पुरुष सतगुरु जी के ज्ञान बंधन में बंधे हुओ हैं, उनको धर्मराज के बंधन नहीं होते। उनको ज्ञान के होने से गुरु जी की कृपा से और बंधन नहीं बांध सकते, वे पुरुष निर्भय होते हैं।

गगै गोइ गाइ जिनि छोडी गली गोबिंदु गंरबि भइआ॥
घड़ि भांडे जिनि आवी साजी चाड़ण वाहै तई कीआ॥ ७॥

गगा कहता है कि परमात्मा ने समस्त ब्रहमंड रचे हैं। यह जीव अंहकार करता है। उस परमात्मा ने शरीर रूपी बर्तन बना कर संसार रूपी आवे पर चढ़ा दिये हैं। इस प्रकार ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की है। जिस स्थान पर बर्तन आग में तपा कर पुखता किये जाते हैं। उसे आवा कहा जाता है।

घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरू कै लागि रहै॥
बुरा भला जे सम करि जाणै इन बिधि साहिबु रमतु रहै॥ ८॥

'घ' अक्षर कहता है कि जिन जीवों ने गुरु महाराज के शब्दों का स्मर्ण किया है। सन्तोष सेवा आदिक कठिनाईयें सहन की हैं। गुरु शब्द से लगे रहे हैं। जिन्हें सुख दुःखं समान है। इस प्रकार प्रभु से मिले हैं।

चचै चारि वेद जिनि साजे चारे खाणी चारि जुगा॥
जुगु जुगु जोगी खाणी भोगी पड़िआ पंडितु आपि थीआ॥ ९ ॥

चचा अक्षर कहता है उस परमात्मा ने जीवों के हित के लिये चार वेद रचे हैं और चार युग बनाये हैं। वे परमात्मा चार युगों से पृथक भी है। सभी योनियों में वही भोक्ता है तथा पंडित रूप में उपदेशक है।

छछै छाइआ वरती सभ अंतरि तेरा कीआ भरमु होआ॥
भरमु उपाइ भुलाईअनु आपे तेरा करमु होआ तिन्ह गुरू मिलिआ॥ १० ॥

छछा अक्षर कहता है कि उस परमात्मा की माया की जो छाया हैं वह समस्त संसार में वरत रही है। उसी की आज्ञा से भ्रम की उत्पति होती है। भ्रम ने ही जीव को भुला दिया है। जिस पर उसकी कृपा है उसे उसका दर्शन हुआ है।

जजै जानु मंगत जनु जाचै लख चउरासीह भीख भविआ॥
एको लेवै एको देवै अवरु न दूजा मै सुणिआ॥ ११ ॥

जजा अक्षर कहता है जितने दान याचक चाहता है उन में से यही चाहता है कि चौरासी लख योनी में से हमारी रक्षा करने वाला एक तूं ही हैं। देने लेने वाले ईश्वर के बिना और कोई भी नहीं है।

झझै झूरि मरहु किआ प्राणी जो किछु देणा सु दे रहिआ॥
दे दे वेखै हुकमु चलाए जिउ जीआ का रिजकु पइआ॥ १२ ॥

झझा अक्षर कहता है हे पुरुष! तू पश्चाताप क्या करता हैं? जिस समय परमात्मा ने तुम्हें उत्पन्न किया उसी समय तुम्हारा सुख तुम्हारे मस्तक पर लिख दिया है। प्रभु देता भी और देखता भी है तथा अपनी आज्ञा में चलाता है।

ञंञै नदरि करे जा देखा दूजा कोई नाही॥
एको रवि रहिआ सभ थाई एकु वसिआ मन माही॥ १३ ॥

ञञा अक्षर कहता है जब मैं ध्यान करता हूँ तो बगैर ईश्वर के

और कोई नहीं है। वही परमात्मा सर्व व्यापक है वही हमारे भीतर निवास करता है।

टटै टंचु करहु किआ प्राणी घड़ी कि मुहति कि उठि चलणा॥
जूऐ जनमु न हारहु अपणा भाजि पड़हु तुम हरि सरणा॥ १४॥

ट अक्षर कहे-हे जीव तू कपट झूठ न बोल और छल न कर, क्योंकि दो घड़ी को प्राण त्यागने हैं। झगड़े और वाद विवाद में जन्म न गवा। झूठ और कपट को त्याग। साधु संगत अथवा गुरु शरण जो है उसे प्राप्त कर।

ठठै ठाढि वरती तिन अंतरि हरि चरणी जिन्ह का चितु लागा॥
चितु लागा सोई जन निसतरे तउ परसादी सुखु पाइआ॥ १५॥

ट अक्षर कहता है कि जिनके हृदय शुद्ध हैं वहीं पार उतरते हैं। वहीं सुखी होते हैं। नहीं तो जन्मते मरते रहते हैं।

डडै डंफु करहु किआ प्राणी जो किछु होआ सु सभु चलणा॥
तिसै सरेवहु ता सुखु पावहु सरब निरंतरि रवि रहिआ॥ १६॥

ड अक्षर ने कहा कि विश्वास क्यों करते हो जो कुछ नज़र आता है वह सभ नाशवान है। प्रभु स्मरण से सुख होता है वही सभ में शक्ति दे रहा है।

ढढै ढाहि उसारै आपे जिउ तिसु भावै तिवै करे॥
करि करि वेखै हुकमु चलाए तिसु निसतारे जा कउ नदरि करे॥ १७॥

ढ अक्षर कहता है कि बने हुवे को तोड़ता है और टूटे हुवे को जोड़ता है। परमेश्वर सभ को बनाता है जो उसकी इच्छा है वही करता है। अपनी आज्ञा में चलाता है। जिसे कृपा दृष्टि से देखता है उसे ज्ञान देता है और उसे ही पार करता है।

णाणै रवतु रहै घट अंतरि हरि गुण गावै सोई॥
आपे आपि मिलाए करता पुनरपि जनमु न होई॥ १८॥

ण अक्षर कहता है कि संसार में ईश्वर व्यापक है जो उस के गुण गायन करता है वही उसे जानता है। जिसको प्रभु स्वयं सत्संग में मिलाता है उनका जन्म नहीं होता।

तनै तारू भवजलु होआ ता का अंतु न पाइआ॥
ना तर ना तुलहा हम बुडसि तार लेहि तारण राइआ॥ १९ ॥

त अक्षर कहता है कि अज्ञान रूप संसार अपार है। इसका अंत नहीं है न तो कोई नाव है और न कोई साधन है। बगैर सत्संग के सारा जगत डूब रहा है। परमात्मा ने जिसे तारना होता है। उसे सत्संग देता है।

थथै थानि थानंतरि सोई जा का कीआ सभु होआ॥
किआ भरमु किआ माइआ कहीऐ जो तिसु भावै सोई भला॥ २० ॥

थ अक्षर कहता है कि स्थान तथा स्थानांतर में तथा तमाम पुरियों में वही परमात्मा व्यापक है। उसी का किया हुआ होता है। माया का जो भ्रम है वह सभी मिथ्या है, उस परमात्मा को जो स्वीकार है वही अच्छा है।

ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ॥
जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना॥ २१ ॥

द अक्षर कहता है कि किसी अन्य जीव का दोष नहीं क्योंकि प्रत्येक प्राणी अपने कर्म का ही फल भोगता है। जितने भी जीव हैं वह सब एक यंत्र है तथा उस यंत्र (बाजा) को बजाने वाला ईश्वर है। वह जैसे बजाता है वैसे बजते हैं।

धधै धारि कला जिनि छोडी हरि चीजी जिनि रंग कीआ॥
जिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकमु पइआ॥ २२ ॥

ध अक्षर कहता है कि ईश्वर ने पृथ्वी तथा आकाश की कला धारण कर रखी है। सब के वर्ण किये हैं जैसे जिस के कर्म हैं वैसे उसे फल दिया है।

नंनै नाह भोग नित भोगै ना डीठा ना सम्हलिआ॥
गली हउ सोहागणि भेणे कंतु न कबहूं मै मिलिआ॥ २३॥

न अक्षर कहता है कि जो स्वामी सत्य रूप गुरु है और सब का स्वामी है तथा सब के अंदर भोगों को भोग रहा है तथा प्रत्येक का द्रष्रू है। उसे कोई भी नहीं देख सकता। वह सब को देख रहा है।

पपै पातिसाहु परमेसरू वेखन कउ परपंचु कीआ।
देखै बूझै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ॥ २४॥

प अक्षर कहता है कि सबका स्वामी वही जगदीश है। जगत देखने के लिये लीला रच रखी है। वह सबको देता भी है और सभी में व्यापक भी है।

फफै फाही सभु जगु फासा जम के संगलि बंधि लइआ॥
गुर परसादी से नर उबरे जि हरि सरणागति भजि पइआ॥ २५॥

फ अक्षर कहता है कि सम्पूर्ण जगत इस माया रूपी जाल में फंसा हुआ है। यम के पास में सब बंधे हुअे हैं प्रभु कृपा से छूटते हैं जिनको सत्संग प्राप्त हुआ है उनके संशय मिटते हैं।

बबै बाजी खेलण लागा चउपड़ि कीते चारि जुगा॥
जीअ जंत सब सारी कीते पासा ढालणि आपि लगा॥ २६॥

ब अक्षर कहता है कि उस परमेश्वर ने माया को प्रेर कर दिशायें चासर किये हैं तथा चौरासी लाख योनियों के घर बनाये हैं और स्वयं बाजी खेलने लगा है। जो गोटें पक कर घर में आ जाती हैं वे नतमस्तक होती हैं। जो नहीं पकती उन के सर ऊपर होते हैं। इसी प्रकार जो गुरु भक्त हैं उनका मन तन है अर्थात् नतमस्तक है। वही आवागमन से छूटते हैं।

भभै भालहि से फलु पावहि गुर परसादी जिन्ह कउ भउ पाइआ॥
मनमुख फिरहि न चेतहि मूड़े लख चउरासीह फेरु पइआ॥ २७॥

भ अक्षर कहता है कि जो संतगुरु जी के शब्द को पालता है। वह नाम और ज्ञान रूपी फल को प्राप्त होता है। वह संसार को गोपद की भांति तैर कर पार हो जाता है। जो गुरु जी से विमुख हैं तथा मन की बात करते हैं वे चौरासी लाख योनि में भटकते हैं।

मंमै मोहु मरणु मधुसूदनु मरणु भइआ तब चेतविआ॥
काइआ भीतरि अवरो पड़िआ मंमा अखरु वीसरिआ॥ २८॥

म अक्षर कहता है कि मन को शुद्ध करके जो नाम लेता है। वही परमात्मा रूप हो जाता है। माया का जो मोह वह आश्चर्यजनक है जो प्राणी मोह में फंस जाता है उसे पश्चाताप होता है।

ययै जनमु न होवी कद ही जे करि सचु पछाणै॥
गुरमुखि आखै गुरमुखि बूझै गुरमुखि एको जाणै॥ २९॥

य अक्षर कहता है कि जो सतगुरु जी के उपदेशों को सत्य मान कर चलते हैं। उनका दोबारा जन्म नहीं होगा। गुरु जी के मुख का कथन गुरु के प्यारे भक्त ही पहचानते हैं। परमात्मा सर्वव्यापक है। यह जान कर वैर विरोध का त्याग करते हैं।

रारै रवि रहिआ सभ अंतरि जेते कीए जंता॥
जंत उपाइ धंधै सभ लाए करमु होआ तिन नामु लइआ॥ ३०॥

र अक्षर कहता है कि जो संपूर्ण जीव चराचर हैं उस में राम व्यापक है जैसे समस्त भूमि में जल रमा हुआ है। यहां कूप खोदा जाता है वहां ही जल प्रकाशित होता है। इसी प्रकार सत्संग से शांति होती है जो नाम का स्मरण करते हैं।

ललै लाइ धंधै जिनि छोडी मीठा माइआ मोहु कीआ॥
खाणा पीणा सम करि सहणा भाणै ताकै हुकमु पइआ॥ ३१॥

ल कहता है कि सारे जगत को ईश्वर ने काम पर लगा रखा है। माया का प्यार मीठा कर दिया है। खाता पीता हंसता सोता है। परमात्मा का नाम भूल बैठा है।

जन्म साखी श्री गुरु नानक देव जी (भाई बाले वाली)
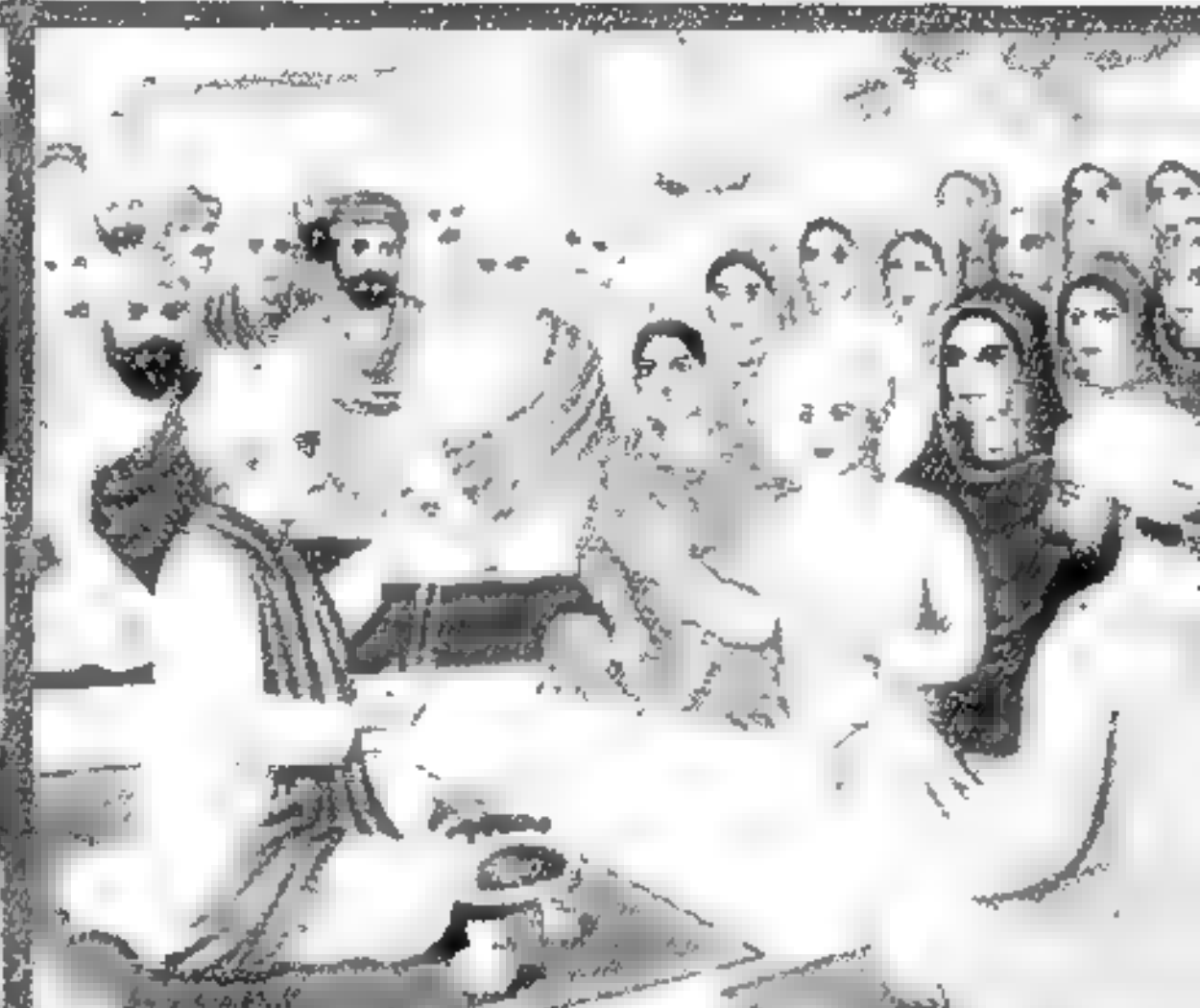
मुल्लां की साखी (पन्ना ३४)

साखी कुल के पुरोहित के साथ हुई
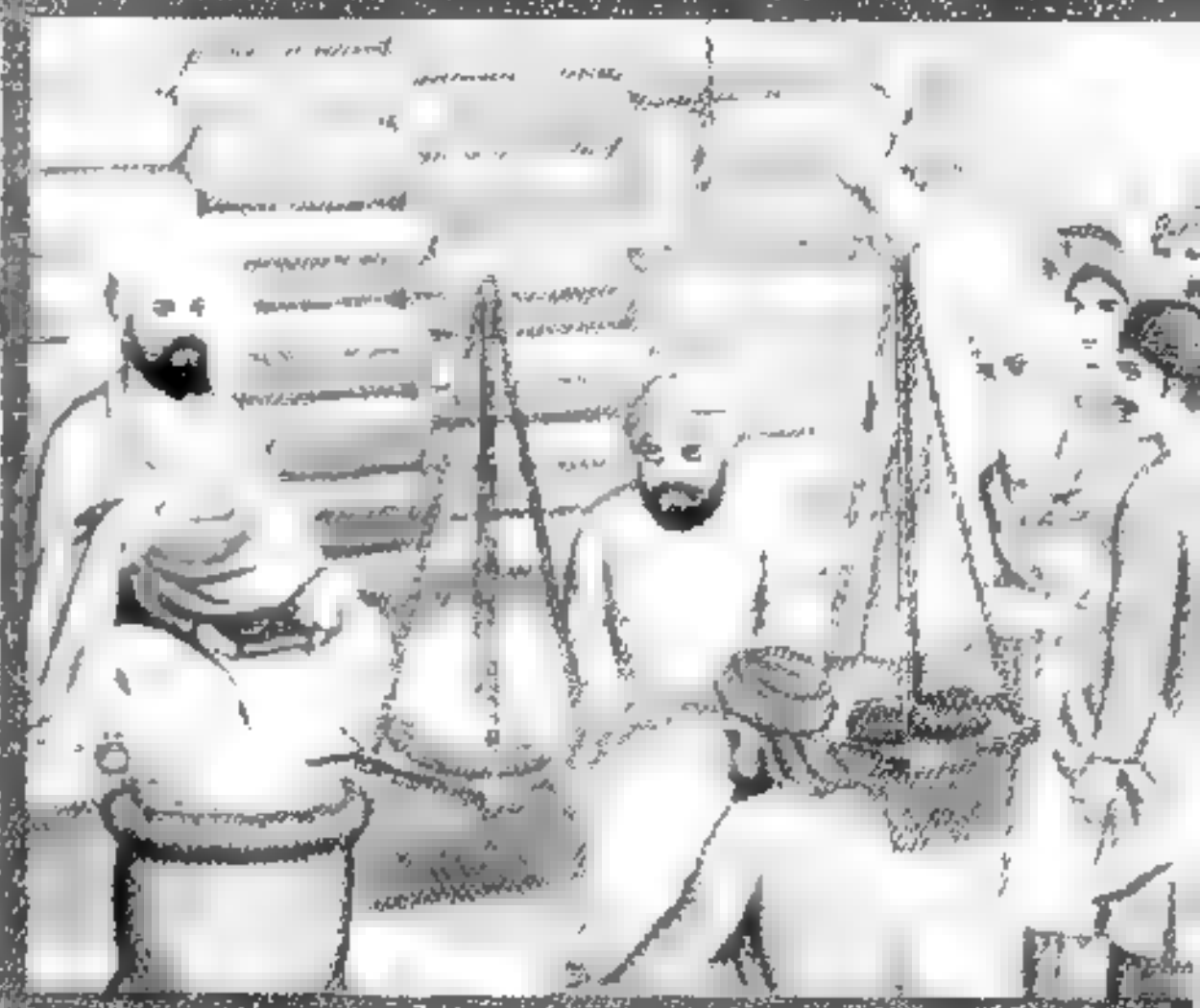
साखी गाय भैंस चराने की (पन्ना ४४)

साखी मोदीखाने की (पन्ना ६१)

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, अमृतसर

गाया है। आप भगवान का स्मरण करो। संसारी विद्या का त्याग ही अच्छा है। आत्म विद्या संसार को सिखाओ। संसारी विद्या बंधन का कारण है और कमाने के लिये सीखी जाती है और ब्रहम विद्या बंधनों को काटने वाली हैं।

जब नानक देव जी ने यह शब्द कहे-तब पंडित जी ने कहा-हे कालू जी! चारों वेदों की विद्या संसार में लोप हो रही थी। यह तुम्हारा पुत्र उसे प्रकट करने के लिये आया है।

यदि कभी श्री नानक भीतर बैठें तो वहीं समाधिस्थ हो जाते थे और यदि नदी किनारे बैठ जायें तो वहां ही समाधी लग जाती थी। कालू जी इधर उधर देखते तथा अन्न लेकर फिरते थे। कभी कभी नानक देव जी अपना भोजन साधुओं को खिला देते थे॥ ४॥

मुल्लां की साखी

ईश्वर मिलाप की चर्चा से नानक जी बहुत प्रसन्न होते थे। पुत्र की यह अवस्था देख कर कालू जी बहुत चिंतातुर थे। नानक जी की उदासीनता राय बुलार ने सुनी तथा पुत्र दुख से कालू भी दुखी सुना। राय बुलार ने कालू को बुला कर कहा कि नानक को फारसी पढ़ने के लिये मुल्लां के पास भेज दो यह बुद्धिमान हो जायगा। मैं मुल्लां को कह दूंगा कि वह नानक को मुहबत और मेहनत से पढ़ायेगा। कालू जी नानक देव जी को साथ लेकर मुल्लां के पास गये और मुल्लां से प्रार्थना की कि आप मेरे पुत्र नानक को फारसी पढ़ायें। मुल्लां ने कहा हे कालू जी! मैं आपके पुत्र को अपना पुत्र समझ कर पढ़ाना शुरू करूँगा। तब एक रुपया गुरु भेंट रूप नानक जी द्वारा मुल्लां को दिया गया। मुल्लां ने नानक के हाथ में तख्ती दी तथा अलफ से ये तक तमाम हरफ लिख दिये। जब उनका उच्चारण बताने लगा तो श्री नानक देव जिनके

हृदय में चारों वेद और तमाम पुस्तकें जिन में कुरान शरीफ भी है, सभी बिराज रही थीं, चुप चाप बैठे रहे। तख्ती और कायदा (फारसी की पहली पुस्तक) अपने आगे ज्यों का त्यों रख छोड़ा। मुल्लां ने देखा कि और लड़के तो पढ़ रहे हैं परन्तु नानक परमात्मा के ध्यान में मग्न है। मुल्लां ने कहा—अरे नानक पढ़ता क्यों नहीं, सबक याद कर। नानक जी ने उत्तर दिया- मैं क्या पढ़ूँ? मुझे आप क्या पढ़ा रहे हो? तो मुल्लां ने कहा मैं तुम को अलफ से ये तक समझा चुका हूं उसको याद करो। जब वह याद हो जायेंगे तब कोई और किताब शुरू की जायेगी। नानक जी ने कहा कि यह हरफ किस काम आयेंगे? मुल्लां ने कहा इस के पढ़ने से बुद्धि बढ़ती है। तब नानक जी ने अलफ से ये तक जितने भी हरफ थे सभी परमात्मा की भक्ति की ओर करके सुना दिये। मुल्लां हैरान हो गया और कहने लगा—तू तो सभ कुछ जानता है, मैं तुझे क्या पढ़ा सकूंगा, तू तो सारे संसार को पढ़ायेगा। कालू को बुला कर मुल्लां ने कहा-बेदी जी! यह आप का साहिबजादा कोई बड़ा भारी वली है। इसने हिन्दु और मुसलमान को समान रूप से इकट्ठे करना है। इसने गंगा कांशी मक्का मदीना में अपना यश पैदा करना है।

इधर जब पाठशाला के लड़कों ने सुना कि नानक देव पंडित जी को छोड़ कर मुल्लां से पढ़ने गये हैं। तब नानक जी के प्रेम से सभी लड़के मुल्लां से पढ़ने के लिए आ गये। जो कुछ मुल्लां जी लिखते थे उसे नानक शीघ्र ही सुना देते थे। मुल्लां कहता हे खुदावंद! यह अजीब लड़का है यह तेरी कुदरत है। यह हिंदु और इलम तुरकी-इसे पढ़ना तो निहायत मुश्किल है। इस के पढ़ने में तो कुछ बरस दरकार है। मगर नानक तो कमाल कर रहा है। जो लिखता हूं वह उसी वक्त सुना देता है। इस तरह का जेहन मैंने आज तक किसी का नहीं देखा। इस पर अल्लाह की पूरी मेहरबानी है। जिन लड़कों को दस दस वर्ष पढ़ाते हो

गये हैं। यह कल का आया उनसे भी आगे है।

इसके अतिरिक्त जो कोई भी गुरु जी के पास आता था उसे आप ईश्वर सबंधी शिक्षा देते थे। तब आप की स्तुति संसार में होने लगी। सभी कहते कि नानक ईश्वर भक्त है।

नानक देव मुसलमानी भाषा में मुसलमानों की तसल्ली और हिन्दी भाषा में हिन्दुओं की शंकायें दूर करते थे। भाव यह है कि प्रत्येक को पूर्ण करते थे। हिन्दी, फारसी, संस्कृत, अरबी आदिक सभी भाषायें नानक देव जी को कंठस्थ थी।

कुछ काल के पश्चात् नानक देव जी घर में आकर मौन होकर बैठ गये। किसी से बात नहीं करते थे। तब कालू जी ने मुल्लां को बुलाया, मुल्लां ने नानक देव को बुलाया। मुल्लां ने नानक देव पर कोई ज़ोहद (जन्त्र मन्त्र) किया। परन्तु असफल ही रहा। नानक देव मौन रहे। लोग इकठे होने लगे सभी कहते थे कि नानक क्यों चुप हैं। तब चालाक मुल्लां ने कहा—हे नानक! तू अपने परमात्मा के लिए बोल। जब परमात्मा का वासता सुना तो नानक देव मुल्लां के सामने बैठ गये। मुल्लां बहुत प्रसंन्न हुआ। कहने लगा, हे नानक! तेरे को पीरों की रक्षा हो। तूं तो खुदावंद करीम का भेजा हुआ है। तेरी पर रब्बी मेहर है। तेरी खामोशी से दुनियां दुखी होती है। जरा बोलो, नानक देव जी ने मुस्करा कर राग तिलंग में एक शब्द उच्चारण किया।

राग तिलंग महला १ ॥

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार॥
हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार॥

इसका अर्थ गुरु जी कहते हैं। हे साहिब! तेरे आगे मेरी एक प्रार्थना है उसे आप कान लगा कर सुनो। तूं कैसा है? करतार करन कारण है। मनुष्य दुर्गुण की कान है। परमात्मा अनंत है। सब की पालना करता

है। उसके बगैर और कोई नहीं।

तब मुल्लां ने कहा हे नानक! तेरे मौन रहने से जनता दिलगीर हो जाती है। अब उठो—तब नानक देव जी ने पउड़ी दूसरी उच्चारण की-

दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल जानी॥

मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी॥ १ ॥ रहाउ ॥

॥ अर्थ॥ नानक देव जी कहने लगे - हे मुल्लां साहिब! यह संसार नाश होता जा रहा है। मैं किस से बात करूं? यह सत्य है कि जिस मनुष्य के सिर के बाल फरिश्ते ने आपने हाथ में पकड़े हुअे हैं वह इसे एक आध पल में ले जायेगा। हे मुल्लां! इसे मनुष्य नहीं जानता कि, मेरे सिर के बाल यम के हाथ में हैं। मुझे अपने मरने की चिंता नहीं। यह भी नहीं जानता कि मेरा कुछ बनेगा। मुझे यह अचंभा है कि मनुष्य को और कुछ किस प्रकार सूझता है। मुल्लां ने उत्तर दिया—नानक, अभी तुम अल्प ब्यस्क हो। इस वैराग्य में पड़ने का अभी समय नहीं है। युवा होने पर तब जो इच्छा होगी करना। नानक जी ने कहा—हे मुल्लां! जो आदमी किसी का दास होता है। भले ही वह आयु में छोटा हो परन्तु जहां तक उस में शक्ति होती है वहां तक अपने स्वामी की सेवा करता है। यदि उस प्रभु की सेवा स्मरण आदिक न करूं तो मुझ में कृतघ्नता दोष आयेगा। नानक देव ने कहा कि जब इस पुरुष को अंत समय यमराज पकड़ेगा उस समय इस की सहायता कोई भी नहीं कर सकता! उस समय कोई मित्र नहीं बनता। प्रभु नाम बिना कोई रक्षक नहीं होता। जिस पर अकाल पुरुष कृपा करे उसे ही छुड़ा लेता है।

मुल्लां ने कहा-नानक! तेरे अहोभाग्य हैं। तुम ने उस परमात्मा की कृपा अल्प आयु में ही प्राप्त कर ली। ईश्वर की अनुकम्पा से तुझे सही ज्ञान प्राप्त हुआ है। तुम में कोई भी बुराई नहीं है और न ही होगी। यह सुन कर श्री नानक देव जी ने तीसरी पउड़ी उच्चारण की-

जन पिसर पदर बिरादरां कस नेस दसतंगीर॥
आखिर बिअफतम कस न दारद चूं सवद तकबीर॥ २॥
सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खियाल॥
गाहे न नेकी करदम मम ईं चिनी अहवाल॥ ३॥

॥ अर्थ॥ गुरु जी कहते हैं मुल्लां जी! परमेश्वर मार्ग की बात तो यह जीव करता नहीं और निंदा करता रहता है तथा आठों याम यह आलस्य में रहता सभी की बुराई में लगा रहता है। सदैव इसकी दृष्टा दोषमय रहती है। यह जीव आलस्य का मारा बेलगाम फिर रहा है। हे मुल्लां यह मनुष्य एक क्षण परमात्मा का भजन नहीं करता। मैं उस परमात्मा का सेवक हूँ।

यह सुन कर मुल्लां ने कहा-हे नानक! त तो उस मालक के साथ जुड़ गया हैं। तब गुरु नानक जी ने चतुर्थ पउड़ी का उच्चारण किया
बदबखत हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक॥
नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरां पा खाक॥ ४॥

॥ अर्थ॥ गुरु नानक जी कहते हैं—मुल्लां जी! परमात्मा को जान लेने की बात यह इन्सान नहीं करता, प्रत्येक की बुराई करता है। आठों याम आलस्य में रहता है, बुराई करता है। गफलत का मारा हुआ शुतर बेमुहार है। जो ईश्वर के भक्त हैं वह मृत्यु को सदैव याद रखते हैं। मैं उनके पांव की रज हूँ। यदि वे कृपा करें तो मैं कृत्य कृत्य हो जाऊंगा। इस जीव के सिर पर ऋण है जिसे चुकाना होगा और यह कहता है कि मेरे सिर पर कोई ऋण नहीं है। बेफिकर फिर रहा है। मैं परमात्मा से प्रार्थी हूं कि हे परमात्मा मैं तेरे दामन का दास हूँ। मेरे हृदय में गरीबी का वास हो। यह सुन कर मुल्लां ने कहा—नानक! तू तो परमात्मा से मिला हुआ है हम लोगें की रक्षा तुमने ही करनी है। हमारी प्रार्थना उस मालक के दरबार में तुम ने स्वीकार करवानी है। गुरु जी ने कहा-आप

भी उस प्रभु को स्मरण किया करो तब तुम्हारा भी कल्याण होगा और मैं भी आपकी सहायता करूँगा। यह सुन कर मुल्लां ने गुरु जी को नमस्कार करके गुरु चरणों पर अपना सिर रखा तथा घर को गया। गुरु जी के पवित्र उपदेश से मुल्लां भी भक्ति के रंग में रंगा गया। संसारी विषयों को त्याग कर प्रभु भजन करने लगा तो अंत में प्रभु के धाम को गया।

बोलो भाई जी वाहिगुरू॥

साखी कुल के परोहित की

अब श्री गुरु नानक देव जी महाराज की आयु नौं वर्ष की हुई। तब यज्ञोपवीत संस्कार करने के लिए कालू जी ने कुल पुरोहित हरिदयाल जी को निमन्त्रण दिया। महूरत बता कर सामग्री एकत्र हो गई। बरादरी तथा नगर के ब्राह्मण सब को बुलाया गया, सभी एकत्र हो गये। वेद विधि से गोबर का लेपन करने चौंक पूरे गये, जब स्नान करवा कर गुरु नानक देव जी को बुलाया गया। गुरु जी की शोभा नक्षत्रों में चंद्र के तुल्य थी। पुरोहित जी ने क्षत्री कुल के अनुसार सभी कार्य प्रारंभ किया। संध्य, तरपण, शिखा, सूत्र, धोती आदिक की मर्यादा बताने लगा, षट कर्म गुरु जी सिखा कर उपदेश करने लगे। तब जगत गुरु नानक देव जी परोहित को कहने लगे-हे प्रियवर ! इस यज्ञोपवीत के पहनने से क्या विशेषता होगी इसके पहनने का धर्म क्या है? तथा उस से कौन सी उपाधी प्राप्त होगी। यदि इसे न पहरा जाय तो क्या न्यूनता है? पुरोहित जी ने कहा यज्ञोपवीत न पहनने से मनुष्य अपवित्र रहता है जब वेद विधि के अनुसार ब्राह्मण क्षत्री वैश्य यज्ञोपवीत धारण करते हैं तब प्रत्येक धर्म कार्य के अधिकारी हो जाते हैं। गुरु जी बोले, पंडित जी यदि ब्राह्मण क्षत्री आदि होकर तथा गले यज्ञोपवीत आदिक पहन

कर भी उसने झूठ व्यभिचार आदिक दूषित कर्म ही किये तो फिर उसके इस टीप टाप से क्या लाभ होगा? जब तक उसकी अंतरात्मा ही शुद्ध नहीं तो यह बाहर से दिखावे उसका क्या सुधारेंगे। मेरे विचार में तो यदि यज्ञोपवीत आदिक धारण करके भी बुरे कर्म ही करे तो वह ब्राह्मण छत्री नहीं है अपितु चंडाल है। उसे एक दिन यम राज के सामने जाना होगा जब इस प्रकार गुरु जी ने कहा- तब यहां जितने लोग उपस्थित थे सब अचंभित हो गए और कहने लगे हे परमेश्वर! नानक तो अभी बालक है परन्तु इस की बातें तो बजुर्गों के तुल्य हैं। पंडित जी भी अचंभे में आकर कहने लगा- हे नानक देव! तब मनुष्य को कौन सा यज्ञोपवीत धारण करना उचित है जिससे इस जीव का धर्म स्थिर रह सके। तब श्री गुरु नानक देव ने नीचे लिखा सलोक प्रेम पूर्वक उच्चारण किया-

॥ सलोक ॥

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु॥
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु॥
ना एहु तुटै न मलु लगै न एहु जलै न जाइ॥
धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ॥

॥ अर्थ ॥ श्री नानक देव जी कहते हैं-मैं आप को असल यज्ञोपवीत सुनाता हूं, जैसे प्रथम दया की कपास हो उस में संतोष रूपी सूत्र बने और सत्य का उसे वट्ट लगायें तथा यति-पन की गांठ लगावें ऐसा यज्ञोपवीत जिस में दया दत सत्य आदिक कर्म हो वह गले में पहिने। यह आप का सूत्र से बना हुआ यज्ञोपवीत मेरे काम आने का नहीं है। यह तो आग से जल जायेगा और जीर्ण हो जायेगा तथा टूट भी जायेगा। परन्तु मेरा कहा हुआ जो यज्ञोपवीत है वह पुराना नहीं होता जलता टूटता नहीं है। श्री मान! धन्य वह पुरुष हैं जिन्हों ने यतित्वा तथा सत्य सन्तोष का यज्ञोपवीत पहिना हुआ है। यह आप का यज्ञोपवीत तो कुछ

भी नहीं है, यह मिथ्या है। यदि आपके पास सत्य आदिक के लक्ष्णों वाला यज्ञोपवीत हो तो मुझे पहिना दो। नहीं तो पहिनने को तैयार नहीं।

पंडित जी कहने लगे-हे नानक! यज्ञोपवीत जो हमारे पास है और जैसे हम सभी लोग पहिनते हैं हमारा बना हुआ नहीं। यह तो आदि सृष्टि से चला आता है, और है और संसार इस को पहिनता है तब गुरु जी कहने लगे-हे ब्राह्मण! यह तुम्हारा सूत्र का यज्ञोपवीत तो यहीं अर्थात संसार में पड़ा रहेगा, तथा आगे जाने का नहीं है। पंडित जी ने उत्तर दिया, यह यज्ञोपवीत तो सब से पूर्व सनकादिक महार्षियों ने पहना था, तुम प्राचीन मर्यादा को क्यों मिटा रहे हो। उत्तर में श्री नानक देव जी ने सलोक उच्चारण किया-

चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ॥
सिखा कंनि चढ़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ॥
ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ॥ १॥

मः १ ॥ लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि॥
लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि॥

॥ अर्थ॥ श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं, हे पंडित जी, जो कुछ आप ने कहा है वह सब कुछ कोरी कल्पना मात्र है। स्वयं मनुष्य ने चौंका डाला और उस में मनुष्यों को बैठाया। स्वयं ब्राह्मण को गुरु मान लिया, यज्ञोपवीत डाला और स्वयं उसे गुरु मान लिया। जब वह नकली जनेऊ वाला मर गया तब यज्ञोपवीत भी जल गया। ब्राह्मणों को उचित है कि उसी यज्ञोपवीत की पुष्टी करें जो इस जीव के साथ जाने वाला है, सांसारिक वस्तु तो संसार तक ही है। परमात्मा के दरबार में संसारी वस्तु का मूल्य कुछ नहीं है। परमात्मा के दरबार तक जाने वाली जितनी वस्तु हैं वे मनुष्य को अच्छी नहीं लगती, परन्तु हे पंडित जी! मैं तो परमार्थिक वस्तु का ग्राहक हूं, सांसारकि वस्तु से मुझे प्रेम नहीं। आप

मुझे सांसारिक बंधन न डालें, मेरे किसी काम की वस्तु नहीं है। गुरु नानक जी के इन शब्दों को सुन कर तमाम जनता वाह वाह की ध्वनी करने लगी तथा मुक्त कंठ लोगों ने कहा कि देखो छोटे से बालक पर परमात्मा की कितनी कृपा है। पंडित ने कहा, हे नानक! तुम्हें यज्ञोपवीत पहनाने के लिए तुम्हारे पिता ने कितना द्रव्य खर्च किया है तथा कुटंबी लोग उपस्थित हो रहे हैं! यदि तुम ने यज्ञोपवीत न पहना तो सभी लोग जितने वेदज्ञ ब्राह्मण भी हैं सभी निराश और हतोत्साह हो जायेंगे। मैंने तो कहना है, मानना न मानना तुम्हारी इच्छा पर है। यह सुन कर गुरु जी ने सलोक उच्चारण किया —

॥ सलोकु ॥

तगु कपाहहु कतीऐ बामहणु वटे आइ॥
कुहि बकरा रिनिह खाइआ सभु को आखै पाइ॥
होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु॥
नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु॥

॥ अर्थ ॥ श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं, हे पंडित! हमारे गले में यज्ञोपवीत तब डालो जब यह टूटे नहीं। यदि इसने टूट जाना है तो इससे क्या लाभ है और सुनो ऐसे धागे चाहे कितने ही पहिनाओ परन्तु इस धागे से मुक्ति नहीं मिलेगी।

पंडित निरुतर होकर कहने लगाा-बेदी कालू जी यह आप का सुपुत्र कोई महान् देवता है। यह तो स्वयं यज्ञोपवीत पहने तो पहन सकता है। हमारी सामर्थ्य नहीं कि इसे यज्ञोपवीत धारण करा सकें। तब कालू जी कहने लगे, हे प्यारे बेटा! महापुरुष भी संसार की मर्यादा को रखते हैं। तब गुरु जी ने कहा, जैसे आपकी इच्छा हो, करो।

यह सुन कर पंडित बहुत प्रसन्न होकर कहने लगे, हे नानक देव! तुम इस यज्ञोपवीत को पहन कर पवित्र करो। तब गुरु जी ने अपने

गले में उन लोगों को प्रसन्न करने के लिए यज्ञोपवीत धारण कर लिया।

महापुरुषों तथा अवतारी जीवों की यह मर्यादा होती है कि किसी को दुखी देख कर उनके दुख को दूर करने के लिए उन का कथन मान लेते हैं परन्तु उपदेश द्वारा सत्यमार्ग को भी दिखा देते हैं। इसी मर्यादा को गुरु नानक देव जी ने पाल कर यज्ञोपवीत धारण किया।

(अनुवादिक)

पंडित जी ने कहा, हे नानक! जो सत्य का यज्ञोपवीत है, जो मलीन तथा जीर्ण नहीं होता। अतः यह टूटता जलता नहीं है। उस सत्य सूत्र के लक्षण कहो-मैं सुनने की इच्छा रखता हूं। तब गुरु जी ने सलोक उच्चारण किया-

॥ सलोकु॥

मः १ ॥ नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु॥
दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत॥

हे पंडित जी! जो पुरुष को उचित है कि परमात्मा की आज्ञा का पालन करे और सत्य भाषण करे तथा सत्य के सूत्र का यज्ञोपवीत धारण करे। जिस यज्ञोपवीत में सत्य की शक्ति है वह सूत्र स्थिर है। प्रथम परमेश्वर के नाम को कपास उपजाये तथा सत्य संकल्प का सूत्र तैयार करो। प्रभु के नाम का धागा बना कर यज्ञोपवीत बना कर पहने। यह यज्ञोपवीत ईश्वर कृपा से प्राप्त होता है। यह टूटता नहीं, इस लोक और परलोक में यह सूत्र साथ ही रहता है।

यह सुन कर पंडित हरिदयाल प्रभावित होकर कहने लगा—हे नानक! अपनी महिमा तू स्वयं ही जानता है। हे नानक! हम अल्पज्ञ जीव क्या जान सकते हैं।

इसके पश्चात् ब्रह्म भोज किया गया। कुल की रीत तथा और मर्यादा भली प्रकार पूर्ण की गई। ब्राह्मणों को दक्षिणा दी गई और आशीर्वाद प्राप्त किया गया। ब्राह्मण अथवा अन्य जो सम्बन्धी मित्र वर्ग एकत्र हुओ थे प्रसन्न होकर गये।

साखी गाय भैंस चराने की

एक दिन श्री बेदी कालू जी ने कहा-बेटा नानक! यदि तुम घर की गाय भैंस बाहर जाकर चरा लाया करो तो जहां यह पशु पेट भर कर आ सकते हैं वहां तुम्हारा आलस्य भी दूर हो सकता है। भले ही नौकर चाकर इस काम पर लगा रखे हैं परन्तु मालक की देख रेख में पशु हृष्ट पुष्ट होते हैं। श्री कृष्ण भगवान अपनी गाय चराने के लिए जाया करते थे। वैसे तुम भी अपने पशु चराने जाया करो। यह मेरी हार्दिक इच्छा है। पिता आज्ञा श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने स्वीकार कर ली तथा गाय भैंस लेकर चराने के लिए जाने लगे। तब माता जी ने आपको भूख लगने पर कुछ खाने के लिए दे दिया।

गुरुदेव गाय और भैंस चराने के लिए उसी प्रकार घर से चले जैसे श्री कृष्ण बृज में जाया करते थे। गाय भैंस जंगल में एक ओर छोड़ कर गुरु नानक देव जी एकांत स्थान में बैठ गये, अपनी प्रकृति के अनुसार श्री गुरु नानक ईश्वर के ध्यान में समाधिस्थ हो गये।

उधर गाय भैंस चरती चरती हरी भरी सुन्दर खेती में जा घुसी। खेतों में से पेट भली प्रकार भर कर सभी पशु वहीं बैठ गये। खेती बहुत सी नष्ट भ्रष्ट हो गई। इतने में खेती का स्वामी आ गया। खेती को नाश देख कर वह गुरु नानक देव जी के पास आकर कहने लगा, हे नानक ! मैं तुम्हें जानता हूँ तुम पटवारी के पुत्र हो मेरी खेती तमाम बर्बाद हो गई है इसका उत्तरदायित्व तुम पर है क्योंकि पशु तुम्हारे हैं। भाई तुम नये चरवाहे बने हो! इस प्रकार उस जाट ने कुछ अधिक भी कहा। तब श्री नानक देव जी ने कहा, भाई अधिक बोलने की आवश्यकता नहीं, तेरी तो हानि नहीं हुई, फिर व्यर्थ बोलने में क्या लाभ है? यदि किसी बेज़बान पशु ने मुख मार लिया तो इतने रोष में क्यों

आते हो? परमात्मा इसी में उन्नति कर देगा, चिंता न करो। नानक जी ने बहुत समझाया परन्तु वह जाट बोलता गया। अब झगड़ा बढ़ गया तब श्री नानक देव और वह जाट राय बुलार के पास आये, राय बुलार उस इलाके का हाकम था, जाट ने कहा-हज़ूर आपके पटवारी कालू बेदी के लड़के ने पशुओं द्वारा मेरी खेती उजाड़ दी है। सुनने वाले लोगों ने कहा, भाई नानक तो मस्त लड़का है, इसके पिता को बुलाओ। कालू जी आये। राय बुलार ने कहा, भाई कालू! तुम अपने लड़के को समझाओ। इस ने गरीब जाट की खेती नष्ट करवा दी है इसका वह मस्ताना कार्य आपत्तिकारक है। कालू ने उत्तर दिया हजूर यह बालक तो मस्त मौला है, कुछ काम नहीं करता। राय बुलार ने न्याय की दृष्टि से कहा अच्छा जो जाट की हानि हुई है, वह दे दो। तब नानक देव जी ने कहा- श्रीमान जी इस जाट का तो एक तिनका भी नाश नहीं हुआ, चल कर देखा जाय। मेरा कोई पशु इसकी खेती में नहीं गया।

जाट ने कहा हजूर! मैं झूठ नहीं बोलता खेती में तो एक बूटा भी नहीं रहा। अब खेती को देखने के लिये राय ने अपने सिपाही भेजे। सिपाहिओं ने देखा तो खेती बिलकुल ठीक थी। एक तिनका भी नुक्सान नहीं हुआ था जाट देख कर हैरान हो गया। सिपाही आकर कहने लगे, हज़ूर! खेती को तो रंचक भी हानि नहीं हुई। जाट को झूठा किया गया। कालू और गुरु नानक देव अपने घर को आ गये। यह है गुरु नानक देव जी की बाल लीला का एक दृश्य।

साखी सर्प की ॥

यह लीला संवत् १५३५ वैसाख मास की है। जब श्री गुरु नानक देव जी महाराज गाय-भैंसे चरा रहे थे। दोपहर के समय गुरु देव एक वृक्ष की छाया में बैठ गये। भैंसें छाया में बैठ गईं। तब गुरु जी एक वस्त्र बिछा कर लेट गये। सूर्य देव कुछ पश्चिम की ओर हुए तो गुरु जी के मुख पर धूप आ गई। पसीने की बूंदें मुख पर मोतियों की भांति झलकने लगीं। उस समय शेषनाग अपना स्वामी सोया देख कर आया और अपने फन को फैला कर गुरु जी के मुख पर छाया कर दी। देव योग से राय बुलार अपने कुछ सिपाहियों के साथ उसी ओर आया जहां नानक देव सो रहे थे। देखा कि नानक सो रहे हैं और फणिहर सांप छाया कर रहा है। राय बुलार ने कहा कि यदि यह सोने वाला बालक जीवित है तो अवश्य कोई महापुरुष है, नहीं तो सांप ने इसका समाप्त कर दिया होगा। लोगों ने देख कर कहा, यह तो कालू पटवारी का पुत्र नानक है। राय बुलार के कहने पर लोग नानक जी को जगाने लगे तो वह सर्प उसी जगह अंतर्ध्यान हो गया।

नानक जी ने जाग कर देखा तो हाकिम राय बुलार खड़ा है। नानक जी ने लोक मर्यादा के अनुसार राय बुलार को सलाम किया। राय बुलार ने नानक को गले लगा कर माथा चूमा और सत्कार से बंदगी की। यह देख कर वहां खड़े सभी लोग हैरान हो गए और कहने लगे, भाई! पटवारी के पुत्र पर राय बुलार की बहुत कृपा है। फिर राय बुलार घर आया और कालू जी को बुला कर कहने लगा, पटवारी साहिब श्री नानक जी को आज से अपना पुत्र ही मत मानो और इसे झिड़की धुड़की कभी मत देना।

यह कोई महान् व्यक्तित्व का स्वामी है। परमेश्वर का विशेष भक्त है। मैं तो यही समझता हूँ कि इसी की कृपा से मेरा नगर आबाद है। कालू जी ! आप धन्य हो जिस के घर में नानक जैसा महापुरुष बालक रूप में खेल रहा है।

कालू ने कहा, जनाब अभी तक तो वह कोई महापुरुषों जैसी बात नहीं करता। जो वस्तु घर से ले जाता है वह बाहर ही गुम हो जाती है। देखें वह दिन कब आता है जब इसे कुछ अक्ल उत्पन्न होगी। इतना कह कर कालू घर आया।

एक दिन नित्य की भांति श्री गुरु नानक देव पशु चराने के लिए वन में गये और वृक्ष की छाया में विश्राम करने लगे। शनैः शनैः सभी वृक्षों की छाया दूसरी ओर होने लगे, तीसरा पहर हो गया परन्तु जिस वृक्ष के नीचे गुरु नानक विश्राम कर रहे थे उस वृक्ष की छाया का रुख दूसरी ओर न जाकर एक ही स्थान पर स्थिर रहा। इस दृश्य को राय बुलार ने अपने नेत्रों से देखा तथा बंदगी करके चला गया। राय बुलार ने इस बात का खूब प्रचार किया कि पटवारी का पुत्र कोई महापुरुष है! जब नानक के पशु किसी का नुक्सान करते तो उलाहना लेकर लोग आते, तब पिता जी कहते, बेटा नानक! रोज़-रोज़ तुम्हारे खिलाफ लोग कहते हैं, ध्यान से काम किया करो। तब नानक जी कहते, पिता जी! आपकी आज्ञा सदैव मानूंगा।

साखी माता पिता की

श्री गुरु नानक देव जी को उसी प्रकार चुपचाप ध्यान में निमग्न देख कर सारे बेदी परिवार में चिंता लगी रहती थी। अनेक लोग कहते थे कि नानक का दिमाग ठीक नहीं रहा। माता तृप्ता जी एक दिन कहने लगे, हे पुत्र! तू सारा दिन लेटा ही रहता है। इस का क्या कारण है? अब तुम जवान हो, कोई काम करो। काम करने वाले की शोभा होती है। यह

पागलपन छोड़ दो। संसार कहता है कि पटवारी का पुत्र नीम पागल है और कमाने अथवा काम करने के योग्य नहीं है। शरीकों की इन बातों से हम दुखी होते हैं।

माता के समझाने का कोई लाभ न हुआ। नानक देव जी उसी प्रकार ध्यान अवस्था में ही रहते थे। नानक देव जी की माता जी ने पटवारी जी से कहा कि लड़का न तो बोलता है और न अन्न ही खाता है। किसी लम्बे ध्यान में मस्त पड़ा रहता है। तब पिता जी ने समझाना चाहा, हे पुत्र! उठो स्नान करो। कुछ खाना खाओ और प्रसन्नचित्त रहा करो जिस से मन लगे। यदि किसी से बात करना पसंद नहीं तो कम से कम उठो और चलो-फिरो, खाओ-पहनो तथा रोज़गार में लग जाओ। अपने मन की व्यथा हमें बताओ। छत्री के पुत्र को व्यापार अवश्य करना चाहिए। इससे यश और अर्थ की वृद्धि होती है। बाहर हमारी खेती पक रही है, यदि तुम इसकी रक्षा करो तो नष्ट होने से बच सकती है। लोग कहते हैं, 'खेती खसमां सेती।'

उत्तर में गुरु नानक देव जी कहते हैं, हे पिता जी! मैंने तो अब एक एकांत खेती तैयार की है। उसमें हल चलाया गया है, उसमें बहुत फल होगा। अब तो उसी अपनी खेती की रक्षा करनी है। कालू जी को यह उत्तर बेतुका प्रतीत हुआ। कहने लगे, देखो लोगो! यह लड़का किस प्रकार की बातें करता है? पिता ने कहा-हे पुत्र! यदि तू अपनी पृथक खेती करना चाहेगा तो हमें यह भी स्वीकार है, कर लेना! गुरु जी ने कहा, मैंने तो अपनी खेती में बीज लगा दिया है, उसमें बहुत फल आने ही वाला है। पिता जी ने कहा, हम ने तो तेरी अलग खेती देखी नहीं, कैसी है? गुरु जी कहने लगे, पिता जी! उसे आप स्वयं देख लोगे और सुन लोगे। यह कह कर आप ने एक शबद उच्चारण किया-

सोरठि महला १ घरु ॥ १ ॥

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥

नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु॥
भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु॥ १॥
बाबा माइआ साथि न होइ॥
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ॥ रहाउ॥

यह सुन कर कालू जी ने कहा कि इस का अर्थ बताओ। तब गुरु जी ने कहा कि अपने मन को सत्संग में लगाना यही हल चलाना है और शरीर रूपी पृथ्वी में सुकर्मों का बीज रोपण यही सुन्दर वाही है। साधुओं के दर्शनों का उस में जल देना है। ईश्वर नाम का बीज डाला है। सन्तोष का सुहागा है। बुरे कर्मों से भय खाना यह खेती का जंमना है। जिस गृह में इस खेती के व्यापार से शुभ प्रालब्ध रूपी जो धन आता है वही सु धन है और जो मिथ्या माया की रचना है सो द्रोह है। यह संसारी माया ईश्वर नाम से विमुख करती है तथा परलोक में साथ नहीं जाती।

कालू जी ने फिर कहा, बेटा! यदि तूं खेती नहीं करना चाहता तो दुकान ही कर ले। हम लोगों की खेती तो दुकान है। तब गुंरु जी ने दूसरी पउड़ी उच्चारण की-

हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु॥
सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिस नो रखु॥
वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु॥ २॥

अर्थ— हे पिता जी! मैंने तो दुकान भी की हुई है, आप तो जानते नहीं। सुनिये—मनुष्य देह की जो आयु है वही हमारी दुकान है। सुरत की वृत्तियों को पाप कर्म से हटा कर पवित्र किया जाता है, यही हमारी भांडसाल है। परमेश्वर के सत्य नाम का जो सदैव स्मरण है वही उन बर्तनों में चीज़ है और संत समागम ही इस व्यापार में लाभ है और यही कमाई है।

नानक को जब कालू जी ने कहा, हे नानक! यदि तूने दुकान नहीं करनी और तेरा दिल यात्रा करने को है तो मैं तुझे घोड़ों का सौदागर बनाने को तैयार हूं जिस से तुम अनेक देशों की यात्रा कर सकते हो। गुरु जी ने कहा,

मैं तो पहले ही सौदागर हूं। यह कह कर उन्होंने तीसरी पउड़ी उच्चारण की-

सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु॥
खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु॥
निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु॥ ३॥

अथ— हे पिता जी! समस्त शास्त्रों का श्रवण तथा उन से प्रेम-श्रद्धा यह हमारी सौदागरी है। सत्य भाषण यह घोड़े हैं, बुरे कर्मों का त्याग तथा सुकर्मों का ग्रहण यह मार्ग व्यय है। मन में यह निश्चय कि परमात्मा सर्व व्यापक है उसी की कृपा से निरगुण ब्रह्मा के देश में पहुंच गये हैं। उसके स्थान में पहुंचना ही व्यापार में लाभ है। जिसमें परमानंद है। तब कालू जी ने कहा, बेटा! तू हमारे काम का नहीं रहा। अब घर में बैठो। तेरी कमाई तो हमने देख ली है। शरीक कहते हैं कि एक ही लाल पैदा हुआ है यदि तू साधू होकर कहीं चला गया तो लोग कहेंगे निकम्मा था, फकीर हो गया है। इस में निंदा होगी। कुछ नहीं करना तो किसी की नौकरी कर ले। यह सुन कर गुरु जी ने चतुर्थ पउड़ी उच्चारण की-

लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु॥
बंनु बदीआ करि धावणी ता को आखै धंनु॥
नानक वेखै नदरि करि चड़ै चवगण वंनु॥ ४॥

अर्थ— हे पिता जी! हमने नौकरी कर ली है। हमारा मन परमात्मा में लग गया है। यही चाकरी है। हमारा काम उस परमात्मा के नाम पर श्रद्धा करना है। बुरे कर्मों से मन रोकना यह हमारी दैनिक क्रिया है। प्रभु कृपा करे तो संसार में यश होता है। चार गुणा रंग चढ़ता है जिन पर प्रभु अथवा गुरु की कृपा है।

उनके हृदय रूपी आकाश में ज्ञान रूपी चन्द्रमा प्रकाशवान होता है और वे निरंकार के देश में पहुंच जाते हैं। ये वाक्य सुन कर पिता कालू जी की संतुष्टि हुई और वे मौन हो गए। गुरु नानक जी की वही अवस्था रही।

साखी वैद्य की

श्री गुरु नानक मस्तानों की भांति रहने लगे। किसी के साथ बात चीत न करते तथा ध्यान में लेटे रहना इनकी दैनिक क्रिया हो गई। विरक्तों की भांति संसार के जंजाल काट दिये। समस्त बेदी कुल नानक जी को देख कर दुखी रहने लगी। सभी कहते कि कालू पटवारी का पुत्र पागल हो गया है। जब कोई मित्र आप से मिलने आता तो उससे अपरिचितों की भांति मिलते थे समस्त दिन एकांत वास और उपवास ही में पड़े रहना नानक जी का कर्तव्य बन गया। माता चितांतुर हो कर कहने लगी, हे पुत्र! फकीरों का संग त्याग दो तथा तुम अपनी ओर देखो-उटो खाओ कमाओ और नाम पैदा करो। तुम्हारी ओर देख कर सारा परिवार तथा कुटंबी दुखी हो रहे हैं। पिता की और अपनी कमाई की रक्षा करो। अच्छी प्रकार रहोगे तो तुम्हारा विवाह भी किस सुयोग्य घराने में हो जायगा जिससे मुझे सुख प्राप्त होगा तथा तुम्हारी कीर्ति होगी। तुम्हें मस्त मौला देख कर लोक मजाक करते हैं तथा तेरा नाम 'नालायक' पड़ गया है। दरिद्री, निबुद्धि तथा बेकार यह शब्द तेरे नाम के साथ विशेषण लग रहे हैं। तुम जानते हो कि शरीकों के शब्द बजर की भांति लगते हैं। मैं सुन-सुन कर जलती रहती हूं। यह सुन कर गुरु जी ने माता जी को कोई उत्तर नहीं दिया। बस वही चाल रही—न बोलना, न खाना, न पहनना। बस पड़े रहना इनका काम रहा। नानक देव जी महाराज उन्मत्त पुरुषों की भांति दृष्टिगोचर हो रहे थे। माता जी के बहुत ही अनुरोध करने पर गुरु जी अल्प सा आहार करते थे और कभी कभी तो निरजल ही दिन व्यतीत हो जाता था। शरीर निर्बल हो गया माता कहे बेटा तुम्हें कौन सी ब्याधि है। कुछ अपनी औषधि

करो। मुख पीत वर्ण हो गया है, हे पुत्र! मैं अपने मन की ब्यथा क्या कहूं! हे मेरे भगवान! तू ही कृपा कर मेरे पुत्र को अरोग्यता प्रदान कर मैं दंडवत प्रणाम करती हूं। इस प्रकार माता परमात्मा से प्रार्थना करती थी।

एक दिन माता ने कहा- मैं अभी वैद्य को बुलाती हूं, और तेरा इलाज़ करयाऊंगी। बताओ तुम को क्या रोग है? गुरु जी मौन रहे। लोग नानक जी की खबर लेने आने लगे तथा आप को मस्ताना देख कर दुखी होते थे। सब ने पटवारी जी को कहा आप चुप चाप मत बैठो। नानक देव का उपचार करने के लिए किसी सुयोग्य वैद्य को बुला कर चिकित्सा करवाओ। तुम्हारा एक ही पुत्र है। धन तो फिर हो जाता है। जीवन पहले है। पुत्र पर अपना धन न्योछावर करना तुम्हारा कर्तव्य है। इलाज़ से नानक देव ठीक हो जायगा। परमात्मा तुम्हारे पुत्र की आयु दीर्घ करे। कालू जी स्वयं उठे और आपके भाई श्री लालू जी, नानक देव जी के पास बैठे रहे। महिता कालू जी एक वैद्य जी को जिनका नाम हरि दास था लेकर गए जहां गुरु नानक मुख पर वस्त्र डाले पड़े थे। वैद्य महोदय वहां पर आये। वैद्य जी ने गुरु की नाड़ी हाथ में लेकर पूछा कि इसे क्या रोग है। कालू जी ने कहा-बस यह दिन रात पड़ा रहता है। बात चीत नहीं करता खान पान से विमुख रहता है। शरीर निर्बल तथा पीत वर्ण हो गया है। यह सुनकर वैद्य ने नाड़ी देखी तो गुरु जी ने अपना हाथ खींच लिया तथा कहने लगे आप ने मेरा हाथ किस लिए पकड़ रखा है। वैद्य जी ने कहा- मैं रोग की पहिचान करने लगा हूं। रोग देख कर उपचार किया जायेगा। तब गुरु जी ने आगे लिखा शब्द उच्चारन किया-

सलोक महला १ ॥

वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह् ॥
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥ १ ॥
मः २ ॥ वैदा वैदु सुवैदु तू पहिलां रोगु पछाणु ॥
ऐसा दारू लोड़ि लहु जितु वंञै रोगा घाणि ॥
जितु दारू रोग उठिअहि तनि सुखु वसै आइ ॥
रोगु गवाइहि आपणा ता नानक वैदु सदाइ ॥ २ ॥

॥ अर्थ ॥ पिता जी ने श्री गुरु नानक देव जी का इलाज़ करने के लिये वैद्य बुलाया, वैद्य ने गुरु का बाजू देखा। वह भोला भाला वैद्य गुरु नानक के रोग को नहीं जानता, नानक जी कहते हैं, हे वैद्य! उत्तम वैद्य, मैं तो तब तुमको सुयोग्य वैद्य मानूंगा जब तुम मेरे रोग को पहिचान लोगे और वह दवाई देनी जिससे रोगों का समूह नाश हो जाय और शरीर को सुख हो, गुरु जी कहते हैं यदि ऐसी ओषधि तुम्हारे पास है तो तब तुम सच्चे वैद्य हो फिर अपना भी रोग दूर करो तब तू सवैद्य है। यह सुन कर वैद्य ने प्रार्थना की-हे महाराज! वह रोग मुझे कहो अर्थात मेरा रोग आप ही बता सकते हैं। गुरु जी ने कहा-हे हरि दास ध्यान से सुनो, पहले तो प्रत्येक प्राणी को अहंभाव का महान् रोग है। जिससे संसार दुखी है। यह रोग जन्म मृत्यु का कारण है। किसी भी उपचार से यह रोग नहीं जाता जो इस रोग से अपने को दुखी जानते हैं वह दूसरों के रोग किस प्रकार दूर कर सकते हैं? हे वैद! जिस दवाई से यह रोग दूर हो जाय उस औषधि को मैं देखना चाहता हूं। जो अपने रोग को दूर करे वह उत्तम वैद्य है। जो जन्म मरण से रहित हो जाये उसको यह अंहकार का रोग नहीं होता। हे हरिदास! हम तो अपने प्यारे परमेश्वर में समाए हुअे हैं इस प्रेम रोग का तो कोई उपचार ही नहीं है। संसारी रोगों के इलाज़ तो अनेक हैं सभ में परमेश्वर व्यापक जाने

तथा ईर्षा ना करें। आत्मा एक रस सत् चित आनन्द है। यह उपदेश सुन कर वैद ने कहा-हे कालू जी! आप के पुत्र को कोई रोग नहीं है। आप चिंता न करे। इस ईश्वर भक्ति का रंग चढ़ा हुआ है। यह संसार के रोग दूर करने की सामर्थय रखता है। इतना कह कर वैद्य गुरु जी के चरणों में प्रणाम करके अपने स्थान को चल दिया।

साखी खरा सौदा

श्री गुरु नानक देव मस्ती में बैठे थे, कालू जी ने देखा तो दुख हुआ। कहने लगे हे पुत्र! मुझे तेरे गम ने मार दिया है। परन्तु तुम नहीं समझते। गुरु जी ने कहा-हे पिता जी! अब तो मुझे क्षमा कर दो आगे जो कुछ आप की आज्ञा होगी वही करूंगा। कालू जी ने कहा, बेटा व्यापार करो। गुरु जी ने स्वीकार कर लिया। तब कालू जी ने बीस रुपये देकर कहा लो बेटा सत्य का व्यापार करो जिसमें लाभ हो, गुरु जी ने कहा, हे पिता जी! आप स्वयं देखोगे कि मेरा व्यापार कैसा उत्तम है तब भाई बाले को बुलाकर कालू जी ने कहा कि आप नानक के साथ जाओ क्योंकि आप बुद्धिमान हो इसे व्यापार में सहायता प्रदान करें। भाई बाले ने गुरु नानक देव जी के वस्त्र भी उठा लिए और रुपये भी। गुरु जी के साथ हो लिया। मार्ग में संसार सम्बन्धी शिक्षा बाले ने गुरु जी को दी, कुछ दूर तक पिता जी भी साथ शिक्षा देते चले गये, कहा हे पुत्र! मुझे तुम पर बहुत विश्वास है कि व्यापार करके धन और मान प्राप्त करोगे। मेरा आप के सिवाय और कौन है? संतान सुयोग्य हो तो माता पिता को यश प्राप्त होता है, हे पुत्र जिस चंदर दर्शन से प्रत्येक प्राणी प्रसन्न होता है उसी प्रकार तुम को देख कर सभी नर नारी प्रसन्न हों। यह मेरी हार्दिक इच्छा है। जब तुम व्यापार में दक्षता प्राप्त करोगे तथा क्षत्री वर्णोचित कार्य करोगे तब तुम धन्य कहलाओगे,

संसार मान की दृष्टि से देखेगा। फिर मेरा मन शांत होगा। भाव यह है कि तुम व्यापार करो। इस प्रकार शिक्षा देकर कालू पीछे को आया।

श्री गुरु नानक देव जी परमेश्वर सम्बन्धी गाया गायन करते। तब बाले को ईश्वर महिमा सुनाते जा रहे थे। जब घर से बारह कोस पर आये तो उस बन में साधु मंडली बैठी देखी। वह साधु तप कर रहे थे। किसी ने अपनी भुजा ऊपर कर रखी थी तथा कोई खड़ा होकर तप कर रहा था। पदमासन सिद्धासन मयूरासन अनेक आसन लगाये महात्मा बैठे थे। कोई स्वाध्याय में लीन है तो कोई प्रभु कीर्तन में मग्न है। उन के मन में स्वर्गादिक की कामना थी। संसार के दुखों को त्याग कर एकांत सेवन कर रहे थे। उन में एक महंत था जो मृग छाला बिछाये बैठा था। सिर पर जटाओं का मुकुट और हृदय में परमात्मा का ध्यान था।

श्री गुरु नानक देव इन महात्माओं को देखने लगे। फिर बाले को कहा, हे बाला! मुझे तो यहां खरा सौदा नजर आता है। मैं इस को त्याग नहीं सकता। पिता जी की आज्ञा अच्छे व्यापार की है, इस से उत्तम व्यापार और कोई भी नहीं हैं। यह जो रुपये हमारे पास हैं इनको अर्पण कर दो। जिससे यह भोजन तथा वस्त्र खरीद सकें। बाले ने कहा महाराज! महिता कालू जी का भय है उसने व्यापार के लिए रुपये दिये हैं। कालू का स्वभाव भी कटू है। मैं तो आप का दास हूँ जो कहो करूंगा। परन्तु पिता जी से आप ने ही निपटना होगा। वह कहीं मुझ पर कुपित न हों। यह कह कर बाले ने बीस रुपये नानक देव को दे दिये। रुपये लेकर श्री नानक देव एक साधु के निकट जाकर बैठ गये तथा निम्रता पूर्वक कहा-हे संतवर! क्या आप वस्त्र नहीं पहिना करते? अथवा वस्त्र प्राप्त नहीं होता? शीत घाम दुख तो देते होंगे। साधु ने उत्तर दिया कि हम निर्बान साधु हैं हमें वस्त्र की अधिक आवश्यक्ता माननी ही नहीं चाहिये। साधु ने फिर कहा-कि आपको ऐसे प्रशन करने से क्या लाभ

है? तब बाले ने कहा-हे नानक देव! आप जिस काम के लिए आए हैं वह काम करो। गुरु जी ने कहा, बाला जी! मुझे पिता जी ने अच्छा सौदा करने की आज्ञा दी है, मैं तो कोई खरा सौदा ही करूंगा। गुरु जी की यह बाणी सुन कर बाले ने कहा, हे नानक! कालू पिता और तुम पुत्र हो जैसे इच्छा हो सोई करो हमें क्या?

फिर गूरु नानक देव जी ने संत जी से कहा कि यदि आप वस्त्र नहीं पहनते तो भोजन भी शायद ही करते होंगे?

साधू बोला-अरे भोले नानक! हम उदासी अर्थात् संसार से उदास हो कर बनों में ही विचरते हैं तथा जो कुछ परमात्मा देता है। वही खान पान आदिक करते हैं।

गुरु नानक देव जी ने कहा-हे सन्त जी, आपका पवित्र नाम क्या है! साधु ने कहा-मेरा नाम सन्त रेणु है।

सुन कर श्री नानक देव बहुत प्रसन्न हुए तथा कहने लगे, हे बाला! मैं यह सौदा (व्यापार) अवश्य करूंगा। मुझे तो यह सौदा (व्यापार) बहुत ही अच्छा नज़र आता, जितना लाभ इस में है उतना लाभ और कहीं नहीं। बाले ने कहा आप की जो मन आये करो। मैं तो कुछ कहने सुनने का नहीं।

गुरु जी ने बाले से बीस रुपये लेकर संत रेणु के आगे रख दिये। संत कहने लगा- अरे बालक! रुपये हमें नहीं चाहिए। फिर ये रुपये तो तुम्हारे पिता ने व्यापार के लिये दिये हैं, तुम फकीरों को क्यों दे रहे हो? अभी तुम छोटी अमस्था के हो, तुम्हारा तो अपना लालन पालन अभी माता पिता के कंधों पर है। गुरु जी ने परम मृदुवाणी से कहा, हे संतवर! मेरे पिता जी ने मुझे अच्छा व्यापार करने के लिए कहा है, इस व्यापार से अच्छा व्यापार मुझे नहीं मिला, इस लिए मैं इसी कर्तव्य को करना श्रेष्ठ कर जानता हूँ। सन्त गुरु जी की ओर देख कर बोला, हे बालक!

तुम पहले अपना पूर्ण परिचय दो। तब श्री गुरु जी ने कहा कि मेरा तलवंडी राय बुलार निवास है। महिता कालू बेदी जो आज पटवारी हैं उनका पुत्र हूं तथा मुझे नानक निरंकारी कह कर पुकारा जाता है। हे संतवर! मैंने पहले सतयुग में भक्ति की थी परन्तु उस में उत्तीर्ण न हुआ फिर त्रेता युग और द्वापर युग में भक्ति की तब कुछ सफलता मिली। हमारी भक्ति उसी निरंकार की भक्ति है अर्थात् अनन्य भक्ति हमें प्रिय है। हम तो पहले भी निरंकारी थे और अब भी निरंकारी हैं।

साधू ने प्रसन्न हो कर कहा, हे नानक! जो कुछ चाहो हम से मांग सकते हो, गुरु जी ने कहा कि यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे निरंकारी अर्थात् सरवेश्वर परमात्मा दीजिये।

साधू ने कहा, जो कुछ मांग रहे हो वह तो तुम स्वयं ही हो तथा यह रुपये हमें नहीं चाहिये। यदि तुम्हें सन्त सेवा करनी ही है तो इन रुपयों का सामान अर्थात् कच्चा भोजन ला दो यह साधु जो हमारे साथ हैं वे बना कर क्षुधा निवारण कर लेंगे। श्री गुरु नानक देव जी रुपये लेकर निकट की किसी वस्ती में गये तथा आटा, चावल, दाल आदिक बर्तनो सहित लेकर आये।

तब उस महंत साधु ने कहा, हे नानक देव! आप तो उस परमात्मा के रूप हैं। इस कलियुग में निरंकारी नानक रूप धार कर प्रगट हुए हैं। इन महात्माओं को आज भूखे रहते सात दिन व्यतीत हो चुके हैं। सिवाय उस देव्य शक्ति के इस निर्जन बन में और कौन सहायक बन सकता है। हम ने अपने योग बल से आप को पहिचान लिया है। आपके पदार्पण से यह पंचनद प्रदेश कृत कृत्य होगा और कोटिशः प्राणी आपके दशर्नों से मोक्ष को प्राप्त करेंगे। हम अपने अहोभाग्य समझते हैं जिन्हों ने इन चर्म चक्षुओं से आप के पवित्र दर्शन किये हैं। यह कह कर उस महंत ने प्रणाम किया।

प्रणाम का उत्तर प्रणाम में ही देते हुए और मंद मंद मुस्कराते हुए जगदाधार श्री नानक बाले के साथ घर की ओर लौटे।

जब श्री नानक जी चले आये, तब एक साधु ने महन्त जी से पूछा कि आप ने उस लड़के को जाने की आज्ञा क्यों दी? अभी तो उस श्रद्धालु क्षत्री बालक (नानक देव) ने सन्तों की सेवा अपने हाथ से करनी थी।

तब महन्त ने कहा, भाई जिसे आप साधारण क्षत्री बालक समझ रहे हो वह तो साक्षात्कार ब्रह्मा है जो निराकार व साकार होकर संसार के कल्याणार्थ प्रकट हुआ है। मनुष्य का कर्तव्य है कि परमात्मा की ओर से जो पालन पोषण हो, उस को सहर्ष स्वीकार करें। अपितु उस सब के स्वामी से अपनी सेवा न करवाएं इस लिए मैंने नानक देव जी महाराज की इच्छा देख कर रोकना उचित नहीं जाना। श्री जगत गुरु नानक देव जी का अपार प्रकाश हम से सहिन होना कठिन हो रहा था। इन कारणों से मैंने उन्हें जाते हुये रोका नहीं।

बाले के साथ लौटते हुऐ गुरु जी तब तीन चार कोश ही आये तब गुरु जी ने कुछ मनुष्य लीला करने का विचार किया। अतः बाले को कहने लगे, हे बाला! यह हमने क्या किया। तमाम रुपये साधुओं को खिला आये। बाला कुछ ताने के तरीके से कहने लगा, नानक जी! रुपये आप के थे मेरे तो नहीं थे। उन को जैसे भी आप वर्ताव में लाना चाहो, ला सकते थे। मेरा इस में क्या नुक्सान था। फिर आप ने जो कुछ किया सो किया अब तुम जानों अथवा तुम्हारे पिता जी! मैं रोकता तो स्वयं आप मेरा अपमान ही कर देते परन्तु आप ने यह जो कुछ किया है वह उचित नहीं।

इस प्रकार बातें करते करते जगत पिता जी गुरु नानक देव तलवंडी गांव के निकट आ गये। संसार के भय को दूर करने वाले नानक अपने पिता से भय मान कर नगर में नहीं गये। नगर के बाहर सूखा तालाब

था उसी में बैठ गये।

इधर भाई बाला! अपने घर में आ गया। श्री कालू ने बाले का आना सुना तो नौकर भेज कर बाले को बुला कर पूछा-हे बाला जी! आप तो आ गये हो अपितु नानक कहां है? और जो तुम लोगों को रुपये दिये थे, उनका क्या बनाया है, उत्तर में बाले ने साधुओं को खाना खिलाने की समस्त गाथा सुना दी। कालू जी कुछ कुपित होकर कहने लगे, हे बाला तुम को बुद्धिमान समझ कर इस लिए साथ नहीं भेजा था कि रुपये साधुओं को खिला आओ? अच्छा अब यह बताओ कि नानक अब कहां है? कुछ सोच कर कालू जी और बाला दानों नानक जी को ढूंढने के लिये चले गये। माता तृप्ता जी ने जब सुना कि मेरा मस्त बालक नहीं आया, तो शोकातुर हो गई।

तब माता जी ने अपनी पुत्री नानकी के साथ कुछ नौकर देकर कहा कि पुत्री जाओ! तुम्हारे पिता जी को कुछ क्रोध है। वह कहीं नानक को डांट न दें। जाकर अपने भाई को देख भाल कर के घर ले आओ।

बाले के साथ कालू पटवारी वहां आये जहां परमात्मा के ध्यान में पवित्र आत्मा श्री नानक देव बैटे थे। देखते ही कालू जी की क्रोधाग्नि भड़क उठी। पुत्र को पकड़ लिया और कुपित होकर बोले, नानक! बताओ मेरे गाढ़े पसीने की कमाई के जो बीस रुपये थे वह कहां हैं? इतना कह कर पिता जी ने श्री गुरु नानक देव जी के मुख पर दो चपत लगा दी। इतने में देवी नानकी वहीं पहुंच गई। कहने लगी, पिता जी आप मेरे भाई को क्षमा कर दो। देखो तो भाई जी के सुन्दर मुख पर दो चार चपत के निशान हो गये हैं। क्षमा करो क्षमा करो। किसी ने राय बुलार को यह घटना सुनाई तथा कहा कि बीबी नानकी ने हाथ जोड़ कर पिता का क्रोध शांत किया है नहीं तो कालू जी ने नानक को अभी और दंड देना था। यह सुन कर राय बुलार ने अपने सिपाही

भेज कर श्री नानक देव और कालू जी को अपने पास बुलाया।

कालू ने राय बुलार के समक्ष आकर दुखी होकर कहा, हजूर इस नालायक लड़के ने मेरा नाक में दाम कर रखा है। उस समय राय बुलार के ऊपर कालू जी के दुख का कोई प्रभाव न हुआ तथा उलटा कालू पर कुपित हुआ और नानक देव को अपनी गोद में लेकर दुलार करने लगा और कालू को कहने लगा देख कालू मैंने तुमको बहुत दफा कहा है कि तुम इस मस्त बालक को कभी भी बुरा भला न कहा करो। अपितु तुमने आज इस बेचारे को बहुत मारा है जिस से सभी लोग तुम्हारी निंदा कर रहे हैं। हे कालू! तुम्हें न तो मेरा डर है और न ही उस परमात्मा का भय है। फिर तुम्हें इकलौते बेटे पर भी दया नहीं है। धन से मोह है। तुम तो इन्सानी सूरत में राक्षस हो, तुम श्री नानक जैसे सुपुत्र के पिता होने के अधिकारी नहीं हो। मेरा मन चाहता है कि मैं नानक को अपने घर रखूं और दिल से सत्कार करू। परन्तु विवश हूं। तुम इसे दुखी करते हो यह अत्यंत अनुचित है। इसका पाप मुझे लगता है। यह साधारण बालक नहीं।

इतना कहते राय बुलार के नेत्रों में जल आ गया तथा कालू पर अति क्रोध आ गया, राय बुलार क्रोध में कांपने लगा तथा कहने लगा सुन पटवारी मैंने आज तक तेरा मान किया हैं परन्तु नानक के मुंह पर तेरे हाथ से लगे हुए निशान देख कर मैं कह सकता हूं कि तुम इन्सान नहीं हो, पिता की शकल में कसाई (व्याध) हो। तब डरते हुये कालू ने कहा हज़ूर! मैं क्या करूँ बहुतेरा समझाया है मगर इसने तो मेरा नाक में दम कर रखा है। मैंने इसे बीस रुपये व्यापार के लिए दिये और इसके साथ बाले को भेजा। बाले ने आकर कहा कि नानक ने बीस रुपये साधुओं को दे दिये हैं। जब से नानक चलने फिरने योग्य हो गया है तब से इस ने घर का बहुत नुकसान किया है। अब यह बीस रुपये बर्बाद

करके नगर के बाहर छुप कर बैठ गया था जहां मैंने इसे जा पकड़ा।

राय बुलार ने तब बाले को बुला कर पूछा कि बाला तुम नानक के साथ गये थे। सो सत्य सत्य सुनाओ। बाले ने जो कुछ हुआ था वह सुना दिया। सुन कर बुलार ने कहा, पटवारी जो तुम्हारी किस्मत बुरी है। तुम इस बालक को पहिचान नहीं सके तथा इसका उचित आदर नहीं करते। जैसे पारस को त्याग कर कोई मूर्ख कौड़ियों की परवाह करता है तुम्हारी हालत उस जैसी है, विवश हूं क्योंकि मैं शरीर से एक मुसलमान हूं और नानक देव का जन्म एक हिन्दु घराने का है इस लिए मैं क्रियात्मक तौर से कुछ भी करने को असमर्थ हूं और तुम माया के भूखे हो, अच्छा जो कुछ नानक तुम्हारा नुकसान करे वह मुझ से ले लिया करो।

यह कह कर बुलार ने अपने निजी नौकर हमैदा खां को कहा, जाओ मेरे घर से बीस रुपये ला कर पटवारी को दे दो। नौकर ने बुलार की बेगम जिस की जाति खोखरी थी उससे बीस रुपये मांगे। नौकर ने बीस रुपये ला कर कालू जी को दिये परन्तु कालू ने वह रुपये न लेते हुए कहा, हजूर! रुपये आगे भी तो आप के ही दिये हुए हैं। जब मैं आप का नौकर हूं तो रुपये भी तो आप के ही हैं। मैं और नानक तथा हमारा सारा परिवार भी आप का ही है। मैं इस प्रकार आप से रुपया नहीं लेना चाहता, बुलार ने फिर कहा कि यदि मैं मुसलमान न होता तो इस अद्वितीय बालक की पालना स्वयं करता परन्तु मजबूर हूं अब मैं वायदा करता हूं कि नानक देव जब तक अबोध बच्चा है तब तक इसका पालन पोषण सेवा भाव से मैं स्वयं करूँगा तथा इसका तमाम खर्च मेरे घर से दिया जायगा। दौलत के मोह में निरंकारी नानक को नालायक कह कर गुनाह के भागी न बनो तथा जो नुकसान नानक ने किया है वह तमाम मैं इसी समय देने को तैयार हूं। कालू ने धन लेना अस्वीकार

कर दिया। फिर बुलार ने कहा, पटवारी साहिब! यह बालक जो खुदा ताला का रूप है इस ने संसारी जीवों के बंधन तोड़ने के लिए तेरे घर में जन्म लिया है। यह बालक तो दिव्य सन्त रूप है परतु तुम इसे दंड देते हो मैं हैरान हूं। राय कहीं कुपित न हो इस लिए कालू जी ने रुपये ले लिए फिर आज्ञा लेकर अपने घर को आया।

श्री नानक देव को कालू ने चपतें लगाई हैं यह सुन कर नगर निवासी कालू की निंदा करने लगे, कालू के इस कुकर्म पर सारा नगर दुखी हुआ तथा लोग कहते देखो इस व्याध ने अपने सन्त पुत्र को बुरी तरह पीटा है और अब बुलार से रुपये भी प्राप्त कर लिये हैं। बाबा! यह कालू अत्यन्त कठोर मन वाला क्षत्री है।

दूसरे दिन कालू महिता राय बुलार के दरबार में उपस्थित होकर तथा क्षमा याचना मांग कर जो रुपये लिये थे वह लौटा देने का अनुरोध करने लगा। बुलार ने कहा- कालू यह रुपये जो तुम लौटा रहे हो तुम को नहीं दिये। यह तो नानक देव के देने थे वे मैंने श्री नानक को अर्पण कर दिये है।

कालू ने कहा, हजूर! नानक के पास रुपये कहां से आये जो आप ने लिये और अब लौटा रहे हो? मुस्करा कर बुलार ने कहा कि भाई! दुनियां के अंदर जितनी दौलत है उस का स्वामी नानक है तथा जो कुछ मेरे घर में हाथी, घोड़े स्वर्ण तथा जवाहरात हैं उस सब का मालक तेरा सुपुत्र नानक ही है। मैं क्या सारा संसार ही इस बालक का दिया हुआ ग्रहण कर रहा है।

राय बुलार के यह शब्द सुन कर सभी लोग हैरान हो गये। उस की श्रद्धा श्री कालू द्वारे निरंकारी नानक के पवित्र कमलों में अनन्य रूप से हो गई।

साखी जय राम की

चेत्र वैशाख के दिनों में एक मनुष्य जिसका नाम जय राम था उसकी जाति पलता थी, सुलतानपुर कस्बे का निवासी था। वह खेतियों के निरीक्षण के लिए तलवंडी में आया। एक दिन वह राय बुलार के निकट बैठा था तब सगाई की बात होने लगी। उसने राय बुलार से कहा कि मुझे अपने लिये किसी क्षत्री की आवश्यकता है! तब अनेक बातों के पश्चात् ब्राह्मण निधे को इस काम के लिये नियत करने का प्रस्ताव राय बुलार ने रखा और कहा कि मैं मुसलमान हूं इस लिये अच्छी प्रकार नहीं कर सकता। यदि आप का रिश्ता हो सके तो कालू बेदी की पुत्री है आप उसे पूछ कर देख सकते हो। मैं भी आप की ओर से कहने को तैयार हूं। तब एक दिन निधे ब्राह्मण ने कालू जी से मिल कर कहा, हे श्री कालू जी! आप भी क्षत्री हैं और जय राम भी क्षत्री है यह संयोग उत्तम है। आप जय राम के साथ रिश्ता बना लें तो अच्छा है। तब कालू जी ने कहा पंडित जी! आप कहते हो अथवा जय राम जी कहते हैं तब राय बुलार ने कहा पटवारी जी ब्राह्मण के रूप में जय राम ही कह रहा है। तब कालू ने कहा हजूर मैं आप का कहना अस्वीकार नहीं करता।

अंततोगत्वा बीबी नानकी का विवाह सुलतान पुर में किया गया। तब एक दिन कालू जी ने कहा-हे बेटा नानक! तू सुलतान पुर जा कर अपनी बहिन नानकी को ले आओ। गुरु जी ने कुछ टाल मटोल किया। फिर माता तृप्ता ज़ी के बार बार कहने पर श्री नानक देव जी अपने प्रेमी बाले को साथ लेकर सुलतान पुर की ओर रवाना हो गये। बहिन नानकी को मिल कर बहुत ही प्रसन्न हुये। फिर जय राम जी मिले, दोनों ओर बहुत ही प्रसन्नता हुई। दूसरे दिन श्री गुरु जी ने बहिन नानकी

को साथ ले जाने का अनुरोध किया। जय राम ने कहा- हे नानक! यदि तुम दोनों अर्थात् तुम और नानकी यहां ही रहो तो मैं बहुत प्रसन्न हूं। मैं तुम दोनों को नहीं भेजना चाहता तब नानकी जी ने कहा कि आप कृपया एक बार तो मुझे भेज दो क्योंकि इस प्रकार मेरे माता पिता भी प्रसन्न रहेंगे। तब जय राम जी ने नानकी जी से कहा, तुम्हारा भाई बहुत उदास है और जाना चाहता है। नानकी जी ने कहा- जैसे आपकी इच्छा हो वही ठीक है। मेरे विचार में आप इस बार नानक के साथ मुझे भेज दो क्योंकि जहां माता पिता प्रसन्न होंगे वहां नानक भी प्रसन्न हो जायेंगे। मैं अपने भाई नानक देव जी से भय मानती हूं। इस बार आप को उसका कथन मानना ही उत्तम है। नानक देव भाई जो कुछ अपनी रसना से कह देता है वही अक्षरषः सत्य होता है।

जय राम जी ने नानकी जी के विचार मान लिये तो कहा अच्छा अब तुम जाओ परन्तु कब तक यहां पर आओगे। जय राम को उत्तर में नानकी ने कहा कि जब आप वहां आयेंगे तब अपने साथ ही ले आना।

अंत में भाई बाला गुरु जी और बीबी नानकी तलवंडी की ओर चल दिए। घर में आकर माता पिता को मिले। यह समाचार राय बुलार ने भी सुना कि नानक देव आ गया है, राय बुलार श्री नानक जी से मिल कर अति प्रसन्न हुआ।

जब फिर वैशाख के दिन आये तो फिर खेती के निरीक्षण पर जय राम तलवंडी में आये। तमाम काम से जब फुरसत हुई तब वापस जाने का बंदोबस्त करने लगे। राय बुलार ने जय राम जी का बहुत स्वागत किया। राय बुलार ने कहा-हे जय राम जी! आप मेरे योग्य सेवा बताओ और एक बात मैं कहनी चाहता हूं वह यह कि आप का ससुर कालू पटवारी स्वभाव का अत्यंत कड़वा है और आप का जो साला श्री नानक

है वह तो अत्यंत उत्तम स्वभाव का सन्त पुरुष है, मैं चाहता हूं कि नानक देव जी को आप अपने पास सुलतान पुर ही रखो। नानक देव जी जब महात्माओं से मिलते तथा उन की सेवा करते हैं तब कालू दुखी हो कर अपशब्द कहता है। इस लिए नानक जी को आप अपने पास रखें। इससे यह कुछ काम काज भी सीख जायेगा और पिता के कोप का भाजक भी नहीं बनेगा। जय राम ने कहा मुझे स्वीकार है मैं इसे अपने पास रखूंगा और किसी अच्छे घर में इसकी शादी भी करवा दूंगा। तब राय ने कहा-अब नानक तुम्हारे साथ शोभा नहीं देता। दूसरे महीने हम लोग श्री नानक देव जी को आप के पास भेज देंगे। इसकी सगाई उधर ही किसी नेक घराने में करवा देनी। इस कथन पश्चात् श्री जय राम जी द्विरागमण (मुकलावा) लेकर अपने घर को आए।

साखी एक अतीत की

अब श्री गुरु नानक देव जी महाराज की आयु बीस वर्ष की हो गई तथा इन का रहन सहन उसी प्रकार मस्ती में भरा हुआ था, वही चाल थी, जो बचपन से चली थी। जिधर मन माना चले जाना और जहां बैठना वहीं बैठे रहना। शरीर धरती पर और मन अकाल पुरुष की ओर लगाये रहना यह आपकी दिन चर्या थी।

एक दिन एक साधू वहां आया, जिस ने नगर के बाहर आसन लगाया तब नानक जी उसके पास जा बैठे। उस समय श्री नानक जी के हाथ में एक स्वर्ण की मुंदरी थी तथा एक गड़वा (लोटा) था। उस साधू ने गुरु जी का परिचय पूछा। उत्तर में गुरु जी ने कहा- मैं क्षत्री का पुत्र हूं। लोग मुझे नानक निरंकारी के नाम से बुलाते हैं। उस साधू ने कहा - हे नानक! आप निरंकारी हो और हम निरंकार के हैं। इस लिए हमें कुछ खाना दीजिए। इस लिये गुरु जी ने अंगूठी और गड़वा

साधू के आगे रख दिया। उसने कहा यह अंगूठी और गढ़वा आप अपने पास ही रखो। गुरु जी ने उत्तर दिया पुरुष को चाहिये जो कुछ कहे उसी पर अमल करे। तब साधु नें कहा-हे नानक! तुम सत्य रूप में निरंकार हो तथा हम मिथ्या ही निरंकार के बनते हैं। तब श्री गुरु जी अपने घर को आ गये। गड़वा और अंगूठी लेकर साधू नौं दो ग्यारह हो गया।

कालू जी ने पूछा नानक! लोटा और अंगूठी कहां है। गुरु जी खामोश ही रहे। अति कुपित होकर कालू ने कहा कि नानक तेरा मेरे घर में ठहिरना कठिन है। अभी निकल जाओ। मैं तुम को अपने घर में नहीं रख सकता। मैं तुम्हें समझा कर थक गया हूं। परन्तु तुम्हें ज्ञान नहीं होता इस लिये जिधर मन माने चले जाओ।

इस बात की सूचना राय बुलार को मिली तब राय बुलार ने कालू को बुला कर कहा, हे कालू! आज फिर क्या हो गया है। कालू ने रोष से कहा कि हजूर आज मेरा अनोखा लाल लोटा और अंगूठी कहीं छोड़ आया है तथा बताता तक नहीं तब बुलार ने धैर्य देते हुअे कहा कि नानक को श्री जय राम जी के पास सुलतान पुर भेज दें तो ठीक है। यहां तुम भी प्रतिदिन क्रोध करते हो और नानक भी दुखी होता है। जय राम जी के निकट निवास करके किसी काम में लग जाएगा और ठीक हो जायगा।

कालू जी ने बुलार का कथन मान लिया। बुलार ने एक पत्र अपनी ओर से जय राम जी को लिख कर अपने पुरुष के साथ श्री नानक देव को सुलतान पुर भेज दिया। उस पत्र में लिखा कि आप इसे भली प्रकार रखें तथा किसी काम पर लगायें। केवल रिश्तेदारी ही न जानना। अपितु इसे अपना समझ कर प्रसन्न रखना। नानक जी के प्रस्थान पर माता तृप्ता उदास होकर कहने लगी, बेटा! मैं तुम्हें देख कर अति प्रसन्न

होती थी। अच्छा ईश्वर तुम्हें आयु प्रदान करे। श्री गुरु जी ने माता को दुखी देख कर कृपा दृष्टि से निहारा। जिस से माता को जो मोह हुआ था वे दूर कर दिया। फिर कहा, माता जी! सौ बात की एक बात कहता हूं कि आप ने उस सर्वशक्तिमान परमात्मा को सदैव स्मरण करना। इतना कह कर तथा सब को प्रणाम कह कर बाले को साथ लेकर गुरु जी सुलतान पुर की ओर चल दिये।

पांचवें दिन गुरु जी सुलतान पुर पहुंच गये। संवत् १५४४ मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी को गुरु जी अपनी बहिन बीबी नानकी को जा मिले। बीबी नानकी अपने भाई के चरणों पर गिर पड़ी। गुरु जी ने शीघ्र ही उठा कर कहा, बहिन जी! आप बड़ी हो इस लिये इस प्रकार चरणों पर गिरना उचित नहीं है। मुझे आपके चरणों पर अपना सिर रखना योग्य है। बीबी जी ने कहा, नानक! यदि तुम साधारण मनुष्य होते तो मेरे ही पांव छूने उचित थे। परन्तु आप तो साक्षात्कार ईश्वर हो और संसार के उद्धार करने को प्रकट हुए हो। यह कह कर आदर सत्कार से सुन्दर आसन पर बैठाया तथा कुशल मंगल पूछने लगी।

इतने में श्री जय राम जी घर में आये तो क्या देखते हैं कि श्री नानक देव जी घर में बिराजमान हैं। नानक देव जी अपने बहिनोई के चरणों में लगकर प्रणाम करने लगे। जय राम भी बुद्धिमान था, उसे भी ज्ञान था। उसने गुरु जी को उठा कर फिर स्वयं उनके चरण स्पर्श किये। गुरु जी ने मुस्करा कर कहा, जीजा जी! यह उल्टी गंगा क्यों बहाने लगे हो अर्थात नमस्कार तो मुझे करनी उचित है। परन्तु आप उल्टा क्यों कर रहे हो। तब जय राम जी ने कहा, हे गुरु जी! संसार की दृष्टि में भले ही आप मेरे साले हैं परन्तु मेरे नेत्रों में बैठ कर देखो तब सत्य तत्व का पता चलता है। मैं जानता हूं कि आप संसार को तारने को मनुष्य बन सच्चिदानंद ही प्रकट हुये हो यह मेरी दृढ़ धारणा

है। आज मेरे जैसा भाग्यशाली और कौन है कि जिसके घर में समस्त संसार का स्वामी बिराजमान हो। अब आप को कोई भी तकलीफ न होगी। जिस कार्य के लिए आप ने नर तन धारण किया है उसी कार्य को निःसंकोच करो। तब गुरु जी ने कहा कि यदि लोक हित्त के लिए कोई काम किया जाये तो अच्छा है।

जय राम ने कहा जैसे आप की इच्छा। अच्छा आप यह बताओ कि आप ने तुरकी भाषा सीखी है या नहीं? गुरु जी ने कहा योग्य कार्य होता ही रहेगा तब जय राम ने कहा कि यदि आप को नवाब दौलत खान का मोदी खाना लेकर अफसर बनाया जाय तो अच्छा है परन्तु नवाब का मोदी खाना बड़ा है। गुरु जी ने कहा-कोई बात नहीं वह करतार सब कुछ करने को सामर्थ्य है।

श्री गुरु नानक देव जी मोदी खाने का कार्य भार को सहन करने के लिये तैयार देखे तो नानकी ने कहा भाई जी मेरा विचार है कि अपनी प्रकृति के अनुसार भजन ही करो तो ठीक है। जहां भगवान हमें खाने पहिनने को देता है वहां आप का भी गुजारा हो सकता है। आप तो परमात्मा के रूप हो फिर नानकी जी ने जय राम जी से कहा कि आप नानक देव जी को संसारी झंजटों में न डालो। मेरा भाई तो साधुओं का प्यारा है। इस से काम नहीं लेना चाहिये। इस पर श्री गुरु नानक देव जी कहने लगे बहिन जी! पुरुष को सदैव कमा कर ही खाना उचित है। इस से पवित्रता होती है। तब नानकी जी ने कहा-जैसे आपकी इच्छा।

फिर नानकी जी ने जय राम से कहा कि आप मेरे भाई की सगाई का भी ध्यान रखें। जब भाई गृहस्थी हो जायगा तब कमाई की ओर भी स्वयं अग्रसर हो जायगा। जय राम जी ने कहा, सुनो जी जब काम पर लग जायेगा तब स्वयं सगाईयें चली आयेंगी। इसकी चिंता व्यर्थ है। उतावली होना ठीक नहीं। तब नानकी जी ने कहा, मैं तो नादान

हूं और आप बुद्धिमान हैं। जो कुछ भी उचित होगा वही करेंगे।

तब जय राम जी ने मार्ग शीर्ष शुक्ल चतुदर्शी के दिन नवाब दौलत खां से गुरु जी का मेल करवाया और जय राम जी ने नवाब को कहा कि आप ने एक बार मोदी खाने के लिए कहा था, सो आपके हुकम अनुसार यह जवान जिसका नाम नानक देव है, लाया हूं। आप इसे मोदी खाने का काम दो। नवाब ने श्री गुरु जी की मन मोहनी ईश्वरीय सूरत देख कर प्रसन्न होकर कहा कि नानक देव बुद्धिमान दृष्टि गोचर होता है। आशा है कि मोदीखाने को भली प्रकार संभाल लेगा, यह कह कर मोदी खाने पर श्री नानक देव जी को लगा दिया गया। बीबी नानकी को अति प्रसन्नता हुई।

साखी मोदी खाने की

संवत् १५४७ मार्ग शीर्ष मास की पूर्णमाशी वीरवार के दिन जय राम जी ने एक सहस्त्र रुपया पेशगी गुरु जी को नवाब से दिवा दिया। गुरु जी कुछ काल मोदी खाना चलाते रहे।

एक दिन भाई बाले ने श्री गुरु जी से प्रार्थना की, हे महाराज! आप मोदी खाने पर लग गये हो। अब कृपा करके हमें भी आज्ञा दीजिये। हम भी अपने खेती बाड़ी के काम पर जाएं। गुरु जी ने कहा, हे बाला! यह कच्ची प्रीति अच्छी नहीं होती। अभी अभी जाने की क्या पड़ी है। मुझे अभी आप से एक काम है। बाले ने कहा-आप तो क्षत्री पुत्र होकर काम पर लग गये। हमें भी तो काम करना उचित है. इस लिये आज्ञा दीजिये।

गुरु जी मुस्करा कर कहने लगे-हे बाला! हमने तो अपना काम करना है तू कुछ समय निरंकार के हुकम की प्रतीक्षा कर और हमारे साथ ही निर्वाह कर। बाले ने कहा-हे महाराज! मैं तो प्रारंभ से आप का हो चुका हूं जैसे आज्ञा हो वैसे ही करूंगा, यह कह कर गुरु जी के साथ ही रहने लगा।

गुरु जी हर एक महीने के प्रारम्भ में मोदी खाने की आय व्यय नवाब को बताते थे। हिसाब से श्री गुरु नानक जी का ही कुछ नवाब की ओर कोष होता था। यदि कोई मांगने आया तो गुरु जी उसे खाली नहीं जाने देते थे। अन्न वस्त्रादिक सभी को देते थे। इसके अतिरिक्त यदि नवाब की ओर से किसी को पांच सेर देने की लिखत आज्ञा होती तो गुरु जी उसे सवा पांच सेर ही देते थे। भिक्षुकों को जिस स्थान से मिले वहां अवश्य जाते हैं। नानक जी महाराज की ख्याति हो गई। बस फिर तो भिक्षुकों का तांता ही बंधा रहने लगा।

सुलतान पुर के कुछ लोग तलवंडी में आए जिस से कालू जी ने नानक जी की प्रख्याति सुनी। नानक बहुत दान कर रहा है। यह सुन कर श्री कालू जी सुलतान पुर में आए।

श्री गुरु नानक जी ने पूज्य पिता कालू जी को देखा तो सत्कार करने के लिए चरणों पर प्रणाम किया। कालू ने पुत्र को गले लगा कर माथा चूमा फिर बाले ने सत्कार किया। अंततोगत्वा बाला और कालू जी तथा गुरु जी जय राम जी के घर में आये। जय राम जी की ओर से बहुत सत्कार किया गया, मर्यादा के अनुसार कालू जी ने पुत्री नानकी तथा जय राम जी को वस्त्र भूषण तथा रुपयों की भेंट की। फिर कुछ इधर उधर की बातें के पश्चात! कालू जी ने श्री नानकदेव जी से पूछा, बेटा! तुम को यहां पर आए हुए बहुत दिन हो गए हैं। बताओ तो क्या कुछ लाभ प्राप्त किया है। श्री नानक जी ने कहा पिता जी! यहां आ

कर बहुत कुछ कमाया और खाया है परन्तु मेरे पास तो एक फूटी कौड़ी भी जमा नहीं है। उस समय कालू जी बाले पर कुपित होकर कुछ अपशब्द भी कहने लगे। गुरु जी ने बाले को संकेत किया जो बाला जी ने कोई उत्तर नहीं दिया। कालू जी ने फिर जय राम जी से कहा कि आप ने नानक देव की ओर ध्यान नहीं दिया तथा इसकी सगाई का भी प्रबंध नहीं किया। बीबी नानकी जी को पिता जी की बात कुछ अखरी और कहने लगी, पिता जी! जब से मेरा भाई यहां आया है तब से इस ने आपकी कोई हानि नहीं की। आप को प्रसन्नता होनी चाहिये कि नानक काम पर लगा हुआ है अब आप यह नहीं कह सकते कि नानक बेकार बैठा रहता है। वह दिन दूर नहीं जब कुछ एकत्र भी करेगा तथा हम लोग सगाई के पीछे लगे हुए हैं आप चिंता न करें। जय राम ने कहा, हमने एक जगह देखी है। मूला नाम का एक चोना क्षत्री है पखो रंधावे में निवास करता है उस की पुत्री युवा है। वह पखो के रंधावे का पटवारी लगा हुआ है। यह पुणय का सम्बन्ध है। हमने वहां ही नानक की सगाई की आशा कर रखी है। आगे जो उस परमात्मा की इच्छा है वही होगा।

जय राम जी ने कहा हे महिता जी! मैं तो चाहता हूं कि आप और माता जी भी यहां सुलतान पुर आ जाओ। तब कालू ने कहा, जय राम! यह उचित नहीं। उधर पटवार का सारा काम मेरे ऊपर है। इस लिए मुझे नहीं रहना चाहिए। परन्तु जिस समय नानक की सगाई होने वाली हो तो उस समय मुझे शीघ्र ही बुला लेना तथा इसका ध्यान रखना। कहीं यह धन को व्यर्थ न गवा दे।

नानकी जी ने कहा-पिता जी आप अपने भाग्य महान जानो जो भाई नानक का मन यहां लगा हुआ है तथा काम कर रहा है। पिता जी! अब मेरा प्यारा भाई अपनी कमाई का धन बचा कर किसी भिक्षु

को दान रूप में कुछ देता है तो उससे हमारी अथवा आपकी क्या हानि है। यदि किसी बुरे काम में लगाये तो हम उसे रोक भी सकते हैं। अपितु भलाई से रोकना तो पाप है एक बात की अवश्य चिंता थी कि नानक देव के निकट सदैव मांगने वाले साधु रहते हैं और नवाब का सुभाव कड़वा है। जब कभी हम देखते हैं तो मोदी खाने के आगे साधु सन्तों तथा मांगने वालों का तांता सा बधा होता है तथा नानक किसी को भी कुछ दिये बगैर खाली नहीं लौटाता। नवाब के स्वभाव से प्रभावित होकर हम लोग भयभीत रहते हैं कि कहीं सरकारी धन में कोई कमी न आ जाय। परन्तु पिता जी! जब कभी हिसाब का निरीक्षण होता है तो सदैव नानक का ही पल्ला भारी निकलता है। इस लिये हमें विश्वास हो जाता है कि नानक देव अवश्य कोई अवतार है। साधारण जीव नहीं। इस लिये हम लोग नानक देव को कुछ भी नहीं कहते। यह सुन कर कालू जी ने कहा-हे जय राम जी! अब जब कभी मोदी खाने का निरीक्षण हो तथा नानक के कुछ रुपये अधिक निकलें तो उसी समय वे रुपये अपने अधिकार में कर लेने। इस काम के परामर्श के लिए भाई बाले की सहायता चाहिये।

फिर बाले को बुलाया गया तथा कहा गया हे बाला! तू एक बुद्धिमान है इसी लिये नानक की देख रेख तेरे ऊपर ही रखी गई है। तुझे इस बात की ताकीद की जाती है कि नानक को फजूल खर्ची से सदा सुचेत रखो।

इस बात से बाले को कुछ क्रोध हुआ तथा कहने लगा-हे पटवारी जी आप यह स्वप्न में भी न समझें कि नानक से मैं किसी प्रकार का लाभ प्राप्त कर रहा हूं। मेरे लिये तो एक फूटी कौड़ी भी जो बना कर लेती है। वह बुरी चीज़ के तुल्य है। हे महिता जी! आप तनिक मन में विचार करें कि नानक कोई बच्चा नहीं। जिसे हम डांट डपट कर

अपनी इच्छा के अनुसार कर सकें। यदि कुछ अधिक कहें तो अपने अपमान का भय है। हे पटवारी जी, यदि आप मुझ से सत्य पूछते हैं तो मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि तेरा पुत्र नानक सारे संसार का पिता है। उसका प्रत्येक कर्तव्य अमनुषीय है। उससे हानि की संभावना निरार्थक है तथा अपनी अल्पज्ञता का चिन्ह है। इतना कह कर बाला किसी विशेष ध्यान में निमग्न हो गया।

फिर अचानक बोला-हे कालू जी! हमने तो निश्चय कर रखा है कि नानक का विवाह शीघ्राति शीघ्र हो जाय तो यह स्वयं गृहस्त की ओर अग्रसर होगा, जिस से फजूल खर्ची अपने आप रुक जायगी। इस कार्य के लिये श्री जय राम जी पर्याप्त हैं, आप निश्चिंत रहें।

अंततोगत्वा यही निश्चय हुआ कि श्री नानक देव जी का विवाह शीघ्र ही किया जाय। कुछ दिनों के पश्चात् कालू जी अपने नगर को आये। तृप्ता जी ने अपने पुत्र पुत्री की कुशलता पूछी। तब कालू जी ने उद्विग्न मन से कहा कि नानक की चाल ढाल तो पूर्ववत ही है। अच्छा! वह ईश्वर उसे सुबुद्धि प्रदान करे। इसके पश्चात् अपनी यात्रा का विवरण विस्तार पूर्वक सुनाया।

इधर एक दिन जय राम जी नानकी के निकट एकांत में बैठे थे। तब परम विदुषी नानकी ने जय राम जी से पूछा कि आज चिंतातुर प्रतीत हो रहे हैं। यदि उचित हो तो अपनी चिंता का कारण मुझे बताने की कृपा करें। पुरुष की सहायता दूसरा पुरुष कर सकता है। इस लिये आप की चिंता में हाथ बटाना अर्धांगनी होने के नाते मेरा कर्तव्य है। सुन कर जय राम बोले हे नानकी! मुझे लोग कहते हैं कि तुम अपने साले नानक की फजूल खर्ची से एक दिन नवाब साहिब के कोप भाजक बनोगे। अब करूं तो क्या करूं यदि नानक को वापस तलवंडी भेजूं तो संसार में मेरी निंदा होगी और यदि मौन रहूं तो नवाब का भय

मेरी चिंता का कारण बनता है। मेरी बुद्धि की नैया डगमगा रही है।

नानकी अपने पति की बात सुन कर मुस्करा कर कहने लगी, हे स्वामी! जैसे उस परमात्मा के ज्ञान का परिचय सब से प्रथम इन्द्र देवता को हुआ था तथा पश्चात् ईश्वरीय ज्ञान इस संसार में फैला था। यह कथा उपनिषदों में आती है। उसी प्रकार गुरु नानक देव जी महाराज का परिचय सर्व प्रथम मुझे प्राप्त हुआ है। यह मेरा सौभाग्य है, हे पति देव! आप श्री नानक देव जी को साधारण मनुष्य न समझें वे तो अखिल भुवन पति साक्षात ब्रहम ज्योति हैं। जो संसार की हित कामना से अवतार हुए हैं लक्ष्मी इनकी दासी है। जहां नानक वहां लक्ष्मी हाथ बांधे खड़ी रहती है मैं सत्य कहती हूं कि अब जब व्यय का निरीक्षण होगा तब सदैव कोष की वृद्धि दृष्टिगोचर होगी। स्वामी जी! जहां लक्ष्मी पति स्वयं उपस्थित हों वहां हानि की तो संभावना उपहास्यप्रद बात है। अधिक क्या कहूं। आप श्री नानक देव को परम ज्योति जान कर निश्चिंत रहें तथा लौकिक मर्यादा के अनुसार मैं अपने भाई को बुला कर कुछ समझाने का प्रयत्न करती हूं। सत्य तो यह है कि मैं इसी बहाने नूरी जोत के दर्शनों से अपने नेत्र पवित्र करूंगी। यह कह कर तुलसां गोली को बुला कर कहा, हे तुलसां! तू मोदी खाने से नानक देव को बुला लो।

तुलसां से बहिन जी का सन्देश सुन कर श्री गुरु नानक जी बाले को कहने लगे, हे बाला! मुझे ज्ञात होता है कि आज फिर किसी ने शिकायत की है। इस लिए पूज्य भगती नानकी ने मुझे बुला भेजा है। मैं घर में जाना चाहता हूं। तुम भीतर से पताशों का बर्तन ले आओ। बाला पताशों का मटका उठा लाया। श्री गुरु जी ने उस में अड़ाई सेर पताशे जो उस में थे वे अपने दामन में उलट लिये तथा नानकी जी की ओर प्रस्थान किया।

नानकी जी ने सुना कि संसार के रचने वाले मेरे भ्राता श्री नानक जी आ रहे हैं। तब स्वागत के लिए हाथ बांधे खड़ी हो गई। एक सुन्दर आसन पर श्री गुरु जी को सन्मान के साथ बैठाया गया तथा संग आये बाला जी को उचित आसन दिया गया। गुरु जी ने नानकी से पूछा, आप ने मुझे जिस कार्य के लिए बुलाया है, वह कहो। नानकी जी ने कहा कि आपके दर्शनों को मेरा मन चाहता था, क्योंकि बहुत दिनों से आप का दर्शन नहीं हुआ। गुरु जी मुस्करा कर कहने लगे कि बहिन जी बहाना करने की आवश्यकता नहीं। जिस काम के लिये मुझे बुलाया गया है उसे ही सुनना चाहता हूं। नानकी ने कहा, वीर जी! आप तो सर्वज्ञ हैं, मुझ से पूछने की आवश्यकता नहीं। श्री गुरु नानक देव कहने लगे कि आप लोग मोदी खाने की आय व्यय पूछना चाहते हो, सो कृपया जब दिल चाहे निरीक्षण कर सकते हो। मैं जानता हूँ किसी ने मेरी शिकायत की है। बहिन जी फाल्गुन शुक्ल पंचमी के दिन जब हम ने नवाब के साथ हिसाब किताब किया तब हमारे १३७) एक सौ सैंतीस रुपये नवाब की ओर अधिक निकले थे तथा कहा हे जय राम जी! अब तो आप को कोई उपालम्भ नहीं इस लिए आज से मोदी खाना किसी और को संभाल दिया जाय तो अच्छा है तथा आज से हम आप से जुदा होते हैं यह सुन कर जय राम भयभीत हो गया और बीबी नानकी रोने लग गई। कहने लगी भाई जी पहले मुझे समाप्त करो, पीछे कहीं जाना। गुरु जी ने कहा कि अब तो मोदी खाने की व्यय ठीक है, कल को कोई गड़बड़ हो जाए तो तुम्हारी जिम्मेवारी पर धब्बा आयेगा। यह उचित नहीं है। जय राम ने हाथ जोड़ कर कहा कि हे गुरु देव! मैं आज तक भूल में था, मैंने आज आप को सत्य रूप से जान लिया है। मैं आप से क्षमा याचना करता हूं बहिन नानकी ने भी अपनी भूल पर पश्चाताप किया, यह सभी कार्य बाला जी देख रहे थे, कहने लगे-हे

सतगुरु! आप तो प्रत्यक्ष अवतार हो तथा आप पर कोई भी बात अप्रत्यक्ष नहीं, अप्रकट नहीं, आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करो। आप के बहिनोई तथा बहिन प्रार्थना कर रहे हैं, इन पर कृपा करो, गुरु जी ने फुरमाया हे प्यारे बाला! मैं तेरा कथन भी अस्वीकार नहीं कर सकता तथा मैं अपना विचार स्थगित करता हूं। नानकी और जय राम भाई बाले के कृतज्ञ हुए।

इस के पश्चात् १३५) एक सौ पैंतीस रुपये जो गुरु जी के नवाब की ओर बाकी थे वे प्राप्त हुए तथा एक हज़ार सात सौ रुपये और भी पेशगी मिला। इस पर नगर निवासी श्री गुरु जी की सफलता पर प्रसन्न होकर बधाई देने आये। हिन्दू मुसलमान सभी नानक जी के परीक्षा में उर्तीण होने की प्रसन्नता प्रगट करने लगे, श्री गुरु जी सदैव की भांति फिर मोदी खाना चलाने लगे, सब ने कहा हे नानक! सुनने में आया था कि आप मोदी खाना छोड़ रहे हैं, तब हम उदास हो गये थे आज फिर आप को मोदी खाने पर देख प्रसन्न हो रहे हैं, इसके पश्चात् श्री गुरु नानक देव जी की वही प्रकृति रही उसी भांति जो आया सब की मांग पूरी की तथा प्रत्येक दुखी पर दया दृष्टि करते रहे।

बोलो गुरुदेव जी की जय!

साखी गुरु जी की मंगनी की

एक दिन पखो के रंधाविआं का पटवारी जिसका नाम मूला चोना था वह सुलतान पुर में आया, उसका घर बटाले में था, वैसे तो श्री गुरु नानक देव जी के लिये अनेक स्थानों से रिश्ते के शगुण आते थे, परन्तु जहां सबंध होना हो वहीं होता है। मूले ने १५१० पंदरां सौ दस विक्रम में ब्राह्मण के द्वारा शगुण भेजा। शगुण के मिलने पर नानकी जी और जय राम जी को चारों ओर से बधाईयें मिलने लगी। जय राम

जी ने एक पत्र केसर लगा कर श्री कालू जी के पास भेजा, जिस में श्री गुरु जी की सगाई (मंगनी) का विवर्ण था। अतः एवं बधाई के साथ ही गुरु जी के माता पिता को निमंत्रण भी भेजा, कालू जी ने अपार प्रसन्नता का प्रदर्शण किया, पत्र लाने वाले को प्रत्येक दृष्टि से आदर सत्कार से प्रसन्न किया और समस्त बरादरी के नर नारी को बुला कर आनंदोत्सव किया गया, कालू पटवारी आज अपने को धन्य मानता था, अधिक क्या लिखा जाए, अत्यधिक प्रसन्नता की गई।

फिर कालू जी ने यह शुभ सूचना अपने सभी सम्बंधियों को दी, गुरु जी के ननिहाल में भी निमंत्रण पत्र लिखा और आशा प्रकट की कि आप सभी मिल कर आओ ताकि हम सब लोग सुलतान पुर इकटे ही चलें, नाना रामा और मातुल कृष्णा आदिक ने यह समाचार सहर्ष सुना, विशेष कर नानी भराई जी बहुत ही प्रसन्न हुए और सब मिल कर तलवंडी की ओर चल पड़े, यह तमाम तलवंडी में आकर श्री गुरु जी से मिले, आदर सत्कार आदिक के पश्चात् माता मही (नानी) भिराई, मातुल कृष्णा, माता महा राम लुभाया इसके अतिरिक्त श्री कालू श्री लालू और माता तृप्ता इसके साथ नौकर रामा तथा चार और पुरुष सभी मिलकर मनुष्य (नर-नारी) सुलतान पुर की ओर रवाना हुए। अब राय बुलार से छुट्टी लेने के लिए पटवारी श्री कालू जी आए। राय ने पूछा- कालू आज क्या बात है। तुम प्रसन्न दृष्टिगोचर होते हो तब श्री कालू ने अपने पुत्र नानक देव जी की सगाई की गाथा सुनाई। यह सुन कर राय बुलार ने कहा-हे कालू! जाओ बेशक परन्तु नानक से बच कर रहना क्योंकि वह तो साधु वृत्ति का जीव है मालूम नहीं हो सकता वह किस समय क्या कुछ करने के लिये उद्यत हो जाय। कालू जी ने कहा- श्रीमान् आप मुझे उत्साहित करो क्योंकि आप को परमात्मा ने मान दिया है तब राय बुलार ने मुबारकबाद दिया और कहा- अल्लाह मेहर करे।

मेरी ओर से श्री गुरु नानक देव जी को गले लगाना और सम्मान करना तथा दोनों हाथ बांध कर बंदगी कहना तथा जय राम जी को भी मेरी सलाम दुआ कहनी। बीबी नानकी को भी प्रेम भरी आर्शीवाद के साथ मुबारक अर्ज करनी।

राय से छुट्टी लेकर वह सभी सुलतान पुर पहुंचे तथा परमानंद पलते के घर में आ गये। श्री गुरु नानक देव जी को इनके आने की सूचना मिली यह भी सुना कि मर्दाना डूम भी इनके साथ मंगल गीत गाने के लिए आया है।

सुनते ही श्री गुरु नानक देव जी मोदी खाने से उठ कर इधर आये और आते ही प्यारे पिता जी के चरणों से लिपट गये। अन्य सब को आदर पूर्वक मिले। राय बुलार का कुशल मंगल पूछा बजुरगों के चरण छूह कर श्री गुरु नानक ने आर्शीवाद प्राप्त किया। राय बुलार का प्रेम सन्देश श्री गुरु नानक देव जी ने सुना।

उस समय एक विचित्र घटना घटी कि सब ने प्रेम पूर्वक नानक जी के सिर पर वारना किया परन्तु लेने वाला कोई नहीं था। तुलसां बांदी आज्ञा पा कर गई और कुछ मांगने वाला याचक लोग लेकर आ गई। उस समय सभी ने वारना किया। रुपंये पैसे आदिक दिल खोल कर याचकों को दिये गये। किसी ने बीस किसी ने दस तथा किसी ने पांच रुपये करके याचकों को दिये।

संवत् १५५० मार्ग शीर्ष शुक्ला पंचमी को जब कि गुरुवार का दिन था तब सुलतान पुर से चले-कालू, रामा, परमानंद पलता श्री जय राम जी का पिता तथा जय राम ने निधे ब्राह्मण को रंधावे ग्राम में रवाना किया। पखो के रंधावे का चौधरी जीता रंधावा था, उस का पटवारी मूला चोणा था उस के घर जाकर निधे ब्राह्मण ने खबर की। मूले ने कहा-नमस्कार पंडित जी! प्रार्थना की कि आप का आना कैसे

हुआ? पुरोहित निधे ने कहा-मैं सुलतान पुर से आ रहा हूं। जय राम जी ने कहा है कि मूले चोणे को सूचना दे दो महिता कालू, लालू, रामा कृष्णा जय राम यह सभी आ रहे हैं। मूले ने कहा मेरे अहोभाग्य जो इन लोगों का पदार्पण हुआ है। इतने में ऊपर लिखे सभी लोग पखो की ग्राम आ गये, फिर बधाई के पश्चात् सभी कार्य किये गये, आनंद मंगल की द्रष्टि होने लगी दोनों ओर से प्रसन्नता का अपार प्रदर्शन हुआ फिर विवाह के दिन अर्थात साहे का दिन नियत करने को कहा तथा यह भी कहा कि लड़की युवा है और लड़का भी युवा है इस लिये विवाह का दिन भी शीघ्र ही नियत होना उचित है तब मूले ने विश्वास दिलाते हुए एक वर्ष की अवधि मांगी तथा अन्य शगुन आदिक के पश्चात् लोग सुलतान पुर की ओर लौट पड़े।

सुलतान पुर में बीबी नानकी जी ने फिर अधिक से अधिक उत्साह पदर्शन किया, सभ स्त्रियें प्रसन्नता भरे गीत गाने लगीं जब कालू जी अपने साथियों के साथ तलवंडी को तैयार हो गये तब मर्दाने रबाबी ने कहा, हे श्री नानक देव! आप की ओर से हमें भी बधाई मिलनी उचित है। तब गुरु जी ने कहा हे मर्दाना! तू अपने मुख से जो लेना चाहता है मांग। मुझे तो आप के साथ बहुत सा काम है तब मर्दाने ने कहा-आप जो कुछ उत्तम वस्तु देना चाहो सो दे दो, गुरु जी ने कहा भाई उत्तम वस्तु लेकर तुझे प्रसन्नता के स्थान पर उलटा कष्ट होगा। मर्दाने ने कहा कि उत्तम वस्तु से दुख नहीं हो सकता। गुरु जी फुरमाने लगे-हे मर्दाना! तुम लोग मिरासी हो अतः मध्य फल (जो अभी लाभदायक होवे) चाहते हो तुम्हें इतना ज्ञान नहीं होता कि कौन सी वस्तु सदा के लिए लाभदायक है तब मर्दाने ने कहा जो कुछ दोगे वह मुझे स्वीकार होगा तब गुरु जी ने प्रसन्न होकर अपना चोला उतार कर मर्दाने के गले में डाल दिया और कहा मर्दाना हमारी एक बात मानो। तब मर्दाने ने कहा-आप फुरमायें। गुरु जी कृपा

दृष्टि से देख कर कहने लगे- हे मर्दाना, तूं बेदी जाति का मरासी नियत्त रहा है और किसी भी जाति से कुछ नहीं मांगना, मर्दाने ने कहा मुझे स्वीकार है परन्तु आपके हृदय में हमारा विशेष ध्यान सदैव होना चाहिये फिर गुरु जी ने कहा, हे मर्दाना! सब का रक्षक वह परवरदिगार है। तब मर्दाने ने गुरु जी के पवित्र चरणों में प्रणाम किया, तत पश्चात् सब अपने घर को गये तथा गुरु नानक देव जी उसी प्रकार प्रत्येक की इच्छा पूर्ण करते रहे।

फिर शनैः शनैः गुर जी की प्रशंसा सारे सुलतान पुर में तथा ईर्द गिर्द के नगरों में होने लगी, लोग कहते थे कि जय राम का साला सब की इच्छा पूर्ण करता है, कुछ नीच प्रकृति के लोग गुरु जी की निंदा जय राम के पास आकर करते थे, सुन जय राम इस तेरे साले ने तेरी बेइज़ती का कारण बनना है, नवाब के स्वभाव को तुम जानते हो हम आपके मित्र हैं इस लिए सुचेत करना अपना कर्तव्य समझते हैं, नानक की चाल यही है मोदी खाना बर्बाद करने पर उसने कमर बांध रखी है। जय राम जी ने जब इस प्रकार लोगों से सुना अक्षर नानकी जी को कह दिया। नानक जी ने कहा, स्वामी जी! आप किसी के कहने पर विश्वास न करें।

नानकी जी बहुतेरा कहती परन्तु जय राम के हृदय में श्री गुरु नानक देव पर विश्वास न होता था। एक दिन गुरु जी ने जय राम को आकर स्वयं ही कह दिया कि-मैं चाहता हूं कि नवाब साहिब हिसाब देख लें, क्योंकि बहुत दिन व्यतीत्त हो चुके हैं तब जय राम ने नवाब से प्रार्थना की कि आप अपने मोदी खाने का हिसाब देख लें। नवाब की आज्ञा से निधे ब्राह्मण ने जाकर गुरु जी से कहा कि आप को श्री जय राम तथा नवाब साहिब याद करते हैं तब गुरु जी तमाम वही खाता लेकर नवाब के पास आ गये। नवाब ने श्री गुरु नानक देव जी का आदर और सत्कार किया। नवाब ने कहा आप का नाम क्या है? तब गुरू

जी ने उत्तर दिया, मेरा नाम नानक निरंकारी है, नवाब ने कहा-हे जय राम आप इसके अर्थ कहो, क्योंकि मैंने कुछ भी नहीं समझा तब जय राम ने सीस झुका कर कहा, हे हजूर! जिसका रंग रूप नहीं जिसका कोई सानी नहीं जो अपने जैसा सिरफ आप ही है जो सर्वशक्ति का मालक है, यह कहता है कि मैं असकी स्तुति करने वाला एक नाचीज मनुष्य हूं। यह सुन कर नवाब हंसने लगा और कहने लगा हे जय राम अभी इसकी शादी की है या नहीं, जय राम ने कहा इसका विवाह निकट ही होने वाला है। नवाब ने कहा-कि इसकी ज्ञान की बातें तभी तक है जब तक शादी नहीं होती, जब इसकी औरत घर में आयेगी तब इसकी यह अकल जो अब है वह नहीं रहेगी, बड़े बड़े फकीर जब औरत का मुंह देखते हैं तब सारे ज्ञान ध्यान भूल जाते हैं यह सुन कर जगत बंधु श्री नानक देव जी उसको उत्तर देते हैं। हे नवाब साहिब! जिसके मन में उस अकाल पुरुष का सत्य प्रेम नहीं है आप उसकी बातें करते हो जिन के मन की अगाध श्रद्धा ने उस सर्वशक्तिमान को सर्वव्यापक जान तथा मान लिया है उनका बेचारी स्त्री क्या कर सकती है यह मल मूत्र की पूरती नारी उन ईश्वर के सच्चे भक्तों पर प्रभाव नहीं डाल सकती। नवाब ने श्री नानक जी को ईश्वर का सच्चा सेवक देख कर अपनी बात का पहिलू बदल लिया, नवाब ने कहा-हे नानक! मैंने सुना है कि तुम हमारे मोदी खाने से बहुत सी वस्तु निकाल निकाल कर लोगों में मुफ्त बांटते रहते हो अर्थात् मोदीखाना लुटा रहे हो, इतना स्मर्ण रहे कि मेरा नाम दौलत खान लोधी है। श्री नानक देव जी ने कहा-नवाब साहिब, आप अपने मोदीखाने को अच्छी प्रकार देख लें यदि कुछ हमारा बाकी निकले तो दे दीजिये यदि न देना चाहे तो भी हमें चिंता नहीं, हां अगर आप का कुछ नुकसान हुआ हो तो हम से उसी समय ले सकते हो।

एक अफसर जिसका नाम जादो राव था उसे नानक जी का हिसाब

देखने पर लगाया गया। क्योंकि लोग कहते थे कि इस नानक देव ने मोदी खाने को बर्बाद करने पर कमर बांध रखी है। जादो राव की पहिले भी कुछ श्री गुरु नानक देव से अनबन थी। दिव्य ज्योति श्री नानक तो किसी के साथ विरोध नहीं करते थे परन्तु अकारण विरोध करने वाले भी इसी संसार में उत्पन्न होते हैं। ईश्वर के परम उपासकों को यही पहिचान होती है कि वह किसी के साथ द्वेष नहीं रखते।

जादो राव उन्हीं कलियुगी जीवों में से एक था जो श्री गुरु नानक देव जी से अकारण वैर रखता था। उसने जब अपनी नियुक्ति श्री नानक देव जी के हिसाब की पड़ताल पर लगी तो मन में प्रसन्न हुआ। उसने मन में सोचा कि नानक ने हमें रिश्वत के रूप में कभी एक फूटी कौड़ी भी नहीं दी। यह तो मांगने वाले साधुओं को खिलाने पिलाने का शौकीन है अब मैं इससे उस गुस्ताखी का बदला लूंगा।

यह सोच कर हिसाब को भली प्रकार देखने तथा समझने लगा बात बात पर नुकताचीनी होती थी। पांच दिन हिसाब होता रहा जादो राव ने बहुत ज़ोर लगाया कि कहीं पर श्री नानक देव की न्यूनता देखी जाय परन्तु सत्य के आगे चतुराई को कोई स्थान नहीं मिलता। अंत में तीन सौ इक्कीस (३२१) रुपये श्री गुरु जी के नवाब की ओर बाकी निकले। अब जादो राव अति लज्जित हुआ।

उधर नवाब को पता चला कि हिसाब समाप्त हो गया है तब जादो राव को बुला कर पूछा गया। नवाब ने कहा-हे जादो राव! हिसाब की बात सुनाओ। जादो राव ने कहा कि हजूर हिसाब बिलकुल ठीक है। परिणाम रूप श्री नानक देव जी के आप की ओर अर्थात सरकार की ओर (३२१) तीन सौ इक्कीस रुपये शेष निकलते हैं जो श्री नानक ने आप से लेने हैं। नवाब ने कहा 'हैं' आप कहीं भूलते तो नहीं भाई हमारे रुपये नानक की ओर निकलते होंगे। जादो राव ने अदब के साथ

कहा-नहीं हजूर! नानक ने दरे दौलत से (३२१) तीन सौ इक्कीस रुपये शेष अपने लेने हैं। यह सुन कर नवाब क्रुधत होकर कहने लगा-अरे जादो! तुम लोग तो मुझे प्रतिदिन यही कहा करते थे कि नानक मोदी खाने को बर्बाद कर रहा है। मगर आज तो उसके (३२१) सरकार की ओर शेष हैं। इतना कह कर भवानी दास कोषाध्यक्ष (खजांची) को बुलाया गया और हुक्म दिया कि सब से प्रथम नानक जी के (३२१) तीन सौ इक्कीस रुपये दे दिये जायें तथा तीन सौ रुपये और उसे दे दिये जायें।

जब नानक देव को (३२१) रुपये मिल गए और रुपये लेकर श्री जगदाधार नानक घर को आ रहे थे तो उस समय जय राम और बीबी नानकी प्रतीक्षा में थे, रुपयों की थैलियां के साथ श्री नानक जी को देख कर बहिन बहिनोई के आनंद की सीमा न रही। हिसाब की परीक्षा में श्री नानक देव जी को उत्तीर्ण सुन कर सभी सज्ञनों को विशेष हर्ष हुआ और जय राम तथा नानकी जी को लोग बधाई देने लगे।

नानकी जी ने जय राम जी से पूछा कि हिसाब का परिणाम सुनाओ, जय राम ने कहा कि मैं हैरान हूँ कि तमाम लोग कहते हैं कि नानक मोदी खाना लुटा रहा है तथा साधुओं के लिये मोदीखाने का दरवाजा खुला रहता है परन्तु अचम्भे की बात है कि (३२१) तीन सौ इक्कीस रुपये नानक जी ने सरकार से बाकी लेने निकले हैं तथा प्रसन्नता से नवाब की ओर से तीन सौ रुपया और भी दिया गया है।

अपने भाई श्री नानक देव जी की प्रशंसा सुन कर बीबी नानकी जी अत्यंत प्रसन्न हुई।

साखी गुरु जी के विवाह की

इस के पश्चात् संसार के श्री गुरु नानक देव जी फिर मोदी खाने का काम सुचारु रूप से करने लगे।

तब एक पत्र श्री गुरु जी के सुसराल से आया जिस में आषाढ़ शुक्ल पक्ष की सप्तमी का विवाह नियत किया हुआ था यह विवाह पढ़ कर जितनी प्रसन्नता नानकी जी को हुई वह कथन से बाहर है। यह शुभ सूचना तलवंडी में श्री कालू जी को दी गई। पताशे ओर पांच रुपये निधे ब्राह्मण के हाथ तलवंडी में पहुंच गए। कालू जी के तथा अन्य सम्बन्धियों के आनंद की सीमा न रही। कालू जी ने अपने सुसराल में वा अन्य सम्बन्धियों को सूचना पत्र भेज दिये। अनेक प्रकार से इस प्रसन्नता का प्रदर्शन किया गया।

तत् पश्चात् श्री कालू जी ने राय बुलार के निकट जा कर विवाह की सुचना दी और कहा कि हजूर! आप के दास नानक का विवाह आषाढ़ शुक्ल पक्ष की सप्तमी को नियत हुआ है शब्द सुन कर राय बुलार को अत्यंत क्रोध हुआ, उसने श्रद्धा से मिले हुए क्रोध के साथ कहा-हे कालू! तू अल्प बुद्धि हैं तू संसार के पिता को अपना पुत्र मान रहा है, तेरे यह शब्द हैं कि आप के दास नानक का विवाह है, सुन कर मन को ठेस लगी है, पटवारी साहिब! श्री नानक देव जी के चरणों में अनेक दास मेरे जैसे हैं, वह तो अखिल विश्व स्वामी है। कालू जी को कुछ ज्ञान हुआ और क्षमा याचना की।

राय ने कहा कि हे कालू! तू भी मूंह का कड़वा और जैसे को तैसा मिले। मैं मूले को भी जानता हूं वह भी धैर्यविहीन पुरुष है। तुम दोनों कुड़म एक जैसी बुद्धि के स्वामी हो, परमात्मा ही सब काम ठीक करे तो करे, तब कालू जी ने कहा! हजूर मेरा एक ही पुत्र है, मैं उस के

विवाह में कोई ऐसे शब्द क्यों कहूंगा जिसमें विग्नों का भय हो। राय ने कहा, अच्छा आप लोग सुलतान पुर को जाओ। अतः श्री नानक देव के चरणों में मेरा सलाम कहना और सत्कार करना।

तब श्री कालू जी के साथ-लालू जी, पर्स राम, इंदर सेन फिरंदा, जगत मल्ल, लाल चंद, जगत राय, जट्ट मल और इन के अतिरिक्त जितने भी बेदी उपस्थित थे सभी तैयार हो गये और माझे से रामा जी आदिक भी आ गये, सभी सुलतान पुर में पहुंच गये।

जब विवाह के दिन में पांच दिवस रहे, तब विवाह का कार्य प्रारम्भ हुआ, अतः बारात सुलतानपुर से आनंद पूर्वक विदा हुई, श्री मूले जी को सूचना देने के लिए निधे ब्राह्मण को भेजा गया। कहा गया कि मूला जी को जाकर पता दो कि सुलतानपुर से बेदीयों की बारात आ गई है। निधा जी गये तथा जाकर आर्शीवाद दिया और कहा कि हे जजमान! बाहर बाग में बारात ठहरी हुई है। मुझे श्री परमानंद जी ने आप के पास सूचना के लिए भेजा है।

मूला जी ने अपनी बरादरी को सूचना दी तथा स्वयं अजीते रंधावे के पास गया जो पखो के का चौधंरी था। मूला जी ने उसे कहा कि चौधरी जी बेदीयों की बारात बाग में ठहरी हुई है। आप भी स्वागत के लिए चलो, उस चौधरी के पिता ने अपने पुत्र को कहा कि आप जाओ, मैं वृद्ध हूं जाना कठिन है तुम जाकर मूला जी के कथनानुसार सब काम करो, हे मूला जी मेरा शरीर शिथिलता होने से जा नहीं सकता। तब चौधरी जी ने कहा मूला जी मैं आप के स्वभाव से परिचित हूं। बारात ऊंची कुल की है अर्थात बेदी लोग हैं कोई शब्द ऐसा नहीं कहना जिस से हम लोगों की निंदा हो, मैंने सुना है कि लड़के का पिता जो पटवार का काम करता है वह भी जबान का कड़वा है तथा परम्मनन्द जी बहुत ही बुद्धिमान सुन रखे हैं। आप की ओर से उनका सन्मान

तथा सत्कार हो, उचित है।

यह सुन कर मूला जी ने कहा कि हे चौधरी जी हमें तो उस परमात्मा का आश्रय है तथा पश्चात् निधे ब्राह्मण को कुल रीति करके विदा किया और आप सभी मिल कर बारात के स्वागत को चले तथा पूर्व रीति अनुसार बटेहरी का सामान भी साथ लिया। बारात को पहली रोटी कच्चा अन्न देने की प्रथा पंजाब में थी जिसे बटेहरी कहते हैं, फिर आदर सत्कार के सहित बारात को नगर में प्रवेश कराया गया, कालू और जय राम जी का पिता रुपये पैसे श्री नानक देव जी के सिर से वार कर फैंकते जा रहे थे, एक अच्छे स्थान पर बारात को ठहराया गया। वर को देख कर समस्त नर नारी अपार प्रसन्न हुए, सभी लोग मूला जी की प्रारलब्ध की सराहना करते थे, इंद्रादिक देवता तथा उनकी देव गनायें विवाहोत्सव देखने को वहां आ गए, जिस समय वर को घोड़ी पर सवार करके बारात गई उस समय का दृष्य देखेने से ही संबंध रखता था, उसे लेखनी से लिखना घृष्टता है, क्योंकि जगत पिता का विवाह था, श्री गुरु नानक देव जी की आरती उतारी गई, ब्रह्मा ने वेद उच्चारण किये, इसी प्रकार सभी देवगण मंगल कार्य करने लगे। आषाढ़ शुक्ल पक्ष की सप्तमी को प्रातः काल श्री गुरु नानक देव जी महाराज का विवाह हुआ। श्री सुलखणी जी को विधि पूर्वक स्नानदिक करवा कर खारों पर श्री गुरु जी के साथ बैठाया गया। अभी पांच घड़ी रात्रि शेष थी जब लावां शुभ कार्य उत्पन्न होने लगा।

राग सूही महला १॥ श्री मुखवाक॥

राम पहिलड़ी लाउ सतिगुर सतजुग सालिआ बलिराम जीउ॥
त्रय गुण बिस्थार अनहद वाजिआ बलिराम जीउ॥
वजाइआ अनहद समुंदर माथिआ लछ कउला निकली॥
तेतीस करोड़ छोडिकै आइ ठाकुर कउ मिली॥
विआह ठाकुर चरन लाई ओड़ भगत निवाहिआ॥

अरदास नानक लाउ पहली भला सतिगुर साजिआ॥ १॥
राम दूसरी लाउ त्रेता जुग वरताइआ बलिराम जीउ॥
धंन धंन संत पिआरे जिन हरि नाम धिआइआ बलिराम जीउ॥
संत उपजे नाम हरि का मिल राम पिआरिआ॥
गंभीर धनुष रघुपति चढ़ाइआ परस राम का बलिहारिआ॥
विआह सीता ग्रहि महि आणी ओड़ भगत निबाहीआ॥
अरदास नानक लाउं दूजी सीता राम विआहीआ॥ २॥
राम तीजी लाउ जुग दुआपर वरताइआ बलिराम जीउ॥
सरब सखीआं सहिज सेती रुकमणी मंगल गाइआ बलिराम जीउ॥
रुकमणी मंगल गाइआ सहिज सेती ससपाल राजा मारिआ॥
बचन पूरे दोस धरिआ चकर संख बिदारिआ॥
विआह रुकमणी ग्रह में आणी ओड़ भगत निवाहिआ॥
अरदास नानक लाउं तीजी रुकमणी कृष्ण जा वर पाइआ॥ ३॥
राम चौथी लाउं करते कलयुग प्रगटाइआ बलिराम जीउ॥
जिना हर सिउ प्रीति नाही ते संग भरमे भाइआ बलिराम जीउ॥
माइआ ते लागै भरम जागे सगल वजहु तिन घाटिआ॥
नाम दान इशनान नाही कीआ जम का पंथ नहीं काटिया॥
निह कलंकी आप होआ छपहि नाहिं छपाइआ॥
अरदास नानक लाउं चौथी प्रभ सभना माइआ॥

इस के आगे मंगल राग सूही में प्रारम्भ हुआ।

श्री मुखवाक मंगल॥

राम पहिलड़े मंगल हरि हरि नाम धिआईऐ॥
मेरे मन तन सिरी रंग अगर चंदन घस लाईऐ॥
अगर चंदन घाम लाइ कपूर कुंगू ढोईऐ॥

राम नाम उचरत रसना सदा हरि रस गाईऐ॥
घस लगाईऐ अगर चंदन कुंगू प्रेम प्रभ का पाईऐ॥
कुरबान कीता गुरू विटहु तिस एक काज रचाईऐ॥ १॥
राम दूजड़े मंगल काज सुहाइआ॥
उतसाह होया सोभ सेती फुली मांग भराइआ॥
फुली तां मांग भराईऐ आप करता पुरुष विआहणु आइआ॥
सुर नर गण गंधरभ सभी कातक देख बिसमाइआ॥
कुरबानु कीता गुरु विटहु जिस एहु काज रचाइआ॥
बिनवंत नानक सुणहु संतहु सब सफलिओ काज सुहाइआ॥
राम तीजड़े मंगल पीड़त जाण लिआइऐ॥
इंदर पुरी विच जंमी ता जण सुरगों जीन मंगाइऐ॥
गल सच्च गंढी पाइ ताजण तगाम तुरत कराइऐ॥
अजब सोभा पाइ ताजण ठाकर आप सजाइऐ।
जित चढ़ै श्री रंग आप सुआमी अजब सोभ मोहाईऐ॥
बिनवंत नानक तीजड़े मंगल पीड़ ताजण लिआईऐ॥ ३॥
राम चौथड़ मंगल सतिगुर बिआहुण आइआ॥
एह अजब दरस अपार तेरिआं संतां के मन भाइआ॥
तेतीस करोड़ी सब संगत नाल गण पत आइआ॥
सद ब्रह्मे सारदाइक मोतीआं चौक पुराइआ॥
धरो खारे देहु फेरे सतिगुरू विआहुण आइआ॥
बिनवंत नानक मंगल चउथे सरब काज सुहाइआ॥ ४॥

श्री गुरु नानक देव जी का विवाह निरविघ्न संपन्न हुआ। बाले ने कहा मैं कहने लगा हूं वह अपने नेत्रों से देखी हुई बात है। अनेक बातें सुन कर श्री गुरु अंगद जी को वैराग्य होता रहा, जिस समय लावां का समय आया तब गुरु जी ने कहा, भाई बाला! तुम हमारे निकट

ही रहो। मैंने कहा मैं तो आप के निकट ही हूं जो कुछ छुप कर खर्च हुआ है वह तो मेरे द्वारा ही हुआ है अंत तो गत्वा विवाह कार्य मंगलमय तथा आनंद पूर्वक व्यतीत हुआ। बारात तीन दिन ठहरी रही, चतुर्थ दिन गुरु जी डोली लेकर बारात के सहित सुलतान पुर आए उस समय कालू जी और लालू जी ने कहा कि नानक जी और नव विवाहिता कन्या को अब तलवंडी में जाना उचित है। परन्तु नानकी जी और जय राम चाहते थे कि नानक जी तथा कन्या यहीं सुलतान पुर में ही निवास करें तब परमानंद ने कहा सुनो मूल चंद जी यह प्रथम वार है अब तो इनको अपने घर तलवंडी में जाना उचित है, क्योंकि श्री माता जी ने भी शगुण आदि करने हैं फिर नानक जी ने यहां ही रहना है क्योंकि मोदी खाने की देख रेख करनी है अंत डोली के सहित गुरु जी तलवंडी को चले। गुरु जी ने कहा बाला जी! जब तक हम नहीं आते तब तक तुम काम चलाओ, बाले ने कहा मैं एक अशिक्षत जाट हूं मैं मोदीखाने का काम चलाने में असमर्थ हूं। श्री गुरु जी ने कहा-हे बाला! सब काम परमात्मा करेगा हम लोग एक मास तक लौट आयेंगे। बाले ने कहा-मैं तो आप की आज्ञा पालन करने वाला हूं परन्तु मेरा मन चाहता था कि मैं आप की लीला जो तलवंडी में होगी उससे दूर न रहूं, वह देखने की इच्छा थी परन्तु आप की आज्ञा सिरोधार्य है।

एक महीने के पश्चात् श्री गुरु जी सुलतान पुर में आ गए बहिन बहनोई को प्रेम सहित मिले। यथोचित सन्मान हुआ। माता चोणी जी ने अपनी ननद के चरण स्पर्श करके आर्शीवाद प्राप्त किया। दूसरे दिन गुरु जी मोदी खाने में विराजमान हुए।

रीति के अनुसार मूल चंद जी एक दिन आकर चोणी जी को उनके मायके ले गये। उधर गुरु जी मोदीखाने में तुला पकड़ कर लोगों को प्रत्येक वस्तु तोल कर देने लगे तथा बाला जी पकड़ पकड़ कर देते थे।

गुरु जी अपनी प्रकृति के अनुसार साधु समाज की बिना मूल्य ही सेवा करते थे। अल्प बुद्धि लोग कहते थे कि नवाब का मोदीखाना कुछ दिनों का खेल है नानक इसे बर्बाद कर देगा कोई कहता भाई जब हिसाब होता है तब एक पाई का भी नुकसान नहीं होता नानक के पास परस का वट्टा है जिस में कमी पूरी हो जाती है, इत्यादि।

इधर श्री गुरु नानक देव जी अपने घर में प्रत्येक जरूरी वस्तु उदारता से भेजते थे, अन्न वस्त्रादिक किसी भी वस्तु के देने में कोई संकोच नहीं था। कुछ समय के पश्चात् माता चोणी जी भी सुलतान पुर आ गये। गुरु जी ने चोणी जी को सभी वस्तु भेजना अपना कर्तव्य जाना था, परन्तु संसारी मोह गुरु जी में न होने के बराबर था। माता सुलखणी जी अपनी ननद नानकी जी को यह उपालम्भ देती थी कि आपके भाई में मोह की न्यूनता है। वे साधु स्वभाव के पुरुष हैं, वैसे तो मुझे प्रत्येक प्रकार से सुख हैं तथा एक महापुरुष की पत्नि होने का भी गर्व है परन्तु उनके भीतर पत्नि प्रेम की न्यूनता देख कर मन को कुछ कष्ट होता है जिसे मैं आपके समक्ष ही कह सकती हूं।

माता सुलखणी जी मूले चोणे की पुत्री होने के नाते उसको चोणी भी संबोधन किया जाता है। चौणी जी के मन को क्षोभ देख कर नानकी जी अधिक से अधिक दुलार करती थी फिर छोटी भरजाई वैसे भी दुलार की इच्छुक होती है। गुरु जी महाराज जिस दिन प्रभु नाम की मस्ती में ओत प्रोत होते थे तब आप को घर आना भी विस्मरण हो जाता था।

जब कभी मूला जी अपनी पुत्री को मिलने आते थे तब सुलखणी जी उपालम्भ भरे वाक्य कहती थी कि आप ने मुझे कहां दे दिया जिसको आप ने मेरा पति बनाया है वह तो कई कई दिन घर में भी नहीं आते और पूर्ण रुपेण बात भी नहीं कहते। तब मूला जी जय राम से झगड़ते तथा कहते थे कि मैंने तुम्हारे ही आग्रह से अपनी कन्या को दुखी किया

है। जब कभी नानक जी से मूले का अथवा उसकी स्त्री जिस का नाम चंदो रानी था मिलाप होता था तो सास ससुर नानक जी पर क्रोध की बौछार करते परन्तु सतगुरु जो प्रभु मस्ती में ओत प्रोत होते बोलना तक भी पसंद नहीं करते थे, प्रत्येक मास के पश्चात् मूला और चन्दो रानी अपनी पुत्री सुलखणी को मिलने आते थे तथा मन का क्रोध निकाल कर ही दम लेते थे, चन्दो रानी बीबी नानकी जी से लड़ाई झगड़ा करती थी, कहती सुन नानकी! तुम लोगों को परमात्मा का भय नहीं है यदि तू अपने भाई को समझाने वाली हो जाये तो मेरी पुत्री पति प्रेम से कभी वंचित न रहे। तेरा ही दोष है जो हमें दुखी कर रही है तू अपने भाई को कुछ नहीं कहती और जय राम अपने साले को कुछ कहने के लिये तैयार नहीं, यह काम कैसे बने?

नानकी जी ने आदरपूर्वक शब्दों में कहा, मासी जी! मेरा भाई न तो चोर न द्यूत कर्म करता है तथा न ही वह परस्त्री गामी है और न कोई और बुराई करता है फिर मैं उसे कहूं तो क्या कहूं। हां दान करता है। साधु संत की सेवा तथा ईश्वर भक्ति करने वाले को मैं तथा उसका बहिनोई क्या कहें?

हे मासी जी, यदि आपकी कन्या नंगी भूखी तथा वस्त्र और आभूषणों से वंचित रहे तो तब आपका उपालम्भ उचित है तथा भरजाई का भी क्रोध करना उचित है जिस नारी का पति प्रत्येक दृष्टि से शुभ काम करने वाला हो तो फिर वह स्त्री दुख को अनुभव करे तो यह उसकी प्रालब्ध का दोष है उसे तो हर्ष और गर्व का अनुभव होना उचित है प्रत्येक सुख होते हुए तथा प्रत्येक प्रकार का दुलार करते हुए भी यदि हम बुरे हैं तो यह आप की इच्छा पर निरभर है हम लोग आप के अधिक बोलने का बुरा नहीं मनाते।

हम तो सदैव आपके ऋणि हैं इस प्रकार उत्तर सुन कर गुरु जी

की सास वहां से उठ कर चली गई।

फिर चंदो रानी अपनी कन्या के पास आई तथा कहने लगी तेरी ननद ने तो मुझे लज्जित करके भेजा है मुझे तो उत्तर देना कठिन हो गया था। सुलखणी जी ने कहा-माता जी! मुझे खान पान वस्त्र तथा आभूषण आदिक की तो कोई कमी नहीं बिना मांगे प्रत्येक वस्तु प्राप्त होती है तथा काम करने वाले अनेक दास दासियें हाथ बांधे रहते हैं, दुलार की तो कोई न्यूनता नहीं है, यदि कष्ट है तो यह कि मेरे पति वैसा मोह नहीं करते जैसे अन्य पुरुष किया करते हैं, अर्थात उपराम से रहते हैं, बस यही मुझे दुख है।

यह सुन कर चंदो रानी फिर नानकी जी से मिली तथा जो कुछ सुलखणी जी को कष्ट था वह कहा, यह भी कि नानक देव बहुत बहुत दिन अनुपस्थित रहता है।

नानकी जी ने कहा, मासी जी! मैं सत्य कहती हूं कि भाबी जी का स्वभाव भी गर्म सा है। मेरे अनेक बार बुलाने पर यदि कभी मेरे घर में आ भी जाती है तो क्रोध से भरी बातें करती है परन्तु मैं उसे छोटी भौजाई समझ कर सदैव प्रेम करती हूं। चंदो रानी ने कहा देख बीबी नानकी सुलखणी ही नहीं अपितु संसार में स्त्री जाति को पति प्रेम अवश्य चाहिये। नानकी जी ने कहा यह तो आपका कथन सत्य है ईश्वर कृपा करेंगे परन्तु अपनी कन्या को भी कुछ समझा कर जाओ जिससे उनके स्वभाव में परिवर्तन हो। पति के हृदय में प्रेम उत्पन्न करना स्त्री की पवित्र चातुर्यता है इस बात को आप ध्यान से विचारेंगे तो अक्षरषः सत्य पाओगे। फिर मासी जी, मैं तो अपने भाई नानक देव को परमेश्वर अवतार मानती हूं और मेरा भाई मेरी बात स्वीकार करेगा, जिस से भौजाई कष्ट से मुक्त हो जायेगी। इतनी बात के पश्चात् चन्दो रानी चली गई।

एक दिन श्री नानक देव जी बहिन नानकी को आ कर मिले,

प्रसन्नता पूर्वक सत्कार के पश्चात् नानकी जी ने कहा मैं आज अपने अहोभाग्य समझती हूं जो परम ज्योति रूप भ्राता के पवित्र दर्शनों से चर्म चक्षु प्रसन्न कर रही हूं तब श्री नानक देव कहने लगे बहिन जी मैं तो आपका सेवक हूं। नानकी के कहा, आप ऐसे न कहा करो। गुरु जी ने कहा आप मुझ से बड़ी हो इस लिए यही कहना उचित है। नानकी जी ने कहा इस में संदेह नहीं कि मैं आयु के दिनों से बड़ी हूं परन्तु भाई जी आप कर्तव्य में बहुत ही बड़े हो। बड़ा वही है जिस में बड़ाई पाई जाय। तब नानक जी ने एक रहस्यपूर्ण दृष्टि से बहिन को देख कर कहा, नानकी जी आप के ऊपर उस अकाल पुरुष की अपार अनुकंपा है जिस पर प्रभु कृपा होती है उसे ही ज्ञान चक्षु प्राप्त होते हैं दूसरों को नहीं। नानकी जी ने कहा कि मैं प्रभु कृपा तब मानूंगी जब आप मेरा आग्रह स्वीकार करोगे तब सर्वग्य नानक जी बोले, बहिन जी आप की प्रत्येक आज्ञा को स्वीकार करूंगा। आप इसी जन्म में ही मेरी बहिन नहीं हो अपितु पूर्व जन्म में भी मैं आप का भाई था तथा आप मेरी पूज्य बहिन थीं। फिर आप की मुझ पर सदैव कृपा रही है। मैं आपका आभा हूं। इस लिए आप की आज्ञा अवश्य मानूंगा।

श्री गुरु नानक देव जी की यह प्रतिज्ञा सुनकर नानकी जी ने कहा भाई जी आप जानते हैं कि स्त्री के लिए पति देव का केवल प्रेम ही इस लोक में आश्रय होता है। अधिक क्या कहूं। मैंने सुना है कि आप हमारी भौजाई जी को प्रेम दान नहीं देते। नानक जी ने कहा मैं आप के समक्ष प्रण कर चुका हूं अब तो तुम्हारा ही कथन करना होगा और करूंगा। अब इस बात को छोड़ दो।

नानकी जी ने कहा हे भाई जी! बहिनों के हृदय में सदैव भाई की संतान को गोदी में लेकर खिलाने का अत्यधिक चाव होता है। मैं भी आपकी संतान को गोदी खिलाना चाहती हूं। गुरु जी ने मुस्करा कर

कहा-ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण करे इतनी कह कर गुरु जी निवास स्थान को चल दिये। उस दिन से गुरु जी नियमानुसार घर में ही निवास करने लगे।

साखी और चली

जब श्री गुरु नानक देव जी बाईस वर्ष के हुए तब आप के गृह में एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम श्री चंद रखा गया। जब श्री चंद की अवस्था साढ़े चार बर्ष की हुई तब द्वितीय पुत्र हुआ। जिसका नाम लक्ष्मी दास रखा गया। वह माता के गर्भ में था।

श्री गुरु नानक देव जी नित्यप्रति एक पहर रात्रि शेष होते समय स्नान करने आया करते थे। एक दिन नानक जी ने जब नदी में गोता लगाया तो फिर बाहर नहीं निकले। इस दुखदाई घटना को देख कर कुछ लोग जो निकट ही स्नान कर रहे थे। उन्होंने नानक देव जी के डूब जाने की खबर चारों ओर फैला दी। संसार के लोग भिन्न भिन्न खोपड़ी के होते हैं वह नाना प्रकार की बातें करने लगे, कोई कहता था कि नानक बेदी यदि डूब कर न मरता तो और क्या करता। सरकारी मोदी खाने को अपना जान-कर लुटाना तो उसकी दैनिक क्रिया बनी हुई थी। अब जब हिसाब में बहुत सा अंतर दृष्टिगोचर हुआ होगा तब सिवाह आत्म हत्या के और कुछ नहीं सूझा होगा इस प्रकार की अनेक किवदंतिये होने लगी। यह घटना नवाब ने भी सुनी। बहिन नानकी और जय राम भी अत्यंत चिंतित हुए।

अकस्मात् तीसरे दिन गुरु जी उसी नदी से प्रगट हो गये, देखने वालों ने यह कहना आरम्भ कर दिया कि नानक बेदी भूत योनि पा कर आ गया है। श्री गुरु जी को नगर निवासी संदेह की दृष्टि से देखने लगे, नानक घर आ कर अभी बहिन बहिनोई को मिले ही थे तब नवाब

का सिपाही आ गया, उसने कहा कि जय राम जी! आप को हजूर याद फुरमा रहे हैं, निमंत्रण पर जय राम और गुरु जी दोनों नवाब के समक्ष उपस्थित हुए।

सवार्थी संसार की रीति के अनुसार नवाब ने जय राम जी को कहा कि मैं आज और अभी मोदी खाने की आप व्यय देखना चाहता हूं। जय राम कुछ चिंतत होने को था, तब संसार के कल्याण करता गुरु जी ने कहा-कि चलिये और आय व्यय की देख रेख कर लीजिये। अंत तो गत्वा जब मोदी खाने को देखा गया तो उसकी न्यूनता का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होना था उलटे श्री गुरु जी का मोदी खाने की ओर सात सौ साठ (७६०) रुपये बाकी निकले अर्थात मोदी खाने को सात सौ साठ रुपये का लाभ देखा गया अब नवाब ने कहा वह रुपये नानक जी के आगे रख दिये जायें। तब गुरु जी ने कहा कि यह रुपये मेरे नहीं हैं। यह तो उस परमात्मा के हैं तथा इन को निधर्नों और असहाय प्राणियों को दे दिया जाये।

इसके पश्चात् नवाब के लाख प्रयत्न करने पर भी गुरु जी परम वैराग को प्राप्त हो गये। अब मोदी खाना ही क्या घर में जाना भी छोड़ दिया।

उधर जब गुरु जी के ससुर ने सुना कि नानक साधु हो गया है तब एक पंडित जिसका नाम शामा पंडित था उसे साथ लेकर सुलतान पुर आया। इधर उधर देखने के पश्चात् श्री गुरु जी का मेल कब्रस्थान में हो गया। पंडित शामा ने गुरु जी से कहा-नानक! यह आप ने क्या स्वांग रचा है। उठो और काम करो-आगे बसंत ऋतु आने वाली है, आनंद से वंचित होना एक युवक के लिए उचित नहीं है। तब गुरु जी ने आगे का शब्द कहा-

राजा बालकु नगरी काची दुसटा नालि पिआरो॥
दुइ माई दुइ बापा पढ़ीअहि पंडित करहु बीचारो॥

सुआमी पंडिता तुम्ह देहु मती॥
किन बिधि पावउ प्रानपती॥ १ ॥ रहाउ॥

॥ अर्थ ॥ यह काया काची नगरी है। काम क्रोध लोभ मोह अहंकार यह पांचों दृष्ट हैं और दोनों आंख माता हैं तथा दोनों कान पिता हैं। इतना ही गुरु जी ने फुरमाया था तब मूला ससुर कहने लगा तुम को अपना पेट बढ़ाने की लालसा थी और अभी निराशा का पल्ला पकड़ कर तूं बैठ गया तथा गृहस्थ का बोझ भय के मारे उठाना त्याग कर भाग गया, वह सुन कर श्री गुरु जी ने आगे का शब्द उच्चारण किया।

भीतरि अगनि बनासपति मउली सागरु पंडै पाइआ॥
चंदु सूरजु दुइ घर ही भीतरि ऐसा गिआनु न पाइआ॥ २ ॥

॥ अर्थ ॥ भीतर जो अगनी है उसे तृष्णा कहा जाता है तथा पुत्र पुत्रियां वनास्पति और स्त्री धन रोज़गार सम्बन्धी तथा पुरोहित जैसे शामा पंडित यह है। चांद और सूर्य का उजाला है नाभी कमल में वह प्रकाश है। इस जीव की आंख तब खुलती है जब इसे पूर्ण गुरु मिल जाए। तब अंधेर दूर होकर ज्ञान का प्रकाश होता है। तब शामा पंडित कहने लगा-कि हे नानक! तुम्हें चाहिये कि प्रभु का यश घर में बैठ कर करो तथा पुरुषार्थ से गृहस्थ पालन करो। प्रभु सर्वव्यापक है- तब गुरु जी ने आगे शब्द उच्चारण किया-

राम रवंता जाणीऐ इक माई भोगु करेइ॥
ता के लखण जाणीअहि खिमा धनु संग्रहेइ॥ ३ ॥

॥ अर्थ॥ वह राम (ईश्वर) सब का है। पर जिस को क्षमा और धैर्य का दान देता है उसी पर उसकी विशेष कृपा होती है। यह सुन कर मूला चोणा कहने लगा-हे नानक तुम हठी और जिदी हो किसी का भी कथन नहीं मानते। तब गुरु जी ने शब्द कहा-

कहिआ सुणहि न खाइआ मानहि तिन्हा ही सेती वासा॥

प्रणवति नानकु दासनि दासा खिनु तोला खिनु मासा ॥ ४ ॥

॥ अर्थ ॥ यह रसना किसी के कहने से नहीं जानती। आठों याम इसी का साथ है। यह क्षण में तोला है और क्षण में मासा हो जाती है हे शामा पंडित जी! यदि ईश्वर कृपा करे तब रसना विषय विकारों की ओर से दूर होती है॥ १७ ॥

साखी और चली

तब मूला चोणा नवाब के पास जाकर फुरयाद करने लगा, दौलत खान के पूछने पर मूले ने कहा-मैं नानक देव का ससुर हूं तथा नानक के विरुध कुछ प्रार्थना करने आया हूं। नवाब ने मूले को कहा कि तुम्हारी क्या शिकायत है। तब मूले ने कहा- हजूर इस बार जो मेरे दामाद के सात सौ साट रुपये सरकार की ओर बाकी हैं वह सब रुपये नानक के घर में दिये जायें। नवाब ने कहा-भाई! नानक ने वे रुपये साधुओं को देने के लिये कहा है। तब मूले ने कहा नानक का दिमाग कुछ खराब हो गया है, तब यार खां वजीर से नवाब ने कहा-देखो इन रुपयों पर पूर्ण अधिकार तो नानक का है, वह जिसको कहे हम उसी को दे सकते हैं। यह कह कर नवाब ने श्री नानक देव को बुला लिया उस समय मुल्लां एक मांदरी मुल्लां को ले आया तथा मुल्ले के कहने से वह मांदरी श्री गुरु नानक पर अपनी कलाम फूंकने लगा, अंत में वह मुल्लां एक पलीता जला कर श्री नानक देव जी के नाक में उसका धुआं देने लगा। संसार के स्वामी नानक बोले-

खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ॥
नानक ध्रिगु तिना दा जीविआ जिन सचि न लागो रंगु॥

यह सुनकर वह मौलाना कहने लगा तुम कौन हो तथा तुम्हारा नाम क्या है? तब गुरु जी ने फुरमाया-

कोई आखै भूतना को कहे बेताला॥
कोई आखै आदमी नानकु वेचारा॥ १॥
भइआ दिवाना साह का नानकु बउराना॥
हउ हरि बिनु अवरु न जाना॥ १॥ रहाउ॥
तउ देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ॥
एकी साहिब बाहरा दूजा अवरु न जाणै कोइ॥ २॥
तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाइ॥
हुकमु पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप काइ॥ ३॥
तउ देवाना जाणीऐ जा साहिब धरे पिआरु॥
मंदा जाणै आप कउ अवरु भला संसारु॥ ४॥ ७॥

गुरु जी के शब्द सुन मुल्लां हैरान हो गया तथा नवाब को आकर कहने लगा, हजूर! नानक का दिमाग बिल्कुल दरुस्त है। नानक मामूली पुरुष नहीं। वह तो कोई औलिया है। नवाब ने जय राम को बुला कर कहा-हे जय राम मैंने नानक देव के रुपये अपने पास तो रखने नहीं और नानक देव ने कहा था कि यह मेरे रुपये आप गरीबों में बांट दें तथा नानक का ससुर कहता है कि यह रुपये नानक की औरत को अर्थात उसके लड़कों को दिये जायें और नानक पागल हो गया है। मगर मुल्लां ने कहा है कि नानक बिल्कुल ठीक ठाक है। अब जो कुछ कहो उस पर गौर किया जाए। जय राम यह सुन कर खामोश हो रहा। तब नवाब ने फिर कहा जय राम बोलते क्यों नहीं। वैसे अधिकार तो उसकी औरत का है मगर उसने गरीबों को देना कहा है। वैसे कानूनन नानक का पूरा पूरा हक है। तब जय राम ने कहा हजूर नानक भी तो हाजर है उससे पूछ लेना चाहिये। जब नानक को बुलाया गया तो गुरु जी ने कहा-अब नवाब से मेरा कोई काम नहीं है, मैं उनके पास जाकर क्या करूंगा? जब नौकर ने आकर कहा कि नानक आने को तैयार नहीं

तब नवाब ने हकूमत के नशे में कहा कि जाओ नानक को गिरफ्तार करके ले आओ। जब नवाब को क्रोधित हुए सुना तब नम्रता के अवतार श्री गुरु नानक देव जी नवाब के पास आ गए परन्तु सलाम नहीं किया। नानक देव ने कहा-हे नवाब! जब मैं आपके मोदी खाने में नौकर था, तब आप का था। अब मैं किसी का नौकर नहीं। मैं तो अब खुदा का नौकर हूं। नवाब ने कहा-तब तो और भी ठीक है क्योंकि आज जुमां है। चलो हमारे साथ मसजिद में निमाज़ पढ़ो तब नानक देव ने कहा-कि मैं कब इन्कार करता हूं। अब नानक नवाब के साथ निमाज पढ़ने गए। तब तमाम सुलतान पुर में शोर मच गया कि नानक देव मुसलमान हो गया है। यह सुन कर जय राम दुखी हुआ। नानकी जी अपने पति को दुखी देख कर कारण पूछा। जय राम ने कहा-कि हे नानकी! तुम्हारा भाई नवाब के साथ जुंमें की नमाज़ अदा करने मसजिद में गया है। सारे सुलतानपुर में इस बात की चर्चा हो रही है कि आज बेदी नानक इसलाम की गोद में जा बैटा है अर्थात मुसलमान हो गया है यह मेरी चिंता का महान् कारण है। नानकी जी अपने भाई का प्रभाव जानती थी, वह कहने लगी आप निश्‍िचत रहो और भोजन करो, तत्पश्चात् जय राम ने निधे ब्राह्मण को जासूस बना कर नानक देव की ओर भेजा।

कुछ समय के पश्चात् निधे ब्राह्मण ने आकर जय राम को वधाई दी। जय राम और नानकी ने वधाई का कारण पूछा। निधे ने कहा यह मेरी आंखों देखी घटना नहीं मैंने कुछ एक मुसलमानों से सुना है, जब नवाब अपने साथियों के साथ नमाज पढ़ने लगा तब नानक चुप चाप खड़ा रहा। तब नवाब ने पूछा-नानक तुम ने नमाज क्यों नहीं पढ़ी? तब नानक ने उत्तर दिया हे नवाब! तू तो कंधार में घोड़े खरीद रहा था नमाज मैं किस के साथ पढ़ता? नवाब ने कहा मैं तो यहां हूं तुम झूट बोलते हो। श्री गुरु नानक देव जी ने कहा कि आपका शरीर यहां

था परन्तु आपका दिल कंधार में था जो घोड़ों का व्यापार कर रहा था। एक काजी ने कहा देखो हजूर यह हिन्दू कितना झूठ बोल रहा है! नवाब ने कहा, नहीं नहीं झूठ नहीं बोल रहा दरअसल मेरा दिल कंधार में घोड़े खरीद रहा था। काजी ने कहा भाई नानक मैं तो यहां ही था आप मेरे पीछे नमाज पढ़ लेते। तब गुरु नानक देव जी ने कहा, आप भी तो अपने बछड़े की देख रेख में थे जो कहीं गुम हो गया है, काजी सुन कर हैरान हो गया।

निधे ने कहा-जय राम जी इस प्रकार नानक देव ने अपनी लीला का प्रदर्शन किया तथा नमाज नहीं पढ़ी। तब जय राम से कहा बस मैं तो इतनी लीला ही देख कर आया हूं और नानक देव अभी वहां ही है। नानकी ने जय राम से कहा-हे पति देव! आप चिंता न करें, नानक अभी अभी आने ही वाला है, इतने में गुरु नानक जी आ गये। तब नानकी ने कहा मेरे भाई का रक्षक वही है जिसे वह दिन रात स्मरण करता रहता है। जब नानक जी जय राम जी को मिले तब नानकी और जय राम जी को बहुत ही प्रसन्नता हुई। तब जय राम ने पूछा कहो नानक देव! कैसे गुजरी? तब नानक जी ने तमाम बात सुना दी। जो कुछ निधे ने कहा था, वही गुरु जी ने सुनाया और कहा कि मैंने नवाब के कहने पर नीचे लिखा शब्द कहा था-

मथा टेके ज़िमीं पर मन उडे असमान॥
घोड़े कंधार खरीद करे दौलत खान पठान॥

तब मेरे सत्य बोलने की दाद सब ने दी। काजी और नवाब ने मेरा कथन सत्य माना।

फिर नवाब ने मेरे रुपये के बारे कहा-कि तुम्हारा ससुर शिकायत करता है, कहता है कि रुपये नानक की औरत को दे दो, परन्तु तुम कहते हो गरीबों को बांट दो, मैंने कहा कि मैंने तो जो कुछ कहना था कह चुका

हूं। अब तुम्हारी जैसे भी इच्छा हो करो। तब नवाब ने कहा कि मेरे विचार में यह है कि आधे रुपये तो आप की औरत को दे दिये जाए और आधे गरीबों को खिला दिये जाएं, मैंने कहा जैसे आपकी इच्छा हो करो, नानकी जी ने कहा, भाई जी! जो कुछ आपकी इच्छा है वही ठीक है। तब जय राम ने कहा कि हे नानकी! तू एक महापुरुष की बहिन है तथा तुम पर उसका प्रभाव अधिक है। हमें उतना ज्ञान नहीं हो सकता। असल बात तो यह है कि धन्य है वह परमात्मा और धन्य है श्री गुरु नानक देव तथा हे नानकी! हम भी धन्य हैं जिनका सम्बन्ध आप के साथ है। तब मूले के साथ चंदो रानी जी उस जगह आई। गोदी में लक्षमी दास था तथा श्री चंदर उस समय चार वर्ष तथा ९ मास का था।

साखी और चली

जब संवत् १५५६ विक्रमी हुआ श्री गुरु नानक जी परम वैराग्ञ को प्राप्त होकर घर से जाने को तैयार हो गए। चंदो और मूला अब यहां रहना नहीं चाहते थे क्योंकि नानकी और जय राम अधिक चंदो को रखना नहीं चाहते थे, अंतः यह निश्चत हुआ कि श्री चंदर जी सुलतान पुर में रहे और चंदो तथा लक्षमी दास मूले के साथ चले जायें, जाते समय चंदो ने जब श्री नानक जी की ओर देखा तो बहुत क्रोध में आग बाबूला होकर बोली मैं पूछती हूं हे नानक! क्या इसी बलबूते पर विवाह किया था, क्या अपनी स्त्री और बच्चों को छोड़ जाना इसी का नाम पुरुपत्व है? यह सुन कर श्री नानक देव ने शब्द कहा-

मिल मात पिता पिंडु कमाइआ॥
तिनि करतै लेखु लिखाइआ॥
लिखु दाति जोति वडिआई॥
मिलि माइआ सुरति गवाई॥ १॥

मूरख मन काहे करसहि माणा॥
उठि चलणा खसमै भाणा॥ १ ॥ रहाउ॥
तजि साद सहज सुखु होई॥
घर छडणे रहै न कोई॥
किछु खाजै किछु घरि जाईऐ॥
जे बाहुड़ि दुनीआ पाईऐ॥ २॥
सजु काइआ पटु हढाए॥
फुरमाइसि बहुतु चलाए॥
करि सेज सुखाली सोवै॥
हथी पाउदी काहे रोवै॥ ३॥
घर घुंमनवाणी भाई॥
पाप पथर तरणु न जाई॥
भाउ बेड़ा जीउ चढ़ाऊ॥
कहु नानक देवै काहू ॥ ४ ॥ २ ॥

कुछ काल के पश्चात् कालू ने भाई मर्दाने को सुलतान पुर खबर लेने को भेजा और कहा कि तुम जाकर नानक देव की खबर ले आओ मैंने कुछ अशुभ समाचार सुना है, मर्दाना सुलतानपुर में आया। मर्दाने ने नानक जी को तपस्वी वेष में देखा। नानकी जी से पूछने लगा कि यह घटना क्या देख रहा हूं। नानकी ने कहा हे मर्दाना! जो कुछ देख रहे हो वही घटना प्रत्यक्ष है यदि कुछ पूछना चाहते हो तो स्वयं नानक से पूछ देखो, जो कुछ कहे वही खबर पिता जी को दे देनी।

साखी और चली

मर्दाना श्री गुरु नानक जी से सन्मान पूर्वक मिला तथा कहने लगा कि नानक देव! यह क्या स्वरूप धारण कर लिया है? गुरु जी ने कहा- हमने तुम को तार-गुण दिया था, मैं तो तुम्हारी प्रतीक्षा में था। मैं चाहता हूं कि तुम हमारे साथ चलो। मर्दाने ने कहा कि आप किधर को जाने का विचार रखते हैं। गुरु जी ने हंस कर फुरमाया, भाई! जिधर उस परमात्मा की आज्ञा होगी उधर चले जायेंगे। मर्दाने ने कहा-मैं तो आपकी खबर लेने आया हूं। कालू जी और माता जी मेरी प्रतीक्षा में होंगे तथा आप अपने साथ ले जाना चाहते हैं। तब गुरु जी ने कहा, हमारे साथ रहने से भूखा प्यासा रहने का सौभाग्य प्राप्त होगा। यदि सुख खान पान चाहते हो तो तलवंडी चले जाओ। मर्दाने ने कहा हे गुरुदेव! अब मैं आप को छोड़ कर कहीं भी जाने का नहीं हूँ। गुरु जी ने कहा कि तार बजाओ, तब मर्दाने ने कहा मैं तार नहीं जानता। गुरु जी ने कहा-हमने तुम को तार का वर दे रखा है वह कहां रखा है। मर्दाने ने कहा, जहां आप ने रखा होगा, वहीं पड़ा होगा, गुरु जी ने कहा मर्दाना हमारी आज्ञा मान कर रबाब बजाओ। तब मर्दाना रबाब लाने के लिए नगर में गया, उसने एक मिरासी साज बजाता एक पठान के साहमणे देखा तब मर्दाने ने उस मिरासी को कहा-हे मित्र! तुझे एक परमात्मा का अनन्य भक्त बुला रहा है। इस लिये मेरे साथ चलो दोनों चल पड़े। रास्ते में उसी मिरासी ने मर्दाने से पूछा, क्या आप भी मिरासी ही हो? मर्दाने ने कहा, जी हां उस ने पता पूछा तो मर्दाने ने कहा- मेरा नाम मर्दाना है और राय की तलवंडी का रहने वाला हूं। इतने में वे दोनों सतगुरु जी के निकट आ गये। उस समय गुरु जी समाधी में थे। मर्दाने के अनुरोध से उसने रबाब को बजाना प्रारम्भ किया। गुरु

जी उत्तान अवस्था से आये तथा कहने लगे-हे मर्दाना! अब तुम रबाब बजाओ। मर्दाना बजाने लगा तो उस से बजे नहीं क्योंकि मर्दाना बजाना नहीं जानता था। गुरु जी के वर के प्रभाव से मर्दाने ने ऐसी बजाई जिस में जंगली पशु भी मस्ती में विभार हो गये। गुरू जी को प्रसन्न देख कर मर्दाना अत्यंत सुख सागर में निमग्न हो गया। मर्दाना सोचता था कि यह सब गुरु जी की कृपा का फल हैं क्योंकि मैं तो बजाना नहीं जानता था। परन्तु अब तो इसके बजाने में पूरा उस्ताद हो गया हूं। यह सब गुरु नानक की कृपा का फल है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! इस रबाब साज को हम सदा अपनायेंगे तथा और साज विषयों की ओर ले जाने वाले हैं अतः तुम को अपने साथ एक रबाब जरूर रखना चाहिये। मर्दाने कहा-महाराज मैं कहां से लाऊं। तब गुरु जी ने कहा, आप नगर में जाकर नानकी जी से आग्रह करें। मर्दाना नानकी जी के निकट जा कर कहने लगा-हे नानकी जी! मैं गुरु जी को प्रसन्न करना चाहता हूं। उस के लिये आप मुझे एक रबाब ले दो। यदि वह माने तो ले आना यदि न माने तो वैसे ही चले आना। उस मिरासी ने कहा-हे गुरु जी! कहीं जाने की और मांगने की क्या आवश्यक्ता है आप यह मेरा रबाब ले सकते हैं। गुरु जी कहने लगे, तुम्हारा दिया हमें पहुंच गया। परन्तु यह तेरी चीज जिस पर तेरी रोटी है हम नहीं लेना चाहते। तब मर्दाना नानकी जी के निकट जाकर कहने लगा हमें एक रबाब ले दो। मुझे श्री नानक देव ने आप के निकट भेजा है, नानकी ने कहा-कि मेरा भाई जो कुछ मांगे देने को तैयार हूं परन्तु वह मुझे अपना सुन्दर मुख स्वंय दिखाये तो मैं सब कुछ करूंगी। नानकी जी का संदेश भाई मर्दाने ने गुरु जी को अक्षरशः सुना दिया। गुरु जी मर्दाने को साथ लेकर बहिन नानकी के घर में आए। नानकी जी ने आदर सत्कार के साथ अपने प्राणों से अधिक प्यारे भाई को सुन्दर आसन पर बैठाया

तब गुरु जी ने कहा-कि बहिन जी हमारा एक कथन मानो। नानकी जी ने कहा कि जो कुछ आज्ञा करो उसे मैं सहर्ष स्वीकार करूंगी परन्तु आप मेरे पास ही निवास करो। गुरु जी ने कहा आप को विश्वास दिलाता हूं कि आप जिस समय याद करोगी मैं उस समय उपस्थित हो जाऊंगा, इस लिये मुझे अपने पास ही समझो फिर रबाब की मांग की गई। नानकी जी ने कहा हे मर्दाना आप बाज़ार जाकर जितनी कीमत का रबाब चाहिए ले आओ उस की कीमत मैं दे दूंगी। फिर गुरु जी ने बाले को बुलाया। जब बाला आया तब गुरु जी ने कहा, हे बाला! तुम हमें प्रिय हो ऐसा मालूम होता है कि तुम इस पर कुछ कुपित हो, बेचारा बाला कांप कर कहने लगा कि हे गुरुदेव! मेरी क्या शक्ति है जो आपके लिए मेरे मस्तक पर एक बल भी पड़े। परन्तु यह संसार अनेक बातें करता है। गुरु जी ने कहा, हे बाला! संसार श्वान तुल्य है तू हमारे शरीर के माता पिता के लिए संदेश लेकर जाओ तथा उनको शुभ संदेश दे आओ। बाला तो तलवंडी को चला गया और मर्दाना रबाब लेने चला गया। सभी घर मिरासीयों के देखे कहीं भी मर्दाने का सत्कार न हुआ उदास होकर वापस आ गया तथा लोगों की ओर से जो अपशब्द सुने थे, जैसे किसी ने मर्दाने को कुराहीआ अर्थात बुरे मार्ग का पथिक सभी कुछ गुरु जी को सुना दिये। गुरु जी ने कहा मर्दाना चिंता न करो। संसार झख मारता है यही संसार एक दिन तेरी स्तुति के गीत गायेगा अब तूं जा और अच्छा रबाब लेकर आ, मर्दाने ने कहा-गुरु देव! रबाब कहीं प्राप्त नहीं हुआ। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! इसी बण में एक गांव जाटों का है, उस का नाम अक्बर पुर है और दो नदियों के मधय में है। वहां एक मिरासी का घर है उस का नाम फिरंदा है और उसे फेरु भी कहते हैं उस से रबाब मांगो यदि न देवे तो हमारा नाम लेना।

मर्दाने ने कहा-गुरु जी! कीमत के रुपये भी तो चाहिये। गुरु जी ने कहा-रुपये नानकी जी से ले लो। मर्दाने ने नानकी जी से सात रुपये लेकर गुरु जी के दर्शन किये।

गुरु जी की आज्ञा पाकर मर्दाना रबाब लाने के लिए चला। तीन दिन में मर्दाना उस गांव में पहुंचा। फेरु-फिरंदे का पता पूछता फिरता था। दो दिन तक उसका कोई पता नहीं चला। मर्दाना निराश हो कर वापस लौटने की सोचने लगा।

साखी और चली

जब फिरंदे को ढूंढते ढूंढते मर्दाने को तीन दिन व्यतीत हो गए तब फिरंदा अचानक मिल गया। फिरंदे ने पूछा आप कौन हैं। तब मर्दाने ने बताया कि मेरा नाम मर्दाना है तथा मैं फिरंद रबाबी को जिसका नाम फेरु हैं ढूंढ रहा हूं। फिरंदे ने मर्दाने का पूरा पूरा पता पूछा। मर्दाने ने कहा मैं तलवंडी राय का रहिणे वाला रबाबी हूं। गुरु नानक देव एक साधु हैं, मैं उसका सेवक हूं। उस की आज्ञा से मैं आप से रबाब (एक प्रकार का साज) लेने के लिए आया हूं, आप मुझ से कीमत लेकर रबाब दे दो। उसी समय फिरंदा गया और रबाब लेकर आ गया। फिरंदे ने कहा, हे मर्दाना! यह रबाब आप के समक्ष है तथा आप ले सकते हो। परन्तु शर्त यह है कि यह रबाब सिवाह बेदी नानक के और किसी के आगे नहीं बजाणा। क्योंकि जहां से मैंने यह रबाब प्राप्त किया है उन की यही आज्ञा है तथा यह इस की कीमत है।

मर्दाने ने कहा कि यदि आप की आज्ञा हो तो मैं इसे तनिक बजा कर देख लूं। फिरंदे ने कहा-कि यह तो गुरु नानक के सामणे ही बजाणा उचित है और मैं भी नानक देव का दर्शन करना चाहता हूं। मर्दाने ने कहा कि मैं उन्हों के लिए ही लेने आया हूं तथा इन की परीक्षा भी

उन्हीं की आज्ञा से ही करना चाहता हूं। फिरंदे ने कहा कि जैसे आप की इच्छा। मर्दाना रबाब मेल कर रबाब बजाने लगा। रबाब में से निरंकार निरंकार की आवाज़ आने लगी।

फिरंदा और मर्दाना दोनों गुरु जी के दर्शनों को चले। कुछ दिनों के पश्चात् गुरु जी के पास आ गये। प्रणाम करके बैठ गए। गुरु जी ने कहा, मर्दाना! इतने दिन बतीत कर आए हो? मर्दाने ने कहा-सतगुर! आप सर्वत हो फिर तमाम व्यथा सुणाई। फिर गुरु जी ने फिरंदे से पूछा। तब फिरंदे ने कहा-हे गुरुदेव! आप भूल नहीं सकते। जब द्वापुर युग में आप हरि चंद थे और मैं आप का सेवक था। आप ने मुझे एकाग्र भक्ति का उपदेश दिया था मैं आप के समक्ष सरोद बजाया करता था आप की मुझ पर अपार कृपा थी। गुरु जी ने कहा-आप का नाम क्या था। उसने उत्तर दिया मेरा नाम प्रेम था, फिर गुरु जी ने कहा कि अब यह रबाब कहां से तुम को मिला है? उस ने कहा- हे गुरु देव! मैं इसी रबाब को नगर से तीन मील दूर जाकर बजाता और ईश्वर भक्ति करता रहा।

इसके पश्चात् फिरंदा रबाबी गुरु जी की अपार स्तुति करके तथा प्रणाम करके और आज्ञा लेकर चला गया, मर्दाना उसे विदा करने के लिए दूर तक गया, अचानक वह फिरंदा मर्दाने की आंखों से कहीं अलोप हो गया मर्दाना हैरान था, अब मर्दाना गुरु जी के पास आया। गुरु जी ने पूछा, मर्दाना छोड़ आये हो। तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज! वह तो कहीं अलोप ही हो गया है, गुरु जी मुस्करा दिये।

फिर मर्दाना रबाब का ठाठ मेलने लगा। गुरु जी ने फुरमाया, हे मर्दाना! इसे बजाना प्रारम्भ करो, ठाठ स्वयं ठीक हो जायगा। मर्दाना आज्ञा मान कर रबाब बजाने लगा। रबाब में से तू ही निरंकार! तू ही निरंकार! यही धवनी निकली थी, उसकी सुर में सुर मिला कर मर्दाना

कहने लगा-हे नानक! मैं तेरा बंदा हां। उस समय गुरु जी समाधिस्थ हो गये, दो दिन समाधी लगी रही, अब मर्दाने ने रबाब बंद कर दिया, उस समय मर्दाने को भूख ने बहुत सताया, मर्दाना मन में विचार करता था कि कब गुरु जी समाधी से जागें और मैं आज्ञा लेकर कुछ खान पान करूं। तीसरे दिन गुरु जी की उत्थान अवस्था हुई। तब गुरु जी ने पूछा-भाई मर्दाना! क्या हाल चाल है? मर्दाना भूख से व्याकुल था। उत्तर दिया कि हे गुरु देव! आप तो भूख प्यास से दूर हो चुके हो तथा जोत से ज्योति का मिलन हो गया है, परन्तु मैं तो एक साधारण जीव हूं। आप के साथ मिल नहीं सकता, गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! हमारे पास तो सदैव दुख और भूख हैं। मर्दाने ने कहा-हे सतिगुरु! हमें अपने जैसा कर लो। नहीं तो हमारा कोई और इलाज़ करो तभी हम लोग आप के साथ रहने की शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह दोनों ताकतें उस परमात्मा के हाथ हैं। मेरे साथ रह कर तो उस परमात्मा की इच्छा के साथ खेलणा होगा यदि तुम्हारे भीतर सहिन शक्ति हो तो रहो। नहीं तो आप जा भी सकते हो। मर्दाने ने कहा कि आप हमें छुट्टी दे दो, गुरु जी ने कहा-बहुत अच्छा तुम जाओ परन्तु यह रबाब बीबी नानकी को दे जाना, तब मर्दाना रबाब लेकर नानकी के पास गया।

साखी और चली

जब मर्दाना नानकी जी के घर रबाब लेकर गया, तब बीबी जी ने मर्दाने से पूछा-हे भाई मर्दाना! आप अकेले आए हो और मेरा भाई नानक कहां छोड़ आए हो? मर्दाने ने कहा बीबी जी! नानक तो भूख प्यास को पार कर गया है। परन्तु हमें तो भूख और प्यास बहुत ही दुखी करती है। उन से कहते हैं तो वह कुछ सुनते ही नहीं। असल में आप

का भाई नानक देव दुनिया को त्याग कर फकीर हो गया है। अब हम लोग नानक जी से छुट्टी ले आये हैं और उन्हों ने मुझे खुशी के साथ विदा किया है। साथ ही यह कहा है कि रबाब बहिन जी को दे देना, सो आप यह रबाब ले लो। उस समय नानकी जी को वैराग्य हो गया तथा ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। तुलसां दासी बहुत धैर्य देने लगी। सायं काल को जय राम घर में आये उन्हों ने तुलसां से पूछा कि नानकी क्यों रो रही है? तुलसां ने कहा कि आज मर्दाना भाई नानक देव को छोड़ कर वापस आ गया है। यह सुण कर बीबी जी रोने लगी हैं। जय राम ने कहा हे नानकी! हम प्रत्येक प्रकार से तुम को प्रसंन करने के लिये तैयार हैं। जैसे तुम आज्ञा करोगी वही किया जायेगा। नानकी ने कहा कि हे स्वामी! आज मेरे भाई को छोड़ कर मर्दाना चला आया है अब भाई जी अकेले रह गये हैं। यह चिंता मुझे दुखी कर रही है। जय राम ने कहा कि नानकी! तू तो स्वयं कहा करती थी कि मेरा भाई किसी के आश्रित नहीं है अपितु वह तो संसार का आश्रय दाता है। परन्तु आज तुम इस प्रकार अधीर हो रही हो यह आश्चर्य है फिर मर्दाने को कहा-हे मर्दाना! तू नानक देव जी को अकेला क्यों छोड़ आया हैं? तुम्हारे साथ तो नानक जी का बहुत प्रेम है। मर्दाने ने कहा-कि श्रीमान जी! नानक जी की समाधी तीन तीन दिन तक लगी रहती है और कोई नगर अथवा बस्ती भी निकट न होने से भय रहता है। जय राम ने कहा-यदि तुम को रोटी कपड़े की आवश्यकता है तो हम पूरी करने को तैयार हैं। नानकी जी ने कहा हे मर्दाना! यदि आप हमारे नगर के निकट निवास करो तो भोजन दोनों समय यहां से प्राप्त कर सकते हो और अगर दूर जाना हो जाय तो हमारे से खर्चा लेते जाओ। यह सुण कर मर्दाना प्रसन्न हुआ और कहने लगा-हे जय राम जी! मैं आप की आज्ञा मानने को तैयार हूं। रात्री को मर्दाना भोजन वगैरा खा कर वहीं रहा,

प्रातः भी रसोई खा कर तथा जय राम जी से कुछ खर्च लेकर भाई मर्दाना विदा हुआ, जाते समय मर्दाने को नानकी जी ने (२०) बीस रुपये दिये और कहा-कि हे मर्दाना! भाई जी को कहना कि तुम्हारी प्यारी बहिन नान े तुम्हारे दर्शनों को लोच रही है।

अब मर्दाना गुरु जी के निकट आ गया, गुरु जी ने कहा हे मर्दाना यह रबाब फिर तुम्हारे पास देख रहा हूं। मर्दाने ने बीबी नानकी तथा जय राम जी की सारी वारता सुणा कर कहा कि उन्हों ने मुझे आपके पास लौटा दिया है मुझे बीस रुपये खर्चे के लिए भी दे दिये हैं तथा जब तक हम सुलतान पुर के नज़दीक हैं तब तक भोजन देने का वायदा भी किया है तथा दूर जाने पर खर्च देना भी स्वीकार किया है तथा नानकी जी ने आपके दर्शनों की तीब्र इच्छा प्रकट की है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! आखिर तू एक मिरासी ही निकला, आगे जय राम जी को सिरी चंद का पालन करना पड़ रहा है। अब तुम रुपये ले आए हो, मर्दाने ने कहा-गुरुदेव! मैंने तो मांगे नहीं, उन्हों ने स्वयं प्रसन्नता से दिये हैं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह रुपये लौटा आओ, किसी के आश्रित रहना ठीक नहीं। परमात्मा प्रत्येक का आश्रय है, किसी प्राणी का आश्रय लेना उचित नहीं है। तब मर्दाने ने कहा कि आप भी चलो क्योंकि बीबी जी आपका दर्शन चाहती हैं। गुरु जी ने कहा कि हम तुम्हारा कहा मानेंगे, क्योंकि हमें आप से आवश्यक काम है। अब गुरु जी और मर्दाना नानकी जी को मिलने चले।

तुलसां गोली ने नानक जी को आते देखा। भाग कर नानकी जी के निकट आकर कहने लगी। हे नानकी जी, आपके प्यारे भाई जी आ रहे हैं। नानकी जी प्रेम के वश होकर कहने लगी-तुलसां झूठ तो नहीं बोल रही सच्च सच्च कहो, तुलसां ने कहा-बहु जी! मेरी क्या शक्ति है जो आपके समक्ष झूठ बोल सकूं। इतने में श्री गुरु नानक देव जी

आ गये तब नानकी जी भाग कर गुरु जी के चरणों में गिरने वाली ही थी तब नानक जी ने थाम लिया, और कहा बहिन जी! आप मुझ से बड़े हो। जब आप मेरे पैरों पर गिरते हो तभी तो मैं आप के पास आना उचित नहीं समझता। बहिन जी! मेरा और आपका सम्बन्ध द्वापर से चला आ रहा है और इस कलियुग में भी है, तब नानकी जी ने कहा-हे भ्राता जी! आगे जैसे आपकी आज्ञा होगी वैसे ही किया जायेगा, मैं आपको कष्ट देने को तैयार नहीं हूं। परन्तु आप ने मुझे दर्शन देना होगा। तब गुरु जी ने कहा-मर्दाना! बहिन जी को रुपये लौटा दो, और कहा-हे बहिन जी! आप हमें ईश्वर के आश्रय ही रहने दो। नानकी ने कहा, आप मेरे भाई ही नहीं अपितु मैं तो आप को स्वंक्ष परमात्मा रूप मानती हूं। गुरु जी ने कहा-बहिन जी! जब कभी मर्दाना आप के पास आए तो उसका सत्कार करना और श्री चंदर को आप ने गोदी में ले लिया है। उसका तो पालन पोषण आपके ऊपर ही हो गया है तथा हम लोग तो चलते ही भले हैं। नानकी जी ने कहा-हे भ्राता जी! यदि आप किसी दूर देश में चले गये तो मैं उदास हो जाऊंगी। गुरु जी ने कहा-उदास या निराश होने की आवश्यकता नहीं । आप जब कभी स्मरण करोगे, तब मैं शीघ्र ही आप के समक्ष आने का विश्वास दिलाता हूं।

अंत में रुपये लौटा कर गुरु जी और मर्दाना चल दिये, सुलतान पुर से चल कर गुरु जी मर्दाने को साथ लेकर एमनाबाद के निकट एक तरखाण (बढ़ई) जिसका नाम भाई लालो था उसके घर आ गए।

साखी और चली

सात दिन पश्चात् गुरु नानक देव और मर्दाना भाई लालो के घर पहुंचे। आगे भाई लालो जो ईश्वर का परम भक्त था, वह लकड़ी का

काम कर रहा था, गुरु जी को देखते ही सन्मान के लिय उठ खड़ा हो गया। गुरु जी ने कहा-हे सज्नन बैठ कर काम करो। वह बोला-हे महाराज जी! मैं तो एक मूर्ख हूं। आप अपना परिचय स्वंय देने की कृपा करो। गुरु जी ने कहा, भक्त जी! हम लोग तो परदेसी हैं। लालो ने कहा-हे महाराज! परदेश तो सारा संसार ही है, मैं तो आपका पूर्ण परिचय चाहता हूं क्योंकि लोकाई आप के चरण चूमती देख रहा हूं। तथा आप बातों में टाल रहे हो। गुरु जी ने कहा-यदि हम टाल रहे हैं तो आप भी तो सब कुछ जानते हुए अनजान बन रहे हो, तब लालो ने कहा कि यदि मेरे बुद्धि चक्षु ठीक अनुभव कर रहे हैं तो क्या आप श्री गुरु नानक निरंकारी तो नहीं हो? मैंने सुना है कि श्री गुरु नानक देव प्रगट हो गये हैं मुझे तो आप वही नज़र आ रहे हो। गुरु जी ने कहा जब आप जानते हो तो फिर पूछने की आवश्यकता क्या है? लालो ने कहा कि हमारी तुच्छ बुद्धि है। गुरु जी ने कहा कि इस प्रकार जान और पहचान लेने वाला कभी तुच्छ बुद्धि नहीं हो सकता। तब गुरु जी ने उसका नाम परिचय पूछा, उस ने कहा-मुझे लालो कहते हैं, तब उसके पूछने पर मर्दाने ने पूर्ण परिचय दिया। कहा हे भाई जी! मैं इनका दास नाम मर्दाना मिरासी हूं और आप निरंकार श्री सतगुरु नानक देव हैं। बस फिर क्या लालो गुरु चरणों पर गिर पड़ा। गुरु जी ने उसे प्रेम से गले लगा लिया और कहा-हे लालो! हमारा तुम्हारा एक बचन हुआ था। तब लालो ने कहा-हे महाराज! मन की मन में रहने दीजिये। तब गुरु जी मंद मुस्करा दिये। लालो ने मुस्कराने का कारण पूछा, तब गुरु जी ने कहा-हे लालो! कोई बात छुपी नहीं रहती। तब लालो रसोई घर में गया तो मर्दाने ने हंसने का कारण जानना चाहा और कहा कि हे महाराज! भाई लालो कोई महापुरुष मालूम होता है। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! आप और यह लालो पहले भी हमारे साथ इकटे रहे

थे। मर्दाने ने शंका की कि हे महाराज! सुनने में आता है कि महापुरुष जन्म धारण ही नहीं करते। गुरु जी ने कहा-भाई! जो अवतार के भक्त होते हैं उनके हृदय में अवतार के दर्शन की लालसा होती है जिस में वह जन्म लेते हैं। जन्म लेने के बिना दर्शनों की इच्छा नहीं होती और जो निरगुण के उपासक होते हैं तथा इच्छा रहित होते हैं उनका जन्म नहीं होता, इस लिए प्रत्येक युग में हम तेरे और इसके संगी रहे हैं, मर्दाने ने कहा, महाराज! सत्य है।

इतने में भाई लालो रोटी तैयार करके आ गया और प्रार्थी हुआ कि महाराज भोजन तैयार है, गुरु जी कहने लगे-हे भाई लालो! रोटी यहां ही ले आओ। उसने कहा महाराज आप चौंके में बैठ कर खाने के अभ्यासी होंगे, तब गुरु जी ने कहा-भाई लालो। जहां तक पृथवी है हमारा चौंका वहां तक है तब लालो रोटी ले आया। रोटी देख कर गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह कोदरे की रोटी और शांक है। मर्दाने ने देख कर मन में कुछ ग्लानी की तब गुरु जी की आज्ञा से थोड़ा रोटी का टुकड़ा उसने अपने मुख में डाला। उस रोटी का स्वाद मर्दाना को अमृत जैसा ही लगा। गुरु जी ने कहा कहो मर्दाना यह रोटी कैसी है? लालो ने कहा हे महाराज! आप रोटी की ओर न देखो। मेरे मन की श्रद्धा को देखो, गुरु जी ने कहा-हे लालो! क्या अमृत से रोटी तैयार की गई है, तब लालो ने कहा, हे गुरुदेव! आज मैं कृत्य हो गया हूं आप ने मेरी जन्म जन्मांतर की मैल नाश कर दी है।

इसके पश्चात् गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! अब किधर जाने का विचार है? मर्दाने ने कहा-हे कृपा नाथ! आप जिधर आज्ञा दो गे उधर ही चल निकलेंगे। गुरु जी ने कहा कि हम लालो के घर तीन दिन ठहरे हैं अधिक ठहरना नहीं चाहिए। हमारा मन यहां बहुत प्रसन्न हुआ है, हमें तो सन्त पुरुष प्यारे हैं। मर्दाने कहा, हे गुरुदेव! लोग आप को शूद्र

कहते हैं तथा मेरी भी निंदा करते हैं, कहते हैं कि देखो जो इतने महात्मा बनते हैं परन्तु भोजन शूद्र का खाते हैं। लालो ने कहा-हे महाराज! आप तो निरलेप पूर्ण ब्रह्म हो। संसार की मैल आप को कदापि नहीं लग सकती। संसार का काम ही ऐसा है, आप की किसी से भी अदावत नहीं है, आप तो सन्त जनों के प्यारे हैं। जात पात नहीं जानते। गुरु जी ने कहा-हे लालो! यह संसार विकराल रूप है, सत्य और तत्व को यहां पहिचान नहीं परन्तु अब हमें आप छुट्टी ही दो तो अच्छा है और तेरा प्रेम तो हमें रोकता है। परन्तु मर्दाना भी कुछ उदास हो रहा है। इस लिए हमें चलने ही देना उचित है। लालो ने कहा आपको मैं अधिक नहीं कहूंगा, परन्तु एक महीना दास पर और कृपा करो बस यही प्रार्थना है, तब गुरु जी ने कहा, हे मर्दाना! लालो का भी हमारे ऊपर कुछ अधिकार है, उसका कथन भी हमें मानना ही उचित है। मर्दाने ने कहा यदि आप एक महीना यहां ठहिरना चाहते हो तो मैं चार दिन तलवंडी जाकर मिल कर फिर लौट कर आ जाऊंगा, मुझे आज्ञा दे द्री जाये। गुरु जी ने कहा यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो जाओ परन्तु शीघ्र चले आना।

मर्दाना तलवंडी की ओर चल दिया, गुरु जी दिन में तो बन में रहें तथा रात्रि को भाई लालो के गृह को पवित्र करने लगे। जब इसी प्रकार पंद्रह दिन व्यतीत हो गये तब एक भागो क्षत्री जो बहुत ही अभिमानी था उसने एक दिन ब्रह्म भोज किया, उसने तमाम वर्णों के पुरुषों को निमंत्रण दिया। एक ब्राह्मण से गुरु जी ने उस तत्सव के बारे पूछा, तब ब्राह्मण ने कहा मलक भागो ने बड़ा भारी ब्रह्म भोज किया है, आप को भी वहां चलना उचित है। तब गुरु जी ने कहा-हे ब्राह्मण देवता हम फकीर लोग हैं, हमारी किन में गिनती हैं? उस ब्राह्मण ने कहा-हे नानक! लोग आगे ही तुम को कुमारगी कहते हैं, यदि तुम

इस यज्ञ में न जाओगे मलक भागो आप पर बहुत नाराज़ होगा।

उस की बात सुन कर श्री गुरुदेव नहीं गये। लालो के घर में ही रहे। तब उसी ब्राह्मण ने मलक से जाकर कहा-देखो जी नानक क्षत्री साधु होते हुए भी आप के यज्ञ में नहीं आया। मलक ने कहा-हे पंडित जी! आप ने उसको निमंत्रण दिया था? तब ब्राह्मण ने कहा-हे मलक जी! मैंने तो बहुत ताकीद की थी परन्तु वह धर्मात्मा जाने क्यों नहीं आया। तब मलक ने कहा-अच्छा जाओ नानक को बुला लाओ।

ब्राह्मण ने लालो से जाकर पूछा कि नानक जी कहां हैं अगर यहां हैं तो उनको बाहर भेज दो। लालो के संदेश देने पर गुरु जी बाहर आकर कहने लगे। कहो ब्राह्मण देव! कैसे दर्शन किये। ब्राह्मण ने कहा कि मलक साहिब आप को बुला रहे हैं। गुरु जी ने कहा, हे ब्राह्मण! मलक का मेरे साथ क्या काम है, जो मुझे याद किया है। अब ब्राह्मण ने मलक के पास जा कर निंदात्मक शब्दों में कहा, देखो मलक जी! यह नानक एक क्षत्री का पुत्र है। उस शूद्र लालो के घर भोजन खाता है परन्तु आप के इस महान् यज्ञ में आना नहीं चाहता। फिर आप के बुलाने पर भी नहीं आया। मलक ने क्रोध में भर कर पंजे को कहा, जाओ उसे पकड़ कर ले आओ।

ब्राह्मण ने आकर कहा, देख नानक मलक को बहुत क्रोध हो रहा है चलना ही उचित है। गुरु जी ने अपनी महान् लीला को करने के लिए ब्राह्मण के साथ हो लिये तथा भाई लालो को भी संग ले लिया।

पंज ब्राह्मण ने नानक देव को लाने की खबर मलक को दी। तब मलक ने भीतर बुला लिया, गुरु जी ने जाते ही प्रश्न किया, हे मलक! तुमने मुझे क्यों बुला भेजा है? तब मलक ने कहा-हे नानक! तुम ब्रह्म भोज में क्यों नहीं आए? गुरु जी ने कहा, हम फकीर हैं तथा स्वतंत्र हैं। मलक ने कहा- तुम क्षत्री होकर शूद्र का अन्न खा रहे हो परन्तु यहां

से दूर रहते हो बताओ यह कहां की रीति है। तब गुरु जी ने कहा-अच्छा यदि तुम कुछ मुझे खिलाना चाहो तो अब भी खिला सकते हो। मलक ने ब्राह्मण को कहा-जाओ इसे कुछ खाने के लिये ला दे। गुरु जी ने पीछे देखा तो लालो नज़र आया, जिसने हाथ में एक रोटी कोदरे की पकड़ी हुई थी। उधर ब्राह्मण पूरी लुच्ची और कचौरी लेकर आ गया। गुरु जी ने दायें हाथ कोदरे की रोटी ले ली और बायें हाथ पूरी कचौरी पकड़ ली। जब उनको अच्छी प्रकार दबाया तो रोटी में से दूध टपकने लगा और पूरी में से खून की कुछ बूंदें गिरीं। देखने वाले बहुत थे, सभी अचंभे में आ गए। गुरु जी ने कहा-हे मलक! तुमने पुरुषों के लहू का ब्रह्म भोज किया है, हमें वही खिलाना चाहते हो। इस गरीब लालो के घर में नित्य प्रति असली ब्रह्म भोज हो रहा है। यह सुन कर तथा देख कर मलक की कोई भी पेश न चली तथा लज्जित हो गया, गुस्सा तो किया पर क्या कर सकता था॥ २३ ॥

साखी और चली

एक बार तां खान का पुत्र बहुत बीमार हो गया। बहुत से इलाज़ किये परन्तु सभी निष्फल रहे। तब उसने मलक को बुला कर कहा, हे मित्र! मैं क्या करूं मेरा लड़का ठीक नहीं होता, तुम कोई इलाज़ बताओ। तब मलक ने कहा कि यदि कोई सच्चा साधू मिल जाय तो लड़का अरोग्य हो सकता है। खान ने कहा कि सच्चे साधू कहां से लायें, मलक ने कहा कि तमाम साधु गिरफतार करो। जब अनेक साधु पकड़े गए तो उन में श्री नानक देव जी भी आ गए। यह बात लालो तरखान ने भी सुनी। लालो तरखान ने जाकर देखा तो श्री गुरु नानक देव जी उन पकड़े हुए साधुओं में बैठे हैं, लालो को बहुत कष्ट हुआ तथा कहा-हे गुरुदेव! यह क्या रहस्य है? गुरु जी ने कहा-हे लालो! यह उस करतार की लीला है।

फिर गुरु जी ने कहा-हे लालो! इस पठान के पुत्र को यदि तुम्हारा जूठा टुकड़ा खिलाया जाय तो यह अरोग्य हो सकता है। तब लालो ने गुरु जी का जूठा टुकड़ा जब पठान के पुत्र को खिलाया तो उसके सभ रोग दूर हो गए, वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु स्मरण करके बैठ गया। पठान ने सुना तो उसने गुरु देव की अपार प्रशंसा की। उस के मन के पटल खुल गए तथा गुरु चरणों में गिर गया। मलक भी गुरु जी के चरणों पर गिर कर क्षमा प्रार्थना करने लगा। गुरु जी ने कहा-भागो! हम ने तुम्हें क्या कहना है, देखो फकीरों से बैर करना भला नहीं। मलक ने हाथ जोड़ कर कहा-आप तो अपार और सर्व शक्ति सम्पन्न हैं। गुरु जी प्रसन्न होकर कहने लगे, हे मलक! तूं भी आज से पवित्र हो गया। वह भूला नहीं जो सायं को घर आ जाय। फिर वह पठान भी गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा, उस ने कहा मैं बहुत पापी हूं जो सन्तों को मैंने दुख दिया है। हे गुरुदेव! मुझे क्षमा कर दो। आप पूरे तथा पहुंचे हुए सन्त हो, मैं चाहता हूं कि आप मुझे भव सागर से पार कर दो। गुरु जी ने प्रसन्न हो कर कहा कि तुम और भागो यदि तमाम साधुओं की सेवा करके उसको प्रसन्न करो, तो तुम्हारी चौरासी कट जायेगी तब पठान शीघ्र ही तमाम साधुओं के चरणों पर माथा झुका कर क्षमा प्रार्थना करने लगा, इसके पश्चात् पठान तो गुरु जी का मुरीद हो गया और भागो गुरु जी का शिष्य बन गया और समस्त नगरी गुरु घर की सेवक हो गई।

इधर बाला और मर्दाना तलवंडी आये तो कालू बेदी ने बाले को कहा कि बाला! तुमने ही मेरे पुत्र नानक को मेरे हाथ से गंवाया है, तब मर्दाने ने कहा-हे कालू! आप अपनी पुत्री नानकी तथा अपने दामाद जय राम जी से पूछ कर फिर किसी को कहना, असल बात तो यह है कि तेरे कुल के भाग्य का सूर्य उदय हो गया है जैसे दशरथ के घर

राम चन्दर तथा बसुदेव नन्द के घर कृष्ण जी प्रकट हुए थे उसी प्रकार इस कलियुग में आपके पवित्र घर में श्री पूर्ण गुरु देव नानक जी महाराज हुए हैं।

कालू ने कहा-हे संसार वालों सुन रहे हो इस मिरासी की बातें। नानक ने मेरे घर पैदा होकर खानदान का नाम डुबो दिया है, परन्तु यह डूम कुछ और ही बक रहा है, खानदान अंधेरा करने वाले नानक को सूर्य कह रहा है। मुझे तो इस डूम की अकल पर हंसी आती है, मर्दाने ने कहा-हे जजमान तेरे पुत्र को समस्त संसार पूज्य करता है। तुझे सत्य की कोई खबर नहीं।

उस समय राय बुलार ने मर्दाने को बुलाया, मर्दाने ने आकर सन्मान से प्रणाम किया, उन्होंने कहा-हे मर्दाना! तू हमारे नानक देव की क्षेम कुशल बता, तब मर्दाने ने कहा-आप श्री गुरु नानक देव जी के बारे क्या पूछते हैं। नानक पीरों का पीर तथा गुरु जनों का गुरु और बादशाहों का सम्राट है, उसकी स्तुति तो ऐसे है जैसे सूर्य को दीपक से तुलना करना होती है। नानक की तारीफ करने के लिए संसार के किसी भी व्यक्ति की रसना पर्याप्त नहीं है और कोई लेखक गुरु जी के बारे कुछ भी लिखने में असमर्थ है। नानक के नीचे समस्त संसार है और नानक के ऊपर केवल उस परमात्मा की ही जात है अर्थात नानक साक्षात ईश्वर है।

यह सुन कर राए कहने लगा कि हे मर्दाना! हम लोग अब बूढ़े हो गए हैं तथा नानक के दर्शनों की इच्छा है। तुम उनको यहां ले आओ। मर्दाने ने कहा कि नानक हमारी इच्छा से भी बहुत दूर है। उसकी इच्छा के हम मुहताज हैं। नानक तो सदैव स्वतंत्र है यदि आप नानक जी के दर्शन चाहते हैं तो बाला जो जाट है, यदि वह मेरी मदद पर हो तो आशा कर सकता हूं कि फिर आप अपनी खाहिश की बेल को फलती

फूलती देख सकते हो।

राए ने बाले संधू को अपने निकट बुला कर कहा, हे बाला! तू मर्दाने के साथ जाकर श्री नानक देव को यहां तक लाने की हिम्मत करो ताकि हमारी कामना पूर्ण हो। नानक को मेरी ओर से हाथ जोड़ कर कहना कि तुम्हारा खादम दर्शणों की भिक्षा मांगता है। इतना कह कर बुलार के नेत्रों में जल बिंदु ढपकने लगे। बाले ने स्वीकार किया। तब बाला और मर्दाना तलवंडी से विदा हुए।

बाला और मर्दाना लालो बढ़ई के घर आ गये। प्रणाम करके गुरु जी के चरणों में विनय करने लगे-बाले ने कहा-हे सतगुर! तलवंडी में रायबुलार आप के दर्शणों के लिए तरस रहा है। उसको आप अपना चंद्र मुख एक बार जरूर ही दिखाने की कृपा करें। गुरु जी ने कहा-हे बाला! वहां श्री कालू जी से मिलना होगा तथा पुत्र माया के वश उनको कुछ कुष्ट होगा। तब बाले ने कहा-आप ने वहां जाकर पिता जी के पास तो रहना ही नहीं तथा राय ने बहुत ही इच्छा प्रकट की है, मैं भी आपके चरणों में प्रार्थना करता हूं कि आप बुलार को जरूर दर्शण दें।

गुरु जी ने कहा-हे बाले! राय बुलार का हम पर कुछ ऋण भी है। उसे भी अदा करना हमारा कर्तव्य है तथा अवश्य ही तलवंडी जायेंगे। यह सुन कर बाला और मर्दाना बहुत ही प्रसन्न हुए। लालो ने सुना कि गुरु जी तलवंडी जा रहे हैं। तब वह उदास होकर कहने लगा-हे गुरु देव! आप ने तो यहां एक मास रहने की कृपा करनी थी। अभी महीना पूर्ण नहीं हुआ। गुरु जी ने कहा-हे सज्जन! आज पच्चीस दिन हो गये हैं। बाकी पांच दिन हम यहां आकर अवश्य ठहरेंगे। भाई लालों को बाले का आना कुछ अखरने लगा, जिसे बाला भी जान गया। उस ने धैर्य देने के लिए कहा-हे भाई लालो! आप की भांति राय बुलार भी श्री गुरु नानक देव के दर्शणों के लिए ललायत हो रहा है। इस लिये

मैंने प्रार्थना की है, तथा ज्योति स्वरूप गुरु भी सारे संसार के हैं। आप कुछ दिन धैर्य करें। लालो ने कहा-अच्छा शक्तिमानों से कोई ज़ोर नहीं चलता, जैसे आप की इच्छा।

बाला और मर्दाना तथा संसार के स्वामी श्री गुरु नानक जी तलवंडी के लिये रवाना हुए।

साखी और चली

गुरु जी बाले और मर्दाने के साथ तलवंडी पहुंच गये तथा नगर से बाहर चंदर भान संधू के कूंए पर आसन लगा दिया। श्री कालू तथा माता जी और राय बुलार सूचना पाकर बहुत प्रसन्न हुए। अब तीनों श्री गुरु जी के दर्शणों को तथा स्वागत के लिए बाले के पिता चंदर भान के कूएं पर गए। कालू जी ने अपने पुत्र को साधारण साधु लिबास में देख कर दुख किया। कालू जी का भाई लालू बुद्धिमान था उसने कालू जी के दुख को शिक्षा से दूर किया फिर लालू जी ने गुरु जी से कहा-हे नानक! मैं लालू तेरा चाचा हूं तथा मैं तुम्हें कहता हूँ कि उठो और घर में चलो। गुरु जी ने कहा-चाचा जी! मैंने तो बहुत विशाल घर अपनाया है। छोटे से घर में जाने की इच्छा नहीं। तब माता जी श्री नानक देव जी के चरणों में गिर गई। फिर लालू ने कहा-नानक देव! अब आप साधु हैं। साधु के हृदय में दया का होना आवश्यक है। फिर भरजाई जी आप की जन्म दाता हैं अधिक क्या कहूं हमारे कहने पर आप घर चलें। तब गुरु जी ने नीचे लिखा शब्द कहा—

॥ राग रामकली ॥

खिमा हमारी माता कहीऐ संतोख हमारा पिता॥
सति हमारा चाचा कहीऐ जिसु संगु मनुआ

जिता॥ १॥ सुण लालू गुण ऐसा॥
सगले लोक बंधना के बंधे सो गुण कहीऐ कैसा॥ १॥ रहाउ॥
भऊ माई संग हमारे प्रेम प्रीत सो चाचा॥
धीअ हमारो धीरज बनी है ऐसा संग हम राचा॥ २॥
शांति हमारी संग सहेली मत हमारी चेली॥
एक कुटंब हमारा कहीअहि सास हमारी खेली॥ ३॥
एकंकार हमारा खावंद जिन इह बणत बणाई॥
उसको त्याग अवर को लागे नानक सो दुख पाई॥ ४॥

यह सुन कर लालू ने कहा कि भाई! यह नानक अब हमारा नहीं रहा। अब तो इसको साथ लेकर बुलार के जाना उचित है। अब गुरु जी बुलार के पास गए। आगे बुलार पलंग पर बैठा था, देखते ही उठा, तब गुरु जी ने उसे मान के साथ थामा तथा कहा कि हे बुलार! हम आप के नौकर हैं। राय ने नीचे सिर करके कहा- हे नानक! आप हमें क्षमा करो तथा आप परमेश्वर से भी हमें हमारे पापों की क्षमा करवाने के लिये प्रार्थना करें, क्योंकि आप में और उस परमात्मा में कोई भेद नहीं है। गुरु जी ने कहा-हे राय जी! कहां आप और कहां हम साधारण पुरुष, आप तो बड़े आदमी हैं। तब बुलार ने कहा-हे गुरुदेव! मैं अब अपने को खुशक्स्मित समझता हूं। अब आप मेरे सिर पर अपने पवित्र चरण कमल रखें, गुरु जी बुलार की अधीनता तथा प्रेम देख कर पलंग पर बैठ गए तथा बुलार ने गुरु जी के चरणों पर अपना सिर रख दिया तब बुलार ने सुधा नाम के ब्राह्मण को बुलाया और कहा हे पंडित जी! अपने बर्तन यहां ले आओ तथा आज भोजन मेरे घर पर ही करो फिर गुरु जी से प्रार्थना करने लगा, हे गुरु देव! आप भोजन कैसा पसंद करते हैं? गुरु जी ने कहा-हे राय! जैसा भी वह परमात्मा हमें भेज दे वही उत्तम है। अब राय ने कहा अच्छा पहले कुछ मीठा खा लें, पीछे

नमकीन खाना नज़र किया जायेगा। गुरु जी ने रागु मारू में एक शब्द उच्चारण किया जो आगे लिखा गया है-

मिठा सरम सलोनी संजमु खटा खरा धिआनु॥
ऐसा भोजन जो नर अचवै सो माणस परधान॥ १॥
राय जी भोजन ऐसा करीऐ और सगल परि हरीऐ॥ १॥ रहाउ॥
मेवा मगन लगा सचु सेती जिस खाधे त्रिपतावे॥
दूख भूख सगला ही नासै जां सच्चा नाम चित आवै॥ २॥
अमृत फलु है नाम धनी का सो पीवे जिस देवे॥
सफलिओ दरसन अकाल मूरति है तांके रिदै समावै॥ ३॥
कहु नानक सो खरा सुआदी एकंकार सलीआ॥
अउर सुआद मन फीके लागै जद सचु नामु मुख दीआ॥ ४॥

तब कालू जी ने कहा हे लालू! यह बात अजीब सी है। लालू जी ने कहा कि आप खामोश रहें। उसी समय माता तृप्ता जी राय बुलार के पैरों पर गिर पड़ी और गिड़ा कर कहने लगी—आप कृपा करके नानक देव को अपने पास ही रखें। राय ने कहा हे-नानक देव! आप की माता जी बहुत विरलाप करती है परन्तु हम कह नहीं सकते। गुरु जी ने कहा कि आप निःसंकोच जो कहना चाहो कहो। राय ने कहा कि आप तलवंडी रहो, खेती करो। नौकर चाकर मैं लगा दूंगा, आप को अधिक परिश्रम नहीं करना होगा। तब गुरु जी ने आगे शब्द उच्चारण किया-

सोरिठ मः १॥ घरु १॥

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु॥
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु॥
भाउ करम करि जंमसी से घर भागट देखु॥ १॥
बाबा माइआ साथि न होइ॥
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ॥ रहाउ॥

फिर कहा गया कि यदि आप चाहो तो दुकान भी कर सकते हो फिर गुरु जी ने नीचे लिखी पंकती उच्चारण की-

हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु॥
सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिस नो रखु॥
वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु॥ २ ॥

फिर कालू जी ने राय से कहा कि आप इसे घोड़ों की सौदागरी पर भी लगने को कहो। फिर गुरु जी ने आगे कहा-

सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु॥
खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु॥
निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु॥ ३ ॥

फिर नौकरी का आग्रह कालू जी की ओर से किया गया। तब गुरु जी ने आगे उच्चारण किया-

लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु॥
बंनु बदीआ करि धावणीं ता को आखै धंनु॥
नानक वेखै नदरि करि चढ़ै चवगण वंनु॥ ४ ॥ २ ॥

तब कालू जी ने नानक जी से कहा-अच्छा जो काम करना चाहो वही हमें स्वीकार है। राय ने कहा कि मैं इस से साक्षी हूं। तब गुरु जी ने सारंग में निम्नलिखिति शब्द उच्चारण किया-

राग सारंग॥ इक फरमाईस आखीए जे मन्ने साई॥
जिसते जोर न चलई करि जोर धिआई॥
ऐसा सतिगुरु राय जी किसे हथ न आवै॥
सोई कार कमावनी जो उसको भावै॥ १ ॥ रहाउ॥
हिकमत हुकम न चलई कोई करि देखै॥
सेख मसाइक सिध साध सभ लिखीऐ लेखै॥ २ ॥
दस अवतारी आइआ जुग हुकम चलाइआ॥

अंतकाल धरती पाइआ जुग हुकम चलाइआ॥ ३ ॥
बडे बडे महाबली जोध अर सूरे॥
कहु नानक सभ देखिआ सभ धरती धूरे॥ ४ ॥

तब फिर राय ने कहा-हे नानक देव! आप लंगर लगाओ। (जहां गरीबों को भोजन मुफत मिले उसे पंजाबी में लंगर कहा जाता है।)

तीन कूएं जो हमारे चल रहे हैं उनकी आय से आप गरीबों की पालना करो, हिसाब नहीं लिया जाएगा तब गुरु जी ने नीचे लिखा शब्द उच्चारण किया :-

राग आसा महला १ ॥

लंगर एक खुदाई का दूसर लंगर नाही॥
दूसर लंगर न चलै जग थिर न रहाई॥ १ ॥
राए बुलार सुन बेनती यह अरज हमारी॥
खालक सचा एक है जिनि खलक सवारी॥ १ ॥ रहाउ ॥
दाता आपे रहीम है खालक सब खेले॥
देवनि को आपे घनी सगलिआ प्रतिपाले॥
जीउ प्राण तन धन के दीए रस भोग॥
आपे कछू न होवई प्रभ कीए संजोग॥
सभना के सिर एक है सिध साध बीचारे॥
नानक संगती सब को इक दाता सिरजनहारे॥

संवत् १५५५ पौष वदि षष्टि को जब गुरु नानक देव जी तलवंडी से रवाना होने लगे, तब कालू पटवारी राए बुलार के पास जाकर रोने लगे। तब राए ने श्री गुरु जी को आप अपने पास बुलाया और बहुत अधीनगी से कहा-हे नानक देव! आप मुझे क्षमा कर दें और प्रार्थना यह है कि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करके यहां तलवंडी में ही रहो। गुरु जी ने कहा-हे बुलार! मैं अफसोस से कहता हूं कि यह बात मेरे

अधिकार में नहीं।

तब राए ने बहुत यत्न किया परन्तु गुरु जी उदास हो गये। राए ने देखा कि अब नानक यहां नहीं रहेगा। तब कहा-हे नानक देव! आपको जो कुछ चाहिऐ वह मुझे सेवा करने का सौभाग्य दो। गुरु जी ने कहा-कि मेरी जरूरत पूरी करने वाला कोई और ही है। गुरु जी रात्री समय स्नान करने गये परन्तु कूएं सभ बन्द थे। गुरु जी ने कहा-क्या यहां कोई टोबा भी नहीं है? यह बात राए ने सुन ली तब टोबा तैयार करने का हुकम दे दिया। टोबा गुरु जी के नाम से बनवाया गया, इस प्रकार यह साखी समाप्त हुई।

आगे प्रथम उदासी श्री गुरु नानक देव जी की लिखी जाती है॥

साखी और चली

तलवंडी से श्री गुरु जी और बाला मर्दाना फिर भाई लालो के घर में आ गए, लालो को अपार प्रसन्नता हुई। पश्चात् पांच दिन निवास करके फिर चल दिये और बंगाल तथा ढाके में जा पधारे। वहां कुछ भी खान पान को नहीं मिला। गुरु जी ने कुछ दिन पवन खाकर ही व्यतीत किये। भूख प्यास पर गुरु जी का तो पूर्ण अधिकार था परन्तु मर्दाना भूख से व्याकुल हो कहने लगा-हे गुरुदेव! मैं भूखा मरने लगा हूं। कृपया मेरा इन्तजाम करो। गुरु जी ने कहा-इस बूटे को खखड़ियें लग रही हैं, जाओ पेट भर खाओ। मर्दाना खखड़ियें खाने लगा। गुरु जी ने कहा-भाई मर्दाना! पेट भर कर खाओ। परन्तु फिर के लिये जमां नहीं करनी। खखड़ियों का स्वाद अमृत जैसा था मर्दाना भूखा था, खूब खाने लगा फिर कुछ तोड़ कर कपड़े में बांध ली। मर्दाने ने सोचा यह कल को काम आयेंगी। दूसरे दिन भूख लगी तो निकाल कर फिर खाने लगा, खाने के पश्चात् हाथ पांव मारने लगा। देख कर गुरु जी हंसने

लगे, मर्दाना बोला मैं मरने लगा हूं परन्तु आप हंस रहे हैं। गुरु जी ने कहा मैंने तुम्हें बंद किया था परन्तु तुमने हमारी आज्ञा नहीं मानी। यदि आज्ञा में रहते तो यह अवस्था न होती। अरे पागल यह बूटे तो आक के थे फिर गुरु जी ने स्वयं तोड़ कर दीं, जिसके खाने से मर्दाना ठीक हो गया। फिर गुरु जी वहां से आगे रवाना हुए। फिर एक राजा के राज्य में पहुंचे, जिस जगह झंडे बाढी की चारपाई है। वह समुंद्र के टापू में है उस जगह मर्दाना अवज्ञा करने को तैयार हो गया और कहने लगा-हे गुरु जी! मैं आगे जाने को तैयार नहीं, मुझे आप अब आज्ञा ही दे दो। गुरु जी कहने लगे हे मर्दाना! हमारा कथन मान। उस देश में बहुत सी मुसीबतें आने का भय है। इस लिये हमारे साथ ही रहना उचित है परन्तु मर्दाने ने फिर अस्वीकार किया- तब गुरु जी ने बाले से कहा-हे बाला! यह मर्दाना हमारी बात नहीं मानता। अंतःतोगत्वा मर्दाना गुरु जी की आज्ञा न मान पीछे को लौट चला। यह कथा भाई बाला सुन रहा था फिर गुरु जी ने मुझे पूछा कि हे बाला! अब क्या किया जाए? बाले ने कहा जो कुछ आप की इच्छा है वही करो।

अब गुरु जी वहीं बन में बैठ गये। जब दोपहर व्यतीत हुई तब गुरु जी ने कहा-हे बाला! मर्दाना एक राक्षस के पंजे में फंस गया है, और अब उसे तेल के कड़ाहे में तलना चाहता है। तब (बाले) मैंने भी मर्दाने को बचाने का आग्रह किया। तब गुरु जी भी उस पर कृपा करने के लिये उठे और उसी ओर चल दिये जिस तरफ मर्दाना गया था। बाले ने पूछा गुरु जी कितनी दूर जाना होगा? गुरु जी ने कहा कि अभी नौ कोस दूरी है। मैं ने प्रार्थना की कि हे स्वामी! मर्दाना तो इतनी देर तक मारा जाएगा। गुरु जी ने कहा बाला, आंखें बंद करके खोल लो। जब इस प्रकार किया तो तत् क्षण उसी स्थान पर जा पहुंचे जहां राक्षस ने मर्दाने को पकड़ रखा था। गुरु जी कहने लगे-हे बाला! वह तेरे सामने

तेल का कड़ाहा है, जिस में मर्दाने को तल कर वह राक्षस खा जाएगा। हमें उचित है कि यह कौतुक हम छिप कर देखें। बाले ने कहा, हे महाराज! आपका यहां आना अथवा न आना फिर तो एक समान ही है। गुरु जी ने कहा-हे बाला! जो कुछ करतार की इच्छा होगी वही होगा। उस की लीला चुप चाप देखते जाओ।

अब उस राक्षस ने मर्दाने को उठा कर तेल के कड़ाहे में जो आग की भांति तप रहा था उसमें फैंक दिया, ईश्वर की लीला तपा हुआ तेल बरफ की भांति शीतल हो गया। यह देख कर वह राक्षस हैरान हो गया। गुरु जी को देख कर राक्षस ने कहा-तुम कौन हो? मेरे तेल सर्द होने का कारण तू ही हैं। गुरु जी ने कहा कि भाई! तू इसे खाता क्यों नहीं। अरे कौडे राक्षस तुम को किस की प्रतीक्षा है। कौडे ने कहा कि तुम मेरा नाम कैसे जानते हो तथा तुम मेरे वैरी कहां से आ गये हो? तब गुरु जी ने नीचे लिखा शब्द उच्चारण किया-

मारू महला ५ ॥

फूटो आंडा भरम का मनहि भइओ परगासु॥ काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि खलासु॥ १ ॥ आवण जाणु रहिओ॥ तपत कड़ाहा बुझि गइआ गुरि सीतल नामु दीओ॥ १ ॥ रहाउ॥ जब ते साधू संगु भइआ तउ छोडि गए निगहार॥ जिस की अटक तिस ते छुटी तउ कहा करै कोटवार॥ २ ॥ चूका भारा करम का होए निहकरमा॥ सागर ते कंढै चढ़े गुरि कीने धरमा॥ ३ ॥ सचु थानु सचु बैठका सचु सुआउ बणाइआ॥ सचु पूंजी सचु वखरो नानक घरि पाइआ॥ ४ ॥ ५ ॥ १४ ॥

तब कौडा राक्षस गुरु जी के चरणों पर गिर गया। कहने लगा-हे सतगुरु देव! मैंने बहुत पाप किये हैं आप मुझे क्षमा करें। गुरु जी ने कहा-हे कौडा! यदि तूं मर्दाने के चरणों पर गिर कर उससे क्षमा याचना करें तो तुम पापों से मुक्त हो सकते हो। राक्षस ने कहा-मैं आप जी का दास हूं। जैसे आज्ञा होगी वही करूंगा। राक्षस ने गुरु जी से भोजन के लिए आग्रह किया। गुरु जी कहने लगे-हे कौडा! हमें तो आप की श्रद्धा का भोजन चाहिए। तब कौडा बन से बहुत मेवे ले आया और गुरु जी के अर्पण किये। मर्दाने को गुरु जी कहने लगे-हे मर्दाना! यह मेवे खाओ। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! मैंने आप की आज्ञा नहीं मानी, आप मुझ पर अप्रसन्न हैं, इस लिए आप मुझे पहिले क्षमा कर दो। गुरु जी ने कहा-हम तुम पर प्रसन्न हैं। उसने कहा कि हे कृपालू! यह मेवा बांट दो जितना मेरे हिस्से आयेगा उतना ही लेना उत्तम है। बाले ने गुरु जी की आज्ञा से तीन स्थान पर बांट कर एक हिस्सा मर्दाना को दिया तथा एक भाग गुरु जी के अर्पण किया और कए स्वयं लिया। गुरु जी ने अपना भाग कौडा को दे दिया। कौडे ने सहर्ष स्वीकार करके तत क्षण अपने मुख में रख लिया। जब गुरु जी का दिया हुआ प्रसाद कौडे ने खाया। तब उसके हृदय के पटल खुल गए। उसका शरीर परम सुन्दर हो गया। बाला और मर्दाना देख कर हैरान हो गए। गुरु जी ने कहा-भाई हैरान होने की आवश्यकता नहीं। परमात्मा ने मुझे इन लोगों का उद्धार करने की आज्ञा दे रखी है। गुरु जी सात दिन तक कौडे के यहां रहे। फिर चारपाई कौडे को देकर गुरु जी आगे को रवाना हो गए।

साखी और चली

आगे सैंतालीस दिन चलते रहे। एक दिन फिर मर्दाने को भूख ने सताया। मर्दाना बोला-हे महाराज! अब तो चलना भी कठिन हो गया है। गुरु जी ने कहा-धैर्य करो आगे एक सुन्दर नगर आने वाला है। मर्दाना बोला कि हमारे पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं है। क्या किसी मुर्दे को बड़े नगर में ले जाओगे। तब गुरु जी ने अपने पांव से रेत बखेरी तो उस में एक लाल निकला। मर्दाने को उठाने की आज्ञा हुई। तब मर्दाना बोला हे महाराज! मैं इस पत्थर को क्या करूं। जब तक पेट में कुछ न डाला जाय तब किसी बेश कीमत वस्तु को बांधने से कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि इस तरह भूख नहीं मिटती। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह देखो नगर नज़र आने लगा। मर्दाना बोला नज़र आने से क्या है अभी तीन कोस की दूरी पर है यह कह कर मर्दाना कुछ उद्विगण मन हो गया और झल्ला सा हो गया तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुम इस नगर का नाम जानते हो। मर्दाना बोला, मैं तो नहीं जानता। गुरु जी ने कहा-अच्छा बाज़ार में जाकर किसी जौहरी की दुकान पर यह पत्थर वेच कर पैसे ले आओ, उस नगर का नाम बिशंभर पुर है। मर्दाने उस पत्थर की कीमत पुछी। गुरु जी ने कहा-जो कोई कीमत कहे मुझे आकर बताना। मर्दाना गया, एक जौहरी ने इस लाल की कीमत तीन पैसे बताई। मर्दाना ने उसकी कीमत तीन पैसे गुरु जी को बताई। गुरु जी ने कहा-भाई किसी बड़े जौहरी के पास ले जाओ। उसने कहा-मैं छोटा बड़ा नहीं जानता। गुरु जी ने कहा कि एक जौहरी जिस का नाम सालस राए जौहरी है उसके पास जाओ। अब मर्दाना सालस राय के पास गया, उसने लाल देख कर पहिचाना, उस लाल पर लिखा नज़र आया कि इस लाल को देखने का मूल्य (१००) एक

सौ रुपया है। उसने एक सौ रुपया दे दिया और लाल रख लिया। मर्दाना बोला-हे जौहरी! मैं अपने मालक से पूछ कर लाल दूंगा। उस जौहरी की स्वीकृत से मर्दाना गुरु जी के पास आया और गुरु जी के आगे सौ रुपया रख दिया। गुरु जी ने कहा कि तुम इसकी कीमत ले आये हो। मर्दाना बोला उस ने दिये मैं लेकर आ गया। गुरु जी ने कहा-उस से पूछो कि यह रुपया कैसे दिया है? मर्दाने ने जौहरी से कहा कि आप ने यह सौ रुपया कैसे दिया है, जौहरी ने लाल पर लिखी शर्त सुनाई तथा उसी के अनुसार सौ मुद्रिका देने की बात कही और यह भी कहा लाल तुम्हारी धरोहर हमारे पास है, ले सकते हो। मर्दाने ने सारी बात गुरु जी को आकर सुना दी। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! अब तू लाल बेचना चाहता है या नहीं। मर्दाने ने कहा-मैं नहीं जानता गुरु जी ने कहा मैं इस लिए पूछ रहा हूं कि यह लाल नहीं यह तो परमात्मा का नाम है। पहिला जौहरी तीन पैसे कीमत देता था। अपितु इस ने केवल लाल के दर्शणों का सौ रुपया दे दिया है। मेरे कथन का मतलब यह है कि ईश्वर का नाम एक लाल है उसे चाहे तू बेच ले और चाहे भूख प्यास सुख दुख आदिक सहन करके अपने अधिकार में रख। यह तेरी इच्छा पर निरभर है अब मर्दाना इस रहस्यवाद को समझ गया फिर मर्दाना जौहरी के पास जाकर उसका सौ रुपया लौटा कर और लाल को वापस करने के लिए कहा कि मेरा स्वामी लाल बेचना नहीं चाहता आप लाल दे दें और रुपये ले लें। उसने कहा यह सौ तो उस लाल की दिखाई है यह रुपया और लाल दोनों तुम्हारे हैं। अब मर्दाना लाल और रुपया लेकर गुरु जी के पास आ गया। तब गुरु जी ने कहा यह लाल और रुपये कैसे ले आया हैं तब मर्दाने ने सारी बात सुना दी। गुरु जी ने कहा नहीं एक वार फिर जाओ तथा वायदा करो। मर्दाने ने जाकर जौहरी को रुपये वापस लेने को कहा। जौहरी के इन्कार करने

पर मर्दाना फिर गुरु जी के पास आ गया। इसी प्रकार जौहरी लेता नहीं और गुरु जी भी नहीं लेते थे, मर्दाना बहुत बार इधर उधर गया। अब मर्दाना थक कर घबरा गया और रुपये जौहरी के घर फेंक कर वापिस आ गया। इधर जौहरी ने सोचा कि यह रुपये उनके हैं मुझे नहीं रखने चाहिऐ। माया ने तो सनकादिक ऋषियों का मन भी विचलित कर दिया था परन्तु यह रुपये लेते ही नहीं। दूसरे मैंने बहुत लाल जीवन में देखे हैं परन्तु किसी पर लिखा हुआ नहीं देखा। यह लाल अजीब ही है इसके मालक को देखना भी उचित है।

उस जौहरी ने अपने नौकर को मर्दाने के पीछे दौड़ाया, कहा कि पता लेकर आओ कि वह लाल लेकर किधर को गया है, नौकर ने नगर के बाहर आकर तीन साधु बैठे देखे। उधर मर्दाना भूख के मारे बोल नहीं सकता था। गुरु जी सर्वज्ञ थे, सब कुछ जान गये। कुछ ही समय के पश्चात् सालस राए भी आ गया। नौकर के सिर पर अनेक वस्तु थीं। सौ रुपया और वस्तु रख कर उसने गुरु जी के चरण छुए। गुरु जी ने कहा-हे भाई! यदि इस लाल को बेचें तब तो यह नज़राना भी ले सकते हैं। यदि हमने देना ही नहीं तो फिर यह सौ रुपया क्यों लें। जौहरी ने कहा-हे महाराज! यह तो साधारण लाल है परन्तु आप तो सत्य रूप के लाल हैं मैं अत्यधिक अचंभे में हूं। तब गुरु जी ने नीचे लिखा शब्द उच्चारण किया-

लालो लाल उपाइआ लालो लाल दिसंन॥
जिना लाली नेतर माही दूजा नाहि चाणंन॥
सुन सालस राय तूं जउहरी अपणा लाल पछा॥
कूड़े लाल न गंढ बंन अपना साह सिञान॥ १॥ रहाउ॥
कंकर पथर मेल कै नाउं सदाइओ साह॥
बिन सतिगुर परे अंध है मूल न बूझे राह॥ २॥

मेरा मेरा कर संजिओ राती अत देह॥
काई साख न ऊपजी कलर वुठे मेंह॥ ३॥
सुण सालस इक बेनती जो करम प्रापति होइ॥
नानक एक अराधीऐ दूख न लागै कोई॥ ४॥

अब जौहरी ने गुरु जी से उनका परिचय पूछा और कहा कि हमें अचंभा हो रहा है हमने अनेक महात्मा जो षट दर्शनों के वक्ता होते हैं वह सब देखे हैं परन्तु आप का भेद नहीं जाना जाता। सो कृपया आप ही बताएं। गुरु जी ने कहा हमारा नाम नानक निरंकारी है हम निरंकार देश के हैं तथा हमारा भेष भी निरंकार को देखा है। तब गुरु जी ने मारू रागु में शब्द उच्चारण किया-

मारू महला १॥

बिमल मझारि बससि निरमल जल पदमनि जावल रे॥
पदमनि जावल जल रस संगति संगि दोख नही रे॥ १॥
दादर तू कबहि न जानसि रे॥
भखसि सिबालु बससि निरमल जल अंम्रितु न लखसि रे॥ १॥
रहाउ॥ बसु जल नित न वसत अलीअल मेर चचा गुन रे॥
चंद कुमुदनी दूरहु निवससि अनभउ कारनि रे॥ २॥
अंम्रित खंडु दूधि मधु संचसि तू बन चातुर रे॥
अपना आपु तू कबहु न छोडसि पिसन प्रीति जिउ रे॥ ३॥
पंडित संगि वसहि जन मूरख आगम सास सुने॥
अपना आपु तू कबहु न छोडसि सुआन पूछि जिउ रे॥ ४॥
इकि पाखंडी नामि न राचहि इकि हरि हरि चरणी रे॥
पूरबि लिखिआ पावसि नानक रसना नामु जपि रे॥ ५॥ ४॥

यह सुन कर जौहरी बोला-आप यह रुपये लेकर मुझे कृतार्थ करो। गुरु जी ने कहा यह रुपये आप ही को रखने उचित हैं, हम तो साधु

हैं, रुपये आप ही को शोभा देते हैं हमें नहीं, उसने कहा यह मेवा पकवान तो स्वीकार करो, गुरु जी स्वीकार नहीं करते थे, परन्तु मर्दाना मौन धरे बैटा था, मन में कहता गुरु जी मान ले तो अच्छा है, मुझे भूख लग रही है। तब गुरु जी ने रागु मारू में शब्द उच्चारण किया।

राग मारू महला १ ॥

प्रीति पकवान जो भोजन करीऐ लुची लोचा पूरी ॥
मिटाई रसना रसि कसि बोले तां मनु रहे हजूरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सुन सालस तूं भाई मेरा ॥ समझ पवी तां होइ निबेरा ॥ १ ॥
सेवा मिलन तुमारा कहीऐ सत के बागे जोड़े ॥
सावन आए अघाइ सोई जो इन ते मन तोड़े ॥

फिर जौहरी के नौकर ने गुरु चरणों पर प्रणाम किया। तब गुरु जी उस पर बहुत प्रसन्न हुए, तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! प्रसाद पा लो, मर्दाना तो यही चाहता था उसने भोजन ले लिया। तब गुरु जी के आगे हाथ जोड़ कर अरदास करके कहा-हे महाराज! क्या आज्ञा है। गुरु जी ने कहा-हमने तुमारे लिए सालस राय को यहां बुलाया है, तब मर्दाना प्रसन्न होकर खाने लगा। गुरु जी ने शब्द उच्चारण किया-

उत्तम जनम सो सालस कहीए नीच नारइण पांवों ॥
लोभ लहिर ते तेई छूटे साध संगत गुण गावों ॥ ३ ॥
सुण सालस इस गोला तेरा आप नराइण माना ॥
नानक भगत संग मिल ऊचे पद ठहिराना ॥ ४ ॥

सालस राय ने प्रार्थना की कि आप मेरी मुक्ति करो। गुरु जी ने कहा-यदि तुम अपने इसी नौकर के चरणों पर गिरो तो भव सागर को पार करोगे। सालस ने कहा- जैसे आप आज्ञा दें मैं उपस्थित हूं। यह कह कर सालस ने पैर पकड़ लिये, नौकर को कहा कि तुम मुझे पार करने के लिये इनको लाये हो। गुरु जी सालस राए ऊपर भी प्रसन्न

हुए और एक सिरोपा भी दिया जो सालस राए ने अपने शीश पर बांध लिया, बस उस जौहरी के हृदय के पटल खुल गए और उसे एक पवित्र शब्द भी प्राप्त हुआ।

शब्द॥ सतिगुरु दाता नाम का दीनो खोल कपाट॥
इको वणजा वणजिआ बहुड़ न आवै घाट॥ १॥
सतिगुर नानक पूरा॥ बचन का सूरा॥ १॥ रहाउ॥
अगम निगम विखोवै तां खोलै नेत्र अनंत॥
जगत वणजारा सगल है साह एक भगवंत॥ २॥
वणज हमारा सतिगुरु पूंजी हमारी नाम॥
आठ पहर धुनि लाग रहे सोइ हमारे काम॥ ३॥
सालस बिनवै बेनती तुम सुनि लेहु करतार॥
कचा रंग उतार के चाढ़ो रंग अपार॥ ४॥
राग बिलावलु शब्द गुरु नानक जी उच्चारण किया-
गुरु शब्द निधान है मनमुखु आवा गउण॥
लख जूनी भरमाइओ फिर पावैगा भउण॥ १॥
तेरा निर्मल हीरा नाम है कोई परखे परखणहार॥ रहाउ॥
बेदी अंत न जाणिआ पढ़ पंडत बीचार॥
बेड़ा हरि का नाम है जिस चढ़ उतरै पार॥ २॥
अजन पाये सभ को देखण विच विणास॥
जिन लोइण जग देखीए सो लोइण परगास॥ ३॥
कंचन कंचन होइआ नानक धरे अपार॥
जंदरा खोल्हा कोटड़ी जन नानक धर्म दुआर॥ ४॥

तब गुरु जी ने अधरके नौकर पर और सालस राय पर अपनी अपार कृपा की। फिर आप ने फुरमाया कि यह चारपाई हमारी ओर से है तथा हम ने ईश्वर नाम का तुम्हें दान दिया है। हे सालस राय! जब तक तुम्हारा

जीवन है तब तक इस मंजी के तुम अधिकारी हो तथा तुम्हारे पीछे यह तुम्हारा नौकर अधिकारी होगा। असल में इस मंजी का अधिकारी तो यही तुम्हारा चाकर है। हमने तुम्हारा कुछ पक्ष लेकर प्रथम अधिकारी तुम को नियत किया है। पश्चात् नौकर को। तुम्हारी संतान इसकी अधिकारी नहीं होगी अब तुम्हारी शेष आयु दो वर्ष सात महीने है इस लिये तुम को पहला अधिकारी बनाया है उस करतार की इच्छा है। हे सालस! जो ईश्वरीय आज्ञा मानते हैं वही उत्तम पुरुष परमपद को प्राप्त करते हैं और उनकी ही संसार में पूजा होती है। चतुर जौहरी सच्चे लाल को रख लेते हैं और झूटे को त्याग देते हैं इसी प्रकार संत लोक उत्तम पुरुषों की पहचान करते हैं तथा उन पर कृपा दृष्टि करते हैं। आयु थोड़ी का परम पुरुष विचार नहीं करते। हम सत्य कहते हैं कि तेरा आवागमन छूट गया है। अब तूं शरीर त्याग कर मुक्त हो जायेगा।

साखी और चली

अब गुरु जी आगे को प्रस्थान करने लगे मर्दाने ने पूछा-हे गुरुदेव! अब किधर का विचार है? गुरु जी ने कहा कि विसभर एक टापू समुंद्र में है यहां एक साधु महात्मा है उसके दर्शणों की इच्छा है।

आगे समुंद्र आ गया, मर्दाने कहा, हे सतगुरु! धरती समाप्त है। अब जल में चला नहीं जा सकता, गुरु जी ने कहा-जहां खड़े हो वहां से चुप चाप चलते रहो यह धरती है यह एक विशाल मछली है जो पैंतीस कोस लम्बी है और पांच कोस चौड़ी है। मर्दाने के मन में शंका हुई परन्तु चुप रहा। तीन दिन तक चलते रहे तब मछली का एक चानां देखा। फिर मछली ने अपना मुख खोला तब

मर्दाना भयभीत हो गया। बाले के पूछने पर मर्दाने ने डरते डरते कहा यह मछली हमें खा जाएगी। बाले ने कुछ ज़ोर से कहा कि हे मर्दाना! तूं अभी तक संशय आत्मा ही रहा है फिर मछली ने जुगाली की तथा उसके मुख से अनेक प्रकार की खाद्य वस्तु निकली। मर्दाना कुछ प्रसन्न हुआ। उस मछली को गुरु जी ने कहा-भाई तूं कौन हैं? उसने उत्तर दिया मैं मत्स्य (मच्छ) हूं। गुरु जी बोले भाई! जो कुछ तूं हैं वही बता। मच्छ ने कहा-कि आप नानक निरंकारी हो, आप विदेह मुक्त हो तथा मैं आपका सेवक हूं फिर अपनी कथा सुनाने लगा। हे गुरुदेव! मैं आप का शिष्य था, एक समय आप ने मुझे एक काम की आज्ञा दी। मैंने कुछ कोताही की, आप ने फुरमाया कि जब तुम्हें कोई काम कहा जाय तब तू मछली की भांति तड़पने लग जाता है बस उसी शब्द से मुझे मछली योनि में आना पड़ा अब आपका दर्शण हो गया है अब मुझे मोक्ष की इच्छा है। गुरु जी ने कहा कि भाई कल को तेरी यह देह छूट जायेगी, मच्छ ने प्रार्थना की कि मेरा यह शरीर छूटने तक आप मेरे पास रहने की कृपा करो। गुरु जी ने बाले से कहा कि बाला! जैसे कहो तैसा कीया जाये तब मर्दाना कुछ बाले के साथ वाद विवाद करने लगा। अंत में गुरु जी ने मर्दाने को कहा-भाई मर्दाना! क्या बात है। मर्दाना बोला, हे सन्त गुरुदेव! हमें आपके साथ रहते कुछ समय हो गया है परन्तु आपकी पहिचान नहीं कर सका, भूला ही रहा। सो हे गुरुदेव! आप मेरी भूल को क्षमा कर दो। गुरु जी ने कहा-मर्दाना! हमने अपनी ही इच्छा से आपको अपने साथ रखा है तथा प्रत्येक बात मानी है तुम तो मेरे प्राण हो, मन से दुई निकाल दो।

दूसरे दिन लगपग डेढ़ प्रहारी बीतने पर मच्छ ने अपने प्राण त्यागे। गुरु जी ने फुरमाया-हे मच्छ! तुम चलो। हम भी तुम को आ कर मिलेंगे॥ २८॥

साखी और चली

अब गुरु जी आगे यात्रा करने लगे। एक पहाड़ी पर एक नगर देख कर मर्दाना बोला-गुरु जी! यह कोई नगर है? गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना तुम को नगरों का विशेष ध्यान रहता है। मर्दाना बोला, आपको तो हम पर दया नहीं आती। हम अनेक दिनों के भूखे प्यासे चले आ रहे हैं। गुरु जी ने बाले की ओर देख कर कुछ पूछने का संकल्प किया। बाला ततक्षण कहने लगा-हे गुरुदेव! यह मर्दाना स्वभाव से ही ऐसा है। मर्दाना बोला, हे बाला! तूं तो ऐसी बात क्यों न करें क्योंकि गुरु जी की तेरे पर कृपा है तथा हम लोक आज तक कोरे ही चले आ रहे हैं।

गुरु जी कहने लगे, हे मर्दाना! यह शहर ऐसा है, जहां पुरुष तेल के कड़ाहों में तले जाते हैं, मर्दाना बोला-हमें इसे देखने की कोई इच्छा नहीं है। गुरु जी ने कहा-कि इसे तो अवश्य ही देखना होगा, मर्दाना बोला, हे महाराज! मैंने कुछ मनुष्यों से कुछ बातें सुनी है जब हम तीनों नगर के निकट आये थे तब वे लोग बातें करते थे कि इस नगर का नाम देव गंधार है, यहां का राजा देवलूत है। सत्रह लक्ष देव इसके अनुचर हैं देव लूत राजा को पता हो गया है कि तीन मनुष्य हमारे इस नगर में आने वाले हैं तथा वे तीनों हमारी खुराक हैं, यह बातें मैंने सुनी हैं।

उसी समय वहां देव आ गये जिन्हें देख कर मर्दाना अत्यन्त भयभीत हुआ, मर्दाना बोला-हे गुरु जी! देव आ गये हैं अब क्या किया जाय? गुरु जी ने मुस्करा कर कहा-मर्दाना! उस वाहिगुरु के रंग देखते जाओ, डरो नहीं। जब वे देव इन तीनों के निकट आये तब उसी समय नेत्रों से अंधे हो गये। कौतुक यह था कि उनको और तो सभी वस्तु नज़र आती थी, परन्तु गुरु जी, बाला और मर्दाना नज़र नहीं आते थे। देवों ने अपने राजा को कहा कि हमें तो वहां कुछ नज़र नहीं आता तब

दोबारा राजा ने कहा कि जाओ तथा तीन पुरुषों को ले आओ। जब फिर आये तो फिर अंधे हो गये। इस प्रकार उस राजा ने सात बार बदल बदल कर दूत भेजे, परन्तु सभी का वही हाल हुआ। तब वजीर ने कहा-हे श्रीमान्! मुझे यह मालूम होता है कि वे तीनों नवागत कोई असाधारण पुरुष हैं। वजीर ने कहा कि मैं उनकी सेवा के लिए जाता हूं। यदि मैं अन्धा न हुआ तो आप ने उनका सत्कार तथा सेवा अवश्य करना। उस समय वजीर अपना हृदय शुद्ध करके गुरु जी के निकट गया और चरणों पर नमस्कार करके कहने लगा-महाराज आप कौन हैं अपना परिचय देने की कृपा करें। गुरु जी ने कहा-हम अमर पुरी से आ रहे हैं। वजीर ने कहा कि अमर पुरी किस दिशा में है। गुरु जी ने कहा भाई हमारी अमर पुरी दिशा की ओर नहीं है। वहां दिशा का कोई प्रश्न ही नहीं तथा हमारा नाम नानक निरंकारी है तथा हमारी जाति भी निरंकार है उसने कहा आप नगर में चलें। गुरु जी ने कहा जहां फकीर बैठ जायें वहां नगर होता है। वजीर ने जाकर राजा को कहा कि आप के नगर में महान् पुरुष आया है। राजे के मन में कपट था। कुछ सेना अफसर भी साथ ले लिए। जब गुरु जी के निकट पहुंचे तो वजीर के सिवाय सभी नेत्रहीन हो गये। तब वजीर ने कहा हे राजा क्या हाल है? मैंने कहा था कि यह कोई कलावान महान् पुरुष है राजा ने कहा-मेरे मन में कपट था जिसका फल मुझे मिला है। तब वजीर ने कहा कि अब क्या इच्छा है। राजे ने उत्तर दिया कि अब तो मन में उन के चरण पकड़ने की इच्छा है क्योंकि मैंने परीक्षा ले ली है। तब वजीर ने हाथ जोड़कर कहा-हे निरंकारी! आप हमारे राजा को भी दर्शण दो। बस उस पर गुरु जी की कृपा हो गई तथा राजा ने गुरु जी के चरण छुहे। गुरु जी ने कहा हे राजन! तू अपना यह बुरा कर्म छोड़ दे। तब राजा ने कहा-हे महाराज! मैं समझ रहा हूं कि आप उधार करने

ही इधर आये हैं। गुरु जी ने कहा कि हम ने कहा था कि हम आयेंगे सो इकरार पूर्ण हो गया। राजा ने गुरु जी की अपार स्तुति और सेवा कर अपने मंदिर में ले आया। राजा के कर्मचारियों ने राजा की आज्ञा से उत्तम मेवे लेकर गुरु जी के आगे रख दिये।

गुरु जी ने कहा-हे राजन! पुरुषों को मार कर खाना बहुत ही बुरा है इसे त्याग दो। राजा ने कहा-आपकी कृपा होगी तो सब ठीक हो जायगा। गुरु जी ने कहा-तुम राजा सुधर सैन को जानते हो? उस ने कहा वह तो मेरी खुराक है। तब गुरु जी ने कहा-हे राजन! यदि उसे तुम मेरे समान जानो तब तुम्हारा भोजन स्वीकार करेंगे। राजा ने कहा-यही होगा तथा आपकी आज्ञा सदैव मानूंगा। गुरु जी ने फिर उस का मेवा प्रेम के साथ खाया तथा बाला और मर्दाना ने भी पेट भर कर खाया। फिर भोजन तैयार हुआ और उन्होंने उस का भी भोग लगाया। भोजन आगे था और गुरु जी समाधि रूप हो गये। जब उत्थान अवस्था हुई तो वह भोजन प्रसाद के रूप में राजा तथा वजीर आदिक को दिया गया। उस प्रसाद को खाने से राजा और वजीर के हृदय के पटल खुल गये और एक प्रकार की मस्ती छा गई। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह ईश्वर के रंग हैं देखते जाओ। चार घड़ी के पश्चात् उसकी अवस्था ठीक हुई। तब कहने लगे कि हम तो कंकर पत्थर से भी निकम्मे हैं तब गुरु जी ने कहा-कि आज से तुम्हें महा पुरुष कहा जाता है, और वजीर भी तुम्हारे साथ रहेगा। तुम सदैव उस ईश्वर की उपासना किया करो और किसी की बुराई न करो, इस सतसंग से सभी पापी उत्तम मार्ग पर चलने लगे और गुरु जी के शिष्य हो गये, नौं महीने गुरु जी वहां रहे। फिर वहां से प्रस्थान किया।

साखी और चली

फिर गुरु जी वहां से परस राम के नगर को चले। मार्ग में तीन महीने लग गये। वहां का राजा तीक्षण सैन था। वह बन मानसों का राजा था और स्वयं भी बन मानस था। जब वहां पहुंचे तो बन मानसों को देख कर मर्दाने ने कहा- हे गुरु जी! मुझे इन बन मानसों से भय हो रहा है। गुरु जी ने पूछा, हे मर्दाना! क्या हाल है। उसने कहा, हे महाराज! यह क्या बलाई हैं? गुरु जी ने कहा यह बन मानस हैं। मर्दाने ने कहा और तो भाग गये हैं परन्तु यह एक अभी तक खड़ा है। जब मैंने इनसे पूछा कि तुम कौन हो तब इसने एक चीख ही मारी। बाले ने पूछा-महाराज यह चीख क्यों मारते हैं। गुरु जी ने कहा-हे बाला! इनकी यही भाषा है। बाले ने कहा-हे महाराज! वह जो चीख मार कर भाग गया था, वह देखिये कुछ मेवे ले आया है और आगे रख कर आप पीछे हट गया है। गुरु जी ने कहा-हे बाला! जाओ मेवा उठा लाओ। मैंने कहा-महाराज! आप अपवित्र वस्तु तो स्वीकार नहीं करते। गुरु जी ने कहा-भाई यह तो परम पवित्र हैं। ये बन मानस हैं और शाक पात खाते हैं तथा पुरुषों से भय मानते हैं। इसी प्रकार गुरु जी एक मास उसी बन मानसों से सेवा करवाते रहे। फिर आगे प्रस्थान किया।

साखी और चली

चलते चलते संसार के स्वामी गुरु नानक समुंद्र तट पर पहुंचे। आगे समुंद्र की अपार तरंगें देख कर मर्दाना बोला कि आप आगे कहां जाओगे, क्योंकि भारी समुंद्र आगे है। गुरु जी ने कहा- मर्दाना! चुप चाप चले आओ। ईश्वर के रंग देखो और चले आओ। गुरु जी ने कहा-जिसके मुख में आगे लिखा परम पवित्र शब्द होगा वह स्वयं पार

हो जायेगा और जो प्रेम से सुनेगा, वह भी पार हो जायगा। वह शब्द इस प्रकार है-

॥ परम पवित्र शब्द ॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि॥ जपु॥
आदि सचु जुगादि सचु॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु॥

इसी परम पवित्र शब्द की ओर ध्यान देते हुए हे मर्दाना तुम हमारे पीछे चले आओ। बस फिर क्या था वे इस प्रकार जल पर चलने लगे जैसे पृथ्वी पर चला जाता है, मर्दाना बोला-हे महाराज! आप में और उस अल्लाह में तो अब कोई भेद नज़र नहीं आता। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! हमारा कथन मान कर चुप चाप चले आओ। मर्दाना बोला-अब हमें किसी का भय नहीं।

गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! आगे एक भारी विपत्ति आने वाली है। मर्दाना बोला-तब आगे जाने की क्या आवश्यकता है। गुरु जी ने कहा पीछे लौटने से भी विपित्त टलेगी नहीं। पांच दिन रात चलते रहे तब आगे से एक लंबे दांतों वाली एक महान् भयानक मूरती आती देखी। तब गुरु जी ने एक डंडा पड़ा देख कर कहा-इसे उठा लाओ। डंडा गुरु जी को मर्दाने ने ला दिया। गुरु जी ने डंडा पकड़ा तो यह भयानक मूरती गुरु जी के सामने भागती हुई आने लगी। गुरु जी ने उसके मुँह में डंडा दे दिया। बस वह चीखें मारती हुई भाग खड़ी हुई फिर उसी स्थान पर नारद जी आ गये। गुरु जी ने कहा-हे बाला! तूं कल की भांति होश्यार रहो तथा मैं नारद के साथ कुछ खेल खेलूंगा। नारद ने कहा-आप इस भयानक प्रतिमा को क्या कहना चाहते हो? यह तो सभी कुछ परमात्मा की आज्ञा से कर रही है। गुरु जी ने कहा, हे

नारद! इसने साधारण संसारीयों जैसा बर्ताव हम पर भी किया है इसको भले बुरे की पहिचान नहीं। नारद ने कहा कि इस बला को बुला कर पूछना चाहिए। गुरु जी ने कहा - हे नारद! तुम ही पूछो तब नारद ने उसको बुला कर कहा-हे कलमाता! तुम को किसी साधु पर लपकने की आज्ञा नहीं। उसने कहा-हे नारद! यह स्वयं तो छूट सकता है परन्तु यह साधारण जीवों को भी छुड़ा रहा हैं। यह कहता है (श्री नानक देव जी की ओर इशारा करके) कि जो भी मेरा शिष्य होगा सभी छूट जायगा और तेरे अर्थात मेरे बाल नोचेगा। तब गुरु जी ने कहा-हे कल! तूं किसकी आज्ञा से भ्रमण कर रही है। उसने कहा-निरंकार की आज्ञा से भ्रमण करती हूं। गुरु जी ने कहा-हमें किसने भेजा है। उसने कहा कि आप भी उसी के भेजे हुए संसार में आये हो। गुरु जी ने कहा कि तुम्हें इस स्थान पर आना उचित नहीं था। तेरे लिए और संसार है जो पुरुष हमारे उपदेश को मानेगा उस पर तेरा वार नहीं चलेगा। नारद जी ने कहा-हे कलमाता! यह नानक निरंकारी अत्यंत शक्ति का स्वामी है। तुझे भी इस का सन्मान करना उचित है॥ ३१॥

साखी और चली

श्री गुरु नानक देव और मर्दाना तथा बाला जी आगे चले। पंद्रह दिन और पंद्रह रात्री चलते ही गये। कुछ भी खान पान न किया था। आगे समुंद्र के टापू में बिसहर देश में पहुंचे। उस देश का राजा सुन्दर सैण राज करता था। नगर के बाहर गुरु जी ने डेरा लगा दिया। तीन चार दिन के पश्चात् मर्दाने ने कहा—यदि आज्ञा हो तो मैं नगर में जाऊं क्योंकि मुझे अत्यंत क्षुधा लग रही है। नगर में कुछ खाने को प्राप्त होगा। गुरु जी ने बाला की ओर देखा तब बाला जी ने कहा-इसकी जाति में भूंख प्रारंभ से ही अधिक होती है। गुरु जी ने हंस कर कहा हे मर्दाना!

तूं किधर को जायेगा। मर्दाने ने कहा-जिधर आज्ञा होगी मैं उधर ही जाने को तैयार हूं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! एक झंडा बाढी बढ़ई है तू उसके पास जाये तो अच्छा है। मर्दाना ने कहा-हे गुरुदेव! मैं उसे जानता नहीं। आप उस का पता दें। गुरु जी ने कहा-उसके पिता का नाम पाखर है। बस यह पूछ कर पता कर लेना। मर्दाना नगर में आकर पूछने लगा कि पाखर का पुत्र झंडा कहां रहता है? जब एक कोस चल कर भी पता न चला, तब एक पुरुष मिला। उसने कहा-भाई तुम कौन हो और नाम ग्राम आदिक का पूरा पूरा परिचय दो। मर्दाने ने कहा - भाई तू मुझे बता जब वह मुझे मिलेगा तब वह स्वयं जो मुझ से पूछना होगा पूछ लेगा। उसने कहा-पहिले तुम अपना परिचय दो तब बता सकता हूं। मर्दाने ने कहा कि इस नगर की उल्टी मर्यादा है। उसने कहा-भाई नाराज़ होने की आवश्यकता नहीं। यहां के राजा की यही आज्ञा है कि जब कोई विदेशी आकर पता पूछे तो पहिले उस नवागत का परिचय पूछो। तब मर्दाने ने कहा-मेरा नाम मर्दाना तथा जाति का मिरासी हूं तथा मैं पंजाब प्रांत का रहने वाला हूं। उसी पंजाब में एक नगर जिसका नाम तलवंडी राय बुलार है वही मेरा जन्म स्थान है। उसने कहा-हे मर्दाना! वहां एक नानक बेदी उत्पन्न हुआ है। क्या तुम जानते हो? मर्दाने ने कहा भाई मैं उसी का मिरासी सेवक हूं। अब तूं अपना परिचय दो। उस ने कहा भाई वह तो हमारा पुराना मित्र है। मर्दाने ने कहा-क्या तुम उस को पहिचानते हो? उस ने कहा-यदि वह मेरे सन्मुख हो तो पहिचान भी सकता हूं। मर्दाना ने कहा-वह तो नगर के बाहर आसन लगाए बैठे हैं। उस ने गुरु नानक के दर्शनों को कहा-तो मर्दाने ने कहा-भाई श्री नानक मुझ पर कुपित न हों, तू पहिले मुझे झंडे का पता बता, पीछे मैं तुम को गुरु जी के निकट ले चलूंगा, वह मर्दाने को झंडे के घर ले गया।

मार्ग में मर्दाना बोला हे मित्र! मैंने तो अपना परिचय दे दिया, परन्तु तुमने अपना परिचय नहीं दिया, उस ने कहा-भाई जी! गुरु नानक भली प्रकार जानता है। मर्दाना बोला-मैं भी तो जानना चाहता हूं। इसने कहा-मेरा नाम इंदर सैन है, तथा यहां का जो राजा है मैं उसकी बहिन का पुत्र हूं। इतने में झंडे का घर आ गया, वह एक चारपाई बुन रहा था। उसने मर्दाने को देख कर उस का आदर सत्कार किया, फिर बैठने को कहा-फिर लाने वाले से पूछा कि यह साधु कौन है, उसने कहा-कि यह तुम्हारा पता पूछते आ रहा था तथा मैं इसे आपके निकट ले आया हूं। उसने मर्दाने से परचिय पूछा-तब मर्दाना बोला कि मेरा नाम मर्दाना है और अपना परिचय दिया। उसने कहा-अच्छा बात बताओ कि आप का मेरे साथ क्या काम है, तब मर्दाना बोला कि मुझे आप से जरूरी काम है, मुझे गुरु नानक ने आप के पास भेजा है, उसने कहा-मैं तो नानक देव जी को नहीं जानता, तब मर्दाना बोला-भाई वे तो आपको जानते हैं। उन्हों ने मुझे आप के पास भेजा है, कृपया आप मेरे साथ चलें। उस ने कहा यह चारपाई बुन लूं तो चलूंगा उतावला होना ठीक नहीं। अंततोगत्वा काम खतम करके उस ने सोचा कि नानक देव जी के लिए क्या ले जाऊं? फिर उसने पूछा-हे मर्दाना! नानक देव जी कैसे हैं यह तो बता दो, मैं कुछ भेंट ले जाना चाहता हूं, उसने (मर्दाना ने) श्री गुरु नानक देव जी का जन्म स्थान आदिक बताया तब झंडे ने सोचा कुछ भोजन बनवा कर ले जाना उचित है, जब मर्दाना ने शीघ्र चलने का आग्रह किया तब झंडे ने कहा, भाई! उतावलापन ठीक नहीं होता। गुरु नानक एक साधू है, साधू के निकट कुछ भेंट लेकर ही जाना उचित होता है।

अब मर्दाने ने सोचा कि गुरु जी तो केवल पावन आहार ही करते है परन्तु मैं और बाला भूख से व्याकुल हो रहे हैं दूसरे मैं तो नगर में

पेट के लिये ही आया हूं। उसने झंडे से कहा-भाई! मैं तो उतावला इस लिये हो रहा हूं कि नगर के बाहर दो साधु भूखे प्यासे बैठे हुए हैं। इस लिये जो करना है वह शीघ्र ही करो।

झंडा उस नगर के राजा का बढ़ई भी था। वह सुधर सैण के बाग में आया, घर में कह गया कि तुम बढ़ल कवल फल जो मैं देकर चला हूं उसका शाक बनाओ और साथ रोटियें बना लो और फूल की भाजी तैयार कर लो। स्वयं बाग में सुन्दर सुन्दर मेवे लेकर सिर पर रख कर मर्दाने को कहा चलो तुम्हारे गुरु के दर्शण करते हैं। अब झंडे को लिये हुये मर्दाना गुरु जी के निकट आ गया। तब गुरु जी ने कहा आ भाई झंडा! भोजन वगैरा देख कर कहा-हे भाई झंडा! यह सामान क्या लेकर आये हो? झंडे ने कहा-आपके लिये भोजन लाया हूं। गुरु जी ने कहा-हे झंडा! आप हम को जानते हो? तब उस ने कहा-हे महाराज! यदि मैं नहीं जानता तो आप जानते हैं आप ने स्मरण किया तथा हम उपस्थित हो गये हैं, गुरु जी ने कहा कि यह भोजन किस ने भेजा है। उसने उत्तर दिया कि यह भोजन परमात्मा ने भेजा है। गुरु जी ने कहा-तुम परमात्मा को जानते हो? झंडे ने कहा-महाराज! उस परमात्मा को कौन नहीं जानता। मैं तो फिर पुरुष हूं। परमात्मा को तो प्राणी मात्र सभी जानते हैं। गुरु जी ने मुस्करा कर पूछा-हे भाई झंड़े! तू परमात्मा को कब से जानता है? झंडे ने कहा-आप पहिले भोजन खा लो-क्योंकि आप बहुत दिनों से भूखे हो। बाकी बातें बाद में की जायेंगी। मर्दाने ने कहा-हां जी यह सत्य कहता है। पहिले भोजन छकना चाहिये तथा पीछे दूसरे उपदेश काम आ सकते हैं, गुरु जी हंसने लगे, और बाले को कहा, बाला! हंसने में तुम्हारी सम्मती क्या है? बाले ने कहा-महाराज! यह जो मर्दाना कहता है सो सत्य है। क्योंकि इस को भूख बड़े ज़ोरों से लग रही है मालूम होती हैं।

तब गुरु जी ने कहा-हे झंडा! यहां तुम्हारा सब से अधिक मित्र और हितैषी कौन है? उसने उत्तर दिया कि यहां राजा सुधर सैन की बहिन का एक पुत्र है वह बहुत भला पुरुष है। बस उसी के साथ मेरा सभ से अधिक प्रेम चला आ रहा है। गुरु जी ने कहा-मर्दाना! जाओ उसे भी बुला लाओ। मर्दाना गया और उसे भी अपने साथ ले आया। उस का नाम इन्द्र सैन था। गुरु जी ने आज्ञा दी तुम इसके पांच भाग करो तथा उस में एक भाग मर्दाने का निकाल लो। झंडे ने कहा-महाराज! आप तीन पुरुष हैं यह पांच भाग करने का रहस्य मेरी समझ में नहीं आया। गुरु जी ने कहा-तीन तो हम हैं और चौथे तुम तथा पांचवें आप के मित्र हैं जिन का नाम इन्द्रसैन है सभ के एकत्र हो जाने पर भोजन बांट कर किया जायेगा। सब से पहिले मर्दाने को भाग दिया गया, उसने कहा महाराज! मैं सभ से पहिले खाने को तैयार नहीं हूं। यदि आप पहिले खायें तो पीछे मैं खा सकता हूं। गुरु जी ने कहा- हे मर्दाना! तुम भूखे हो और हमारा विशेष ध्यान न किया करो, हम कहते हैं कि निर्भय होकर खाओ। तब मर्दाना खाने लगा। झंडे ने कहा-हे महाराज! अब आप भी खायें तो आप की बहुत अनुकपा है। गुरु जी ने कहा-हे झंडा! तुम कहते हो कि यदि मैं (नानक) भोजन पाऊं तो तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हो और प्रसन्न हो, परन्तु मेरा विचार है कि तुम और इंद्रसैन प्रसाद पा लो तो तुम्हारे मन के कपाट खुल जायें तो मेरी प्रसन्नता पुर्ण हो जाये। यह प्रवचन कर झंडे को विचार हुआ कि नानक देव एक पहुंचे हुए साधु हैं तथा हमारी उत्तम प्रालब्ध से हमें दर्शण हो गये हैं, हम ने इनकी कीर्ति और ख्याति संसार में अनन्त सुनी हैं, इन्दर सैन ने कहा कि हे झंडा, मैं इनको पहिले ही जानता हूं। झंडे ने हैरान होकर पूछा वे तो कहते हैं कि हम यहां से लगपग पंद्रह सौ कोस की दूरी के निवासी हैं और इससे पूर्व यहां कभी नहीं आये और आप तो कहते हो वह हमारा

पहिले का जाना और पहिचाना हुआ है। यह तुम ने झूठ बोला है। इंद्रसैन ने कहा-झंडा! यह तुम्हें उस समय पता चलेगा जब हम इकटे होंगे तथा हम कल को इकटे हो जायेंगे अब तुम जाओ, झंडे ने कहा वहां आपका भोजन धरोहर के रूप में पड़ा हुआ है, वे तो खाते नहीं और आप कहते हो हम कल को मिलेंगे, यह बात बनती नहीं है। जब छः घड़ी रात्रि व्यतीत हो गई तब इंद्रसैन झंडा जी का कथन स्वीकार करके चल पड़े। इंद्रसैन ने पूछा-नानक स्वभाव का कैसा है तथा उसके शब्द किस श्रेणी के हैं। झंडा बोला स्वभाव तो बहुत ही उत्तम है और उनके बोल भी बहुत पवित्र हैं, अब दोनों ने गुरु जी के निकट आकर सत्य करतार की ध्वनि लगाई। गुरु जी ने हंस कर कहा-सत्य करतार भाई पुराने मित्र हो, झंडे ने इंद्रसैन से पूछा-यह साधु क्या कहता है, इंद्रसैन ने मचल मार कर कहा-जी मैं तो कुछ भी नहीं जानता, मर्दाना बोला आप तो कहते थे कि नानक हमारा पुराना मित्र है, और अब आप कहते हो कि मैं जानता नहीं। उसने कहा कि यदि कोई निशानी (चिन्ह) बताएं तब मानू यह वही हैं। गुरु जी ने कहा-हे इंद्रसैन इस झंडे को तो कुछ खबर नहीं, अपितु तुम तो जानते ही हो। उसने कहा-मैं तो नहीं जानता यदि कुछ बताओ तो मैं जान सकता हूं। गुरु जी ने कहा-हे इंद्रसैन वह दिन याद करो जब तुम राजा जनक के सेवक थे और तभी त्रेता युग में राजा जनक ने हंसनी की बाबत स्वांग उठाया था और कहा था कि हंसनी मेरी है और आप को पूछा कि हंसनी किस की है, तुम को इस लिये भय दिखाया जो तुमने मिथ्या साक्षी दी, तुम राजा के अधिक निकटवरती थे। तुम ने पूर्ण गुरु रूप ही जाना। हमें कहा कि भय है और राजा जनक ने तो छल किया है। राजा जनक ने हंसनी क्या करनी है। तुम को परमात्मा ने भुलाया, तब उस ने झूठी साक्षी दी। बताओ हम क्या करें, तब राजे जनक ने अपने से कहा कि तुम्हारा दोबारा जन्म

होगा तब तुम और यह इकठे रहते चले आये। तब तुमने कहा था कि यहां के बिछड़े कहां पर मिलेंगे। हमने कहा तुम्हारा हमारा मिलाप होगा कि न होगा, उस समय तुमने कहा-हे भाई! तुम्हारी भक्ति पूर्ण हुई। तुम से दोष तो हुआ है। एक तो तुम मूर्ती पूजा करते रहे और फिर झूट बोला। तुम को जनक जी रोकते रहे कि मूर्ती पूजा न करो। तुम से पहिले जो सेवक रहा वह मच्छ बना। फिर तुम मिलकर राजा के निकट खड़े हुए और कहा यह क्या हुआ। हमने तुम्हारा कथन माना था और हम फिर जन्म मरण के चक्र में डाले गये फिर जनक ने कहा-भाई! मैंने तुम को सत्य कहा था। तुमने मेरा कथन नहीं माना। तब मैंने कहा-परन्तु मेरी सेवा का तुम को यही फल है कि तुम को मनुष्य योनि प्राप्त होगी तब तुमने कहा कि हम आवागमन में रहेंगे अथवा कभी मुक्ति भी होगी। राजा ने कहा-तुम्हारी भक्ति पूर्ण है। इस लिए कलियुग में तुम्हारा उद्धार होगा। कलियुग में तुम को पूर्ण पुरुष के दर्शण होंगे तथा उसका नाम कलियुग में नानक होगा, तथा हमारे बहुत प्राणियों का उद्धार होगा तथा मैं तुम को वहीं मिलूंगा।

तब इंद्रसैन को कहा-सुन भाई! कोई निशान मांगो तो और भी देने को तैयार हूं। यदि यही पर्याप्त है तो जैसे तुम्हारी इच्छा हो वह करो। इंदर सैन ने कहा-मेरे अहोभाग्य हैं जो मुझे दर्शन हुए हैं। तब इंद्रसैन ने प्रणाम किया और मौन हो गया।

फिर वहां जब एक घड़ी व्यतीत हुई तो कहने लगा कि मेरा एक प्रश्न है। गुरु जी ने कहा जो कुछ भी मन में है वह निःसंकोच कहो। उस ने कहा कि अब मैं आपकी इच्छा जानना चाहता हूं। गुरु जी ने कहा-मेरी इच्छा यह है कि हम और तुम इकठे रहते थे और तुमने भक्ति भी बहुत की है। इसी लिये हम तुम्हारे पास आये हैं। इन्द्र सैन ने कहा-आप को यहां परमात्मा लाया है तो हमारा उद्धार करके जाना

होगा, यह आप का इकरार भी है, इन्द्र सैन ने बाले को कहा-हे भाई! मैं भी इन का सेवक हूं। मैं यह भी जानता हूं कि आप ने मेरे ऊपर बहुत कृपा की है, परन्तु इस झंडे पर भी कृपा दृष्टि हो। गुरु जी ने कहा-हे मित्र हम तुम्हारे और झंडे के लिये ही यहां आये है। परन्तु तेरे साथ तो हमारा इकरार था तब इंद्रसैन ने कहा-कि आप इकरार के दृढ़ हो, परन्तु मैं तो झंडे के लिए आग्रह कर रहा हूं झंडे पर जो कृपा करोगे, वह मुझ पर ही होगी। गुरु जी ने कहा-अच्छा हम ने तो किया हुआ इकरार पूर्ण करना है तब इंद्रसैन ने कहा-झंडा जी! जो कुछ गुरु नानक कहे उसे तन मन से स्वीकार करना होगा, झंडे ने कहा-कि मैं ऐसे क्या जानूं कि क्या कुछ नानक देव कहते हैं? तब गुरु जी ने एक शब्द रामकली में उच्चारण किया-

रामकली मः ५ ॥

ईंधन ते बैसंतरु भागै॥ माटी कउ जलु दह दिस तिआगै॥
ऊपरि चरन तलै आकासु॥ घट महि सिंधु कीओ परगासु॥ १ ॥
ऐसा संम्रथ हरि जीउ आपि॥ निमख न बिसरै जीअ
भगतन कै आठ पहर मन ता कउ जापि॥ १ ॥ रहाउ॥

झंडे ने कहा-हे महाराज! मुझे तो कुछ भी समझ नहीं आई। तब गुरु जी ने अर्थ करके सुनाया।

इस शरीर के भीतर जो अस्थियें हैं वह लकड़ी है। जो लकड़ी जलाने के काम आती हैं उसे ईंधन कहा जाता है और देह के भीतर जो जठर है जिस आग में अन्नादिक पचते हैं। उसे जठर कहा जाता है, वही अग्नि है तथा शरीर मिट्टी है तथा माता जो जलपान करती है उस से बालक का शरीर बढ़ता है।

परमात्मा का स्मरण कैसा है, जो प्रकाश करने वाला है। भक्तजनों को वह परमात्मा एक क्षण भी नहीं बिसरता। हे मन तू आठों पहर उसी का स्मरण कर।

हे भाई झंडा! तू परमात्मा का स्मरण कर इस में तेरा कुछ व्यय नहीं है। झंडे ने कहा-आप तो कहते हैं कि प्रभु स्मर्ण कर। परन्तु मैं तो एक निर्धन बढ़ई हूं। मेरा बाल बच्चा किस प्रकार निर्बाह करे। यह सुन कर श्री नानक देव जी ने दूसरी पउड़ी का उच्चारण किया-

प्रथमे माखनु पाछै दूधु॥ मैलू कीनो साबुनु सूधु॥
भै ते निरभउ डरता फिरै॥ होंदी कउ अणहोंदी हिरै॥ २ ॥

झंडे ने फिर कहा-हे महाराज! मैं कुछ भी नहीं समझा। गुरु जी ने अर्थ किया-

जब बालक माता के गर्भ में होता है तब दूध नहीं होता और बालक गर्भ से बाहर आता है तब दूध माता के स्तनों से निकलने लगता है सो तू चिंता न कर निश्चित हो जा। उस परमात्मा ने पालन पोषण प्रथम उपस्थित कर रखा है तथा जीव संसार में पीछे आता है। हे भाई! तुझे भय किस बात का है तू तो निर्भय है, जो किसी को अपना सहारा जानता है और जो किसी का आश्रय अपने को मानता है, वे दोनों ही कुछ नहीं जानते। यह न होने वाली विचार है। यह जो कुछ हो रहा है और जो कुछ होगा, यह सब कुछ उसी की लीला है।

झंडे ने कहा-महाराज! जो कुछ आप फुरमा रहे हो यह गुप्त रहस्य की बातें है जिसे मैं अल्पज्ञ जान नहीं सकता, फिर गुरु जी ने तीसरी पउड़ी उच्चारण की-

देही गुपत बिदेही दीसै॥ सगले साजि करत जगदीसै॥

. . . . . .

संत सभा मिलि करहु बखिआण ॥ सिंम्रिति सासत बेद पुराण॥

झंडे ने फिर कहा-आप अर्थ कहो-तब गुरु जी ने इस का अर्थ कहा-इस देही के भीतर मुष्ट देही है, वह गुप्त है तथा यह प्रत्यक्ष है उसी मुष्ट देही के साथ यह जाता है और प्रत्यक्ष देह यहां रहती है, वह

देह इस को नज़र नहीं आती। यह सभी लीला परमात्मा की रची हुई है, इस पर विचार साधु पुरुषों में बैठ कर करना उचित है तथा वेद शास्त्रों में करे। परन्तु साधु पुरुषों द्वारा सुगम प्राप्त है॥ ३ ॥

झंडे ने कहा-हे महाराज! वह तो नज़र नहीं आता और यह तो नज़र आ रहा है। फिर गुरु जी ने अंतिम पउड़ी पढ़ी—

द्रिषट मान को कहे अद्रिष्ट॥ अद्रिष्ट वेख भूली सभ स्रिषट॥
ब्रहम वीचार विचारे कोइ॥ नानक तांकी परम गति होइ॥ ४ ॥

झंडे के कहने पर गुरु जी अर्थ कहते हैं-जो दृष्टिगोचर हो रहा है। यह सभी अदृष्टी है। वह नज़र आकर छुप जाता है। एक क्षण में अनेकों स्वरूप धारण करता हैं। जो प्रत्यक्ष देखा जाता है उसे संसार अदृष्ट कहता तथा प्रत्यक्ष चले जाते हैं उन्हें दृष्टि मान रखा है। इस ब्रह्म विचार करने वाले की उत्तम गति होती है।

यह सुन कर झंडा गुरु जी के चरणों में गिर कर कहने लगा- क्षमा क्षमा मैंने बहुत व्यर्थ बातें की हैं, आप मुझे क्षमा करदो। तब इन्द्र सैन ने कहा-भाई झंडा उठो, कोई भय नहीं। सतगुरु जी तेरे लिये ही यहां पधारे हैं।

अब गुरु जी ने कहा-भाई झंडा प्रसाद ले आओ रात अभी अढ़ाई पहर व्यतीत हुई थी तब झंडा भोजन ले आया। जब गुरु नानक प्रसाद कर रहे थे और आधा किया था तो गुरु जी ने कहा-अच्छा यह प्रसाद करो। तब इन्द्र सैन ने कहा-हे झंडा! प्रसाद उठा ले। जब झंडे ने वह भोजन पाया तो झंडे के हृदय के पटल खुल गये। झंडे को कुछ भी इस संसार की सुधी न रही। इंद्र सैन ने झंडे को विदेह मुक्त हुए देखा। इन्द्र सैन ने कहा-आप ने क्या किया है। तब गुरु जी ने कहा-हमें वह इश्वर इसी लिये यहां लाया है। इन्द्र सैन ने कहा-हे महाराज! आप ने करना तो कुछ और ही था तथा कर कुछ और ही दिया है। गुरु जी ने कहा-इंद्र

सैन तुम क्या चाहते हो? उस ने कहा- आप ने इस मंजी पर बैठाना है, परन्तु यह इस प्रकार मंजी पर कैसे बैठेगा। गुरु जी ने कहा-रात्रि कितनी शेष है? इन्द्र सैन ने कहा-केवल एक पहर और रात्रि है। गुरु जी ने कहा-स्नान के लिये जल ले आओ तथा झंडे को भी स्नान करवाओ।

फिर गुरु जी ने स्वयं स्नान किया और झंडे को भी स्नान करवाया तब उसकी उत्थान अवस्था हुई। उसने गुरु चरण स्पर्श किये। गुरु जी ने कहा हमने तुम्हें मंजी पर बैठाना है, फिर गुरु जी ने उसे मंजी दी। राजा सुधर सैन को यह सूचना मिली कि एक तुम्हारे नगर में तपीश्वर का आना हुआ है उसने झंडे तरखान को मंजी बक्षी है। राजा ने कहा- उस तपीश्वर को मेरे पास ले आओ। जब हम पांचों ही जंगल में बैठे थे तब सिपाही ने कहा नानक तपीश्वर कौन है? उसे राजा जी बुला रहे है। तब इन्द्र सैन ने सिपाही को कहा तुम चलो मैं राजा को सभी कुछ कह सुन लूंगा। गुरु जी ने कहा-हे इन्द्र सैन! तुम बैठो। सुन्द्र सैन ने कहा-हे महाराज! राजा तो आप को पहिचानता नहीं है तथा मेरा वह मातुल है मैं उस से आप के लिए जो उचित होगा वह कह कर हाज़र होता हूं।

तब इन्द्र सैन ने राजा के पास जाकर प्रणाम किया। तब सुधर सैन ने कहा-हे बेटा! जो कुछ कहना चाहते हो कहो। इन्द्र सैन ने गुरु जी के निमंत्रण बारे पूछा। राजा ने कहा-हां मैंने उसे बुलाने के लिये सिपाही भेजा था क्योंकि मैंने सुना है कि उस तपीश्वर ने झंडे तरखाण को पूर्ण किया है। मैंने उस तपी को दर्शनों के लिये बुलाया है। इन्दर सैन ने कहा-हे राजन! देखने और सुनने में बहुत अंतर होता है एक देखना अच्छा और एक देखना बुरा भी होता है। राजा ने कहा देखना अच्छा कौन होता है? इन्द्र सैन ने कहा-वह तो पूर्ण साधु हैं। उस में और इश्वर

में कोई अंतर नहीं है। वह लोभ लालच से दूर है तथा मुझे कुछ न कुछ लालच है। राजा ने कहा-मैंने तो साधु जान कर बुलाया है। इन्द्र सैन ने कहा कि किसी महान् पुरुष को ऐसे नहीं बुलाया जाता। आप को योग्य है कि श्रद्धा और प्रेम से आप उनके दर्शणों को उनके निकट जाओ। राजा ने इन्द्र सैन का कथन मान लिया तब राजा सुधर सैन अच्छे अच्छे भोजन लेकर गुरु जी के सन्मुख आया और फलादिक भेंट करके अपना सिर प्रणाम करने के लिये गुरु जी के चरणों पर झुका दिया। तब इन्द्र सैन ने कहा-हे गुरु देव! यह राजा भाग्यवान है। आप इस पर कृपा करो। गुरु जी ने राजा की पीठ पर थापना दी और राग बिलावल में एक शब्द उच्चारण किया—

राग बिलावल महला १ ॥

एको राज दिया सुधर सैन ॥ अंजन गिआन पाइआ जिहि नैन ॥
मिटे अंधिआरा गए बिकारा ॥ ऐसा साहिब मीत हमारा ॥ १ ॥
सुधर सैण यह बात हमारी ॥ एको राज दिया छत्रधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
अठारां राजे तुमारी रयति कीने ॥ सभ से वखरे प्रभ सो मन भीने ॥
ऐसी प्रभ जी कृपा धारी ॥ जद मुरमति अपजी रिदे विचारी ॥ २ ॥
सऊ टापू का राज तुमारा ॥ तीन दीप तुम चरन पुजारा ॥
ब्रह्मा बिशन महेश ते ऊचे ॥ सुधर सैण तुम निरमल सूचे ॥ ३ ॥
इन्द्र सैन यह संग तुमारा ॥ करण करण आपे करतार ॥
कहु नानक जिस आप दिआला ॥ तिस सरब सूख सभ मिटे जंजाला ॥ ४ ॥

श्री गुरु नानक देव जी ने सुधर सैन को सात टापू का राजा कर दिया। निष्कंटक राज्य दे दिया और अठारां राजाओं को महाराजा नियत कर दिया। वह तीन दीप का राज्य करने लगा। इस राज्य के अतिरिक्त वह महा पुरुष हो गया। गुरु जी ने कहा-हे राजन! तुम को झंडे की बराबरी करनी योग्य नहीं। कहीं राज्य मद में आकर झंडे का अपमान

न करना। तब राजा ने हाथ बांध कर कहा-हे महाराज! यदि आज्ञा हो तो मैं राज्य भी झंडे को देने के लिये उपस्थित हूं। मैं तो राज्य त्याग कर आपकी सेवा में भ्रमण करने को तैयार हूं। यही अपने अहोभाग्य मानूगा।

गुरु जी ने कहा-हमने यहां जो झंडे तरखाण को नियत किया है। वह मंजी हमारी है और तुमको जो एक छत्र राज्य दिया है वह भी हमारा ही है झंडे को हमारे ही सदृश देखना। तब झंडे और इन्द्र सैन दोनों ने नमस्कार किया। गुरु जी ने कहा-वह परमात्मा हमें इधर आप के लिये ही लाया है। अब राजा को अत्यंत वैराग्य हुआ और कहने लगा-हे गुरु जी यदि आप चले जायेंगे तो हमारे प्राण नहीं रहेंगे। गुरु जी ने कहा-हम और आप एक ही हैं तथा सदैव आप के निकट ही हैं। राजा ने फिर कहा-आप कुछ दिन यहां ही निवास करो। इन्द्र सैन के कहने पर गुरु जी वहां एक महीना और रहे पश्चात् गुरु जी ने वहां से प्रस्थान किया।

साखी और चली

फिर श्री गुरु नानक देव जी सिलमिला द्वीप की ओर चले जिस स्थान पर समुंद्र आ जाय उस स्थान पर भी स्थल की भांति ही चले जा रहे थे। तीन मास लगातार चले। जहां गुरु जी की इच्छा हो वहां बैठ जाते थे। वहां हम भी निवास कर लेते थे।

आगे उस द्वीप में पहिले ही गुरु जी की ख्याति हो रही थी कि गुरु नानक देव जी राजा सुधर सैन को तीन द्वीप का राज्य देकर आ रहे हैं और एक तरखान को महापुरुष बना कर आ रहे हैं। अब हम तीनों एक उद्यान में जा ठहरे। जहां सात दिन रहे। तब मर्दाना ने कहा-यदि आज्ञा हो तो नगर देख आऊं। गुरु जी ने कहा-क्या भूख

लगी है? मर्दाने ने कहा-आप को तो उस करतार ने भूख प्यासहीन बनाया है और हम लोग आपके साथ तो हठ वादी बने हैं। अब नगर देख कर सोचा कि कुछ खान पान ही कर आऊं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! कुछ संतोष्य कर तब मर्दाना बैठ गया और कहने लगा-हे महाराज! इस नगर का नाम तो बता दो। गुरु जी ने कहा-इसका नाम ब्रह्मपुर है। इसका राजा मधुर बैन है तथा जाति का ब्राह्मण है। इतने में राजा मधुर बैन आखेट करता इधर ही आ गया। हमें देख कर राजा खड़ा हो गया और पूछने लगा आप कौन हैं? मर्दाने कहा-हम मनुष्य हैं। राजा ने कहा-नगर के बाहर क्यों बैठे हो। मर्दाने कहा और कहां बैठें? राजा ने कहा कि तुम तीनों साधु हो। मर्दाना बोला कि तुम्हें क्या नज़र आ रहा है? बाला कहता है कि मैंने देखा कि गुरु जी तो मौन हैं तथा मर्दाने को भूख लग रही है उसी के कारण इसके शब्दों में कटु व्यंग है। बाला-हे राजन! हम परदेसी हैं।

राजा-तो आप किस नगर से आ रहे हो? तुम्हारी भाषा तो मेरी समझ में नहीं आती।

बाला-हम पंजाब से आ रहे हैं। आशा है कि आप ने पंजाब का नाम तो सुना ही होगा।

अब राजा ने सोचा कि यह तीनों साधु नज़र आते हैं राजा ने कहा-हे भाई! बिसहर देश राजा सुधर सैन का है। क्या आप ने वह भी देखा है अथवा नहीं। मैंने (बाले) कहा-वहां से तो हम आ ही रहे हैं। हम ने राजा से पूछा-आपका नाम तथा जाति हम जानना चाहते हैं। राजा ने कहा कि मैं सब कुछ बताऊंगा। परन्तु मैं आपके महंत का परिचय पहले प्राप्त करना चाहता हूं। बाले ने कहा-हमारे महंत जी का पवित्र नाम श्री नानक निरंकारी है। मेरा नामं बाला है और यह जो बैठा है इसका नाम मर्दाना है। राजा ने कहा कि राजे सुधर सैन और झंडे

तरखान को जो महान् वर देने वाला है, क्या वह यही आपका महंत ही है? मैंने कहा हां सत्य है। अब आप अपना परिचय दें। राजा ने कहा सुनो-मेरा नाम मधुर सैन है। नगर का नाम ब्रह्मपुर है। मैं इस नगर का राजा हूं, जाति का ब्राह्मण हूं। मैंने कहा इस द्वीप का नाम क्या है? राजा ने कहा-इसे सिलमिला द्वीप कहा जाता है। यह तीन द्वीपों में अठारह राजा राज्य कर रहे हैं। बाले ने पूछा-उनके नाम क्या हैं? राजा ने कहा-एक तो राजा कवल नैन। २. मधुर सैन। ३. सुधर सैन। ४. सुख चैन। ५. असनाहा। ६. सुगर सैन। ७. बीर सैन। ८. लाल सैन। ९. राय सैन। १०. सुख सागर। ११. नाग परस राम। १२. राजा अटका घटका। १३. सुधम मालका। १४. बुध बिबेक बालका। १५. राजा नैन जोत। १६. राजा बाला शिंगार। १७. राजा तुरंत रंज। १८. राजा मगनराय। राजाओं के नाम सुनकर मैंने कहा इन में सरदार कौन है? राजा ने कहा-सबका सरदार राजा कवल नैन है। बाले ने कहा-यह तो झूठ है। सब के ऊपर कंवल नैन नहीं है। सब का सरदार तो सुधर सैन है, क्योंकि मेरे पूज्य गुरु देव ने सुधर सैन को सर्वोपत्ति किया है। राजा ने कहा-तुम बात कर रहे हो परन्तु तुम्हारा महंत बात ही नहीं करता। मैंने कहा-गुरु जी उस समय बोलेंगे जब कोई उन से बात करने वाला आएगा। राजा ने कहा-अच्छा मैं बुलाता हूं। बाले ने कहा आप राजा हैं बुला लो। राजा ने घोड़े से उत्तर कर कहा कि इनको क्या कह कर संबोधित्त किया जाता है। बाले ने कहा-करतार करतार कहने से उत्तर देते हैं। राजा ने निकट होकर कहा- हे महंत जी करतार करतार। गुरु जी समाधि से उत्थान में आकर कहने लगे- सत्य करतार सत्य करतार जी आओ भ्राता! बैठ जाओ! राजा ने प्रणाम किया। गुरु जी ने कहा-आओ राजा मधुर सैन जी। राजा ने कहा- आप नगर में पदार्पण करो। गुरु जी ने कहा-हमारे लिये तो यही नगर है। राजा ने

फिर कहा-आप नगर में चलो। यहां निर्जन स्थान पर बैठने से क्या लाभ है? गुरु जी ने कहा-साधुओं के लिये निर्जन वन ही विशाल नगर होता है। राजा ने कहा-यदि आप नगर में निवास करो तो आप के भंडारे का ध्यान रहेगा। तब गुरु जी ने आगे लिखा शब्द उच्चारण किया-

राग बिलावल महला १ ॥

एक भंडारा नाम का जिन सभ किछ दीना॥
भूख नंग सभ छीन के आपणा कर लीना॥
ऐसा नाम न छोडीऐ सदा संग हमारे॥
लेखा कबी न पूछई मन मीत पियारे॥ १ ॥ रहाउ ॥
भोजन उत्तम हम कीआ संतन प्रसादि॥
जल सीतलु हिरदै पीआ रिदै महि सांति॥ २ ॥
बसत्र ब्रह्म पिआरिआ काइआं के संग॥
लख चउरासी एक है तू हैं निरसंग॥ ३ ॥
नानक कहै गजिंदर सुण सभ झूठ पसारा॥
दिसटमान सभ बिनस जाइ रहे एकंकारा॥ ४ ॥

तब राजा गुरु जी के चरणों पर गिर कर कहने लगा जो आज्ञा हो वही करूँ। गुरु जी ने कहा- हम ने सुधर सैन को निष्कंटक राज्य दिया है, जो उसे मानेगा उनका भला होगा जो न मानेगा उसकी इच्छा। हम ने जो करना था कर दिया है। राजा ने कहा-हमें आपकी आज्ञा स्वीकार है। हम उसे अपना राजा मानेंगे। राजा को गुरु जी ने कहा-हे राजन! यह राज्य आदिक सभी यहां रहने वाले हैं। जिन्हों ने सन्तजनों के बचन प्रमाण माने हैं। उसके साथ कीर्ति जाती है। राजा ने कहा-हम ने तो आप की आज्ञा पालन करनी है राज्य को हम कुछ नहीं जानते।

यह सुन कर गुरु जी अत्यंत प्रसन्न हुए। फिर गुरु जी ने कहा-हे राजन! अब हम लोग आगे जायेंगे। राजा ने हाथ जोड़ कर कहा कि

अब जैसे आज्ञा हो। हम राजा सुधर सैन को मिलेंगे। गुरु जी ने कहा-जैसे हमारा मान करते हो वैसे ही सुधरसैन को मान करना। राजा ने कहा-हमें स्वीकार है। फिर राजा ने कुछ दिन इसी नगर में निवास करने की प्रार्थना की। तब बाले ने कहा-हे गुरु देव! इस राजा की इच्छा पूर्ण करो। तब गुरु जी उन्नीस महीने वहां रहे। अब गुरु जी ने एक दिन आगे को प्रस्थान कर दिया॥ ३३ ॥

साखी और चली

अब हम चलते चलते राजा कवल नैन के राज्य में जा पहुंचे। जहां रास्ते में विश्राम होता तहां तहां गुरु जी कई कई दिन समाधि में रहे। इस प्रकार सात मास और तेरह दिन व्यतीत होने पर एक नगर जो चार कोस से नज़र आ रहा था वहां पहुंचे। तब मर्दाना बोला महाराज! आप किसी नगर में भी जायेंगे या इसी प्रकर जंगलों में ही भटकना है। गुरु जी ने हंस कर कहा-क्या भूख लग रही है? मर्दाना बोला-यदि भूख लगेगी तो क्या हमारे आगे किसी ने भोजन रख जाना है। गुरु जी ने कहा-वहां देखों एक नगर नज़र आ रहा है, मर्दाना जो कुछ तुम्हारी इच्छा होगी वही खाने को प्राप्त होगा। मर्दाना बोला-एक दिन इसी प्रकार प्राण निकल जायेंगे। गुरु जी ने कहा कि यदि प्राण निकल जायेंगे तो हम फिर दोबारा जीवित कर देंगे। भय नहीं करो। भाई मर्दाना बोला-हां जी सच्च कहते हो। आप को कोई लालच नहीं, बिदेह हो। यह हम भी जानते हैं कि आप के साथ हमारे लिये क्या कुछ व्यतीत हो रही है। गुरु जी ने कहा-मर्दाना! इश्वर के रंग देखता चला जा इसी प्रकार गुरु नानक जी बातों में आगे ले गये। जब नगर निकट आया तो गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! जाओ नगर में से अपनी भूख प्यास मिटा लो। मर्दाना बोला-हे गुरुदेव! मेरे पास तो एक धेला भी नहीं खाऊं क्या?

गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! हमने सारा नगर तेरे अर्पण किया है जहां इच्छा हो जाओ और खाओ पीओ तथा आनंद लो कोई इन्कार नहीं करेगा यदि कोई चोर चोर कह कर पकड़े तो हमारा नाम लेना वह तुम्हें छोड़ देगा। मर्दाने ने सोचा कि गुरु जी के प्रत्येक नगर में मित्र हैं तभी तो इतना हौसला है। अब मर्दाना नगर में गया देखता है कि सारी पृथ्वी स्वर्ण की है। मर्दाना अचंभे में आ गया। इस कौतुक को देख कर ही भूख स्वयं दूर हो गई। मर्दाने ने एक पुरुप को पूछा कि क्या इस नगर का नाम स्वर्ण पुर है? उस से यह भी पूछा कि राजा का क्या नाम है? उसने कहा हे मर्दाना! इस नगर के राजा का नाम कवल नैन है। इसके अधीन बहुत राजा हैं। मर्दाना बोला-यहां की प्रथा और अपना नाम बताने की कृपा करो। उसने कहा-मेरा नाम धर्म सिंह है और मर्यादा यह है कि जिसे जिस वस्तु की इच्छा हो वह खा सकता है। यहां सभी काम धर्म के अनुसार होते हैं। यह सुन कर मर्दाना बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा-हे धर्म सिंह मैं बहुत भूखा हूं। धर्म सिंह ने कहा-यहां किसी वस्तु की मनाही नहीं है प्रत्येक दुकान से जिस वस्तु की अच्छा हो उठा सकते हो। तब मर्दाना बोला-यह तो मैं करने का नहीं यदि कोई उठा दे तो ले सकता हूँ। उसने कहा कि मेरे साथ दो और हैं अर्थात हम तीन हैं। उसने कहा-उन्हों को भी ले आओ। मर्दाना बोला-वह बहुत संतोषी हैं आने को नहीं।

तब वह आदमी मर्दाना को एक दुकान पर ले गया और कहा-बताओ क्या कुछ खाओगे। मर्दाना बोला जो कुछ तुम्हारी इच्छा ले दो। उस पुरुप ने दुकानदार को कहा कि इसे अढ़ाई सेर मिठाई लुच्ची वगैरा तोल दो दुकानदार तोलने लगा तो तराजू के वट्टे स्वर्ण के मर्दाना ने देखे तथा तुला भी स्वर्ण का बना देखा। मर्दाना ने पेट भर कर पेट पूजा की। फिर पूछा-भाई जी! यह लोग स्वर्ण का व्यवहार करते हैं और

वस्तु का मूल्य लेते नहीं यह सब कारण क्या है? काम कैसे चलता है। उसने कहा-यह राजा की आज्ञा है और अन्न तो कुदरती पैदा होता है। केवल बनाने पर मेहनत होती है। अन्न आदिक बाहर से लाकर बनाओ तथा खाओ और खिलाओ और जो किसी से काम करवाना हो तो वह भी करवा सकते हो। मूल्य और मजदूरी कुछ भी नहीं। राजा की आज्ञा है। धर्म की नगरी है। मर्दाना यह बातें सुन कर प्रसन्न हुआ।

मर्दाने के मन में उसी नगर में रहने की इच्छा उत्पन्न हुई। अंत में गुरु जी के पास आया। गुरु जी ने नगर की बातें कहने की आज्ञा दी। मर्दाने ने स्वर्ण व्यवहार आदिक सभी आद्योपांत बात सुनाई। यह भी कहा कि यहां कूआं नहीं। पानी वर्षा का आम जमा होता है यह नगरी की बातें हैं।

मर्दाना बोला-मुझे एक पुरुष मिल गया। मैंने उस से बातें सुनी हैं। जो आपको सुना दी है तथा अढ़ाई सेर मिठाई आदिक भी खिला दी है। कीमत वगैरा कुछ भी नहीं है। दुकानदार ने तो आप को भी कहा कि आओ और पेट भर खाओ। मर्दाना बोला-यह राजा तो सुधर सैन से भी बड़ा है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! सुधर सैन को हम ने और इश्वर ने बड़ा किया है। मर्दाना बोला-हे महाराज! मैं कुछ कह नहीं सकता आप तो पवन आहार करने वाले हैं परन्तु अब तो काम सुगम है कुछ खान पान कर लेना उत्तम है। यदि कहो तो मैं स्वयं जाकर आप के लिए ले आऊं। गुरु जी ने कहा-मर्दाना! ईश्वर के रंग देखता चल और चुप चाप बैठ जाओ। मर्दाना बैठ गया। सात दिन व्यतीत हो गये, मर्दाना प्रत्येक दिन जाता और पेट भर कर आ जाता था।

एक दिन दुकानदार ने कहा-भाई! तुमने कहा था कि मेरे साथ दो पुरुष और हैं वे कहां हैं हमने तो देखे ही नहीं। मर्दाना बोला-वे दोनों साधु, नगर के बाहर बन में बैठे हैं, वह किसी के द्वार पर नहीं जाते।

अत्यंत संतोषी हैं। धर्म सिंह ने कहा-यदि उनके लिए कुछ ले जाया जाय तो खायेंगे या नहीं। मर्दाना बोला कि वे तो पवन आहार करते हैं। इच्छा हो तो खा भी लेते हैं। यदि न हो तो इनकार भी कर देते हैं। यदि पवित्र खान पान हो तो खाते हैं। धर्म सिंह ने कहा यहां तुम ने अपवित्रता कहां देखी है? मर्दाना बोला-मैंने अपवित्रता तो नहीं देखी। उसने कहा कि फिर तुम ने ऐसे क्यों कहा? मर्दाना बोला अच्छा आप उनके लिए ले चलो।

तब धर्म सिंह ने पांच सेर वस्तु स्वंय उठाई और अढ़ाई सेर मर्दाने को खिला दी। उसने कहा-तुम चलो मैं तुम्हारे पीछे आता हूं।

मर्दाना गुरु जी को कहने लगा-हे महाराज! यहां तो अजीब तमाशा देखने में आता है। यहां कैसे काम चलता है? गुरु जी ने कहा-धर्म नगरी है, यहां पाप नहीं। यहां सत्य और संतोष वर्तमान हैं यहां तुरकों का बास नहीं यहां तुर्क को कोई भी नहीं जानता, धर्म का कर्तव्य जो कहा जाता है वह यहां ही है। तब मर्दाना बोला- हे महाराज! इसी नगर में निवास करना उत्तम है। गुरु जी ने कहा-भाई! अपनी इच्छा नहीं होती। ईश्वरेच्छा ही होती है। जहां उसकी इच्छा है वहीं निवास होगा। मर्दाना बोला, हे गुरु देव! यहां स्त्री पुरुष मथुन किया करते हैं अथवा नहीं करते? गुरु जी ने कहा-यहां दृष्टिभोग होता है। इस लिए यहां धर्म का वर्ताव है। जहां मैथुन है वहां से पद्धति मिट जाती है। मर्दाना बोला-यह तो आप ने अचंभे की बात सुनाई है। गुरु जी ने कहा- हे मर्दाना! ईश्वर की माया विचित्र होती है। उस में परेशान होने की कोई बात नहीं। वह परमात्मा बेअंत है, उसी की लीला अपार है और स्वयं भी अपार है। मर्दाना बोला-गुरु जी! इस राज्य की सीमा कहां तक है? गुरु जी ने कहा-बहुत दूर तक है जहां से चले थे वहां तक है। वह जो ऊंचा पहाड़ है, उससे दूर तक सारी धरती स्वर्ण की है। वह पहाड़ भी स्वर्ण

के हैं इस राजा के राज्य का विस्तार सत हज़ार योजन है। इतना बड़ा राज्य क्रल्युग में और कोई भी नहीं है। इसके बाद गुरु जी की समाधी लग गई।

फिर धर्म सिंह ने आकर कहा कि गुरु जी की क्या आज्ञा है तथा इन की उत्थान अवस्था किस शब्द के उच्चारण से होती है? बताने से जब करतार करतार की ध्वनि की गई तब गुरु जी की उत्थान अवस्था हुई। तब धर्म सिंह ने कहा-आपके लिये गोबिंद प्रसाद लाया हूं। गुरु जी ने कहा-हे सज्जन! आपका नाम क्या है? उसने कहा-श्रीमान्! मेरा नाम धर्म सिंह है और यहां किसी की जाति पूछने की आवश्यकता नहीं क्योंकि यहां का प्रत्येक रहने वाला एक ही वर्ण का है और सब से बड़ा एक गोबिंद है। तब गुरु जी ने कहा-यहां का राजा कौन है? धर्म सिंह ने कहा-यहां के राजा का नाम कवल नैन है, फिर गुरु जी ने कहा-वह तो बड़ा है। उसने कहा-उसके सिर पर छत्र तो परमात्मा ने दिया हुआ है, राजा होते हुए भी वह किसी से प्रणाम करवाना नहीं चाहता। वैसे तो सत्रह राजे इसके नीचे हैं परन्तु यह किसी को अधीन नहीं मानता। सभी परमात्मा के पुत्र जान कर समान व्यवहार करता है। गुरु जी ने मन में सोचा कि हम ने तो सुधर सैन को इसके ऊपर किया है। अब देखना है कि परमात्मा को क्या स्वीकार है। गुरु जी की यह विचार हुई इतने में धर्म सिंह ने कहा- आप भोजन कर लें। गुरु जी ने कहा- हम भोजन करने को तैयार नहीं। धर्म सिंह ने कहा- आप ने क्या दोष देखा है जो भोजन नहीं करते। गुरु जी ने कहा-भोजन में तो कोई दोष नहीं परन्तु राजा में दोष है। उसने कहा-आप राजा पर क्या दोष लगाते हैं? राजा तो धरमात्मा है अपितु यदि कोई दोष आप ने देखा है तो हमें बताने की कृपा करो। गुरु जी ने कहा-जिस में दोष होता वही जानता है दूसरा नहीं जान सकता। गुरु जी ने कहा पुरुष सर्व भक्षी

है। उसने कहा कि यह निवारण कैसे हो। गुरु जी ने कहा कि तुम राजा को खबर दोगे और राजा हम से पूछेगा। तब हम भोजन खायेंगे। गुरु जी ने राजा को दोष लगाया। धर्म सिंह को हैरानी हुई।

तब धर्म सिंह ने कहा-हे राजन! आपके नगर में तीन साधु आये हुए हैं, उन्हों में से एक तो नगर में आकर खान पान कर लेता है परन्तु दो नहीं आते। मैं उनके लिए भोजन लेकर गया परन्तु वे खाते ही नहीं। हम ने कहा-हे संतो! धर्म पुरी का पवित्र आहार आप क्यों नहीं खाते तथा दोष लगाते हो। उन में एक महंत है। उसने कहा कि राजा में दोष है। जब मैंने पूछा तो उस महंत ने कहा-जिसमें दोष होता है वही जानता और वही मानता है। मैं हैरान हूं। राजा ने कहा-धर्म सिंह, तुम ही हमारा दोष विचारो। उन्हों ने कौन सा दोष लगाया है। धर्म सिंह ने कहा-आप ही चल कर उन्हें पूछो।

अब राजा घोड़े पर सवार होकर चला। राजा ने मन में सोचा कि मेरे यहां भोजन की तो कमी नहीं, यदि मैं लेकर जाऊं और उन्हों ने स्वीकार न किया तो भी ठीक नहीं। अब मुझे खाली हाथ ही जाना योग्य है। यह कह कर राजा और धर्म सिंह वहां आये जहां श्री गुरु नानक देव और बाला बिराजमान थे। मर्दाना रबाब बजा रहा था। गुरु जी और मैं (बाला) ईश्वरीय मस्ती में बैटे हुए थे, राजा घोड़े से उतरा। हम तीनों में से राजा को आने की किसी को भी खबर न हुई। धर्म सिंह से राजा ने पूछा-इनका सम्बोधन क्या है? धर्म सिंह ने कहा-यह पूर्ण सन्त हैं। राजे ने कहा-मैं कैसे जानू? धर्म सिंह ने कहा-आप इन को कहो-सत्य करतार, सत्य करतार। अब राजा ने करतार करतार का शब्द कहा-तब श्री गुरु नानक देव जी की उत्थान अवस्था हुई। गुरु जी ने सत्य करतार की ध्वनि की। राजा ने बैठ कर कहा-हे महंत जी! आप ने हमारा भोजन त्याग कर हमें दोष लगाया है, आप दोष बताओ

तथा उस दोष की दूर भी करो। गुरु जी ने कहा-हे राजन! तुम को यह दोष लगा है कि तुम कहते हो सभी गोबिंद के लिये है। ऐसे एक हम भी उसी के लिये हैं। यदि तुम्हें यह निश्चय है तो दूसरे से ईन को मनवाना चाहते हो। राजा ने कहा हम किसी से ईन नहीं मनवाते। ये लोग जो ईन मानते हैं स्वयं मानते हैं। हमारी ओर से कभी कोई आग्रह नहीं हैं। गुरु जी ने कहा-सुन राजा! हमने तुम सबके ऊपर सुधर सैन को किया है। अन्य राजा उसकी प्रजा किये हैं। आपके मन में जो कुछ हो कहो। तब कंवल नैन ने कहा-यहां तो धर्म कुशल है। आपकी आज्ञा शिरोधार्य है परन्तु आप हमारा दोष तो दूर करो। गुरु जी ने कहा-हे राजन! आपका दोष दूर करने के लिये हम हज़ारों कोस की दूरी से आ रहे हैं। राजन आप हमें नहीं जानते परन्तु हम तो आप को जानते हैं। सुनो यदि राजा सुधर सैन को बड़ा मानोगे तो तुम्हारा दोष दूर हो जायेगे और तुम्हारा कल्याण होगा। राजा ने कहा-मुझे स्वीकार है तथा सुधर सैन की आज्ञा पालन करूंगा। यह मैं सत्य कहता हूं।

राजा ने फिर कहा-अब एक और शंका है। आप ने कहा कि हम तुम को जानते हैं तुम नहीं जानते, इसमें क्या रहस्य है। आप यह बताओ कि मुझे आप कब से जानते हो? गुरु जी ने कहा- जब राजा जनक त्रेता में था तब तुम उसके निकट स्नान कराने वाले थे। राजा जनक तुम पर अत्यन्त ही प्रसन्न था। एक दिन राजा ने कहा-अरे मथरा-तुम शीतल जल ला कर पिलाओ परन्तु जहां का जल मैं कहूं वहां से लाना। आप ने कहा-जैसे आज्ञा हो वैसे ही करूं। जनक ने कहा-हिमालय से जल लाओ। तुम जल लेने गए। उस समय तुम्हारे मन में आया कि काश! हम राजा होते तो हमारा भी हुकम इसी प्रकार चलता। तब आप ने राजा को जल लाकर दिया। राजा बहुत प्रसन्न हुआ। राजा ने कहा-मथरा कुछ मांगो। आप ने कहा मैं कुछ नहीं मांगता। राजा जनक

सर्वज्ञ था, उस ने कहा-तुम मांग चुके हो, अब क्यों इन्कार करते हो। जो तुम ने मांगा है वह हम ने दे दिया है। फिर तुम ने कहा-मैंने तो कुछ नहीं मांगा, जनक ने कहा-सुनो-जब तुम जल लेने गये थे तो मन में कहा था कि यदि हम राजा होते तो हमारा भी हुकम चलता। बस हम ने तो तुम को राज्य दे दिया है और कहा कि तुम हम से अधिक राज्य के स्वामी बनोगे।

हे राजा कंवल नैन! तब से हमारी तुम्हारी पहिचान है। ऐसे गुरु जी ने उस राजा को कहा। राजा ने कहा-उस समय आपका नाम क्या था। गुरु जी ने कहा-उस समय तेरा नाम सदा नन्द था और हमारा नाम निरंकारी था। तब राजा ने कहा कि तुम वही निरंकारी हो और अब आप का नाम क्या है। गुरु जी ने कहा अब हमारा नाम नानक निरंकारी है, यह सुन कर राजा ने गुरु जी की परिक्रमा करके अपना सिर गुरु जी के चरणों पर रख दिया और कहा-हे गुरुदेव! आप धन्य हो धन्य हो, मैं आप के चरणों का सेवक हूं। आप ने मुझ पर अनुग्रह किया है जो यहां पधार कर दर्शन दिये हैं। आप ने मुझे कृत कृत्य किया। मेरी सभी कामनायें पूर्ण हो गई हैं, यह कह कर फिर चरणों पर गिर गया। गुरु जी ने उठाया। राजा ने कहा-हे महाराज! आप मेरे मन्दिर को पवित्र करो। गुरु जी ने कहा-हे राजन! तुम को मंदिर शोभा देते हैं और हम उद्यान में ही प्रसन्न हैं। उसने कहा-यह राज्य आप की ही देन है। अब आप राज्य करो तथा हम आप की सेवा करेंगे। गुरु जी ने कहा-राजन! जैसे तुम राज्य में गलतान हो वैसे हमारा एक मर्दाना नाम का मिरासी है। वह अपनी राग की तान में मस्त है, इस मर्दाने को यह भी सुध नहीं कि कौन यहां आया तथा क्या कुछ हुआ है। राजा ने कहा-अब आप मेरा दोष दूर करो और मंदिर में चलो तब गुरु जी ने उसके गृह में जाना स्वीकार कर लिया।

फिर गुरु जी बाले और मर्दाने को साथ लेकर राजा के मंदिर में गये। गुरु जी ने सारी नगरी धर्मात्मा देखी। राजा कंवल नैन ने गुरु जी को अपने घर में पन्द्रह मास तक रखा। जब गुरु जी ने वहां से प्रस्थान किया तब राजा ने कहा-हे महाराज! यह राज्य अब आप कृपा करके अपने कर कमलों से ही किसी के सुपुर्द कर दें तो उत्तम है तथा मैं तो आप के साथ ही चलूंगा। गुरु जी ने कहा-हे राजन! तुम अपने गृह में रह कर भी राज योग कर सकते हो फिर गुरु नानक देव जी यात्रा के लिये नगर से बाहर निकले तब राजा ने गुरु जी की तीन परक्रिमा लेकर चरणों पर अपना सिर रख दिया प्रार्थना की, हे प्रभो! मैं आप से भिक्षा चाहता हूं कि मुझे सदैव आपका ही चिंतन रहे। गुरु जी ने कहा-हे राजन! आपका राज्य अरि-मुक्त रहे तथा परमात्मा में अटल अचल विश्वास सदैव बना रहे।

गुरु जी वहां से सुमेर गिरी की ओर अग्रसर हुए। उस समय मर्दाने ने कहा-हे गुरुदेव! मुसलमान लोग कहते हैं कि मक्का शरीफ के दर्शनों से बहुत ही लाभ होता है। आप ने अनेक स्थानों को देखा तथा दिखाया है। यदि आप की इच्छा हो तो हमें मक्का शरीफ के दर्शन करा दो। गुरु जी ने कहा मक्का तो पश्चिम दिशा में है। बाले ने कहा-हे महाराज! मर्दाने की इच्छा भी पूरी करो। गुरु जी ने कहा-चलो पहिले मर्दाने की इच्छा ही पूरी करेंगे! इस नश्वर शरीर का कोई विश्वास नहीं है जो किया जाय वही अच्छा है।

साखी और चली

जब गुरु नानक देव जी भाई लालो से विदा हुए थे तब एक मास कश्मीर में निवास किया था, फिर बंगाल देश में रहे थे अमरापुर में दो सप्ताह रहे तथा कौडे राक्षस के पास सात दिन रहे, फिर बिसंभर पुर डेढ़

मास रहे। दो वर्ष सात मास सालस राय के पास रहे, फिर निराहार बीस दिन चलते रहे। बिसहर देस में एक महीना राजा सुधर सैन के यहां रहे। उन्नीस मास मधुर बैन के यहां निवास किया। देव गंधार की ओर जाते जाते सतरह दिवस रहे। देव लूत के पास नौं महीने ठहरे और तीन महीने परस राम के नगर में निवास किया। एक महीना बन मानसों की बस्ती में निवास किया, सात महीने तेरह दिन सरवन पुर में गुजारे। राजा कंवल्ल नैन के यहां गुरु जी पंद्रह मास रहे, छः वर्ष सात महीने तथा सात दिनों के व्यतीत होने पर गुरु जी ने मर्दाने से पूछा-हे मर्दाना! अब क्या देखना चाहते हो। इस समय गुरु जी की आयु उनतालीस वर्ष के लग पग हो गई थी। सुंदर दाढ़ी तथा मुख पर ईश्वरीय प्रकाश था। गुरु जी के कहने पर मर्दाने ने मक्का शरीफ के दर्शनों की इच्छा प्रकट की। गुरु जी ने कहा-वहां तो हिन्दुओं को जाने नहीं देते और दूर भी बहुत है। मर्दाने ने कहा-आप के लिये निकट तथा दूरी का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। गुरु जी ने कहा-मक्का यहां से अढ़ाई सहस्त्र कोस पर है। मर्दाना बोला, आप के लिये यह कोई बड़ी बात नहीं है। बाकी जाति के दृष्टिकोण से आप को कोई रोक नहीं सकता। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तेरा कहना हम सदैव स्वीकार करते हैं। चलो पहिले तुम को मक्का शरीफ में ले चलते हैं। पीछे किसी और यात्रा को जायेंगे।

साखी मक्के मदीने की

नसीहत नामा श्री नानक देव जी का शाह शरफ और काजी रुकनदीन के साथ हुआ।

राग तिलंग॥

गुजश्त राह सलावत॥ अवतार पगंबरां
हम बिलकुल सफात॥ १॥ रहाउ॥

एको एक खुदाह है हैवान नबात॥
बेचून बेचगूग है जिस जनम मरन न जाति॥ १॥
होइ खउफ खुदाइ दा मुखहु अलाह ताक॥
लाइला इंल्लिला गोबिंद नानक अलफ़
अला॥ १॥ घर रसालों में गावना॥

संसार के कल्याणार्थ उदासी भेष धार कर श्री नानक जी ने विदेश यात्रा की तथा प्रत्येक स्थान पर अपने स्थान नियत किये-

एक दिन आप दक्षिण में थे। तब हाजी लोक मक्के जा रहे देखे। मर्दाना बोला-हे गुरु जी यह मक्के को जा रहे हैं तथा सुना है कि मक्का खुदा का अपना घर है। मक्के का दर्शन अल्लाह का दीदार है। यदि आज्ञा हो तो मैं भी हज्ज के लिये यात्रा करूं। गुरु जी ने कहा-भाई! मक्का मदीना इसी शरीर के अन्दर है। गुरु जी ने एक सलोक उच्चारण किया -

सलोक॥

मुकाम मक्का मन मदीना सिर मुसल्ला मस्तक मसीत॥
नक कबर बाजु वा राना इमाम॥
कलमा माला कुरान ज़बान॥
तमाम अंग सी हरफ काइदा अलफ बे पछान॥
रूह अजाइस कन्म बकादान॥
नैन नबी करन काबा हथ हज़रत पैर रसूल॥
नानक ऐसा अमल जो करे सो दरगह पवै कबूल॥ १॥

यह शब्द सुन कर मर्दाना कुछ अनमना सा होकर चुप रहा, गुरु जी ने कहा-यदि पुरुष अपना मन शुद्ध कर ले तो सभी कुछ इसके भीतर ही है परन्तु यह संसार के अन्दर भूला हुआ है। जैसे मृग की नाभी में कस्तूरी है परन्तु वह बाहर मारा मारा फिरता है। हे मर्दाना! सन्तों को यात्रा अवश्य करनी योग्य है। हम मक्का मदीना देखेंगे। हम ने काजी

रुकन दीन से कुछ धर्म चर्चा भी करनी है।

एक दिन गुरु जी मक्के की यात्रा को चल दिये। पहिली विश्राम जगह पर चार हाजी और एक साधु शाह शरफ गुरु जी को मिले। शाह शरफ गुरु जी को संत भेष में देख कर हैरान हुआ। उस ने हाजियों से कहा तुम यहां ठहरो। मैं कुछ उन से बात करना चाहता हूं। यदि उसने उत्तर ठीक दिया तो कमाल जानूंगा और उत्तर ठीक न हुआ तो मैं इसके वस्त्रादिक भी उतार लूंगा। यह सोच कर गुरु जी के निकट आया, कहने लगा तुम कौन हो? गुरु जी ने कहा-सुन पहिले दरवेश अवारा। फकीरी तकसीर है। फकीरों से पूछना किस लिये। क्योंकि फकीरी तो संसार से ना उमीद। शाह शरफ सुन हैरान होकर चुप रहा। मन में कहा-यह फकीरों में कामल है।

॥ प्रशन शाह शरफ का॥

अव्वल फ़कीरी अव्वल शुमारा मैं पुरस मई सुखनरी जुवाब विदिहंद अवले फ़कीरा चीसत। आखर फ़कीरी चीसत। खाना फ़कीरी चीसत॥ कुलीद फ़कीरी चीसत। मक्बरे फ़कीरी चीसत। गंज फ़कीरी चीसत॥ रेशम फ़कीरी चीसत। खिरका फ़कीरी चीसत। कफनी फ़कीरी चीसत। फौहड़ी फ़कीरी चीसत। जामा फ़कीरी चीसत। वासल फ़कीरी चीसत। सेली फ़कीरी चीसत। किश्ती फ़कीरी चीसत। मुता काइ फ़कीरी चीसत। हर इक सुवालरा जवाब विदिहंद आ आमल फ़कीरी असत। वा इला ना कामले फ़कीरी असत। कि जवाब रा फकीरी न दिहंद॥ १॥

॥ उत्तर गुरु नानक जी का॥

अवल फ़कीरी फनाह असत। आखर फ़कीरी बका असत। खाना फ़कीरी मुसलम असत। कुलीद फ़कीरी खामुशी असत। कदील फ़कीरी

अज दीव बन्दगी असत। मकबरे फ़कीरी हलीमी असत। गंज फ़कीरी पाइ बोसी असत। तरीक फ़कीरी बिदारी असत। सो जन फ़कीरी अकल अस्त। रेशम फ़कीरी दीदार असत। लुकमा फ़कीरी सबूरी असत। खिरका फ़कीरी रासती असत। कफनी फ़कीरी जिंदा मुर्दा असत। धूआं फ़कीरी मानिंद पलु खुरद हकीक असत। फहोड़ी फ़कीरी खाक रोबी असत। जाम फ़कीरी कुशाद असत॥ हर इक आदि आरामरा हासल कुनद। सेली फ़कीरी वरदा पेश-मुरशद असत। किश्ती फ़कीरी रोइ गरदानी अजजहान असत। वसला फ़कीरी जबान सैफ साहिब करामात असत। दर मिहरव कहिरपुर मामूर असत। मुत काए फ़कीरी मन बस करना गोशानशीनी असत। अगर कशे बदी तरीक अमल कुनद ओं कामल फ़कीर असत। वाइ जाना कामल फ़कीरी असत। फ़कीरी रचिदांद फ़कीरी रागु मकरदा असत। फिर शाह शरफ ने पूछा-सुवाल कजा मानो। जुवाब दामनी। फिर शाह ने कहा-चिहशत मनी जवाब। फिर गुरु जी ने कहा-वगो नानक एक धनी। एक धनी। शाह ने फिर पूछा-सवाल शुमारमे अहिले जवाब बगो दरवेश। बिद हंदकी कुल शुमारि सजव असत॥

॥ उत्तर गुरु नानक देव जी॥

जो मनुआं मूंडे तब बली कहाए। बिन मन मूंडे जुगत न पाए। मुंह काट गुर आगै धरे। मन मत त्याग गुरमत लै धरे! मन मुंडाए होइ सब रेना। सो बैरागी परखै गुर बैना। मन मुंडाए की एह गत भाई। को विरला गुरमुख मन मुंडाई। सुआद सनेह ममता सभी तजीअ। तउ नानक इस बिधि कलहि तहिरीअं॥ ३ ॥

फिर शाह ने कहा-सुण रामे पुरस अहिल जवाब वगो दरवेशा खिरका चिमा जवाब असत।

उत्तर गुरु नानक देव जी—पीर मत मुरीद रहिन कफ़नी टोप मत सबद गहिनं। बहुता दरिआउ कीए वरेती सहिज घर बैठा तां सिखिआ देती। हरफ़ सोक कीना आसारं। पहिर कफ़नी दुप्टा दिदारं। सुन्न घर लै वस्ती बसाई। भउ कफ़नी टोपी की जुगत पाई। कुटंब छोडि हुआ अकेला। पहिर कफ़नी नानक भइआ सुहेला॥ ४ ॥

तब फिर शाह शरफ ने पूछा-॥ प्रश्न॥ मैं तुरा पुरसम जवाब बगो बहि दरवेश। कपीन सुमाचि मज़ब असता उत्तर गुरु नानक। गुर सबद दीखि आसन साहिब गहिन! पंज इंद्रियों दृढ़ अटल रहिनं। दृष्टि बद भरमा ठहिरानं। दसवें दुआर ताला चढ़ामं। अठसठ हट ताड़ करनं। बिनंद सतिगुर हरि चोटं। इहि बिध नानक पहिर बिलं गोटं॥ ५ ॥ फिर शाह शरफ़ ने पूछा-प्रश्न तुम्हारे पुर जम बगो अहिल दरवेश पापोश पापोश तुराचि मजहब असत बिद हद। उत्तर श्री गुरुदेव-सरब ज्ञान महि निसरीतं। पावश पवन जात मन कीतं धर्म तरवर की रहत रहिनं। काटन मोदना मन महि महानं। दरीआऊ सैलारी तब करी आढी। भगति कर लीऊं साखी। इहि महा करि रहो पिन हनं। जत पापोश ब्रह्म होइ रहन। बिन ब्रह्म कीने पापोश तयागै। कहु नानक उह तिड़ा लागै॥ ६ ॥ फकर नही अमर का साथी। फकर कहावै पैजार। सो उह की जानै फ़कीरी की सार। फकर कहावै पकड़े कामा। टुक पकड़ की बधे आसा। फकर कहावै कपड़े हंडावै। ओह फ़कीरी गृहस्त माहि समावै। फकर कहावै कमर तलवार। फ़कीर नहीं ओह मन सब दार। फकर होइ सुख आसन चढ़ै। तां कउ असमान तुट नहीं पड़ै। फकर कहावै सिर दसतारु। ओह फकर हर हरफ में खुमार। फकर कहावै चढ़े तुरंग। सर गरदान माइआ के संग। फकर कहावै करे सुआल। महां जंजाली सदा जंजाल। फकर का मुजहार पाणी पौण। दल दस्तार माता आवा गौण। ईतनिआं फ़कीरां थीं गिरही भला। नानक खर कमावै सफलो फला।

यह सुन कर शाह शरफ ने प्रश्न किया। हे नानक देव! जो फकीरी वस्त्र पहनत्ते हैं तथा साधु वेष धार कर स्वयं बड़े बनते हैं इस प्रकार तो फकीरी हासल न हुई तथा न ही गृहस्थी रहे वह तो हो गया। अब एक प्रश्न और हमारे मन में है कि जो वस्त्र साधु को पहिरने उचित हैं वे सब आप कृपा करके कहो।

गुरु जी ने कहा-पहिले साधुता मन में होनी चाहिये फिर वह भले ही गृहस्ती हो चाहे उदासी हो, परन्तु जो फकीरों के वस्त्र पहिन काम गृहस्तियों जैसे करे वह संत नहीं है। मुंड मुंडवाना अथवा जटायें धारण करनी लंगोटी से तो कोई साधू नहीं हो सकता, साधना करे सोई साधू है। हे शाह साहिब! प्रत्येक वस्त्र पहिनने वाले को कहता हूं कि तूं पहिले वैसा बन फिर तुझे वसत्र पहिनने का अधिकार है, नहीं तो मत पहिन, असल नहीं तो संत नहीं। जैसे कोई बालक वयो-वृद्ध पुरुषों से वसत्र पहिन ले तो उसे शोभा नहीं देता है तथा जब उस आयु को प्राप्त करे तब वे वसत्र उसे शोभा देते हैं। उसी प्रकार प्रत्येक पहिरावा इस बात की मांग करता है कि उसे पहिनने वाले में वही गुण होना उचित हैं। जैसे वह कपड़े पहिन रहा है।

फ़कीरी की टोपी कहती है कि पहिले फ़कीर बन पीछे तूं मुझे सिर पर धारण कर, इसी प्रकार कफनी कहने लगी, अगर तूं मुझे पहिनना चाहता है तो पहिले अपने आप को मरा हुआ जान क्योंकि कफनी तो मरे हुए को पहिनाई जाती है। पहिले जो जीते जी अपने को मरा जाने तो वही फ़कीर है। कफनी यही कहती है कि जैसे मरे के मन में कोई कामना नहीं रहती उसी प्रकार साधू को कामना रहित होना उचित है। यदि ऐसा नहीं कर सकता तो तेरा गृहस्थी ही बना रहना ठीक है।

अब फहुड़ी कहती है कि यदि तुम ने मुझे हाथ में रखना है तो पहिले मेरे गुण हासल कर फहुड़ी के समान। गुदड़ी को खाक आदिक लगती

है परन्तु उस से उसकी शान नहीं घटती और फहुड़ी सब कूड़ा कर्कट साफ कर देती है। तू अगर कूड़ा कर्कट साफ करने को तैयार हैं तो मुझे हाथ में रख। नहीं तो मुझे हाथ मत लगा। इसी प्रकार अन्य साधु चिन्ह ऊंची से ऊंची बात का उपदेश करते हैं। भाव यह है कि पहिरावे से कोई साधु नहीं बन सकता, उस में लक्षण होने परमावश्यक हैं।

जब गृहस्थ को त्याग दिया तब फिर उसी गहस्थ पर जा कर पेट के लिए घर घर जाकर हाथ न फैला, धैर्य कर एकांत निवास कर। परमात्मा में मन लगा। फिर या तो प्राण गये अथवा ईश्वर का मिलाप हो गया। एक बार संसार त्याग दिया तो फिर संसार से क्या सम्बन्ध है। जेकर उत्तम साधना नहीं कर सकता, तब तो गृहस्थ में रहना ही टीक है। ऐसा न हो, कि न खुदा मिला न वसाले सनम। न इधर के रहे न उधर के रहे। जिस ने साधु बन कर भी परमात्मा को नहीं प्राप्त किया, वह साधु नहीं, उपितु वह एक स्वांगी है। जैसे कोई भांड राजा के स्वांग करता है तो जो उस भांड को जानते हैं अथवा जान जाते हैं, वे उसे राजा न मान कर भांड ही कहेंगे। भाव यह है कि झूटी फ़क़ीरी उपहास्य रूप है परन्तु मनुष्य के हाथ की कोई बात नहीं। क्योंकि-

जिसहि देह तिसहि मौला॥

सलोक॥

बल्लां वात न जोगिआ पैरी जोग न पंध॥
तिथै अकल न अपड़ै जिथै परिआ दी संध॥

यह सुन कर शाह शरफ ने फिर कहा-हे नानक! धन्य हो! धन्य हो और धन्य तेरी साधुता तथा धन्य आप के परमेश्वर हैं। साधना इसे ही कहते हैं जैसे आपके भीतर देखी गई है और गुरु पदवी भी आपके लिये ही बनी है जुहद में फरीद का जैसे नाम है तथा पीरी मोन दीन चिश्ती का अधिकार है तथा पातशाही रसातल पनाह का मानी जाती

है तथा त्याग उमर खिताब का हिस्सा है तथा त्याग कबीर जी जैसा है। योग में गोरख नाथ उत्तम है तथा परित्याग भरथरी तथा गोपी चंद का, तप जनक का उत्तम है। सन्यास में देव दत्त प्रथम है, ब्रह्मचर्य लक्ष्मण पर है। शक्ति श्री हनुमान पर है, युद्ध रावण पर है, वियोग का अनुभव भगवान राम पर है, हठ धरुव पर ही माना जाता है। सत सीता जी का ही अधिकार है, गृहस्थ में बाबा आदम सर्वोपरि माने जाते हैं।

जब इतनी प्रशंसा की तो फिर शाह शरफ वैराग्य से भर गया तो फिर शब्द उच्चारण किया-

राग धनासरी महला १ ॥ चकड़ी ॥

नित पुछहु पंडित जोतशी। पीआ कबहूं मिलावा होइसी। मिल दरद विछोड़ा खोइसी। तप रहीअसु माए जीउ बले। मैं कंत न देखिआ नैन भरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित काग उडावहु बन रहो। निसतारे गिणती न सवों। जिव लवै बबीहा तिवै लवों। मैं पिया बिन पल न बिहावए। जिउं जल बिनु मीन तड़फावे। जिउं विछड़ी कुजी कुरलावे। शेख शरफ न थीउ उतावला। इक चोट न थीसन चावला। किआ दरशण भूला बावला ॥ ४ ॥ उत्तर श्री नानक निरंकारी जी का -

राग धनासरी ॥ चकड़ी ॥

कर सहिज सीगार बनाइऐ। कर करणी काजल पाइऐ। मन मारण मांग भराइऐ हउं कंत मिलावा होइसी। पुछहु पंडितु सिआणा जोइसी। सर दरद विछोड़ा खोइसी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहु मिलिआं तपति बुझाईऐ। देख दरशण नैन अघाईऐ। सहु महली सदु बुलाइऐ जां भाणा तां गलि लाईऐ ॥ २ ॥ किउं कांग उडावउं बन रहों। किउ तारे गिणती दुख सहों। पी बूंद पपीह चुप रहों। जो विछड़ियां होये गम दहों। कहै नानक तूं सुन बावला। शाह शरफ न थीं उतावला। किउ दवा देवहु चावला। कहै भूला फिरै उतावला ॥ ४ ॥

जब श्री गुरु नानक देव ने इस प्रकार प्रश्नोत्तर कहे। तब शाह को सन्तोष हुआ और गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा तथा आज्ञा लेकर वहां से चलता बना।

अब शाह शरफ हाजियों के समाज में गया। तब उन्होंने पूछा-कहो शाह जी वह नवागत साधु कैसा है? अभी यह बात होने ही वाली थी। तो उसी समय श्री नानक देव भी उन हाजियों के समाज में आ गये, हाजी सोचने लगे कि यह सन्त हिन्दू है अथवा मुसलमान है? एक ने कहा-आप हिन्दू हैं या मोमन? गुरु जी ने कहा-हम परमेश्वर के साधु हैं। हाजी कहने लगे यह मार्ग हिन्दू के लिये नहीं, हिन्दू तो द्वारका तक रहते हैं तथा आगे मुस्लम देश है। अब द्वारका नगर भी आ गया। कुछ काल यहां विश्राम करके आगे चले तो हाजी लोगों ने कहा-आप तो हिंदू साधू हैं अब आगे कहां जा रहे हो? आगे जाओगे तो हिन्दू होने के नाते मारे जाओगे। यदि कोई मुसलमान हिन्दू को आगे ले जाये तो वह भी बेइज़्ज़त होता है। गुरु जी ने कहा जब वह स्थान आयगा तब हम अपनी रक्षा स्वयं कर लेंगे, आप चिंता न करो अब उन हाजियों ने कहा-भाई! तू हमारे साथ न चल। यह सुन कर गुरु जी वहां बैठ गये तथा मर्दाने को कहने लगे- हे मर्दाना! इन लोगों को जाने दो, यदि तुम्हारी प्रालब्ध में हज्ज होगा और हमने वहां जाना होगा तो फिर कौन रोक सकता है, हे मर्दाना! यदि मेहर मुहब्त और खिदमत करते जाया जाए तब असली हज्ज का पुणय। और जहां मजाख रंज तया द्वेष करते जाया जाए तो हाजी कहलाना ठीक नहीं है।

उन हाजियों ने पूछा- हे सन्त जी! हाजी कैसे बनता है और मेहर कैसे करें और असल में यह भी बताओ जिस से सच्चा हज्ज होता है। तब श्री गुरु नानक देव जी ने हज्ज नामा कहा-

हाजरा कउ मेहर है। गैर हाजरो को कहिर है। ईमान दोसत है।

बेमान काफर है। गुमान लानत है। पस गैबत का मूंह काला। दिआनत दार सुरख रोइ है। बेदिआनत सयाह गोइ है। अकृतघन जरद रोइ है। दरोग दोज़क है। सच्च बहिसत है। हिरसी फराऊन है। बेहिरसी औलीया है। इलम हलीमी है। तवज्ञा बुलंदी है। फकर सबूरी है। न सबूरी अकरूह है। ज़ोर जुलम हैं। बेज़ोर पाक है। दुआ दौलत है बद दुआ कहिर है। ईन्साफ़ साफ है। चोरी लालच है। करामात कुदरत है। राह पीरां है। बेराग बेपीरां है। दरद वंद दरवेश है। बेदरद कसाई है। रोज बख्श रहीम है। देग तेग मरदां है। अदल पातशाहां है। इतनी बातें जो भाल कर जाने और जनावै तउ नानक दानशमंद कहावे॥ १ ॥

जब इतना हज्ञ नामा श्री गुरु नानक देव जी ने कहा, तब सभी हाजी अचंभे में आ गये। उन्होंने कहा-हे नानक जी! हम तो खुदाइयों से डरते हैं क्योंकि बेइज्ञती है खोज करने वाले नहीं हैं, हम ने तो मुसलमानी आसान जानी थी परन्तु इस पर चलना अत्यंत मुशकिल है। फिर गुरु जी ने बैठ कर कहा-हे मर्दाना! अब इनको जाने दो। इतने में हाजी चले गए तब मर्दाने को आज्ञा हुई। हे मर्दाना! शब्द का अलाप कर। जिस समय तेरा शब्द समाप्त होगा तब तुम मक्का शरीफ में पहुंच जाओगे। वह सुन कर मर्दाना अलाप करने लगा। शब्द सुन कर बन के पशु शेर गीदढ़ आदि इकट्ठे हो गये। अब मर्दाना भयभीत हो गया और कहने लगा अब तक बन में क्यों बैठे रहे? हमें अभी कोई बन का पशु मार कर खा जायेगा तो हम क्या करेंगे। गुरु जी ने कहा यदि तुम्हें कोई खाएगा तो हम संसार की रक्षा कैसे कर सकेंगे। हम तो तुम्हारी सदैव रक्षा करते आ रहे हैं परन्तु तुम्हें हम पर विश्वास नहीं हुआ तब मर्दाने ने प्रार्थना में कहा-हे गुरु जी! हमें आप पर पूर्ण विश्वास है यदि विश्वास न होता तो आपके साथ ही क्यों चलते। इतना कह कर मर्दाना फिर शब्द गाने लगा। जब गाते गाते तृतीय पहर हो गया तब मर्दाने

ने शब्द का भोग डाला और अरदास की। गुरु जी ने फुरमाया था कि शब्द के भोग पड़ने पर मक्का शरीफ में पहुंच जायेंगे। तब गुरु जी ने कहा- भाई मर्दाना उठ कर देख वह मक्का नज़र आ रहा है। जब मर्दाने ने पश्चिम की ओर देखा तो मक्के के मीनार और बुरज नज़र आने लगे। मक्का शरीफ के मीनार तथा मकोनात को देख कर मर्दाने ने कहा-हे गुरु देव! हम मक्के में पहुंच गये मालूम होता है। प्रसन्न होते हुये मर्दाने ने कहा-हे महाराज! जहां इस से कुछ क्षण प्रथम हम बैठे थे, वहां से मक्का लग पग एक वर्ष यात्रा की दूरी पर था, परन्तु आपकी कृपा शक्ति से हम कुछ ही घड़ियों में यहा आ गये हैं। गुरु नानक ने कहा-हमने मक्का शरीफ के प्रधान काजी रुकन दीन के साथ कुछ प्रश्नोत्तर करने हैं और कुछ शिक्षा मक्के के बादशाह कारूं हमीद को देनी है जिस से वह खुदा प्रस्त (ईश्वर) का भक्त बन सके। सुना है कि वह बहुत नीच है, उसका बन्दी जीवित नहीं रह सकता।

अब गुरु जी ने अपने वस्त्र नील वर्ण के कर लिये। एक हाथ में आसा तथा दूसरे में कासा ले लिया और तसबीह (वह माला जो मुसलमान फकीर पहिनते हैं) ले ली। भाव यह है कि गुरु जी ने अपना वेष एक हाजी मुसलमान जैसा कर लिया तथा हाजी समाज के साथ मिले। अब हाजी लोग हज्ज की तथा अन्य मुसलिम धर्म सम्बन्धी मर्यादा की स्तुति करने लगे और रब्बी तारीफ करने लगें। इतने में रात्रि काल हो गया, लोग विश्राम करने लगे।

उसी मसीत में हाजी बृन्द ने विश्राम किया, परन्तु हमारे गुरुदेव श्री नानक देव मक्के की ओर पांव करके सो रहे। जब एक पहर रात्रि शेष रही तो मसजिद का झाड़ू देने वाला, मुल्लां जीवन सफाई करने को आया। उस ने प्रथम दीपक जलाया। उसने सोये पड़े सभी हाजियों को देखा। उस की दृष्टि गुरु नानक पर पड़ी, जिन्हों ने मक्के की ओर

पांव कर रखे थे। झाड़ू बरदान को बहुत क्रोध चढ़ आया। उस ने सोचा कि यह मक्का शरीफ की ओर पांव करने वाला कौन है? उसने लात प्रहार करके गुरु जी को कड़क कर कहा-अरे खुदा के जीव! तू मुसलमान है या कोई काफर हिन्दू हैं तुम्हें इतना भी इलम नहीं कि परमात्मा की ओर पांव करके सो रहा है। बाबा नानक देव ने कहा-हे जीव! यदि हम भूल गये हैं तो आप हमारा पांव किसी ओर दिशा को कर दो। अब उस झाड़ू बरदार ने गुरु जी की लात पकड़ कर दूसरी ओर कर दी। परन्तु तमाशा यह हुआ कि मक्का भी उसी दिशा की ओर फिर गया। जिधर गुरु जी के पैर किये थे। मूर्ख जीव किसी महा पुरुष को शीघ्र नहीं पहिचान सकते। झाड़ू बरदार तथा गुरु जी के मध्य जो बात हुई थी उससे कुछ हाजी यात्री भी जाग उठे। मक्का फिराने के तमाशे को अचंभित होकर वे लोग देखने लगे। उस झाड़ू बरदार ने अब गुरु जी को मारने की नीयत की और आगे बढ़ा फिर गुरु जी की लात अपमान से दूसरी तरफ कर दी। मतलब यह था जिधर-जिधर गुरु जी के चरण होते मक्का शरीफ उधर उधर को फिर जाता था।

अब उन लोगों की आंखें खुलीं। उसी झाड़ू बरदार ने अब शोर मचाना प्रारम्भ किया। कहने लगा, लोगो अब कयामत (प्रलय काल) का दिन निकट ही है, यह जो सोने वाला (नानक देव की ओर संकत करके) नवागत है। यह कोई औलिया (महा पुरुष) है, अंतः यह बहुमूल्य व्यक्ति है। संसार में यह वली अर्थात अवतारी जीव है। अब नानक देव जी उठ कर हाथ मुंह धोने लगे तथा मक्के की ओर मुख करके राग बसंत का एक शब्द उच्चारण किया-

राग बसंत असटपदी॥

नउ सत चउदह तीनि चारि करि महलति चारि बहाली॥
चारे दीवे चहु हथि दीए एका एका वारी॥ १॥

मिहरवान मधुसूदन माधौ ऐसी सकति तुमारी॥ १ ॥ रहाउ॥
घरि घरि लसकरु पावकु तेरा धरमु करे सिकदारी॥
धरती देग मिलै इक वेरा भागु तेरा भंडारी॥ २ ॥
ना साबूरु होवै फिरि मंगै नारदु करे खुआरी॥
लबु अंधेरा बंदीखाना अउगण पैरि लुहारी॥ ३ ॥
पूंजी मार पवै नित मुदगर पापु करे कुोटवारी॥
भावै चंगा भावै मंदा जैसी नदरि तुम्हारी॥ ४ ॥
आदि पुरख कउ अलहु कहीऐ सेखां आई वारी॥
देवल देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली॥ ५ ॥
कूजा बांग निवाज मुसला नील रूप बनवारी॥
घरि घरि मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी॥ ६ ॥
जे तू मीर महीपति साहिबु कुदरति कउण हमारी॥
चारे कुंट सलामु करहिगे घरि घरि सिफति तुम्हारी॥ ७ ॥
तीरथ सिंम्रिति पुंन दान किछु लाहा मिलै दिहाड़ी॥
नानक नामु मिलै वडिआई मेका घड़ी सम्हाली॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥

जब यह अष्टपदी गुरु जी ने कही तब वहां के जो प्रधान थे, उन्हों ने पूछा कि यह हिन्दी भाषा की कविता जो इसने गाई, हमें इसका अर्थ समझ में नहीं पड़ा। तब गुरु जी ने कहा-यह परमात्मा की स्तुति का गीत है, हम चार पुस्तकें जानता हैं! और एक मक्का मदीना तीर्थ है जहां महांदेव का लिंग है। सभी ओर ब्रह्म विष्णु और महांदेव बिराजमान हैं। महांदेव को बाबा आदम भी कहा जाता है तथा पार्वती को अम्मां हव्वा भी कहते हैं। वह हिन्दू मुसलमानों का बजुर्ग है। आठ सठ तीर्थ सभी पवित्र हो सकते हैं यदि चारों दिशाओं में ईश्वरीय शक्ति का पूजन हो, तथा हज्ज का दर्शन करें। इसी प्रकार दूसरे कहते हैं कि जब तक सुमेर कुबेर की प्रदक्षिणा नहीं होती तब तक पवित्रता नहीं

है! मुसलमान हिन्दू के तीर्थ की निन्दा करते हैं और हिन्दू मुसलमान के तीरथ की निंदा करते हैं। दोनों ही परमात्मा के स्थान को बुरा कहते हैं। अब मैं (नानक) सरोद का अर्थ कहता हूं-प्रथम वह परमात्मा ने अपनी शक्ति से नव खंड की रचना और सात सितारे रचे। भलाई बुराई के साक्षी यही आसमान के देवता हैं तथा चौदह तक हैं सात ऊपर है और सात ही नीचे हैं। १. राम, २. आब, ३. खाक, ४. पवन। यह चारों तत्व हैं। इनकी स्तुति चारों पुस्तकों में है। ब्रह्मा को जबराईल कहते हैं। तीन जातियें इन्सान के शरीर से प्रकट की हैं। १. देवता, २. राक्षस, ३. आदमी। इन तीनों को तीन लोक दे दिये ऊपर के चारों दीपक चारों युगों में उजाला करते हैं। आठ युग युगांतर हैं, ब्रह्मा प्रकाश करता है। यह समस्त शक्ति उस मधु सूदन भगवान की है। हिन्दू मुस्लमान अहंकार करके तथा परस्पर निंदा से मरते हैं। दोनों एक पिता के पुत्र अपने अज्ञान से आपस में लड़ते मरते हैं तथा दोनों ही नर्क यात्रा करते हैं। कुछ मगरबी हैं वे ब्राह्मण कहलाते हैं और जो जनूनी हैं, वह क्षत्री कहलाते हैं। तथा कुछ वेश्य तथा शूद्र कहे जाते हैं। यह ऊंच नीच का भेद परस्पर का डाला हुआ है तथा न समझी और अज्ञान है। कोई शेश बना कोई सैय्यद तथा अन्य अनेकों भेद इस जीव ने स्वयं पैदा किये तथा स्वयं उन से नफरत की। इन लोगों ने अपने फिरके के नवीन से नवीन स्थान बनाये तथा एक दूसरे से बहुत दूर होते चले गये। एक ने एक नाम से ईश्वर का घर बनाया तो दूसरे फिरके ने ईश्वर का दूसरा घर अपनी इच्छा से बनवा दिया। फिर वे एक दूसरे द्वारा बनाया हुआ ईश्वर का घर गिराने पर तैयार हो गये तथा संसार के भीतर द्वैष की आग लग गई। अब परम पिता परमात्मा ने सभी मुक्त जीव एकत्र किये और इन में से एक नानक को संसार में भेजा ताकि द्वेषाग्नि को शांत किया जाये, नानक को आज्ञा हुई जाओ अंधेरे संसार में सत्य का सूर्य चढ़ाओ, तथा

गुमराहों को सुपथ पर चलाओ। जो सत्य मार्ग पर चलेगा वही पार होगा। मनुष्य की बनाई हुई जात उसके दरबार में कोई विशेषता नहीं रखती। एक ईश्वर के सिवाह किसी दूसरे की पूजा कुफर है अर्थात असत्य की पूजा है, एक ईश्वर का पुजारी पवित्र है।

हे मीआं जीवन! यहां तुम्हारी हकूमत है। ताकत है जो चाहो कर सकते हो, परन्तु स्मरण रहे कि प्रत्येक घर में उस परमात्मा का निवास है और उसी की शक्ति प्रत्येक स्थान पर अपना प्रमुख स्थापन किये हैं, इस स्थान पर तुम्हारा आधिपत्य एक भ्रांति है तथा स्वप्न तुल्य हैं। यहां भाषा भी तुम्हारी है, वह भी स्वप्न समान है। हिन्दू जनता तुम से भयभीत रहती है। परमात्मा की आज्ञा है, धर्म ही मुझे प्यारा है। देग तेग सवै वधर्म की ही चलेगी, संसार में सभी वस्तु बनती है परन्तु भाग्य के बिना उनका मिलना नहीं होता। ईर्षा अर्थात कामना इसका स्वभाव बढ़ना ही है। जो इसे बढ़ने से रोकता है। वही शूर हैं काम क्रोधादिक इस जीव के अत्यन्त शत्रु हैं जो इसको नाश करते हैं। हे जीवन जी बुराई का परिणाम बुरा है तथा भलाई का परिणाम भला है। उस प्रभु के दरबार में किसी भी लालच अथवा सिफारश के लिये कोई स्थान नहीं है। तुम उस आदि पुरुष को अल्लाह कहते हो तथा हिन्दुओं को माने हुए देवी देवता आदिक उनके ऊपर आप लोगों ने मनुष्य शक्ति के प्रभाव से कर लगा रखा है। यह कीर्ति तुम्हारी इसी कलियुग में ही प्रचलित हुई। पूजा, बांग, मुसल्ला और जो नील रूप है। यह बनवारी जी का है। वही आपके घर घर में रमा हुआ है। इस समय इस प्रदेश की चारों दिशाएं आप से झुकती है क्योंकि तुम्हारे हाथ में शक्ति उसी परमात्मा की देन है। तुम इस समय के राजा हो तथा जो हिन्दू हैं वह आप लोगों की प्रजा के समान हैं। मैं नानक चारों कुंटों की यात्रा करके आ रहा हूं। मैं तो चाहता हुं कि वह परमात्मा मुझ से क्षण भर भी दूर न हो।

जीवन ने प्रभावित होकर कहा-हे नानक! तुम ने तो चारों पुस्तकों को पढ़ा है। हम ने तो केवल एक ही को देखा है। तब गुरु जी ने कहा-हे जीवन! फिर भी उस अपार का पारा किसी से पाया नहीं गया। पृथ्वी और आकाश सारा संसार बाबा आदम का ही शरीर है। यह बिल्कुल सत्य है कि सारा ब्रह्मणड आसमान चांद सूर्य आदिक सभी उसी विराट का तुरुष अंश है। उस आलम कबीर से सभी आलम शरीर उत्पन्न हुए हैं। तमाम सामाजिक वस्तु उसी के गुण गा रहे हैं हिन्दु मुसलमान उसी के हैं, मैं उसी की आज्ञा से यहां आया हूं। आप लोग सभी ईश्वर के बनाये मानो। वैर विरोध मन से दूर करो। हराम हलाल का अनुभव यह सिखाता है कि मन मर्जी सदैव बुरी हैं सत्य पुस्तकें कुछ और शिक्षा देती हैं तथा संसारी जीव कुछ और ही कर्तव्य करते हैं। ऐ इन्सान तुझे अपनी सम्भाल स्वंय करनी चाहिये तथा संसार का भ्रमण करके देख कि यहां क्या क्या तमाशे हो रहे हैं। प्रत्येक जीव शराचर की रक्षा कर। हे मुल्लां जीवन! हम तो संसार की इस अवस्था को देख कर हैरान रह गये हैं, जो कुछ पीछे आये हुए महापुरुषों ने शिक्षा दी है उसको हम ने जान बूझ कर भुला दिया है तथा मन मर्यादा पर कमर बांधे चले जा रहे हैं। यदि हम उस परमात्मा का स्मरण ही नहीं करेंगे तो फिर वह अगोचर ईश्वर हमें किस प्रकार मिल सकेगा। हम लोग उस अल्लाह के होते हुए शैतान की शिक्षा पर अमल करते हैं तो बताओ हमारा कल्याण किस प्रकार होगा। हिन्दू हो अथवा मुसलमान सभी अपने अपने कर्म के अनुसार सुख दुख तथा चौरासी लख योनि को प्राप्त करेंगे। मुझे परमात्मा की आज्ञा हुई है कि मैं संसारी जीवों को सुमार्ग दिखाऊं तथा एक परमात्मा की पूजा सिखाऊं। इस से पूर्व एक लाख अस्सी सहस्र पैगंबर अवतार आये और अपना उपदेश कर गये। फिर संसारी समय पाकर भूल गये हैं और सच्चा मार्ग त्याग दिया है। चार पुस्तकों

की मौजूदगी में भी पाप प्रधान हो रहा है। अब मुझे उसी महान् शक्ति की आज्ञा हुई है! अतः मैं प्रभु आज्ञा पालन के लिये भ्रमण कर रहा हूं यदि मैं ऐसा न करूंगा तो महा प्रलय होने की संभावना है। अनेक वे भी यहां जो दीपक जलाते जलाते स्वयं जल कर अंधकार में मिल गये और संसारी विषयों के जाल में स्वयं फंस गए और भस्म साथ हो गये। हज़रत मुहम्मद जी ने अपने मज़हब के बहत्तर फिरके बांधे और दस नाम सन्यासी तथा अनेक नाथ अनाथ रावल आये। संसार में अनेकों पन्थ चला कर चले गये तथा अफरा तफरी के निशानात कायम हो गये। करना कुछ था हो कुछ और ही गया।

हे मुल्लां जीवन! हमें झूठ के नेस्तो नाबूद करने का हुकम है। इसी हुकम की तामील करवाने का संकल्प है। परमात्मा के सन्मुख एक ही मार्ग है। रोटी कपड़े तथा स्वार्थ के लिए अनेक मनों की दुकानें खुली हुई हैं। कहीं हिन्दू की बहु संख्या से हिन्दू मर्यादा हकूमत कर रही है तो कहीं मुसलिम बहु संख्या से मुसलिम पद्धति अपनाई जा रही है। होगा वही जो परमात्मा को स्वीकार होगा। न हिन्दू की चलेगी और न मुसलमान की चलेगी यदि चलेगी तो उसी सर्व शक्तिमान की ही चलेगी। यह सत्य है जो जैसा करेगा तैसा भरेगा। कोई किसी को छुड़ाने वाला नहीं है।

जीवन मुल्लां को यह सुन कर कुछ तमक लगी। कहने लगा-देखो लोगो यह हिन्दू हमें नसीहत करता है। पहिले तो इसने मक्का फेर दिया है और अब हमें पूर्वी किस्म की शिक्षा दे रहा है। मुल्लां ने कहा-हे नानक! जो मक्का मदीना में तुझे कुफर नज़र आ रहा है, यह सब का सब तुम्हारे देश से आने वालों की करतूत का नतीजा है। ईधर की जमीन पाक और पवित्र है और हम लोग जो यहां निवास करते हैं सभी पाक दामन हैं।

इतने में काजी रुकन दीन आ गया और हज्ज का निमाज़ पढ़ने का समय आ गया। गुरु नानक और काजी रुकन दीन का मेल हुआ, तथा नीचे लिखे अनुसार वारतालाप हुआ-

गुरु नानक-काज़ी साहिब! हम लोग आप के दर्शणों के लिये हज़ारों कोस दूर से आ रहे हैं। हमारा सामना अन्य मज़हब के विदवानों से हुआ है। हमारा दावा है कि लिखने पढ़ने से कभी कल्याण नहीं होता, जब तक इन्सान अमल न करे। यही उसी परवदगार का हुकम है। यह जमाना अन्तिम है। इस जमाने में सिवाय ईश्वर की बंदगी के और कोई चारा नहीं हैं। बन्दगी और नेक अमल यह दोनों चप्पू इन्सान की नौका को पार लगाने वाले हैं। हम ने आप के साथ एक दो बातें परमार्थ की करनी थी सो ईश्वर ने समय दे दिया है। मक्का मदीना गंगा जमना किसी भी स्थान पर नेकी और बन्दगी काम आयेगी। यह निश्चय किया हुआ मेरा मत है। यदि किसी पवित्र स्थान पर यह इन्सान बुराई करे तो उसे बुराई का ही फल होगा। मुझे पूछा गया है कि तुम कौन हो? मैं हैरान हूं कि मैं उत्तर क्या दूं। बाबा मैं इन्सान हूं तथा उस परमात्मा की आज्ञा से आया हूं तथा उसी का होता हुआ उसी का रूप हूं। हिन्दू मुसलमान तो यहां के बखेड़ों का नाम है। मैं पाक जात होता हुआ अपने निकट नापाकजी को क्यों जाने दूं स्वतंत्र तथा लामहिमूद होता हूं। पराधीन और सीमावद्ध क्यों बनने लगूं। अरबों का स्वामी लाखपति क्यों बनें। फिर मैं सर्व देशी ईश्वर को मानने वाला उस परमात्मा को एक स्थान पर क्यों मानूं। मैं चाहता हूं कि हिन्दू मुसलमान जो भी बंदगी करेगा तथा जो उसके हुकम से कल्याण है। मनुष्य को उचित है कि उस परमात्मा को सर्व व्यापक जाने। उसके लिये कोई विषेश मदनन कल्पना करे तथा पीर पैगंबर अवतार देवता सभी अपने अपने समय के हाकम हैं उनकी निंदा भी उचित नहीं परन्तु उस पमेश्वर की जात

सर्वोपरि है। पैसा आना द्ुवन्नी चुवन्नी, सभी कुछ न कुछ कार्य साधने में सामर्थ्य हैं। परन्तु जिसके पास रुपया है उसे छोटे सिकों की आवश्यकता नहीं क्योंकि सभी साधनों को सिध करने वाला रुपया जब प्राप्त है तो उसी से सब काम हो सकते हैं। जो उस परमात्मा पर विश्वास नहीं करते वही दोजख नर्क में जायेंगे। भले ही वह ब्राह्मण हो चाहे सय्यद हों।

सच्ची बातें कड़वी होती हैं मुल्लां जीवन को शिक्षा भली न लगी तथा वह श्री गुरु जी का प्रभाव पड़ते देख कर ऊंची ऊंची आवाज़ से तथा तमाक के साथ सूर पढ़ने लग पड़ा।

स्वाल—मुल्लां जीवन सूरा

हमद सनाई रब नौं दोइस नबी रसूल। सोइस चारों यार होण पढ़ कलमा कबूल। लिखिआ धुर दरगाह देह इको पाक अलाई। ऊपरि कलमा नबी दा पढ़िआं होइ पाक औराहि। दूसरा फील फरेसता कुद फूकसी करवाइ। तिस रोज सहसर डेहड़े पौसी गुल कहाई। उडसी दुनियां ऐत भांति जिउं पैरवे दी कपाहि। पत सनि जिमि असमान दुइ रूह खास तिवड़ें ताहि। काजी होसी आप रब मुफती नबी रसूल। पुछसन खोहल किताब नों नेक बदां सभ मूल। सभ छड पुछसनि उमति जिन्हां किये सवाल अजाब। हजरत का फुरमाइआ लिखिआ विच किताब। तिस रोज़ महशर जेहड़े होसनि सोई खराब। जो दिती बांग न जागदे सुते पए नापाक। मुतड़ी थीए रब दे दर ते मिली तलाक। बे निमाजां ते संग भले जो कैहदे राती जाग। ओइ करन अलाह दी बंदगी जी वड तिनाड़े भाग। हड पलीती काफरां पर औरत नाल मुहाब। ओइ वेला वखत न जाणदे नां किछ उमर किताब। दोज़क सड़दे पाईए तन ते साहिन अज़ाब। अजराईल फरेशता आखर रके खराब। सुर शराब हमाम है बैजा

भंग गुणाइ। जीवन शासत नफस दी पासन करे सजाइ। जवाब-गुरु नानक देव सूरे किया। हमद सनाई रब्ब नों बाहद ला शरीक। अवतारां पैगंबरां इक सकिआ न कर तहकीक। लख चौरासीह आलमा काण हैवान नबात। वाईद ला शरीक है नित मुखहु अलाहि जाप। वाइद ला शरीक है इन कादर पाक अलाहि। कुदरति लख रसूल हैन सच दरगह पान न राह। कल्ला इक खुदाइ है कुदरत कई रसूल। जीवन नीअत रास कर दरगहि पवहि कबूल। लिखिआ धुर दरगाह दे एको पाक खुदाइ। दोइ मु दइआ न होइगा जो थीया थीआ फनाहि। मुफती कोइ न रब्ब पपा जो खोल्हे पास किताब। यार न कोइ अलह दा जो करे सुवाल जवाब। वाइद जा शरीक है काजी मुफती आप। आपे खोल किताब नों आपे करे हिसाब। आपे बखश मिलाइदा देह सजाईं आप। इको इक खुदाइ है तिस दा माइ न बाप। चांदी धोवे सुनिआर जिउं खोटे खरे मिलाइ। सिक्का सच्च रलाइके खोटे कढे जलाई। हांडी चाढ़ जलाइसी आप सुनिआरा रब्ब। खोटे थीवसन खाकड़ी काइम करे कर्तब्ब। जरबा लगसन खोटिआं पर खोटे किते न कम्म। साहिब ऐवें परखसी जिवें सराफां दम्म। खरे खजादे पौसनी खोटे दिचन ढाल। खांटे मिलसन खाक नाल खासी जाइ रवाल। नानक आखी जीवना मुख ते सच अलाइ। रोज महशर जेहड़े पौसी गुल कहाइ। होसी किआमत दुनी पर अंत न ओड़क होइ। तद काजी मुफती को नहीं काजी आप अलाहि। गैर हिसाब न देखिआ रब्बानी दरगाहि। तलबां पहुसन आकीआं कीते जिनां गुनाहि। ओइ पौसन दोजक होविये गल संगल कोइ सिआहि। नेकां अमलां वालड़े देखसन पाक अलाहि। बद अमला जो करनगे होसी अंत फनाहि। अमली सोझी उत दिहि मिलि करसन बैठ सलाह। होर न होसी पाक को इक होसी अलाह गुआहि। अमर हयाती भिशत विच पासन सच्च अलाह। छुटसन सेई नानका मुरशद जिन्हां षमाहि। मुसलमान

कहावन मुशकल जो होइ तां मुसलमान कहावै। अव्वल औल दीन कर मिठा मुसलमाना माल सुमावै। होइ मुसलमान दीन मुहाणै मरण जीवन का भरम चुकावै। रब की रजाइ मंनै सिर उपर करता मंने आप गवावै। होइ मुसलिम दीन मुहाणे मरण जीवन का भरम चुकावै। नानक सर्व जीआं मिहरंमत होवै तां मुसलमान कहावै।

आइत॥

मिहर मसीति सिदक मुसला हक्क हलाल कुराणि। सरम सुंनति सील रोजा होहु मुसलमान। करणा काबा सचु पीर कलमा करम निवाज। तसबी सा तिस भामसो नानक रखै लाज। मुसलमान मुसाबे आप। सिदक सबूरी कलमा पाक। खड़ी न छोड़ै पड़ी न चाइ। सो मुसलमान भिसत को जाइ।

सूरा॥

हक पराइआ नानका उस सूअर उस गाइ। गुर पीर हामा ता भरे जा मुरदार न खाइ। गली भिसत ता जाईऐ छुटै सचु कमाइ। मारण पाहि हराम महि होइ हलाल न जाइ। नानक गली कूड़ई कूड़ै पलै पाइ। जिना सचि पछानिआ पौसन भिसती जाइ। हक हलाली खावणा सचु तिवाड़े भाइ। जोर न कीजै किसी पर उत्तम मधम न कोई। हिन्दू मुसलमान नों दुहां तसीहत होई। दइआ कपाह संतोख सूतु जत गंढी सत वट। एह जनेऊ जीअ का हई ता पांडे घतु। ना इह तुटै ना मलु लगै न इह जलै ना जाइ। धंन सु मानस नानका जो गलि चलै पाइ। चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउके पाइआ। सिखां कंनि चढ़ाईआ गुर ब्राह्मण थीआ। ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गईआ। लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि। लख ठगीआ पहिनामीआ रात दिनसु जीअ नाल। तगु कपाहहु कतीऐ बामणु वटे आइ। कुहि बकरा रिंनि खाइआ

सभ को आखै पाई। होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु। नानक तगु न तुटई जे तगु होवै जोरु। नाई मंजीऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूत। दरगहि अंदरि पाईऐ तगु न तूटस पूत। तगु न इन्द्री तगु न नारी। भलके थुक पवै नित दाड़ी। तगु न पैरी तगु न हथी। तगु न जिहवा तगु न अखी। वेतगा आपे वतै। वटि धागे अवरा घतै। लै भाड़ि करे वीआहु। कढि कागल दसे राहु। सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु। मन अंधा नाउ सुजाणु। जे मोहा का घरु मुहि घरु मुहि पितरी देह। अगै वसत सिंजाणीऐ पितरी चोरि करेइ। वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ। नानक अगै सो मिलै जि खटै घालै देइ॥

भाव॥ तगु न हिन्दु पाइआ तगु न मुसलमान। दोवें भूले राह ते गालब भया शैतान। हिन्दु संगल सत दा तिस का भौ नहीं कोई। भावै चौक विच भावै बाहिर होई। हिन्दू बधा सत सिउ तिन कउ छुटन असान। तिकल संगल शरे दा छुटे मुसलमान। कंधी जीउ दरया इदि दीन किनारे दोइ। आपो आपने दीन विच बधे दिस्सन सोई। हिन्दु बंधन जो कटे कोई न सके तोड़। बंधन कटे तुरक जे मारन पिंड अधोड़। बंधन चंगा सूत दा तुटे पाया होर। जे बंधन तुटे तुरक दा तां काफर होई न कोर। करमी बंधे जे मरन मर फिरि जनम मरण न ताहि। सुन्नत हिन्दु तुरक दी काने सुनीऐ दोई। सुन्नत बाझों जावणा हिन्दु तुरक न कोई। आलत कटीए तुरक दी हिन्दु गोश छिदाइ। जबर लगासणि अपनी निआरा रहिआ खुदाइ। हिन्दु मुसलमान दोइ दरगहि लहनि न जाइ। फल फकर जहान विच हिन्दु तुरक कहाइ। कलयुग विच मन सूख हैन हिन्दु मुसलमान। तीजा दीन चलाइआ मुसकल थीआ असान।

॥स्वाल रुकन दीन काजी॥

आखे काजी रुकन दीन सुण नानक दरवेश। ऐथों कलमें पाक जो

सो अलह दे दरवेश। अवल नाइ खुदाइ दा दोयम नबी रसूल। नानक कलमा याद कर दरगह पवे कबूल। लिखिआ धुर दरगाह दा हिरस बाझ न कोई। कहै मुहमद उसती कलमा पाक बुगोइ। साहिब का फुरमाइआ लिखिआ विच किताब। दोजक जलदे ना पवन जो पढ़दे कलमां पाक। त्रीहे रोजे जो रखण पंजे वकत निमाज। भिसत तिनां की रोजड़ी लत्थे सभ अजाब। आतश दोजक हाविए काफर नित्त जलंन। मुसलमान मुसलमा जे खाकू संग मिलंन। काइम होई किआमती बत न आवन जान। रुकनल रूह निआमती जे साबत रखे ईमान।

॥जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

सुन हो काजी रुकन दीन आखी नानक शाह॥ जिनां ईमान सलामती से दरगह पाइन राह। अल्वल नाइ खुदाई का केते नबी रसूल। रुकनल नीअति रास कर दरगह पवे कबूल। लिखिआ दर खुदाई दे हिकस बाझ न कोइ। दूजी कुदरति साजि के रंग दिखाई सोई। इक दर दात लखि लखहु लख असंख। नानक कीमति ता पवे साहिब अगम बिअंत। आदम हवा सिरजिआ कुदरति बंदे दोइ। दूही हथ उपजी मेदनी जीअ जंत अलोइ। केत्रे नूर मुहम्मदी डिठे नबी रसूल। नानक कुदरत देखकर खुदी गई सभ भूल। अला वाली दरगाह दा अंत न पारावार। कई असंखां तबक कर बिअंत बेशुमार। इको दर दरगाह इक इको पाक खुदाइ। दूजी कुदरति नाज के होआ बेपरवाहि। इको आशक आप हीर माशूक ना कोइ। कुदरति कई मशूक है दावा करदे सोइ। साहिब कदी ना देखिआ सभ कुदरति ना लपटाइ। कुदरति अंत न पावनी फिर फिर धके खाइ। केते लख पैकंबरां मर फिर होवै खाक। खाकू ते फिर ऊपजहि कई असंखां लाख। जितु दर केख मुहम्मदा लख ब्रह्मा बिशन महेश। लख लख राव पडीरीअरि लख राही लख वस। लख लख ओथे जती

है सतीअहु ते सनिआस। लख लख ओथे गोरखा लख लख नाथां नाथ। लख लख ओथे आसनां गुरु चेले रहिरास। लख लख देवी देवते लख दानो लख निवास। लख पीर पैगंब्रर अउलीए लख काजी मुलां सेख। किसै सांत न आईआ सतगुर के उपदेश। साधिक सिध अगणत है केते लख अपार। एतड़िआं अपवित्र है बिन सतिगुर के सबद बीचार। सिर नाथां दे एक नाथ सतिनाम करतार। नानक ताकी कीमत ना पवै बेअंत बेशुमार। लख जोगी जुगत कर लखां संत महंत। लख धरती आकाश हैन पुरीआ लख अनंत। लख लख कूरम मछि मछि कछि लख लख भए बराड़। लख लख उथै नरसिंघ बावन लख अलाह। रामक्रिशन अगणित हैं बोधि कलंकी लख। आवण जावण हुकम विच करते आख फरक। केतड़िआ अवतार लख बातें अंत न पार। केती होईआ उमती किछु अंत न पारावार। लख पीर पैकंबर औलीए गौस कुतब लख पीर। तरसन खड़े दीदार नूं दिसन खड़े जहीर। नानक सचा पातशाह सिर शाहां पातशाह। काइम दाइम कुदरति कादर बेपरवाह। ब्रहमे आइन आखदे बेद पड़हि मुख चार। बिसन किसन कई बपड़े हुकमी धरहि अवतार। सिव पुरान दर खड़े देवी देव असंख। अपुठे होवहि झुर मरहि सच सदा बखसंद। चार कतेबां सोधीआं सोधे चारों बेद। सोधी नउ खंड प्रिथवी बहुं बिध होइ भेद। साहिब हिको राह बखस हिन्दु मुसलमान। दावे उते लड़ मरे रहिआ खुदाइ अमान। नानक दावा छडिआ जग विच वरते खैर। ना काहूं सो दोसती ना काहू सो वैर। नानक आखै रुकनदीन सचे सुणो जवाब। साहिब का फुरमाइआ लिखिआ विच किताब। आतश दोजक हावीए पाईआ तिनां नसीब। भिसति हलाली खावणा कीता जिनां पलीत। मुसलमान मुसलमी जो जुसे विच मरंनि। काइम होई किआमति फेर न जनम धरंनि। नानक आखे रुकनदीन कलमा सच पछान। इको रूह अमानतां जो साबत रखे ईमान। मुसलमान खुदाइ के

हिन्दू आखन राम। दुहा दावा पकड़िआ गालब भइआ शैतान। हिन्दू मूरति निरमली मुसलमानी पाक। अमल उपरि निबड़े सहे निमाणी खाक। आपे साज निवाजदा आपे करे फनाहि। काइम दाइम कुदरति सचे बेपरवाहि। नानक साहिब एक है होर शै..ानी राह। सबा लख पैकंबरां आए दुनीआ माहि। आपो आपणी नौबती सभो चलाए राह। ऐथे ओथे एक है दूजा नाहीं कोई। दूजा आपे जनाइके गए सबहि होई। नीचा अंदरि नीच जात नीची हू अति नीच। जिथे नीच समालीअनि उथै नदर तेरी बखसीस। बाद पीर अंबीरदर खाक सिबाद जान। दाई दाइआ रोज सब खेलै सगल जहान। नेकी बदी बखानीऐ मलकत मौत हजूर। अमली आपो आपणी के नेड़े को दूर। जिना हुकम पछानिओ चले मसकत घाल। नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि॥ ५ ॥

॥स्वाल काजी रुकन दीन॥

आखे रुकनल नानका रहे रसूल खुदाइ। जो कोइ करे बुरिआईआं सोई लहे सजाई। इको इक बरताइआ होर किन नो पूछो जाई। हुक्म पछाणो खसम दा आया सो परवान। नानक ताको ताक है इको रूह अमान। बेड़ी जिओं दरया दी रहणो मुहाणो पीर। बन्नण पंढ जगातीए बहुत मुरीद वतीर। पुछन खोलि जगातिए मंगन माल जगात। देनी आई तिनां को जिनी कमाए पाप। बंनण पुल दरयाव दे पातशाह पातशाहि। लधे अगणती मेदनी पुछ न सके अगाहि। लधे सवाही उमती लख असंखां पूर। अमली आपो आपणी को नेड़े को दूर। जिनी नाम धिआइआ सो जग विच पातशाह। असली आपो आपणी लेखे मिले सजाई। कटिक गए घर आपणे पातशाह गए रदबार। चोर मिले विच बंदीए रहंयत गई घर बारि। बाजारी बाजार विच उना आई लाए बाजार। करन किसै बस दातीए खानी जाइ। नवन भंड अताइआं ताके

संग बणाह। वाचन पंडत पोथीआं गीता भगवत गाइ। मुल्लां पढ़न रसालड़े करन सरोदिहि हाइ। आपो आपणी कारवार लगी सभे जाइ। पूरे गुरमुखि भौजलो लाइ चरणी घति लंघाइ। सुणाइ कंनी पुरसलात वालों निकी कराई। खंडे कोलों तिखड़ी अग लोहे जिउं तपाइ। भले वही नदी पूरंत दी उथे लेत गिराइ। सरप अठूएं विच फिर जो कटि कटि पापीआं खाइ। पीड़ सड़े लई बेड़ीऐ सद लणा मुरीद बैठाइ। चोर उचक्के लालची हराम खोर बदाहि। ठग घटयारे राह जनि लाइतबारी खाहि। वेउसताद दे मुरशदां इनां मिलदी बहुत सजाइ। लूण हरामी किरत घण ओना लगे कहाइ। कूटणीआं अते लोलीआं इनां रूहां वडी सजाइ। करके जोर गरीब पर माहआ लैण छपाइ। रख पराई अमानती जद मंगे मुकर पाइ। ग्वस लैन पराई जिमी नूंदे वढी सच्चा कहाइ। करके लेखा कूड़ दा लैंदे दरब भुलाइ। इनां कौमां जामन को नहीं तार उते देन चढ़ाइ। कट उतारे पुरसलात बहु कूके करहि कहाइ। कटके फेर सवारीअनि राह वत उते ही पाई। केते ही असंख जुगां विच भौजल लहथ सजाई। बीते असंखां चौकड़ी फिर सटिअन धरती पाइ। लख चौरासी जोन विच भबल भूसे खाइ। वडे भागां नाल ही आदम देही पाइ। मानस देही पाइके सिर साहिब करे न याद। अंदरो कपटी भउ सुख निऊंदा जिवें कमान। तोपची निवें बंदूक लै लैंदा मिरगे मार। कटे घुंड हरमडी निव बेमुख करन संघार। अदर होबस सच जे भावें होस कि नाहि। ओह दरगाह अंदर सुरखरू अमृत फल चुणि खाइ। को विरला मार्ग सच दे कोटी मधे होइ। सईं हजारी ना लहां लखी न पाईऐ सोइ। जिउं पारस अंदर पत्थरां जिउं पारजात बन आहि। जिउ गौंआं अंदर कामधेनु तिउं साधु मानुख माहि। कोई लख न हंघई साधू चलत अपार। जोइ सिञानै इकतू तउ औह भी साध बिचार। नातर सभा दगेबाज बैठे जाल विछाइ। पाया मूलों विछाइके फिर माया लैन फहाइ। सभ बैठे जाल विछाइ के को फासे

ऐथे आइ। इक मुरग अवेहे आंवदे लै जांदे जाल उडाइ। बच कच आपने वासते सिर लैंदे पाप अफार। बजर पाप न उतरनि रमातुल खड़न पतार। कौडी तुल हलाल दी नहीं दमड़ा कोट हराम। कौडी अखुट भंडार है कोट दरब न कतहू काम। जैसी चिणग अनार दी वण खंड सकल जलाइ। रंचक सिमरण प्रभु को कोटि पाप जल जाइ। पापी बहु परकार के उत्तम मधम जान। हतिआ पट परकार है मन महि लेहु पछाण। गौ ब्राहमन मारीऐ गोतरि हति कराइ। ऋण हतिआ कन्या हत्या विसवास घात अधकाइ। कोटि छिनवें पाप सम हत्या एक कहाइ। पट हतिआ के तुल है गुर ते सिख फिर जाइ। विसास घात इक कोट सस हते माई अर बाप। और हतिआ सभ उत्तर इस हतिआ नहीं जात। कोट पाप के तुल्ल है अकृत घन नर जोइ। महां पातकी जाणीऐ जो रवे पराई नार। सभे पाप इकत्तर कर जेते वरतन लोइ। अदिसटि वीचारे देखके सभ पाप चड़े सिर सोइ। साइयां निंदक ना मरे जीवै बरस अपार। सभ पापी दा फोड़िआ निंदक के सिर भार। पढ़न कुरान पुरान बहु भेद न पावै कोइ। चार कतेबां बेद चार पढ़ गुण चले रोई। मुल्लां बांग नमाज कर अहिनिसि करहि पुकार। खलकत कूक सुणाइंदे लहे न आपन सार। पढ़िआ न पावे भेद किहु बुझिआ सोई पाइ। जिन बुझिआ तिन सूझिआ साचा इकु खुदाइ। मोटी पगड़ी बंन के लम्मा शमला खोल्ह। लुकमा खावन रिश्वती कहन दरोगी बोल। छडन राह किताब दा पढ़न राह शैतान। दुनीयां दोज़क जल मरण किआमत होइ हराम। लख चौरासी उमती सिरजी आप अलाह। गूना गून उपाइके कीती असु फेर सलाह। इको पाक खुदाह है सिर शाहां पातशाह। जिनां वजीरे राज है अगम बेअंत अथाह। दूजी कुदरति साजके कीती आदम रूप। कौन हैबान नबात है त्रै सिर तीनों के भूप। खासे बंदे कुदरती सिरजे खुद करतार। सिफत करन किताब पढ़ सभ उपर सिरदार। इकदू आदम लख कर लखों

लख असंख! ईक जुमा रुह इक राह शैतान बेअंत। सभना राहीं इक रब कुदरत कई रसूल। इको इक खुदाइ नूं मन्ने पवै कबूल। बंदे इक खुदाइ दे हिन्दु मुसलमान। दावा राम रसूल कर लड़दे बेईमान। जोरां कुफर हराम है किसे न करहु रंजूल। जेती दुनीआं बंदगी दरगह पवे कबूल। खासा जुसा आदमी चुणिआं सभनां माहि। देवे खबर खुदाइ दी बेद कतेब सुनाइ। दावा छडो मोमनो दरगह पवो कबूल। चार कतेबां हिन्दूआं चारे करे रसूल। इको नूर खुदाई है इको आदम रूह। जान बूझ दावा करहि पवहि कुफर के खूह। इको पाक खुदाइ है इको तसबी हाथ। मणके इकसे रंग कुफर दिखाया लाख। जीवतिआ मारहि जीअ कउ तिह पर छुरी हराम। मार मुरदिआं पाक हलाक है कुठी स्वा कलाम। जिसनो कोई मारसी सो भी मारन हार। किआमती लेखा निबड़े छुटे किव न यार। इकस आदमी बाहरी सभे शई हलाल। रब्ब रजाई जे मरहि तिन पर कही कलाम। जितनी उम्मत रब्ब दी अरबानासर माहि। कान हैवान नबात है चौथा इनस कहाइ। सभना इको रूह है पंज तन पाक खुदाइ। बाझ अलाह दी बंदगी पहिरे खाई गुनाहि। काइम दाइम कुदरती इक उपाइ अलाह। चौपड़ बाजी खलक दी फिर आवै जाइ।

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा ॥

रुकनल आखै नानका सच्च कतेब कुरान। त्रै कतेब मनसूख है चौथा मन फुरकान। हुकम न चलैं त्रैहां दा मंनन मुसलमान। एका एकी होइ रहै साबत रख ईमान।

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

नानक आखे रुकनदीन पढ़ के देख किताब। चार कितेबां चार जुग सभ मजहब विच आप। चार कितेबां चहु जुगी कैंहदे आद जुगाद। त्रै रचीयां तुहि रुकन दीन तिसते लगहि अज़ाब। मंन अलह दे कौल नों

मंन कतेबां चार। अरबा नासर मंन तू जो चार अलह दे यार। चार कौल खुदाइ दे चारों मजहब एक। चौहां विच खुदाइ है एका एकी वेख। ब्राह्मण क्षत्री वैद शूदर चारों वरन पछाण। आपो आपणी नौबती चल जाइ नीमान। चारे जागे चहु जुगी चौहां चलाए राह। चारे वेख जहान विच रख ईमान खुदाइ। खुदी ने किसै मेटीआ करदे खिचोताण। आड़ा गोड़ा नित करहि हिन्दू मुसलमान । कादर किने न देखया कुदरति गरब गुमान। दावे उते लड़ मरहि पढ़न कुरान पुरान। केते लख पेगंबरां उंमत लख अलोइ। कलमा इक खुदाइ है दूजी दरोग बगोइ। वाहद ला शरीक है उह पाको पाक खुदाइ। नाहि नमूना जिसदा बेचगून कहाई। किसे नाल ना बोलदा दूआ न होइ। नानक आखे रुकन दीन अलह यार न कोइ। चारों यार खुदाइ दे अरबा नासर भाल। बादी आबी आतशी खाक निमाणी नाल। पंजवां रूह मिलायके होइ पंज तन पाक। चहु ते बाहर जो रहै तिनां कउ नापाक। इकना मशरक थापया इकनां मंनिआ गरूब। इक जनूब मनाइदे रही शमाल दरूद। त्रैये कुंडां भालीए त्रैये सोधे भेद। तौरेन अंजील जंबूर है त्रै पढ़ सुण डिठे बेद। जिस गुण देह न पाइसी जिस कउ भईआ नसीब। नानक कलयुग तारने परगट भइआ रसीद। बेद अर्थबण बाहरे जे को कर्म करे। तिस पत गज़ब शैतान का रब्ब न ढोई देह। ना हिसे गोती तरपणों रोजा नाहि निमाज। अमलां बाहजों मोमनों दोजक दुनी अजाब। दोजक दुनीआं कारने अहिनिसि फिरहि रजूल। कर्म निमाजां बहु करै पवै न काइ कबूल। दूखी दुनी सहेड़ीए जा ईत लगहि दुख। नानक सचे नाम बिन किसे न लथी भुख। दूजी दुनियां कुफर है अंदर रखहि छपाइ। सच इसलाम खुदाइ है कूकर बांग अलाइ। कूकर ढोल वजाइ के रबाब मिरदंगां नाल। नच नच नाम पुकारदे दे दे पूरहि ताल। कूकन जल्ली पाइके हिन्दु मुसलमान। रब्ब न सुणदा इक गल झख झख मुए अजान। काफरां झूठी बंदगी बुरिआई

करम निमाज। सचे मारहि झूठ पर काजी करहि अकाज। दीन गुवाया दुनी सिउ दुनी न चाली साथ। दुनियां दोजन जल मुई भई असंख नपाक। शरा शरीयत सोध के हराम हलाल पछान। करो अदालत सच की राह शरीयत मान। पाइऐ राह सरीअते करके अमल विचार। पहुंचे हक हकीकते मारफती मन मार। मन मुआ आलम मूआ चाहि अचाहि मर जाइ। हुकम पछाणो रब्ब दा सचै महिल समाइ। सच पुराना ना थीऐ नाम न मैला होइ। सचो ओरे सभ को सभ थक रही खलोइ। सुणीऐ काजी रुकनदीन पढ़ के वेख कुरान। इको राह ओह अमानती जे साबत रख ईमान। ऐथे ओथे दोहीं जग थापे दोइ जहान। ऐथे देहि ओथै लै गल्लां होर शतान। जेहा बीजे सो लुणे जो खटे सो खाइ। अमली आपो आपणी लेखै मिलै सजाइ। मिटी मुसलमान की पेड़े पई कुमार। घड़ि भांडे इटां कीआं जलदी करे पुकार। जल जल रोवे बपुड़ी झड़ झड़ पवहि अंगार। नानक जिन करते कारन कीआ सो जाणै करतार। अवल दुशमण नफस है दूजा है शैतान। तीजा दुशमण दुनी है करदी गरब गुमान। चौथा दुशमण खाब है जपण न देंदा नाम। पंजवां दुश्मन कोड़मा जिस सेती गलतान। छेवां दुशमण ताम है जिस बाझों हैरान। नानक एते वैरी हुंदे सो किओं कर रहे ईमान। साबत रखन रूह नों तउ साबत ईमान। बाझों सचे नाम दे फकड़ सभ जहान। पंज हवास खबीस हन साबत करन न दीन। रूह न कायम लै उडन अमलां बाझों हीन। साहिब का फरमाइआ लिखिआ विच किताब। बिना इबादत बंदगी होर अमल शैतान। नानक नाउ खुदाइ दा दिल हछे मुखि लेइ। अवर दिवाजे दुनी के झूटे अमल करेइ। खाकी बुत बणाईआ खाके मिलसी जाइ। जीवन खाकी होइ रहे फिर खाक न तिसे खाइ। के लै आयों मोमनो फिर तूं के लै जाइ। थौरे जीवन कारने बुरे न अमल कमाइ। नानक दुनीआ भसु रंग भसुहू भसु खाइ। भसो भस कमाईऐ भी भस भरीऐ देहि। जां

रूह विचों कढीऐ भी भसु भरिआ जाइ। अगै लेखै मंगीए होर दसूणी पाइ ॥ ८ ॥

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा ॥

आखे रुकनल नानका लिखिआ विच कुरान। आया मुहम्मद मुसतफा खासा मुसलमान। जुस्सा धरि उस पाक दा साया उस नूं मूल। माया जुसा सभनी थाई बाझों पाक रसूल। नूरी जुसा नबी दा मखी बहे न मूल। कायम रहसी किआमती माहि नबी रसूल। दुनियां अंदर आया दार कियामत माहि। कलमा पाक सुनाइआ उमतीं भिस्त कराहि ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

आखे नानक रुकनदीन नूरी इक खुदाइ। होर ना कोई होइआ जग विच तुल अलाह्। खाकी जुसा आदमी साए बिना न कोइ। जिनां साया रब्ब दा रहे निमाणे होइ। कायम नाउं कयामती जुसा रलसी खाक। नानक आया दुनी विच मुखो अलाया ताक। कलमा इको रब्ब है दूजा रिहा न कोइ। सिफती कई मुहम्मदी चले सभे राइ। कायम देह न रखीआ जग विच किसे न मूल। पढ़ना गुढ़ना रह गया घेरे दुनी नपाक। रूह विच दोजक जल मुआ जलत पुकारे खाक। जीवन रद्धे आतशे दोज़क धरिआ नाउं। दोजक दुनियां बँदगी जिउं अगनी झलूठे काउं। राखन जुसा पाक बहु अंदरों मेल न जाई। बाझ निताड़े किरबती बाझ इबादत नाहि। चार कतेबी इक है चारों काल खुदाइ। चारों कदम सबद दे काजी दिल विच लाइ। अव्वल दुनी मुसलमी दूजी खराइत जान। तीजी नीयत रास कर हराम इलाल पछान। चौधा होइ महिमान रहु जनम मँरन भौ डार। होत सबाब मुसलमी जलदी उम्मत तार। चार वर्ण मजहब। इको नर खुदाइ। दूजा होया न होइगा नानक सचा अलाइ। नानक आखे रुकनदीन सचा सुनहु जवाब। चारों कुंट सलाम कर तां तुहि होइ सवाब।

खालक आदम सिरजिआ आलम वडा कबीर। काइम दाइम कुदरती सिर पीरां दे पीर। तिस विच आलम बहुत है आवे जाइ अनंत। आलम वडा सलामती कोइ न जाणौ अंत। आफताब महिताब दुइ ईह आदत के नेत। एनां बाझ न सुझई नानक कहे बिदेक। चरख फिरे असमान विच रैन दिवस के माहि। सभो फिरतिआं उम्मती लख चौरासी आहि। सयदे करे खुदाइ नूं आलम वडा कबीर। निउदा चारे कुंट को जानण पीर फकीर। काइम कुरसी अरश हैं कुतब सतारा एक। तूं भी कायम रुकनदीन जे सभ महि जाणहि एक। वेख तौरेत अंजील नूं जंबूरे फुरकान। एहो चार कतेब इन पढ़ के वेद कुरान। झूठी रस्म कतेब दी करहु न कोइ कबूल। ऐसी कहनी जो रहै साईं पाक रसूल। खावन कसम कुरान दी कारन दुना हराम। आतश अंदर साड़ीयन आखे नबी कलाम॥

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा॥

सुनहु नानक पीर जी आखे रुकनदीन। आया मुहम्मद मुस्तफा साबत करन यकीन। साबत कीतो सु दीन नो पढ़ कर कलमा पाक। काफर साबत न थीए विच आतश जलन नापाक। हूरां परीआं भिसत ए होइ न उह महमूर। पौसन दोज़क हावीए सुणसी नबी न धरूम। करन मुसलमानी पाक है पढ़न कतेब कुरान। नमाजा रोजड़े दोकज तिनां हराम॥ ११॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

आखी नानक रुकनदीन सच्चे सुनहु जुवाब। कई मुहम्मद मुस्तफा मोइ विच अजाब। साबत दीन न कर सकिआ मर मर होइ खाक। खाकू फेर जलाया घड़ घड़ पांडे पाक। इकना दुध समाईए इकना विच पेशाब। गूना गून निआमतीं कई इलामत साज। मिटी मुसलमान दी विच आतश लए अजाब। कलमा रिहा किनारड़े जल बल होए खाक। आतश बाझ

सुधारे केते नबी रसूल। जलदे दोजक हावीए तोबा न पवे कबूल। किथे निमाजां रोजड़े किथे सु भिस्तां दूर। किथे से पढ़न कुरानड़े जल बल होए धूर। अगे न मुसलम नबी काफर नाहि दिसंन। जलदे दिसन दोजके खाकू विच मिलंन। खुदी तकब्बरी कर मुए साबत भया न दीन। दुनियां दोजक जल मरन से क्यों कर करे यकीन। लिखया दर दरगाह दे इकस बाझ न कोई। केते लख मुहम्मदी लहिने न ऊना सोइ। रोंदी डिठी ऐमना वाइ मुहम्मद बाइ। बाझ मुहम्मद मुस्तफा रोवे हाइ हाइ। आई अंदर खावदे डिटीअन दरगह नूर। दिस आयो मुस्तफा रोइ रोइ भई मनूर। कीता सु फेर अवाजड़ा हाई मुहंमद हाइी मैंनू देह जुवाब कोई रोवे करे कहाइ। केते लख मुहम्मद अगों उटे पुकार। केहड़ा पुछदी मुस्तफा फिरहि असंख अपार। ओड़क अंत पाई है केते जबराईल। सभी अंदर हुकम दे के मेकाईल कई असंख फरेशते मलकुल मौत बेअंत। तरसन सच्च अलाई। ते राखस जिम्न असंख। डिटोसु एह मुशाहदा होइ रही हैरान। एथे कोइ न जानदा दुनियां फ़ानी जहान। रूहां बिरसन दिसनी दोजक दिसे न कोई। जीवदिआं दी साहिबी मोईयां खबर न होइ। मोए खाकू संग मिले अरबा नासर माहि। सो भी फेर जमाइओन गूना गून रकाहि। कूड़ा दावा रहि गिआ बाद मेरे संसार। हिन्दू मुसलमान दुइ जल बल होइ छार। दूजा आखन शक्क है ना को होआ न होइ। ईको पाक खुदाइ है रवि रिहा सभ लोइ। नहीं मुहम्मद मुस्तफा नाहीं को औतार। नहीं पीर पैकंबर औलीऐ गौस कुतब सलार। जीवदिआं सभ दिस्सनी मोईआं दिसे न कोइ। नानक बाजी कूड़ दी आखर कूड़ी होई। इह सभ जुसे खाक दे धरती अते असमान। चौदह तबक ना रहिसनी आखर फानी जान। बादी आबी आतशी चौथी खाकीं नाल। मर मर फिर उपजनी जी जंत बस काल। एह सभ बंदे हुकम दे हुकमी आवन जान। हुकम ना बुझन नानका खप खप मरन अजान॥

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा॥

आखी रुकनल नानका लिखया विच कुवाल। चौदह तबक जहान विच जिमी अते असमान। तिस विच नूर मुहम्मदी रोशन बले चराग। जिती उम्मत नबी दी तिनां दोज़क आंच न लाग। रहे कुराबी बाहरे तिनां नबी भरे सफात। उह पाकां विच न लखीअनि रहे सदा नापाक॥ १३ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

नानक आखी रुकनदीन सचा सुनो स्वाल। अस्मानां अस्मान लख पातालां पाताल। केते नूर मुहंमदी रोशन बले चराग। जो लोड़दे दुनीयां पावड़े विच सड़दे दोज़क आग। गूना गून कुनारवे गूना गून रसूला गूना गूनी उमती बहि वहि करन रसूल। नूर मुहंमद केंतड़े पीर मुहंमद लख। लख मुहंमद मुस्तफा बिच होत अख फरख। नावां थाव न गिन सकां डिठे नबी रसूल। मजहब कहै असंख लख गिणे न जाही मूल। मक्के डिठे कई लख लख मदीने नाल। हाजी कई असंख लख गूना गून संभाल। बेद विआस असंख लख करदे वेद बीचार। ईकसे इकसे तबक विच कई असंख औतार। लख असंखां तबक विच केतड़या अवतार। पीर पैकंबर केतड़े गौस सालार। फिर तबक असमान विच चशमो देख पसार। उथे पैगंबर कई लख कई लख असंख औतार। फिरदे रैंहदे रोज भी हुकम अल्ला दे नाल। असंख औतार पैगंबरां फिरदे हेठ पताल। रुकनल काजी केतड़े मोन दीन मादार। हजरत पीरां केतड़े पीरां दे सरदार शाह। शहीदां केतड़े सरवर अंत न पार। उमर खताब अबूब कर शेर अली अपार। डिठे अलख असमान में चारे यार असंख। नानक अंत न जापनी अलख अपार बेअंत। कई असंख अमाम है शाह शहाब अनेक। सभनां के सिर ईक रब अलख अपार अलेख। नारद सारद केतड़े

विश्वा मित्र वसिष्ट। कई मछंदर गोरखा कई असंख सरिष्ट। चर्पट भरथर केतड़े ईशर गोपी चंद। दत्त त्रिया असंख हैं केते रामानंद। सिध चौरासी मंडलीयां फिरदीयां लख अपार। इह सभे सनमुख हैं बाझहु लख अपार। बेद कतेबां केतड़े बहि बहि करन विचार। गूना गून नसीहतां गूना गून कतार। गूना गून पैकंबरां गूना गून कुरान। रसालड़े गूना गून कलाम। कलजुग नानक निर्मला पंथ चलाया आइ। वेद कतेबां बाहिरा इको जात खुदाइ। टिबे टोए दुनी तों कीते ढाह मैदान। कीता है मनमूख सभ सच रच चौगान॥ ४॥

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा॥

आखी रुकनल नानका तुध विच वड करामात। कीते ने मनमूख सभ बाझों अलाह पाक। जिती परदे दुनी दे डिठे नी सभी उपाई। कोइ न किसे जाणसी बाझों पाक अलाइ। बिनां खलीफे मुरशदे कोई न पवै कबूल। बिना अमाम पैकंबरां बाझों यार रसूल। उमती थाईं न पावनी बिना रसूख खुदाइ। लिखिआ विच कुरान दे जबराईल गुवाहि।

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

आखी नानक रुकनदीन ईको पाक खुदाई। दूजी कुदरत कूड़ है अलह आप गुआहि। जिचर कूड़ न बुझिआ सिर पर मुरशद थाप। महिरम होइ कलाम दा खुदी उठावहु ताप। करो पनाह खुदाई दी उम्मत दी छड आस। अमली आपो आपणी नेकी हो किसास। अमली आपो आपणी सिर सिर होइ हिसाब। आपे नबी रसूल है आपे है इसहाब। सभ वडिआईयां रब्ब हथ देकर फेर खस लेइ। दुनीयां कारण उम्मती बहि बहि मेल करेइ। दुनीयां दरोगी वाह मैं खातर ते कर दूर। मत्था रख जमीन पर खातर रख हजूर। एका एकी दोइ रहू दूजा संग निवारि। दूजा संग कुसंग है फानी एह संसार। दुनी वलेवे कारणे हारण अपना

दीन। छोडा तकब्बर खुदी को पकड़े पाकजमीन। पंच नसीहत हाजीआं नानक कहे फकीर। जो राह शैतानी गुमचिए तिनां गलीं जंजीर। आवहि जाहि भवाईहि दोजक लहै सजाइ। लिखिआ विच किताब दे आखया पाक खुदाइ। ना सै नदी नड़िनवें मिलन समुंदर जाइ। सत समुंदर अवेहिआ नदियां अंत न पाइ। पौदे विच खड़ाड़ादे बूंद जिवें तिपताउ। बलन तले तिनां दीआं हडीआं जो बेअदलां पातशाह। काजी मुफती कराकुन फौजदार कुटवाल। उमरे ते दीवान वजीर अमीर नाल। बखशीए बूता थीए नाले फतेदार दारोगे मुस्तोफिआं करदे कूड़ वापार। वाटां पाड़े चौधरी महिर मुकदम कूड़े। चौंकदार पिआदिआं जल बल होइ धूड़। कुटनीआं हरामीआं जो घरीं बिगानी जान। वेसवा अते गसतीआं अहिनिसि करहि हराम। चोरां यारां चोगलां खान ला इतबार। लून हरामी विश्वासघात दरगह होई खुवार। चढ़न पराई वेलड़ीं कतीं सेज वछाइ। सरपर दोजक पावसन लहसन बहुत सजाइ। राहदार जगातीआं लेखा लिखन आहि। दुइ दुई जोरां वालीआं पर घर हंडन आइ। सरपर ओना वजना टोसा इतण आहि। चमे दे दुइ छावड़े पत्थर का कर सेर। चंगा कर बहालीए मुहि पराए ढेर। करन हराम हरामखोर तिनां हड जलाइ। खावन कावन मास तिह खस माल बिगाना खाइ। जलदे दोजकु हाविए जो देन गुवाही कूड़। घुट लघावन दुख तरां जलदे डिठे पूर। सुनहु काजी रुकनदीन पंध नसीहत लेइ। छडहु राह सितान दा सच्च हकीकत एह। बाझ अलाह दी बंदगी छडहु अमल विकार। दरगहि गइआ जाणिअहि एह नानक असार। करहु मुशकल जुहद दी रीस अठावहु भारु। नख सिख पवै पसीनड़ा सेई करहु अहारु। दसवां हिस्सा वंड के राह खुदाइ देहु। पावहि राह बहिश्त दा राह हकीकत एहु। पाणी पखा पीसणा धोवहु कदम पखार। करहु वडाई दभ दी लज़्ज़त सभ विसार। सभे लज़्ज़त रोग हैन देही नूं पीड़ेन। ईख जिवें रस निकले बहुत

सजाई देन। जवां दी खाई रोटड़ी लान न नाल रलाइ। टंडा पाणी पी के सच्चा रब ध्याई। छडो सभे निआमतीं किआमत नूं कर याद। जुसा उडसी रूइं जिउं पा लिया मिठा सुवाद। खाधा पीता निकले जिऊं तिल घाणी तेल। रस कस खाने बहु घणे संग कुंसगे बेल। ओड़ निबाहे कोइ न जीवदियां मर मार। दुनीयां खोटी रासड़ी मनहु चितहु विसार। सुखां नूं ढूढेंदिआं दुखड़े हडु पए। डुखे डुख विहांवदा मुखड़े नल गए॥ १६ ॥

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा॥

रुकनल आखे नानका लिखिया विच कुरान। वालह निकी पुरसलात खन्निहु त्रिखी जान। उथै टिकै न भण हण टहिर न सकनि पैर। मुशकल तिनां लंघणा जिनीं कमाए वैर। साइर लोहु पूंइंदा अगनि जलै भड़काइ। कंधी दिस न आवई धाही पवै कहाइ। ओथे बेली मुहंमद मुस्तफा उमत पार लंघाई। काफर पार न जाइनी तपण ते बिललाइ। जिना कलाम न जाणीऐ रूड़ पुनारन हाइ। तिनां बेली ने होवै मुस्तफा लए न फेरि छुडाइ। भरे सफात जा तिनां दी दरगाह दे हजूर। बेईमान कसूमती नित कमावन कूर॥ १७ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

नानक आखै रुकनदीन मुख ते समझ अलाइ। जिथै साइर आतसी नेबे बहुत सलाइ। कई मुहंमद मुस्तफा खड़े लंघावन पूर। गूना ऊमती कई सच्च कई कूर। पूछन बिना जगातिये जिनां कीते बहुत अजाब। कई मुहाणे मुस्तफा सकहि न देहि जवाब। नेकी बदी वीचारीए मलकुल मौत हजूर। कट उसारे पुरसलात जल थल होवत धूर। मूंह ते कलमा आख के दुई दरोग मिटाइ। अगे मुहम्मद मुसतफा सके न तिनां छडाइ। शायर दे मर जींवदे बेड़ीयां दे मलाह। जलन उनां दी उमती विच शायर अगर अथाह। बे पीरों बे मुरशदां ढोई कोइ न देह। राहे विच फरिशते

माल जगाती लेइ। बदीयां तुल्ल न नेकीआं मीजां करन हिसाब। बाकी जिनां देवनी होवन सेइ खराब। ओहु फिर खाकू नाल मिलाइन जमन होइ कपाहि। चुण चुण कढीअन खूटीआं मिले सजाई। वेलने वेल विलाइऐ फिर पिजन पीड़ा खाई। कतन कत कताइए तंदू खैंच कढाई। फिर अगनी खुंभ चढ़ाईऐ मुंगली दब्ब कुटाइ। कतरण कैंची कटीऐ सूई जोड़े सिवाइ। पहिर होइ कजाईऐ फिर तिस मैलू खाइ होइ पुराना सुटीऐ अढन मूल विकाह। करन सलाम समालची आतश नाल जलाइ। जल बल होवै खाकड़ी तपै ते बिललाइ। सदो मुहंमद मुस्तफा लए कपासि छडाइ। इक कपाह दो जून विच एतो मिले सजाइ। पेड़े पाई पोड़ाईऐ कढीऐ घाणी तेल। वटा वट कपाह दी दीवे अंदर तेल। इका मिटी त्रिहां दी हउं जलदे मुसलमान। जल बल रोवन बपुड़े फिर कोइ न पुछन आन। इक जोनों जो कडिआ तिल होइ जंमिआ सोइ। तेली पीड़ीऐ घाणीऐ दे दे रब्बां रोई। दीवे पाइ जलाइऐ जल बल माटी होई। सदो मुहंमद मुस्तफा तिसे सुणाई रोइ। तिल दी जोनों कढिआ फिर जंमिआ होइ कसाद। टोटे भन्न पिराईऐ लैंदा बहुत अजाब। इख जिवें रस कढीऐ पवै कराहे माहि। दे दे पाउ पाउ पकाईऐ शक्कर खंड कराइ। खाधिआं होने कुवति फेर न छोंहदा कोइ। सदो मुहम्मद मुस्तफा तिसे सुनाइ रोइ। केती जोन अवेहीआ गिनती गिनी न जाइ। फिर चौरासी भौदिआं बहुती लहै सजाई। मर मर जम्मन फेर फिरि जूनी भवहि असंख। सुख दुख बहुत कमांवदे गणत न गणे बेअंत। सुणे न राम रसूल को रूहां दी फरियाद। दुनियां अंदर आइके उमर गंवाई वाद। कूरी मजलस बैठ के कीतो सु कूड़ व्यापार। जा फिर उठी चलिआ लद अथरबण भार। बन्न चलाया अजराईल साथी संग न कोइ। लए सजाई अगलीयां किसे सुनाये रोइ। मिलन सजाई अगलीयां किसे सुनाइ रोइ। मिलन सजाई बहुतीआं मल कुल मौत हजूर। लेखा मंगन चित्र गुप्त जो छि कमाए धूर। नासा लोइन मुकरे तोबह करन पुकार। देवन कन्न उगाहीयां अन्ना रुह बकार। आलत

जिहवा मुकरे चख साद बिकार। देवन कन्न उगाहीयां अन्न रूह बकार। आलत जिहवा मुकरे चख साद बिकार। हथां पैरां चाकरी हुकम कमावन कार। पंज हवास बखोल संग तोबा करन पुकार। असीं बंदे हुकम दे हुकम कमावन कार। रूह करन बद फेल बहु रख पनाह रसूल। लगी मिलन सजाइ जब गये सभे भूल। राम रसूल न दिसनी लवन रूह छुडाइ। सच जो साथी सभस दा मूल न पल्ले पाई। सच सरंदा पातशाह आदि जुगादि सोइ। हैसी होसी सच है अवर न दूजा कोइ। दूजी कार विकार है पूरी किसे न पाई। नानक आखे रूकनदीन सचा इक खुदाइ। मोयां जीवदयां संग सदा सांई सांई सचा सोई। सचे बाहर जोर है सो अत्ती चले रोई। दरगाह जात न जोर है अबे तदे नहीं होइ। सचो सच निआउं हैं करता करे सो होइ। नानक मुरशद सच है देवे सच मिलाई। सचे मुरशद बहिरा भंभला भूसे खाइ। मरदे मुसलमान होइ रखन कबर बनाई। सै बरसां होई खाकड़ी खाकू में मिल जाइ। फिर पौंदी बस कुम्हार दे भांडे घड़ बनाइ। ईटां घड़े बनाइके आवे देन चढ़ाई। खावन अग नित भट दी जल बल करन कहाइ। जल बन रोवन बपुरे लोकां किआ परवाहि। मरे विचारा हिंदड़ विच अगनी देन जलाइ। जलबल होवे भस्मड़ी पौणा पवे उडाई। पढ़के देख कुरान विच सानू वडी कि सजाई। होइ काफर दोजकी जो बहुते खांदो ताई। पहिला आतश सिउं जले फिर तिनां जलाए कौन। खाक समाणी खाक सिउं पौण समानी पौण। आब समाणा आब सिउं अरबा नसार पाक। कियामत वेर उठाइऐ रहे निराणी खाक। जित कीती खाहिशा फिर ले उटिआ नालि। कीता आपणा भोगना फिर पाया जंजाल। खेले लख चौरासियां धर घर रूप अनेक। रंग तमाशे खेल के अंत एक का एक। मिट्टी विच बैठाईऐ खासे मुसलमान। जोगी ते सनियासीयां षट दर्शन हिन्दुवान। पहिले खा कूसंग मैलन फिर गंदे होए खबीर। धरती दे विच पीड़िया होवन बहुत जहीर। इकदू रूओं लाख होन धर धर कीड़े रूप। मर मर खाकू संग मिलन कर

कर रंग करूप। सवरिआं विच शाक होण सहि सहि वडे कजाब। फिर पौंदे वस कुलाल दे भांडे घड़े शताब। भांडे इटां बहुत विधि जलन पजांवी साल। जल जल करदे हाय हाय कोई न पूछे हाल। यार मुहमदी जेतड़े फातया देण दहाई। जलदे विच पंजाबीआं कोई न कढे आई। दुनीआं दीयां वडिआईयां रहीयां दुनियां माहि। वाहि वाहि यार मुहम्दी तर तर लुकने काई जीवदियां भोजन बहिशत विच फिर मुईआं लैन न सार। जलदे विच खजाबियां जल बल होइ अंगार। भांडे ईटां पकाइके कढे फेर कुलाल। गुना गुनी भांडड़े पकन काले साल। फिर उतरन जाई बजाइ विच कसीरा मुल्ल। अमली आपो आपनी पए सै गइएं रुल्ल। इकना पवन नियामतीं इकनां पवे पिशाब। अमली आपो अपनी लहण अजाब सबाब। सुनहु काजी रुकनदीन नानक कहे जुवाब। साहिब दा फुरमाया लिखिया विच किताब॥

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा॥

आखी काजी रुकन दीन सुनहु नानक पीर। अरबा नासर कैत भित उपजी कर तदबीर। क्यों कर उपजीयां नियामतां एह भी देह बताई। इक तां जानन फरक कुछ इक बुझे आप खुदाइ। होर न कोई जाण है गैबी सिर खुआइ। पुछे पंडित जोतषी काजी ते उलमाई। खातर निशा न को करे कर थके बहुत तदबीर। बिना फकीर सादके कोइ न कटे जंजीर।

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

सुणहु काजी रुकनदीन कैंहदे आदल फकीर। सुणिऐ सच सदेसड़ा जो बुझ न सकन पीर। मुल्लां बुझ न सकना पढ़हि कुरान कतेब। पंडित भेद न पावनि पढ़ सुण चारों बेद। बेद कतेबां बाहरा कहिन फकीर सुणाद। एह हकीकत गैब दी जाणै आप खुदाई। रखी पोशीदा गीशड़े

रोइ न पावै भेद। पए विरोलण पाणीऐ कथ सुण बेद कतेब। उत्पति प्रलय खलक दी नानक कहे फकीर। सुणो हकीकत सच दी करके बहुत तदबीर। खाणी चार उपाईयां चारों बाणी नाल। सेतज अंडज उतभुजां चौथी जेरज नाल। पाणी उपजया सेतजों सब जीआं का जीउ॥ सेतज ते अंडज भई अंडियों धरती कीउ। भए पदाइश धरतीओं आंडे भए गलीज। तांते उपजे अन्न बहु अन्नह जेरज कीन। उपजी चारों खाण तब लख चुरासी फेर। गुना गुन पदाइशी जीआ जोनी फेर। सभनां दे सिरताज कर साजिआ आदम आप। सभे सेई पछाणदा जाण पाक न पाक। जाणे जीअ जात सभ लिखे बेद कतेब। इक आदम ते लख भय बहुबिधि कीत भेद। जाती जिनसी बहुत बिध बहुबिधि रखे नाव। बहुबिधि बेद कतेबड़े गए असंखा भाव। दानों देवां नागरिक राक्षस भूत पिशाब। शिव शक्ति कई असंख कर खलक जपै तिह जाप। एह सब खाके ते भये फिर खाकू माहि समात। खाकसु बीरज खलक दा उपजै ते खप जाहि। दाणा एक गडाइऐ खाकू नाल मिलाई। होई न पैदा खाक विच नाव नशान काई। इक ते दाणे लख होई आब खाक दे जीअ। ऐसी कुदरत रब्ब दी अजब पैदाइश कीए। खलक खपावन कारणे फिरके रचे अनेक। दावा करके लड़ मरहि भूले अबेक बिबेक। साहिब दाव बाहरा सबना दे सिर पीर। दावै अंदरि जोर है होइ अंत जहीर। दावा छडो मोमनों मिलहु सु खाकू नाल। कायम होवै जुसड़ा छुटन काल जंजाल। जीवदियां खाकू संग मिले फिर खाक न तिसै खाइ। कायम तिसदा जुसड़ा मरे न आवै जाइ। बाझों कायम जुसड़े होइ न मुसलमान। फिर फिर अगन जलावई कायम पिया वस शैतान। कायम जुसा न चलै होइ जे काईम धात। सके अग्न जलाई तिस नित नित वधदी जात। सोइना काइम धात वच सके न अग्न जलाई। धरती विच दबाइऐ फिर खाक न सके खाई। धात सोहने बाहरी जावे धरती जल बल होवन

खाकड़ी फिर खाकू संग मिल जाई। मर मर जंमन मुनाफकां कुफर तिनां दे चित। जोनहु जोन भवाइनी मर मर जंमन नित। सुनहु काजी रुकनदीन पढ़के तृख किताब। मुझे बिना बिबेकड़े लगन बहुत अजीब।

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा ॥

रुकनल आखे नानका देवहु सच निशान। गौ सूअर दी हद्द है हिन्दू मुसलमान। हिन्दू गौ न खावणी तुरक न खावन सूर। दोवां दावा पकड़या सचु लिखया कि कूड़। इह क्यों रद्दे आप विच होई चोर जहान। रुकनल आखे नानका मुशकल करहु आसान॥ २२ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

नानक आखे रुकनदीन लिखिया विच किताब। गौ सूअर नों मारियां लगन बहुत अजीब। गौ चौदवां रतन है कामधेनु तिह नाम। पूजन सब अवतार तिह करके मात समान। शीर जिनां दे पीवीऐ तिस मारिया बहुत गुनाह। नानक आखे रुकनदीन बहु भुखियां होई पनाह। सूर बैराहों उपजयां तिस पूजन कर अवतार। सब पैकंबरां छडिआ कर हराम अहार। त्रुटिआं रोमां गौ दीयां दुध सिउ मिलिआ जु खाइ। जा रसातल वास लैन जोन सर्प की पाई। पुणे बिनां दुध गौ दा खाधिआं गया पताल। जे गौ सूअर मास खान तिनां वडे जंजाल। जो जीयां मार गवाइन तिन से माल हलाल। जो मुए फेर जीवन नहीं फिर मंगण मास संभाल। गौ सूअर हंराम कर दोनों दिस इटाई। इकना दुध हलाल है मास नापाक कराई। महिरम राह दुहां दा दरगाह सिझे सोई। काफर जलदे कुफर विच जिनां पछाते दोई।

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा ॥

रुकनल आखे नानका सचा देह जवाब। दरगह तिना कौन हाल

जो पीव भंग शराब। पीवन पियाले बदअमल खावन नाल कबाब। भंगी अफीमी पोस्ती छकन उलम नापाक। खान मजूनां कतलीयां नाल अफीम मिलाई। करदे इशक हराम पर नारी कंठ लगाइ। मुहन बगाने माल नूं ताइफे भंड नचाइ। दमड़ा लैना हराम दा देन हरामे जाई। जूऐ खेलन कुमार बाज दमड़े करदे ढेर। पंजे ऐब जुआरीए चित दा फिरका फेर। जैसा वहिण समुंद्र दा गया न आबे घट। रुकनल आखे नानका इह फिरै कित बत। सुझन नाहीं अजराईल देंदा बहुत सजाई। देह खबर दरगाह दी सची मुखहु अलाई। हाल तिनां की होयेगा जो पीवन अमल विकार। सच सुनेहा सोफीआं इह भी करो विचार। तां हौं मन्नीं नानका कल विच अवर फकीर। करके अमल बिकार जो कर सची तदबीर। सिफत सुणिउं सोफीआं जो पीवन पियाले सच। रहिन खुमार रात दिन मनहु दुयागन कच। आखे रुकनल नानका सच गवाई देही। अमली रुकन सोफियां सोफी अमल रदेह। झगड़ा निबड़े दोहां दा इक कड़ा कर लाखई। लिखया विच कतेब जो सोई मुखहु अलाई।

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

नानक आखे रुकनदीन लिखया विच किताब। दरगाह अंदर मारीअन जो पींदे भंग शराब। चरस अफीमी पोस्ती चिलमां छिकन पिशाब। खान मजूनां कतलीयां सीखीं लाई कबाब। पींदे भंग त्रकाइके जहूरी नाल रलाई। दुनियां मानन मस्तीआं दरगहि लैन सजाई। जिउ तिल घाणी पीड़ीअन दुहां जहानां माहि। रमन पराईयां औरतां तपत थम्म गल जाई। सिक्का घाल सहंस मन मुंही तिनां दी पाईं जो अमल बिकारी संग करे तिनां मिले सजाई। दुही जहानी जरद रोई रहिंदे सदा खुआर। सोफी खासे मजलसी तिने सचु खुआर। चोर हरामी कुमार बाज इनां पीड़न घाणी पाइ। मुखहु पुकारन हाय हाय अगों सुनिये नाहीं काइ।

बाझों रोटी पाणिये होर न खाने खान। करन अल्लाह दी बंदगी साबत रख ईमान। पीन विकारी अमल नूं दरगाह लहन न ढोइ। मुख तिनां दे किरतबी बात न पुछै कोइ। नानक आखे रुकनदीन सचा इह जवाब। जो दरगह अंदर वरतदा लिखिया विच किताब। बांझ अलाह दी बंदगी गल्लां होर शैतान।

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा॥

रुकनल आखे नानका सच सुनहु बात। क्यों आवन आदमी कान हैवान न बात। फिर फिर मिलदे नाल रूह किथे जाइ समाइ। गैबी खबर खुदाई दी देवण फकर सुणाई। कर तदबीरां लिखिया बेद कतेब बनाई। गैबी खबर खुदाइ दी कोइ न मुखों अलाइ। घत जंजीरां मारदे काजी ते उलमाइ। जेको सच्च अलाइदा तिस आतश देन जलाइ। हिन्दू मुसलमान दुइ सच्च न कहिण सुनाइ। दोवें दोज़क पौसनी लैसन बहुत सजाइ। दोजक भिसत किताब विच पढ़ कर खलक सुनाइ। मोया फ़ेर न आया जो खबरां देवै आइ। पीर पैगंबर औलीऐ तिनां सिर की हाल बिहाइ। दबे पए जमीन विच कई लखां जुग बिताइ। फेर की सूरत तिनां दी डिठी किसे न मूल। ईसा मूसा इबराहीम होर केते नबी रसूल। फेर न डिटीआं सूरतां रहे न तिनां दे नाम। रहे न उमरे पातशाहि जिनां वसाइ गांव। खाक सेती मिले कई वजीर पातशाहि। रहत अंत न पाईऐ अगम बेअंत अथाहि। इक पास रहि पातशाह दे इक वजीर सिर होइ। इतनीआं उम्मती पैगंबरां अंत नाही कोइ। खतरा मनहु उतरे बिना फकीर अलाहि। खबर सुनाइ अजगैब दी संसार मनहु चुकाई।

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

नानक आखे रुकनदीन सच सुनावहु बात। मर कर मिलदे खाक नाल फिर होई जम्मद घाह। गुना गुनी बूटियां सुरखी सबज सियाह।

नीलीयां पीलियां चिटीयां चीर गुलाबी वन। भार अठारां बनसपत बहु मेवे बहु अन्न। खाना हैवाना आदमी पाई परिंदे लख। होवन तोहफ बूटियां मरि फिर जंमन वत्त। आवा गौण न मिटई ज्यों वहिंदे दरिया। इतनी खबर अज गबदी देन फकीर सुनाइ। इह सुन वात खलक दी बहुत वधाइन वैर। दाना पानी खाइके रखन डिगे पैर। खाक सब पुतले खसमे दे हथ कल। मरना चित न आवहि चसे मरे के पल। जीआं खावन जीआं को जीआं जी अहार। आपो आपने खल कर इह तके व्यवहार। सुनिये काजी रुकनदीन नानक कहे फकीर। इको राह मुरीद दा इको सिर पर पीर। इक पैगंबर दुनी विच फिरका भी इक होई। ऐथे दीन अगनित है न पार लघाइ कोइ। राज जिनां दा दुनी विच सिक्का तिनां दा होइ। जबरां लगन अनेक बिधि हुकम न मानै कोई। इको राह दरगाह इक इको छत्र अटल। इको जरब जहान विच नानक राज अचल। मशरक अते मगरबों और जनून शुमाल। दरगण देखन आउगी उमती अंत न भाल। सत्तर जामे दुनी विच रखे बकाई फेर। मज़हब न जाणे देसणी रखसन उम्मत घेर। नानक दर्शन कली विच होर न दर्शन भाल। जुग जुग दर्शन निउतनां नानक शाह कताल। चादर पाई दरगाह ते नानक शाह फकीर। तले बहे घराणा इसदा सो कदे न होइ जहीर। जे हे आवै चलके बहे चादर हेट। कली काल बेताल दी तिसहि न लागे फेट। घ्यो मैदा खंड शकरां माखिउं माझे दुध। खीर खंड मिटाईयां रब सव कुछ दिता मुझ। करसन भोग बिलास बहु गून गून प्रसादि। जो शरण पए गुरदेव दी सो भोगन आदि जुगादि। झगड़ चुकावन कारने आए डुनी फकीर। हिन्दू मुसलमान दुह डिटे खरे जहीर। हिन्दू जात अठुहिआं तुरकश काले नाग। हिन्दू दगे कमांवदे तुरकां जोर जराब। हिन्दू न भावे हिन्दूआं जे को वडा कहाई। तुरक सलाहे तुरक नों कर वडा दीन सलाहि। हिन्दू कहिन हिन्दुआं अपना दीन सलाह। हिन्दू मुसलमान दुइ कर

मनसूख उठाई। अंधे कारण दोजकी दोजन की पौनी जाहि। काणियां दा छड संग तूं अंधयां नाल न जाई। दोही चशमी देख तूं तां सच लहे महल। नानक कल विच निर्मली गुरसिखी प्रवान। अगणत लंघे उमती सच नाम परवान। सचो चाहै सब खड़ी दरगाह लहन न ढोइ। रोटी कपड़े कारने कूड़ कमावन लोइ। खावन पहिरन रब दा करमी पलै पाइ। आस बिगानी जो करे से दरगह लैन सजाइ। फिट तिनां दा जीविआ जो पर की आस करेन। रोटी कपड़े कारने मुखहु कूड़ बोलेन। सुनहु काजी रुकन दीन सचा एहु जवाब। साहिब दा फुरमाइआ लिखिया विच किताब। ऐथे देख सजाणा लै अगे चाइ पछान। विच फकीरा खलक दी हिन्दू मुसलमान। निकली जर सरकार ते आइ सुनिआरे हथ। किसे बनाए छलड़े किसे बनाई नथ। किसे तनाउड़े वालियां कंगन घड़े सवार। सोना इकसे जात दा जेवर बहु प्रकार। मानस इकसे जात दे दीन भिन्न-भिन्न होइ। कोइ कराए सुन्नती जत रखाए कोई। दोहां बधे मोरड़े फैबारा शैतान। दावा राम रसूल कर लड़दे बेईमान। दावा छडो मोमनो बाद मिटावहु कूड़। हिन्दू मुसलमान जेवर देवो मनसूख। पकड़हु राह खुदाई दा दरगाह पवहु कबूल। लिखिया विच किताब दे झगड़ा राम रसूल। विच विच गल्लां कूड़ियां सुनहु वेद कतेब। पढ़दे पाए भरम दे बहु बिध कीने वेद। बारां बुरज असमान विच नाल सितारे सत। इह थिर महूरत होर सताई लिखत। भदरां पंज कि योगनी चसे पत बिचार। एह रबानी लोह है लिखे खुद करतार। जिउं सूरज बारां बुरज विच तिउ इको इक खुदाई। दूसरा होया न होइगा मन विच देख नगाइ। चंगा मंदा लेखा सभ नौं ग्रहि विच होइ। नौं ग्रहि बारह बुरज विच इको सचा सोई। गलां होर शैतान दी वरतन को संसार। बाद बिखादी झगड़े जनमे ते संघार। सिर सिर लेख अलेख दा उत्तम मधम जान। करमी आपो आपनी मस्तक भए निशान। फिरन चक्कर सिर उपरै रैन दिनस के माहि। काफर

सब संसार दे हुकमे विच हवाइ। कला रखी असमान विच चारे तत पताल। ज्यों ज्यों कला फिराइए त्यों त्यों फिर संसार। उलटा खेल खसम दा सिर उपर तल पाई। सिर तल हाहे जम्मदे निहचल क्यों कर जाए। सिर तलवाए कम्म विच बाहर भीतर होई। उपर हयाती पाइनी नानक सच बिगोई। मथा धरके जिमी पर खातर रख हजूर। मिलिया रहे खुदाइ नाल होइ न कबहु दूर॥ २६॥

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा॥

रुकनल आखे नानका दरगाह दी खबर सुणाइ। केहा रंग महल दा जिथे रहे खुदाइ। केहे बुरज महल दे छजे ते चौकाट। कहीआं डिठियां बैठकां किस नाल कीत रास। केहा गारा चूनड़ा कौन बनावन हार। सूरत कौन महल दी क्या फेर होइ दीदार। दर ते लिखिआ के कुझ एह भी देह बताइ। केहड़ा यार खुदाइ दा जिसनो टाक न पाइ। पहुंचे केहड़ी बंदगी करके कौन नमाज़। सचो सच बताइ तूं सचा केहड़ा साज। केहड़ी सुन्नत पाईऐ जाइ दीदार खुदाई। कौन रसूल पहुंचांवदा दरगाह सकी जाइ। सब निशानियां देह खान अव्वल फकीर। पीरां अंदर पीर तूं मीरां अंदर मीर।

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

नानक आखे रुकनदीन दरगाह दी सुध लेइ। रंग अजाइब महल दा हीरे लाल जड़ेइ। मोती त याकूतीआं मणी जमुरदां नाल। लख आफ़ताब महताब लख रोशन बलन मशाल। रंग महल है कुदरती जिस तखत सुबहान। बैठा सचा पातशाह सुलताना सुलतान। बारां बुरज महल दे नौं दरवाजे नाल। पज खवास हैं पाहरू चौकी देन संभाल। बुरज सवारे जरी के मीना कारी रास। बने चौकाठां छजरे चौकी देन संभाल। बुरज सवारे जरी के मीना कारी रास। बने चौकाठां छजरे बाधन चंदन

काठ। पत्थर पारस लाईऐ पारस जात संग बार। कामधेन लख लछमीयां होई गोली करन अरदास। लेपन मेद कसतूरीआं चोए बहु प्रकार। रंग अजाइब बैठकां गोर मुशक अपार। नौं दरवाजे कोट दे दसवां नूर महल। हौज हयाती पर भरे तिस विच कौल अचल। गिरद महल दे कोट है बावन किंगरे तिस। किंगरे किंगरे तोपची फड़न न देंदे किस। सत समुन्द्र खाईयां नदियां अंत न पार। कई रखवाले सूरमे पिआदे ते अवतार। इक महल दुई बारियां शिव शक्ति सलतान। खिरकी खोल दीदार देन बहुत वधाइन मान। गैबी वज्नन नौबतां शंख नगारे भेर। शहनाइयां ते मुरलियां नाल अलांदे फेर। बांगां बुरगू सिंडीआं सारंगियां रबाब। वज्नन छैने कैंसीआं तेरे रागां साज। गावहि छतीस रागनी संग षष्ट अलापै। संग अलापहि नायका वारो वारी जाग। पहिले भैरो गावै पंच रागनी संग। भैरव ते विलावली नाल बंगाली चंग। पुन्या की असलेखी शाह पांचो नार संग विचार। माल कौंस फुनि गावहे पंज संग ले वार। गौड करी अलापहे देवगंधारी नाल। सोरठ गंधारी कहे धनासरी संग भाल। गाव फुन हिंडोल राग पांच रागनी साथ। तलंगी देवकरी कहु बसंता सिंधूर। सहस अहोरी भारजा गावहि राग चंडूर। गावहि दीपक राग पुन पांच रागनी साथ। काछेली पट मंजरी टोडी गाव अलाप। कामोदी अर गूजरी संग दीपक के लाइ। गावन उची सुर लिये बैठा सुने खुदाइ। पंचम गावहि सिरी राग पंच रागनी कोल। वैरारी करनाटकी गौड़ी सुनाई बोल। पंचम गावै सिंधवी सिरी राग की नार। वारी आपो आपनी सभो राग उचार। मेध राग संग पंच है गावै गुन वीचार। तीस रागनी गाव है खट ही राग। जो जागे सोई सणे जागत तिसके भाग। रागां विच कई राग हैं काढ़े सुघड़ वसाई। तीस रागनी षट राग सद सरब दा आइ। गावहि ताल मिलाइ के समें समें कर राग। साज खाज सभ संग वजहि होवै नाद अनाद। ऊपर खास महल पर देवै बांग खुदाए। सुते बांग न सुन

सकन रिहा खुदाइ जगाइ। सुती पई निभाग बस सुने न बांगां कोइ। जो जागे सेइ सुने सांई संदी सोइ। राह खुदाई भीहावना वालहु दसवें भाई। हाथी जाइ न सकनी होमे रख अड़ाई।

सूरत रंग महिल दी मठ पर रखहु लाइ। दर ते ऊपर लिखया इको पाक खुदाइ। कुदरत कई रसूल हैं यारां अंत न पाइ। जिसदी यारी धुर चढ़े पहुता जानहु सोइ। आवन जान फुंरमान लए कई हजारे रोइ। केते लख मुरीद कर हौमे अंदर पाई। रहीया ऊरे उम्मतां नाले नबी रसूल। निगुरे राह न पावहि मनी ज्ञाने मूल। सच्ची सरीअत बंदगी सच्ची सुन्नति एहि। सचा दीदार खुदाइ दा सच्च निमाज़ करेइ। सच्च बराबर ना यार को जो देवै खुदाइ मिलाइ। हिन्दू मुसलमान दा दावा देइ उटाई। नानक लेखे इक गल होर गल्लां शैतान। अमलां उपर निबड़ें साबत रख ईमान॥ २८॥

जब इतनी नसीहत सूरा कलाम की काज़ी रुकन दीन के साथ हुइ तब अन्य देशांतरों के हाजी लोग जिन्हों ने तत्व न जाना था वह कहने लगे।

सूरा॥ हाजी आखन नानका सुन तू सच जवाब। हिन्दू जलदे विच आतशी सहिंदे बहुत अजाब। बडा दोजक आतशी नेड़े जाइ न कोइ। हिन्दू जलदे तिस विच दोजक़ बहुते सोइ। उम्मत पाक मुहंमदा मिले सु खाकू साथ। कयामत फेर उटाइसी काजी मुहंमद आप। नेकी बदी कसीस जो औरत पुरुष न होइ। कयामत होइ हिसाब सब मुसलमान जो सोई। जिसका जुस्सा तिस कउ दूजा मिले होर। रोज कयामत् ड्रेहड़े पौस वडे शोर। ईसराईल फरेसता जद फुकेसी कर नाइ। उठसन सभे उम्मती जो खाकू संग समाइ। आप मुहंमद मुसतफा मीजां के हिसाब। नेकी बदी बिचार के देसी अजाब सवाब। कलमां जिनां पछानिआं सहिन न वडे ताइ। लिखिया विच कुरान दे कहे रसूल खुदाइ॥ २९॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

नानक आखे काजीआं सुणीए सचा सवाल। हिन्दू जलदे इक वार तुरक वडें जंजाल। मिट्टी मुसलमान दी जमे होइ नबात। जलन नबाती हमेशा विच आतश सहिन किसास। जल बल कोले होइ के फिर मिलया खाकू नाल। किथे मुहंमद मुस्तफा मीजा करो संभाल। क्यामत चशमी देखीऐ अंदर इसे जहान। हिन्दू मुसलमान दुई अंदर आंच जलान। मुहंमद मुंहमद किआ करो मुहंमद घर घर होइ। मुहंमद मुसतफा कई मुहंमद लोइ। पड़दा कूड़ी डालके रखिआ सच छिपाइ। ओड़क सच्च सलामती देसी कूड़ उडाइ। इको सच्च पछान के इको जानो सोइ। आदम रफ़न न रहि सके कोइ भाव आप खुदाइ जब इस करे अनेक। फेर अनेकों इक करे है नानक कहे बिबेक। जिसदे मारग नसीब कयामत तिसदे भाइ। इसराईल जब फूकसी कर नाइ। उठे गुस्सा तिसदा जिसदे मगर नसीब। इक दो जुसे अलख होण नानक कहै रसीद। आपे इक खुदाइ है कइ मुहंमद लोइ। वारी आपो आपनी उठी चले रोइ। कूड़ा झगड़ा हाजीओ मन ते रख हुन मूल। इको पाक खुदाइ है होर केते राम रसूल। ओड़क डिठा हाजआं रहे सभे मुरझाइ। हुजत हाजत शरा दीसक न मुखों अलाइ। शरा शरीयत सोध के सच शरीयत कीन। पकड़ो राम तरीक ते करके साबत दीन। पावहु राह हकीकते हक हलाल गुआहि। राह पछाण ह मार्फत आपे आप अलाहि। नानक आख हाजियां चार कतेब गुआहि। भिश्तां क्या कहो दोजक दियो दिखाइ। जलदे दिसन दोवड़े कूक पुकारन होई। मुसलमान हेमचां करे नबाती जोइ। अंदरों बाहरों आतशी भेद न पावै कोइ। नानक आखे हाजीयां जलदी दिस न दोइ। भिश्तां दिसन जलदियां हावीए दोजक नाल। हिन्दू मुसलमान दा कोई न पुछे हाल। दुनीयां दोजक आतशी सब घते दीन जलाए। पेट न पायन रोटीयां विसर

जाए खुदाइ। जेते फिरके दुनी विच खाने नाल खवंद। इको फिरका रब दा तिस विच बहुत बंद। आबी खाकी आतशी चौथा वादी नाल। चारों जलदे दिसनी किसनूं आखन हाल। जलसन रूह निमानड़े वड आतश के संग। दिसन दोजक विच जलदे बलदे नंग॥ ३०॥

॥ स्वाल हाजी सूरा॥

हाजी आखण नानका कहे मजाद कमाल। रखे रूह अमानती खालक विच अस्मान। जुसे रखे खाक विच रोज क्यामत सदा। कयामत फेर उडाइन पुछीऐ नेक और बद। मुसलमान मुस्लमी पुछे रसूल खुदाइ। काफरां कोऊ न पुछसी राह शैतान पाइ। जलसन दोजक हावीए कोई न सुने पुकार। अजराईल फरेशता करसी अंत खुआर॥ ३१॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

नानक आखे हाजीओ सुनहु हकीकत पाक। अरबानासर मिल कर नाउं धाराया खाक। अरबानासर चार मिल पंजवां पोल अकास। तिस ते भया अवाजड़ा नाउं धराया सास। गूना गूनी रगड़े जीअ जंत अपार। सभना अग्न जलाइसी किआमत राह असार। दोजक भिशत वखानिये दोवें इसे जहान। इक चढ़ झुलदे पालकी इक पैर पिआदे जान। इकना गली जंजीरीआं बंदे करन सलाम। मिलन सजाईं बाद विच सुनै न कोइ कला। राम रसूलां बहु करे तोबा कर फरयाद। जामन कोइ न बुरे दा मारन देइ अजाब। चोर उचक्के लालची हिंदू मुसलमान। कीतिआं बहुत गुनाह दे सब को कहै शैतान। हिन्दू मुसलमान दा रहिआ से दावा दूर। पकड़सा राह गुनाह दे करके खड़ा हजूर। करदे हाकम बहु हुकम मारहु गरदन जाइ। चोरी यारी जो करे देहो तिनां सजाई। सचिआं कोइ न पुछई जोर ते सच नाल। जिनां कूड़ कमाया तिंनां वडे जंजाल। जिनां पंडां पाप दीयां सीस उठाए भार। दिसन विच जहान दे होए सोई खुवार।

अगे दी किसे डिठिआ एथे ही होइ नबेड़। अखीं दिसे सो कहीऐ पढ़ मुल्लां बहुत नबेड़। नानक झगड़ चुकाइआ अंदर इसे जहान। दस हिसे इस दुनी विच सत्त कयामत जान। सुतिआं मोइआं जो दिसे सोई कीजै बाती। मोइआं सुधा सुन्न है जैसी दिसे खाक। खाकहु उपजहि हिन्दूआं काफर ते मुलहद। ईसाईयां मूसाईयां बहुत जे हुंदा रद। रूमी जंगी इरमनी हबश ते किलमाक। ईरानी तूरानीआं सबनां इका खाक। फिरके लख चौरासियां गिनी ने जाहि जात। खाकू ही ते उपजते फिर होंदे आखर खाक। फिरके लाख चौरासिआं सभ खाकू दे जीअ। जीअ वैरी दे होन तक कुदरत करते जीअ। जेते खाकी रूह हैन जल बल होंदे खाक। सदो मुहंमद मुस्तफा रूहां भरे सफात। कीते आप खुदाई जे हिन्दू मुसलमान। सड़दे विच पुजाविआं देखे सभ जहान। क्यामत भई रूहानीयां जीवदयां क्या परवाहि। जींवदियां नहीं मारदे करदे करन कहाई। राम रसूल न देखनी रुहा लैन छुडाई। एक विचारा क्यामती क्या अगे भए फनाहि, दिसे राही मुसतफा लए सु खबरी आइ। चारे यार न दिसनी उमती लैन छुडाइ। कहां सु राजा राम है सू कारन गुआल। कहां तिनां दी उम्मती जल वल थीए रवाल। कहां मुहंमद मुसतफा कहां से चारो यार। चौदह कहां खान वादड़े इमाम साहब सलार। कहां सौ शेख मसाइकां गौंस कुतब वड पीर। रिहा न जुमा तिनां दा मूई अंत जहीर। नाम निशानी रह गई आखर होइ बाद। आखर नाम भी जाइसी किस नू रहसी याद। आखर रलना खाक नाल जल बल होइ सुहाइ। नानक बाजी कूड़ दी होसी अत फनाई। बारी आपो आपनी मीर मलक सुलतान। पीर पैकंबर औलिये एह बजाइ निशान॥ ३२॥ सवाल हाजीआं सूरा॥

आखन हाजी नानका लिखिया विच कुरान। फेर तवल्लद न थीए जो हाइ मुसलमान। काइम होइ कयामती साबत रख ईमान। रहिसन रूह अमानती वत न आवन जान। काफर जलदे आतशी बहुत लहिन

अजाब। कूकन पए मसान विच आतश लए हिसाब। बाझ मुहंमद मुस्तफां कोइ न लए छुडाई। जिनां कलमां आखिया बड़दा भिशती जाइ। हूरां परीआं भिशत विच होवन तिनां नसीब। राह शैतान कुफर दा कीता जिनां पलीत॥ ३३॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

नानक आखे हाजियां लिखिया विच किताब। जो होई अरबां नासरों लही सब अजीब। ना को मुसलमान है काइम क्यों कर होइ। काइम रहिन पैकंबरां लख सवाईऐ सोइ। सवा लख पैकंबरां किथे तिनां मुकाम। उम्मत अंत न पाईऐ जल बल थीए मसान। केतड़िआं अवतार लख जल बल थीए खाक। सने औतारां पैकंबरां विच जम्मे होइ नबात। बलन नबाती हेमजा जल बल होइ अंगियार। किथे मुहंमद मुसतफा उम्मत अंत न पार। खाकू सेती मिल गए लैन न अपनी सार। जिमी दिसे धरतड़ी सभा भई मसाण। पहिलां दोजक शिकम है रहिन न देइ ईमान। लालच दुनी लुपेटिआं काइम इक खुदाइ है अवर न दूजा होइ। रहिंदे रूह इमानती लख चौरासी माहि। लख चौरासी मेदनी घटे न वधे उताहि। एहा काइम दुनी विच होर काइम न कोइ। जिना नाम धराइआ रहे न काइम सोइ। बच्चा जुसा जो खुले फिर चौरासी अंग। मुल्ला ब्राह्मण न बुझहि बूझन फकर निहंग॥ ३४॥

॥ स्वाल करीम दीन सूरा॥

कहे इमाम करीमदीन सुना हो नानक शाह। जिनां उमैद न रब दी तिनां कौन पनाह। पूजन संग मुनाफकां दिल जिनां दे संग। विच जलदे आतश हाविए चूना होइ पंग। पाइन दुख मसान विच जल बल होइ सुआह। जलदे पए पुकारनी कोइ न सुणदा आह। बाझहु नबी रसूलदे पान न कबही थाह। जल बल थीवन कोइलड़े ज्यों अगन झलूटे काइ।

कोइ न पुछे बातड़ी कोइ लए छुडाई। भिसती वास न पाइनी बाझ रसूल खुदाइ। कुफ़र किताबां वाचदे काफर वड हिदवान। आखन विच किताबां नूं मोए फिर न आन। मोए फिर न आवनी कहे मजीद सलाम। मर मर मिलके खाक सिउं क्यामत थीए किआस। जेहड़ी सूरत भज्ञदी फैर न होवे रास। काइसम थीए क्यामती कहै करीम सदात॥ रहे अमानत खाकड़ी रोज कयामत हद्द। मूए फेर न ऊपजहि हिन्दू किताबां रद्द॥ रद्द तौरेज अंजील के तीजा रद्द जंबूर। एह त्रेये मनसूख हैन थीआ फुरकान मनजूर। इस जमाने पातशाह कलाम मजीद कुरान। रहे कुरानों बाहरे थीसन अंत शैतान। जिस जमाने अमल होइ कोइ करह न मूल। ओह दरगाह ढोई ना लहे भरे न सफात रसूल॥ ३५॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

सुणहु सय्यद करमदीन मन्नो चारों किताब। आखें कौल खुदाइ दे जिनां विच हिसाब। मूए फेर न आवनी रहिन अमानत नाव। नावां मौत न होवई लख आवे लख जाइ। राम कृष्ण होए असंख लख मुहंमद नाव। ओह फेर न आया वत रहे मरातब थाव। खान खवीन न जावणी मीर बजीर पातशाह। जुसे रहिंदे थिर किसे रहिन रातब जाहि। जितने रूह अमानती तिनां मरातब नाल। उत्तम मधम लिख मिले हिन्दू तुरक चंडाल। एक आवन इक जाहि उठ आवा गौन संसार। अलाहि आइ न जावही सचे इह असार। जैसे बर्ग नवात। दे तरुट धरती पान। ओहो जहीआं सूरतां होर होटों निकली आन। अजब तमाशा रब्ब दा खाली रहे न संग। आवागौन खलक दा रहिंदा रहे निशंग। नानक सच्च अलावहे सुनहु करीम सदात। जिनां उमैद न रब्ब दी से रहन सदा नापाक। ओइ कबरां विच पीड़ियन जलदे करन कहाइ। अजराईल फरेशता देंदा बहुत सजाइ। कबरां तिनां जलाइनी जो होइ मुसलमान।

जिनां ईमान न रखिया दोजक दुनी हराम। मिटी मुसलमान दी भई मुनाफक संग। आतश सेती दब्बया चूना होइ न पंग। कत्थ सुपारी चुन त्रै चौथे मिलन जि पान। होवन लाल गुलाल बहु साहिबजादे खान। होवन नुतफे संग थीं उतजन सिध अर पीर। एह मरातब आया दब्बे पथरी वीर। हिन्दू मुसलमान दे साजे जुसे होई। होवन रूप करूपड़े ढोई लहिन न सोइ। पहले आतश जो दधा जल बल होया सुआह। फेर न आतश देह देह अलाह आप गुवाह। मिलन जो खाकू संग सो सहिंदे बहुत कसाब। खड़दे विच पंजाविआं ताऊ सहे छः मास॥ ३६॥

॥ स्वाल काज़ी करीम दीन सूरा॥

कहे करीम दीन नानका रूहां दा की तोल। केतक इलके रूह हन केतकु भारी बोल। केतक कद बरीक है मोटा के तकु होइ। केहो सूत रूह दी रंग किनेहा होइ। कौन हकीम बनाइ दा जुसा गुना गून। एह हकीकत जो कहै सोई वडा अखून। रहिंदे केहड़ी जाहि हैन एही कर बिआन। रूहां इक कि बहुत हन मुशकल करहु असान॥ ३७॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

नानक आखण राह एह सुणिअहु करीम सदात। बादे दा की तोल है आबे दी की जात। धरती दा की नाप है आतश दा की तोल। केतकदूर अकाश है केत आखां फोल। बादी सूरत रूह दी तिसदा रूप न रेख। आतश नूर खुदाइ दा कुछ अंत ना पाए मेख। रखन चराग महल विच चारण सब ही जाइ। फिर रखण अंदर टिंड दे लए सभ जोत छपाइ। आबी खाकू दुइ मिल जुसे होइ अलोइ। हिकमत लख हकीम मिल साहिब तुल्ल न कोई। वडा हकीम खुदाइ है रचे चौरासी अंग। इकसे इकसे अंग विच गूनी रंग। भया पलाड़ अकाश ते करहि अवाजा रूह। काइम कुदरत रब दी मिल रूह पुकारे रूह। लख चुरासी तुख्म हैं तुख्मां अंत

न कोइ। इकसे इकसे तुख्म विच भई चौरासी लोइ। आवन अगणती रूहड़े जावन अंत न कोइ। इकदू रूहों लख होइ लखों लख अलोइ। की पैमाना रूह दा केतक कहां विथार। पसरिआ जिमी असमान विच रहिया सु चानण धार। ईका रूह न किसे दा लख चौरासी बद। फिर लख चौरासी इक होइ लेखे बहुबिधि छंद। आपे मारे करे आप कुदरत चलित दिखाइ। परदे डोर भरम दे दितिओ सु सभ रुलाई। नर नारी दुह सिरज कर खाणी बाणी उपाई। जो दिन जाती बुझसी आपे आप खुदाई॥ ३८॥

॥ स्वाल करीम दीन सदात सूरा॥

करे-ईमाम करीमदीन सुणाहु नानक शाह। किथहु आलम उपजदा किथे जाइ समाइ। एह हकीकत जो कहे सोई रसूल खुदाइ। एका एकी होइ रहै दूजी रहै न जाइ। दूजा आखण शक है जंमे ते मर जाइ। सो क्यों मंनीए नानका जो कायम रहे खुदाइ॥ ३१॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

आखे नानक हिन्दगी सुणहु करीम सदात। उपजे आलम खाक ते फिर खाकों होइ नबात। होर नबातों नयामतां देवे गूना गून। खाकों होवन आदमी नुतफे होइ मजमून। नुतफिओं मास उपजहि मासहु जुसे पाक। रहया सु गंदा होया धाया नाउ नपाक। नयामतां ते बिष्टा भया मिलया जो आदम संग। खाधा काबां कूकरां अवर अगणती रंग। विष्टा ते कई उपजही जीअ जंत अपार। मिटी मुसलमान की फिर फिर धरे औतार। लिखिया विच किताब दे बोले नानक शाह। जिनि पछावां रब दा फिर रब हो माहि सामइ। सिर पुशीदा रखिया अरबंनिसर माहि। जो जाहर करै जहान विच भिस्त न दोजक ताहि। रूह नों रूह खावणी फिर रूहां ते रूह होइ। आवा गौण जहान दा वरज न सके कोइ। लख पैदाइश रब दी घट बध किसे न आख। दूजा हुआ न होसीया वरते ताको ताक।

लख मुहंमद मुस्तफा राम कृष्ण लख होइ। इक आवन इक जाहि उटि गिणती गिने न कोइ। लख औतार पैकंबरां उम्मत अंत न पार। मर मिलदे खाक सों फिर फिर होइ अवतार। लख किताबां लिख गए गए सिर खाकू ढेर। लख लिखारी उपजहि ओइ फिर लख राखन ढेर। काजी मुल्लां हाजियां मिसर पांधे लख। ब्रह्मे बिशन महेश लख मर जी लिखत वत। लिखन बेद विचार कर उकत सिआनप नाल। मद फिर जम्मन बपुड़े फिर लैंदे वेद संभाल। बेहदु फेर कतेब करे वैर विरोध कराइ। लख लख दानों देवते कालर होहि मराहि। शिव शक्ति दुई साजीया उत्तम मधम लोइ। मरदे वैर विरोध कर मर फिर माटी होइ॥ ४०॥

॥ स्वाल काजी करीम दीन सूरा॥

कहे इमाम करीम दीन पुछे सच सवाल। इक बिगाना जो रखन तिनां होसी कौन हवाल। मोए खाकू सो मिले वत न आदम होइ। लैना देना दुनी दा फैसल क्यों कर होइ। करन गरीबां उपरे जालम बहुत जोर। कूफन खड़े यतीम बहुत सुने न कोइ शोर। अदल न हाकम करसनी लुट लैसन घर बार। एह हकीकत सोध कर देह सच बीचार। गैर मुकाम खुदाइ दे जिथे लैन हिसाब। लैणा देणा दुनी दा करन सवाल जवाब। क्यों कर लैणा लई दा किस बिध देना देन। कहे इमाम करीम दीन फैसला क्यों कर लेन॥ ४१॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

सुणहु इमाम करीम दीन नानक कहे फकीर। इक बिगानां जो रखण सो होसन बहुत जहीर। ओई पड़सन जौन चौपाइआं नक तिनां दे लोर। लैना देना ना छुटे लद लद लैसन बोर। देंदे बहुत सजाइके लैण सभे हिसाब। जिन जुलम कमाया दुनी विच तिनां कयामत एह अजाब। बंदिर रिछ औतार घर कलंदर देण सजाइ। घर घर फिरसन नच्चदे कीता पासन

आइ। दर दर होसन मंगते जो खान बिगाना माल। नानक कहे करीम दीन बुरा तिनां दा हाल। फिर अवेहा गाइआ देणा पवे जो फेर। देणा लेणा ना छुटे सहे सजाईं ढेर। हाथी घोड़े ऊठ खर भैंस बैल औतार। जिनां दे सिर बहुत जुलम से फिर लेसन मार। हो परंदे जानवर फसन फाही आइ। लहणेदार न छड ही लैसन मास बिकाइ। जैसा कोई बीजीए लुणे सु तैसा सोइ। कयामत के दिवस ही सभे निखेड़ी होई। खाहश फेर लयावहो दुनियां अंदर फेर। लैणा देणा नेक बद हासी सब नबेड़। खाहिश अंदर जो मरें फिर लै उठे नाल। देणा लेणा ना छुटे लई अगे सभ संभाल। जैसी खेल चौरासी दी तैसा इह संसार। पक्का फेर न आवई पया जु अंदर बार। पहुता जाइ खुदाई नों फेर से जम्में सोइ। कायम मिट्टी तिस दी कंचन वग्नी होइ॥ ४२ ॥

॥ स्वाल ईमाम करीम दीन सूरा॥

सुणहु नानक हिन्दीयो कही करीम एव। हिन्दी चार फरेशते ब्रह्मा बिसन महेश। चौथी शक्ति फरेशता कहे भवानी जाहि। चारों खलक खालक दे हिन्दू करन सनाहि। तुधे ही कुछ बुझया दुह फिरकिआं राहि। एव हकीकत सच दी सभो देह बुझाइ। लिखिया विच कुरान दे इको पाक अलाहि। दूा नूर मुहंमदी भया रसूल खुदाइ। बिना रसूल खुदाइ दे ताजा होया न कोइ॥ होइ जो मुसलमान को रहे नसीयत सोइ॥ ४३ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

सुणहु सैद करीम दीन जानहुं सच सुनाइ। नूरी चार फरेशते चार कतब गुआहि। अबल नूर खुदाइ दा जाका अंत न वार। नूरी बलिआ चरागु इक शक्ति दा औतार। शक्तों तीन फरेशते ब्रह्मा बिशन महादेव। आबी बादी आतशी सच हकीकत एव। तीनों आप पछानिया हमसर अवर न कोइ। आपे आप खुदाइ कहि भरम भुलाणे सोइ। तीनों किया

गुमान हम ही कहें खुदाइ। आतश मिसल चराग दी इकथी लख लगाहि। आतश ही ते उपजे ए तीनों ही देव। लिखया तीन किताब विच ब्रह्मा बिशन महादेव। हाया अवाजा गैब दा गुणयां तीनों देव। हम ते खालक खलक दे होर अवाजां देत। तीनों इकठे होइ कर गए शक्त दे दुआर। जा खड़ोते दर सचे लागे कहन जुहार। पुछन तीन फरेशते हम पर भी हैं होर। होया अवाजा गेब दा होर केते अंत न और। कवन पुरी के देव तुम कहां बसे किस लोइ। सुण कर एक अवाज नों रहे समाधी होइ। होया हुकम खुदाइ दा कुदरत भई हजूर। नूर मिलिया जाइ नूर नों होइ रहे भरपूर। देखन रंग महल्ल नो पुर है आंडिआं नाल। आज्ञा होइ शक्ति नो अधा तिहां दिखाल। देखन अडा फोर विच तबक बसहि कई लोइ। ब्रह्मे बिशन महेश लख गिणती अंत न कोई। राम किशन परस राम लख मछ कछ अवतार। नरसिंह बावन बोव लख कई बेराह न पार। केते लख मुहंमदा अंत न लोआ लोइ। इकते ही ब्रह्मंड दा अंत न पाए कोइ। बलन चराग बेअंत लख बिससे होइ बेअंत। वडा नूर सलाईीऐ जिस थीं भए अनंत। नूरों बलिया चराग इक इक चरागों लख। आफताब महिला बलख उतपति आख फरक। एक पलक के अंदरे उतपति खपत अपार। लौ बाली दरगाह दा केता करो शुमार। कहो मुहंमदी इक तुम दरगाह कई अपार। उपजहि नूर खुदाइ ते खपत न लागे वार। सभ खाकू ते उपजै काहन हैवान नबात। नानक आखे राह सच सुणहु करीम सदात। मोमन होवे मोम दिल मर फिर होवे खाक। खाकों होइ नबात फिर बहुत नयामत पाक। कान हैवानों आदमी तां ते नुतफे साफ। नुतफे होवन आदमी अवर हैवाना जात। कान हैवानों आदमी मार फिर आदम होन। पान मारतब कयामती जेहा कहीअहि मोम। होइ मुनाफक संग दिल मर फिर होवन खाक। खाकों परबत पथर पथर ते फिर धात चूना होवे पथरों दहिआ आतश संग। चूने पाणी मेलिआं होवै

मोमन पंग। पत्थर बाझों दहिआ दिन दिन बढ़ता जाइ। रहे सहसर जुग लख पथर नाम कहाइ। मिट्टी मुसलमान दी लहै मरातब देह। पत्थर खाक ते मरे मुनाफक देहि। मोमो होर नयामतां तारे सुण तू नाम। गधम मोठ भिरंज मुंग न खुद रवाहि। मिसरी खंड निबात गुड़ मेवे गूनां गून। रोगन कपड़े तेल तुल दुध नवातों मोम। आतश बिन न मोम होई रहे जो धरती माह। सुणहु करीम सैयदा आखी नानक शाह॥ ४४॥

॥ स्वाल ईमाम करीम दीन सदात॥

कहे इमाम करीम दीन पैकंबर दी जद्द॥ अगे ईक खुदाइ है एथे क्यों दुई हद्द। हिन्दू मुसलमान दुइ विच केहड़े रद्द। रखो सच सलामती कूड़ सलामत छड। रद्दहु जिन नूं रद्दना वत्त न लीजै नाम। कूड़ी दुनिया कराने मरी न होइ हराम। जेहड़ी सच्ची गल है दुह विच कढहु गोइ। हिन्दू मुसलमान ते दुह विच चंगा कोइ॥ ४५॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

नानक कहे करीम दीन इक साहिब दुइ हद्द। हिन्दू मुसलमान दोइ इह फिरके तूं रद्द। दाइम सच सलामती झूठ न रहसी मूल। जो करन इबादत रब दी पर दरगह पवे कबूल। अगे नाउ न जात है अमलां उपर नबेड़। अमलां बाझों मोमनों पौमन दोजक झेड़॥ ४६॥

॥ स्वाल ईमाम करीम दीन सूरा॥

कहे ईमाम करीम दीन सच्चा देहु सुनेह। जिस बिन कायम होइ तन सोई अमल करेह। कायम होइ कयामती जुसे खाक न खाइ। खुले न जुसा तिसदा फेर न आवै जाइ। कौण इबादत रब्ब दी जित कायम होवै रूह। फेर न फिर चौरासीए बहुती होइ न धरुहु। केही सूरत रब्ब दी किस बिध लाए ध्यान। किस बिधि चिल्ले साधीयन सचा देहु ब्यान।

खादम इस ज़मान दा तूं नानक शाह फकीर। मीरां अंदर मीर तू पीरां अंदर पीर। मुरशद हिंदू तुरक दा दुहां दिखाइ राहि। सच हकीकत सोध के देहो हक्क सुनाइ॥ ४७॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

नानक आखै राह सुणहु इमाम करीम। जीवदियां तू होइ इहु दुनियां विच लतीम। राहों इश्क खुदाइ दे मन अंदर सुन लाइ। हक्क हकानी इश्क है हक्को इक्क कमाइ। गोश नशीनी होइ रहु धरनी सीस कटाइ। करह इबादत रब्ब दी चिल्लै बैठो जाउ॥ दूजा इश्क सच बंदगी बुरे भले सभ त्याग। एका एकी होइ रहु जां जागन तेडे भाग। जीता इश्क ज़हीर है खाण-पीण सभ जाइ। बैठो आसन मार कर जागे ध्यान लगाइ। माहिर इको घर रख भिन्न भिन्न रहिन न दोई। आवागौण न होइ फिर जो तिन साधै कोइ। चौथा ईश्क मिजाज है ज्यों दोवें जलै पतंग। गुझी आतश इश्क दी इश्क मुसा का संग। चारों इश्क महबूब दे रख जिसनों आणे रास। जोगी भोगी आतशां पूर्ण होवे आस। बाझों लगे इश्क दे कोई पवे कबूल। इश्क लगाईऐ रब्ब जे जाहिर थीए रसूल। जेहा इश्क कमाईऐ तेहा आवे रास। लगा रहे रोज सब पूरन होवे इह आस। हाजी काजी सद सभ पुछन कर तकरार। जिसदे वल्ल खुदाइ से कदी न आवै हार। हाजी काजी हार कर निव निव करन सलाम। कुझ न चले कूड़ दा उपर सच कलाम। हुज्जत खुज्जत शरे दी आइ न सके नेड़। जिते फिरके दुनी दे नानक कीते जेर। सभ मज़हब मनसूख कर सचा अमल चलाइ। सत नाम करतार दा चहुं कूंटी तलब बजाइ। इको तुबका तख्त इक इका मुहर चलाई। इको ही पातशाह जग कूड़ न रहसी काइ। रहिन नाही मैकानड़े गोरां मढ़ा फनाइ। कलि विच नानक निरमला सचा इक खुदाई॥ ४८॥

॥ स्वाल काजी रुकन दीन सूरा॥

पास बैठा सी पीर बहावुदीन सिर पीरां दे पीर। सुण गलां खुदाइ दियां होइ रिहा दिलगीर। रुकनल कहे मखदूम जी सुण नानक दी तदबीर। कीतो सु मनसूख सभ अवतार पैगंबर पीर। राम रहीम न मंनई बिशन करी सिआं दोइ। मंने न चारों यार रख नाव दे चौदह सोइ। इको नबी रसूल है चार हाबां एक। इको ही खट बाटड़े चौदह बलन चराग। दूजा आखन शक्त है अखियां चढ़न अजाब। पुछहु का तदबीर कर कितनो करे कबूल। थके नसीहतां देंदिआं गइया सु सभे भूल॥ ४९ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

नानक आखे मखदूम जी सच्चा शब्द पछाण। आप ही तुम दुइ कहो आपे इक बलाण। जे दूजा आखण शक है तुसां क्यों जाते दोइ। हिन्दू कह नपाक हैं दोजक जाए सोइ। नाम न लैंदे राम कृष्ण कहो फिर ऊन। कैंहदे अलह रसूल है होर न पूजहु मूल। तुरक न जपदे राम नूं हिन्दू न जपहि रसूल। फिरका हिन्दू तुरक दा इस बिध मनहु न मूल। आखे नानक सच सुण मखदूम बहावहि शाह। कीते हो मनसूख सभ सची राख पनाह। राम रसूलां केतड़े कृष्ण करीम अलोइ॥ अवतारां पैगंबरां पीरां अंत न कोइ। यार इसहाब खानवादड़े बेद कतेब विचार। कई मधाने बाशका शेशा अंत न पार। मर मर जंमन केतड़े ब्रह्मा बिशन महां देव। इको सच खुदाइ है होर दरोगी भेव। गौ सूर दोइ इक कर पछाणे सोइ। हिन्दू मुसलमान दे मजहब उठावो दोइ। दावा हिंदू तुरक दा मन त रखउ न मूल। सच नसीहत याद कर दरगाह पवे कबूल। साहिब खुद फुरमाया लिखिया विच किताब। मर जंमन मनसूख हन मंनयां चढ़न अजाब। कुदरत कई असंख है इक कादर न्यारा आप। कादर कुदरत बाहरा सभ जपदी तिसदे जाप। कुदरत बंदे रब दे हुकमी आवहि जाहि। वरग जिवें

नबात दे त्रुटत्रुट फेर जमाइ। ओहो जहीयां सूरतां ओहो जेहे नाम। कूड़ पसारा खलक दा उजड़ वसाए गांव। ओहो फेर न आवनी सभ उपाय जिनां दे नाइ। भरमे भूला आदमी मर जंमे आवहि जाहि। जैसे मोती ओसदी वैसा आलम जाण। मोया कंम न आवई दब गोरीं सड़हि समाण। मिटी गोर मसाण दी फिर आवे हथ कुंभार। भांडे इटां बहु विधि घड़ घर धरह सवार। फिर गावन अगनी अगणिती जल बल करन पुकार। हिन्दू मुसलमान दुइ फिर लहे न तिनां सार॥ ५०॥

॥ स्वाल पीर बहावुदीन गौस सूरा॥

आखी गौस बहावुदीन सुनहु नानक शाह। कौन नमूना रूहदा रहिंदा केहड़ी जाई। रूहे दी की जात है कौण सफात कहाइ। आया किस मुकाम से मुइआ किथे जाइ समाइ। जो शक्क उतारे दिन दा सोई अव्वल फकीर। सचे राह चलदिआं कदे न होन जहीर। हौ जोइदा सच दा डिटे शक्क उटाइ। पीर कहे सुण नानका मन दा शक्क चुकाइ॥ ५१॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

सुणहु पीर बहावुदीन आखी नानक शाह। नाहि नमूना रूह दा रहे न किसही जाइ। जात सफातों बाहरा रंग रूप नहीं होइ। करे अवाजा गैब दा नदरी पवै न सोइ। आया गैब मुकाम ते फिर गैबी जाइ समाइ। लख चौरासी जुसड़े पहिरे खुसा रजाइ। इकसे इकसे जुसड़े कई असंखां रूह। होइ इक्ठे आप विच करन अवाजां रूह। रूह खुदा न भेद कर इका जात सफात। पंजे मिलन नसीहतां साज दिखाई जात। सफात कहाइ के पाईं पड़े जंजीर। जुस्सा पकड़िआ जुसिआं खप खप होइ जहीर। रूह बनाया आप कूं कूड़ी दुनियां लग। जात सफात खुदाइदी धराया टग। टग टगे मिल टग दूजा नांउ खाइ। दूजी कुदरत कूड़ है सच्चा इक खुदाइ।

आप भुलाया दुनी लग हमा तुमा धर नाइ। जद रूह जुदा होइ तन ते नाउ नांउ कुछ नाहि। लभो कुदरत रब दी अरबा नासर माहि। अरबा नासरों बाहरा इको आप अलाहि। करे रियाजत बंदगी जाणै आप जिनां आप पछानिआं तिनां पुन्न न पाप। आखे नानक हिंदगी सुणहु बहावुदीन पीर। पावहु राह खुदाइ दा कदे न होइ ज़हीर॥ ५२ ॥

॥ स्वाल मखदूम बहावुदीन सूरा॥

आखे पीर बहावुदीन सुणहु नानक पीर। आदम हवा सिरजया कहु सची तदबीर। खाक निमाणी अंधली क्यों कर भई खंबीर। शरत होई खाकते करे आवाज कबीर। सहस अठारां आलमां गूना गून शरीर। एह हकीकत गैबदी रहे सवाल फकीर॥ ५३ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

सुनहु मखदूम बहावुदीन नानक कहे फकीर। अरबानासर मेल कर खल्क किया खंबीर। दाणा भयाखबीर ते सुण साची तदबीर। ईकत दाने लख होइ गूना गून सरीर। अन्नों भया खबीर फिर नुतफे बहु भये बहुरंग। इक दाणे कीमत न-पवै रंगा रंगी अन्न। सहसर अठारह आत्मा नुतफेही ते कीन। सभदे उपर आदमी जाणे दीन बदीन। अरबा नासर होई फिर जो नर थीए खाक। खाकी आबी नपाक होई बद्धा नारी ताक। जां होण अलाहदे आपते करहि न फेर अवाज। तारां ढिलियां जे थीवन फिरे शब्द न करे रबाब। कला बनाइ गैबदी गैबी होइ सु पाइ। इके ना जाणे कुतब दी गौंस ईके जाणे आप खुदाइ। नख मखदूम बहावुदीन एह अलाह दी खेल। आपे आप विछोड़दा फ़िर आप कराइ मेल॥ ५४ ॥

॥ स्वाल पीर बहावुदीन सूरा॥

आखे पीर बहावुदीन जुसे केते रूह। क्या कर थीआ अवाजड़ा मिल

रूह पुकारन रूह क्यों उपजया दानसी किदे जाइ समाइ। बोलणहारा कौण सी इह गैबी सिर कराइ॥ आबी सी कि खाकी सीबादी सी कि नार। चौहां विचों कौणसी देहो सच विचार। जो सूरत बन्ह दिखाइदा करदा बहुत पसार। होंदा जबे न पैद रूह किछ दिसे न असर असार। कुछ सी कुछ नाहि सी इसदा देह ब्यिान। देह हकीकत सच दी कीजै प्रगट जहान॥ ५५॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

सुनहु पीर बहावुदीन पंज खासाअत रूह। पंज जो पंज पंचवीं सब मिल पुकारन हुइ। पंज मिल उपजियां दानसी फिर पंजां माहि समाई। बोलनहारा जगत गुर सूर बाद हवाइ। गैबी पंज फरेशते मिलकर करन अजाब। मढ़या पखावज चम दा यह रब्ब बनाया साजण। आपे इको रवि रहिया जीअ जंत सभ मांहि। होर सरीक न दूसरा इकोइक अलाहि। चारों यार मुसलमी रहे अलाह दे नाल। भुल्ले दुनियां खुद लग नाल खराब सवाल। खाकी आबी आतशी बादी चार कुतब। एहा यार खुदाइ दे आप पैकंबर रब्ब। कायम चारों तरफ दे कीते चार कतेब। चारों थम्मे अरस दे रलके मूल न कद। कायम करसी अरस है कायम इक खुदाइ। पंजे कायम हैं सदा होर न कायम जाई। जो आया सो जायसी ओ गया फिर आइ। अगला सांग उतारके फिर अगे होर बनाइ। किसका माई बाप किस किसका पूत कहाइ। किसकी जोरू थिअ किस सभ कूड़े किये पसाउ। जीवदियां सभ दिसदी मोयां दिसे ने कोइ। नानक बाजी कूड़ दी आखर कूड़ी होइ॥ ५६॥

॥ स्वाल पीर बहावुदीन सूरा॥

आखे पीर बहावुदीन सुणहौ नानक शाह। केही सूरत रब दी रहिदा

केहड़ी थाह। खाणा कौण खुदाइदा पहिरे कौण पुशाक। कौण शरीक खुदाइ दा सच हकीकत आख। हिन्दू मुसलमान विच कौण नजदीक खुदाइ। दोनों मजहब साध के सचा इक दिखाई॥ ५७॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

सुणहो पीर बहावुदीन आखी नानक शाह। सची सुरत रब दी रहिंदा सची जाह। सचा खाणा रब दा पहिरे सच पुशाक। इको इक खुदाइ है होर शरीर न साथ। हिन्दू मुसलमान दुइ दरगाह लैण सजाइ। मजहब दुइ मनसूख हैं दिसदे नहीं गुमराह। सोई शरीक खुदाइ दा जाका जन्म न जात। बेद कतेबों बाहिरा अनहद शब्द अलात॥ ५८॥

॥ स्वाल बहावुदीन सूरा॥

आखे पीर बहावुदीन सुणहु नानक शाह। हिन्दू मुसलमान दुइ दिते नी मुडहुं उठाइ। तीजा मजहब कौण है जो तुहि कीता तहकीक। एह हकीकत सच कहु नाहि तां लगदी लीक। हिन्दू मुसलमान दोइ बाबे आदम दे फरजंद। तूं क्यों रुद्धे नानक सच कहो इह पद। हारिआ काजी रुकनदीन हारिआ शाह करीम। हारिआ हाजी हज्ज कर पढ़ गूढ़ भये यतीम। हउं पुजदा पीर बहावुदीन मुलताने दा पीर। हिन्दू मुसलमान दी कर सची तदबीर॥ ५९॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

आखी नानक शाह सच सुनहु बहावुदीन पीर। हिन्दू मुसलमान दुइ सिर गुम थीए ज़हीर। तीजा मजहब पाक है नेकों बद तों दूर। भले बुरे दरगाह विच बड़न न मिलदे ज़ूर। भला भलिआइ गरबिआ गोसम अवर न कोइ बुरा बुरिआई सहमिआं नीच कर्म बहि रोइ। दोवें रहे जहान विच धुर न पहुंचे जाइ। नानक कहे बहावुदीन होमै रखि अड़ाइ। तीजा

मज़हब सच हे मार्फती मन मार। नेक बद दुइ राह छड हरदम खालक सार। नेक बद दुइ गाडड़े चलदे गाडी राह। दोनों फाथे विच छुटे जाण अलाहि। लीहे लीहे गाडी चलैं लीहे चलन पूत। तीनों लीहे न चलदे सिंह सूरमा सपूत। हिन्दू मुसलमान दुइ बाबे आदम दे फरजंद। लड़दे हदां बन्ह कर चा भुलाइण पद। दरगाह ओड़ न पाइनी जो करदे दावे कूड़। दावा राम रहीम कर लड़ मरदे होंदे धूर। जिचर रूह मूकान रे जुस्सा साबत नाल। तदबीरां बहु बिध करे मरदिआं चलहि न नाल। फिर चौरासी भरमदा होइ निमाणा रूह। कोइ न पुछे बातड़ी वांग पिजीदा रूं। जितने यार मुहबती पीण-खान दे मित। मोयां देखन रूह कू फेर न लाइन चित। मिलदे आइ मुहबती चामदास केयार। भाई सके प्रीतमी भाई भतीज़ हजार। पिउ नाने नाखीयां चाचे ताए मित्त। मामे ते मामीयां फुफी फुफड़ जित। दादी दादे देवरे जिठाणी दराणियां यार। अंत न साथी कोइ होइ भजन होइ बिचार। कुड़म धुरम बहु भातीयां बहि बहि करन विचार। सचे साक कुसंगड़ी मोयां लैण न सार। दुनियां वेख कुसंग सभ तजहु बहावुदीन पीर। जिनां पनाहि खुदाइ दी से कदेन होइ जहीर। दुनियाबो सब साहिबी जसमी दुनियां मांह। चलया रूह इकलड़ा जुले पुछेंदा राह। फिर आवै विच चौरासीआं करके रूप अनेक। लख असंख्य रूप कर लख असंखा भेद। जिचर रूह न कायम तिचर टिकै न टौर। जे होवे कायम जुसड़ा मिटे चौरासी दौड़। हारिया दानशमंद सभ हारिआ बहावुदीन पीर। जिते नानक शाह सब धर सच्च शब्द पर धीर। आखरी इस जमाने दे नानक शाह फकीर। मारिआ तिक्का सत्र दा सिर पीरां दा पीर॥ ६०॥

॥ स्वाल बहावुदीन सूरा॥

आखे पीर बहावुदीन सुनहु नानक शाह। इक खुदाई रसूल है क्यों दुनियां बहुत राह। आलम कुझ न होवई बाणी की बलाइ। राह सचावा

छड के बहु होई गुमराहि। मुसलमानी छडिआ खाणा हक्क हलाल। हिन्दू खाण दरोग कहि तिनां होसी की हवाल। दोवें भुल्ले राह ते सच्च न जानहि मूल। माल बिगाना खस खान कसमां राम रसूल। दरगाह इनां की हाल होइ सभ दे खबर बताइ। पीर कहे सुण नानका खतरा मनहु चुकाइ॥ ६१ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

सुनहु पीर बहावुदीन आखी नानक शाह। लोभे कारन पीर जी दुनियां बहुत राह। कारन कपड़े नाम ते बहुत होई गुमराह। खाम कसीसां एह भांत ज्यों सिर थीआ कपाहि। चुण आदि वण वाड़िओं चुख चुख लई खुदाइ। कूके कपाहि न मानड़ी खुस दी करे कहाइ। पहिलां झांबे झाड़िऐ मंजे उते घत्त। कूके एंह कपाहड़ी दुनी न आवां वत्त। फिर फिर मुहि दिती वेलने खावै सकती भीड़। काते कारन मारिए किस अगे कूके पीड़। फिर खड़ सौंपी पोजिआं घतन नाड़ी बंद। चुख चुख होई पिंजदड़ी कारण कतन पंद। फिर सौंपी चूड़े वालीयां कतन बांह उलार। कूके एह कपाहड़ी हैं कत आई संसार। फिर सौंपी जुलाहिआं ताणी तणदे ठीक। छिक छिक देण मरोड़ियां अधा गरबे लोक। फिर सौंपी तिनां दरजीआं ज्यों ज्यों खसम कहन। पहिन कपड़े मन भांवदा जित पेधै सोइ बन्न। न कोइ हस्से हड़ि हड़ि आइना को करहु सोग। इह सिर थीआ कपाह दे इहनां जतां सिर का होग॥ ६२ ॥

॥ स्वाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन सुनहु नानक शाह। जुसा क्यों कर सिरजिआ सच देह सुनाइ। कौन मुकदम पिंड दा किस वसाए लोक। खावै कौण निआमतां किसनूं भोगां जोग। करदा कौन अवाजड़ा सुनणेहारा कौण जुमा रखदा कौण है सुपने जांदा कौण। इह हकीकत जो इसे सोई अव्वल

फकीर। पीरां अंदर पीर है मीरां अंदर मीर॥ ६३॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

आखे नानक शाह सच सुणहु बहावुदीन शाह। जुस्सा साजिया निआमती सचे सुणहु सुनाई। रूह मुकदम पिंड दा कर्म वसाए लोग। खाये अनगिणत निआमती रूहां भोगी जोग। करदी बाद आवाजड़ा सुननेहारा रूह। जुसे रखनी अगन है रूह फिरे पर जूह। रूह छडे पर जुसड़ा फिर होवन रूह अपार। फिर लगे खावन जुसड़ा कर डारहि तिस छार। मूए की गिणती नहीं जीवना देख परतख। जेते दाणे अन्न दे जीअ जंतू लख। गैबी सिर खुदाइ दा बुझ न सके कोइ। पीर पैकंबर औलीये थक थक रहे खलोइ। रूह न आंवदा दिसही जांदा लखे न कोइ। ईह इशारत जो बुजे पीरां दे सिर होइ॥ ६४॥

॥ स्वाल पीर बहावुदीन सूरा॥

आखे पीर बहावुदीन सुणहु नानक शाह। चारे राह अमानती रहिंदे कौण पनाह। चारों राह खुदाइ दे मैनू इह भी खोल दिखाइ। लिखिया विच किताब दे कहिआ रसूल खुदाइ। बाहजों राह सरीयते कदे पाक न होई। बाहजों सुन्नत आदमी दरगाह लहे न ढोइ। मुसलमान असाडड़ी बात न पुछसी कोइ। बाझ रसूल मुहंमदे दूजा होर न कोई। दाइम राह तरीक दे सोइम हकीकत राह। मराफता आखीऐ चारों राह खुदाइ। जुसा चार खसीयतां क्यों थीया नापाक कौण मिलया संग दार दे होवन पंज तन पाक॥ ६५॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

सुण हे पीर बहावुदीन आखी नानक शाह। चारों राह खुदाइ दे सुन कर मन में लाइ। अवल राह शरीयते गुसल खरायत नाइ। रोज नमाजां

बंदगी अव्वल रयाजत सार। करके अमल बिकार सब राह तरीकते धार। जाणे हक हकीकते बुझ हकीम खुदाइ। आपे आप अलाह है होर दूजा कोई नाहि। जींवदियां दे मर रहे मारफती मन मार। मिलिया रहे खुदाइ नाल तौ ही उतरे पार। मुशकल मुसलमानड़ी जिउं त्रिखी तलवार। भूले राह शरीयते देसन सजाई मार। बहु मारन कखीं साड़ भूले मुसलमान। कलमे होइ नो साड़िया करके बेईमान। भिसत पहुंचा बपुड़ा राड़िया जो कखां माहि। खाहदा काबां कुत्तयां मिलया नपाकां जाहि। पीर जी ऐवें जाणीआं ओह भिस्ती ठौर न भाइ। जिसदा कलमा आखिये ओह देवे बहुत सजाइ। कलमे नापाक होइ भिस्त न तांके पाइ। कलमा पढ़िया आखिया एह गुण होइ गुनाहां पाक। आगे करे गुनाहि फिर तिस भिसतों मिले भलाक। भंन भांडा कुटदा फिर लहे अढूणे दंम। जे भांडा भज खाक दा फिर आवै कितै न कंम। कलमे बोलियां उमती चले रसातल जाहि। अगे अगम अथाह है पार न काहू पाहि। विच जमीने दबीअन चले रसातल जान। आगे हाथ न लभई कई पाताल तलाहि। फिर होवन सारसि आतसी चलहि रसातल माहि। जीवन बहुत बरख लख फिर आतम विच जलाहि। फिर होवहि गयद माहीआं बुलन जोक संसार। इक वीह लख जोन है जो वेश भए अवतार। खाण जनावर आदमी बहुत नयामत नाल। फिर होवन ओदूं नुतफे जीआ जंत संभाल। दिचै वसत जलाइ कै जल बल होवै खाक। मण दी सेर न निकली होई मिटी पाक। गइआ रूह असमान नों आब हयाती नाल। रही जो खाक निमानड़ी अरबा नासर नाल। रही जो मुष्टी खाक दी होई फेर नबात। खान जनावर आदमी फिर होवन नुतफे पाक। नुतफे होइ जीय जंत लख चौरासी लोइ। इके तां जाणे आप रब इके खाकी बंदा कोई। जेहे अमल कमानी फिर कमायत पावै दोई। साहिब जरबों बाहरा रवि रहया विच लोइ। रिश्ता आप खुदाई है मनके सगली लोई। जिवें फिराए तयों फिरन

विरला जाये कोई। सची सुनती रब दी सोई ले आया नाल। जे रखै सोई अमानती जो खासा बंदा घाल। फिर गया दरगाह विच अगे रख निशान। होर दरगाह ढोई न लहिन जो राणे शैतान। अवल सुनत सोइ है सिर पर रखे जोई। पावै मरातब सयदीवडा रिखीसर होइ। रखे मोए इलाल खाई निकट हराम न जाई। सभ जहान दी की चली तिसते डरे खुदाई। मुख सुचा इंद्री जती सुपने मनो न जाइ। ऐसी रहिणी जो रहे तिसको काल न खाइ। जो मुख से आखे से थीवै होवै सैफ जहान। पहिले रखिया एह गुण चेला सभ जहान। किसे कटाइआ लांड को किसे कटाइआ कान। साबत सूरत रब दी भंनण बेइमान। बुरे दोहां दे पथ रे बुरा दोहां दा मेल। जे को सच अलाहिंदा घत मारन तिह जेल। सची सूरत रब दी कोई न पावै भेद। हिन्दू मुसलमान दुई पड़ लड़दे वेद कतेब। वेद कतेबों बाहरा ला शरीक अलाहि। कई असंखां कुदरती साज़ा खुद करतार। आपे मार जिवाइदा आपे करे शुमार। इको सिक्का तखत इक जरब भी इका होइ। जापे खुद खुदाई है पावै सचा सोइ। कख छिपावन अग नूं छपे न अगन कदाई। आखर ज़ाहर सच्च है ज्यों कख जलन संग भाई।

आदि सचु जुगादि सचु॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु॥ १॥

जो मर के फिर फिर जंमिआं सोई कच नि कच। मर मर जंमन कचड़े हिन्दू मुसलमान। कायम तीजा राह है मुशकल थीआ असान। नेकी बदी दुई रद्द कर आओ अल्लाह दे पास। जो मंने ओहदे हुकम नों सोई बंदा खास। चार कतेबां सोध के देखहु दिले लगाई। रब ना विच कतेब दे रहे अलाहदा जाई। रहे अलाहदा सभ ते विच सवनां दे जान। जैसी सूरत ध्याईऐ तैसी लईऐ मान। गुणहु मारफत पीर जी मिलत मजहब छाड। सोधहु जुसा आपना क्या रब बनाए साज। कायम चारों रूह है चारों जुसे साथ। पंजवीं कुदरत रब दी मिल होए पंज तन पाक।

अवल बादी रुह है नाम फरिश्ता जान। आतश रूह है जिन कहाए नाम। आबी तीजा रूह है मानहु सूरत देउ। खाकी चौथा रूह है भया खबीस अभेउ। पंजवां रूह खुदाई है मिल चहु रंगे होई। कुल बर्कती रब दी चारों कायम होय। दुई नेक दुई बद हैं वैरी मीत कहाइ। दहशत नाल खुदाई दी की चलदे सिद्धे राहि। जेकर इबादत बंदगी सूरत जाण खुदाई। कायम चोर फरेसते चलन तिसहि रजाई। जे महरूम खुदाई ते करन इबादत नाहि। फिरदे सर गरदान उह रोज सब न टिकाइ। नेक खसीयत पाक है बाद फरिशते माहि। बाद पैबद खुदाई नाल खास यार कहाइ। आलश कुतब बाद दी बिन बाद न आतश होई। आबी कुलब नार दी बिन नार ना आबी होइ। खाकी कुवत आब दी बिन आब न होवे खाक। जिचर पज न मिलनी होइ न पंज तन पाक। बादी होइ गलीज जब आवै बहु बद होइ। होवे नार गलीज जब किसे कंम न होइ। आब गलाजत जे करे गंदी होइ जो आइ। बोइ बोइ खलकत सभ करे हथ न कोइ लाई।खाक गलाजत जो बोवे नेड़े छूहे न कोइ। चारों मिल गलीज होइ नेड़े ढुके न लोइ। बिना बरकत रब दी चारों किसे न काम। आखे नानक सुण पीर जी सारी रब कलाम॥ ६६ ॥

॥ स्वाल पीर बहावुदीन सूरा॥

आखे पीर बहावुदीन सुणिऐ सच सुआल। गुस्से अंदर जो मरन फिर तिनां कौन हवाल। कौण मरातब तिनां दा पौसन केहड़ी जाइ। दोजक जाइ कि भिशत जाह एह भी सच दसाइ। गुस्सा करके जो मेर वडी मरातब पाइ। लिखिया चार किताब विच से मिले शहीदा जाहि। कायम रहे किआमती मरे न जम्मे सोई रण विच मरे शहीद होहि तिस इह मरातब होहि॥ ६७ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

आखे नानक शाह सूरा सुणहु बहावुदीन पीर। गुस्सा करके जो मरन सं होसन बहुत जहीर। लिखिया चार किताब विच गुस्सा करे हराम। दुनियां कारन लड़ मरै से मुआ किसे न काम ओह होइि जंबूरे गयदनां जहर लपटै मार। रण विच गुस्सा कर मोए लैनिस भय अवतार। गुस्सा आतश कर मुए ज्यों जले पतंग दीवान। चशमी देखहु पीर की पीछे कलाम। शक्ती मरना दोजकी सब आखन मुआ हराम। सिव का मरना भिशत है सब को करे सलाम। जीवन पूजे सब का मुआ भिशत जाइ। नानक आखे पीर जी सि वडा मरातब पाइ। शक्त मरा तब कुछ नहीं अंत दोजक है जाइ। ज्यों परवाने जल मरन विच रोशन दीप जलाइ। करदे जुलम सिर करन गरीबां जोर। इउं पौसन दोजक हावीए ज्यों लहे सजाइ चोर। खासन मास गरीब दा आखन थीया हलाल। फिर लैसन मास उधोड़े के ज्यों दिता लैन संभाल। मरना है दुशमनी कदे न छोडे कोइ। जैसा कोई बीजई फिर लुनसी तैसा सोइ। मजहब उते लड़ मरे जो होवे भरमे हान। गुस्सा एह हलाल है रहे कियामत नाम। एह नसीहत पीर जी सुण करके जोर हराम। लिखिया विच किताब दे आखी रब्ब कलाम॥ १८॥

॥ स्वाल पीर बहावुदीन सूरा॥

आखे पीर बहावुदीन सुण नानकशाह फकीर। अब्वल इक खुदाइ सी दूजा होर न बीर। क्यों कर आदम साजिया क्यों कर थीआ खंबीर यक जा चार फरेशते होइ किस तदबीर। चारों विच शरीफ कौण कौण कतीफ कहाइ। एह हकीकत जो दते सोई रसूल खुदाइ। अवल बुत निवाजिआं क्यों कीता फिर मनसूख। एह हकीकत जो दसे अल्लाह दो मशूक॥ ६९॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

आखे नानक शाह सच सुणहु बहावुदीन पीर। अवल खुद खुदाइ सी फिर विज दूजी कर तदबीर। कर तदबीर मंनहि चार मलाह इन कीन। बादी आबी आतशी चौथी मिल जमीन। पंजवां बुरज बनाइ कर असमान। छेवां आप अल्लाह दा रिहा पुशीद असान। कीता हुकम खुदाइ तक तीनों मलक बुराइ। बादी नारी आब नों होंदा हुकम खुदाइ। अनहु खाक पताल दी सूरत बहु बनाइ। साजिआ बुत मलाइकां ज्यों होइ रब रजाई। फिर होया हुकम खुदाइ दा बुत आगे करहु निमाज। वादी आवी मानमा अत तब सिजदे करने लाग। नारी हुकम न मंनिआं तिह रखिया नाउं शैतान। नानक सदा तौक गल पाइ कढिआ बेईमान। दिता भिशत गिड़ाइ के ढोइ मिले न ताहि। बिना मिलाहिक आतशी क्योंकर चल्लन राहि। क्यों कर उपजे आलमां कौन हैवान निबात। आतश बाझों पीर जी होइ न जात सफात। सय्यद हजार आतश बिनां होइ। लख चौरासी मेदनी बिन आतश जंमे न कोई। आखन सभ फरिशते सुनिये चार खुदाइ। जो हुकम न मन्ने रब दा से भिशतों मिले गिड़ाइ॥ बेटा नाउं सदाइ के हुकम न मन्ने बाप। होइ फरूनी जरद रूह दोजक पिआ नपाक। करके साफ गुनाह सभ फिर आतश लई मिलाइ। अरबा नासर मेल कर फिघर जुसे रचे खुदाइ। मिलिया शैतान जहान नाल आतश गुस्सा नामा शहवत मनी गिरानगी खुदी तकब्बरी जान। गुरसना तृशना हैरानगी नंग भुख बहु मार। फिर नासर गरदान होइ मौके लड़े खुआर। जेते राह शैतान दे सभ आतश ही ते होइ। आतश बाहर जो रहे नर खुदाइ सोइ। होआ जुस्सा दरुसत जब अरबा नासर मेल। पंजवां पोल असमान दा रब ठीक बनाया खेल। सूरत नक नारायणा साजी आप खुदाइ। नरमादा दुई आदमी सूर्त अजब बनाइ। आदम ते हवा बामि राम ते कीन। हाबील

कबील ते ईरतूर तबलद कीन। मर्द चारे औरतां चारे औरतां चारे जोड़े होइ। अदला बदला औरतां नर सादकर दोइ। चौहां ते चारे मजहब कीने खुद करतार। सभ पैदाइश चवां थीं कुछ ताकाअंत न पार। आलम वडा कबीर है आदम हवा जान। कायम सदा सदीव है कदीम आवन जान। इनही सो सभ उपजे फिर इन माहि समाइ। आदम हवा न मरन होर सगली आवे जाइ। हवा सुरत ज़िमींदी आदम है असमान। इनही ते सभ उपजै लख चौरासी जान। हाबीब बुत पुजाइया काबील कबर पुजाइ। दोवां छुपाया खुदाइ नूं सभ दिती नो भरमाई। दूजे बुत सवाब नहि पूजे होई अवाज। ज्यों गुडीआ खेलड़ी कछु नाहीं सवाब। रिहा खुदाइ पुशीद आप लख न सके कोइ दावा मढ़ीयां गोर कर लड़ मरदे दिसन दोइ। गोरां मढ़ीयां गढ़ाह के होइ रहे नयारा कोई। होइ वली खुदाइ दा जिस ऐसी करनी होइ। हाबील काबील ईर तूर चारों सक्क बीर। अगनी लहै रवाइ बईस चारों नीर। चारों औरत चार मर्द सब आदम के फरजद। खत्री ब्राह्मण वैप शूदर चारों संग पैवंद। चार मुसल्ले चार मजहब चारों भाई दंद। आदम नबी रसूल होइ चार कतेबां संग। ब्राह्मण शत्री वैप शूदर चौहां चलाए राह। आपो आपने मजहब विच चोर ही पातशाह। चारों मुफती चार मजहब बहिन नबी दे पास। दे नवाइत भुलयां ज्यों साहिब आखिया आप। चार कतेबां चार जुग चारों मजरब नाल। चार मुसल्ले चार कूंट जुग जुग करह संभाल। चार खसीयत चार वेद पांचों नाल इमाम। पंजम भया पैकंबरों आदम हजरत जान। बाद मलाइक खास बुत आखीं जिंदा पीर। आतश नूर खुदाइ ते जाणहु कर तदबीर। पंचम आप खुदाइ है अंदर बाहर होई। एह हकीकत पीर जी विरला जानै कोइ। आबी खाकी बादि नार चारों पछान। चारों इमाम चार मजहबां चार कतेबां जान। जुग जुग एहो चाल है पंज तन पाक रसूल। आपो आपणी मजहब विच सभ कोई भया कबूल। जो अमर

औताक हिन्दूओं चले विच जहान। एह भी चारे मजहब कर करम मुतीआं आन। किसे न रदहु पीर जी सभना इक अपाहि। दूजा होया न होएगा जो होआ थीया फनाहि। अव्वल आखिर इक है विचविच फानी जान। आवन जान अगणत ही जीआ जुगत पछान॥ ७० ॥

॥ स्वाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन सुन नानक सिरदार। क्योंकर मिलिऐ रब नूं क्यों कर होइ दीदार। केहड़ी सूरत रब्ब दी रहिंदा केहड़ी जाइ। खांदा की नयामतां पहिरे की कवाइ। करके केहड़ी बंदगी मिले गरीब निवाज। जां रब्ब मिले तां करज होइ पूरा होवे काज॥ ७१ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

आखे नानक सुण शाह सुण पीर बहावुदीन शाह। कहु मसकीनी! बंदगी त मिलीऐ बेपरवाह। नूरी सूरत रब्ब दी रैंहदी सभनी जाइ। खांदी राग नयामत पींदा शब्द अघाइ। करके मेहनत बन्दगी मिले गरीब निवाज। जां रब्ब मिले तां करम होइ सवरन सभे काज॥ ७२ ॥

॥ स्वाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन सचा सुनहु सुवाल। मुसलमाना छडिया खाणा चज हलाल। हिन्दू खाणा दरोग कहि तिनां होसी कौण हवाल। ओ पासन किस सजाइ नूं जासन केहड़ी जाइ। होसी की हवाल तिनां पासन की सजाइ। कलमा असहद आखके खास खान बगाना माल। हिन्दू दगा कमाई खाई की होइ तिनां हवाल। आखन मुसलमान हऊं असां रसूल पनाई। नेकी बदी न को पुछु अनपुछे भिस्ती जाई। जिनी कलमा आखिआ से दोजक लहिन सजाइ। हिन्दू राम राम आख के माल बिगाना खाइ। डिटा किछ खुदाइ है किछ घाण इक ही नाहि॥ ७३ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

आखे नानक शाह सच सुणहु बहावुदीन पीर। खाणा खाण हराम जो सो होसन अंत जहीर। ओ धरसन जुसा न बात दा सिर सहिन वडे अजाप। कटकट लड़िअन हैजमा सुने न कोई दाद। सुणे न राम रसूल को सुणे न कोइ अवतार। उम्मत छुडावन कैत भित आप जलबल होइ छार। उन अपनी मैल न धोतिया होर क्योंकर होवन पाक। नानक कहे सुण पीर जी सभी उम्मत रहे नपाक। मुख राम रसूलां आखके मुस साल बगाना खाइ। वात तिनाड़े किरतबी दोजक लैन सजाइ॥ ७४ ॥

॥ स्वाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन सुण हो नानक पीर। क्यों कर करदा नुकल रूह कहु सची तदबीर। किथहु दी हइ खाक है फिर मरदा किथे जाई। खाक बिछुन्नी खाक ते फिर क्यों मिलदी आई। रूह विछुन्ना जुस्सिओं क्यों पहिरे जुस्से और। इक टौर नूं छड के क्यों फिरदी अवरीं टौर। एह हकीकत जो दसे सांई पास फकीर। फिर पीरां दे पीर उह सिर मीरां दे मीर॥ ७५ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

आखे नानक शाह सच सुणहु बहावुदीन पीर। रवाश अंदर जो मरे फिर चलदा नकल शरीर। जुस्सा मशरक उपजया फिरदा मगरब जाइ। बाद उपाए खाक नों फिर मिले उथाउं आइ। भांडा भन्ना खाक दा वत्त ना आवे रास। फिर भांडा डोर बणाइके रूह करता ता में वास। जिचर कायम नाहि रूह टिकै न इकतै टौर। इक पलक दे अंतरे कर आवे दहि दिस दौड़। रूह पवन दी जात फिर न आवै हत्थ। दिसटी मुसटी बाहरा रहिंदा लख अलख। भंनण घड़न समरथ है भाणै हुंदा रब्ब। आपे करे

अवल ते आपे करे सब्ब। आपे बन्ने आपनो आप देवे खोल। आपे रहे खामोश होइ आपे बोलन बोल॥ ७६ ॥

॥ स्वाल पीर बहावुदीन सूरा॥

आखे पीर बहावुदीन सुणहु नानक शाह। हिन्दू तुरक दुइ हदीं सिर पर इक अलाह। हिन्दू आखण असां विच तुरक कहिण असां माहि। दुइ फिरकिआं विच किस वल सचे देह सुनाहि। हिन्दू रद्द न तुरकों रहहि हिन्दू आहि। दोहुं विच सचा कौण है सची कहि समझाइ। तुर्क कहिण रब्ब तुर्क है हिन्दू कहिन हिन्दू आहि। रौला हिन्द तुर्क दा इलहाद कर दिखलाइ। ज्यों पाणी दूध मिलाप है त्यों हिन्दू मुसलमान। रोगन हत्थ न आवहि रिड़कन हार शैतान। बहुतीयां बणीयां नसीहतां बहुत धरे कतेब। अज हैरानी मने विच इक रब्ब दुई भेद। तिनां अंदर बहुत हैन फिरके अंत न पार। पीर कहै सुण नानका कर दोहे तार पतार॥ ७७ ॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

नानक आखे पंद सच सुणहु बहावुदीर। रदहु हिन्दू तुर्क दुइ जो होइ बहुत जहीर। हिन्दू मुसलमान इक सई दी दो हद। दानों कर मनसूख तूं जो अल्लाह कीते रद। रद जहूदा काफरां मुनीफकां ते मुलहद। रूमी जगो इरमनी हबशी ते इलमाक। कशमीरी कशमीरियां हीरा तुरम लोक। कुफर फिरंगी दोजकी यूनानी बद खाइ। दहिमीए गुमराह बहु जो जानन नाहि अलाहि। फिटा दूध न कम्म किस रोगन हत्थ न आहि। जे सौ वरियां रिड़कीऐ सड़सुक मुढों जाइ। नानक आखे सुण पीर जी बाझ सच गुमराहि॥ ७८ ॥

जब इतना सवाल जवाब बहावुदीन के साथ हुआ तब एक बगदाद का पीर जलाल दीन पौत्र हजरत मुहंमद दीन का मन में कुछ जोश लाकर कहने लगा॥ ७९ ॥

॥ स्वाल पीर जलाल दीन बगदादी सूरा ॥

आखे पीर जलाल दीन सुन नानक हिन्दू फकीर। हिन्दू सूरत दोजकी विच आतश होइ जहीर। जे आवहि राह इमाम दे तां भिश्ती पावहि टाहि। पीरां अंदर पीर कुतब गौस मरातब पाई। वलीयां अंदर वली होइ शेखां अंदर शेख। विच सलारां सलार होइ जां एह बटाए भेख। हिन्दू भिश्त को न गइआ सभ घत अगन जलाई। नाम निशानी न रही पिआ किथाऊ जाइ। उस पिछे दरूद फातिआ ना को करदा याद। एहो मरातब हिन्दूआं उमर गवाई वाद॥ ८०॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥

सुणहु पीर जलाल दीन आखी नानक शाह। हिन्दू मुसलमान दुइ डिठे मैं गुमराह। जुस्सा मुसलमान दा रखिया बहिश्ती जाइ। आखर होया खाकड़ी गई सु खाकू खाइ। कुदरत जिमी नबात होइ कुछ आई कुलालो हत्थ। भांडे इटां साजके जलन पंजाबी घत्त। तोबा पुकारे खाकड़ी सुणे न को फरियाद। मुसलमान मुहंमदां फिर कदे न करदे याद। दोवें दिसन जलदीआं विच भिश्तां इक न जाई। वारस राम रसूल दोइ सकन न उमत छुडाई। रहे मरातब दुनी विच अगे दी सुध नाहि। डाहढी बनी रूह सिर फिरे चौरासी माहि। जिनां तकिया रब्ब दा से रत्ते सच नाई। काइम थीए जहान विच फिर मरे न आवहि जाइ। बिना रिआजत बंदगी कायम थीए संसार। कायम न रहे पैकंबरां कायम न चारों यार। कायम न थीऐ औतार जग राम कृष्ण मुरार। काइम न पीर फकीर होई सिध सादक सालार। काइम जुसे न थीऐ रहे कि काइम नउ। नावां अंत न पाइणी लख आवहि लख जाइ। काइम जुसा जो रखे काइम रहीए सोइ। बिना इबादत बंदगी रिहा न काइम कोई। मुशकल मुसलमानड़ी हिन्दू हरकत माहि। दोवें काइम न थीए दावा कर मर जाइ। नानक दावा

छडिआ दुह ते निआरा होइ। इथे मिलन वडिआईयां दरगह पावै ढोइ॥ ८१॥

॥ स्वाल पीर जलाल दीन सूरा॥

आखे सैल जलाल दीन बगदादे का पीर। पोता हजरत पीर दा पुछे कर तदबीर। ईफताद दो मिलदा छिरके मुसलमान। इलाहता ईक दू ईक है सची कहिन सलाम। कलमा पढ़न रसूल दा सुनहु नानक पीर। रोज क्यामत देहड़े थीसन नाहि ज़हीर। हिन्दू मुसलमान दोइ कीते नी मनसूख। दर ते बाहर जो थीसी सुखन अलाहि न चूक। कलपिआ पीर जलालदीन कलपे मुल्लां शेख। हाजी पीर मशाइकां पुरक मलंग दरवेश। सालक सादक काजियां गौस कुतब वड पीर। सभे इकठे होइकर आवें काबे माहि। इके दिखाए अजमतां नहीं तां देहु सजाइ॥ ८२॥

॥ जवाब पीर बहावुदीन सूरा नाल हाजीआं पीरां दे॥

आखे पीर बहावुदीन सुणहु जलालदीन पीर। गुरु नानक पासहु पुछणा बहुती है तकसीर। जाहर अजमत इसदी मक्का दितो सु फेर। कीते सु राह मनसूख प्रभ औंदे हैसु जेर। मन्निआ हैसु खुदाइ इक्क दूजा होर न कोइ। दूजा मुहंमद पीर है सवा राह दिखाए जोइ। हिन्दू देख न भुल तूं मुसलमान भी नाहि। होवें रदे सी मजहबां घते सी दोजक माहि। वडा फकीरी मुरातबा मारफती सच राहि। मारफती जो बाहरे सभे हैं गुमराहि। दुनियां कारण मजहब थीए अंत अपार। सच्चा फकर रब्ब दा कौण लंघाए पार। तुसीं महिरम नहीं पीर जी नानक वडा फकीर। रब्ब जिनां दे हुकम विच से सभनां दे पीर॥ ८३॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

आखे नानक शाह सच सुणहु जलाल सदात। वडा बोल न बोलीये

साहिब हथ करामात। साहिब भाव सो करे फकर साहिब दे नात। साहिब निताणिआं ताण है साहिब निमाणिआं माण। आकासां आकास लख लख पातालां पाताल। सभनां दे सिर इक रब्ब सभदी करे संभाल। जीआ जंत वस करे रब्ब दे जो वसदे लोइ। थक्कां हों ओड़क भाल हुण चुप कर रिहा खलोई॥ ८४॥

॥ स्वाल पीर जलाल दीन सूरा॥

आखे पीर जलाल दीन सुण नानक शाह कताल। चौदह तबक किताब तिसते परे जवाल। डिठे बाझों नानका खातर जमां न कोइ। कहिणा सुणना बाद है जो दिसे सच सोइ। मजलस अंदर बैठिआं होए अंदर धिआन। अखीं अगों छिप गए मजलस भई हैरान॥ ८५॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

आखे नानक शाह सच सुणहु जलाल सदात। इक असां को नाल दे हिक तां चलहु आपादिता बेटा पीर नाल जुल जलालीं नाम। वाउ चढ़े असमान विच तिसदा सुणहु बिआन। ईक पलक दे फरकने डिठे अगणित असमान। कई पैकंबर कर पीर होई रिहा हैरान। फेर गए पाताल नों डिठे कई पाताल। अवतार पैकंबरां गणत अगणत न भाल। जिथे बाबा जावहे तिथे ही गुण होइ। कारन दर्शन देखने आवैं सगली लोइ। कारां भेटां सिरजिआं नजर निआजां लख। गूना गूनी निआमतां मेवे लख अलख। इक जमीन दे अंदर बाबा पहुंचा जाइ। अगे कड़ाह तैयार सी गावन सबद अलाइ। बाबा सुणिआं संगतीं सभ दर्शन लगी आइ। रखिआ अगे कड़ाह नूं पैरीं सीस निवाइ। लई कड़ाही बाबे तड़के पाई विच कच कौल। फिर दिती कड़ाही पीर नूं बैठा सी जो कोल। इक पलक दे अंदर फिर मक्के पहुंच आइ। बेटा पीर जलाल दीन मुख ते बचन अलाइ। इस आखिर जमाने विच नानक वडा फकीर। मीरां

दे सिर मीर है पीरां दे सिर पीर। आखिओस मुंहो कलाम जो सोइ दितियो सु दिखलाइ। तुसी जाणहु होर कुछ असां बुझिआ खुद खुदाई। आकासी पाताल लख पातालां पाताल। डिटे कितने पलक विच हो भी जुलकर नाल। होटों कई पताल ने मिल कड़ाही आई। सारी मजलस अंदरे दितो सु कड़ाह दिखलाइ। सभे गए हैरान होइ नानक वडा फकीर। इके खुद खुदाइ है कहिन सभे तदबीर। सभे वदमी ढह पए मन विच बहु डर खाइ। अजी कोई निशानी रखीऐ मक्का भिशत कराइ। बाबे कउंस उतारी पाउं ते रखो निशानी उह। जो करम जिआरत कौंस दी ओह फेर न जनम धरेह॥ ८६ ॥

मक्के की साखी खत्म हुई

साखी मदीने की चली॥

एक बरस श्री गुरु नानक देव जी मक्के में रहे। तमाम हाजीयों को झुका कर आप मदीने को गए। जो हाजी लोक मक्के की ज़िआरत के मार्ग में गुरु जी को मिले थे, वे जब मक्का में पहुंचे। तब श्री गुरु नानक देव जी को मक्के में उपदेश करते देखकर हैरान हो गए। मक्के के हाजियों ने कहा कि गुरु नानक एक बरस से यहां मक्का में ही तशरीफ रखते हैं। उन हाजीओं ने कहा कि हमें इस बात की हैरानी है कि मार्ग में नानक देव हमारे साथ थे। यह इतनी जल्दी यहां किस प्रकार पहुंच गये। मक्के के हाजी कहने लगे-भाई! यह नानक खुदा का ही रूप है। इस ने तो उपदेश देकर तमाम उलटा अपने वस में कर लिये है। अब तमाम हाजी मदीने की ओर चल पड़े।

उन हाज़ियों ने यह निश्चय कर लिया कि मदीने में चार महान् विद्धान मौलवी हैं। उनसे नानक की गोष्टी हो तो यकीनन नानक की पराजय होगी तथा हम इसे इसलाम की शरण में ले लेंगे यह विचार कर गुरु नानक देव जी के साथ ही तमाम हाजी मदीने को चल दिये।

मक्के के सभी बाबा जी के साथ थे परन्तु गुरु जी अन्तर ध्यान हो गये तथा एक पल भर में मर्दाने के साथ गुरु नानक मदीने पहुंच गए। उस समय रोम का बादशाह सुलतान हमीद कारूं था। वह बहुत ही ज़ालम था। गुरु जी ने कहा- हे मर्दाना! चलो पहिले बादशाह को मिले ताकि उस का कुछ कल्याण हो सके।

इस से पहिले भी एक कारूं नाम का बादशाह हो चुका है उस ने चालीस गंज इकठे किये थे। यह भी कारूं की भांति था। इस ने पैंतालीस गंज जोड़ रखे थे। गुरुदेव उस के दरबार की डियोढ़ी में जा पहुंचे। दरबानों से मालूम हुआ कि यह बादशाह महान् कंजूस तथा ज़ालम है। इसके बारे में एक कहावत सुनी जाती है कि इस ने किसी के पास भी एक रुपया तक नहीं छोड़ा। जब वजीरों ने कहा कि हे बादशाह अब जनता के किसी भी पुरुष के पास रुपया नहीं तब इस बादशाह ने कबरों में मुर्द्रों के मुख से रुपये निकलवा कर अपने खजाने में डाल लिये थे।

उस समय अरब देश के अंदर प्रथा थी कि जो कोई मर जाए तो उसके मुख में एक रुपया डाल कर उसे दबाया जाता था, इस बादशाह ने मुर्दों के मुख में भी रुपये नहीं रहने दिये।

यह सुन कर गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह बादशाह घोर नर्कों में पड़ेगा तथा ऐसे बादशाह को धिक्कार है इतनी कह कर गुरु जी ने कहा-हे दरबान! आप जा कर बादशाह को कहो कि दो साधु डियोढ़ी में खड़े हैं तथा आप से मिलना चाहते हैं।

दरबान की बात सुन कर बादशाह बाहर आया। आगे गुरु जी कुछ

टीकरी इकट्ठी कर उनको गिन रहे थे। बादशाह ने आते ही प्रश्न किया कि यह आप क्या कर रहे हो? गुरु जी ने कहा-हे बादशाह! यह टीकरीयें हम लोग अपने साथ परलोक में ले जाएंगे। बादशाह ने कहा-हे फकीर जी! क्या कभी टीकरीयें भी मरने के पीछे साथ जा सकती हैं। गुरु जी ने कहा-हे बादशाह! यदि तुम्हारे पैंतालीस कोषों के रुपये जा सकते हैं तो क्या हमारी यह टीकरीयें नहीं जा सकती। हे बादशाह! इतना स्मरण रहे कि जो कुछ यहां दान किया जाता है वही काम आता है। जोड़ने से तथा ज़ुलम का कमाया धन इसी जगह रह जायेगा। जरा विचार कर देखों पहिले कारूं जैसे एक पैसा भी अपने साथ नहीं ले जा सके शायद तूं ले जायेगा। यह विचारने की बात है, हां यदि तू चाहे तो खुदा के नाम पर दान करेगा तो वह तेरे काम आयेगा तथा परलोक में तेरा साथी बनेगा नहीं तो मरते समय तुझे यह तेरा एकत्र किया हुआ धन महान् दुख देगा तथा फिर पछताने से कुछ भी नहीं बनेगा तथा तेरे धन के अधिकारी और लोग ही बन जायेंगे।

जो आदमी कंजूसी से तथा ज़ुलम से तेरे समान जीवन व्यतीत करता है। उस का नाश हो जाता है जैसे तेरे से पूर्व पापीओं का नाश हुआ है, किंचित उसे स्मरण कर।

बादशाह की आंखें खुल गई। कहने लगा-हे फकीर साईं! मुझे संसारी कामनां ने जकड़ रखा है। अब मुझे कुछ आप की कृपा से ज्ञान हुआ है। अब मैं तोबा करता हूं। परन्तु आप कुछ ऐसा उपदेश करें जिस से मेरा मन बुरी वासनाओं से पाक हो सके तथा उस खुदा के नाम को हासल कर सके। तब गुरु जी ने उस बादशाह को पवित्र उपदेश से कृतार्थ किया।

उपदेश श्री गुरु नानक देव जी महाराज का जो मदीना के बादशाह को कृपा करके किया।

कीचै नेक नामी जो देवे खुदाइ॥ जो दीसे जमीं पर वह होसी फ़नाइ॥ दाइम वा दौलत कसे बेशुमार॥ न रहिंगे करोड़ी न रहेंगे हजार॥ दमड़ी तिसी की जो खर्चे और खाइ॥ देवे दिलावे रिझावे खुदाइ॥ होता न राखै अकेला न खाइ॥ तहकीक दिल दानी वही भिश्त जाइ॥ कीजै तवज्ञा न कीजै गुमान॥ ना रहेगी दुनीआ। न रहेगा दीवान॥ हाथी व घोड़े लशकर हजार॥ होवहि गरक पल में न लागे गी बार॥ दुनियां का दीवाना कहे मुलक मेरा॥ आई मौत सिर पर न तेरा न मेरा॥ केती चली देख वाजे वजाइ॥ रहेगा वही एक साचा खुदाइ। आया अकेला अकेला चलाया॥ चलते वकत कोई काम न आया॥ लेखा मंगीजै क्या देगा जवाब॥ तोबह पुकारे जां पाए अजाब॥ खलक पर किया जोर दमड़ा कमाया॥ खाया हंडाया अजंई गुवाया। आखर पछोताना करे हाय हाय॥ दरगाह गया बहुत पांव सजाइ॥ लानत है तै कू वा तैडी कमाई। दगेबाजी करके दुनियां लूट खाई॥ पोए पिआले वा खाए कबाब॥ देखे रे कारू जो होते खराब॥ जिस का तू बंदा तिसी का सवारिआ॥ दुनिआं के लालच तें साहिब वसारिआ॥ न कीतीआं ईबादत न रखिआ ईमान॥ कीती हकूमत पुकारे जहान॥ अंदर महल के बैटों तू जाय॥ हरमा से खेले खुशबोई हवाय॥ पूछे न बूझे कि बाहर क्या होइ॥ हरामी गरीबों की मारे बिगोइ॥ वसदी उजाड़ें तो फिर न बसाइ॥ कूकहि पुकारहि की दाद न पाइ॥ करड़ी लख जोड़ी करे बेशुमार॥ कई किसान बपुड़े मरीवहि हजार॥ हाकम कहावें अदालत न होइ॥ दुनियां का दीवाना फिरे मस्त लोइ॥ लुट मुलख सारा पहिरे खर्चे खाई॥ दोजक की आतश मारेगी जलाइ॥ न कीचे हिरस देख दुनियां के दीवाने॥ हमेश न रहेगी तू ऐसी न जाने॥ उटाते सफा तिसको लागै न बार॥ तब किसकी है दुनियां किस के हैं घर बार। न कीचै हिरस बहुत दुनिया के यार॥ चंद रोज चलनहि किछु पकड़ड़ु करार॥ शरमिंदा न होवहि किछु नेकी कमाहि॥

लानत का जामा तू पहिरे न जाई॥ गफलत करोगे तो खावोंगे मार॥ बेटी वा बेटा को लएगा न सार॥ तोबा करो बहुत कीजै न जोर॥ दोजक की आतश जलावेगी गोर॥ मसाइक पैगंबर केते शाह खाम॥ न दीसहि जिमी पर तिनहु के निशान॥ उड़ते कबूतर जनावर की छाउं॥ केते खाक हुए न पूछे को नाउं॥ चाली गंज जोड़ै न रखिओ ईमान॥ आखर वकत कारूं हुआ परेशान॥ नदानी इह दुनियां व फानी मुकाम॥ तूं खुद चशम बीनी इह चलना जहान॥ हर बकत बंदे तूं खिदमत संभार॥ मस्ती व गफ़लत में बाजी न हार॥ तोबह न कीतीआ करदियां गुनाह॥ नानक इस आलम से तेरी पनाह॥ १॥

जब श्री गुरु नानक देव जी ने यह उपदेश दिया तो सुलतान हमीद कारूं हैरान हो गया और मन के किवाड़ खुल गये तथा रोने लगा और कहने लगा कि हाय! हमारा क्या हाल होगा। हे अल्लाह! हम लोग आज तक गफ़लत की नींद में सो रहे थे तथा हमें प्रलोक का कोई भी भय नहीं था क्योंकि हम अज्ञानी थे, हे गुरु नानक! आपके इस पवित्र उपदेश ने हमारी आंखें खोलदी है तथा हम भयभीत हो रहे हैं अब आप हमें कुछ आज्ञा करें।

गुरु जी ने मुस्करा कर फुरमाया, हे बादशाह! बातों से कोई कार्य नहीं होता, जब तक उसे कार्य रूप में न किया जाय। जब तक परमात्मा के स्मरण तथा संसार में भले काम न किये जाये तब तक इस इन्सान का कोई काम भी पूर्ण नहीं होता तथा वह संसार का स्वामी उस पर कभी भी कृपा नहीं करता। संसार की मित्रता किसी काम नहीं आती। उस ईश्वर के साथ किया हुवा प्रेम ही काम आता है। जब तक यह इन्सान पिआले में गर्क है तथा जब तक इसे दुनियां की कामना स्ताती रहती है तब तक यह गुमराह ही रहता है और जो गुमराह है उसके लिए दोजक की आग बुला रही है और वह जरूर ही उस में जलेगा।

यह सुन कर बादशा ने कहा-हे पीर नानक! उस पाक जात से मुहबत करने का क्या ढंग है। तब गुरु जी ने एक शब्द उचारण किया।

राग तिलंग महला १ ॥

दोसती यारो दोसती सिर पर जाणै॥
हुकम पछाणै शाह का चले खसम के भाणै॥ १ ॥ रहाउ॥
दोसती तां पर जाणीऐ जा रच मच लावे॥
घुंड न कडे खसम सों सरम सभ चुकावे॥ १ ॥
सोइ निमाणी झड़ पवे खसम दे दुवारे॥ २ ॥
दोसती तां पर जाणीऐ जां गुर न पखाले॥
जोर न लगे दोसती कली मुल्ल बिकावै॥
दगे स्यों लाल न रीझई जे लख जतन कमावै॥ ३ ॥
भट पई दोसती कली दी गई देखदिआं हू॥
नानक सोई दोसती जो तोड़ निबाहु॥ ४ ॥

यह शब्द सुन कर बादशाह गुरु नानक देव जी के पवित्र चरणों पर गिर पड़ा और कहने लगा अब आप जैसे हुकम करेंगे वही मेरी ओर से किया जायेगा। गुरु नानक देव जी ने कहा- हे बादशाह! तुम्हारी जेल में जितने भी कैदी हैं पहिले उन सब को मुक्त कर दो। इस से तेरा कल्याण होगा तथा आज से गरीबों पर जुलम करना त्याग दो। इस से ईश्वर तुझे प्रेम करेगा। सुलतान ने गुरु जी की आज्ञा बचन तथा कर्म से मानी और ईश्वर पूजन में लग गया लंगर जारी कर दिये। प्रत्येक स्थान पर दान होने लगा। खजाने जो एकत्र किये थे सभ का दरवाजा खोला गया। तमाम अरब देशों में गुरु जी की कृपा से आनंद छा गया। गुरु जी ने कहा हे सुलतान! जो ईश्वर का हो जाता है उस की मदद ईश्वर करता है! गुरु जी ने कहा हे सुलतान! अब ईश्वर तेरे पर सदैव प्रसन्न रहेगा तथा तुम्हारी कृपा देख कर हम लोग भी तुझे आर्शीवाद देंगे जिस से सोने पर सुहागा के तुल्य चमक उत्पन्न होगी अर्थात् तुझे

बहिशत में वह सुख प्राप्त होंगे जो सुख परमात्मा के प्यारों को प्राप्त होते हैं।

इसके पश्चात् हाज़ी लोग भी मदीने में आ पहुंचे। आगे उन्हों ने देखा कि श्री गुरु नानक देव जी आसन पर विराजमान है तथा रबाबी मर्दाना रबाब बजा रहा है वे सब देखकर हैरान हो गए तथा पूछने लगे कि - यह फकीर तथा पीर नानक यहां कब से आया है? तब उन लोगों ने कहा कि ये फकीर तो कई दिनों से यहां बिराज रहा है। अंत में उन हाजियों ने मदीने के मुल्लाओं को बुलाकर श्री गुरु जी से प्रश्नोत्तर करवाना चाहा। बाबे नानक देव जी ने उत्तरों में सब को हैरान कर दिया। जो भी प्रश्न मुल्लाओं तथा उलमाओं की ओर से होता था उसका उत्तर गुरु जी ऐसा देते थे कि बस सभ के मुख बंद हो जाते थे। अंत में उन लोगों ने यह जान लिया और मान लिया कि नानक एक पहुंचा हुआ फकीर ही नहीं अपितु यह स्वयं अल्लाह की पवित्र ज्योति है जो नर तन धार कर संसार के कल्याण के लिए इस भूमि पर प्रकट हुई है।

इसके पश्चात् कुछ गुमराह मौलवियों ने श्री गुरु जी को परास्त करने के लिये कमर बांधी और यह निश्चय किया कि इस काफर का अपने दीन मुहम्मदी में लाने के लिये कुछ जोर अजमाई करनी उचित है तथा इसे शास्त्रार्थ में नीचा दिखाकर इसलाम की गोद में लिया जाए। एक ने कहा-भाई! गुरु नानक साधारण मनुष्य नहीं जो तुम्हारे हाथ आ जाए यदि तुमने इसे अपने हाथ लिया तो याद रखो यह फरिशता है। फौरन गुम हो जाने की ताकत रखता है तथा इस फकीर में शक्ति है। इसने मक्का शरीफ को फेर दिया है। हमारे विचार में तो यह फ़कीर तमाम आलम को खत्तम करने की ताकत रखता है। ये तो जमाने का कोई सिद्ध पुरुष है मक्का शरीफ में बड़े बड़े आलमों के साथ इस साधू का शास्त्रार्थ एक वर्ष भर होता रहा है तथा पूरा वर्ष इसने न कुछ खाया है न ही कुछ पिया

है। तमाम हाजी लोग इसे घेर कर बैठे रहे हैं। इसे खान पान की तो इच्छा ही नहीं है। इसके अलावा इसके प्रश्नों का उत्तर देना अत्यंत कठिन है तथा यह सभी के प्रश्नों का उत्तर सही सही देता है यदि कोई इस नानक फकीर को जीतने की खाहिश करता है तो वह हार जाता है।

अब तो यह विचार है कि मदीना शरीफ का जब हज्ज होगा उस दिन यह नानक फकीर भी वहां अवश्य आयेगा तथा उस दिन बड़े बड़े उलमा तथा राजा लोग भी वहां उपस्थित होंगे तथा नानक फकीर के साथ ख्यालात का मुकाबला होगा।

इस के पश्चात् जब हज्ज का दिन आया तब तमाम हाजी जो मशहूर उलमा थे वे इकट्ठे हुए तथा गुरु जी के साथ मुकाबला हुआ।

॥ स्वाल चार इमाम सूर॥

आखे इमाम कमाल जी नाले सैद जमाल। गौस आलम कुतब दीन चारों रुकन कमाल। पुछदे हां चार नसीहतां तिसदा देह ब्यान। बेटे आदम सफी दे हिन्दू मुसलमान। दोहां अंदर शक्क है दुहि विच सच्चा कौन। एक हकीकत जो हल करे असीं होवहि आदम तौन॥ १ ॥ दूजा पूछे जमालदीन कहुं तू नानक शाह। हजरत आदम ते थीए साबत दोवें राह। हिन्दू हुई मुसलमान कुफर ते इसलाम। दोवें हुकम जहान विच दोवें जान अलाम। अगे पैकंबर खलक विच अगे हैं औतार। तीजा केहड़ा मजहब है तिस दा कहु विचार। जो आखे तीजा पाक है पाक है परवदगार। आदम सूरत होई कर न करे करार। पिछे जमाने जो थीए काफरां दे अवतार। हुन थीए हम मन सूख सभ अवल मुहंमद यार। जे ता कीआ धिआन तुहि असांथीं अगे जाइ। जादू करके हिन्दूआं दितोइ मक्का फिराई शरतां हिन्दू तुरक दीयां फिर नौसर करे ब्यान। तैं कीते जो मनसूख दोइ हिन्दू मुसलमान। हिन्दू रहन न पासनी जो रब्ब रसूल

खुदाइ। नौबत मुसलमान दी वञ्जी है हुन आइ। असीं पुछदे हां तकरार कर करो तसली एह। असीं भी छडदे नाहि तुहि बिन सचे सुण सनेह॥ २॥ तीजा पुछे गौस दीन करके बहुत करार। अगे रसूल खुदाइ है अगे चारों यार। तुहि कुछ जाता होर है ओह भी एह विचार। अगे हिन्दू जान विच हुण आया मुसलमान। दोहां विच जो रद थीया तिसको कहु शैतान। दिता भिशतों डाल कर थीआ नाम अलीत लिखया विच कुरान दे आखिया नबी हदीस॥ ३॥ चौथा बोल कुतबदीन देह सचा विचार। सभनां उपर कलाम रब्ब सब मुल्लां करहि बिचार। कन्नीं पवे बुतेल जिस होवे गुनाहां पाक॥ काइम होवे कयामती फेर न मिले तलाक। पंज निमाजां पंज रकत रोजे त्रीह पछान। चार इमाम चार मजहब जानहि मुसलमान। तैं क्यों सभे रद्द किये की करके तदबीर। इनां दी सल्लड़ी नहीं देदें ने ताजीक। बिन काते तसलड़ी किसे न जाइ। पंजवीं कौन किताब है असां भी पढ़ समझाइ। चार इमाम चार मजहब चार देख ईमाम। अवल करहु तडल्लड़ी पिछों करहु कलाम॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

आखे नानक शाह सच्च सुनो चार इमाम। सैद कमाल जमालदी कुदरती गौस लजान। अवल इक खुदाह सी दूजी कुदरति तीन। तीजे फकर खुदाइ है सच पीर जिनां यकीन। हिन्दू मुसलमान दुई केहडी विच किताब। दुहां दावा पकड़िया मरदे झगड़ गवार। टहिकन चूलां वांस ज्यों आतश पैदा होई। आतश जुसे शैतान है जल बल मरदे दोइ। लिखिया किस किताब विच दावा राम रसूल। सोधह चार किताब विच सोध हदीम समूल। इक खुदाई कुदरती दूसरी मिल दिसे दोइ आइ। पैदे दुइ थीं कि होए है देहो सच बताइ। दुह थीं उपजियां जानवी होए चार कतेब। चार कौल खुदाइ दे चौहां इको भेद हुजत राह शतान दा कीता जिनां कबूल। सची दरगाह ढोइ न लहन भरे सफात रसूल दावा छडो

इमाम जी आया तमक मिटाई नेड़े मूल न आवई दोजक संदी भाइ। दुहीं सिरीं इक रब्ब है होरन दूजा जान। हिन्दू मुसलमान दुइ सूरत जान शतान। तीजा मज़हब पाक है जो दावा करे न मूल। लिखिया विच किताब दे किहा खुदाइ रसूल। गुस्सा करके जल मरन दुनी वलेवे काम। दूहां मज़हबां तो गए भरे न मुरशद हाम।

॥ स्वाल बाबा नानक शाह ॥

आखे नानक शाह सच्च सुणहु चार इमाम। राज तुसाडा दुनी पर करहु अदल ब्यान। काजी मुफती तुसाडड़े मीर मलक पातशाह। हुकम तुसाडा दुनी पर आपन चलाए राह। अवल चार इमाम सन हाबील कबील जान। ईरज तरल चार भाईयां चारों पाक इमाम। पिछे होर जो थीए पैकंबर गिणती गिणी न जाइ। इस पैकंबर चार यार सन धुर दी चलदी आइ। अवल पीर पैकंबर खुदाइ सी नाले चारों यार। बादी आबी आतशी खाकी चार विचार। फिर साजि ओसु आदम शफा नू होया पोशीदा आप। न ओ जंमिआ किस जाइया न कोई माइ न बाप। कीतीआं कौन अदालतां सच्च सुणावहु मोहि। जो लिखिया चार किताब विच सभ बोल बुलावहु तोहि॥

॥ जवाब गौस दीन इमाम सूरा ॥

आखे इमाम गौस दीन पढ़ अहिमद दी किताब। करे गुनाह कबीर जो तिस नो बड़े अजाब। जो हालत करे खुदाइ दी हानत करे रसूल। फिर ईमान ते मंने न कुरान रसूल। दूजा कबीर गुना होर तिसदी सुण तदबीर। धी भैण सक्की माउं सों करे गुनाह असीर। तिन शबीर करके मारीऐ कखी अगनि जलाइ। धूहीए सारे श्हार विच टंगीं रस्सा पाई। फिर सुटिए जाई उजाड़ विच कौवे कूकर खाइ। करे कबीरी गुनाह जो तिस दीजै इह सजाइ। इक कबीर गुनाह हैन किवें न बचना होइ। काफ़र

होइ मुसलमान दोहां विचों कोइ॥ ४ ॥

॥ जवाब इमाम दूजा सूरा ॥

सुनहु नानक शाह आखे कुतुबुल दीन। आदम सड़िआ अजाब है जो होवे वडा बदीन। इमाम मलक आखिआ लिखिया विच किताब। पहिले गरदन मारीऐ संग सारा देइ अजाब। बंद बंद पिछों कीजिए चहुं कुंटी देह टगाई। होर तजीर न इस नूं बिन मारे ला जाए गुनाह॥ ५ ॥

॥ जवाब इमाम तीजा सूरा ॥

आखे इमाम जलाल दीन पढ़ शाफी किताब। आदम सूरत रब दी इह लायक नहीं अजाब। साड़न मारन अजाब है रहे बद मुदामी एह। खाणा देवे लेण बिन लावण नाल न देइ। विच मारे बंद दे इह सभ ते वडा अजाब। लिखिया विच किताब दे होइ गुनाह थीं पाक॥ ६ ॥

॥ जवाब इमाम चौथा सूरा ॥

कहे इमाम कमाल दीन पढ़ आजम दी किताब। साहिब आदम सिरजिआ दितो सु वडा किताब। कीतोसु आपणे तुल्ल फिर दितो सु तखत सुबहान। सिजदा कीता मलाइकां विच निवियां नाहि शैतान। रन्न हूं दुखतर साज के नाल कीतोसु तिस जनाहि। जोड़े जम्मे चार तब इक दूजे दीया वियाहि। उसदा जोड़ा उस नूं अदला बदला कीन। अव्वल आदल हउ किया तिस पर करे यकीन। इक थीं इक इह किया मसला न मनजूर। धी भैण सक्की हराम है होर कही हलाल रसूल। न मारीऐ न साड़ीए नाहि कीजे बंदी माहि। करके रूहि सिआह तिस सभ मुलकां विच फिराहि। देई सजाइ तां जीनऐ हद अपनी विचों निकाल। करन गुनाहि कबीर जो तिना कीजे एह हवाल॥ ७ ॥

॥ स्वाल फकीर नानक शाह सूरा ॥

पुछे नानक हिंदगी सुणहु चार इमाम। आजम दा फुरमाया करहि न मुसलमान। आदम मारिआ अज़ाब है जिओं ढाए मसीत अज़ाब। साहिब दा फुरमाया लिखिया विच किताब। ढाहे मसीत फिर उसरे गारा ईटां लाइ। आदम मारिआं न जी सके भावें कोई न जावाइ। एह अजाब अजीब है सिरों न उतरे मूल। लिखिआ विच कुरान दे कहिआ खुदाइ रसूल। इलम आजम बाझ किताब होर जो कीते तीन इमाम। मारन आदम शफी पढ़ के राह शैतान। पातशाह नू फुरमाया साहिब खालक आप। लिखिआ चार किताब विच सुणहु कलमा पाक। पैकंबर कलमा आखिया इकौ इक खुदाइ। सभनां अंदर इक है घट वध कही न जाई। लख चौरासी जीआं विच रब्ब हिकसे दा मुकाम। मुखालिक चार नसीहतां कीतीयां हैन शैतान। होमें पाई सभस विच इक दूजे मन्ने न कोइ। नानक आखे इमाम जी इस बिधि बिगड़ी लोइ। पातशाह नूं फुरमाया सच्चे आप खुदाइ। लेवन खबर गरीब दी शेख फरीद बणाइ। गोशा नशीनी फकर जो बंदगी करन खुदाइ। अंधे लंगे ज़ईफ़ जो पैरी सके ना जाई। जो भुखे मरदे ताम बिन मिहनत करदे आइ। मेहनत कंम न चलिआ फिर चोरी कार कमाइ। इक दिन चोरिआं पगड़िया घत बंदी मिले सजाइ। हाकम इयों न पुछिया किस कारण किया हराम। गुनाह जिमें पातशाह तिस दिया न लंगर लाइ। अण हुंदे कराए सभ कम भले बुरे जग माइ। अण हुंदा मराए बद फैलीयां पर घर करहि न जाई। जे अंदर सभ कुछ होवे हराम माल जर ताम। इतनी दौलत घर रखे फिर घर पुर केर हराम। लायक ओह सजाइ दे जिउं भावे देह सजाई। आजम इओं फुरमाया तिस उपर अमल कराई। जो भुखा होवे ताम दा तिस पेट भरे पातशाह। जो भुखा होई जनाह दा तिसे देवे औरत व्याह। जो

भुखा होवे माल दा तिस देवे वणज कराइ जे खा नूं पातशाह दे ओर मेहनत लए कराइ। जिस लायक होवे कार दे तिस कारे लये लगाइ। जे ऐसी होइ जहान विच सभ लगे हलाले जाह। खबर लवे जहान दी पातशाह कहाए नाम। सूबे नाइब आपने सब मुलकीं नकल तमाम। सभ खावहि लुट जहान नूं पी दारू खाइ कबाब। भुखे मरण गरीब जे सभ सिर पातशाह अजाब। करन किरसानी किरसान जो ओह लैवन अन्न जमाइ। करके अन्न त्रिभावली त्रै हिसे करन बनाइ। दुइ खांवद इक हाकमें जो इस विध अमल होई। कर इतबार खुदाइ पर भुखा मरै न कोइ। लालच करके हाकमां लुट लैंदे घर किसान। त्रै हिस्से लई हाकमां भुखे मरदे सभ नस जान। होइ उजाड़ा मुलक विच बीजे अन्न न कोइ। अन्नों बाहजों आदमी मर जावन रहिन सोइ। बाकी रहे किरसाण जो उठ धाने कित लाग। उजड़ी पै गई मुलक विच लोग गये सभ भाग। बदनीयत कर हाकमां लुट लीता सभ जहान। चशमी बेख अमाम दी इयों कियामत पहुंची आन। थीआ फनाह जहान विच सिर पातशाह अजाब। खाये खेत्री वाड़ जे तां पुछे कौण जवाब। लैं इजारे आंवदे सूबे मुलका माहि। बखशी ते बुता तीए और दीवान कहाइ। काजी मुफती मौलवी सिर सरद तिनां सरदार। लैंदे खिदमत दम देइ लुट खावन संसार। इक्क न कोई पहुंचिआं कूक रही कुरलाई। जे लागे जाई नजीक को अगे देन पिआदे मार। एह निआओ वरतिआ अमल तसाडे माहि। डुबे नाउं पताल देइ भी जिमें तुसां गुनाह। जिती जहान विच पातशाह सभ उमत रसूल कहाइ। मिल गिल सब अजाब तिस फिर लगहि पैकंबर आइ। नायब तुसी रसूल दे कहिओ चार इमाम। करहु मुनादी विच को करो न ऐसा काम। सभ अजाब जहान दे सिर तुसाडे होइ। करन गुनाह जो उमती तिना हटकन हार न कोइ॥

॥ स्वाल चार ईमाम सूरे ॥

सुनहो नानक हिंदगी आखण चार इमाम। खत्तम मुहम्मद मुसतफा आया विच जहान। अग्गे जो होइ पैकंबरां इक लख अस्सी हजार। कीते सभ मनसूख हैन नबी मुहंमद यार। इस थीं अगे ना होर को अलक माशूक। अगे जोई पैकंबरां कीते सभ मनसूख। आखर इत ज़माने दे खादम नबी रसूल। नाल चारों यार मुसलमां जो करदे मसाल मसूल। उमर खिताब अबूब कर उसमान अली सादात। वारस चारों तखत दे जो नबी बहाए आप। वारी आपो आपनी अमल कीतिआं ने पाक। रोज़ कयामत हद तक रहसी रब्बी रसूल। जाहिर सभ से कुंट विच कीता सभ कबूल। अगे होर अमल न चलसी पैकंबर उते कोई। जे करसी जोरा आई के मार लईसी सोइ। सभ आसी इकते राह विच होसी मुसलमान। इस जमाने दा पातशाह नबी रसूल सुलतान। चलिया अमल मुहंमदी इस दे परे न होर। खादम सभ पैकंबरां जिता सू बडा जोर। तू भी आया नानका साहिब वड करामात। जितनिआं हाजीआं काजीयां गौस कुतुब सादात। जोगी जंगम सेवड़े ब्राह्मण ते सन्यास। खट दर्शन पैकंबरां छत्ती पाखंड उदास। साधी हई जमीन सभ छडियो न आसा पास। फरिआ मक्का आइके करे बड करामात। हुण आया पातशाह रूम विच मिलिओ पातशाह जो जाहि। जालम कारूं हमीद नूं घतिओ सिधे राहि। जिन छोडी दमड़ी गोर विच मुरदे छड ढढोल। कहु रुपये मुंह पट कर सभ गोर। कारू हलाइक जोड़िआ खजाना चाली गंज। इस पैंताली जोड़ियां रखिआ खजाना संज। जो लगा करन खदाइतां छड दिती ओस बंदीवान। कर के खादम आपना होया मोम समान। आंदा ही आपना मजहब विच जो आहा मुसलमान। मक्का रूम जित के हुण वड़िया मदीने आइ। इक अमाडी निशा कर इके कुछ करामात दिखाइ। जिथों तीकर

उसदी सभ होईआं कठीआं आन। कर देणी संग सार सभ मिल कर मुसलमान। दावा कर पैकंबरी है अरब सताना अरब छडस नाहीं जींवदा कुल लाइ लै अपणा तान॥

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

आखे नानक शाह सच्च सुण हो चार ईमाम। मक्का है महादेव का ब्राह्मण सन सुलतान। उपजिआ ब्राह्मण जद विदों होइ कर मुसलमान। बाणो बणाई आपनी रखिओसु नाम फुरकान। बाणी ब्रह्मे देव की मिली सभ संसार। चारों बाव कतेब दे चवां चारे राह। दावा रख खुदाइआं गाआ जिबे कराइ। कीते ब्राह्मण भ्रष्ट सभ दितिओसु वांग अलाइ। कलमा इक खुदाई कहि मुहंमद रसूल सुनाइ। फेरिअ सु हुकम विच सभ होवे मुसलमान। बहुतिआं हुकम न मन्निआ जो आहे मायावान। जो मरदे मुख अजाल नाल सो मिलै पैकंबर जाइ। देख के हदिआ दीनता आप सेती लए मिलाइ। मिलिआ कौमां लुट नूं ऐवें मिली न कोइ। कुझ निवाई जोर कर शाह मरदां खड़क बजाइ। तां भी जीत न सकिआ सि हिन्दू हिन्दूस्तान। जे हुकम न होवे रब्ब दा कीतीयां जोर हराम। फिर बीड़ा चाया मोम दीन सय्यद शाह मदार। आए शाह खुरासान दे दोई चिहल तिनां दीदार। इसे हड़ हड़ा चिहलतन कहे कहां चले मसतान। जिस दे दावा दार हो अगे भी हिंदोस्तान। असी सहाब पैकंबरी आए नाल इमाम। असी सारे हिन्दु कोइ विच शाह मारिआ हिन्दोस्तान। शाह अली बडा इमाम सी रूमी सिर सुलतान। वारा कड न सकिओ रहिआ खेत नदान। जे रहिंदा नहीं जानवहु तां सुन्नत लेहु बनाइ। जादा बाले जबर हैन बिन जाईद अगे जाइ। शाह मरदां आया जोर कर सिंधों गया न पार। लिख गया तलाक नूं अंदर परबत बार। तब धर के हिन्दू भेसको चले मोमन मदार। आए हिन्दुस्तान विच तब लागे करन विचार। इक

रिहा अजमेर विच इक रिहा मकन पुर जाइ। करके नाटक चेटक हिन्दू लए विलाई। रहे हिन्दूस्तान विच फकर अलह दे होइ। जोरी हिन्दू न जितिआ कर जोरां रहे खलोइ। अगै जोइ अजय पाल वसदा सी अजमेर। नाटक चेटक की मोदनी कीता जेरी जेर। नाटक चेटक कर मोदनी बैठा पीर कहाइ। राजा परजा हिंद दा सभो निविया आइ। हिंदुआं होया न तुरक कोई इए रहे ईमान। अमल हिंदुआं का हट गया वध गए मुसलमान। इक अध हिंदू भी रलाइ के लै आवन अपने राह। उठे रैयत होई के मन अंदर दगा कमाइ। कदम तुरकां दा आ जदों पइआ हिन्दोस्तान। हिन्दू घटन दिनों दिन वधण मुसलमान। यक वजूदी तुरक सभ करके बहुत करामात। दाढ़ी मुच्छ मनाइ के मंनी आण सदात। दर्शन लाइओ सु दिगंबरी खट दर्शन मिलिया आये। तुरकी दावा छड के बैठा विभूत चढ़ाइ। अगे हिन्दू धर्म सी तुरक न दीसे कोइ। पैर पिआ जद तुरक दा कलजुग वरतिआ लोइ। राज तुरक का आया उठ गया हिन्दू राज। सभ मन्त्री ताबिया तुरक की हिन्दू होइ मुहताज। हिन्दू हौइ मनसूख सभ जब आए मुसलमान। होई फिर पातशाह जग अगे रख निशान। मशरक दिना मगरबीआं करके बहुत खरूज। अगे रख क़ुरान नूं करन मुकामां कूक। देहर देवी देवते दिते सभ गिड़ाइ। अपना अमल चलाया गोरी पीर समाइ। गंगा बनारस हिन्दूआं मक्के मदीने मुसलमान। राह चले दोइ जगत विच जोर नच्चन विच शैतान। धुमां धाम बहु करन लाइन वडे जोर। साहिब जोर न भावाहि जे चाहे भेज होर। बैठा तखत पैकंबरी शेर अली सरदार। भाई कहीए रसूल दा साथ जवाई यार। कली कीता सफर जद तां रहे हसन हुसैन। दावा करके तखत दा लगे बजीदी लैन। हसन हुसैन मार के यजीद होया पातशाह। मरवा होया वंजीर पास जो खासा यार कहाइ। सयदा कीता खारूज फिर मारिया यजीदी दी आइ। तब दोइ बिधि दोइया उमती दोइ बिध चले राह। इक सुनी इक

राफ़जी फिरके दुध बधराह। होइयां दोइ बिध उमती यजीदी हुसैनी होइ। होवन लगा झगड़ा तब रिहा मजहब अलोई। मुसलमानां आप विच लगी होवन मार। रही मकूफ मुहंमदी कौन लए फिर सार। भेजे खुदाइ जहान विच इक जपावन नाम। होरी ते होर होइ गई तां बिसर गया फरमान। तब हिन्दू मुसलमान दुइ कीते रब मनसूख। लै फरमान खुदाइ दा नानक किया खरूद। आखे नानक शाह सच सुणहु चार इमाम। देखे हुण करामात होर सुन दे से जो कान। कान उगलियां पाइ तब नानक दिती बांग। जितनी उमत जमा सी सुन होइ सुण कर चांग। वधे जुस्से खसम दे हल्ले जुल्ले न कोइ। कारखाने छत्तीस जग विच होइ गए बंद सोइ। काजी हाजी मौलवी मुल्लां शेर उलमाइ। अखी वेखन तुर तुर मुखहुं न सकन अलाइ। बाबे किहा इमाम जी कर संग सारी माहि। बहती उमत देख कर गरब किया जो तोहि। करके कुदरत रब्ब दी छडे बंदी वान। गल्ल विच पल्लू पायके सभ कदमी उठी आन। चारों करा अरदास तब सुणीये नानक शाह। ज्यों असां कर छुडाया होर उमती भी छुडवाइ। श्री नानक डिठा नजर भर होइ बंद खलास। बंद कुडाई सतिगुर रब्ब अगे कर अरदास। हारिआ सभना उमती जित्ती मदीने माहि। हारे वारे इमाम सभ जितीआ नानक शाह॥

॥ स्वाल चार इमाम सूर॥

सुणहु नानक हिंदगी आखण चार इमाम॥ धरती विच समाईन खासे मुसलमान। हिंदू की लग चरन नाल जो आतश विच जलाइ। होइ यहूदों काफरां दोजक लए सजाइ। अबल दोजक आतशी जो जुस्से घत्ते साड़। रूह विछुनां जुस्सियां मुखहु पुकारे धाड़॥ २८॥ आतश विच पुकारदा सुने न कोइ दाद॥ कौन छुडावे तिस नूं जो आतश सड़िआ याद॥ इस आखर जमाने विच आदम सड़ि अजाब॥ खुदाइ रसूल फरमाया

लिखिआ विच किताब॥ रूह न जुदा जुस्सिओं अरबा नासर एक॥ हिकस हिकस राग अंग कहे इमाम बिबेक। पिछले जुग मनसूख हैन अमल तिनां दा नाहि॥ कलयुग अमल है खाक दा सभ खाके विच समाइ॥ खाक बहिश्त मुकाम है दोजक दी नहीं जाइ॥ कहै इमाम सुन नानका हिंदू छडन हार गुमराहि॥

॥जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

आखे नानक हिंदगी सुनो चार इमाम। मुइआ दुख न रूह नूं मिट्टी सुन्न मसान। इक दबिअन इक साड़िअन इक दिचन नदी रुढ़ाई। इक पै रहे मैदान विच गए कौवे कूकर खाइ। रूहे दुख न पोहिआ खाक मिला संग खाक। मुइआ जुस्सा पलीत हो मिल खाके होवे पाक। दबन साड़न रुढ़ावन पाया रहे घर माहि। जुगां जुगां दे धर्म हैं आपो आपनी वाहि। दबियां न मुसलमान होइ साड़्या सन्यासियां न काफर होइ। जेही ज़माने चाल है तेही वरते लोइ। जोगी सन्यासीआं पट परसन हिंदवान। धरती विच बिठायां होइ न मुसलमान। धरती विच बिठावन कलजुग दाग परवान। वेदां अंदर लिखिआ जन नानक कहे बखान। जो ऊरे दीआ हुज्ञतां पेश न जावे कोइ सोइ वरते जगत विच ज्यों ज्यों खसम रजाइ।

॥ स्वाल काज़ी रुकनदीन सूरा॥

आखे काजी रुकनदीन सुनो नानक शाह। त्रीहे हरफ़ कुरान दे साजे आप अलाह। मायने इक इक हरफ़ दे कहिए कर तदबीर। जिस मुरातब को पहुंचिआ के साधू के पीर। अलफ़ बे फरमाइहि मायने करके ब्यान। तुसीं भी आखहु शाह जी सच्ची रब्ब कलाम। सिफत तमामी सभी खोल सुनाइ। आखे काजी रुकनदीन करीये बरा खुदाइ। हिंदु मुसलमान दुई इस दे हन गुमराह। बाझों झगड़े होर नाहि ढूंड सच न नाहि। जिहड़ी

गल खुदाइ दी कहे न कोई मूल। कारन लालच दुनी दे झगड़े राम रसूल। राह सचावा दस्सीय जे वंस आवे जीउ। हुज्ञत हाजत वरज कर रहे निमाणा थीउ।

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी॥

सुणो! काजी रुकनदीन आखे नानक पंध। सोई सियाणा जग विच तिस बहुते बंध। त्रीहे हरफ कुरान दे त्रीह सुपारे कीन। तिस विच कुझ नसीहतां सुण कर करे यकीन। करे पुकार किताब बहु खातर जमा न होइ। जो रहि शैतानी गुम थीए पहुंचिआ जान न कोइ॥

॥ सिहरफी कही गुरु नानक देव ने॥

अलफ़ अल्लाह को याद कर गफ़लत मनहु विसार। सास पलटह नाम बिण धृग जीवन संसार। बे बदायत दूर कर कदम शरीयत राख। निव चलहु अगे सभसदे मंदा किसे न आख॥ २॥ ते तोबा कर बदी ते मत तू एवे जाहि। तन बिनसै मुख गडीऐ तब तूं कहा कराहि॥ ३॥ से सनाही बहुत कर खाली सास न कढ। हटो हट बकाया मुल्ल न लहसी अढ॥ ४॥ जीम जमायत जमां कर चलन दा कर बंध। बाहजों साईं आपने फिरसी अंधो अंध॥ ५॥ हे हलीमा पकड़ तू दिल थीं हिरस निकार। धावन वरजहु रुकनदीन हरदम खालक सार॥ ६॥ खे खाम तेऊ भए जिन बिसारिआ करतार। दुनियां लालच लग मरहि मूंह उठानहु भार॥ ७॥ दाल दिआनत करे मन अठे पहिर न सोइ। एक पहिर घर जागनां साइ सच बगोइ॥ ८॥ जाल जिकर कर आजज़ी खातर नाहि डोलहि। तिल न लगे रवाल तन भोले मने चुकाहि॥ ९॥ रे रहित ईमान की तेऊ देखहि जाइ। पूजह वरजन रुकन दीन साईं सो दिल लाइ॥ १०॥ जे जारी कर मनै माहि साइ बेपरवाह। सो किछु चाहे जो कहि तिसका क्या वसाह॥ ११॥ सीन सोध मन आपना सभ किछु तिसहि

माहि॥ तन भांडा मन वस्त कर हुकमी बंद समाहि॥ १२॥ शीन शहादत पाईअहि पीआ सो लिव लाई॥ हुकम तिहै तन जायसी कीचै तलब खुदाइ॥ १३॥ स्वाद सलामत गुजश्त को आखो मुख ते नित्त॥ कासे बदे रब दे सिर मित्रां दे मित॥ १४॥ जवाद जलालत गुम कर रही आदत सों मेल। उठी बंदे नजर कर चीने नाहीं खेल॥ १५॥ तोए तलब कर कास्ती देइसण रसाल॥ जिनां डिठियां दुख जाइ तन तूटे माया जाल॥ १६॥ जोए जालम सोई भये चेतन नाही नाम। साई तेरे नाम बिन क्यों धावे आराम॥ १७॥ ऐन असूल कमाइऐ जे को पारावास। बिन अमलां नाहीं पाईऐ मरीऐ पछोतास॥ १८॥ गैन गनीमत रुकनदीन जिनी सिञाता आप॥ इस पिंजरे विच खेल है ना तिस माय न बाप॥ १९॥ फे फकर तेऊ भये जो चलहि मुरशद भाइ। आपे काया तहकीक तव रंगा रंग मिलाइ॥ २०॥ काफ कलमा इक याद कर अवर न आखहि बात। नफस हवाई रुकनदीन तिस सौ होइ न मात॥ २१॥ काफी करार न आवहि जित मन उपजै चाव। पारस कंचन थीए जिन भेटिआ हरि राव॥ २२॥ लाम लानत बरसर तिनां जो तरक खुदा करेन। थोड़ा बहुता खटिआ हथों हथ गवेन॥ २३॥ भीस मुरशद मन्न तूं मन्न कतेबां चार। मन्न तूं इक खुदाइ नूं खासा जित दरबार॥ २४॥ नून नहीं ओ गुंम है जिन कीते अमल कबूल। माया बंधन गल पड़हि जित खाली वंजहि भूल॥ २५॥ वा वाउ जो आवै रुकनदीन जिस फाटे हथ नाल। उमर बिहाइ बावरे पड़िओं कित जंजाल॥ २६॥ हे हैबन तिस दिनां दी जिस दिन अदल करेइ। बाबा हमारी रुकनदीन केहा हुकम करेई॥ २७॥ लाम लायक तेऊ भये जिनां रहिमत नदर धरेइ। जेसो लोचन कीआ थीऐ जे आपन संग मिलेइ॥ २८॥ अलफ अलह तुहि नाल है चेतहि क्यों न अनजान। गुर सेवा ते हुटसी औसर अंत निदान॥ २९॥ ये यारी कर रब सों जिस दा अबचल राज। इक अकेला नानका किसै न होइ

मुहताज॥ ३०॥ ॥ सिहरफी समाप्त॥

मक्के मदीने की साखी समाप्त हुई॥

मक्के मदीने में सत्य का प्रचार करके गुरु जी ने परम ख्याती प्राप्त की। तमाम हाज़ी और काजी मुलाने गुरु जी के पवित्र उपदेश से परम प्रसन्न हुए और सीस झुका कर गुरु जी के पवित्र चरणों में प्रणाम करके कृत कृत्य हो गये।

-o-

साखी गुरु जी और नानकी जी की

एक दिन जगत पिता गुरु नानक देच जी ने कहा-हे बाला! आज हमें बहन नानकी जी ने याद किया है। तब बाले ने उत्तर दिया। हां महाराज! याद किया होगा। इस में क्या विशेषता है! गुरु जी ने कहा-हे बाला! हमें बहिन जी के पास जाना चाहिये। मैंने (बाला ने) कहा—हे गुरु देव! इस स्थान से बहन नानकी का नगर कितनी दूर है? गुरु जी ने कहा-हे भाई बाला! यहां से सताईस शत कोस की दूरी पर बहन जी का नगर है। मैंने अर्थात बाला ने कहा कि हे गुरु जी वहां हम लोग कितनी देर मे पहुंच सकते हैं। तब गुरु जी ने कहा कि जितने समय में परमात्मा पहुंचा देगा उतनी देर में पहुंच जायेंगे।

दिन का तीसरा पहर था। जब गुरु जी मैं और मर्दाना मदीने से चले। गुरु जी ने आज्ञा दी कि अपनी अपनी आंखें बंद कर लो। जब एक क्षण अपनी आंखे बंद करके खोली तो हम तीनों सुलतानपुर में बहन नानकी जी के द्वार पर आ पहुंचे थे। उस समय तुलसां गोली हमें देखते ही घर में भाग कर पहुंची तथा उसने नानकी जी को कहा-बहू जी आप को वधाई हो क्योंकि आप के भाई नानक देव आ रहे हैं।

जब नानकी जी ने नानक देव जी को देखा तो पुलकत अवस्था में विव्हल होकर गुरु जी के चरणों में गिरने लगी थी। तब तुरंत गुरु जी ने उसे सत्कार पूर्वक उठा लिया। नानकी जी ने कहा- भ्राता जी! मैंने आज दोपहर के पश्चात् आप को याद किया था। आप इस समय किधर से आ रहे हो? कृपया कहने का कष्ट करो। अब पौने सात वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। यह सुन कर मर्दाने ने कहा-कि गुरु जी और हम सताईस शत कोस की दूरी से आ रहे हैं। यह गुरु जी की शक्ति है कि इतने दूर से क्षण भर में यहां ले आये हैं। मर्दाने ने नानकी जी को सभी विस्तृत समाचार सुनाया। तब गुरु जी ने कहा-बहन जी आप ने हमें याद किया तब हम आप के पास उपस्थित हो गये तथा आप का विचार सफल हुआ है तथा हमें आज्ञा दे दो। तुलसां ने कहा-हे महाराज! आप अभी आ रहे हैं तथा अभी जाने को तैयार हो रहे हो। श्री जय राम जी को आ लेने दो। इतनी जल्दी का क्या अर्थ है?

गुरु जी ने कहा-बहन जी! हमें शीघ्र ही जाना होगा, आप हमारी ओर से जय राम जी का सत्कार करना, जब नानकी जी ने गुरु जी के यह शब्द सुने तो नेत्रों से प्रेमाश्रु बह निकले तथा साहिबजादे श्री चन्दर जी को गुरु जी के आगे ला कर खड़ा कर दिया। जिस का भाव यह था, कि आप का यह प्यारा कुमार आप को सदैव स्मरण करता है, तथा रहस्य यह था कि गुरु जी को पुत्र का मोह कुछ काल ठहरने के लिये बाध्य करेगा, नानकी जी यह नहीं जानती थी कि गुरु जी इस मोह माया से कहीं ऊपर हैं। उन के लिए समस्त संसार सुत के तुल्य है। गुरु जी कहने लगे बहन जी! मुझे तो केवल आप की प्रेम शक्ति खींच लाई है यह सांसारिक बंधन मुझे बांधने में असमर्थ हैं। इनका प्रयोग करने से सफलता नहीं मिलेगी दूसरे हम ने आवश्यक कार्य के लिये जाना है।

तब नानकी जी ने कहा-आप मेरे पास कुछ दिन ठरिहने की कृपा करो। गुरु जी ने कहा बहन जी! मैं आप के पास बहुत दिन रहूंगा। परंतु इस समय तो जाने की आज्ञा दे दो। इसी में आप का कल्याण निहत है, नानकी जी ने कहा-अच्छा कुछ जलपान तो कर लो, गुरु जी ने कहा कि आप मर्दाने को कुछ खिला दो तब नानकी जी ने भीतर से दूध और पकवान ला कर आगे रख दीये। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुम इन का भोग लगाओ। तब मर्दाने ने कहा हे महाराज! आप भी अंगीकार करो, तब गुरु जी ने कहा-हे बाला! इस वस्तु के तीन भाग करो, मैंने (बाले ने) तीन भाग किये। तब एक भाग गुरु जी ने और एक मर्दाने ने तथा एक भाग मैंने खाया, इस के पश्चात् गुरु जी ने कुछ उपदेश नानकी जी को दिया तथा फिर तैयार हो गये। नानकी ने कहा-हे भ्राता! अब फिर कब दर्शन होंगे। गुरु जी ने कहा-हे बहन जी! जब आप मुझे याद करोगी तभी उपस्थि हो जाऊंगा। नानकी जी कुछ उदास हो गई।

तब बाले ने (मैंने) कहा-हे महाराज! एक मेरी प्रार्थना है। गुरु जी ने कहा हे बाला कहो! मैंने कहा कि नानकी जी दुखित हो रही हैं, कृप्या आज की रात्रि इनके यहां ही विश्राम करो जिस से इनको प्रसन्नता प्राप्त हो। मेरी प्रार्थना गुरु जी ने स्वीकार कर ली तथा रात्रि वहीं विश्राम किया। इतने में जय राम जी भी आ गये तथा अधिक प्रसन्नता हुई। प्रातः काल उठ कर गुरु जी ने और हम ने तथा मर्दाना ने स्नान आदिक नित्य कर्म किया फिर जय राम तथा नानकी जी से विदा मांगी तथा सत्य करतार सत्य करतार की पवित्र ध्वनि करते हुए जगत ज्योति गुरु नानक देव तथा हम दानों वहां से चले, नानकी ने कहा-भाई जी आप हमें सदैव याद रखना।

साखी उत्तर देश की

गुरु जी ने पूर्ववत फिर हमारी आंखें बंद करवा दीं तथा क्षण भर में बवंजा सौ कोस की दूरी पर ले जाकर कहा-हे भाई मर्दाना! बताओ हम कहां आ गये हैं और अब किधर जाने का संकल्प है। हमने कहा-हे गुरुदेव! आपकी लीला आप ही जान सकते हो तथा जिधर आप की इच्छा हो उधर ही चलो। गुरु जी ने कहा हमारा विचार तो सुमेर पर्बत पर जाने का है। वहां सिद्ध मंडली है, उनको देखने की इच्छा है। बस उसी प्रकार एक क्षण भर में हम लोग सुमेर पर आ गये। क्या देखते हैं कि वहां की पृथ्वी स्वर्ण की है तथा चारों ओर स्वर्ण ही स्वर्ण नजर आता है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! क्या देख रहे हो। मर्दाने ने कहा-हे गुरु जी! यह धरती तो अपूर्व है, यहां तो स्वर्ण ही स्वर्ण है तथा पर्बत में से अजीब रस निकल रहा है परन्तु नर नारी कोई नज़र नहीं आता और यह रस और स्वर्ण व्यर्थ ही जा रहा है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! कोई भी वस्तु संसार की व्यर्थ नहीं होती। यह सब कुछ उस परमात्मा ने अपने भक्तों के लिये बनाया है। यह अमृत रस है तथा जो संसार में स्वर्ण है वह मिथ्या है जिस पर संसारी लोग मूर्छित हो रहे हैं। मर्दाने ने कहा-हे गुरु जी। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं यह रस थोड़ा सा पान कर लूं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तू इस रस को पचाने की शक्ति रखता हैं? मर्दाने ने कहा-हे महाराज! हम आपके साथ चिरकाल से हैं। क्या आप इस रस को पचाने की सामथर्ता भी प्रदान नहीं करोगे।

गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुम यहां इसे पीने के लिये ही आये हो इच्छा हो तो पी लो। जब मर्दाने ने उस रस को पान किया तो वह मस्त हो गया तब गुरु जी ने कहा-हे बाला! इस मर्दाने को क्या हो

गया है? मैंने कहा हे गुरुदेव, आप की बातें आप ही जानते हैं, हम अल्पज्ञ जीव कुछ भी नहीं जान सकते। तब गुरु जी ने मर्दाने के सिर पर हाथ धर कर चेतना प्रदान की।

-o-

साखी हिमालय की

अब गुरु जी मर्दाने और बाले के सहित हिमालय पर्बत पर गये। तब मर्दाने ने पूछा-हे गुरुदेव! यह कौन सा स्थान है तथा यहां क्या चमक रहा है? गुरु जी ने कहा-यह हिमालय पर्बत है और यह खूनी बर्फ चमक रही है जो कोई इस पर पांव धरता है तो वह इस बर्फ के प्रभाव से गल जाता है, इस से आगे हेम पर्बत है। अब गुरु जी हमें साथ लेकर सिरधार गिरि पर गये। हमने कहा-महाराज इस पहाड़ का नाम सिरधार कैसे पड़ा है? गुरु जी ने कहा - हे मर्दाना! इस पर्बत पर कोई भी चल कर नहीं आ सकता जो पवन पर स्वारी कर सकता हो वही यहां आ सकता है। कबीर तथा रविदास जैसा कोई महान् भक्त ही यहां पर आ सकता है। तब मर्दाने ने कहा-हम ने सुना है कि पांच पांडव वर्फ में गले थे, गुरु जी ने कहा-पांडव यहां तक नहीं पहुंचे, वे तो पीछे ही किसी बर्फ में गले थे, एक युधिष्टर बचा था वह भी स्वर्ग को प्रस्थान कर गया था। यहां तक तो वह भी नहीं आ सका! अभी यह बातें हो रही थीं कि वहां गुरु गोरख नाथ आ गये। उन्हों ने आते ही कहा-

॥ श्री गुरु गोरख नाथ का कथन ॥ कवन रूप कवन जात तुमारी। कहो कहां लै चले अगारी। ना आगे धरती रहोगे कहां। सीतल जल हिम बरखे तहां। आगे दिन न रात पीछे फिर भागो। निकल जाओ काह दुख झागो। झिलमिल झलके हैं झलकारा। ईहां सोई ठहरे जो पूर्ण सारा। सुण नानक गोरख तुम कहे। फिर जाहे पीछे कहा दूख लहे।

॥ गुरु नानक देव जी का उत्तर॥ राग आसा॥

रूप हमारा अचरज कहीऐ अचरज हमारी जाती। अचरज नगर ते चले अगारी जहां दिन नहीं अर राती। पीछे आगै दृष्ट हमारी धरन अकाश पसारा। दया हमारी सीत हिमचल तिन सो संग हमारा। कहि नानक सुन गोरख जोगी तै पूरा गुरु नहीं पाया। जुगत न जाती अवध वधाई बिरथा जन्म गवाया।

यह सुनकर गोरख नाथ चला गया, फिर एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां सूर्य कहीं नज़र नहीं आता था। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! यहां तो सूर्य भी नज़र नहीं आता। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाने! हम लोक सूर्य लोक से बहुत ऊपर आ गये हैं। अतः यहां सूर्य की पहुंच ही नहीं क्योंकि हम लोग सूर्य लोक से दो हज़ार योजन ऊपर हैं। तथा हम जिस धरती पर रहते हैं वहां से सूर्य पच्चीस सहसर कोस अंतर पर है और हम सताईस सहसर योजन पर आ गये हैं। फिर मर्दाने ने कहा-मेरे मन में अनेकों प्रश्न हैं परंतु पूछने से कुछ लज्ञा होती है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! शिष्य का धर्म है कि अपनी सब शंकायें अवश्य पूछे तथा गुरु का धर्म है कि उनका उत्तर देकर शिष्य को सम्पन्न करे नहीं तो वह गुरु नहीं, अपितु एक टग्ग है। ऐसे गुरु का त्याग कर देना उचित है तथा गुरु के बगैर उत्तम गति प्राप्त नहीं होती। कहा है-गुरु कीजिये जान तथा पानी पीजिये छान। गुरु संसार सागर पार करने की शक्ति का स्वामी होता है। गुरु को भी चाहिये कि पहिले शिष्य की परीक्षा ले फिर उसे अपना शिष्य बनाये। हे मर्दाना, जो पूछना हो पूछो। मर्दाना गुरु जी की बातें सुनकर हंसने लगा। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुमको किस का भय है? मर्दाने ने कहा गुरु जी, भाई बाला बुरा मनाता है, गुरु जी ने कहा-हे बाला तुम क्यों बुरा मनाते हो? मैंने कहा महाराज मैंने कब बुरा माना है। हे गुरु जी मैं कुछ पूछना चाहता हूं वह यह कि

आप और हम दोनों अर्थात् बाला और मर्दाना यह हम तीनों ही परम प्यारे हैं परंतु यह जो मर्दाना है, यह मुसलमान कैसे हो गया? गुरु जी ने कहा-हे बाला! यह मर्दाना भी तुम्हारी भांति हमारा पुराना प्रेमी है त्रेता युग में यह मर्दाना हिन्दू मिरासी था तथा राजा जनक का दरबारी गवैया था। एक दिन मर्दाना राजा जनक के दरबार में सुरापान करके उपस्थित हुआ था। राजा जान गया कि इसने मद्यपान कर रखा है। तब राजा जनक ने कहा-हे गायक! तुम तो कोई मलेछ हो। बस इसी लिए इस कलयुग में यह मर्दाना मुसलमान के घर में उत्पन्न हुआ है क्योंकि राजा जनक एक महा पुरुष था। महा पुरुषों के शब्द सदैव सत्य होते हैं। यह सुन कर बाले ने गुरु चरणों पर नमस्कार की।

फिर गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुम भी कुछ पूछ सकते हो तब मर्दाना बोला-हे महाराज! यह जो चंद्रमा है वह नज़र क्यों नहीं आता? गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना जितना धरती से सूर्य ऊंचा है उतना ही सूर्य से चांद ऊंचा है। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! तारे कितनी दूर है? गुरु जी ने कहा-मर्दाना! तारों की कोई निश्चित मर्यादा नहीं है। कोई नीचे कोई ऊपर है। फिर मर्दाने ने कहा कि धरुव तारा कहां पर है? गुरु जी ने कहा कि धरुव सब से ऊंचा है। मर्दाने ने कहा कि मैं उसको देखना चाहता हूं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! उतावला न हो। हम तुम्हें सब के दर्शन करायेंगे।

साखी आगे के पहाड़ों की

अब गुरु जी बाला और मर्दाने के साथ आगे गये तथा ऐसे स्थान पर गये जहां चांद भी नज़र नहीं आता था। मर्दाने के पूछने पर गुरु जी ने कहा कि हां हम चन्द्र लोक से ऊपर आ गये हैं, आगे देखते जाओ क्या कुछ कौतुक होता है। उधर गोरख नाथ अपनी सिद्ध मंडली में बैठा था उसने अपने सिद्धों को कहा-हे मित्रो! देखो एक नानक नाम का पुरुष

जो शरीर का मल मूत्र वाला है वह यहां मात लोक से आ रहा है, उसको कोई सिद्ध जाए और जीत कर आये अर्थात् वह नानक यहां तक न आ सके। तब मछंदर नाथ ने कहा-मैं जाऊंगा और देखूंगा कि नानक कौन है। मछंदर नाथ सिद्ध गुरु नानक के पास आया तथा बड़े हंकार के साथ कहने लगा-अरे बाला! तुम किस की ताकत से यहां तक आये हो? गुरु जी ने कहा-हे मछंदर तुम को जिस वस्तु की आवश्यकता है वह उस परमात्मा से तुम को दिला सकते हैं। इतना सुन कर मछंदर को क्रोध चढ़ गया और नेत्र लाल करके बोला- कै हाथ सिर का कपाट। कै अंगुल मुख का ताक। कै हाथ लिलाट पाट। कै अंगुल कलेजा। कै अंगुल ही अला। कै अंगुल फिफरा। कै अंगुल बजर की कोठरी। कै अंगुल का ही अला। कै अंगुल तिली। कै अंगुल इजबरी कोठड़ी। कै हडीयां केते कोठड़ीयां। केते हाड कै हजार दिन रात के सास। केती देही का रोमावल कैसे संध कहे ईसर मछंदर देह नानक इस देही का मतंत।

श्री नानक देव जी का कथन॥ सवा हाथ सिर का कपाट। चार अंगुल मुख ताक। हाथ लिलाट पाट। छबी अंगुल दिल। तेरां अंगुल कलेजा। पंज अंगुल ही अला। चार अंगुल तिली। सात अंगुल फिफरा। बारां अंगुल बजर की कोठड़ी। नौं अंगुल इजबरी की कोठड़ी। अटसठ हाड नील करोड़ी देह की रोमावली-चवी हजार दिन रात का स्वास। नौ सौ नाड़ी सोलां सौ सांध। कहि नानक सुन ईसर मछंदर देह इस देही का मतंत॥ २॥

मछंदर नाथ ने गुरु जी को नमस्कार किया और चला गया। मछंदर नाथ ने जाकर गोरख नाथ जी को कहा-सुनो नाथ जी! वह तो तत्व रूप है। उसका शरीर मल मूत्र का नहीं है। तब भरथरी नाथ ने कहा-अच्छा अब मैं जाता हूं। तब भरथरी नाथ ने आकर आदेश शब्द का उच्चारण किया। गुरु जी ने उत्तर में कहा कि भाई आदेश एक

ओंकार है। आओ भरथरी जी कहो क्या हाल चाल है? तब भरथरी नाथ ने बाले से कहा-हे बाला कहो तुम कौन हो और कहां से आ रहे हो तथा कौन होते हो? गुरु जी ने उत्तर दिया कि हम निरंकार के होते हैं और बेगम पुरी से चले आ रहे हैं। मेरा नाम नानक निरंकारी है। भरथरी नाथ का कथन॥ कबन घाट जित कर इशनान॥ बोलन बचन ते रहे निरवान॥ कवन जल जित हरि रसु पीवै॥ कवन सु रस जित अस्थिर थीवै॥ ऐसा ज्ञान देहो अब मोरै॥ कवन संग तोर कवन संग जोरै॥ १॥ गुरु जी का कथन॥ उत्तर अवघटि सरवरु नहावै॥ बकै न बोलै हरि गुण गावै॥ जलु आकासी सुंनि समावै॥ रसु सतु झोलि महा रसु पावै॥ १॥ ऐसा ज्ञानु सुनहु अब मोरै। भरिपुरि धारि रहिआ सभ ठउरे॥ १॥ रहाउ॥ भरथरी का कथन॥ कवन तत जित तत बिलोवै॥ कवन सु सर जित मलि मलि धोवै। कैसे राचे कैसे होवै। कवन सो करै कवन सो खोवै॥ ३॥ गुरु नानक देव जी का कथन॥ सचु मन कारणि ततु बिलोवै॥ सुभर सरवरि मैलु न धोवै॥ जै सिउ राता तैसो होवै। आपे करता करे सु होवै॥ ४॥ भरथरी का कथन॥ कवन बरत नेम जित बिनसै काम॥ कवन शब्द न संतावै जाम॥ कवन शांति क्रोध जलावै॥ कवन उपदेश परमपद पावै॥ ५॥ गुरु नानक देव जी का कथन॥ सचु ब्रतु नेमु न कालु सतावै॥ सतिगुर सबदि क्रोधु जलावै॥ गगनि निवासि समाधि लगावै॥ पारसु परसि परमपदु पावै॥ २॥ भरथरी का कथन॥ कवन सति जो अगनि बुझावै। कवन बिभूत चढ़ावै॥ कवन दोष सहिज घर आवै। कवन जतन कर नाद बजावै॥ ७॥ गुरु नानक देव जी का कथन॥ गुर हिव सीतलु अगनि बुझावै॥ सेवा सुरति बिभूत चड़ावै॥ दरसनु आपि सहज घरि आवै॥ निरमल बाणी नादु बजावै॥ ४॥ भरथरी का कथन॥ कहां ज्ञान रस पीवै सार॥ कवन तीरथ मजन विचार॥ कवन नाथ पूजे पुजारा॥ कवन जोति जोति जोतो

धारा ॥ ८ ॥ गुरु नानक देव जी का कथन ॥ अंतरि ज्ञानु महा रसु सारा ॥ तीर्थ भजनु गुर विचारा ॥ अंतरि पूजा थानु मुरारा ॥ जोती जोति मिलावनहारा ॥ ५ ॥ भरथरी का कथन ॥ कौण सु रस और रसिया भाउ ॥ कवन सु तख्त निवासी गाउ । कौण सु कार करे कराइ । कवण सु अलख न लखया जाइ ॥ ११ ॥ गुरु जी का उत्तर ॥ रसि रसिआ मति एकै भाइ ॥ तख्त निवासी पंच समाइ ॥ कार कमाई खसम रजाइ ॥ अविगत नाथु न लखिया जाइ ॥ ६ ॥ भरथरी का कथन ॥ कहि उपजै कहि कहीए दूर ॥ किन मिट जोति रही भरपूर ॥ किस नेड़े किस दूर बतावै । किस गुण गावै किसहि सुणावै ॥ १३ ॥ गुरु नानक जी का कथन ॥ जल महि उपजै जल ते दूरि ॥ जल महि जोति रहिया भरपूरि ॥ किसु नेड़े किसु आखा दूरि ॥ निधि गुण गावा देख हजूर ॥ ७ ॥ भरथरी का कथन ॥ कौण अंतर कौण बाहर होइ । कौण कारण चलै सभ रोइ । कहि भर्थरी नानक देहु बिचार ॥ बोलन कौन कर अधार ॥ १५ ॥ गुरु जी का कथन ॥ अंतरि बाहरि अवरु न कोइ ॥ जो तिसु भावै सो फुनि होइ ॥ सुणि भरथरि नानकु कहै वीचारु ॥ निर्मलु नामु मेरा अधारु ॥ ८ ॥ जब गुरु जी ने इस प्रकार समाधान किया तो भरथरी निरुतर हो गया । बाले ने कहा-हे गुरु अंगद देव जी महाराज! ये तमाम प्रश्नोतर मेरी उपस्थिति में ही हुये थे । गुरु अंगद देव बाले की बात सुन कर दिव्य मस्ती में झूमने लगे । सात दिन तक इसी अवस्था में रहे अर्थात् विदेह हो रहे । यदि कोई बुलाये तो भी आप मौन ही रहते थे । खान पान भी त्याग रखा था । सारे नगर में यह मशहूर हो गया कि गुरु अंगद देव जी का देहावसान हो गया है । जब आठवां दिन चढ़ा तब गुरु अंगद देव जी ने सुरत संभाली और बाले को आर्शीवाद दिया । आर्शीवाद लेते ही बाला परमानन्द विभोर हो गया । सात पहर के पश्चात् बाला होश में आया और जन्म साखी लिखाने लगा । फिर गुरु अंगद देव जी ने कहा-हे

बाला! अब आगे की कथा सुनाओ। बाला गुरु नानक जी की कथा इस प्रकार सुनाने लगा-

सिलका पर्वत की साखी

गुरु नानक देव जी महाराज आगे सिलका पहाड़ पर पहुंचे तो चंद्रमा भी दूर रह गया अर्थात चंद्रमा नज़र नहीं आता था। गुरु जी ने कहा-हे बाला! नीचे की ओर देखो। जब बाले ने नीचे की ओर देखा तो चंद्र लोक नीचे देखा। गुरु जी कहने लगे-हे बाला! हम बावन सहस्त्र कोस दूर आ गये हैं। बाले ने कहा-हे महाराज! क्या इस से आगे भी कोई स्थान है। तब गुरु जी ने उत्तर दिया-हां बाला! इस से आगे भी कोई स्थान है। मर्दाने ने कहा-हे गुरुदेव! इस से आगे और कौन सा स्थान है? गुरु जी ने फुरमाया-मर्दाने! इस से आगे सुमेरु पहाड़ है। उस पर सिद्ध मंडली निवास करती है। तिस से आगे दत्ता त्रैय सन्यासी का आश्रम है। उसके आगे सुमेर है। उसके अधिकार में समस्त माया है तथा नवनिधि है। उसके आगे महादेव भंडारी का निवास है। उसके ऊपर कैलाश है। वहां धरुव भक्त का मंडल है तथा उससे ऊपर निरंकार का सिंहासन है। उस पर सर्व शक्तिमान करता पुरुष बिराज रहा है। तब मर्दाने ने पूछा-हे महाराज! यहां से सुमेर कितना ऊंचा है? गुरु जी ने कहा-यहां से तिहत्तर हज़ार योजन की ऊंचाई पर सुमेर है। मर्दाने ने कहा-जहां से हम आये हैं वहां से सुमेर कितनी ऊंचाई पर है? गुरु जी कहने लगे हे मर्दाना! जिस धरती से हम चले आ रहे हैं वहां से सुमेर सवा लाख योजन ऊंचा है। अभी यह बातें हो रही थी तब वहां गोरख नाथ जी आ पहुंचे। उस ने आते ही कहा, अरे तुम लोग किधर चले आ रहे हो? आगे जाना तुम्हारा काम नहीं है, यह सुन कर गुरु जी ने सलोक उच्चारण किया— गुरु नानक उवाच॥ माई हमारी मनसा

होती तिसका मूंड मुंडाया। दुरमति हमारी दादी कहिये तिसका कान छिदाया। ताकी राख लई निर्मल छाणी सेइ विभूति चढ़ाया। कहे नानक सुन भंगर नाथा तैं पूरा जोग न पाया। जुगत न जाणी औध बधाई बिरथा जन्म गुवाया। कन्न पड़ाए मुंदरा पाइयां जोग की जुगत न जाणी। लाय विभूत बैठा होया जोगी सगली सुध बौरानी। डंडा वरुया हथ फहोरी सेली अंग बनाई। कहे नानक सुन झंगर नाथा तैं झूठो अवध वधाई। यह सुन कर झंगर नाथ जो निरुतर हो गया। तब गुरु जी ने कहा-भाई बाला! अब क्या इच्छा है। मैंने उत्तर दिया, जैसे आपकी इच्छा। फिर गुरु जी ने मर्दाने से पूछा- मर्दाना! क्या चाहते हो, हमने तुम्हारा कहना भी मानना है। फिर गुरु जी कूना पर्बत की ओर चले।

कूना पर्बत की साखी

अब गुरु नानक देव जी महाराज अपनी अपार शक्ति के बल से बाला मर्दाना के संग कूना पहाड़ पर जा पहुंचे। मर्दाने ने पूछा-हे महाराज! यह कौन सा स्थान है? गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! इसे कूना पर्बत कहते हैं। मर्दाने ने कहा कि सिलका पर्बत कितना पीछे रह गया है? गुरु जी ने कहा कि सिलका यहां से सैंतालीस सहस्त्र योजन रहा है तब मर्दाने ने पूछा-हे गुरुदेव! हमारी सारी यात्रा कितनी हुई है। गुरु जी ने फुरमाया हमारी सारी यात्रा निआनवें सहस्त्र योजन हुई है। मर्दाने ने कहा कि अभी सुमेर कितनी दूरी पर है, अभी यह वारता हो रही थी इतने में कनीफ़ा सिद्ध वहां आ गया। गुरु जी हंसने लगे। मर्दाने ने कहा-महाराज! आप किस कारण हंस रहे हो? गुरु जी ने कहा-हे मर्दाने! यह जो सिद्ध देख रहे हो, इनका नाम कनीफा है और गोरख नाथ का शिष्य है और गोरख हमारी परीक्षा के लिये भेज रहा है। मर्दाने ने कहा कि यदि आप आज्ञा दें तो मैं इस सिद्ध को दंड देकर माफ कर

दूं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाने इस स्थान पर लड़ने की आज्ञा नहीं है यहां तो केवल शब्द की ही लड़ाई है। इतने में वह सिद्ध बोला कि हे बाला! तुम यहां कैसे आ गये हो। गुरु जी ने कहा-सुन भाई! हम निरंकार के दर्शनों को यहां आ रहे हैं। तब कनीफ़ा कहने लगा-हे मर्दाना! क्या इस से पूर्व भी तुमने निरंकार का दर्शन किया है अथवा अभी पहली बार ही है। गुरु जी कहने लगे-हे कनीफा! हम ने इस से पहले भी दीदार किया है और अब करेंगे यह सुन कर सिद्ध कहने लगा- तुम्हारा नाम क्या है और कौन होते हो, अपना परिचय दो। तब गुरु जी महाराज ने नीचे लिखा सलोक उच्चारण किया-

राग आसा महला १ ॥

नाउ हमारा अचरज कहिये हम होते अचरज रवानी ॥ सिफत हमारी सब मूरत माहि जोत सगल महि तानी ॥ सुनहु कनीफ़े रावल जोगी ॥ सतजुग त्रेते द्वापुर कलयुग निरमल सदा अरोगी ॥ रहाउ ॥ जोत हमारी जत कत देचउ नाना वरन हमारा ॥ उपजन बिनसन खेल हमारा शिव शक्ति व्योहारा ॥ हर्ष सोग की काया बावी पाप पुंन दुइ साखी ॥ कला हमारी जल थल पसरी जोत संपूर्ण साखी ॥ ३ ॥ एक ओंकार हमारा साहिब जिस हम साज निवाजे ॥ कहै नानक सुणहु कनीफ़ा सुरत सबद मिल राजे ॥ ४ ॥

फिर कनीफ़ा सिद्ध कहने लगा-हे नानक! तुमने गुरु कोई भी धारन नहीं किया, इस लिये उठो और गोरख जी को अपना गुरु बना लो, कान छेदन करवा कर मुंदरा डाल लो। यह सुनकर गुरु जी ने एक सलोक उच्चारण किया। सलोक ॥ एको चीरा जाने सो जोगी। कल माया ते रह अरोगी। सुन्न मंडल की भिखिआ खाई। सत संतोष की खिंथा पाई। बिन खप्पर पानी पिया। बिन धरती बिन कूंआ। बिन सिङी नाद शब्द बाजै। बिन बादर गगना गाजै। बिजली चमकारा लाया। तब नानक जोग पाया।

यह सुन कर कनीफ़ा भी निरुत्तर हो गया। फिर मर्दाना कहने लगा-हे महाराज! अब आगे चलो। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! उतावला होना उचित नहीं इन सिद्धों का तमाशा देखते चलो। इतने में एक और सिद्ध जिसका नाम हनीफ़ा सिद्ध था, आ गया। आते ही कहने लगा-हे बाले! आदेस। तब गुरु जी ने कहा-आदेस एक ओंकार को। आओ हनीफा सिद्ध जी। तब हनीफा कहने लगा कि तुम हमारा नाम कैसे जानते हो। गुरु जी बोले-हे हनीफा सुनो, तुम राजा कंकरन के पुत्र हो। जब तुम्हारा पिता मरा था तब तुम सत्रह वर्ष के थे और तुम्हारा नगर सालता पुर था। तू राजा बन कर एक दिन शिकार करने चला। जब तुमने शिकार मारा तब तुमको कुछ ग्लानी हुई। उस समय गोरख नाथ तुम को मिले। तुम ने उन से कहा कि मैं आपकी मंडली को भंडारा करवाना चाहता हूं। गोरख ने कहा कि हम तुम्हारा भंडारा स्वीकार नहीं करते क्योंकि तू मलीन है। तो तुम अपने अन्न के मलीन होने का कारण पूछा। गोरख ने उत्तर दिया कि तुम्हारे मन में दया नहीं है। तुझे इस दयाहीनता का फल मिलेगा तथा तेरी काया दुख पाएगी। तब तुम ने कहा-हे नाथ जी! जिस प्रकार मुझे शरीरिक कष्ट न हो वह उपाय बताओ। गोरख नाथ ने कहा-यदि तुम योग करो तो तुम्हारा कल्याण होगा। तुम ने योग के साधन पूछे तो गोरख ने कहा कि तुम कान छिदवा लो और मुन्दरां धारण करो। इस प्रकार योग प्राप्त होगा। तब तुमने गोरख का कथन माना। गोरख ने तुम्हारे कान छेद डाले तथा मुन्दरां पहिना दी और सिर मुंड दिया अर्थात् तुम गोरख के शिष्य हो गये।

यह सुन कर हनीफा बोला-हे नानक! वह कौन सा स्थान है जहां गोरख जी ने हमें योग दिया है? गुरु जी ने कहा—एक पत्रहीन रुंड पीपल का बृक्ष है। वहां गोरख ने तुझे अपना चेला किया था।

यह सुन कर हनीफा बोला- हनीफा सिद्ध का कथन ॥ अखेर-विरत बाहर रहै को नाहि। अड़ेहा कहीऐ कौन की जाइ। कौन संगले चढ़े शिकार। कौन मिरग पकड़ लयावे घाट। कौण कर राखे उनको बाट। एक अहेड़ा किसके साथ। हनीफा पूछे नानक पास ॥ गुरु जी का कथन ॥ अखेर बिरत बाहर आयो धाय। अहेड़ा पायों घरकी गाय। संग संग लै चढ़यों शिकार। तृष्णा चपल कऊ लेवे मार। मिरग पकड़ कर आणे हाट। चुख चुख ले गएे वाट और घाट। वह अहेड़ा कीनो दान। नानक के घर केवल नाम। सुण हनीफा इह बिचार। गोरख लाथा हमारे द्वार ॥ २ ॥

गुरु जी महाराज के यह पवित्र एवम् सर्वोच शब्द सुन कर हनीफा सिद्ध चरणों पर नमस्कार करके वहां से चला गया।

अब गोरख नाथ ने गोपी चंद को आज्ञा दी कि अब तुम जाओ और अच्छी प्रकार देख कर आओ तथा उसको यहां लेकर शीघ्र आ जाओ, गोरख की आज्ञा से गुरु जी के पास आया और कहने लगा-हे नानक! आदेश। उत्तर में गुरु जी ने कहा उस निरंकार को आदेश। यह सुन कर गोपी चंद कहने लगा-गोपी चंद का कथन ॥ कौन नाम कौन वरण तुम्हारा। कौन रूप कौन बिसथारा। कौन मनोरथ इहां आये। चलो तपा नाथ बुलाये। कन्न पड़ाय मुंदरां पहिनावों। गुरु गोरख को चरण लगावों। गुरु का उत्तर ॥ नाम एक ओंकार करतारा। जात वरण ते रहै निआरा। रूप देह कीना बिसथारा। अलख न लखीऐ सगल मझारा। पारब्रह्म के दर्शन आये। अमर अजूनी लिये बुलाये। कंन पड़ाइ ऐ मुंदरां पाऊं। सब सिद्धन को चरण लगाऊं। एकंकार गुरु सिर मेरे। कहि नानक सुन गोपी चंद दृष्टमान कीते सभ चेरे ॥ २ ॥ गोपी चंद का कथन ॥ कवन ज्ञानी कवन ध्यानी। कवन तीर्थ सज्ञन स्नानी। कवन सि निर्मल कवन सि मैला। कवन सु बसत जित लागै गैला। कवन सु उपरि कवन सु तलै। कवन जुगत जित दीपक बलै। गोपी चंद कहे सुन नानक तपे।

कवन सो जित रसना जपै॥ ३ ॥ गुरु जी का उत्तर॥ ज्ञानी सोई जो गुरमुख होवै। ध्यानी सोई जो सुरत न खोवै। तीर्थ मजन गुर दर्शन पाया। चरनी लागै आप गुवाया। निर्मल बाणी जिस मैल न राई। गुर पूरे बिनु मैल न जाई। गुर उपदेश ले कार सिधाया। धुर पहुंचे कोई टाक न पाया। ऊपर ही हुकम हुकम ही तलै। हुकम पछाणे तां दीपक जले। कहे नानक गोपी चंद। माया तत होवै आनंद। मोह माया के बंधन कपै। इह बिध जाप जित रसना जपै॥ ४ ॥

जब गुरु जी के यह शब्द गोपी चंद ने सुने तो कहने लगा-हे नानक! चलो तुम सिद्ध मंडली के दर्शन करो। गुरु जी ने कहा-हे गोपी चंद! तुम चलो हम आते हैं। गोपी चन्द प्रसन्न होकर चला गया। उसने गोरख नाथ को जा कर कहा-हे गुरुदेव! गुरु नानक देव तो तत रूप हैं, मैंने उनके साथ वारतालाप किया है। वे तो महापुरुष है। इतना कह कर गोपी चन्द चुप कर गया उस समय भर्थरी बहुत कूपित हुआ और कहने लगा कि हे गुरुदेव! मैं अब फिर दोबारा जाऊंगा। गोरख नाथ ने कहा-हे भरथरी तुम फिर जाओ और उसको उपदेश देकर यहां ले आओ। भर्थरी गुरु जी के पास आया और कहने लगा-आदेश। गुरु जी ने कहा-आदेश निरंकार को और कहा-आओ भर्थरी नाथ तुम तो एक बार इस से पहले भी फिर गये। भर्थरी ने कहा- हे नानक! तुम चलो हम तुम को गुरु गोरख नाथ जी के पास ले चलें। गुरु जी ने कहा-हे भर्थरी! हम वहां जाकर क्या करेंगे। भरथरी का कथन॥ कन्न छिदाओ मुंद्रा पहिरो खिंथा जोग हंडाओ। आज्ञा भंग न करहो कबहू इयों जोग जुगत गति पाओ। सुण बाले एह जोग कमायो। तब अनहद धुन बाजा बजावो॥ १ ॥ गुरु जी का उत्तर॥ गुर का सबदु मनै महि मुंद्रा खिंथा खिमा हढावउ॥ जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि पावउ॥ १ ॥ बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तंत महि जोगं॥ अंमृतु नामु निरंजन पाइआ

ज्ञान काइआ रस भोगं॥ १ ॥ रहाउ॥ भरथरी का कथन॥ एक हाथ में पाथर देउं एक हाथ में डंडा। कलप विभूत चढ़ावों तुम को एक बतावो पंथा॥

गुरु जी का उत्तर॥ पतु वीचारु ज्ञान मति डंडा वरतमान बिभूतं॥ हरि कीरति रहरासि हमारी गुरमुखि पंथु अतीतं॥ ३ ॥ भरथरी का कथन॥ अपने नगर में बैसहु आसन चीनउ बाद बिबादं। सिङी देउ मुख बैन बजावहु सुनीऐ नाद अनादं॥ गुरु जी का कथन॥ सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप त्यागी बादं॥ सिंङी सबदु सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरे नादं॥ २ ॥ भरथरी का कथन॥ सगली सृष्टि दिखाऊं ऐसी जोग गोंगादं। लिव लागी कब टूट न जावै परा पूरन पद पादं। गुरु जी का उत्तर॥ सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरन अनेक॥ कहु नानक सुणि भरथरी जोगी परब्रह्म लिव एक॥ ४ ॥

फिर भर्थरी ने कहा-चल नानक कुछ दूर तक मुझे छोड़ आओ। फिर गुरु जी ने नीचे लिखा शब्द उच्चारण किया-

राग आसा महला १ ॥ खाली सो करतार न जाना। आपना आप कछू न पछाना॥ १ ॥ सुन सिद्धा तूं भरथर जोगी। गोरख भेट न होया अरोगी॥ रहाउ॥ राज छोड कर जोगी हुआ। ममता मोह न अजुहुं मूआ॥ २ ॥ ममता उपजी अवध बधाई। जोग जुगत की मिति नहिं पाई॥ ३ ॥ नानक बोले तत विचार। मूंड़ मूंडाय न पायो पार॥ ४ ॥ भरथरी नाथ ने फिर कहा॥ एह प्याला नानक पीओ। अंमृत रसना होई थीयो॥ १ ॥ इस मद पीते करीये भोग। सुख सहजि अनंद अरोग॥ रहाउ॥ मेरी तेरी चिंतन रहती। लिव लागी हिरदे सच सेती॥ २ ॥ मुख प्यािसी सो नहीं बिआपे। बिनस जाइ सभ तीनों तापे। भरथरी बोले सुन नानक बेदी। इम मद पीते बलाय सब छेदी॥ ४ ॥ गुरु जी का कथन॥ आसा महल्ला १ ॥ गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ॥ भाठी

भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ॥ १ ॥ अनहद मतवाला राम रस पीवै सहिज रंग रचि रचिआ। अनहद बाणी प्रेम लिव लागी शब्द अनाहद गाचिआ॥ गुर की साखी अंम्रित बाणी पीवत ही परवाणु भइआ॥ हरि दरशन का कांखी होवै मुकती बैकुंटै करै किया॥ २ ॥ पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जा कउ नदरि करे॥ अंम्रित का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे॥ २ ॥ सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै॥ कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अंम्रित धारै॥ ४ ॥ यह सुन कर भरथरी दूसरी बार निरुतर हो गया। इसके पश्चात् भूतवे सिद्ध आया। उसने आते ही कहा-हे बाले! आदेश ! यह सुन कर सतिगुरु नानक देव जी कहने लगे। आदेश ओंकार को। तब भूतवे सिद्ध बोला। भूतवे सिद्ध का कथन॥ आशा महा दुखं। निराशा महा सुखं। आश निराशा भूतवे सुख वसंती पिंगला॥ १ ॥ गुरु नानक देव जी का कथन॥ आसा सुख हमारी कहीऐ निरासा दुख अपरं। बिन आसा गुर देवन मिलबो नहीं मिलबो करतारा॥ २ ॥ भूतवे का कथन॥ चल रे बाला तैनूं गुरु गोरख के पाउं लगावों। जन्म मरन तों रहित करावों॥ ३ ॥ गुरु जी का उत्तर॥ गुरु तुम्हारा गोरख देखिआ जिन बहुती अवध वधाई। सिद्ध जती और नाथ पुकारहि हमरी गति नहीं काई। नानक बोलै सुण भूतवे अंत देह गिर जाई॥ ४ ॥

यह सुन कर भूतवा भी चला गया फिर लहुरीपा सिद्ध आया उस ने आते की कहा-आदेश रे बाले आदेश! गुरु जी ने उत्तर में कहा आदेश आदि पुरुप परमेश्वर को! फिर लहुरीपा ने नीचे लिखा शब्द कहा-

लहुरीपा उवाच॥ हाटी बाटी कहां त्यागी त्यों त्यागयो वणज वपारा। काहे को उद्यानी हुए क्यों त्यागयो मात पसारा। कहै लहुरीपा गोरख पूता सुन नानक हमरी बाता। जिहि कारण तू भरमत भटकत सो है अगम अगाधा॥ १ ॥ गुरु जी उवाच॥ हाटी बाटी सहिज कमाई सहिजे

वणज वपारा। सहिजे ही उद्यानी हुए सहिजे मात पसारा। नानक औधुत कहतापुत सुण लहुरीपा धाता। कृपा कीनी आप निरंजन तां मिलिया अगम अगाधा॥ २॥

निरुतर होकर लहुरीपा भी वापस गया तो गोरख नाथ ने पूछा-अरे लहुरीपा बता क्या कुछ देख सुन कर आए हो? उसने कहा-हे महाराज! वह तो अटकता ही नहीं। निकट बैठे भरथरी ने कहा-वह तो पूजा करने के योग्य है। गोरख ने कहा-यह मुझे ज्ञान है परंतु इन सिद्धों का अभिमान दूर करना चाहता हूं। फिर चरपट नाथ गुरु जी के निकट आ कर कहने लगा-आदेश बाले आदेश! गुरु जी ने कहा-हे चरपट ओंकार को ओदश! चरपट नाथ का कथन॥ कहां तुम्हारा आसन कहां तुम्हारा भोजन। कवन सूत को कपड़े पहरे चलते कितने योजन। खाट तुलाई कहा बिछाई कहा करो बिसरामा। चरपट बोले सुन तू नानक ऐसा कथहु ज्ञाना॥ गुरु जी का उत्तर॥ आसन बैसन कायां भीतर नाम हमारा भोजन। खिमा सूत के कपड़े पहिरे चलहु अढ़ाई योजन। खाट तलाई दसवें दुआरे तहां करहिं बिसरामा। नानक कहै सुन चरपट नाथा ऐसा कथों ज्ञाना॥ २॥

अब चरपट ने भी आकर गुरु गोरख नाथ को कहा-हे महाराज! नानक तो पूर्ण योगी है। गोरख ने कहा-क्यों भंगर नाथ! तब झंगर ने कहा कि हे महाराज! अब मैं जाता हूं। उस ने भी आकर आदेश बुलाया। हाथ पहोड़ी मुख में बाता कौण रे बाले कौण तू भी अपना नाम बता। गुरु नानक जी का कथन॥ सुण रे भौदु हमारा नाउे एकंकार किया बताउं। तूं भी भूला गोरख भूला। औध वधाई मन में फूला। एकंकार हमारा नाउं। अपने गुरु के बलि बलि जाउं॥ २॥ झंगर नाथ का कथन॥ बिनु चिकनाई क्यों दीपक जलै। बिन दुधै क्यों बालक पलै। बिना धनुष क्यों तीर चलावै। बिना चरण क्यों नगर सिधावै। झंगर पूछे सुन रे बाले। बिन कुंजी क्यों खूले ताले॥ गुरु जी का कथन॥ उलट कौल दीपक को

जाले। लिव लागी तो बालक पाले। सुरत बांधी ते तीर चलाया॥ गुर बचनी ले नगर सिधाया॥ बोले नानक सुन झंगर बाले॥ कृपा कीनी तां खूले ताले॥ ३ ॥

यह सुण कर झंगर नाथ भी लज्जित होकर चला गया। तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज! आप की शक्ति अपार है आप के आगे तो कोई भी नहीं ठहर सकता।

तब गुरु नानक देव जी महाराज ने कहा-हे भाई मर्दाना! हमें ईश्वर ने इतना बड़ा गुरु मिलाया है जो करतार का ही रूप है। हे मर्दाना! अनेक महापुरुष हो चुके हैं। उन को इस देह के साथ अकाल पुरुष का दर्शन नहीं हुआ। तब मर्दाने ने कहा-हे गुरुदेव! आप में और निरंकार ईश्वर में कोई भी भेद नहीं है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाने! परमात्मा को सभी जीव समान रूप से प्रिय हैं। मर्दाने ने कहा-अब आप चलने की कृपा करो।

साखी सुमेर पर्वत की

सतगुरु श्री नानक देव जी अपने साथियों के सहित गोरख नाथ आदि सिद्धों की मंडली में जा पहुंचे तथा गुरु जी को देख कर गोरख नाथ जी ने कहा-आदेश नानक देव! तब गुरु जी ने कहा-आदेश एकंकार को! फिर गोरख और नानक देव में ज्ञान चर्चा प्रारम्भ हुई। नौ नाथ चौरोसी सिद्ध तथा अनेक जती तपस्वी सुनने लगे। गोरख नाथ ने कहा-हे नानक देव! आज हमारे अहोभाग्य हैं, जो आप के पवित्र दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। गुरु जी ने कहा-हे भाई गोरख! हम लोग भी आप के दर्शनों से कृत कृत्य हो गये हैं।

उस समय कुछ सिद्धों ने कहा-हे नानक देव! यदि आप योग साधन कर लें तो आप का पूर्ण कल्याण हो जाए, इस लिए आप को गुरु धारण

करना उचित है। गुरु जी ने कहा-हे सिद्ध मंडली! हम ने गुरु धारण कर रखा है। सिद्धों के पूछने पर गुरु जी कहने लगे-हमारा गुरु सत्य है। तब सिद्ध कहने लगे-उस सत्य का खुलासा कह कर सुनाओ। तब गुरु जी ने आगे लिखा शब्द उचारण किया-

गुरु नानक देव जी का कथन॥ आदि सचु जुगादि सचु॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु॥ हे सिद्धो! वह करतार तीनों काल सत्य है और सिफतों का भंडार है, यह सुन कर गोरख नाथ जी बोले-हे नानक देव! और भी तो सत्य हैं। गुरु जी ने उत्तर दिया-हे गोरख! और सत्य कैसे हैं। जो जन्मे मरे और काम क्रोधादिक तथा वासनाओं से जकड़े हों वे सत्य नहीं हो सकते, जो चेतना करता पुरुष है वह सूक्षम से सूक्षम और स्थूल से स्थूल है। आनंद स्वरूप और सर्व शक्तिमान है। उस को माया अपने वश नहीं करती। माया उस की दासी है। हे गोरख नाथ! जिस पर उस की कृपा हो उस की माया लिप्त नहीं हो सकती। यह सुन कर गोरख नाथ चुप हो गया तथा फिर कहने लगा-हे झंगर जी! आप अंमृत का प्याला भरो, प्याला भर कर झंगर नाथ ने कहा-हे नानक देव! इस को पान करो। इस के पान करने से लिव लग जाती है। गुरु जी ने कहा-वह कैसे? तब झंगर नाथ कहने लगा-

झंगर नाथ का कथन॥ भाठी सा जो लाहन माडों कसि को समावो। निर्मल धार नली होइ चलती तब यह अंमृत पावो॥ १॥ सुण हो नानक बाले तब तूं जोगी होवैं। दृष्टि खोल बंधन सभ काटे सगली दुरमती खोवै। होवहु मतवाले मद के माते मगन होय लिव लागी। सुरति बंधना चलित न कबहू दरबार खड़ा बैरागी॥ २॥ ऐसी सहिज फिरत बारे दुख सुख दोष निवारे। जहां देखे तां एक स्वामी हिरदे अंदर धारे॥ ३॥ लादा पूजी साथ निवाहो खाली खेप न जावो। झंगर नाथ कहै सुण नानक बाले तुम दर्शन पावो॥ ४॥ गुरु जी का कथन॥ राग रामकली॥ महला

पहिला ॥ ज्ञान ध्यान की लाहन मांडी करनी की कसि पाई। भौ भाई प्रेम समाण ब्रह्मा की आगनि जलाइ। सिद्धो हम मद माते नाहीं। जो मतवाले मद के माते किन मतवालियों माहीं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरति भली भौ बासन कीना। अंतर धार चुआई ॥ दया सुराही सहजि प्याला गुरमति पीवहु भाई ॥ २ ॥ गुरमुखि फिरै मतवाले एह रंग महि खेलै ॥ नहि देखा तहि एक सरूपी मारग पाया चेलै ॥ ३ ॥ नितहि खेप हमारी सिद्धो आठ पहर लिव लागी ॥ नानक दास तहां मतवारा जहां एकंकार बैरागी ॥ ४ ॥

सिद्धों का कथन ॥ रामकली ॥ धन जोरन की करे न आसा। पर त्रिय अंग न लावे पासा। नाद बिंद लै घट महि जोरै ॥ तिस की सेवा पारबती करै ॥ बल पर्बत सत सरूप। परस तत महि रेख न रूप ॥ १ ॥ सो निग्रही जो निग्रह करै। जप तप संजम भिखिआ करै। पुन दान का करै सरीर। सो निग्रही गंगा का नीर। बोले ईश्वर सति सरुप। परम तंत महि रेख न रूप। सो उदासौ जो पाले उदास। अरध उरध करे निरंजन वास। चंद सूरज की पाइ गढि। तीरथ परसै नाऊं सौ सट। बोले गोपी चंद सरूप। परम तंत महि रेख न रूप ॥ ४ ॥ सो बैरागी जो उलटे ब्रह्म। सुन मंडल महि रोपै थम्म। अहिनिसि अंतर रहे ध्यान। सो बैरागी संत समान। बोलै भरथरि सति सरूप। परम तत महि रेख न रूप ॥ गुरु नानक देव जी का कथन ॥ राग रामकली महला ॥ १ ॥ को मरै मंदा कौ जीवै जुगति। कंन पड़ाइ क्या खाजै भुगति। आसति नासत्ति एको नाउ। कउण सु अखरु जितु रहै हिआउ। छिअ वरतारे वरतहि पूत। ना संसारी ना अवधूत। धूप छाव जे सम करि सहै। ता नानक आखै गुर को लहै। निरंकार जे रहै समाइ। काहे भिखिआ मंगण जाइ। बोले नानक सति सरूप। परम तत महि रेख न रूप। चरपट नाथ का कथन ॥ काम त्याग लो क्रोध त्याग लो लोभ त्याग लो मोहं। अहंकार त्याग लो ममता त्याग लो चरपट बचन मुखि सोहं।

॥ गुरु नानक जी का कथन॥

न काम त्याग लो न क्रोध त्याग लो न त्याग लो लोभं। न त्याग लो हंकारा। गुरु प्रसादि सभ भोग करनं नानक बचन अपारा॥ ३ ॥ चरपट का कथन॥ शिव शक्ति पकड़ि गवाइला मन को परबोध लो दर्शन पाय लो विभूत चढ़ाय लो गुर दर्शन लाग लो। चरपट मसाल बो। सुण नानक तपा जी संसार समुंद्र पार पाइबो॥ ३ ॥ गुरु नानक जी का कथन॥ शिव न पकड़ लो शक्ति न गवाइलो मन का प्रबोध लो। दर्शन पाईलो तौ वड भाग आप लो। नानक बचन संभाल लो सुन चरपट नाथ संसार ते पार पाइबो॥ ४ ॥ हम एकंकार गुरु करबो पंच पचीस हम आगै कार करबो। पंजे तत पंजी प्रकृत तीनों गुण चार अंत्तह करण नौं इंद्रै सभ हम बधयो। चौदां इकी हमारे आगे खरे हैं पचास पभंतर पारबो नानक तब वड भागबो।

॥ गुरु नानक देव जी का और कथन॥

ये घुघू नाथ! तुम क्यों चुप हो यह कह कर- बिन बोले क्या करे विचारा। घुघू नाथ न बोलन हारा। सेवक पूजा रहित न पाईऐ। घुघू नाथ बुलाया चाहिऐ। दर्शन आछा मरन ना जापै। क्या जानो कसा प्रतापै। नानक सुण घुघू नाथ अरदास हमारी एक वेर। बोलहु तां कारी॥ १ ॥ घुघू नाथ का कथन॥ जती न साधबो सिध न नाथ बो बोलबो पकड़ाइबो सिडी न बचाह्बो। नाउ धराइबो। नाद अनाद धर्म सुनाइबो। सब एकंकार खेलबो। शिव शक्ति मेल न खेलबो। ध्यान न ध्याइबो घुघू कहै सुण नानक साधबो। सत परमेश्वर तुम लाइबो।

इस प्रकार कहा तो घुघू श्री गुरु जी के चरणों की ओर भागा तब गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया-

एक जाणिआं तां तुम पछाणिआं दूसर अवर न कोई। नानक दास

समझिओ है आगे घुघू नाथ में ओही।

तब घुघू नाथ और चम्बा नाथ दोनों ने चरण बंदना की। फिर चम्बा नाथ नहीं बोला। तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज! इस को बुलाने की कृपा करो। तब गुरु जी ने कहा-हे चम्बा नाथ! बोलो बोलते क्यों नहीं।

गुरु नानक देव जी का कथन॥ कौन तुमारा मता मसूरति रहो कौन गृह माहीं। देखी तुमरी मूरति आछी बिन बोले समझ न काही। सिद्ध नाथ सब बोले जती वी बोलन हारे। नानक कहे सुण चम्बा नाथ तैं क्या बोल बिसारे॥ १ ॥ चंबा नाथ कहने लगा। बोलन हार बोलबो। अटकन हार अटक बो। झजकनहार झजक बो। गावन हार गाय बो। सुणनि हार सुन बो। चंबा न कहाय बो। एक ध्यान बो। एकंकार महि ध्यान बो। गुरु जी का कथन। जननी सो धन्न बो। करनी जे पुनि बो। रहनी सो धन्न बो। चलनी सो धन्न बो। गुरु सो धन्न बो॥ २ ॥ उपदेस धन बो। जेते लखा सो धन बो॥ ३ ॥ चंबा नाथ का कथन। चंबा नाथ को। गोरख न शाम को। दहसिर न रामबो सप्ट न व्यास को। सुख देव न पारस को। सभ आपे खेलता। दूजा न मेलता। प्रणवन चंबा सुण नानक वाला। एक एक सुख पावता दूजा जंजाला॥ ४ ॥

फिर चंबा नाथ और घुघु नाथ दानों ने गुरु नानक जी की बहुत सी बंधना की, दोनों परस्पर प्रसन्न हुए। सभी ने कहा कि हमें आज अलेख के दर्शन हुए हैं। गुरु जी ने कहा— हे मंगल नाथ! हम आप के दर्शन को आये हैं गोपी चंद ने कहा—हे नानक देव! हमें तो आज निरंकार के ही दर्शन हुए हैं। गुरु जी ने भी उन सभ की तारीफ की। परमात्मा में और उसके भक्तों में कोई भेद नहीं होता। इस लिए आप सभी धन्य हो।

इस के पश्चात् जो अहंकारी सिद्ध थे वे अपनी अपनी सिद्धी का प्रदर्शन करने लगे तथा अपने अपने चिन्ह उड़ाने लगे। गुरु जी मौन

साधे देख रहे थे, उस समय झंगर नाथ ने कहा-हे नानक! उत्तर दे। गुरु जी ने कौंस को आज्ञा दी।

गुरु जी की आज्ञा। उठहु कौंस हमारी। सिद्ध देखे शक्त तुम्हारी। जब नानक जी मुख बोला। तब कौंस घुंघट खोला। जब कौंस चढ़ी असमानी। तब सिद्ध होई हैरानी। जब कौंस मृगानी मारी। तब सिद्धी रोय पुकारी। जब कौंस करी असवारी। तब मुंद्रा फरुए हारी। सभ भागी सिद्धां की शक्त। कब कौंस गुरु जी की जलत।

उस समय मंगल नाथ से रहा न गया और कहने लगा क्यों श्री गोरख जी देखा आप ने गुरु नानक का चमत्कार।

गोरख का कथन॥ कै उंगल गगन कै भंजल अकास तारे। कै भार बनस्पति इंद्र बरसै कै धारे। कै सैल सुर परबत कै रत्ती संसारे। प्रणवै गोरख सुणहु नानक तुम आए कै वारे। गुरु नानक जी का कथन॥ चार उंगल का गगन है दुइ अकाश में तारे॥ दुइ भार बनस्पति है इन्द्र बरसे नौ धारे। सवा सेर सुमेर पर्बत है इक रत्ती संसारे। प्रणवे नानक सुणहु गोरख हम आये इक बारे॥ १॥ खिंदड़े सिद्ध का कथन॥ कवन गुरु कवन चेला॥ कवन मूल कवन मेला॥ कवन वम्तले रहे अकेला। कायां कहो काहे की पंड। किस ऊपर किस पुरुष की अंड॥ गती जो बोलहि कथ खाहि॥ किस शब्द नानक परेपर जाहि॥ १॥ गुरु नानक देव का कथन॥ राब गुरु सुरतु धुन चेला॥ मन भुल पवन संग मेला॥ तत वस्तु लै रहे अकेला॥ कायां पवन पानी की पंड॥ किस ऊपर सतिगुर की अंड॥ सत गती बसही कथ खाहि॥ इत शब्दे खिंदड़ों अमर पुर जाइ॥ २॥ खिंदड़ी का कथन॥ कौन नगरी कौन सुलतान॥ कौन लोक वसे पर्धान॥ कोन सु राजा कौन सु महिमा॥ देह नानक नगरी की बाता॥ ३॥ गुरु नानक देव जी का कथन॥ कायां नगरी नाउं सुलतान॥ पंच तत बसहि पर्धान॥ मन राजा पौण है महिला॥ लेहु खिंदड़ नगरी

किआं बाता ॥ ४ ॥ खिंदड़ का कथन ॥ कहां वसै मनूआ क्हां वसै पवना ॥ कौन टोर घट ताल बजावै ॥ पंजां का गुरु कोन भोग अहार ॥ देह नानक इस शब्द का विचार ॥ गुरु जी का उत्तर ॥ हिरदै वसै मनूआ नाभ वसै पवना हेट घट नाद वजावै ॥ पंजां का गुरु तत अगन भोग आहार ॥ लेहु रे खिंदड़े देही की बिचार ॥ ६ ॥

खिंदड़े का कथन ॥ कित मुख आए हो कित मुख जायगो। कैसे नाड़ी कैसे संध ॥ काया सोखी करै पवना कौन मड़ी कौन दुआर ॥ देह नानक शब्द का विचार ॥ ७ ॥ गुरु नानक देव जी का कथन ॥ उत्तरा मुख आये दखण मुख जाहिगो ॥ नौं सौ नाड़ी सोलां सौ संध ॥ निज सोखी केरे पवन असंभ ॥ मड़ी चिंत दुवार ॥ लेहु खिंदड़ शब्द का विचार ॥ ८ ॥ खिंदड़ का कथन। कित परचे लागै बंध ॥ कित परचै परै न कैद ॥ कित परचै ससि सूरज फूटै ॥ कित परचै माया मोह टूटे ॥ ९ ॥ गुरु जी का कथन ॥ मन परचे तां लागै बंध ॥ पौण परचै पड़े न कंध ॥ ज्ञान परचै तां ससीअर फूटै ॥ सत गुरु परचै माया मोह छूटै ॥ १० ॥ खिंदड़ का कथन ॥ आदेस किस को आदेस ॥ आदेस का बाग तेस ॥ मन कवन उपदेश ॥ ज्ञान गुरु का कथीअले पूता ॥ किस मुख पाइये मेर ॥ ११ ॥ गुरु नानक देव जी का कथन ॥ आदेस तां पूरे को आदेस ॥ पूरे सतिगुरु का अनुपम उपदेस मन का निरंतर बसै। ज्ञान का गुरु संतोष। सतिगुर की चरणी लगीऐ पूता। तौ इस बिधि पाइये मोख ॥ १२ ॥

यह सुन ऊरम धूरम सिद्ध वहां आया, जिन को क्रोध बहुत ही चढ़ा हुआ था और आते ही कहने लगा।

धूरम का कथन ॥ अगन जलावो जल में डोबो। चमक सार कसाई। ऐसे दोष लगावो तुम को धरती बीच गडावों एक तमाचा मारों ऐसा अंबर साथ झुलाइ। ऐसा देखो जोर हमारा सगले पाउं लगाई। जो तू

हमरा कहा न मानै अबहि करों तुम छाई। जेहा जोर धरे हम अपना तुझको मालम नाहीं॥ ११॥ गुरु नानक जी का कथन॥ पहिरा अगन हिवै घर बाधा भोजन सार कराई॥ सगले दूख पाणी करि पीवां धरती हाक चलाई। एता तान होवै मन अंतर करीं भी आखि कराई॥ एवड बधा मावा नाहीं सभसै नथ चलाई। एता ताण होवै मन अंतर करी भी आख कराई। एवड बधा मावा नाहीं सभसै नथ चलाई॥ एता ताण होवै मन अंतर करी भी आख कराई॥ जेवड साहिब तेवड दाती दे दे करै रजाई॥ नानक नदरि करै जिस ऊपर सचु नामु वडिआई॥ फिर ऊरम नाथ कहने लगा-

ऊरम बोले तत विरोले सुणहु नानक मोदी। क्यों कर वस्त प्राप्त होवै किन पाये तुम गोदी। आख वखाने भेद न जाने गुर बिनु सूझ न जाणै॥ गुर बिनु सूझै न होई। सिद्ध मिलै बिनु बुध न उपजे जन्म अकारथ खोई। ऊरम कहै सुण नानक मूढ़े सतिगुर सिर थापो। गुरु गोरख की चरणी लागहु तीन लोग महि जापो॥ १॥ गुरु नानक जी का कथन॥ मोदी कहीऐ एकंकारी तीन लोक को पालै। लख चुरासी जोन स्थाई जीव जंत को नालै। तिस की कृपा वस्त्र प्राप्त गुरु ते पाई। गुर प्रसादि ब्रह्म पछाणिया मैल न राहीआ काई। निर्मल बुध सुध मम हाजर परम पदार्थ पाया। रितु जननी की बिंद पिता मिल करते बाद बनाया। नानक कहै सुण ऊरम मूढ़े तै बिरथा जन्म गवाया। झंगर नाथ का कथन॥ कवन महितारी कवन पिता। गुरु कवन कवन होता। कवन उपदेस कवन भेस जंगम को भोगी के रोगी हरखी के सोगी। प्रणवत झंगर सुण रे बाला। कवन प्रकाश मिटहि जंजाला। गुरु नानक जी का कथन॥ खिमा महितारी संतोष पिता। सतिगुर करतार का होता। बेगम पुर देस सगले भेस। जंगम ने जोगी हरखी न सोगी। भोगी न रोगी। प्रणवत नानक झंगर बाले। ओंकार प्रगासिआ तां मिट गये जंजाले।

श्री गोरख नाथ जी का कथन। मुंद्रा पहिरों झोली लेवहु मस्तक धूर लगावो। सदा अजीत कायां रहसी खिंथा अंग हंडायो। हाथो फहोड़ी डंडा राखरु तो सिद्ध प्रतीता। मेल मिलावहु सिद्ध जमाती ईउं सगल जग जीता॥ १ ॥

आदेस कहो सभ सिद्धां को आदेस॥ रहाउ॥ भगती लेहु भंडारा भोगहु मुख ते नाद बजावो। नाथां नाउं होइ के बैठ जुगु जुगु रिध सिध लगावो। सगल सिद्ध तुम आज्ञाकारी जोग संजोगो पावो। एक माउ को पूता होवै जोग जुगति जुगति के चेले संसारी के भंडारी होवै दीवान तुम्हारे सगले। तुम सिर ऊपर न कोई होई रहे प्रधाना। हुकत तुम्हारा सभ ते ऊचा इउं चल है फुरमाना। खंड खंड महि आसन बैठे लोई लोइ चले भंडारा। लख चुरासी बचन मैं बांधों रसना एक उचारा। कर कर देखो अपना आपे समझो रिदे बिचारी। अणवत गोरख सुणहु नानक ऐसी कार तुम्हारी।

यह सुन कर गुरु नानक देव जी महाराज ने जपुजी साहिब की पौड़ियें उच्चारण की।

गुरु नानक देव जी का कथन॥ मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति॥ खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति॥ आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु॥ आदेसु तिसै आदेसु॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु॥ २८॥ भुगति गिआन दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद॥ आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद॥ संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग॥ आदेसु तिसै आदेसु॥ आदि अनील अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु॥ २९॥ एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु॥ इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबान॥ जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु॥ ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता

एहु विडाणु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३० ॥ आसणु लोइ लोइ भंडार। जो किछु पाया सु एका वार। करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची कार ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ ४ ॥

गुरु नानक देव जी के इस परम पवित्र उपदेश से तमाम सिद्धों की परम तृप्ति हुई। तब गोरख नाथ जी कहने लगे- हे नानक! तुम लोग इधर किस प्रकार आए हो। अपने आने का कारण बताओ। तुम्हारी तमाम अभिलाषा हम पूर्ण करेंगे। तब गुरु जी ने कहा- गुरु नानक देव जी का कथन ॥ एक मनोरथ कीआ पूरा। जद हम को मिलिया सतिगुर सूरा ॥ अवर मनोरथ रहिओ न कोई। सिध बुधि भरमें सभ लोई। सुण गोरख तुम दीखिआ देऊं। प्रणवत नानक सच समेऊ।

यह शब्द सुन कर गोरख नाथ मौन हो गया। तब मंगल नाथ ने कहा-क्यों रे गोरख जी आप ने नानक देव को कुछ उपदेश किया? गोरख ने उत्तर दिया हम अभी नानक को देख रहे हैं। अब हमें मालूम हुआ है कि नानक देव पूर्ण पुरुष हैं। तब मंगल नाथ ने कहा-जैसा आप ने नानक को देखा है। वैसा ही आप कथन करो। गोरख ने कहा-हे नानक! जैसा आप उपदेश करते हो। वही सत्य है। हम साध हैं। सत्य को सत्य ही कहेंगे।

उस समय मर्दाने ने हाथ बांध कर कहा-हे गुरु देव! क्या अभी आगे जाने का विचार है अथवा नहीं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! अभी आगे बहुत से स्थान हैं। तब मर्दाने ने कहा-तब आप आगे भी चलो। गुरु जी ने कहा-हां! अभी चलते हैं तब मर्दाने ने कहा-हे गुरु जी! मैं नौं नाथ चौरासी सिद्धादिकों के नाम सुनने की इच्छा रखता हूं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! जल्दी न करो। हम तुम्हारी तमाम इच्छायें पुर्ण करेंगे और सभ के नाम बतायेंगे। तब गुरु जी आगे की ओर चले।

साखी प्राणका सिद्ध से

फिर प्राणका नाथ ने अपने आसन से उठ कर यूं कहा- प्राणका का कथन॥ कतंच भुगता कतंच जुगता कतंच रहिबो अरोगी। कतंच लच्छन कतंच अब छन पाइबो जोगी। सुणहु नानक प्राण नाथ पूछै देहु जवाब नानक तपा॥ १ ॥ गुरु नानक देव जी का कथन॥ नाम भुगता सति जुगता द्रिड़ंत रहिबो आरोगी। पीआ लच्छन उपदेश लछण प्रेम पायबो जोगी। सुणहु प्राण तपा धन्न सतिगुर सु भगता। प्रणवै नानक तपा लेहु जवाब सिधा॥ २ ॥ प्राणका का कथन॥ धन्य हो तपा प्रणवत धन्य सतिगुर सिध गता॥ ३ ॥

इस प्रकार कह कर प्राणका गुरु जी के चरण स्पर्श करने को आया। गुरु जी ने उसे शीघ्र ही गले लगा लिया और परस्पर अभिवादन हुआ और प्रसन्नता हुई। उसने कहा- आज हमें निरंजन आदि पुरुष का दर्शन हुआ है। हे नानक देव! जो मंद मति तुम में और परमात्मा में भेद मानता है। सो सच्चे अर्थों में योगी नहीं है। मैं तो आप को परम पुरुष ही जानता और मानता हूं। आप के ऊपर उस परमेश्वर की परम कृपा है। यह कहकर प्राण नाथ अपने आसन पर जा बैठा। मंगल नाथ ने आकर कहा-हे प्राण नाथ! आप ने नानक देव को कैसे देखा है। तब प्राण ने कहा-हे मंगल जी! आप ने जैसे कहा था हम ने नानक को वैसे ही देखा है। अर्थात् सच्चिदा नंद ईश्वर और नानक एक ही रूप है। हमारे अहोभाग्य जो नानक के प्रिय दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो गया। मैंने अपने भाव बता दिये हैं तुम्हारे भाव तो तुम ही जान सकते हो।

तब मंगल नाथ ने कहा-मेरा भी दृढ़ विश्वास हो गया है कि नानक और निरंकार एक ही है। प्राण ने कहा-हे मंगल नाथ! आप भी धन्य हो। आप जैसी उत्तम बुद्धि प्रत्येक की नहीं। यह भी आप के सौभाग्य हैं।

इधर मर्दाने को गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना जिस पर ईश्वर कृपा होती है। वह सत्य के आगे नत मस्तक हो जाते हैं और अंड वंड नहीं कहते। यह सच्चा नाच है। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! अब आप हमें सच्चे नाथों के नाम बताने की कृपा करो। आप ने फुरमाया था कि हम बतायेंगे।

गुरु नानक देव जी प्रसन्न होकर कहने लगे-हे मर्दाना! अब तुम ध्यान पूर्वक सुनो-

१. गोरख नाथ, २. मछंदर नाथ, ३. चरपट नाथ, ४. मंगल नाथ, ५. घुघू नाथ, ६. गोपी नाथ, ७. प्रान नाथ, ८. सुरत नाथ, ९. चंबा नाथ। हे मर्दाना! यह नौ नाथ कहे जाते हैं, वैसे तो और कहने को अनेकों नाथ कहे जाते हैं। फिर मर्दाने ने कहा-हे महाराज! वह जो षट जती कहें जाते हैं वे कौन से हैं? गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! प्रथम तो गोरख जती हैं। दूसरे दत जती हैं तीसरे हनुवंत जती हैं चौथे भैरव जती हैं, पांचवें लक्ष्मण जती कहा जाता है, तथा छटे भीष्म जी को यति कहा जाता है, यह षट यति संसार में प्रख्यात हैं। नाथों की भांति और भी अनेक यति कहे जाते हैं, परंतु यह षट यति सत्य हैं। मर्दाने ने कहा-हे गुरुदेव! अब मैं चुरासी सिद्धों के नाम कथन करने लगे।

१. झंगर। २. संगर। ३. लंगर। ४. झंगर। ५. ऊरम। ६. धूरम। ७. हनीफा। ८. लहुरीपा। ९. सागर। १०. मघर। ११. राजी रत्न। १२. पूरन नासका। १३. बिथालका। १४. जालका। १५.खिंढड़ा। १६. निरता। १७. शुरता। १८. केवल करन। १९. सिमता। २०. गगन गल। २१. अमर निध। २२. चतुर बैन। २३. राउ ऐन। २४. मेल कर्म। २५. ओगढ़। २६. परबत। २७. ईसर। २८. भरथरी। २९. भूतवे। ३०. करनसं। ३१. शंभू। ३२. पलक निध। ३३. अछर दैन। ३४. पिपलका। ३५. सोरमा। ३६. गिर बोध। ३७. सालका। ३८. केसर करन। ३९. गैलसा। ४०.

अग्निधार। ४१. मुक्तिसर। ४२. चलन नाचतो। ४३. सुर ऐन। ४४. सिध सैन। ४५. गिर वर। ४६. जोत लग्नी। ४७. जोत मग्नि। ४८. बिमल जोत। ४९. सीतल जल। ५०. अघर घर। ५१. तुलस जोर। ५२. प्रत पान। ५३. अकार निर। ५४. भोल सार। ५५. राम कुआर। ५६. क्रिश्न कुआर। ५७. बिशन पति। ५८. संकर जोग। ५९. ब्रहम जोग। ६०. मीर हुसैन। ६१. नीर जंबील। ६२. कलंदर नैन। ६३. तलिंद्र नैन। ६४. सुरसती। ६५. गुवरधन। ६६. लाशी। ६७. अकल नाशी। ६८. कलकसगी। ६९. एक संग। ७०. केवल करमी। ७१. कर्म नासी। ७२. कुल बिबासी। ७३. मूल मंत्री। ७४. जोग वंती। ७५. जोग रहे। ७६. ईसर पुंगी। ७७. आप रूपी। ७८. कले रूप। ७९. रहीम जोगी। ८०. सलास चौरासी। ८१. किदार जोगी। ८२ संभालका। ८३. जोगी बचित्र। ८४. सारद। यह सिद्ध कहे जाते हैं।

तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज! नाथों और सिद्धों को तो आप ने जीत लिया है परन्तु अभी योग शेष हैं। आप ने कहा कि पट यति हैं जिन्हों ने गृहस्थ स्वपन में भी नहीं भोगा। हे महाराज! मैंने तो अनेक ऐसे भी सुने हैं जिन्होंने स्त्री का मुख तक भी नहीं देखा। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! ध्यान से सुन यह पट यति बिलकुल सच्चे हैं, परन्तु दूसरा का वीर्य क्षीण होता रहता है। इस लिए उनकी गणना यति समाज में नहीं हो सकती। तब मर्दाने ने कहा-हे गुरुदेव! जब वे मैथुन नहीं करते तब वीर्य पात का तो प्रश्न नहीं उपजता। तब गुरु जी ने सलोक उच्चारण किया।

सलोक ॥ नवें सत दसवें यारवें हउं जाल जाला। प्रणवे नानक सुणहु मर्दाना पिंड गृहस्ती ताला॥ १ ॥

तब गुरु नानक जी ने कहा-हे मर्दाना! नवम द्वार में बिन्दु जाती है। उसे ही यति कहा जाता है जो सभी द्वारों से होश्यार हैं मैथुन नहीं

किया तो मुख के रास्ते निकल गई उसे यति नहीं कहते। यदि सभी द्वारों को रोके तो उसे यति कहते हैं। हे मर्दाना! मैंने तुझे षट यति कहे हैं। तब मर्दाने ने पूछा-हे गुरुदेव! अन्य द्वारों से किस प्रकार जाती है? गुरु जी ने कहा-मुख से आप शब्द बोलते हैं। तब मुखद्वार से जाती है यदि कोई मनोहर सूरत देखते हैं तो आंख मार्ग से जाती है। यदि कर्ण के मार्ग से कोई विषय भोग की बात सुनी तो श्रोत मार्ग से जाती है। यदि घराण मार्ग से कोई विषय वासना रूपी सुगंधी भीतर गई तो वह धारण मार्ग द्वारा जाती है और यदि कोई मनोहर मूर्ति अवस्था में जाग्रत देखो तब मूंत्रेंदिय द्वारा स्वप्न में निकल जाती है। हे मर्दाना! हम ने जो षट यति कहे हैं। उन की किसी मार्ग द्वारा भी बिंदु नहीं जाती। ये विशुद्ध यति हैं।

तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज! अब आगे चलना ही चाहिये। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! शीघ्रता मत करो। तब गोरख नाथादिक ने कहा-हे नानक देव! अधिक देशार्टन से क्या लाभ है? आप यदि इसी स्थान पर निवास करें तो अच्छा है। तब गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया जिसे गोरखादिक ने अत्यंतध्यान पूर्वक सूना-

राग आसा महला १ ॥ एक जंजाल हमारा कहीए साधु सूरत को परसणि। लख चौरासी हमते छूटी एक सतिगुर के दरसनि। सुन सिधी भाई मेरे। सतिगुर मिले तां होइ निबेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आसण बैसण हम तै छूटै छूटै करम निआरा। सगले बंधन पग ते काटे पाये मोख द्वारा ॥ २ ॥ एकंकार पर नदरि हमारी दूजा चित न धारो। दस अवतार अवर सभ देखते वार वार कर डारो। प्रेम प्रीत के भोजन मेरे सहिज रंग महि खेलो। प्रणवे नानक सुणहु सिद्धो नाथ शिव शक्ति इव मेलो।

तब मंगल नाथ ने गुरु जी की बहुत स्तुति की। फिर मैं (बाला) और मर्दाना गुरु जी के साथ अंतरध्यान हुए।

ब्यार पर्बत की साखी

फिर इस ब्यार पर्बत पर जा पहुंचे जहां दत्ता त्रेय जी प्रख्यात सन्यासी है। वह वहां लेटा पड़ा देखा। तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज! हम अब कितनी दूरी पर पहुंचे हैं? गुरु जी ने कहा- अब हम सुमेर से साढ़े सात सहस्र योजन पर आ गए हैं। मर्दाने ने कहा-यहां भी कोई प्रख्यात पुरुष है। तब गुरु जी ने कहा यहां एक सन्यासी रहता है। जिसे बहुत से साधु पूज्य मानते है। उस का नाम दत्ता त्रेय है। वह जो ऊंचे पर्बत हैं उन पर उस का स्थान है। हम उसे भी जरूर मिलेंगे फिर गुरु जी दत्ता त्रेय के आश्रय में जा पहुंचे। दत्ता त्रेय अवधूत को सोये हुए पाया। मर्दाने ने कहा अब इस से बात करनी उचित है। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना तेरा कथन मानेंगे।

यह सुन कर श्री गुरु नानक देव जी महाराज कहने लगे। श्री गुरु जी का कथन॥ अजपा कहीऐ सोई जप दीसै। क्यों न जपीऐ पूरन जगदीसै। जप करते अजपा हो जावे। तब काया निर्मल होइ जावै। बिनसै कायां तब एक न ध्याया। जब लग कायां तब लग ध्यानी। नानक बोलै सच्ची बाणी। सुन दत्ता त्रेय भगवान प्राणी॥ श्री दत्तात्रेय का कथन॥ जाप जपे दृष्ट न आवे। देख अदृष्ट प्रभि जाप भुलावै। कायां थाकी रसना थाकी। आप नारायण होया साखी। ना किछु जपना ना किछु तपना। दव कहै सभ एको थपना। दत कहै सुन नानक तपा। काहूं तूं जाप काहूं न जापा। श्री गुरु नानक देव जी का कथन॥ जपता जाप एकंकारा। सभ मूरति ते रहत न्यारा। नानक बोले सच्च की बाणी॥ सुण स्वामी तूं सच्च समाणी॥ श्री दत्तात्रेय जी का कथन॥ सुन तपा निरंकार तैं देखया है। स्वामी पूछै चिन्ह बताओ। झूठ न बोलो प्रत्यक्ष दिखाओ। बिन देखे क्या साखी होवहु। झूठ बोल के जन्म न खोवहु।

गुरु जी का कथन॥ झूठ ना बोलो तत विरोलो हाजर चिन्ह दिखावऊं। जोगी और सन्यासी भरमै तिन को घर पहुंचावहुं। वेद शास्त्र कर देवता भूले तिन को नहीं ठहिरावहुं। एक निरंजन मूरति आछी ताकी परस्पर गुण गावउं। श्री दत्ता त्रेय का कथन॥ स्वामी बोले तत विरोले क्या झूठी बातें करता। मुख से बचन उचारो ओही जो तुमरे में शक्ता। ओही बातां कहीऐ मुख ते जीउ निरंजन भावै। इन बचनों कुछ पाईऐ नाहीं काहे सत गवावैं॥ ८॥ श्री गुरु नानक जी का कथन॥ सत हमारा कदी न जावै हम बोले झूठ न राई। एक निरंजन संग हमारे अठे पहर रहाई। रोम रोम ओही बोलै दूजा अवर न कोई। ऐसे दशर्न कारण स्वामी भ्रम हरो सभ लोई। सो दर्शन हम गुरु दिखाया मीन न रहिओ मेखा। दस अवतार किसे नाही देखिया सो हुण प्रत्यक्ष दीखिआ। श्री दत्ता त्रेय जी का कथन॥ बातैं पर प्रतीति न आवै जो प्रत्यक्ष न दीखै। हैसी बात न सुनियें आगे षट दर्शन को भैखै। तू तो बात सुनावें अचरज आत्म नाहि पतीजै। स्वामी कहै सुण नानक तपै झूठ सुणे क्यों कोई रीझै॥ १०॥ गुरु नानक देव जी का कथन॥ रीझोगे जब नैनी देखो तुमरा चित कठोरैं। जटा वधाई देही गाली जैसे पाहन कोरै। कंबल खुंब चढ़ावै भावें उज्जल होय न जावै। नारी दस छेत्र करै सिंगारा कंतन कबहु रावै। दत्ता त्रेय जी का कथन॥ चल हो तपा निरंजन कैसा जो तुम कहत हो देखिया। शासत वेद पुरान पुकार हि जिहि बिधि कबहु न लेखिआ। अचरज बात सुनाई। तुम हू हम तो भरमत भटका। हल चल उपजी ठहर न पावें चित हमारा अटका॥ १२॥ श्री गुरु नानक देव जी का कथन॥ मूरति लाल सब्ज है कायां जैसे रोम सवरना। हीरा मोती चरन दिखाईऐ चंद सूरज दो नैना। दांत जड़ाऊं बने जवाहर भवां सूल शकर झलकै। नक्क दोसत खडे की धारा जैसे दामन चमके। चलकर वेखो तुम्हें दिखाऊं तब तूं माने स्वामी। निरंजन के नानक सदा हजूरी आठा

पहर सलामी ॥ १३ ॥ श्री दत्ता त्रेय जी का कथन ॥ देखी शक्त तुम्हारी नानक जो बोलें सो साची। अब प्रतीत भई है हम को हृदय अंदर नाची। धन्न सो गुरु तुम्हारा कहीए जिन तुम को देख दिखाया। ऐसा आगे और ना साधु जो नानक तपा बनाया॥ १४ ॥ श्री गुरु नानक देव जी का कथन ॥ पट दर्शन पंथहु देखो भेख तुम्हारा ऊंचा। जात वरण सब सेवक तुमरे संग न कोई पहुंचा। रिद्ध सिद्ध सभ पीछै डाली एकै किया अधारा। नानक कहे सुन दत्ता स्वामी सच्चा भेप तुम्हारा॥

इसके पश्चात् गुरु जी और दत्ता त्रेय जी ने परस्पर अभिवादन किया, तब बाला (मैं) और मर्दाना मुस्कराने लगे। मर्दाने ने कहा-हे बाला हमारे गुरु जी के आगे कोई भी ठहर नहीं सका। बाले ने कहा-हे मर्दाना! हमारे गुरु जी सभ से ऊपर है और इन की अपार महिमा है और हमारे गुरु जी धन्य है।

जब गुरु अंगद देव जी ने पूर्वोक्ति प्रसंग सुना तो आनंद में लीन हो गये। साढ़े तीन पहर विदेह ही रहे। जब नेत्र खुले। तब कहने लगे अब आगे सुनाओ।

काग भुशुंडि की साखी

अब गुरु जी काग भुशुंडि के आश्रम में गये। जहां अनेकों ऋषि पक्षियों के रूप में काग भुशुंडि जी से कथा सुन रहे थे। जब कथा समाप्त हुई तो समस्त ऋषि अपने अपने आश्रमों को गये। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना तुम इस समय कुछ कीर्तन का समय बांधो। काग भुशुंडि ने जब कीर्तन की आवाज़ सुनी तब कहने लगा-यह कीर्तन कौन कर रहा है? तब मर्दाने को देख कर उस ने प्रश्न किया कि तुम किस का कीर्तन करते हो, तब मर्दाने ने उत्तर दिया कि यह सभी कीर्तन गुरु नानक देव जी के कहे हुए हैं। तब भुशुंडि ने कहा-क्या वही नानक है, जिस

ने कलियुगी जीवों के उद्धार हेत अवतार धारण किया है, तब मर्दाने ने कहा-हे ऋषिवर! यही गुरु नानक देव जी महाराज हैं जो आप के सन्मुख विराज रहे हैं। यह सुन कर भुशुंडि ने बहुत ही प्रसन्न हो कर गुरु जी के चरणों पर नमस्कार किया। तब गुरु जी प्रसन्न हुए और कहा- हे ऋषिवर! आप उत्तम श्रोताओं में से हो क्योंकि आप शब्द के महत्व को जानते हो। तब काग भुशुंडि ने कहा-हे नानक देव! जो पुरुष शब्द के तात्पूर्य को जान जाते हैं वही अमिय रस पान करते हैं। जो संगीत की तान का ज्ञान रखते हैं, वह छिलका खाने वाले हैं। तब बाले ने कहा-आप प्रम हंस हो और महा पुरुष हो तथा परमेश्वर के प्रेमी हो। आप ने यह काग देह क्यों अपना रखी है। काग भुशुंडि ने कहा-हे संतवर! मैं ने इसी देह की कृपा से प्रभु दर्शन पाया है तथा इसी लिये मुझे यह देह प्रम प्रिय है, जब प्रलय होती है तब मैं यही देह धारण करता हूं। यह शक्ति भी मैंने इसी देह से प्राप्त की है तथा मेरी मृत्यु मेरी ही इच्छा पर है। मैं जब चाहूं तभी मरूंगा। यह भी इसी देह की कृपा का फल है। बाले ने कहा कि यह तो इस देह की महिमा आप ने वर्णन की है। मैं पूछता हूं कि इस देह का कारण क्या है? काग ने कहा- सुनो मैं पूर्व जन्म में ब्राह्मण था, मुझे गुरु ने निर्गुण उपासना बताई। जब मैं ने सगुण उपासना पूछी तो गुरु ने मुझे कहा तू तो काग की भांति कांय कांय करता है। मैंने गुरु के चरणों में मस्तक रख कर कहा-हे गुरु देव! आप सत्य बक्ता हैं। आप का कथन सत्य होगा। मैं चाहता हूं कि मेरा शरीर भले कव्वे का हो जाय। परंतु ईश्वर नाम से जो प्रेम है वह सदैव बना रहे। तब गुरु जी ने मुझे वर दिया कि तुम को ईश्वर भक्ति सदैव प्रसन्न रखेगी और मृत्यु तेरे अपने अधीन होगी। जब तुम्हारी इच्छा होगी तभी मरोगे। फिर मैंने काग देह प्राप्त की और राम नाम महा मंत्र को जपना मेरा कृत्या चला आ रहा है। राम नाम

महा मंत्र का रस पान करता चला आ रहा हूं। मेरे जीवन में अनेक वार महा प्रलय हो चुकी है। यदि जल की प्रलय होती है तब जल हो जाता हूं। अग्नि से अग्नि बनता हूं। जैसे प्रलय होती है वैसा बनता हूं। मुझे स्वासों का संयम प्राप्त है।

यह सुन कर गुरु नानक देव ने कहा-कि रोम ऋषि और आप को चिरंजीवपन मिला हुआ है। तुम को राम नाम स्मरण प्राप्त है। इस लिये जन्म मरण से छूट चुके हो और आप का कथन बिल्कुल सत्य है।

इस के पश्चात् गुरु जी हम दोनों को साथ ले कर आगे चले। फिर अल्ला चीन पर्बत पर गये। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह अल्ला चीन पर्बत है। इस पर अल्ला नाक पक्षी बहुत होता है और यहां पर प्रहलाद भक्त का राज्य है। मर्दाने ने कहा कि क्या प्रहलाद भक्त का हमें दर्शन हो सकता है? गुरु जी ने कहा कि हां तुम को उस का अवश्य दर्शन होगा। अभी यह बातें हो ही रही थीं कि अल्ला पक्षियों ने हम सभ को आ कर घेर लिया। उन पक्षियों के सरदार ने कहा-

अल्ला का कथन ॥ अल्ला मिल कर पाया घेरा ॥ कौन गृह तुम करहु वसेरा। कौन मनोरथ इहां आये। कौन नाह तुम किनो पटाये। अल्ला चीन पुछि है बाबा। पिंड पाय कर फिरते काबा ॥ १ ॥

श्री गुरु जी का कथन ॥ अल्ला मिल कर पाया घेरा ॥ हिर्दे भीतर लिया बसेरा। दर्शन कारण ईहां आया एक निरंजन आप लियाया। छूट जाय जे होय कचाया। जद पाका तब ठणक बजाया। सुण अल्ला चीन नानक कहि अरदास! एक निरंजन राखी आस।

यह सुण कर पक्षी सरदार गुरु जी के चरणों पर मस्तक धरणे को आया। तब गुरु जी ने अपने चरण पीछे कर लिये और कहा-हे पक्षी वर! हम आप के दर्शनों को यहां आये हैं। अल्ला ने कहा कि हमारे अहोभाग्य हैं जो आप के दर्शन प्राप्त हुए हैं। तब मर्दाने ने पूछा कि

हे पक्षी वह आप के जो महाराज हैं वह कहां हैं? तब उस पक्षी ने कहा-वे हमारे महाराज हैं। आप उन के दर्शन अवश्य करें। फिर नानक देव हमें संग लेकर ऊंचा पर्बत पर गये। जहां प्रहलाद जी ध्यानवस्थित अवस्था में बैठे थे। गुरु जी ने वहां जा कर सत्य करतार का शब्द उच्चारण किया। प्रहलाद जी ने नेत्र खोल कर कहा-हे भाई! आप कौन हैं और कहां से आ रहे हैं। गुरु जी ने उत्तर दिया कि हम परमात्मा के बन्दे हैं और यहां लाने वाला भी वही है। यह सुण कर प्रहलाद कहने लगा।

श्री प्रहलाद जी का कथन ॥ बासन धोइ आछा कीना ॥ कौण अच्छा दूध चोय लीना। कौण समायन बीच समाया। कौण ठौर रख दहीं जमाया। कौण जबन कर कढिआ माखन। कौण ताउ दे निर्मल चाखन। पूछै परलाद सुण तपा। किस ते बुझिआ आप ते आपा ॥ १ ॥ गुरु नानक जी का कथन ॥ तन धोय आछा बासन कीना। क्षमा चोय दूध माथ लीना। लगन अग्नि ते ताऊ बणाया। गुर उपदेश समान समाया। गुर कृया साथ लीना माखन। हरि कृपा निर्मल तत चाखन। संत संग लै दहीं जमाया। मति को मथि सबदि परगटाया। प्रणवै नानक भगत परहिलादा। मुहि सूझ पड़ी हैं आदि जुगादा ॥ २ ॥ प्रहलाद का कथन ॥ धन्य गुरु जिन कीआ ज्ञान। कलियुग अंदर आछा ध्यान। आछा करनी आछा भेष। आछा बुद्धि आछा बिवेक। सुण नानक प्रत्यक्ष साध। राम नारायण तुमरे साथ। श्री गुरु नानक देव जी का कथन ॥ धन्न सु राम धन्न जिन चलत दिखाया आत्म राम। ऐसी भगत भई तुम्हारी। तत काल प्रभु कीनी कारी। सास सास प्रभ नाम चितारयो ॥ नानक जन का काज सवारया ॥ ३ ॥

तब भक्त प्रहलाद ने कहा-हे नानक देव! आप को इस कलियुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप की ही संगति से अनेकों प्राणियों का भला होगा और आप का अनंत प्रताप होगा तब मर्दाने ने कहा-हे

प्रहलाद जी! आप भी तो प्रम भक्त हैं तथा भगवान ने आप के लिये ही अवतार धारण किया था। प्रहलाद जी ने कहा—हे भाई मर्दाने! इस स्थान पर या तो कबीर पहुंचा है और या यह गुरु नानक आया है। यहां आना कोई सुगम कार्य नहीं है। एक और महा पुरुष होगा जो पहुंच सकेगा। मर्दाने ने कहा हे भक्त वर! वह पुरुष कौन और कब होगा। प्रहलाद ने उत्तर दिया कि जब गुरु नानक देव यहां आयेंगे तो इन के सौ वर्ष पश्चात् आयेगा अर्थात यहां केवल तीन आदमी ही आने हैं। एक तो भक्त कबीर और दूसरे श्री गुरु नानक देव जी। इन के पश्चात् तीसरा आयेगा। तब मर्दाने ने कहा-हे प्रहलाद जी! कबीर तो जुलाहा था और नानक देव क्षत्री हैं। परंतु वह तीसरा किस जाति का होगा? उत्तर में प्रहलाद जी ने कहा-हे मर्दाना! पंजाब की धरती और वर्ण उस का जाट होगा तथा नगर बटाला में होगा! उस समय मर्दाना गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा और कहने लगा-हे गुरुदेव! मैं भूल गया हूं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! जो पूर्ण पुरुष होते हैं। वह सभी संशय दूर कर देते हैं फिर प्रहलाद ने कहा कि गुरु नानक पूर्ण है और जहां पूर्ण पुरुष जाते हैं उस धरती के भाग्य महान् हो जाते हैं तथा वह महा पुरुष अपनी प्रसंसा स्वयं नहीं करते। तब सभी लोग बहुत ही परसन्न हुए। तब गुरु जी हमें साथ लेकर धरूव के स्थान को चले।

साखी धरूव मंडल की

॥ भाई बाला जी की रसना ॥

जब हम धरूव मंडल में पहुंचे तब धरूव जी अपने मंडल में सैर कर रहे थे हमें देख कर अचंभे में आ गये। धरूव भक्त की पुरी ठीक सच्चखंड के साहमने ही थी और बैकुंठ के निकट ही थी। जब धरूव ने गुरु नानक देव जी को देखा तो आ कर प्रणाम किया और कहा-हमारे

अहोभाग्य हैं जो आप के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। गुरु जी ने कहा-हे भक्तवर शुद्ध सात्विक भाव जो विष्णु में और मुझ में हैं। वही आप में भी है क्योंकि आप श्री विष्णु जी के निकटबर्ता हो। तब धरूव ने कहा-हे महाराज! यह स्थान अत्यंत आगम्य है यहां आप आ सकते हो। प्रत्येक पुरुष यहां नहीं आ सकता, इस लिये आप ही धन्य हो यह कह कर नमस्कार किया। गुरु जी ने कहा-हे भक्त जी! सतनाम की कृपा से पवन सवार हो कर यहां सुगम ही आ गये हैं। परमात्मा की सहायता है।

फिर गुरु जी महाराज ने मर्दाने को वहां छोड़ दिया और मुझे (बाले) साथ लेकर अखंड पर्बत पर गये। पहिले गुरु जी ने धरूव को विष्णु का रूप दिखाया फिर अपना रूप दिखाया तब धरूव भक्त ने कहा-हे नानक देव। आप धन्य हो! आप ने कलयुगी जीवों के उद्धार के लिये अवतार धारण किया है। आप की महिमा अनंत अपार है। आप के पवित्र शब्दों का कीर्तन करके कलियुग के जीव सदगति को प्राप्त करेंगे आप धन्य हो!

तब गुरु जी ने कहा-हम विष्णु जी के धाम को जायेंगे। कलयुग सम्बन्धी वार्ता करके फिर संसार की ओर जाने का विचार है। तब धरूव ने कहा-हे नानक देव! तुझ में और पारब्रह्म में कोई भी भेद नहीं है। मैं पहिले आप को और विष्णु जी को दो रूप जानता था। परंतु मेरे हृदय के पटल खुल गए तथा दोनों को ही एक रूप जानने और मानने लगा हूं। आप धन्य हो आप षोड़ष कला पूर्ण भगवान हो। आप पर उस परमात्मा की अपार कृपा हुई है, आप का गुण गाण करके संसार का उद्धार होगा। हे नानक देव! जहां आप की इच्छा हो वहां जाने में सामर्थ हो। तब गुरु जी धरूव भक्त से विदाई लेकर आगे चले।

सच्च खंड की साखी

फिर गुरु जी उस स्थान पर पहुंचे जहां महान् प्रकाश है, और प्रकाश रूपी सिंहासन पर निरंकार स्वयं विराज रहे हैं और देवी देवता अवतार अपने अपने हाथ बांधे हुए आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़े हैं, वह प्रकाश लाखों ही चंद्रमाओं के प्रकाशों से परम सुखदायक शीतल प्रकाश है, तब गुरु जी ने वहां स्तुति की विष्णु जी की उपस्थिति में वह स्थान पर्म रम्य हो रहा था। तब भगवान ने प्रेम से कहा-आओ नानक देव! तुम तो सदैव मुझ में मिले हुए हो, तुम में और मुझ में कोई भी अंतर नहीं है। तुम को सत्य नाम के उपदेशार्थ संसार में भेजा है। तब गुरु जी ने कहा-हे सर्वज्ञ! जहां आप की आज्ञा थी वहां सत्य नाम का प्रकाश मैंने किया है और जहां जो आज्ञा होगी वहां मैं पूर्ण करूंगा। यह कह कर गुरु जी ने शब्द कहा- ॥ शब्द श्री गुरु नानक देव जी॥ सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते केते वावणहारे॥ केते तेरे राग परी सिउ कही अहि केते तेरे गावणहारे॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे॥ गावनि तुधनो इसरु ब्रह्मा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे॥ गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले। गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे। गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे॥ गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले॥ गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले॥ गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे उठसठि तीरथ नाले॥ गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे॥ गावनि तुधनो खंड मडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे॥ सेई तुधनो गावनि जो तुधु

लिए कुछ कहा नहीं जाता। हमें जो उस ने अपने दर्शन दिये हैं। यह उस की अपार कृपा है। उस की महिमा परे से परे है। कोई पार नहीं पा सकता। इसी लिये उसे अनंत अपार कहा जाता है। अपनी महिमा आप ही जान सकता है। यह मूर्ख संसार अवतारों को ही परमेश्वर मान कर रहा गया है। अनेकों पुरियें उस मालक ने सृज रखी हैं। तब मैं (बाला) और मर्दाने ने कहा-हे गुरु देव! हम भी पुरुषों के दर्शन करना चाहते हैं। गुरु जी ने कहा तुम लोक नेत्र बंद करो। जब हम ने नेत्र बंद किये तो अनेकों दिव्य से दिव्य पुरियों के दर्शन हुए। जहां जहां हम लोग पहुंचे वहां अनेक समुंद्र पर्बत बन और सृष्टियें एक से एक बढ़ कर देखी। अनेकों रवि चन्द्रादिक तारागण प्रकाश करते देखे। जब हम ने अपने नेत्र खोले तो हम गुरु जी के सामने ही बैठे हुए थे। फिर हम ने गुरु जी के चरणों में प्रणाम किया और कहा-हे सतगुरु देव! आप धन्य हो। जो कुछ भी हम ने देखना था वह आप की कृपा से देख लिया है तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! जिस पर वह ईश्वर कोप करता है, तब उस की बुद्धि मलीन हो जाती है। बुद्धि मलीन होने के लक्षण सुनो, जिस की बुद्ध नाश होती है। वह मूढ़ पुरुष अपने आप को ईश्वर जानने लगता है तथा कलियुग में अपने को ब्रह्म मानने वाले हिरणाक्ष दैत्य के जैसे अनेकों पैदा हो जायेंगे और जिस पर परमात्मा की कृपा होती है वह अपने आप को उस परमात्मा का दास मानता हुआ उसी के ध्यान में निमग्न रहता है। संसार में क्रोधी पुरुष बहुत हैं। कामा और अहंकारी भी अनेक हैं। हे बाला- तथा मर्दाना! जिस के पास कुछ द्रव्य हो जाता है और चार भुजा उस की सहायक बन जाती है। तो वह पुरुष अपने को बड़ा मानता है और ईश्वर को भूल कर मन मानी करता है। वह यह नहीं जानता कि यह सब कुछ उसी की देन है, जब चाहे वह सर्व शक्तिमान छीन भी सकता है। माया ने जीव की बुद्धि फेर रखी है। मर्दाने

ने कहा-हे गुरु देव! जो कुछ भी आप की पवित्र रसना से निकलता है वह पूर्णतया सत्य है। इस में कोई भी संदेह नहीं हैं तब मर्दाने ने कहा-अब हम कौन से पहाड़ पर हैं फिर गुरु जी ने फरमाया कि इस समय हम कलका नाम के पर्बत पर हैं, फिर गुरु जी के साथ हम लोक तिह बंदर सूरत बंदर चपटा बंदर और नकठा बंदर वहां से मछली बंदर और लाहड़ी बंदर के रास्ते नीचे की ओर चलते गये।

साखी सीला प्रबंत की

इस के पश्चात् हम लोग गुरु जी के साथ सीला पर्बत पर आ गये, मर्दाने ने पूछा यह पर्बत धरती से कितना ऊंचा है? तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! हम ११ लाख योजन पर आ गये हैं, मैंने पूछा- हे गुरु देव! जहां पर निरंकार का सिंहासन है उस पहाड़ का नाम क्या है? गुरु जी ने कहा-हे बाला! उस पर्बत का नाम निर्विकार है। मर्दाने ने कहा-हे गुरु देव! क्या इस सीला पर्बत पर भी कोई महा पुरुष है अथवा नहीं। गुरु जी ने फरमाया कि इस स्थान पर कोई भी महां पुरुष नहीं है। तब मर्दाने ने कहा हमें भूख लग रही है। गुरु जी ने संकेत करके कहा कि वह जो सामने पहाड़ नज़र आता है उस पर फल पके हुए हैं वहां जाकर खा लो और कुछ तोड़ कर भी ले आने। मर्दाना वहां जा पहुंचा और फल खाने लगा, स्वाद फल थे। मर्दाना बहुत ज्यादा खा गया तो कुछ फल गुरु जी के आगे आ कर धरे। गुरु जी ने मुझे (बाले को) कहा खाओ। हम ने कहा कि आप भी खाओ, गुरु जी ने मर्दाने को कहा कि और ले लो। मर्दाने ने कहा-मेरा तो पेट भरा हुआ है फिर कहा-हे गुरु देव! यह अंमृत फल व्यर्थ ही जाते होंगे क्योंकि यहां कोई खाने वाला नहीं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना यदि भोगने वाला न हो तो वहां भोग उपलब्ध नहीं होते। मर्दाने ने कहा-हे गुरु जी यहां हमें तो कोई

जीव नज़र नहीं आता। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! एक गुप्त सृष्टी ईश्वर ने रच रखी है, यह फल उस गुप्त सृष्टि के लिये लगा रखे हैं। उन गुप्त महां पुरुषों में और निरंकार में अभेदता मानी जाती है तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज! यदि हम यहां ही निवास करें तो क्या हर्ज है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाने! तुम फलों के स्वाद पर अनुराग रखते हो। मर्दाने ने कहा-हे गुरु जी वहां जाकर भी निवास करना है और यहां भी निवास ही करना है। इस लिये यहां ठहिरना श्रेयस्कार है, परंतु गुरु जी की आज्ञा से हम सभ लौटने को तैयार हुए।

अहार गिरि की साखी

वहां से गुरु जी के साथ ही हम अहार पर्बत पर आ गए। पूछने पर गुरु जी ने बताया इस स्थान का नाम अहार पर्बत है और पृथ्वी से नौ लाख योजन पर है तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज आप कहते थे कि यहां पर साधु हैं वह कहां हैं? तब गुरु जी ने कहा कि वह साधु यहां ही हैं। तब एक साधु कुटिया से बाहर आया। उस साधु ने कहा-आप कौन हो? गुरु जी ने कहा-मेरा नाम निरंकारी है। तब साधु ने कहा-क्यों तेरा नाम नानक निरंकारी है? तब उस को गुरु जी ने कहा कि तुम हमें किस प्रकार जानते हो? उस साधु ने कहा कि मेरे गुरु ने मुझे बताया हुआ है। गुरु जी ने कहा-तेरा और तेरे गुरु का क्या परिचय है। उसने कहा-मेरे गुरु का नाम शील सैन है और मेरा नाम कल्याण है। मुझे गुरु ने एक दिन कहा था कि नानक निरंकारी ने अवतार लिया है। त्रेता में यही राम था उस के पास हम रहते थे। गुरु जी ने कहा-हम आप के गुरु जी को देखणा चाहते हैं तब वह साधु अपने गुरु के निकट जा कर कहने लगा-महाराज! तीन साधु बाहर ठहरे हैं। वह आप से मिलना चाहते हैं। उस ने कहा-हे कल्याण! उस से पूछो कि तुम मुझे

कभ से जानते हो? गुरु जी ने कहा-त्रेता में तुम मेरे निकट रहते थे। मैं तुम को जानता हूं। कल्यान के गुरु ने सुण कर कहा-हे कल्यान उस से पूछो कि त्रेता में राजा राम था, फिर गुरु जी ने कुछ विस्तार से भी कहा-फिर कल्याण ने अपने गुरु की आज्ञा से आकर कहा कि आप को मेरे गुरु बुला रहे हैं, भीतर चल कर दर्शन दो। गुरु देव जी हमें साथ लेकर साधु के पास गये, जा कर गुरु जी ने सत्य करतार की ध्वनि की। शील सैन ने हमारा स्वागत किया। हम वहीं बैठ गए, तब शील सैन ने कहा-

शील सैन का कथन ॥ कौण गुरु कौण मंत्र। कौण विद्या कौण जंत्र। कौण कला ले यहां आये। कौण नाम तुम किने मंगाये। शील सैन पूछै सुण रे भाई! बोल बचन देहु समझाई ॥ १ ॥ गुरु नानक देव का कथन ॥ गुरु करतार मंत्र दिढ़ाई। विद्या दीनी आप सहाई। सच्च कला ले यहां आये। अमर अजोनी पकड़ मंगाये। बोले नानक शील सैण भाई ॥ राम त्रेते तुम समझाई ॥ २ ॥ शील सैण का कथन ॥ राजा राम त्रेते युग हुआ। कलियुग में नानक गुरु थीआ। बीत युग जीता है औरा। तब तू रहात का की ठौरा। दस नाम तू अपना जोहू। शील सैण तब पूजे तोहू ॥ ३ ॥ श्री गुरु नानक देव जी का कथन ॥ सतियुग अंदर नाम हमारा। मिहरबान रखिआ करतारा। त्रेता राम चंद्र अवि होता। द्वापुर हरी चंद कहाता। कलयुग नानक कहत शील सैण कहु तोहू। अपना नाम बनाया मोहू। अगले युगां दी खबर तुम्हें नाहीं। नहीं तां सभ तुम को देत बताई।

यह सुण कर शील सैन ने गुरु जी की प्रदिक्षण की और गुरु चरणों पर दंडवत प्रणाम किया। धन्य हो राजा राम पर दुःख निवारन हारे भवजल से तारन हारे हो फिर कल्याण को शील सैन ने भोजन प्यार करने की आज्ञा दी। भोजन तैयारी के पश्चात् कल्याण ने कहा-हे महाराज! भोजन तैयार है, गुरु जी ने बाले और मर्दाने को भोजन पाने

की आज्ञा दी, शील सैन ने गुरु जी के आगे प्रार्थना की कि आप भी पधारिये। तब गुरु जी ने आगे लिखा शब्द उच्चारण किया-

श्री गुरु जी का कथन॥ शील संयम की भुगत हम खाई बहुत भूख नाहि लागै। हम माते हैं राम रसाईण आठ पहर घुन राते।

यह सुण कर शील सैण ने कहा-हे नानक! तुम को तो प्रभु की ही भूख रहती है। परंतु हमारा कल्याण कैसे होगा? तब हम तीनों ने प्रसाद पाया। तब शील सैण बहुत प्रसंन्न हो गया। शील सैण ने कहा-आज प्रत्यक्ष राम को देखा है गुरु जी पांच रोज वहीं रहे।

कवि का कथन॥ उहां से बणें गुरु अंतर धारी। शील पर्वत से करी उतारी पूछे बाला अपने गुरु कउ। कितने योजन आये तहां सो।

तब बाले ने पूछा-शील पर्बत से शीला पर्बत कितना ऊंचा है? गुरु जी ने कहा-एक लाख योजन ऊंचाई पर है। फिर हम धिरण पर्बत पर आ गये। गुरु जी ने कहा-इस का नाम धिरण पर्बत है। मर्दाने ने कहा-हे गुरु वर! क्या यहां भी कोई महा पुरुष है? गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यहां भी एक पुरुष है। मर्दाने ने उस के दर्शन की लालसा प्रकट की।

उस पर्बत पर एक तालाब था। गुरु जी यहां स्नान करने गए तो वह ऋषि वहां ही आ गया। आते ही कहने लगा-

ऋषि का कथन॥ इश्नान मधे कते गतं। स्वांग भगत गुणी गुणाव। कुमेर सुमेर पर्वत मीनस पर्बत रंगते।

ऋषि ने कहा-हे भाई! इस तालाब में तू स्नान किस लिए करता हैं? तू यहां इस प्रकार बैठ गया है। जैसे कुमेर ऋिषवर सुमेर पर बैठा है और कभी हलचल को प्राप्त नहीं हुआ। तब गुरु जी ने उत्तर में इस प्रकार कहा-

गुरु जी का उत्तर॥स्नान एकं कारं। सुआग सति गुरु भंडारं। कुमेर चित ठहिर। मीन नानक गोबिंद जल तरंगं॥ २॥

उस त्रिषीवर ने पूछा-अरे साधु तुम ने जो कुछ कहा है वह हमारी समझ में नहीं आया। गुरु जी ने अपने शब्दों का परमार्थिक अर्थ इस प्रकार कहा-

स्नान एकंकार के दर्शन का किया। सुआग सतिगुरुओं के भंडार से लिया। कुमेर जैसा चित टहिराया। गोबिंद नाम का जल और नानक मीन तरंग करता है। यदि वह भूल जाय तो प्राण कंठगत हो जाते हैं।

यह सुण कर ऋषी ने कहा कि क्या कलियुग में नानक निरंकारी तुम हो? क्या त्रेता युग में राजा राम तुम ही थे? गुरु जी ने कहा-हां मैं ही नानक हूं और त्रेता में मैं ही राम राजा था। हे ॠषी तुम अपना नाम तो बताओ। उस ने कहा मेरा नाम सुख चैन ॠषी है। तब गुरु जी ने मुस्करा कर कहा-हे ॠषि! तुम वही हो जो राजा जनक की शैया बिशाने की सेवा में थे। यह सुन कर वे गुरु जी के चरणों पर गिर गया और कहने लगा कि हमारे अहोभाग्य हैं जो आप के दर्शन हुए हैं फिर गुरु जी वहां से विदा हुए।

अब उल्का पहाड़ पर आ पहुंचे, गुरु जी ने कहा हे मर्दाना! इस पर्बत का नाम उल्का है, इसके आगे घुराट वंदर आयेगा फिर मछली बंदर आना है उस के आगे भारत खन्ड में पहुंच जायेंगे। हे मर्दाना एक ऐसा खंड है जिस का नाम अभंजनी खंड है। वहां रात्री में सभी पुरुष स्त्रियें बन जाती हैं जब मैं और मर्दाने ने नेत्र खोले तो हम अभंजनी खंड में आ गये थे वहां राजा और अनेक नर नारी गुरु जी के दर्शनों को आये। राजा ने गुरु जी को भोजन का निमंत्रण दिया। तब गुरु जी ने मुझे आज्ञा दी कि हे बाला! तू शेर बन जा। मैं तुरंत भृग राज बना। गुरु जी ने राजा से कहा- आप ने पहिले मेरे सिंह के लिये आहार देना होगा और वह आहार तुम्हारे पुत्र का करेगा। उस राजा ने पचास रानीयें विवाही थी। परंतु एक ही पुत्र हुआ था। राजा ने गुरु जी की

आज्ञा शिरोधार्य करके अपने पुत्र को शेर के आगे डाल दिया। गुरु जी ने कहा-हे राजन! तुम्हारे मन में ग्लानी है। उस राजा ने कहा-हे महाराज! ग्लानी तो आप जैसे महात्माओं के दर्शन से दूर हो गई है परंतु मन में एक विचार अवश्य है कि महात्मा पुरुष तो सभ को सुख देते हैं परंतु मेरी प्रालब्ध में दुःख क्यों लिखा गया। बस यही विचार मुझे सत्य मार्ग से तथा धैय से दूर लेता जा रहा है। इतनी सुण कर गुरु जी प्रसन्न हो कर राज पुत्र को गले लगा कर अपना सेवक नियत कर लिया तथा वहां एक धर्म्रशाला बनवाई तथा जनता को एकंकार का महा मन्त्र सिखाया। फिर गुरु जी उस से आगे की और रवाना हुये।

साखी केसी खंड की

अब गुरु जी केसी खंड में पहुंचे। केसरी खंड का राजा और प्रजा सतगुर नानक देव जी के चरणों को स्पर्श करने को आ गये, रानी ने प्रार्थना की-हे गुरु जी! मेरे घर में संतान नहीं। आप कृपा करो और मेरा स्वामी मेरे वश में रहे। गुरु जी ने कहा-महात्माओं की सेवा करो मीठा बोलो, निम्रता ग्रहण करो सुख दुःख को ईश्वरीय इच्छा मान कर सहन करो। फिर गुरु जी ने दो लौंग और एक इलायची प्रसाद रूप प्रदान की और वर दिया-हे रानी! तेरे गृह में दो पूत्र और एक पुत्री होगी। सदैव परमात्मा का स्मरण करना उत्तम है। गुरु जी को राजा ने कुछ काल वहीं विश्राम के लिये प्रार्थना की। गुरु जी ने राजा को सत्य उपदेश से कृत कृत्य किया। फिर आगे की ओर रवाना हुये।

कुरु खंड में गुरु जी॥ वहां से गुरु जी कुरु खंड में जा पहुंचे। वहां यह रीति थी कि जब कोई बालक जन्म लेता था तो लोग रोने लग जाते थे और यदि कोई मर जाय तो बहुत खुशी मनाते थे और हंसते थे। गुरु जी ने कहा कि यह लोग अज्ञानी हैं क्योंकि जिसे परमात्मा

बुला लेता है तो यह खुश होते हैं तथा यदि किसी को भेजता है तो यह लोग शोक करते हैं। यह अज्ञान है और ज्ञान यह है कि जो कुछ भी हो जाय वह उस की इच्छा जान कर धैर्य में रहें। हम ने उन को पूछा कि यह तुम्हारी क्या रीति है। उन्हों ने उत्तर दिया कि जब जीव जन्म लेता है तो परमात्मा से विछुड़ता है। इस लिये हम बुरा मानते है और जब मरता है तो वह परमात्मा से मिल जाता है। इस लिए हम प्रसन्न होते हैं। मर्दाने ने कहा-हे भाई! यह तो ईश्वर इच्छा है तथा जीव का जन्म और मरण तो कर्मानुसार होता है इस में तुम्हारी रीति केवल मानी ही है। यह जीव का जो आवा गमन है। यह कर्म के अनुसार है। जो ईश्वर के साथ जा मिलते हैं वे कभी भी योनिओं में नहीं भटकते। तब लोगों को ज्ञान हुआ। उन्हों ने गुरु जी से प्रार्थना की कि आप हमें अपनी सेवा में लें तो हमारा कल्याण होगा। गुरु जी ने कहा-हे सज्जनों! परमात्मा ने अपनी अपार कृपा से संसारी जीवों को अनेक प्रकार के सुख साधन प्रदान किये हैं। उसे स्मरण करना तथा उस के अन्य जीवों पर दया करनी मुख्य धर्म है। उसके कृतज्ञ रहो। उस परमात्मा से विमुख होना महान् पाप है। परमेश्वर तो भुल्लयां व्यापन सभे रोग। यह शरीर कर्मां का एक वृक्ष है। शुभ कर्म करने से जीव का कल्याण होता है। फिर गुरु जी ने महान् पवित्र उपदेश किया जिसे सुन कर राजा और प्रजा दोनों ही कृत कृत्य हुअे।

फिर गुरु जी आगे चले। मर्दाने ने कहा-हे गुरु जी! कलियुग के जीवों की आयु सौ वर्ष होती है। चालीस वर्ष की आयु के पश्चात् पुरुष वृद्ध हो जाता है, हम लोगों की आयु हज़ारों वर्षों की है। इस में क्या रहस्य है? उन्हों ने कहा-हम सदेव सत्य बोलते हैं प्राणों का संयम करते हैं तभी कलियुग का प्रभाव हम पर लागू नहीं होता। हम लोग सदेव सतसंग करते हैं। गुरु जी ने कहा-मित्रो! सत्य नाम का जप करना परम

कल्याण कारक है इस से तुम्हारे सभी कार्य संपन्न होंगे और परलोक भी सुधरेगा। धर्म की आयु से निर्वाह करना तथा बांट कर खाना परम जो व्यपारादिक में लाभ हो उस का दशवांश दान में लगाना कढ़ाह प्रसाद बांटना यह उत्तम काम हैं। इन से लोक परलोक सुधरेगा। सभ से उत्तम ईश्वर की अनन्य भक्ति विद्धवानों ने मानी है। यह उपदेश दे कर गुरु जी आगे चले।

गुरु जी ईलाबरत खंड को

अब हम लोग गुरु जी के साथ ईलाबरत खंड में पहुंचे। उस स्थान पर कई करोड़ सिंह विश्राम कर रहे थे। तब हम लोग डर गये। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तू रबाब बजा और कीर्तन की ध्वनी कर। यह सभी शेर तुम्हारे चरणों पर नमस्कार करेंगे। जब मर्दाने ने रबाब बजाई तो तमाम शेर आ गये। गुरु जी ने उन से पूछा, भाई! आप कौन हो? उन्हों ने कहा-हम तमाम योनि के पापी हैं। आप के दर्शन से मन को शांति होती है। हमारा निर्वाह जंगली पशु पक्षी खा कर होता है अब हमें कुछ भी नहीं मिलता। आप हमारा जैसे भी हो कल्याण करो। गुरु जी ने कहा-अब तुम मनुष्य बनोगे और हमारी सिक्खी प्राप्त करोगे तब नाम जपना तुम को हम राज्य करावेंगे। जब तक तुम्हारा आपस में प्रेम रहेगा तब तक राजा रहोगे। जहां तुम्हारा परस्पर मन मुटाव होगा तब राज्य जाता रहेगा फिर तुम आपस में लड़ मर कर नर्कों में जाओगे। इस के पश्चात् गुरु जी नगर की ओर चले।

अन्य खंडों की यात्रा की साखी

गुरु जी को देख कर उस नगर के नर नारी दर्शनों को आये और विस्मित होकर पूछने लगे-आप उन सिंहों से कैसे बचे हो? मैंने (बाले

ने) कहा-हे मित्रो! गुरु जी ने उस जंगली खूनखार शेरों को अपना लिया है दो सौ वर्ष तक सभी उत्तम गति को प्राप्त होंगे। अब यह किसी को दुखी नहीं करेंगे, यह सुन कर नगर का राजा और प्रजा दोनों ही गुरु जी के चरणों पर गिर पड़े और कहने लगे, हे महाराज! हम लोगों का भी भला करो। तब गुरु जी ने कहा-भाई! आप लोग सत्य भाषण करो दान सत्य नाम जपो, शब्द पढ़ो किसी के साथ वैर विरोध न करो देह को अनित्य जानो तब तुम्हारा भी कल्याण होगा। इस उपदेश को सुन कर सभी ने गुरु चरणों का जल पान किया।

वहां से गुरु जी भदरा खंड को गये बाद में हिरन खंड में पधारे। फिर केत खंड की यात्रा की फिर गुरु जी हर वर्ष खंड को चल पड़े। फिर कुसम दीप को गये फिर पुष्पक दीप को गये, इन तमाम स्थानों पर अनेकों नर नारियां को परम पवित्र उपदेश देकर और उन का कल्याण करके गुरु जी महाराज राम सरोवर में पहुंचे।

साखी राम सरोवर की

फिर गुरु जी महाराज राम सरोवर में गये क्या देखा कि समुंद्र अपनी महान् लहरें ले रहा है। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! यह खंडरात क्या है और इस स्थान का नाम क्या है? गुरु जी ने कहा-यह रामेश्वर स्थान है। यहां त्रेता में राजा राम चंद ने पुल बांधा था। यहां भी एक साधु निवास करता है। उसका दर्शन करो वहां एक ठाकुर मंदिर है। गुरु जी उस मंदिर के आगे जा बैठे। साधु को पता चला कि बाहर तीन अतिथि बैठे हैं तब हरि दास साधु अपने साथ कुछ साधु लेकर आया। उस समय गुरु जी फलाहार कर रहे थे। उस साधु ने कहा-यह स्थान श्री राम तीर्थ है। आपने चौका लगाये बगैर फलाहार कैसे कर लिया? इस लिये मैं पूछता हूं कि बगैर दर्शनों के तुमने यह क्यों किया-इस लिये मैं आपका

परिचय चाहता हूं। गुरु जी ने कहा-हम निरंकार के हैं, उस निरंकार ने हमारे बंधन काट दिए हैं। उसने कहा-आप ने निरंकार देखा है? तब गुरु जी ने कहा-क्या आप ने निरंकार का दीदार किया है? हे संत जी! हमारे गुरु जी निरंकार हैं। यह कह कर आगे लिखा शब्द उच्चारण किया-

राग आसा महला १ ॥ गुर सेवै से ठाकुर जानै ॥ दुःख मिटे गुरु शब्द पछानै ॥ १ ॥ राम जपहु मेरी सिख सखैनी ॥ सतिगुर सेव वेखो प्रभु नैनी ॥ रहाउ ॥ बंधन मात पित संसार बंधन सुत कन्या और नार ॥ २ ॥ बंधन कर्म धर्म हो कीया ॥ बंधन पुत्र कलित मन थीआ ॥ ३ ॥ बन्धन कृषी करहि किरसाण ॥ हो मै डंन सहैं राजा मंगे दान ॥ ४ ॥ बंधन सौधा अनंत अधारी ॥ त्रिपत नहीं माया मोह पसारी ॥ ५ ॥ बन्धन शाह संचहि धनि जाय ॥ बिनु गुर भगति न पवई थाय ॥ ६ ॥ बंधनि वेद बाद अहंकार ॥ बंधनि बिनसै मोह बिकार ॥ ७ ॥ नानक राम नाम सरणाई ॥ सतिगुर राखै बंध न पाई ॥ ८ ॥

गुरु जी ने कहा-हम ने राम नाम की शरण ली है। उसी ने हमारे सभी बंधन काटे हैं। तब साधु हरिदास ने गुरु जी के चरणों पर नमस्कार की और कहा तुम पर परमात्मा की पूर्ण कृपा है। यहीं विश्राम करो जिस से हमारा भी कल्याण हो। तब गुरु जी रामेश्वर ठाकुर मंदिर में जा कर खड़े हो गये। उसने कहा हम तो एक राम नाम ही जानते हैं। आप कोई ऐसा नाम बतायें जिस से हम लोग मुक्त हो सकें। तब गुरु जी ने सहस्त्र नामा उच्चारण किया।

राग मारू महला १ ॥ पउड़ी ॥ अब्युत परमेश्वर नामा। दीन दयाल दामोदर रामा। आदि जुगादि जुगो जुग सोई। अबिनासी अलख बिधाता है ॥ १ ॥ आदि जुगादि जुग सोइ। जिन सिरंजी तिनहि पुनि होई। छती जुग गवारे वरते। तिस कीमत कौन करता है ॥ २ ॥ छती जुग गवारे

वरते। परब्रह्म अबिनासी करते। कुदरत कादर हाजर नाजर निहचल आय न जाता हैं॥ ३ ॥ सचा तख्त दुलीचा साचा। जो ऊपजे सो काचो काचा। आवण जावण चौपड़ खेल कर देखे चोज विधाता हैं॥ ४ ॥ गगनि उतपति ते पवन उपंना। पवन उतपल जल बिब ते तिरंना। जल बिंद ते त्रिभुवन साजे घटि घटि जोत समाता हैं॥ ५ ॥ करणा भय अबिनाशी सोइ॥ सरब जीआं घट जोत समोई॥ सरब घटा प्रति पालक संथा हैं हरि पूरन उदर भरंता हैं॥ ६ ॥ अगम अगाध अतोल बिअंता॥ ऊंचे ते ऊंचा भगवंता॥ अंत नहीं कुछ पारा वारा बेशुमार अत्यंत हैं॥ ७॥ लाल गूलाल रंग अति गूहड़ा। दीपक धूप पुरुष अति पूरा अचरज रूप हूं। धूप अनूपों कोट ब्रह्मंड खंड का दाता हैं॥ ८ ॥ आदि जुगादि जगत सुख दाई। जुगह जुगंतर पैज रचाई। एकंकार एक ही एका आपे आप जपाता हैं॥ ९ ॥ गहिर गंभीर दयाल अनंदे। हरि मेहर करे हरि बख सदे। अनंद रूप अनहद धुनि कारा जन नानक उस गवंता॥ १० ॥ आदि निरंजन प्रभ निरंकारा। निराहार निरवैर नियारा। अकाल मूर्ति अजूनी सैभं बरन चिन्ह न पछाता हैं॥ ११ ॥ असचरज रूप बिसमन बिसमादा। भगति वछल हरि आदि जुगादा। आदि जुगादी है भी होसी पारब्रह्म बिअंत बेअंता है॥ १२ ॥ दीना नाथ दर्द दुख भंजन। पतित उधारन पाप निखंजन। मोख परायणु मुक्ति मुक्तिसर तेरे नाम अनेक अनंता हैं॥ १३ ॥ सहंसर नाम सर मूल बदजा। आदि जुगादि ज्ञान कथ लेजा। सहंसर नामि सति हरि जपीऐ गुर पूर ते जाता हैं॥ १४ ॥ आदि जुगादि निहचल धर्मा। निहचल सच सहंसर नामा। सहंसर नाम गुरमुख परगास सुण सुख जस बिगसंता है॥ १५ ॥ गहिर गंभीर गहीर गुलाला। मोहन माथे कृष्ण दयाला। राम चन्द बनिओ बनवारी अनहद बैन बजंता है॥ १६ ॥ मोहण सुंदर कृष्ण मुरारी। राधे पति राजा बनवारी। राजा राम कृष्ण हरि कहीऐ पारब्रह्म हरि भंता है॥ १७॥ निरभौ निरवैर

नारायण। अंत कारण प्रभु पंजायण। अगम अकाल पुरुष सच सचो तख्त बहंता है॥ १८॥ अगम अगाध बेअंत अतोला। ज्ञान पदार्थ रत्न अमोला। अगम अथाह बेअंत स्वामी भगत वछल वरतता है॥ ११॥ अपर अपार अगाह अत गूढ़ा। अगम अथाह गुर सबदी रूड़ा। आदि जुगादि जुगो जुग सोई नानक जन बिनवंता है॥ २०॥ ऊच मूच सद ऊचो थाना। पारब्रह्म साचा दीबाना। सत्त उधारण मुक्त सधारण करि करि चोज खिलंता है॥ २१॥ सच सालाही गहिर गंभीरा। अनंद बिनोदी गुरमुखि मन धीरा। आदि अनंत अपंरपर पूरी सच सची मणी सुहांता हैं॥ २२॥ जुग चारे हैं साची बाणी। गुर सेवहु जी अन्तरयामी। बिन साचे जम किकर मारे बहु जोनों गर्भ गलंता है॥ २३॥ सचे तखत बहे अबिनासी। निहचल साचा आय न जासी। तेरो रूप न जाणे कोई तू करि करि चोज दिखता है॥ २४॥ आनं बिनोदी चोजी रंगा॥ थाप उथापे करे सु होयगां। उसारे ढाहि ढाहि उसारे ऊणे सभर भरंता है॥ २५॥ उतपति परलो हुक्म होवै। हुकमे साजे हुकमे खोवै। हुकम साले हुकम निवाजहि मंत्र न किसे पुछंता है॥ २६॥ पुरखोतम हरि पुरुष अगंमा। वर्ण चिन्ह कछु जात न जन्मा। अद्रिष्ट अगोचर अलख न लखियै घट घट सो वरतंता हैं॥ २७॥ अनाथों नाथ सर्व गति पाले। नित नित जीआं सार संभाले। वडा अथाह रजाई राजा भाणा हरि भगवंता है॥ २८॥ अगम अपार बेअंत बे ऐवा। आदि जुगादि अनील अनादा। अनहद रुण झुणकार अनाहद धुन ओंकार वजंता है॥ २१॥ सिफत सलाहण जो तिस भावै। ढाढी सगण गुणदर जावै। नानक ढाडी आप पहिनाया दर सचे पतवंता है॥ ३०॥ लाल गुलाल दयाल मुरारा॥ अपर अपारं पाथ न पारा। बेशुमार बे-अन्त बिअंता अगम अथाह अनंता है॥ ३१॥ राम कृष्ण गोबिंद परायण। मुकंद मनोहर लक्षमी नारायण। गोबिंद सदा सिर सर्ब प्रहारी आपे आप उपंता है॥ ३२॥ हरि हरि श्री ठाकुर न सिंघा।

अकाल मूरति अजूनी सै भंगा। मोहन माधो कृष्ण मुरारी निरभौ भौ निरभंता है॥ ३४॥ अचुत पारब्रह्म परमेश्वर स्वामी। मध सूदन दामोदर स्वामी। ऋषि केश गोवर्धन धारी मुरली मनोहर वजंता है॥ ३५॥ कान्ह कृष्ण हरि नारायण। भगत वछल हरि बिरद रखायण। संत उचारण हरि हरि तेरा अन्त न कोई पाता है॥ ३६॥ अछल अभेद अछेद अलेखा। बरन चिन्ह कछु रूप न रेखा। आदि जुगादि है भी होसी गुरु का शब्द पछाता है॥ ३१॥ आदि निरंजन गहिर गंभीरा। सच टकराई साचे मीरा। अनहद रुण झुणकार सदा धुनि निरभौ के घर वासा है। दामोदर हरि दाना बीनां। गहिर गंभीर गहीर सुजाना। पार ब्रह्म परमेश्वर स्वामी लपन न कोई लाता है॥ ३१॥ ओं नमों आदं सुन्न अपारा। ओंकार कर किया पसारा। सुंन कलामहि लाय ताड़ी सुन सुन्न समाता है॥ ४०॥ अकथ क्था गुर शब्द बिचारी। गुर मुख पाया मोख दुआरी। नानक सच कहे सब साचा सचो सच बुलंता है॥ ४१॥ आपे जती सती सतवंता। अचरज रूप घट घट वरतंता। भौ भंजन अति भारा गौहर सर्व घटा का दाता हैं॥ ४२॥ निरहारी निरवैर निरारा। रूड़ो गूढ़ो गुणा अपारा। गहिर गंभीरा गुरमुख धीरा निर्मल आप न जाता हैं। अनाथा नाथ सर्व प्रतिपालक। कोटि ब्रहमंड का ठाकुर नायक। दरोपती की लाज निवाज उधारन जै जै कार करता है॥ ४४॥ प्रहिलाद की जिन पैज रखाये। हरनाक्षस से दियो संत छडाये। संत भगत हरि हरि जम गावेहि हरि अपना बिरद रखंता है॥ ४५॥ भगत वछल हरि हरि नारायण। दहि सिर छेद कियो रमावण। असुर सधारन मुक्ति साधारण असु भसुंभ अस थंथा हैं। अजामल वेसवा तर तारे। माल्मीकतारे बटवारे। भगत वछल कृपाल कृपा निचि कारण करण बिवाता है॥ ४७॥ हरि हरि श्री धारे को माधव। मुरली मनोहर माधो आदव। संत जना का आज्ञाकारी आदि अंत सुख दाता है॥ ४८॥ अगाध बोध बनयो बनवाली। संकट सागर धरकत

तालो। निहचल धाय सहंसर नामा गुरु के शब्द तरंता है॥ ४९॥ लाल गुलाल रसाल अति जाहिर। सुन्दर सुगड़ सुजाना पर हरि। निहचल तख्त सदा थिर जाका सचे तख्त बसंता है॥ ५०॥ असुर संधारन मुक्त मुक्ती सर। तख्त निवासी सचा सचीसर। एकंकार अवर नही दूजा नानक चरण पराता हैं॥ ५१॥ आदि जुगादि होंदा आया। अंत पार न किन हूं पाया। परे ते परे परोला परला किनहि पर न जाता है। परमा नंद अनंदी लालन। हरि प्रभ ब्यंत ब्यंत दुख दालन। हरि नारायण गर्ब प्रहारी अपने रंग मुकतीसर सारा। प्रेम परायण रूह नारायण पूर्ण पुरुष बिधाता है॥ ५४॥ अकल कला प्रभु अलख अलेख। दीन दयाल कृपाल कुपा निधि बखसे आप मिलाता है॥ ५५॥ अभिगत अगोचर सिरी धर सेना। सुंदर स्वामी कुन्डल है वैना। मोहन मोधो कृष्ण मुरारी पेख पेख बिगसंता है॥ ५६॥ नर हर नारायण गरबि निवारण। संत भगति हरि सिमर उधारण। दामोदर दुख भंजन स्वामी अंतरजामी जाता हैं॥ ५७॥ प्रीत प्रीत कर त्रिभवन रूपन। रूप नारायण डीठ अडीठम। प्रतीम परान मनह हितकरी सर्व जीआं पालता है॥ ५८॥ निह केवल निह कंटकु सूरा॥ पारब्रह्म परमेश्वर पूरा। थापि उथापे ढाहि उसारे त्रिण ते मेर करंना हैं॥ ५९॥ अजरावर जिस जरा ने मरना। साचा तख्त साचा जिस परणा। सुणि सुणि आखहि पड़ि पड़ि बूझे विसमे बिसम बिसमाता है। आपे बखश मिलाये मेल। अनद बिनोदी चोजा खेल। सहंसर नाम तोरे गणे न जाई नानक हरि रंग राता है॥ ६१॥ जख किनर जोधे इकु जाके अंत न पावे पढ़ि पढ़ि थाके। सूरबीर अर वडे वडेरे अंत न कोई पाता है॥ ६२॥ अगम अथाह अपार निराला। अवर परंपर सुर सरि दयाला। हरिचंद हरि कृष्णा मनोहर सगल ब्रह्म पसराता है॥ ६३॥ हरि हरि स्वामी हरि जी हरीया। वहैं दुलीचै स्याम सुंदरीआ। सर्व जोत जाका परगासा प्रगट कर दिखलाता हैं॥ ६४॥ परम तत निरलेप अलेखा। अलख पुरुष सर्व

सिरलेखा। लिखिआ लेख अभूल न भूल तू काहे मत विललाता हैं। सहसर नाम को गनै न तेरे। अन्त पाइन वडे वडे वडेरे। तेरी सिफत कौण सलाहें सचु कुदरति कादर जाता हैं। सहसर नाम सत जिहि पढ़िआ। ऊची पौड़ी गगनंतर चढ़िआ। पच बान ले जम का भारे सच महिल घर जाता है॥ ६७॥ सहंसर नाम सची सची हिमत। सहंसर नाम सच अगम मत। सहंसर नाम पढ़ि मुक्ता होवै सचे सच समाता है। सहंसर नाम पढ़ि जात न जरमा। सहंसर नाम पढ़ि अलख अलेखै अभै अभ मिलाता है। सहंसर नाम पढ़ि सुख बिसरामा। सहंसर नाम पढ़ि निहचल धामा। सहंसर नाम पढ़ि सचे राता सचे महिल घर जाता है। सहंसर नाम पढ़ि सुन समाधो। सहंसर नाम पड़े करम लिखाधो। सहंसर नाम पड़ पूर्ण आसा बिरथा मूल न जाता है। सहंसर नाम पड़ लोचा पूरी। सहंसर नाम पढ़ कदे न झूरी। सहंसर नाम पढ़ सूख समाना धर्म धीरज टहिराता है। सहंसर नाम पढ़ पूर्ण आसा। मस्तक लेख लिखिआ धुर साचा। नानक सहंसर नाम हरि पढ़िआ धुर मस्तक लेख लिखाता है। आदि अन्त धुर साखी बाणी। सब उपाई सच समाणी। सच अचरज अकथ कियां कहीऐ नानक सिफती राता है।

जिस समय गुरु जी ने सहंसर नामा सुनाया तब साधु अपने साथियों के सहित गुरु जी के चरणों में आ गिरा और प्रार्थना करने लगा कि आप कुछ दिन यहां निवास करो। गुरु जी पंद्रह दिन वहीं रहे। फिर आगे चले।

यात्रा की साखी

गुरु जी किसी नगर में तो जाते ही नहीं थे। कभी नदी कभी दरिया कभी पर्वत लांघते जाने लगे। जब मर्दाने को भूख सताती थी तब वह मौन ही रहता था। एक दिन मर्दाने को भूखा देखकर गुरु जी ने कहा-

हे मर्दाने! इस बस्ती में जाओ। वहां उपल क्षत्री से मेल होगा। वह सब को भोजन खलाते होंगे। तुझे जो देखेगा वह तेरे कदमों में आयेगा और छत्तीस प्रकार के भोजन तेरे आगे धरेगा। जात पात नहीं पूछेंगे। प्रत्येक पुरुप तुम्हारी स्तुति करेगा और सर्वस्व अर्पण करेगा और कहेंगे कि हमारे अहोभाग्य हैं जो आप के दर्शन हुए हैं।

गुरु जी ने मर्दाने को प्रसन्न हो कर रवाना किया जब मर्दाना नगर में आया तो जैसे गुरु जी ने कहा था वैसे ही हुआ। तमाम लोग मर्दाने के निकट आकर स्तुति करने लगे। वहां से मर्दाना भोजन और वस्त्र बहुत से ले आया। गुरु जी बहुत हंस कर कहने लगे-हे मर्दाना! यह क्या कुछ ले आये हो? मर्दाने ने कहा-यह भोजन वस्त्रादिक जो कुछ भी है सो आप के सन्मुख रख दिया है। अब जैसे आप की आज्ञा। गुरु जी ने कहा-यह तो हमारे किसी काम की वस्तु नहीं है। मर्दाने ने कहा-अब क्या करुँ? गुरु जी ने कहा-इसे फैंक दो। तब मर्दाने ने सभ चीजें बाहर फैंक दी।

मर्दाने ने कहा-हे महाराज! जो भगत लोग आप के दास को कुछ दें तथा आप की सेवा में प्रेम से अर्पण करें उन में से आप को भी कुछ प्राप्त होता है अथवा नहीं यह मेरी शंका है। आप इसे दूर करो क्योंकि आप तो कुछ लेते ही नहीं। फिर आप किस प्रकार से तृप्त रहते हो। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तू रबाब वजा। मर्दाना रबाब बजाने लगा तब गुरु जी ने राग गउड़ी गुवारेरी में शब्द उच्चारण किया-

शब्द॥ माता प्रीति करे पुतु खाइ। मीने प्रीति भई जल नाइ॥ सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइ॥ १ ॥ ते हरि जन हरि मेलहु हम पिआरे॥ जिन मिलिया दुख जाहि हमारे॥ १ ॥ रहाउ॥ जिउ मिलि बछरे गऊ प्रीति लगावै॥ कामनि प्रीति जा प्रिय घर आवै॥ हरिजन प्रीति जा हरि उस गावै॥ २ ॥ सारिंग प्रीति बसै जल धारा॥ नरपति प्रीति

माइआ देखि पसारा॥ हरि जन प्रीति जपै निरंकारा॥ ३॥ नर प्राणी प्रीति माइआ धनु खाटे॥ गुरसिख प्रीति गुरु मिलै गलाटे॥ जन नानक प्रीति साध पग चाटै॥ ४॥

यह सुन कर मर्दाने ने कहा-हे महाराज! आप सत्य कहते हो। फिर गुरु जी आगे चले।

साखी ठगों के साथ

श्री गुरु नानक देव जी महाराज वहां से चलते चलते ठगों के देश में जा पहुंचे। रास्ते में शेख सज्जन नाम का ठग रहता था। उस ने मार्ग में ही अपने मकान बनाये थे। एक ठाकुर मंदिर और मस्जिद भी बनवाई थी। यदि कोई हिन्दू आ जाय तो वह ठाकुर मंदिर देता था और यदि कोई मुसलमान आ जाय तो उसे रहने को मस्जिद दे देता था। जब रात्रि का समय हो तो मुसाफिर को फांसी दे देता था और उस की लाश किसी कूएं में डाल देता था। जब दिन चढ़ जाये तो वह अपना स्वरूप पूर्ण निमाजीयों जैसा बना कर अल्लाह अल्लाह करने लग जाता था।

हम (बाला) लोग गुरु जी के साथ देशांरटन करते करते वहां चले गये। उस ने हम लोगों का बहुत ही सन्मान किया तथा अपने संगी डाकूओं को कहा-मालूम होता है इस के पास बहुत सा धन है। जो इन्हों ने छुपा रखा है। तभी इनके मुख पर नूर है क्योंकि दौलत की चमक मुख पर स्वयं आ जाती है।

जब रात हुई तो उस ने गुरु जी से कहा-आप भीतर चलो और विश्राम करो। गुरु जी ने उसे कहा-हे मित्र! तुम्हारा नाम क्या है? उस ने कहा मेरा नाम सज्जन है। गुरु जी ने कहा-एक ही खिदमत करनी अच्छी होती है। हम तो एक परमात्मा की ही सेवा करने वाले हैं। अब हम खुदा की बंदगी का शब्द कह कर पीछे सोने का प्रबन्ध करेंगे। गुरु

जी ने मर्दाने को कहा-रबाब वजाओ। गुरु जी ने राग सूही में एक शब्द उच्चारण किया-

॥ रागु सूही ॥ उजलु कैहा चिलकणा घोटम कालड़ी मसु ॥ धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥ १ ॥ सजण सेई नालि मै चलदिया नालि चलंनि ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि ॥ रहाउ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा ॥ ढठीआ कंमि न आवनी विचहु सखणीआहा ॥ २ ॥ बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंनि ॥ घुटि घुटि जीआ खावणे बगे न कहीअंनि ॥ ३ ॥ सिंमल रुखु सरीरु मै जन देखि भुलंनि ॥ से फल कंमि न आवनी ते गुण मै तनि हंनि ॥ ४ ॥ अंधुलै भारु उठाइआ डूगर वाट बहुतु ॥ अखी लोड़ी ना लहा हउ चढ़ि लंघा कितु ॥ ५ ॥ चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥ नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ॥ ६ ॥

इस शब्द को सुन कर उस ठग का तो काया कल्प हो गया। वह भाग कर आया और गुरु जी के चरणों से लिपट गया और कहने लगा-हे महाराज! मुझे वह बातें बताने की कृपा करो जिस से गुणाह दूर हो जायें। गुरु जी ने कहा-जो तुम ने नर हत्यायें की हैं यदि तू हमारे सन्मुख सत्य सत्य कह दे तो तब कुछ तुम्हारे कल्याण का मार्ग निकालेंगे। उस ने कहा-महाराज! मैंने बहुत सी हत्यायें की हैं। गुरु जी ने कहा-उन की जो वस्तु तुम ने छीनी हुई है वह सारी हमारे सामने लाओ। शेख सज्ञन ने गुरु आज्ञा मान कर सारी डकैती का सामान गुरु जी के आगे ला कर रख दिया। गुरु जी ने फुरमाया यह सारी संपदा खुदा के नाम पर लुटा दो। उस ने सारी वस्तु लुटा दी। गुरु जी के पवित्र उपदेश ने उस ठग का भी कल्याण कर दिया।

साखी पानीपत करनाल की

सतगुरु श्री नानक देव जी अनेकों स्थानों में सत्य नाम का प्रचार करते करते और अनेकों जिज्ञासुयों को भवसागर से पर करते करते पानीपत में आ गये। उस जगह शेख शरफ था। उस का चेला शेख टटीहरी था। वह अपने पीर के लिये जल लेने जा रहा था। उसने श्री गुरु जी के पवित्र दर्शन किये। उसने आकर कहा-सलाम ओ दरवेश! गुरु जी ने कहा- उस अलेख को सलाम हो। उस ने हैरान हो कर सोचा कि आज तक सलाम किसी ने भी वापिस नहीं किया था। अब इन की खबर अपने पीर को करूंगा। उस ने अपने पीर शेख शरफ को सारी वारता सुनाई। पीर ने कहा-बेटा! मैं उस का दर्शन करना चाहता हूं। जिस ने अलेख को सलाम कहा है। टटीहरी अपने पीर को लेकर गुरु जी के निकट आया। तब शेख शरफ ने गुरु जी को इस प्रकार संबोधित किया।

प्रशन उत्तर पीर और गुरु जी

पीर-कुजा आमद।	गुरु जी-ईजा आवद।
पीर-असमान मनी।	गुरु जी-सूमान भदहु।

फिर पीर ने गुरु जी को बाणी की पुरसीद पूछा। अगर तुरा सवाल में तुरसम अहिले जवाब बगो। दरवेश कुलाह सुमाचि मजहब अस्त।

गुरु जी ने उत्तर दिया- मनूआं मूंडे तां मूंड मूंडावे। बिन मन मूंडे जुगत न पावै। मूंड काट गुर आगै धरै॥ मन मत त्याग गुर की मत तरै। मूंड मूंडाइ होय सब को रेना। सो वैरागी परखे बैना। मूंड मूंडाय की एह गति भाई। कोई विरला गुरमुख मूंड मूंडाई। स्वाद सहने ममता सभ तजीआं। एह जुगत नानक कुलाह पहरीअं॥ १॥ यह सुनकर शेख

ने फिर पूछा-

अगर तुरा सवाल में पुरसम अहिल जवाब बगो। दरवेश फिरका सुमाचि मजहब अस्त।

उत्तर गुरु जी का—पीर मति मुरीद होई रहनं। कफनी टोपी मन शब्द गहनं। बहता दरिया ले करे बरती। सहिज बैसि तहा सुखमन चेती। हरख सोग का करो हकारं। पहिर कफनी दुविधा बिदार। सुन्न गढ़ लै बसदी रिहाई। तब कफनी की जुगति पाई। कुटंब छोड़ भया अकेला। नानक हरि कफनी भया सहेला॥ २॥

शेख का कथन॥ अगर तुरा सवाल में पुरसस अहिल जवाब बगो दरवेश कुपीन सुमाचि मजहब अस्त॥

जवाब गुरु जी का—पीर मत मुरीद दोई रहनं। गुर सबदी खिमा मनि सहिज गहनं। दृष्टी बांधो दुरमति हरीअ। दसी दुवारे ले तहां चढ़ीअं। अठसठि हाट ताभ करनं। पहिर लंगोटी जरा न मरणं। पहिर लंगोटी भया अकेला। उलट लंब का पवै ओह जेला। बिलंद सतगुर की रही छोटी। एह जुगत नानक पहिरबे लंगोटी॥ ३॥

शेख का प्रश्न॥ अगर तुरा सवाल में पुरसम अहिल जवाब बगो दरवेश पाउ पोश तरक सुमाचि मजहब अस्त॥

उत्तर श्री गुरु नानक देव—सर्व ज्ञान अहिनिसि रातं। पावन पवन जल मन कीतं। धरन तरवर की रहिन रहिनं। काटन खोदन मन महि सहनं। दरया मेला रीति आछी। भाउ भाउ ओह करे साखी। एह मथनि करि कारबो पहनं। तऊ पाऊ पोश ब्रह्म हो रहनं। बिना ब्रह्म चीने पाऊ पोश त्यागे। कहे नानक ओह तिल घाट न लागे॥ ४॥ १॥

शेख का प्रश्न॥ अगर तुरा सवाल में पुरसम अहिल जवाब बगो दरवेश सफाय तुरा दरवेश मन मला चिला संसे।

गुरु जी ने शब्द उच्चारण किया—गुरु जी ने मर्दाने को आज्ञा दी

कि हे मर्दाना! रबाब को बजाओ। शब्द कहेंगे। मर्दाना रबाब बजाने लगा।

देवगंधारी महला १ ॥

जीवन मरे जे गति पुनि सोभै जानति आप सुमाबै ॥ सफन सफाई होय मिलै खास को तो दरवेश कहावै ॥ १ ॥ तेरा जन को है ऐसा दिल दरवेश ॥ शादी गमी नमक नहीं गुस्सा खुदी हिरस नहीं एस ॥ कंचन खाक बराबर देखे हक हलाल पछानै ॥ आई तलब साहिब की मानै अवर तलब नहीं जानै ॥ जोगी जंगम सिद्ध कहावे लोहू बिंद जमावै ॥ पांचों इन्द्री दृढ़ करि राखै तो दरवेश कहावै ॥ गगन मंडल महि आसन बैठा अनहद शब्द बजावै ॥ कहु नानक साध की महिमा बेद पुरान न पावै ॥

गुरु जी के इस महा वाक्य को सुन कर शेख शर्फ धन्य कर गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा और कहने लगा कि हमारे अहोभाग्य जो आप जैसे पहुंचे हुए संतों का दीदार हुआ है। यह कह कर उसने सात प्रदक्षिणा लेकर प्रणाम किया फिर हम लोग यहां से दिल्ली की ओर रवाना हो गए।

साखी दिल्ली पति की

जब सतगुरु नानक देव हमें साथ लेकर दिल्ली में आए तब दिल्ली नरेश ब्रह्म बेग था। हम लोग एक महावत के पास जा कर बैठ गये। उस महावत ने गुरु जी की और हमारी बहुत सी सेवा की। इस महावत का एक हाथी मर गया था। महावत का सारा परिवार उस के दुख से दुखी हो रहा और रो रहा था। गुरु जी ने उसे रोने का कारण पूछा, उत्तर मिला कि हाथी मर गया है। गुरु जी ने कहा-मरने वाला हाथी किस का था? उन्होंने कहा—वह राजा जी का था। गुरु जी ने कहा यदि हाथी पातशाह का है तो तुम क्यों रो रहे हो? महावत ने कहा-इस के रोज़ीने से हमारा परिवार पल रहा था। गुरु जी के हृदय में दया

का संचार उमड़ आया। कहने लगे-तत्थ नाम श्री वाहिगुरु यह शब्द पढ़ कर हाथी जो मरा हुआ है उस के मुख पर हाथ फेरो। बस हाथ फेरने की देर थी हाथी जीवित हो गया। उनको अत्यंत प्रसन्नता हुई।

हाथी जीवित करने का समाचार बादशाह तक पहुंचा तब बादशाह गुरु जी के पास आया। उसने कहा-हे महाराज! यह हाथी आप ने जीवित किया है? गुरु जी ने कहा-हे बादशाह! मारने और जीवाने वाला तो आप खुदा है। "दुआयें फकीरां और रहिमें खुदा" इतना कहि कर बाबा जी ने आगे लिखा शब्द उच्चारण किया।

शब्द॥ मारे मार जिवाले सोई॥ नानक एकस अवर न कोई॥ इतने में वह हाथी मर गया। जब बादशाह ने कहा-इसे जीवित करो। महाराज ने कहा-हे राजन! जिस समय लोहा अग्नि में लाल हो जाता है तब उस पर किंचित हाथ नहीं लगाया जाता और जब लोहा ठंडा हो तो समस्त दिन हाथ पर रखो तो कोई आपति नहीं। उस तरह परमात्मा के मारे की परमात्मा का भजन प्रभाव जीवित करता है। परन्तु फकीर की मार को खुदा भी वापस नहीं करता। बादशाह ने इस उच्च भाव को भली प्रकार जान करके अति प्रसन्ना से गुरु जी के चरणों को अपने मस्तक पर लगाया और बहुत ही तारीफ की। तब गुरु जी ने नीचे लिखा एक सलोक उच्चारण किया।

सलोक॥ नानक भुख खुदाय दी विआ बे परवाही॥
असां तलब दीदर दी बिआ तलब न काही॥

फिर बादशाह ने गुरु जी को नमस्कार किया और अपने घर को गया। इधर गुरु जी भी पर्यटन को चले।

यहां प्रथम उदासी उत्तर खंड की समाप्त॥

✧ ❊ ✧

साखी सिद्धों की

गुरु जी अनेकों नगरों के नर नारियों को पवित्र उपदेश करते और हमें अपने साथ लेकर चले जा रहे थे। अचानक मार्ग में गोरख नाथ अपने बीस सिद्धों के साथ आ मिला। परस्पर शिष्टाचार के पश्चात् अनेक प्रश्नोत्तर हुए। उत्तर सुन कर गोरख नाथ और उस के सिद्ध साथी अति प्रसन्न हुए। सभी ने गुरु जी की महान् स्तुति की।

गुरु जी ने मुझे (बाले को) कहा-हे बाला! हमारी बहन नानकी हमें स्मरण कर रही है। हमारा विचार है कि सुलतान पुर चलें। बस फिर हम सब सुलतान पुर पहुंच गये। तुलसां गोली ने नानकी जी को जाकर कहा-बहु जी! आपके भाई जी आ रहे हैं फिर गुरु नानक देव जी अपनी बहन बीबी नानकी देवी से मिले। दोनों ओर बहुत प्रसन्नता हुई। नानकी जी ने कहा-हे भ्राता जी! मैंने आज ही आपको याद किया। गुरु जी ने कहा-हमारे अहोभाग्य हैं जो आपके दर्शन हो रहे हैं फिर गुरु जी कुछ समय नानकी जी के पास रहे। श्री चंद जी से मिल कर बहन जी से गुरु जी ने विदा मांगी और वहां से रवाना हुए।

एक लड़के की साखी

गुरु जी जाते जाते एक चनों के क्षेत्र में गए वहां एक लड़का चनों की होलां बना रहा था। मर्दाने ने कहा-हे गुरु जी! हमें भी होलां मिलें तो मन इच्छा पूर्ण हो। गुरु जी मुस्करा दिये। उस लड़के ने गुरु जी के चरणों में प्रणाम किया और कुछ होलां भेंट कीं। गुरु जी ने वे सब मर्दाने को दे दीं। वह लड़का अपने मन में विचार कर गुरु जी के लिये कुछ भेंट घर से लेने को चला तब गुरु जी ने उसे रोक कर पूछा-बेटा! कहां जा रहे हो। उस ने जो मन की इच्छा थी वह सत्य बता दी। तब

गुरु जी ने एक सलोक उच्चारण किया।

सलोक ॥

सथर तेरा लेफ निहाली भाव तेरा पकवान॥
नानक सिफती तिपतिया आउ बैठ सुलतान॥

गुरु जी ने कहा-हे बेटा! हम तो प्रेम भाव के भूखे हैं पकवानों के भूखे नहीं हैं। इस प्राकर का पवित्र उपदेश करके तथा उस लड़के का लोक परलोक सवार कर गुरु जी आगे की ओर रवाना हुए।

साखी गोबिंद लोगों की

एक दिन गोबिंद लोग गुरु जी के निकट आकर कहने लगे-हे महाराज! हम कुछ ईश्वर सम्बन्धी भजन कीर्तन सुनना चाहते हैं। गुरु जी उनकी बात सुन कर बहुत प्रसन्न हुए और उन की स्तुति की। गुरु जी को वे लोग अति प्रिय लगे। गुरु जी ने कहा-हे सज्ञनों! जो कुछ तुम्हारे मन में आये वह पूछो। हम उत्तर देंगे। तब उन लोगों ने निम्नलिखित प्रश्न किये-

१. उस परमेश्वर का रंग कैसा है?

२. उस कर्ता का आदि अंत किस से हुआ है?

३. परमेश्वर स्वयं क्या वस्तु है?

गुरु जी ने उत्तर दिया-हे भक्त जनों! परमात्मा की माया बेअंत है। उस का अंत कोई नहीं पा सकता। वह ईश्वर शुकल पक्ष और कृष्ण पक्ष है जो पितरों का दिन और रात्रि है अनंत वर्ष गुजरने पर ब्रह्मा का एक दिन व्यतीत होता है ब्रह्मा के अनंत वर्षों के पश्चात् विष्णु जी का एक दिन व्यतीत होता है। विष्णु जी की समस्त आयु का शिव का एक दिन होता है। इस प्रकार के शत वर्ष शिव की आयु है इस लिए माया का कोई अंत नहीं पा सकता। परमेश्वर की एक पलक सृष्टि

है और पलक का बंद होना महा प्रलय काल है। जिसकी माया का कोई अंत नहीं है तो उस माया के स्वामी के लिये कौन कुछ कह सुन सकता है फिर गुरु जी ने राग गुजरी में एक शब्द उच्चारण किया।

रागु गूजरी महला ॥ १ ॥ नाभि कमल ते ब्रहमा उपजे बेद पढ़हि मुखि कंठि सवारि॥ ताको अंतु न जाई लखणा आवत जात रहै गुबारि॥ १ ॥ प्रीतम किउ बिसरहि मेरे प्राण अधार॥ जा को भगति करहि जन पूरे मुनि जन सेवहि गुर प्राण॥ रहाउ॥ रवि ससि दीपक जा के त्रिभवणि एका एका जोति मुरारि॥ गुरमुखि होइ सु अहिनिसि निरमलु मनमुखि रैणि अंधारि॥ सिध समाधि करहि नित झगरा दुहु लोचन किआ हेरै॥ अंतरि जोति सबदु धुनि जागै सतिगुरु झगरु निबेरै॥ ३ ॥ सुरि नर नाथ बेअंत अजोनी साचै महलि अपारा॥ नानक सहिज मिले जगजीवन नदरि करहु निसतारा॥ ४ ॥

इस पवित्र उपदेश से समस्त लोक अति प्रसन्न हो कर अपने अपने स्थान को रवाना हुए। इसी प्रकार श्री गुरु नानक देव जी ने अनंत लोगों के संशय भ्रम नाश किये तथा अनेकों का कल्याण किया। बड़े बड़े नास्तिक जो ईश्वर की सत्ता से बिमुख थे और नर्कगामी बनते चले आ रहे थे। उन को सत्ता मार्ग का उपदेश देकर उन को स्वर्ग सदन के अधिकारी किया और अनेकों के भव बंधन काट कर मुक्त कर दिया।

सत्य यह है कि सतगुरु श्री नानक देव जी महाराज कलियुगी जीवों के हित के लिए ही इस संसार में अवतार धारण करके आये और नर्कों का मार्ग रोक लिया। गुरु जी ने नाम के अधार पर लाखों के बेड़े पार किये हैं।

-०-

उदासी दूसरी

जिस समय गुरु नानक देव जी महाराज दूसरी उदासी धारण करके चले उस समय संवत १५६६ बिक्रम था तथा गुरु जी की आयु उस समय एक मास कम चालीस वर्ष की थी। महाराज का पवित्र दाढ़ा टीक स्याह वर्ण का था।

जाने के समय मर्दाने ने पूछा-हे गुरु देव! अब्र किधर जाने का विचार है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! अब कुछ तीर्थों पर जाने का विचार है। गुरु जी ने पवन आहार का ब्रत लिया। एक वस्त्र अंबुवे वर्ण का और एक वस्त्र श्वेत और एक जूते का जोड़ा, गले में कफनी और शीश पर टोपी धारण की तथा कलंदरी माला और माथे पर तिलक लगाया और उदासी का भेष किया। रास्ते में शेख वजीद मिला। वह जाति का सैय्य था वह एक वृक्ष के नीचे उत्तर पड़ा। उस के आदमी सेवा करने लगे। मर्दाने ने कहा-हे गुरु जी! ईश्वर एक है अथवा दो? गुरु जी ने कहा-हे मर्दाने! ईश्वर तो एक ही है तो मर्दाने ने कहा-वह जो सुखपाल पर सवार होकर आया है। यह किस की संतान है? मैं हैरान हूं कि वह तो सवार होकर आया है और सेवा करने वाले पैदल भार उठा कर आये हैं परंतु सवार तो थका हुआ है। बेचारे उस की मुट्ठी चापी कर रहे हैं जो पैदल ही आये थे। यह सुन कर गुरु जी महाराज ने नीचे का सलोक उच्चारण किया-

सलोक॥ जनम के तप किये पोले सहे अड़ंग॥
तब के थाके नानक अब ही मुंडाए अंग॥

तब तिस का परमार्थ कहा है। गुरु जी कहने लगे-हे मर्दाने! तप करने से राज्य की प्राप्ति मानी है और राज्य का परिणाम नर्क है जो जीव जन्म लेता है। वह पूर्व काल के सधित कर्म जो अब प्रालब्ध हैं

उनके फल दुख सुख साथ ही लाता है। सो करतार का रंग देखता जा। मर्दाने ने गुरु जी के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया। अब गुरु जी वहां से बनारस (कांशी) में जा बिराजे।

एक पंडित जिस का नाम चतुर दास था वह गुरु जी के वेष को देख कर आप के निकट आया और नमस्कार करके बैठ गया और कहने लगा-हे भक्तवर! तुम्हारे पास न तो शालग्राम की मूर्ति है और न ही तुलसी की माला है और गोपी चन्दन का तिलक भी नहीं है। फिर अपने को सन्त कहते हो। भेष साधुओं जैसा बना रखा है। क्या इसी का नाम भक्ति है? गुरु जी ने चतुर दास को उत्तर देने की जगह पर मर्दाने को कहा-हे मर्दाना! रबाब बजाओ। मर्दाना रबाब बजाने लगा- तब गुरु जी ने नीचे लिखा हुआ शब्द उच्चारण किया।

रागु बसंतु महला १ ॥

सालग्राम बिप पूजि मनावहु सुक्रितु तुलसी माला। राम नामु जपि बेड़ा बांधहु दइआ करहु दइआला॥ १ ॥ काहे कलरा सिंचहु जनमु गवावहु॥ काची ढहगि दिवाल काहे गचु लावहु॥ २ ॥ रहाउ॥

पंडित ने कहा-हे महाराज! आप ने यह तो सत्य ही की है परंतु जिस से परमात्मा मिले वह कौन सी रीति है? तब गुरु जी ने नीचे लिखी पउड़ी का उच्चारण किया-

पउड़ी ॥ कामु क्रोधु दुइ करहु बसोले गोडहु धरती भाई। जिउ गोडहु तिउ तुम्ह सुख पावहु किरतु न मेटिआ जाई॥ ३ ॥

फिर पंडित जी ने पूछा-हे भक्त जी! धरती को नम दिये बिना ही किस प्रकार बोए और माली किस बिधि को अपना कर जाने। फिर गुरु जी ने तीसरी पउड़ी कही।

करि हरिहट माल टिंड परोवहु तिस भीतर मन जोवहु। अंमृत सिचहु भरो किआरे तो माली के होवहु॥ ३ ॥

तब चतुर दास ने कहा-आप तो परम हंस हो, और हम मति मलीन हैं बगले की भांति हैं तब गुरु जी ने चौथी पउड़ी उच्चारण की-

बगुले ते फुनि हंसुला होवै जे तू करहि दइआला॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा दइआ करहु दइआला॥ ४॥

तब फिर पंडित ने कहा-आप उस ईश्वर के पूर्ण भक्त हो। हमारी प्रार्थना है कि आप इस नगरी को पवित्र करो और कुछ इस का भी गुण ग्रहण करो। गुरु जी ने पूछा- इस का गुण क्या है? पंडित ने कहा-काशी विद्या का केन्द्र है। यही इस का उच्च गुण है। विद्या से रिद्धि सिद्धि की प्राप्ति होती है तथा संसार में विद्वान का मान होता है। तब गुरु जी ने मर्दाने को रबाब बजाने की आज्ञा दी और स्वयं शब्द कहा-

रागु बसंतु महला १॥

राजा बालकु नगरी काची दुसटा नालि पिआरो॥ दुइ माई दोइ बापा पढ़ीअहि पंडित करहु बीचारो॥ १॥ सुवामी पंडिता तुम्ह देहु मती॥ किन बिधि पावउ प्रानपती॥ १॥ रहाउ॥ भीतरि अगनि बनासपति माउली सागरु पंडै पाइआ॥ चंदु सूरजु दुइ घट ही भीतरि ऐसा गिआनु न पाइआ॥ २॥ राम रवंता जाणीऐ इक माई भोगु करेइ॥ ता के लखण जाणीअहि खिमा धनु संग्रहेइ॥ ३॥ कहिआ सुणहि न खाइआ मानहि तिन्हा ही सेती वासा॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा खिनु तोला खिनु मासा॥ ४॥

फिर पंडित चतुर दास ने कहा- हे भक्तवर! यह जो हम लोग दुनिया को पढ़ाते हैं। उस विद्या से कुछ परमार्थ भी सुधरता है अथवा नहीं। गुरु जी ने कहा-हे पंडित जी! स्वयं क्या पढ़े हो और क्या कुछ लोगों को पढ़ाते हो? वह बताओ पंडित ने कहा-अक्षर बोध से बेद शास्त्रादिक का ज्ञान सिखाना हमारा काम है।

तब गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया-

माउली ओअंकारि ब्रहमा उतपति॥ ओअंकारि कीआ जिनि

चिति ॥ ओअंकार सैल जुग भए ॥ ओअंकारि बेद निरमए ॥
ओअंकारि सबदि उधरे ॥ ओअंकारि गुरमुखि तरे ॥
ओनम अखरू सुणहु बिचारु ॥ ओनम अखरु त्रिभवण
सारु ॥ १ ॥ सुणि पांडे किआ लिखहु जंजाला ॥
लिखु राम नाम गुरमुखि गोपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥

तब गुरु जी ने ओंकार की उनंजा पउड़ियें उच्चारण की तब पंडित चतुर दास गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा और गुरु जी का सेवक बन कर नाम जपने लगा।

साखी नानक मते की

श्री गुरु नानक देव जी महाराज हमें साथ लेकर नानक मते जा पहुंचे वहां आप ने एक वट वृक्ष के नीचे डेरा डाला। वह बोहड़ का वृक्ष सूखा हुआ था। गुरु जी के आगमन से वह वृक्ष सारा सब्ज हो गया। तब सिद्धों ने देख कर कहा कि यह कोई महां पुरुष है, तब सिद्धों ने गुरु जी से पूछा- आप किस के शिष्य हो, और किस से दीक्षित हुए हो गुरु जी ने उन के उत्तर में शब्द का उच्चारण किया--

सूही महला १ ॥ कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥ १ ॥ मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥ तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥ २ ॥ आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥ आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥ ३ ॥ अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ ता की संगति नानकु रहदा किउ कर मूढ़ा पावै ॥

तब सिद्धों ने कहा—हे बाला! तुम योगी बनो और भेष बदलो तब

गुरु जी ने शब्द उच्चारण किया।

सूही महला १ ॥ जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चढ़ाईऐ ॥ जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंडी वाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ १ ॥ गली जोगु न होई ॥ एक द्रिसटि करि समकरि जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगु न बाहरि मढ़ी मसाणी जोगु न ताड़ी लाईऐ ॥ जोगु न देसि दिसंतरि भविऐ जोगु न तीरथि नाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ २ ॥ सतिगुरु भेटै ता सहसा तूटै धावतु वरजि रहाईऐ ॥ निझरु झरै सहज धुनि लागै घर ही परचा पाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ ३ ॥ नानक जीवतिआ मर रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ ॥ वाजे बाझहु सिंडी वाजै निरभउ पदु पाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति तउ पाईऐ ॥ ४ ॥

यह सुन कर सिद्ध आदेश आदेश कह कर कहने लगे—यह कोई महान् पुरुष है जिस के विश्राम करने से सूखा हुआ बट वृक्ष हरित्त हो गया है। तब सभी सिद्धों ने दंडवत प्रणाम करके तथा अनेक प्रकार से स्तुति करके रवाना हुए।

वणजारे की साखी

अब श्री गुरु नानक देव जी महाराज वणजारों की बस्ती की ओर गये और वहां जा कर अपना आसन विछा कर बैठ गये। एक वणजारे के घर में पुत्र उत्पन्न हुआ। तब बहुत से लोग उसे बधाई देने आते थे और वह वणजारा प्रत्येक याचक को कुछ न कुछ दान देता था परंतु

उस वणजारे ने श्री गुरु जी तथा बाले मर्दाने को कुछ भी अर्पण न किया। तब मर्दाने ने कहा मुझे यदि गुरु जी आज्ञा दें तो मैं भी इस वणजारे से कुछ याचना करके ले आऊं। मर्दाने की बात सुन कर सर्वज्ञ गुरु जी हंसने लगे और कहा-हे मर्दाने! इस के घर में पुत्र के रूप में करजाई पैदा हुआ है। यह चार पहर रह कर चला जायेगा। अब जैसे तुम्हारी इच्छा है करो। इतना स्मरण रखना कि यदि तुम उस के द्वार पर याचना के लिए जाओ तो मौन ही धारण करना। कोई भी अशीवाद नहीं देना होगा।

मर्दाने ने वैसे ही किया अर्थात चुप चाप खड़ा रहा परंतु किसी ने भी मर्दाने की बात तक नहीं पूछी। अंततो गत्वा मर्दाना वैसे ही लौट आया। आ कर श्री गुरु जी को कहने लगा—हे गुरु वर! मुझे तो किसी ने मुख से बुलाया तक भी नहीं। गुरु जी कहने लगे-हे मर्दाना! तुम रबाब बजाओ तब मर्दाने ने रबाब बजाना आरम्भ किया तब गुरु जी ने शब्द उच्चारण किया।

सिरीरागु महला १ घरु १ ॥

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥ उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि ॥ खसम सेती अरदासि बखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥ ना मरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥ जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहिरै हुकमि पइआ गरभासि ॥ १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइआ धिआनु ॥ हथो हथि नचाईऐ वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि कानु ॥ हथो हथि नचाईऐ प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥ चेति अचेत मूढ़ मन मेरे अंति नहीं कछु तेरा ॥ जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥ कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइआ धिआनु ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि

कै वणजारिया मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥ हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥ हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ संगि माइया ॥ धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइआ ॥ धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥ कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥ ३ ॥ चउथे पहर रैणि कै वणजारिया मित्रा लावी आइआ खेतु ॥ जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिया मित्रा किसैन मिलिआ भेतु ॥ भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥ झूठा रुदनु होआ दुोआलै खिन महि भइया पराइआ ॥ साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥ कहु नानक प्राणी चाउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥ ४ ॥

जब दूसरा दिन चढ़ा तब वह लड़का स्वर्ग वास कर गया। कल जहां वधाईयें और मुबारकें मिल रही थीं वहां आज अनेक प्रकार से रुदन हो रहा है यह देख कर मर्दाने ने गुरु जी के चरणों में प्रार्थना की कि हे स्र्वज्ञ गुरु देव! यह क्या हो रहा है आप कृप्या इस के लिये उच्चारण करो। गुरु जी ने मर्दाने की प्रार्थना स्वीकार करते हुए आगे लिखा शब्द उच्चारण किया-

सलोक ॥ जिस मुख मिले मुबारकां लख लख मिले असीस ॥
सो मोहि फेर पढ़ाईअन तन मन सहै कसीस ॥
इक मुए इझ दबियन इक विच नदी बहाई ॥
गई मुबारख नानका है पहुती आई ॥

अब गुरु जी, बाला और मर्दाना को संग लेकर आगे की यात्रा को चल दिये।

दो सिक्खों की साखी

फिर बाले ने कहना आरम्भ किया- सतगुर श्री गुरु नानक देव जी हम दोनों को साथ लेकर आगे चले। अब चौमासा आरम्भ हो गया

था तब एक नगर के निकट पहुंचे। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! इस स्थान पर चौमासा है विश्राम करना चाहिये। गुरु जी ने नगर से एक कोस बाहर अपना आसन लगाया। वहां एक बाग था जिसका स्वामी एक क्षत्री था। वह क्षत्री गुरु जी के दर्शनों को आया तथा नमस्कार करके बैठ गया कुछ काल बैठ कर चला गया। इसी प्रकार वह क्षत्री प्रति दिन गुरु जी के निकट आता और फिर कुछ समय के पश्चात् चला जाता था। एक दिन उस क्षत्री के पड़ोसी ने पूछा कि आप प्रति दिन किधर जाते हैं? उसने कहा कि एक संत जी आये हुए हैं मैं उनके दर्शनों को जाता हूं। उस पड़ोसी ने कहा कि मुझे भी अपने साथ ले चलो। तब उस क्षत्री ने कहा यदि आप को भी श्रद्धा है तो आप भी चले चलो।

दूसरे दिन वह दर्शनों का प्रेमी जब चलने लगा तो वह पड़ोसी दुकानदार भी उस के साथ हो लिया। रास्ते में एक रंडी का घर था। वह पड़ोसी तो रंडी के घर चला गया और वह क्षत्री श्री गुरु जी के निकट आ गया। उस प्रेमी ने निश्चय किया था कि संत जी के दर्शनों के सिवाए और कुछ भी जिज्ञासा नहीं करनी। इस प्रकार वह दोनो दुकानों से इकट्ठे चलते थे। क्षत्री तो गुरु जी के निकट आ जाता था और दूसरा रंडी के घर में चला जाता था। इसी प्रकार बहुत दिन व्यतीत हो गए।

एक दिन उस कुकर्मी के मन में विचार हुई कि मैं तो नित्य प्रति कुकर्म करने जाता हूं और मेरा साथी उस महात्मा के दशर्न करने जाता है। इस साथी के साथ कुछ बात करनी उचित है। उस कुकर्मी ने एक दिन उस श्रद्धालु से कहा-हे मित्र! मैं तो प्रति दिन कुकर्म करने जाता हूं और तुम दर्शन करने जाते हो। आज मैं चाहता हूं कि तुम दर्शन करके पहिले आ जाओ इसी स्थान पर मेरा इंतजार करो और यदि मैं पहिले आ गया तो मैं भी इसी स्थान पर तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा। दोनों ने स्वीकार किया और अपने अपने निरदिष्ट स्थान की ओर गये। रंडी के

घर जाने वाला रंडी के घर में गया तब वह रंडी घर में नहीं थी वह निराश सा होकर लौट आया और नियत किये हुये स्थान पर आ कर बैठ गया और अपने साथी की इंतजार करने लगा। उस ने भूमि को नख से कुरेंदा तो एक मिट्टी का पुरवा निकला जिस में एक स्वर्ण की मोहर थी और बाकी का पुरवा कोयलों से भरा हुआ देखा। उधर वह श्रद्धालु जब गुर दर्शनों के पश्चात् घर की ओर लौट रहा था। तब उस के पांव में एक कंटक चुभा। जिस से उस को पीड़ा हुई तथा रुद्र बहने लगा। उसने अपने पैर पर एक वस्त्र फाड़ कर बांध लिया तथा शनैः शनैः चल कर वह भी अपने स्थान की ओर आया। पहिले ने पूछा कि आप को क्या हुआ है। उस ने कंटक चुभने का समाचार कहा- उस कुकर्मी ने मुस्करा कर कहा-हे मित्र! देखो मुझे तो एक मोहर प्राप्त हुई है और तुझे पैर में कांटा चुभ गया है मैं तो पापी हूं। परन्तु मोहर पाई है और तुम सत्संग के लिये जाते हो परंतु पैर भी जखमी करवा बैठे हो। यह क्या कारण है?

अब वे दोनों इस का उत्तर लेने को गुरु जी के पास आए तथा जो कुछ सत्य था वह गुरु जी के समक्ष दोनों ने कहा। गुरु जी मुस्करा कर मौन हो गये। अब उन दोनों ने आग्रह किया-हे महाराज! हम अपने प्रश्न का उत्तर चाहते हैं अब आप कृपा करो। तब गुरु जी ने उस कुकर्मी को कहा-हे भाई! तुमने पूर्व जन्म में एक मोहर दान की थी। जिसके फल से तुम्हें मोहरों का भरा हुआ पुरवा मिलना था। अब तुम कुकर्म करने लग गए जिससे सभी मोहरें कोयला बन गई हैं तथा जो प्रेमी हमारे दर्शनों को आता है इस के भाग्य में शूली पर चढ़ना लिखा था जो सत्संग के प्रभाव से शूली का शूल हो गया है। जब श्री गुरु जी के मुख से उन्होंने यह बचन सुने तो दोनों ही अचम्भे में आ गये तथा गुरु जी के चरणों पर गिर कर क्षमा प्रार्थना करने लगे। गुरु जी ने

उन दोनों ही सिखों पर अपनी कृपा दृष्टि का संचार किया तथा पवित्र नाम का उपदेश किया। दोनों ही गुरु जी की सेवा तन मन से करने लगे। फिर गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

॥ रागु मारू महला १ ॥

करणी कामदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥ जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे॥ चित चेतसि की नही बावरिआ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ॥ १ ॥ रहाउ॥ जाली रैनि जालु दिनु हुआ जेती घड़ी फाही तेती॥ रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटहि मूड़े कवन गुणी॥ २ ॥ काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही॥ कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ संन्ही चिंत भई। भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरू मिलै तिनेहा। एकु नामु अंम्रितु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा॥ ४ ॥

इस के पश्चात् चौमासा व्यतीत होने पर गुरु नानक देव जी हम दोनों को साथ लेकर तथा उन दोनों सेवकों को परमोत्तम उपदेश से कृतार्थ करके उस स्थान से फिर आगे की ओर रवाना हो गये।

साखी श्री गंगा जी की

श्री गुरु नानक देव जी महाराज अनेक स्थानों में भ्रमण करते करते तथा कलियुग के अन्य जीवों का उधार करते करते एक दिन हरिद्वार तीर्थ पर आ गये। गंगा नदी में नर नारी स्नान करते देखे तो अनेकों पुरुष सूर्य की ओर अपना मुख करके जल छोड़ते देखे। उन लोकों की ओर देख कर गुरु जी ने सत्य मार्ग का उपदेश देने का एक सुन्दर अवसर

देख कर अपने वस्त्र उतारे और गंगा नदी में स्नान करने लगे। स्नान के पश्चात् अपनी कर अंजली में जल लेकर पश्चिम की ओर मुख करके पानी देने लगे। गुरु जी के इस कृत्य को देख कर कुछ लोग चकित हुए तथा पूछने लगे-हे संत जी! आप यह शास्त्र के विपरीत कर्म क्यों करते हैं। गुरु जी ने कहा-आप जल किस को देते हो। उन्हों ने उत्तर दिया कि हम तो अपने मरे पितरों को पानी दे रहे हैं। गुरु जी ने कहा-वे पितर यहां से कितनी दूर हैं। तब एक पांडे ने कहा-कि पितर लोक इस धरती से उनचास लाख योजन की दूरी पर हैं। उस में शास्त्र प्रमाण है और तुम किस को पानी देते हो! तब गुरु जी ने कहा-मैं तो अपने खेत को पानी दे रहा हूं क्योंकि मैं तो ईधर आ गया हूं। उधर कहीं मेरा खेत ही न सूख जाए। तब पांडे ने कहा-हे संत जी! तुम्हारे खेत में यह पानी नहीं जा सकता। गुरु जी ने कहा-हे भाई! आप का पितर लोक लाखों कोस पर है वहां तो यह जा सकता है परंतु मेरा खेत जो केवल अढ़ाई सौ कोस की दूरी पर है वहां यह पानी क्यों न जायेगा? यह उत्तर सुन कर सभी लोक हैरान हो कर सतगुर श्री नानक देव जी की ओर देखने लगे और अनेक लोग श्री गुरु जी के चरणों पर गिर गये।

सत्य मार्ग के जानने वाले भी संसार में अनेक पाये जाते हैं। गुरु नानक जी महाराज के इस पवित्र और सत्य उपदेश ने अनेकों हृदय में श्रद्धा उत्पन्न कर दी। उन्हों ने हाथ बांध कर प्रार्थना की कि हे महाराज! कृप्या उपदेश कीजिये जिसे से हम जीवों का कल्याण हो। तब गुरु जी ने कहा कि यह जो तुम लोग माला फेर रहे हो। यह भी मन एकाग्र किये बगैर व्यर्थ है। उन्हों ने कहा-महाराज वह कैसे! तब एक पुरुष को गुरु जी ने कहा-हे भाई! तुम माला फेर रहे हो परंतु तुम्हारा मन तो अपनी धर्म पत्नी से प्रेम वास्ना कर रहा है। ऐसे ही एक और को

कहा कि तुम्हारे हाथ में तो माला है परंतु तुम्हारा दिल तो दुकान पर जिन्स तोल रहा है। इसी प्रकार एक वकील को कहा कि तुम तो कचहरी में मुकदमा लड़ रहे हो। जब सभी के मनोभाव गुरु जी ने कहे तो बस फिर क्या था सत्यमेवजयंते नातृतमर की उक्ति कृतार्थ हो गई। अनेकों नर नारी गुरु जी के सत्य उपदेश से कृत कृत्य हुए और गुरु जी के चरणों में नमस्कार करके सेवक हो गये।

इस के पश्चात् अनेकों लोगों ने गुरु जी को भोजन का निमंत्रण दिया परंतु गुरु जी ने अस्वीकार कर दिया। फिर एक ने परमेश्वर का वासता देकर कहा। तब गुरु जी ने स्वीकार कर लिया जब गुरु जी भोजन पाने गये तो वहां भोजन बनाने वालों ने चौंके की सीमा पर लकीरें डाल लीं। गुरु जी ने कहा-हे भाई! यह कार क्यों की है तब उन्होंने कहा कि अपवित्र हुआ पुरुष आ जाने से चौंका भ्रष्ट हो जाता है इस लिए हम ने सीमा बना दी है। तब गुरु जी ने कहा-हे भाई! तुम्हारे साथ चार मलेछ भी चौंके में आ गये हैं। इस लिए यह चौंका अपवित्र हो गया है। उन्हों ने कहा-हे महाराज! वे चार कहां हैं जिन के आने से चौंका दूषित हो गया है। वे चारों हमें तो नज़र नहीं आते। तब गुरु जी ने शलोक कहा-

सलोक महला १ ॥ कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि॥ कारी कढी किआ थीऐ जां चारे बैठीआ नालि॥

गुरु जी ने कहा-इन के आने से चौंका भ्रष्ट होता है तब उन लोगों ने पूछा-हे महाराज! फिर पवित्र कैसे हो? तब गुरु जी ने उत्तर दिया-
नानक अगै ऊतम सेई जि पापां पंदि न देही॥ १ ॥

इस का परमार्थ॥

इस प्रकार से संयम रहने पर ही चौंका पवित्र होता है यह सुन कर सभी लोग श्री गुरु नानक देव जी महाराज के पवित्र चरणों पर नत मस्तक हो गये। फिर गुरु जी ने उन को दान की महिमा बताई जिसे सुन कर लोगों ने सर्वस्व तक दान कर दिया और फिर गुरु जी महाराज के बतलाये हुए मार्ग पर चल कर सत्य नाम का दिव्य मंत्र जपने लग गये। गुरु जी के पवित्र उपदेश से अनेकों प्रकार के आडंबर का खंडन किया तथा अनेक लोग सत्य मार्ग पर चल कर अपना उद्धार करने लगे। बोलो भाई जी सत्य नाम श्री वाहिगुरु जी।

गुरु जी की तीर्थ यात्रा

श्री गुरु नानक देव जी महाराज हम लोगों को साथ लेकर एक ऐसे तीर्थ पर गये जहां बड़ा भारी मेला हो रहा था। गुरु जी ने अपने दिव्य नेत्रों से समस्त मेले को देखा परंतु वहां एक भी परमेश्वर का भक्त न पा कर वहां से आगे रवाना हुए क्योंकि महा पुरुषों का मिलाप तो महापुरुषों से होता है जैसे बाज़ पक्षी बाजों के साथ कबूतर कबूतरों के साथ ही व्योम विचरण करते हैं।

इस के पश्चात् गुरु जी कूरुक्षेत्र में जा पधारे वहां पर ग्रहण काल के समय अनेकों साधु तथा संत गृहस्त उपस्थित थे। वहां पर पटने नगर के राजा का पुत्र दुश्मनों से भयभीत हो कर आया था। वह आता हुआ मार्ग से एक हिरण का शिकार करके साथ ले आया था। उसके पास और संपदा नहीं थी तथा दुखी था उसने श्री गुरु नानक देव जी को देख साष्टांग प्रणाम किया और वही हिरण जो उस ने मारा था वह गुरु जी की भेंट किया। उस समय गुरु जी ने कहा-हे बाला! हम लोग

यहां ग्रहण को पूजन करने नहीं आये तुम इस हिरण को चुल्ला जला कर हांडी बनाओ। मैंने (बाले ने) गुरु आज्ञा से हांडी चढ़ा दी। जब अन्य लोगों और विशेष कर सन्यासिओं ने देखा तो लठ लेकर लड़ने मारने को आ गये और कहने लगे-तुम कौन हो जो आज सूर्य ग्रहण के दिन कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि पर यह क्या कर रहे हो? हमें बताओं कि इस हांडी में क्या तैयार कर रहे हो। गुरु जी ने कहा-हांडी में मास बनाया जा रहा है। सन्यासी बोले तुम तो हिन्दू नज़र आते हो फिर सूर्य ग्रहण का आज दिन है और तुम खाने के लिये मांस बना रहे हो। गुरु जी ने उत्तर दिया कि तुम साधु नज़र आ रहे हो किंचित ज्ञान की बात करो प्रथम तो तुम को क्रोध चंडाल हो रहा है। सुनो और ध्यान लगा कर सुनो। बाले ने कहा-हे साधुओ बैठ कर बात करनी उचित है। उस समय श्री गुरु जी ने नीचे लिखा सलोक उच्चारण किया-

मलार की वार सलोक महला १ ॥

पहिलां मासहु निंमिआ मासै अंदरि वासु॥
जीउ पाइ मासु मुहि मिलिआ हड चंमु तनु मासु॥
मासहु बाहरि कढिआ मंमा मासु गिरासु॥
मुहु मासै का जीभ मासै की मासै अंदरि मासु॥
वडा होआ वीआहिआ घर लै आइआ मासु॥
मासहु ही मासु ऊपजै मासहु सभो साकु॥
सतिगुरि मिलिऐ हुकमु बुझिऐ तांको आवै रासि॥
आपि छुटे नह छुटीऐ नानक बचनि बिणासु॥ १ ॥
मः १ ॥ मासु मासु करि मूरखु झगड़े गिआनु धियानु नही जाणै॥ कोउणु मासु कउणु सागु कहावै किसु महि पाप समाणे॥
गैंडा मारि होम जग कीए देवतिआ की बाणे॥

मासु छोडि बैसि नकु पकड़हि राती माणस खाणे॥
फड़ु करि लोकां नो दिखलावहि गिआनु धिआनु नही सूझै॥
नानक अंधे सिउ किआ कहीऐ कहै न कहिआ बूझै॥
अंधा सोइ जि अंधु कमावै तिसु रिदै सि लोचने नाही॥
मात पिता की रकतु निपंने मछी मासु न खही॥
इसत्री पुरखै जां निसि मेला ओथै मंधु कमाही॥
मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासै के भांडे॥
गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पांडे॥
बाहर का मासु मंदा सुआमी घर का मासु चंगेरा॥
जीअ जंत सबि मासहु होइ जीइ लइआ वासेरा॥
अभखु भखहि भखु तजि छोडहि अंध गुरू जिन केरा॥
मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासै के भांडे॥
गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पांडे॥
मासु पुराणी मासु कतेंबी चहु जुगि मासु कमाणा॥
जजि काजि वीआहि सुहावै ओथै मासु समाणा॥
इसत्री पुरख निपजहि मासहु पातिसाह सुलताना॥
जे ओइ दिसहि नरकि जांदे तां उन्ह का दानु का लैणा॥
देंदा नरकि सुरगि लैदे देखहु एहु धिङाणा॥
आपि न बूझै लोक बुझाए पांडे खरा सिआणा॥
पांडे तू जाणै ही नाही किथहु मासु उपंना॥
तोईअहु अंन कमादु कुपाहां तोइअहु त्रिभवणु गंना॥
तोआ आखै हउ बहु हछा तोऐ बहुतु बिकारा॥
एते रस छोडि होवै संनिआसी नानकु कहै विचारा॥ २॥

यह शब्द सुण कर उन तमाम सन्यासियों की तृपति हो गई और कोई भी उत्तर नहीं आया। तब सभी नर नारी श्री गुरु नानक जी के

चरणों पर गिर गये। पटने का राजा और उस की माता अत्यंत नम्रता से गुरु जी के चरणों पर लग गये, तब गुरु जी ने उन को वर दिया और कहा कि तुम नाम जपो तब तुम्हारा भला होगा और छिना हुआ राज्य तुम्हें फिर से प्राप्त होगा। इतने में ग्रहण हट गया तब सब साधुओं को उसी राज कुमार के हाथों से निकलवा कर परोसा गया। अचम्भा यह था कि हांडी में से जब बाहर निकाली तो वह उत्तम क्षीर (तस्मै) हो गई। यह देख कर सभी नर नारियों की श्रद्धा अपार गुरु चरणों में हो गई और धन्यवाद के गगन भेदी जयकारे लगाये गये। इस प्रकार कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि पर जहां हज़ारों वर्ष पूर्व श्री कृष्ण भगवान ने गीता का गीत गाया था वही कलयुगी जीवों के कल्याणार्थ श्री गुरु नानक देव जी ने पवित्र उपदेश किया।

धन्य श्री गुरु नानक देव जी महाराज!

मथुरा पुरी की साखी

एक दिन दुनी के दाता श्री गुरु नानक देव जी महाराज कहने लगे-हे बाला! चलो तुम को उस नगरी की ओर ले चलें जहां श्री कृष्ण भगवान ने द्वापर युग में अवतार धारण किया था। उस नगरी का पवित्र नाम मथुरा पुरी है। इस पुरी में यमुना नदी बहती है, जहां गोवर्धन पर्वत पर श्री कृष्ण वासुदेव गैया चराई थीं और अनेक कौतक करके कंस को मार कर भूभार उतारा था। उपदेश करते करते श्री गुरु जी मथुरा पूरी में आ गये।

मैंने गोवर्धन पर्वत को देख कर गुरु जी से प्रार्थना की-हे महाराज! यह पर्वत यहां कैसे आ गया? गुरु जी ने फुरमाया-हे बाला जब राजा राम चन्द्र जी ने लंका पर चढ़ाई करने के लिये समुंद्र पर पुल बांधा था तब सभी कपिओं को आज्ञा हुई कि जहां पर पर्वत हो वहां से जाकर

ले आओ। जब हनुमान जी यहां इस पर्वत को लेने आये तो इस पर्वत ने कहा-हे भ्राता! मुझे कहां ले जाना चाहते हो? तब हनुमान ने कहा तुम्हें श्री राम चंद्र के चरणों में ले जाऊंगा और तुम्हें भगवान के दशर्न होंगे यह कह कर गोवर्धन को उठा लिया जब इस मथुरा पुरी के निकट हनुमान आया तो राम भगवान ने आज्ञ दी कि अब पहाड़ों की आवश्यकता नहीं है। जहां जहां कोई पर्वत ला रहा है उसी जगह छोड़ कर शूरबीर जल्दी हमारे पास आ जायें। हनुमान जी ने प्रभु आज्ञा सुणी तो पर्वत को यहीं धर कर स्वयं बैठ गया। यहां से प्रार्थना कर भेजी-हे प्रभो! मैंने इस गोवर्धन से प्रण किया था कि आप के दर्शन करवाऊंगा अब क्या करूं। मेरा प्रण नाश होता है तब राम भगवान ने कहा-हे महाबीर! तुम गोवर्धन को यमुना तीर पर छोड़ आओ। हम द्वापर में इस पर्वत पर अनेक लीला करेंगे। तब तुम्हारा प्रण पूर्ण होगा। इसके पश्चात् हे बाला! द्वापर में भी कृष्ण भगवान ने इस पर्वत पर अनेक लीला की थी।

इस के पश्चात् गुरु जी ने यमुना घाट पर स्नान किया और सभी स्थान तथा मंदिर देखे लोभी लंपट और बुरे लोक भी देखे जो पवित्र तीर्थ पर भी अपने कुकर्मो को करके नर्क की तैयारी कर रहे थे परमेश्वर का प्यारा एक भी नहीं मिला। वैरागी और दूसरे साधु गृहस्थी होकर दुष्कर्म में रक्त देखे। कार्तिक पुरबी का मेला देख कर श्री गुरु जी ने अपने मुखारबिंद से एक पवित्र शब्द का उच्चारण किया-

॥ रामकली महला १ असटपदीआ ॥

सोई चंदु चढ़हि से तारे सोई दिनीअरु तपत रहै॥ सा धरती सो पउणु झुलारे जुग जीअ खेले थाव कैसे॥ १ ॥ जीवन तलब निवारि॥ होवै परवाणा करहि धिङाणा कलि लखण वीचारि॥ १ ॥ रहाउ ॥ किते देसि न आइआ सुणीऐ तीरथ पासि न बैठा।

दाता दानु करे तह नाही महल उसारि न बैठा॥ २॥ जे को सतु करे सो छीजे तप घरि तपु न होई॥ जे को नाउ लए बदनावी कलि के लखण एई॥ ३॥ जिसु सिकदारी तिसहि खुआरी चाकर केहे डरणा॥ जा सिकदारै पवै जंजीरी ता चाकर हथहु मरणा॥ ४॥ आखु गुणा कलि आईऐ॥ तिहु जुग केरा रहिआ तपावसु जे गुण देहि त पाईऐ॥ १॥ रहाउ॥ कलि कलवाली सरा निबेड़ी काजी क्रिसना होआ॥ बाणी ब्रहमा बेदु अथरवणु करणी कीरति लहिआ॥ ५॥ पति विनु पूजा सत विण संजमु जत विणु काहे जनेऊ॥ नावहु धोवहु तिलकु चढ़ावहु सुच विणु सोच न होई॥ ६॥ कलि परवाणु कतेब कुराणु॥ पोथी पंडित रहे पुराण॥ नानक नाउ भइआ रहमाणु॥ करि करता तू एको जाणु॥ ७॥ नानक नामु मिलै वडिआई एदू उपरि करमु नही॥ जे घरि होदै मंगणि जाईऐ फिरि ओलामा मिलै तही॥ ८॥ १॥

॥ आगे वार्तक॥

जब श्री गुरु जी महाराज ने ऊपर लिखा शब्द उच्चारण किया तो सभी लोग गुरु जी के चरणों पर गिर गये तो गुरु जी ने कहा-हे भाई! परमात्मा के नाम जपने से ही मोक्ष मिल सकता है तथा नाम स्मरण में सुख और बड़ाई प्राप्त होती है। नाम स्मरण के समान और कोई महान् कर्म नहीं है। परमेश्वर महात्माओं के मन में निवास करता है। इस लिये सत्संग करो और प्रभु नाम स्मरण करो बांट कर खाना तथा सन्तों की सेवा यही कल्याण का मार्ग है फिर गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

॥ गउड़ी महला १ दखणी ॥

सुणि सुणि बूझै मानै नाउ॥ ता कै सद बलिहारै जाउ॥ आपि भुलाए ठउर न ठाउ॥ तूं समझावहि मेलि मिलाउ॥ १ ॥ नामु मिलै चलै मै नालि॥ बिनु नावै बाधी सभ कालि॥ १ ॥ रहाउ॥ खेती वणजु नावै की ओट॥ पापु पुंनु बीज का पोट॥ कामु क्रोधु जीअ महि चोट॥ नामु विसारि चले मनि खोट॥ २ ॥ साचे गुर की साची सीख॥ तनु मनु सीतलु साचु परीख॥ जल पुराइनि रस कमल परीख॥ सबदि रते मीठे रस ईख॥ ३ ॥ हुकमि संजोगी गड़ि दस दुआर॥ पंच वसहि मिलि जोति अपार॥ आपि तुलै आपे वणजार॥ नानक नामि सवारणहार॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ वार्तक॥

अर्थात् जो परमेश्वर का नाम जपते हैं तथा उसी के आश्रित रहते हैं और उसी से प्रीति करते हैं, उन महापुरुषों के सभी कार्य सुधरे रहते हैं जब गुरु जी वहां से चले तब एक पंडित से कुछ बातें हुईं। वह पंडित कांशी का विद्वान था उस ने कहा-हे संतवर! इस कांशी पुरी का महात्म्य तो वेदों के अंदर भी आया है जो पुरुष चाहे कितने भी पापी हो परंतु यहां शरीर त्याग करने से मुक्त हो जाता है क्योंकि मरते समय जो तारक लोग होते हैं वह राम नाम का पवित्र मंत्र सुना देते हैं। तब गुरु जी ने कहा-हे पंडित जी! परमात्मा का नाम ऐसा है जिस को स्वयं परमात्मा ने वर्णन किया है। उसे जो कोई सुने अथवा सुनावे उसे तुरंत ही मोक्ष देता है।

गुरु जी कहने लगे-हे पंडित जी! भक्त कबीर इसी कांशी को त्याग कर मगहर धरती पर जाकर बसने लगे थे तथा वहां परमात्मा के नाम

से तथा सत्संग के प्रभाव से मुक्त हो गए थे। इस लिये ईश्वर नाम ही तारने वाला है। उसी के आश्रित अनंत जीव कल्याण को प्राप्त कर गये हैं। कांशी में मरने से मुक्ति नहीं मिलती। मुक्ति देने की शक्ति उसी परमात्मा में हैं। तब पंडित जी ने कहा-ईश्वर के नाम तो अनेक हैं। आप बताओ कि वह कौन सा नाम है जो मुक्त करता है? गुरु जी ने फुरमाया-हे पंडित जी! नदी के तट पर अनेकों बेड़े (नाव) होते हैं। मुसाफिर किसी पर बैठ जाए। वह उसे पर ले जायगा। इसी प्रकार परमात्मा के सभी नाम भव सागर से पार ले जाने की शक्ति रखते हैं। फिर जो गुरमुख से परमात्मा का नाम सुना हो। उस में तो अपार शक्ति होती है। इस प्रकार गुरु जी का उपदेश सुन कर सभी पंडित बहुत ही प्रसन्न हुए और सभी शंकायें दूर हो गई तथा श्री गुरु नानक देव जी महाराज के अन्नय भक्त हो गए।

साखी गुरु जी गया तीर्थ पर गये

भ्रमण करते करते हम लोग गुरु जी के साथ गया तीर्थ पर पहुंचे। मैंने (बाला) गुरु जी से पूछा- हे गुरुदेव! इस गया तीर्थ का वर्णन सुनने की मेरी इच्छा है। गुरु जी ने कहा-हे बाला! गयाशिर नाम का दैत्य हुआ है, उस ने परमात्मा का तप बहुत काल तक किया। उस की भक्ति चर्म सीमा तक पहुंच गई थी। तब विष्णु जी ने प्रसन्न होकर कहा-हे दैत्य हम तुम पर बहुत ही प्रसन्न हैं वर मांगो! दैत्य ने कहा-यदि आप कुछ देना चाहते हो तो मैं यह मांगता हूं कि इस संसार का कोई भी जीव नर्क में न जाए। विष्णु जी ने कहा कि हम यही वर दे दें तो मर्यादा भंग होती है यदि किसी को पाप का फल न मिलेगा तब ईश्वरीय नियम समाप्त हो जायेगा तब गयाशिर दैत्य ने कहा-हे महाराज! आप सब जीवों के पाप पुण्य मुझे दे दो। तब विष्णु जी बोले-हे दैत्य तुम इसी

स्थान पर शयन करो। तब जो प्राणी इस जगह पर अपना शरीर त्यागन करेगा। वह मेरे धाम को जायेगा और जो पुरुष यहां पिंड दान श्राद्ध आदिक शास्त्रानुसार करेगा उसके पितरों का उद्धार हो जायेगा और उसे भी सुख होगा।

जब यह कथा गुरु जी ने सुनाई। तब बाले ने कहा-हे गुरु नानक देव जी! आप धन्य हो। फिर गया के पंडितों ने गुरु जी से प्रार्थना की कि आप भी अपने पितरों का श्राद्ध-पिंडादिक यहां कराओ। गुरु जी ने उत्तर दिया-हम ने अपने पितरों का कल्याण पहिले ही कर छोड़ा है। इस के अतिरिक्त हम तो अपने तमाम सिख सेवकों का और उन के पितरों का भी उद्धार कर दिया हुआ है हम ने तो ऐसी क्रिया कर्मादिक किया है कि ज्ञान ज्योति से समस्त अंधेरा मिटा छोड़ा है फिर गुरु जी ने एक पवित्र शब्द उच्चारण किया-

॥ आसा महला १ ॥

दीवा मेरा एकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु ॥ उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥ १ ॥ लोका मत को फकड़ि पाइ ॥ लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु ॥ एथै ओथै आगै पाछै एहु मेरा आधारु ॥ २ ॥ गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ ॥ साचा नावणु तां थीए जां अहिनिसि लागै भाउ ॥ ३ ॥ इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिंडु खाइ ॥ नानक पिंडु बखसीस का कबहूँ निखुटसि नाहि ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ वार्तक ॥

जब गुरु जी महाराज ने इस प्रकार अपने पवित्र उपदेश की ज्योति

जगाई। तब तमाम पंडित गुरु जी के चरणों पर झुक गये। गुरु जी ने कहा-आप सभी परमात्मा का जप करो तथा उस की अनन्य भक्ति से मोक्ष प्राप्त करोगे। कामनाओं के त्याग से और अभ्यास परायणता से कल्याण होता है। परमात्मा के नाम स्मरण से सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं यह सुन कर तमाम लोग गुरु जी के सिख बन गये तथा चरणों में झुक गये।

साखी जगननाथ की यात्रा

इस के पश्चात् गुरु जी यात्रा करते करते जगन्नाथ पुरी जा पहुंचे। जब गुरु जी मंदिर के भीतर जाने लगे तब वहां केपुजारियों और पंडितों ने गुरु जी को आगे से रोक लिया। तब गुरु जी ने कहा-हे बाला! चलो हम बाहर ही बैठ जाते हैं। जगन्नाथ आप हमें बुलायेगा। यह कह गुरु जी बाला और मर्दाना बाहर ही एक चबूतरे पर बैट गये। जगन्नाथ को भोग लगाने का समय आया। तब ठाकुर जी को भोग नहीं लगता था तब पुजारियों ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि हे ठाकुरो! आज हम से कौन सी अवज्ञा हुई जो आप भोग स्वीकार नहीं करते। जब उन्होंने बहुत गड़ान प्रारंभ किया। तब जगन्नाथ जी ने उत्तर में आकाशबाणी द्वारा कहा कि तुम ने हमारे परम प्यारे श्री नानक देव निरंकारी जी को रोका है। बस यह बहुत ही भारी अवज्ञा की है अब तुम निरंकारी जी को मेरे सन्मुख सन्मान से ले कर आओ तब तुम्हारा भोग स्वीकार किया जायेगा।

जब जगन नाथ जी का यह फुरमान हुआ तब सभी पंडित श्री गुरु जी के पास आकर गले में दोपटे डाल कर चरणों पर गिर पड़े। एवम् त्राहिमां त्राहिमां शब्द कहने लगे तथा प्रार्थना की कि आप ठाकुर जी की आज्ञा मान कर तथा हमारे ऊपर अनुकंपा करके भीतर चलो। तुम्हारे

जाने से ही ठाकुर जी भोग लगायेंगे। गुरु जी ने कहा-आप ने तो हमें भीतर जाने नहीं दिया। हम ने ठाकुर जी को अपने मन में बिठा लिया है तथा हम नहीं जायेंगे। अब तमाम पुजारी तथा पंडित एवम् अन्य प्रतीज्ञित पुरुषों के साथ आकर गुरु जी से अनुनय विनय करने लगे और कहा-आप हमारी भूल को क्षमा करें तब गुरु जी जो महान् संत स्वभाव के थे उठ कर अंदर गए तथा गुरु जी ने प्रसाद को हाथ लगा कर कहा-जो मेरा सिख यहां पर आए उसे किसी प्रकार का प्रतिबंध न हो।

इस के पश्चात् भोग लगाया गया जब आरती हुई तो सभी लोग खड़े हो गये परंतु गुरु जी वहीं बैठे रहे। तब पंडितों ने कहा-हे गुरुदेव! आप आरती के समय खड़े नहीं हुए। गुरु जी ने उत्तर दिया-हम परमेश्वर की आरती मन से करते हैं और आप मनुष्य की आरती दिखावे से करते हो। तब उन पंडितों ने कहा-हे गुरु देव! आप आरती करो या न करो आप पर भगवान बोधा अधवा सदैव ही प्रसन्न है। जो कुछ आप करोगे सत्य ही करोगे फिर गुरु नानक देव जी महाराज ने एक पवित्र शब्द कहा-

धनासरी महला १ ॥ गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती

होइ॥ ३ ॥ हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा॥ किरपा जलु देहि नानका सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नामि वासा॥ ४॥

॥ वार्तक॥ यह पवित्र आरती सुन कर सभी गुरु जी के चरणों में प्रणाम करने लगे। फिर गुरु जी वहां से बाहर आ गये तथा एक सुन्दर बावली बनवाई। इस बावली का परम सुन्दर मीठा जल आज तक चला आ रहा है। फिर गुरु जी ने कहा कि यहां जो भी हमारा सेवक आये। उसे हर प्रकार से खान पान आदिक से सन्मानित किया जाये। फिर गुरु जी ने एक शब्द कहा-

॥ महला १ बसंतु॥

रुत आईले सरस बसंत माहि॥ रंग राते रवहि सि तेरै चाइ॥ किसु पूज चढ़ावउ लगउ पाइ॥ १॥ तेरे दासनि दासा कहउ राइ॥ जग जीवन जुगतु न मिलै काइ॥ १॥ रहाउ॥ तेरी मूरति एका बहुतु रूप॥ किसु पूज चढ़ावउ देउ धूप॥ तेरा अंतु न पाइआ कहा पाइ॥ तेरे दासनि दासा कहउ राइ॥ २॥ तेरे सठि संबत सभि तीरथा॥ तेरा सचु नामु परमेसरा॥ तेरी गति अविगति नही जानिऐ॥ अणजाणत नामु वखानिऐ॥ ३॥ नानकु वेचारा किआ कहै॥ सभु लोकु सलाहे एक सै॥ सिरु नानक लोका पाव है॥ बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है॥ ४॥ २॥

॥ वार्तक॥

यह पवित्र शब्द सुन कर सभी श्रोता अत्यंत प्रसन्न होकर गुरु जी के अनुयाई हो गये फिर गुरु नानक देव जी जगननाथ जी के दर्शन करके वहां से चल दिये।

साखी अयोध्या पुरी की

अब गुरु जी अयोध्या नगरी में आए। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह महाराजा राम चंद्र जी की नगरी है, यहां त्रेता युग में राम अवतार हुए थे। फिर गुरु जी सूर्य नदी के तट पर जा बैठे। बाले ने प्रश्न किया-हे गुरु देव! राम जी तो अयोध्या नगरी को अपने साथ ही ले गये थे फिर यह नगरी यहां कैसे आ गई?

गुरु जी ने कहा-हे बाला! मर्यादा पुरुषोतम श्री राम चंद्र जी मकानों को साथ नहीं ले गये थे। अपितु यहां के जो धर्मात्मा नर नारी थे, वही राम भगवान के साथ साकेत लोक को गये थे, यदि तुम लोक भी परमात्मा का स्मरण करो और गुरु गोविंद की शर्ण रहो तो तुम भी बैकुंठ को प्राप्त कर सकते हो। फिर कुछ लोगों ने प्रश्न किया-हे महाराज! गुरु कितने प्रकार के हैं? गुरु जी ने कहा-हे भाई! गुरु तीन प्रकार के होते हैं। पहिला गुरु तो पंडित होता है परंतु यह पंडित लोग दूसरों को उपदेश करते हैं स्वंय उस पर आचरण नहीं करते। उन से मिलने पर पुन्य जरूर है, परंतु सदगति नहीं होगी और अवधूत गुरू है उन की विद्या रूपी हाथ पांव नहीं होते। वे अपना उद्धार किसी संत की कृपा से कर लेते हैं परंतु दूसरों को पार नहीं कर सकते और जो महापुरुष हैं वह जहां अपना कल्याण करते हैं, वहां दूसरों को भी सत्य नाम का उपदेश देकर संसार से पार करने की सामर्थय रखते हैं। अर्थात् प्रथम नम्बर के दूसरों का कल्याण करते हैं और द्वितीय नम्बर के अपना भी कल्याण करते हैं परंतु अन्त जो हैं वे अपना और दूसरों का कल्याण कर देते हैं यह पवित्र उपदेश सुन कर सभी गुरु जी के चरणों में पड़ गये तथा प्रार्थी हुए—हे गुरु देव! आप हमारा कल्याण करें। आप महा पुरुष हैं। तब गुरु जी प्रसन्न होकर बोले-हे भाई! आप सभी पहिले इस

संसार का अनित्य मानों तथा अतिथी की सेवा करो तथा मन से प्रभु स्मरण करो। जो कुछ मिले वह बांट कर खाओ धर्म की और मर्यादा की कमाई करो। इस प्रकार उपदेश देकर गुरु जी महाराज बाला और मर्दाना दोनों को साथ लेकर चल दिये।

साखी प्रयाग राज की

अब सतगुरु श्री नानक देव जी प्रयाग राज (ईलाहबाद) पहुंचे। गुरु जी के निकट बड़े बड़े विद्वान धर्म चर्चा के लिये आये। तब गुरु जी ने उस वाहिगुरु के दरबार में प्रार्थना की कि हे जगत पिता! कोई तो संस्कृत का पंडित है तथा कोई वेद पुराणों को पढ़ने पढ़ाने वाले हैं तथा कोई गुप्ती लेकर अनेक प्रकार के जप करने में दक्ष है। कोई त्रिकुटी आदिक का अभ्यास करने वाला है परंतु मैं तो आप के नाम स्मरण के बिना कुछ भी नहीं जानता। मुझे तो सदैव आप के नाम का सहारा है। मैं नहीं कह सकता कि मेरी क्या गति होगी? मैं मूर्ख हूं। अज्ञानी हूं। परंतु तेरा नाम तन मन से जपता हूं। मेरा मन संकल्प विकल्पों से बंधा हुआ है परंतु तेरी शर्ण हूं। तेरी कृपा से मेरी लज्ञा अवश्य रहेगी। यह मुझे पूर्ण विश्वास है। यह प्राणी घंटी यंत्र की न्याई चलता है और जीवन के दिन पूरे करता है परंतु नाम स्मरण नहीं करता। कर्म चक्र में भटकना इस का काम प्रारम्भ से चला आया है। जब से यह जीव माता के गर्भ में आया तभी से इस के सिर पर मृत्यु चक्र काट रही है परंतु यह अज्ञ जीव अपने जीव के तथ्य सोचता सोचता एक दिन काल का ग्रास हो जाता है। अपने नेत्रों से अन्य लोगों को मरते देखता भी अपनी मौत से बेखबर है। नाम स्मरण नहीं करता। यह समझता है कि यह मेरे माता पिता भाई पुत्र नारी आदिक मेरी सहायता करेंगे परंतु यह सभी विचार मिथ्या हैं। जिन को प्रभु कृप्या से नाम दान प्राप्त

होता है वही नाम इस प्राप्ति का सहायक बनता है। दूसरा कोई नहीं बनता नाम स्मरण से सभी मनोर्थ सिद्ध होते हैं।

इस प्रकार का सद् उपदेश सुन कर सभी पंडित तथा अन्य लोग कृत कृत्य हो गये और गुरु जी के चरणों में प्रणाम करके गुरु जी के अनुयाई हो गये तथा कहने लगे आप कृंप्या हमारा कल्याण करो। गुरु जी ने कहा-बस मेरा तो यही कहना है कि आप उस परमेश्वर की अनन्य भक्ति करो। तन मन से नाम स्मरण करो बस इसी में ही कल्याण है। अभिमान त्यागो अतिथि का सत्कार करो बांट कर खाओ पापों से डरो इसी में कल्याण है इस उपदेश से सभी लोग गद गद प्रसन्न हुए। अब गुरु जी वहां से चल दिये तथा अनेकों तीर्थों मे सद् उपदेश देते हुए पंच बटी अगस्ताश्रम में पधारे। संतजनों को दर्शन और प्रभु चर्चा यही लक्ष रहा। अब गुरु जी कारू देश की ओर चले।

साखी त्रिया राज की

श्री गुरु नानक देव जी महाराज भ्रमण करते करते कारू देश में जा पहुंचे। जब वहां तीन चार दिन हो गये तब भाई मर्दाना ने कहा-हे महाराज! आप तो पवन के आहार से ही सन्तुष्ट रह सकते हो परंतु मुझे तो भूख ने अति दुःख दे रखा है। आप कुछ मेरी भूख की समस्या को ठीक करो यह नगर बहुत ही सुंदर नज़र आ रहा है। यदि आप की आज्ञा हो तो मैं नगर में जाकर कुछ पेट पूर्ण करने का प्रयत्न करूं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! इस नगर में जाना अच्छा नहीं है। मर्दाने ने कहा-हे गुरु देव! जब कोई वस्ती आती है तभी आप यही कहते हैं कि इस में न जाओ। आप को तो निर्जन स्थान ही अच्छा लगता है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! जैसे तुम्हारी इच्छा वही करो। तब भूखा मर्दाना एक मुहल्ले में चला गया।

आगे चार स्त्रियां मिलीं जो आपस में हास्य विनोद कर रही थी। मर्दाने को देख कर एक ने कहा-इस को मैं ले जाऊंगी। दूसरी ने कहा-मैं इस को ले जाऊंगी। इस प्रकार वे बातें करती थीं। एक ने मर्दाने को आवाज़ दी तब भूखे मर्दाने ने समझा कि यह कुछ मुझे देना चाहती है जब मर्दाना उस के निकट गया तब उस औरत ने मर्दाने के कंठ में एक धागा बांध दिया। बस उसी समय मर्दाना एक बकरा बन गया तब उस औरत ने मर्दाने को जो बकरा बना हुआ था उसे लाकर अपने मकान के एक चौखटे के साथ बांध दिया तथा वह स्वयं जल भरने को चली गइ। मर्दाना दुखी होकर गुरु जी को याद करने लगा और नेत्रों से आंसू बहाने लगा।

इधर गुरु जी ने कहा-हे बाला! मर्दाने को गये एक पहर के लगभग हो चुका है। अभ तक लौट कर नहीं आया। हे बाला! हमें भाई मर्दाना रबाब सुनाया करता था यह नगरी जादू टोने करने वालों की है। क्या जाने मर्दाना भी किसी जादू द्वारा बकरा बना दिया हो। इतनी कह कर दयालू गुरु देव उट कर चलने को तैयार हो गये तथा कहने लगे-हे बाला! चलो मर्दाने की देख भाल करें। तब बाले ने कहा-हे महाराज! हम मर्दाने को कहां खोजेंगे? तब गुरु जी ने मुस्करा कर कहा-हे बाला! हमारे मर्दाने को किसी ने बकरा बना कर बांध रखा है। मैंने कहा-हे महाराज! जो आप की आज्ञा नहीं मानेगा वह बकरा ही बनेगा। गुरु जी की आज्ञा से बाला गुरु जी के साथ उस नगर में मर्दाने की भाल को चले।

गुरु जी और बाला जब नगरी में गये तो वही औरतें इन को भी मिलीं। गुरु जी ने उस से पूछा कि यहां हमारा एक आदमी आया, क्या तुम्हें उस का कोई पता है? वे नट खट औरतें कहने लगीं हम ने तो किसी मनुष्य को नहीं देखा। इतनी कह कर एक औरत भाई बाले के कंठ में एक धागा बांधने लगी। वह उसी समय कुत्ती बन गई और

एक स्त्री गुरु जी के निकट आ कर धागा बांधने लगी तो वह खोती (गधी) बन गई। उस समय श्री सर्वशक्तिमान गुरु देव ने एक सलोक उच्चारण किया-

सलोक (शब्द) कल्लर कीयां वणजारीयां झूठे मुशक मंगेन।
अमलां बाहजों नानका क्यों कर कंत मिलेन॥ १॥

॥ वार्तक॥ जब यह सलोक उच्चारण किया तो वह औरत जिस ने मर्दाने को बकरा बना कर बांध रखा था उस के सिर पर जो जल का घड़ा था वह सिर के साथ चिपट गया। फिर उस की एक सहेली गुरु जी के कंठ में धागा बांधने आई तो तत्क्षण बकरी बन गई। तब गुरु जी ने कहा बाला-यह जो सामने घर है वहां जा कर मर्दाना जो बकरा बना हुआ है उस के गले में एक धागा है उसे तोड़ दो। गुरु जी की आज्ञा पाकर मैं घर के भीतर गया तथा मर्दाना जो बकरा बना हुआ था। उस के कंठ से धागा तोड़ डाला। फलतः बकरे से फिर मर्दाना बन गया। जब गुरु जी के निकट आया तब गुरु जी ने कहा-सुना भाई क्या हाल है? मर्दाने ने कहा-वाह गुरु देव! आप धन्य हो, जो हमें इन बलाओं में लिए फिरते हो। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! हम ने तो रोका था मगर तुम स्वंय ही आकर फंस गए तो हम क्या करें।

इस के पश्चात् उन स्त्रियों के पति घर में आये तो क्या देखते हैं कि वहां औरतों के स्थान कुत्तियें और बकरियें हैं तथा एक के सिर से जल-घट चिमटा हुआ है। वहां एक औरत जिस का नाम दरगाह नूर शाह था वह सब की सरदार जादूगर थी। उसे यह सूचना मिली एक हमारी साथन के सिर से जल-घट चिमट गया है तो उस ने आज्ञा दी कि मेरी सभी कार्य कर्तायें वहां जा कर उस के सिर से जल-घट को पृथक करें। नूर शाह की आज्ञा से सभी जादूगरनियें वहां आई। कोई तो मृगछाला पर स्वार हो कर आई तो कोई आकाश मार्ग से आई

तो कोई ढोल बजाती आई। सभी ने अनेक यंत्र मंत्र किये परन्तु उस के सिर से जल घट नहीं उतरा तथा वे जो कुत्तियें और बकरियें बनी हुई थीं। वे सभी औरतें नहीं बनीं तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुम परमात्मा को स्मरण करके अपनी रबाब बजाओ उस आज्ञा को मान कर मर्दाना रबाब बजाने लगा और गुरु जी महाराज ने एक पवित्र शब्द उच्चारण किया।

॥ राग वडहंस महला १ ॥

गुणवंती सहु राविआ निरगुणि कूके काइ॥ जे गुणवंती थी रहै ता भी सहु रावण जाइ॥ १ ॥ मेरा कंतु रीसालू की धन अवरा रावे जी॥ १ ॥ रहाउ॥ करणी कामन जे थीऐ जे मनु धागा होइ। माणकु मुलि न पाईऐ लीजै चिति परोइ॥ २ ॥ राहु दसाई न जुलां आखां अमड़ीआसु॥ तै सह नालि अकूअणा किउ थीवै घर वासु॥ ३ ॥ नानक एकी बाहरा दूजा नाही कोइ॥ तै सह लगी जे रहै भी सहु रावै सोइ॥ ४॥ २॥

॥ वार्तक॥ इधर तो गुरु जी शब्द उच्चारण कर रहे थे और उधर वे सभी जादूगरनियें अपनी असफल चेष्टा कर रही थीं। जब कोई यंत्र मंत्रादिक सफल न हुए तब उन सब की सरदार नूर शाह को खबर हुई। वह भी आई और अनेक अडंबर अपने साथ साथ लाई उस ने भी बहुत ज़ोर लगाया परंतु सफल न हो सकी तब गुरु जी ने एक और शब्द कहा-

॥ राग सूही महला १ ॥

मंञु कुचजी अंमावणि डोसड़े हउ किउ सहु रावणि जाउ जीउ। इक दू इकि चढ़ंदिआ कउणु जाणै मेरा नाउ जीउ॥ जिन्ही सखी सहु राविआ से अंबी छावड़ीएहि जीउ॥ से गुण मंञु न आवनी हउ कै जी दोस धरेउ जीउ॥ किआ गुण तेरे विथरा हउ किआ किआ घिना तेरा नाउ जीउ।

इकतु टोलि न अंबड़ा हउ सद कुरबाणै तेरे जाउ जीउ॥ सुइना रुपा रंगुला मोती तै माणिकु जीउ॥ से वसतु सहि दितीआं मैं तिन्ह सिउ लाइआ चितु जीउ॥ मंदर मिटी संदड़े पथर कीते रासि जीउ॥ हउ एनी टोली भुलीअसु तिसु कंत न बैठी पास जीउ॥ अंबरि कूंजा कुरलीआ बग बहिठे आइ जीउ॥ सा धन चली साहरै किआ मुहु देसी अगै जाइ जीउ॥ सुती सुती झालु थीआ भुली वाटड़ीआसु जीउ॥ तै सह नालहु मुतीअसु दुखा कुं धरिआसु जीउ॥ तुधु गुण मै सभ अवगणा इक नानक की अरदास जीउ॥ सभि राती सोहागणी मै दोहागणि काई राति जीउ॥ १॥

॥ वार्तक॥ जब अनेक यंत्र मंत्रादिक करके नूर शाह भी पराजित हो गई तथा उस औरत के सिर से जल घट नहीं उतरा और न ही वे कुत्ती, बकरी गधी आदिक औरतें बनीं। तब उस नूर शाह ने बहुत दूर दूर से कमाल की कारीगर जादूगरनियें बुला लीं। वे सभी मिल के ढोलक बजाने तथा अपने मंत्रों का उच्चारण करने लगीं। तब श्री गुरु नानक देव जी ने आगे लिखा एक और पवित्र शब्द कहा-

आसा महला १॥

ताल मदीरे घट के घाट॥ दोलक दुनीया वाजहि वाज॥ नारदु नाचै कलि का भाउ॥ जती सती कह राखहि पाउ॥ १॥ नानक नाम विटहु कुरबाणु। अंधी दुनीया साहिब जाणु॥ १॥ रहाउ॥ गुरू पासहु फिरि चेला खाइ॥ तामि परीति वसै घरि आइ॥ जे सउ वरिहआ जीवण खाणु॥ खसम पछाणै सो दिनु परवाणु॥ २॥ दरसनि देखिऐ दइआ न होइ॥ लए दिते विणु रहै न कोइ॥ राजा निआउ करे हथि होइ॥ कहै खुदाइ न मानै कोइ॥ ३॥ माणस मूरति नानकु नामु॥ करणी कुता दरि फुरमानु॥ गुर परसादि जाणै मिहमानु॥ ता

किछु दरगह पावै मानु ॥ ४ ॥ १ ॥

इस के पश्चात् गुरु जी ने एक और शब्द उच्चारण किया-

म. १ ॥ गली असी चंगीआ आचारी बुरीआह ॥ मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥ रीसा करहि तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ॥ नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह ॥ होदै ताणि निताणिआ रहहि निमानणीआह ॥ नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह ॥ २ ॥

॥ वार्तक ॥ अब नूर शाह ने विचार किया कि इस साधू को माया जाल में बांधना उचित है। यदि इसे माया ने काबू कर लिया तो यह स्वतः हमारे आधीन हो जायगा। नूर शाह की आज्ञा से अनेकों जादूगरनियें हीरे मोती आदिक जवाहरात लेकर आ गईं तथा गुरु जी के आगे भेंट रख दी। उस माया को देख कर गुरु जी ने नीचे लिखा शब्द कहा-

रागु तिलंग महला १ ॥ इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥ आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥ सहु नेड़ै धन कंमलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥ १ ॥ इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥ करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥ लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ इनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि ईआणी ॥ २ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ ॥ जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥ जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ

चरणी चितु लाईऐ ॥ सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥ एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ ॥ ३ ॥ आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ ऐसै रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥ सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वार्तक ॥

जब यह शब्द उन्होंने सुने तो उनके पति जो कुत्ती बकरी गधी बनी हुई थीं। वे सभी गुरु जी के चरणों में आकर गिर गये और धन्य धन्य कहने लगें। तब गुरु जी ने कहा-हे भाई! यह जो माया आप लोगों ने हमारी भेंट की है इस से एक धर्मशाला का निर्माण करो अभिमान त्यागो अतिथि की सेवा करो सदैव मन से मैल धो डालो। प्रभु नाम स्मरण किया करो। जब गुरु जी ने यह उपदेश दिया तो वे तमाम पुरुष भाई बाले के चरणों में प्रार्थना करने लगे कि आप गुरदेव से हमें क्षमा दिलवा दो। बाले ने कहा-हे मित्रो! गुरु जी अत्यंत दयालु हैं आप उन से क्षमा याचना करो। आप पर अवश्य ही कृपा करेंगे। जब वे तमाम गुरु जी से पार्थी हुए तब गुरु जी ने कहा-हे बाला! जाओ उस के सिर से जल घट उतार दो और उसी जल के छींटे सब पर डालो तब सभी पूर्ववत ठीक हो जायेंगी। मैंने गुरु जी की आज्ञा का पालन करके जल घट उतारा और पानी के छींटे दिये तब वे सभी नर नारियें गुरु जी के सेवक बन गये। गुरु जी ने ईश्वर नाम का उपदेश दिया। वहां एक धर्मशाला बनवाई गई। नूर शाह को गुरु जी ने कहा-देखो जो कोई हमारा सिख यहां आये, तो उसे दुख नहीं देना होगा। नूर शाह ने कहा-हे महाराज!

यदि आप का कोई कुत्ता भी यहां आयेगा तो उसे भी किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा तथा उसी की पूजा की जायेगी। फिर गुरु जी उस प्रदेश से चलने को तैयार हो गये।

साखी जिमींदार भूमीएं की

ढाका प्रदेश में एक भूमियां नाम का डाकू रहता था। वह दिन को डकैती करता और रात्रि को चोरी चकारी करता था। उस का अपने नगर में बहुत अधिक दबदबा था। उस से सभी डरते थे। एक दिन उस ने नगर निवासियों को बुला कर कहा कि जो कोई साधू अतिथि इस नगर में आ जाय उसे ठहिरने का स्थान नहीं देना। यदि कोई बहुत ही आग्रह करे तो उसे मेरे घर में भेज देना। फिर उस डकैत ने अपने घर में एक धर्मशाला बनवाई और लंगर भी लगवाया।

एक दिन बाला और मर्दाना के साथ गुरु नानक देव जी भी उस के नगर में चले गये। नगर निवासियों ने गुरु जी को उसी डाकू के घर में भेज दिया। डाकू ने जब गुरु जी महाराज का दर्शन किया तो उस ने गुरु जी को कहा-भोजन करो। सतगुरु जी ने कहा-हे भाई! पहिले आप यह बतलाओ कि आप के घर में जो भोजन बनता है यह कमाई कहां से आती है?

यह सुन कर उसके हृदय में गुरु जी की संगति से सत्य का संचार हो गया। उसने हाथ जोड़ कर कहा-हे महाराज! यदि आप सत्य पूछते हो तो मेरी कमाई डकैत चोरी से होती है। गुरु जी ने कहा-हे भाई! हम लोग चोर डकैत का अन्न नहीं खाते। भूमिआं कुछ निराश सा होकर कहने लगा-हे संत जी! यदि आप भोजन न पाओगे तो मेरा कल्याण कैसे होगा। गुरु जी ने कहा-तुम यदि नेक कमाई करो तो हम तुम्हारा अन्न खा सकते हैं। भूमियें ने कहा-हे महाराज! आप और जो कुछ भी

आज्ञा दें उस का पालन करने को तैयार हूं मगर डकैती चोरी को मैं नहीं छोड़ सकता। गुरु जी ने कहा-हे भले लोक! वह ईश्वर सब का पालन करने वाला है। उस पर विश्वास करो और धर्म की कमाई करो। फिर गुरु जी ने आगे लिखी तुक कही।

ए सच सभनां का खसम है जिस बखसै तिस देह॥

गुरु जी ने कहा- अच्छा यदि तू हमारे तीन बचन मानो तो हम तुम्हारा अन्न स्वीकार करेंगे। उस ने कहा-और जो भी कहो मैं मानूंगा। तब गुरु जी ने कहा-१. सत्य बोलना। २. जिस का निमक खाना उस का बुरा नहीं करना। ३. गरीब मार नहीं करनी। बस यह तीन प्रतिज्ञा करो। उस ने कहा कि तीनों बातें मुझे स्वीकार हैं। तब गुरु जी ने सत्य के बारे में एक पउड़ी कही-

॥ पउड़ी ॥ सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ॥ जिस तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ। सतिगुरि मिलीऐ सचु पाइआ जिन्ह के हिरदे सचु वसाइआ॥ मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ॥ विचि दुनीआ काहे आइआ॥

॥ वार्तक ॥ गुरु जी ने फुरमाया-हे भूमिआं! यह सत्य तभी कहा जा सकेगा जब तूं कुछ नियम धारण करे तो यह सुन कर भूमियें ने कहा-वे नियम (रिहतें) कौन से हैं उन को मैं सुनना चाहता हूं। तब गुरु जी ने शब्द उच्चारण किया जो राग आसा में गाया जाता है।

॥ आसा महला १ ॥ सच ता पर जाणीऐ जा रिदै सचा होइ॥
कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ॥ सचु ता परु जाणीऐ
जा सचि धरे पिआरु॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख
दुआरु॥ सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ॥ धरति
काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ॥ सचु ता परु
जाणीऐ जा सिख सची लेइ॥ दइआ जाणै जीअ की किछु

पुंनु दानु करेइ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा आतम तीरथि
करे निवासु॥ सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु॥
सचु सबना होइ दारू पाप कढै धोई॥
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ॥ १॥

॥ वार्तक॥ गुरु नानक देव जी महाराज के पवित्र उपदेश ने उस डकैत पर बहुत ही प्रभाव किया। उस ने कहा-हे महाराज! जो आप की आज्ञा है मैं उसे अवश्य पूर्ण करूंगा। गुरु जी ने कहा-हे भाई! यदि तूं सच्चे हृदय से कहता है तो तुम्हारे पूर्व तमाम पाप क्षमा कर दिये जायेंगे और परमात्मा के दरबार मे मोक्ष का मेवा अवश्य ही प्राप्त होगा। फिर अंतरयामी गुरु जी ने उस के हृदय को शुद्ध देख कर उस के घर में भोजन पाया फिर भूमियें ने गुरु जी की अनन्य भक्ति से सेवा की तथा फिर गुरु जी वहां से चल दिये।

एक दिन भूमियें ने सोचा कि मैं किसी राजा को लूट कर दौलत लाऊं। कुछ तो स्वयं खाऊं और कुछ साधुओं को दूं। यह विचार कर उस ने स्नान किय सुंदर सुंदर वस्त्र और भूषण पहिन लिये और आधी रात के समय एक राजा के द्वार पर गया। चौकीदार ने देख कर पूछा-भाई! तू कौन है? इस समय उसे अपने बचन याद आ गए जो गुरु जी के सन्मुख किये थे। उस ने सोचा चाहे मैं मारा ही जाऊं परंतु सत्य को नहीं त्यागूंगा। उस ने कहा-हे भाई! मैं चोर हूं। तब चौकीदार हैरान होकर कहने लगा-नहीं नहीं आप तो अपने ही कोई आदमी हो क्योंकि चोर कभी इस प्रकार नहीं कहा करते। उमीद है कि तुम कोई राजा के अपने ही हो। एक तो तुम्हारी पौशाक कह रही है कि तुम कोई बड़े आदमी हो फिर दूसरे तुम हमें मजाक में कह रहे हो कि मैं चोर हूं। इस लिये अंदर जा सकते हो। हम तुम्हें रोक नहीं सकते। अब वह भूमियां राजा के कोष के निकट जा पहुंचा तथा हीरे मोती जवाहरात

की एक बड़ी खासी गठड़ी बांध ली। फिर उसने एक जाले में स्वर्ण की एक पलेट देखी। जब उसे उठाने लगा तब उस पलेट में जो निमक था उस को अपनी जबान से लगा कर देखा तो वह निमक था तब उसे याद आया कि मुझे तो गुरु जी ने कहा था कि जिस का निमक खाना उस का बुरा नहीं करना। इस लिये भूमीआं सभी कुछ वहीं छोड़ कर वापस अपने घर को आ गया।

प्रातः शोर होने लगा कि राजा का कोष लूटा गया है। जब राजा ने जाकर देखा तो एक गठड़ी बंधी पड़ी है और किसी वस्तु का नुक्सान नहीं हुआ। अब राजा को अचम्भा हुआ कि चोर आया और किसी वस्तु का नुक्सान नहीं हुआ। यह क्या बात है फिर राजा ने चौकीदारों को बुलाकर पूछा कि यह क्या बात है? तुम बताओ क्या हमारे महलों में कोई आया था। तब चौकीदार ने कहा-हे महाराज! धीराज रात के समय एक बहुत बड़ा अमीर आदमी आया था जब हम ने पूछा कि तुम कौन हो तो उस ने कहा मैं चोर हूं। हम ने उसकी चाल ढाल और पौशाक देख कर कोई आप का आदमी जान कर उसे भीतर जाने से नहीं रोका। उस के अतिरिक्त और तो हम ने कोई भी नहीं देखा। यह सुन कर राजा ने कहा-अच्छा तुम उस की भाल करो। चौकीदार वा पुलीस ने उस की बहुत भाल की परंतु कहीं भी उस चोर का पता नहीं चला। फिर राजा ने हुकम दिया कि नगर में ढंढोरा फेरो कि जो आदमी मेरे घर में आकर गठड़ी बांध कर तथा बगैर कुछ लिये चला गया है वह यदि मेरे सामने आ जाय तो मैं उसे अपनी सारी रयासतं दे दूंगा। यही ढंढोरा तीन दिन तक पिटता रहा परंतु चोर का कहीं सुराग नहीं मिला फिर राजा ने कहा अच्छा जो कोई निकम्मा आदमी मिले उसे पकड़ कर खूब पीटो। बस फिर क्या था अनेकों गरीबों को पुलीस मार पीट करने लगी। यह खबर तमाम नगर में फैल गई अब उस भूमिये को अपना **प्रण याद**

आ गया कि गरीब मार नहीं करनी। भूमियें ने सोचा कि मेरे ही कारण गरीबों को पीटा जा रहा है अब मैं राजा के सन्मुख जाकर कहूंगा कि इन गरीबों को मत मारो। चोर तुम्हारा मैं हूं। यह सोच कर भूमियां राजा के दरबार में हाज़र हो गया तथा कहने लगा कि मैं आपका चोर हूं। गरीबों को मारना बंद करो अब राजा ने उस से पूछा कि तुम ने मेरे कोष से कुछ भी हासल न किया। तब उसने कहा कि हे राजन! मुझे पहुंचे हुए सच्चे गुरु मिल गए थे। मुझे जो उन की आज्ञा थी उसी का पालन किया है। यह कह कर भूमियें ने समस्त बीती बात सुना दी। राजा के मन में गुरु नानक देव के दर्शणों की तीब्र इच्छा हो गई। राजा ने कहा-उस तेरे गुरु की क्या निशानी है। भूमियें ने कहा-हे राजन! मेरे गुरुदेव पूर्ण संत हैं उन का मिलना पूर्ण भाग्य से ही हो सकता है। फिर उस ने सतगुरु जी के मिलाप का सभी वृतांत विस्तृत रूप से सुना दिया। अब राजा ने कहा-हे भाई! तुम मेरे वजीरों के सिरताज बनो और मुझे अपना सिख बना लो। भूमीयें ने कहा-हे राजन! अभी तो मैं स्वयं शिष्य के रूप में हूं। आप को शिष्य किस प्रकार कर सकता हूं। हां तुम गुरु नानक देव जी के नाम पर एक धर्मशाला बनवाओ तथा नेक कमाई करो! न्याय करो बांट कर खाओ दीन दुखियों की सेवा करो तथा उस परमेश्वर का नाम स्मरण करो और सभी में उस को व्यापक जानो। इस से गुरु नानक देव तुम को स्वंय दर्शन देंगे क्योंकि मेरे गुरु देव घट घट के जानने वाले हैं जो उनको स्मरण करता है तो वे उस को अवश्य दर्शन देते हैं।

तब राजा ने भूमीयें को अपना प्रधान मंत्री नियत किया तथा जो उसी पर आचरण आरम्भ कर दिया। राजा अपनी रानी के सहित नित्य प्रति कीर्तन में मग्न रहने लगा तथा ईश्वर भक्ति की गंगा में बहने लगा।

एक दिन राजा ने तमाम साधू संगत को हाथ जोड़ कर कहा-हे

प्यारी संगत आप सभी श्री गुरु नानक देव जी के दरबार में मेरी ओर से सच्चे हृदय के साथ प्रार्थना करें कि वह सतगुरु जी अपनी अपार कृपा से एक पुत्र बक्शे। मेरा सदन संतान दीपक के बगैर अंधेरा है। जब सब ने मिल कर अरदास की तो पीछे कढ़ाह प्रसाद बांटा गया तथा गुरु नानक देव जी महाराज की जय ध्वनि के पश्चात् सभी लोग अपने अपने घरों को गये।

ठीक दस मास के पश्चात् उस राजा के गृह में कन्या हुई। राजा ने विचार किया कि सतसंग में तो पुत्र की अरदास की थी मैं इस कन्या को पुत्र ही मानूंगा। उसी के अनुसार कन्या जन्म में पुत्र जन्म के तुल्य ही समारोह किया गया और कन्या लालन पालन पुत्र समान ही होने लगा।

अब वह समय आ गया जब कन्या युवा हो गई थी। रानी ने कहा कि इस कन्या के लिए किसी सुयोग्य वर की भाल करनी चाहिए। राजा ने उत्तर दिया कि अमुक राजे की कन्या है। मैं इस अपने पुत्र को उसी के साथ विवाहूं गा। रानी ने कहा-स्वामि! आप यह क्या कहते हैं? आज तक कन्या का विवाह कन्या से नहीं हुआ। आप का यह वीचार सदोष है। राजा ने कहा-हे प्रिय! तुम को यह कन्या दृष्टिगोचर हो रही है परंतु मुझे तो यह पुत्र नज़र आ रहा है। यह सुन कर रानी मौन हो गई।

एक दिन राजा ने अपने कुल के पुरोहित को बुला कर कहा-हे पंडित जी! आप मेरे पुत्र के लिए कोई योग्य कन्या की भाल करो। पुरोहित ने कहा-हे राजन! मुझ से यह पाप नहीं हो सकता कि मैं लड़की के लिए एक लड़की की भाल में जाऊं। हे राजन! तुम जहां अपनी लड़की को नर्क गामिनी करते हो वहां किसी दूसरे की कन्या को भी नष्ट करने उतरे हुए हो। राजा ने कहा-हे पुरोहित जी! तुम को यदि कन्या नज़र आ रही है परंतु मुझे तो यह पुत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। तब पुरोहित

ने अपने मन में विचार किया कि पाप पुण्य अथवा कोई निंदा होगी तो राजा की होगी मुझे क्या आवश्यकता है कि मैं राजा का कोप भाजन बनू। पूरोहित ने राजा को कहा-जैसे आप की आज्ञा हो मैं वैसे करने को तैयार हूं।

तब राजा ने उसी राजा को जिस के घर पुत्री थी। उसे एक पत्र लिखा जिस में अपने पुत्र (कन्या) के लिए उस की कन्या का रिश्ता मांगा था। वह पत्र पुरोहित को देकर अच्छा महूरत देख कर विदा किया। जब पुरोहित उस राजा के नगर में पहुंचा और दरबार में उपस्थित हुआ तो राजा को अत्यंत प्रसन्नता हुई। तब उस राजा ने अपने पुरोहित को बुला कर तथा लग्न सुधा कर साहे पत्रिका लिखवाई और ब्राह्मण के द्वारा भेज दी।

साहे पत्रिका प्राप्त करके इधर का राजा अपने पुत्र के विवाह का सामान तैयार करने लगा। अंततोगत्वा-बारात सजने लगी। लड़के (लड़की) को स्नान आदिक करवा कर दूल्हे की भांति सजाया गया तब बाराती लोगों में इस रहस्य का भंडा फूटा तो वे सभी साथ जाने से पीछे हट गए। बारातियों ने सोचा कि इस प्रकार तो हम सब का अपमान ही होगा क्योंकि यह बात छुपी नहीं रह सकती। सभी ने इन्कार कर दिया। राजा ने न जाने का कारण पूछा तब उन लोगों ने कहा-हे राजन! लड़की का विवाह कभी लड़की से नहीं हुआ। तुम तो यह असम्भव बात कर रहे हो। राजा ने कहा-तुम को मेरा पुत्र लड़की नजर आ रहा है परंतु मेरे लिये तो वह पुत्र है। तुम नहीं चलते तो तुम्हारी इच्छा मैं अकेला ही जाकर अपना पुत्र विवाह लाऊंगा। जब राजा चलने लगा तब कुछ बाराती भी यह तमाशा देखने के लिये साथ हो लिये।

बारात जा रही थी राजा की लड़की जो दुल्हा सी बनी हुई थी। उसने एक हिरण देखा तब पिता की आज्ञा लेकर उसने हिरण के पीछे

घोड़ा छोड़ दिया। वह हिरण उसे एक महान् भयानक बन में ले गया तथा बन में वह हिरण छुप गया। इस ने हिरण को चार दीवारी में जाते देखा था। तब अपना घोड़ा भी उस के अंदर दाखल कर दिया। अंदर जा कर देखा तो एक संत बैठा है और संत के इर्द गिर्द ही लोग बैठे हैं कीर्तन हो रहा है तथा कढ़ाह प्रसाद बांटा जा रहा है। इस ने नमस्कार किया तब संत ने कहा-हे गुरु के शिष्य तुम आगे आ जाओ परमात्मा तुम्हारा भला करेगा, इतना कहने की देर थी बस उस राज कन्या के शरीर में सभी अंग पुरुषों जैसे हो गये तथा स्त्री चिन्ह तमाम लोप हो गये अर्थात् वह राज कन्या राजकुमार हो गई।

तब राजा भी पीछा करते करते उस चार दीवारी के निकट आ गया। जब अपना घोड़ा बाहर देखा तो राजा भी भीतर गया। वहां उसे गुरु जी के दर्शन हुए और संगत कीर्तन करती देखी। तब राजकुमार ने कहा-हे पिता जी! यह सतगुर संसार के स्वामी श्री गुरु नानक देव जी महाराज हैं। तब राजा ने साष्टांग दंडवत प्रणाम किया। गुरु जी ने कहा-हे राजन! तेरी मनों कामना पूर्ण हो। इतने में राजा ने देखा कि न तो वहां चार दीवारी है न ही कोई श्रोता है और न ही गुरु जी हैं। सभी दृष्य लोप हो गया। राजा हैरान होकर कहने लगा-हे भगवान! मैंने यह क्या स्वप्न देखा है।

अभी यह विचार हो ही रहे थे। जब सारी बारात यहां आ गई, राजा तो गुरु नानक जी के ध्यान में मस्त था और कहा कि हे सतगुर आप ने मुझे क्षण भर में ही निहाल किया है। आप धन्य हो।

जब सभी साथी आ गये तब भी राजा ने अपनी पुत्री का पुत्र हो जाना किसी पर प्रकट नहीं किया। अब बारात बड़ी सज धज के साथ उस कन्या वाले राजा के नगर में पहुंची। ईश्वर की सृष्टि में सभी नर नारी एक जैसे स्वभाव के नहीं होते। किसी ने रानी को जाकर कह

दिया कि तुम्हारा सम्बन्धी तो अपनी लड़की को लड़का बना कर आ गया है और तुम को धोखा देना चाहता है इस लिए अपना बचाव स्वयं कर लो। रानी ने अत्यंत चिंतातुर होकर राजा से कहा-हे स्वामि! मैं अपनी कन्या किसी कन्या को नहीं दे सकती। फिर तमाम बात बता दी। राजा ने कहा-हे रानी! यह बात सत्य नहीं मालूम होती। मैं अच्छी प्रकार परीक्षा लेकर ही कन्या दूंगा। आप चिंता न करें। राजा ने एक नैन को इस बात की परीक्षा लेने भेजा और कहा कि यदि तुम ने सत्य कहा-तो तुम्हें इनाम दिया जायेगा तथा झूट बोलने पर तुम को फांसी पर लटका दिया जायेगा। नैन जाकर कहने लगी-हे महाराज! यहां एक मर्यादा है कि लड़का पहिले एक रात्री हमारे घर में रहेगा। फिर उस के पीछे विवाह की मर्यादा पूर्ण हो जाती है। राजा ने कहा जैसे तुम्हारी मर्यादा है वैसे करो। हमें कोई इतराज नहीं है। नैन के साथ लड़के को भेज दिया गया। तब बारातियों ने सोचा कि अब हमारा सारा पोल खुलने को है। अब हमारी हंसी और अपमान होने को है। अब यहां से चलना ही अच्छा है।

उधर नैन ने जाकर उस दुल्हा को बहुत ही बारीक वस्त्र पहिना कर फिर उस के ऊपर पानी मंत्र कर डाल दिया जिस से उस के अंग प्रत्यंग नज़र आने लगे। चतुर नैन ने अपनी पूर्ण तसली कर ली तथा रानी को आकर कहने लगी-हे रानी! तेरे अपूर्व भाग्य हैं जो गंधर्वो जैसी शक्ल वाला शहज़ादा तुम्हारा दामाद बनने लगा हैं। तुम किसी चुगलखोर की बातों पर विश्वास न करो। रानी ने यह सुन कर उस सैरिंध्री (नैन) को बहुत सा धन पुरस्कार के रूप में दिया तब पश्चात् बहुत सन्मान तथा समारोह से विवाह की मर्यादा पूर्ण हुई।

॥ लेखक॥ श्री गुरु नानक देव जी महाराज के दरबार में किसी भी बात की कमी नहीं है जो सच्चे हृदय से गुरुदेव की शर्ण होकर जो

कुछ मनोरथ प्रकट करता है उसे किसी प्रकार की भी त्रुटि नहीं रहती। श्री गुरु नानक देव जी महाराज इस कलियुग से पार करने वाले तथा धर्म स्थापन करने वाले पूर्ण साक्षात अवतार हैं। धन्य गुरु जी!

राजा की सभी कामनायें पूर्ण हुईं तथा अपने पुत्र बधु की डोली लेकर अपने नगर में आया। अत्यंत खुशी मनाई गई। सतिगुर नानक देव जी की अपार कृपा से राजकुमारी का राजकुमार हो गया। यह है अपार श्रद्धा का फल।

जो श्रद्धालू भक्त गुरु जी पर पूर्ण विश्वास तथा श्रद्धा प्रेम करता है उस को किसी प्रकार की त्रुटी नहीं रहती। प्रेम ही संसार में सर्वोपर वस्तु है। श्रद्धालु के लिये संगत गुरु है और गुरु ही संगत का रूप है। सच्चे दिल से और सच्चे प्रेम से इस असार संसार से सतिगुर नानक देव अपने प्यारे शिष्य को पार कर देते हैं। ऊपर की कथा सुना कर भाई बाला आनंद में मग्न हो गया तथा नेत्रों से प्रेम के आंसू बहने लगे तथा गुरु अंगद देव जी भी सतिगुर नानक देव के ध्यान में निमग्न हो गये। कुछ समय सनाटा रहा। बोले गुरु नानक देव की जय।

साखी कलियुग की

तब बाले ने श्री अंगद देव जी महाराज के सन्मुख श्री गुरु नानक देव जी महाराज की अदभुत यात्रा का विवर्ण कहना फिर प्रारम्भ किया।

एक समय सतिगुरु श्री नानक देव जी यात्रा करते करते सेतुबंध रामेश्वर की प्रख्यात भूमि पर जा पहुंचे। उस समय अत्यंत भयानक आंधी आई। जिस का वर्ण पीत और श्याम था। उस आंधी की लपेट में आकर अनेक वृक्ष सम्मूल नष्ट होने लगे। चारों ओर से बालू उड़ उड़ कर एक दृश्य उपस्थित करने लगा पशु पक्षी सभ भयभीत होने लगे। किसी भी प्राणी से चलना असंभव हो रहा था। तब भाई मर्दाना

पृथ्वी पर अधोमुख होकर लेट गया तथा भय से थर थर कांपने लगा। जगत गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने कहा-हे मर्दाना डरो नहीं। डरने से कोई भय दूर नहीं होता तथा उस वाहिगुरु का स्मरण करो सभी दुखों में उसी का ही सहारा है। कुछ समय के पश्चात् अंधेरी तो हट गई। अपितु दक्षिण दिशा से एक पर्वताकार भयानक दैत्य आता हुआ दिखाई दिया। उस का महान् शरीर आकाश से पाताल तक फैल रहा था। उस की भयानक मूर्ति से चारों दिशायें कांप रहीं थीं। वह भयानक राक्षस विकराल मूर्ति और भीम काया ईधर ही आने लगा यहां मर्दाना लेटा पड़ा हुआ था। भयभीत होकर मर्दाने ने कहा-हे गुरु देव! उस आंधी से तो प्राण बच रहे हैं परंतु माहकाय दैत्य से बचने की कोई सम्भावना नहीं है यह तो अभी अभी हमारी जीवन नैय्या को डुबोने वाला है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह कलियुग है जो पहिले आंधी बना और अब यह दैत्य बन कर आया है। मर्दाना! तू अपने मन को प्रभु में लगा कर मुख से ईश्वर स्मरण करता जा। बस यह तेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

इसके पश्चात् कलियुग ने अपना रूप भयानक अग्नि का कर लिया। चारों दिशाओं में अग्नि ही अग्नि नज़र आने लगी। अब तो मर्दाने के होश गुम हो गये तथा अपने को वस्त्र में छिपा कर अधोमुख लेट गया तथा कहने लगा-हे गुरु जी! मुझे बचाओ। गुरु जी ने मुस्करा कर कहा-हे मर्दाना! आंधी और भयानक दैत्य की भांति यह अग्नि भी तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। बस वाहिगुरु नाम जपता चल। इस के पश्चात् कलियुग ने भयानक वर्षा का रूप धार लिया काली घटाओं ने आकाश का कोना कोना घेर लिया तथा वर्षा प्रलय काल की वर्षा के समान होने लगी आसमान से कड़ कड़ शब्द करती हुई भयानक विद्युत चमकने लगी तथा पानी के साथ ईंट पत्थर की वर्षा आरम्भ हो गई। परंतु पत्थर

कंकर हम लोगों से दूर ही गिरते थे। जैसे कोई भयभीत करने की इच्छा से निकट होकर नहीं मारता। अब मर्दाना महान् दुखी होकर कहने लगा-हे गुरु देव! आप ने हमें इस गहन बन में लाकर समाप्त करने की ठान रखी है। बताओ अब हमारे प्राण कैसे बचेंगे? गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तू जरा रबाब बजा और हम एक शब्द उच्चारण करेंगे-

गाउड़ी महला १ ॥ डर घरु घरि डरु डरि डरु जाइ ॥ सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ ॥ तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ डरीऐ जे डरु होवै होरु ॥ डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना जीउ मरै न डूबै तरै ॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै। हुकमे आवै हुकमे जाइ ॥ आगै पाछै हुकमि समाइ २ ॥ हंसु हेतु आसा असमानु ॥ तिसु विचि भूख बहुतु नै सानु ॥ भउ खाणा पीणा आधारु ॥ विणु खाधै मरि होहि गवार ॥ ३ ॥ जिस का कोइ कोई कोइ कोइ ॥ सभु को तेरा तूं सभना का सोइ ॥ जा के जीअ जंत धनु मालु ॥ नानक आखणु बिखमु बीचारु ॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥ अर्थात् गुरमुखों का दर घर में है और जो ईश्वर से विमुख हैं तथा प्राणियों को जो दुख देते हैं उन्हीं को यम द्वार का भय होता है तथा गुरमुख कहते हैं कि उस के बिना और उत्पति करता तथा विनाश करता कोई नहीं है। उस परमेश्वर की आज्ञा में ही जीव जाता है और जो नर जीवों को मार कर खा जाते हैं उन की भूख और अधिक बढ़ जाती है। जैसे आग में ईंधन डालने से अग्नि और अधिक बढ़ जाती है जिन को ईश्वर का भय है वही नर त्रिप्त हैं। किसी को तो किसी का सहारा है परंतु संतजनो को एक परमेश्वर का ही सहारा है। जिस ने चार प्रकार की सृष्टि का सृजन किया है। वही अपने भक्तों का रक्षक है। नानक देव कहते हैं हे प्राणी! यदि तुझे ईश्वर का भय होगा। तब तू किसी जीव को दुखी नहीं कर सकेंगा और नाम जपने

से तेरा कल्याण होगा। हे मर्दाना! तू वाहिगुरु नाम जप जो सभी दुखों से बचाने वाला है।

उधर यह तमाम बातें कलियुग ने सुनी और मनुष्य शरीर धारण किया तथा गुरु जी के निकट आ गया। उस के मुंह से मास और हाथ में अग्नि थी। उस का सारा ही शरीर कांच का था। उस समय गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! उठो और रबाब बजाओ। मर्दाने ने रबाब बजाया तथा गुरु जी ने मारु राग में शब्द उच्चारण किया-

मारू महला ५॥ डरपै धरति अकासु नख्यत्रा सिर ऊपरि अमरु करारा॥ पउणु पाणी बैसंतरु डरपै डरपै इंद्रु बिचारा॥ १॥ एका निरभउ बात सुनी॥ सो सुखीआ सो सदा सुहेला जो गुर मिलि गाइ गुनी॥ १॥ रहाउ॥ देहधार अरु देवा डरपहि सिध साधिक डरि मुइआ॥ लख चउरासीह मरि मरि जनमे फिरि फिरि जोनी जोइआ॥ २॥ राजसु सातकु तामसु डरपहि केते रूप उपाइआ॥ छल बपुरी इह कउला डरपै अति डरपै धरम राइआ॥ ३॥ सगल समग्री डरहि बिआपी बिनु डर करणैहारा॥ कहु नानक भगतन का संगी भगत सोहहि दरबारा॥ ४॥ १॥

॥ वार्तक ॥ इस शब्द के पश्चात् श्री गुरु नानक देव जी ने कलियुग से पूछा-हे भाई! तू कौन हैं? उत्तर में कलियुग ने हाथ से अपनी जिव्हा पकड़ी तथा एक हाथ में अपनी इन्द्री पकड़ कर और सारा शरीर नग्न करके गुरु जी महाराज के चरणों में नमस्कार किया तथा कहा-हे महाराज! मैं आप की महिमा नहीं जानता था। मैं केवल मर्शणार्थ आया हूं। मुझे उस परमेश्वर के दरबार से कुछ अधिकार मिले हैं तथा आप ने भी मुझ पर कृपा दृष्टि रखनी। इस मेरे शासन काल में नर नारियों के यही लक्ष्ण होंगे। जिस प्रकार आप मुझे देख रहे हो। दैवी संपदा सभी संसार त्याग कर खान पान और भोग बिलास में संसार लग जायेगा। माता पिता गुरु आदिकों की मर्यादा दुनियां भंग कर देगी। हे गुरु देव!

मैं ने जो छल आप से किये हैं वे सभ अनजान अवस्था में किये हैं उन के लिये मैं क्षमा का पार्थी हूं। आशा है आप मुझे क्षमा करोगे आप महान् हो तथा आप पूर्ण संत हो। आप कृप्या यह बताओ कि आगे आप किधर जाने का विचार रखते हो? गुरु जी ने कहा-हे कलियुग! हम तो उस परमेश्वर को देखने की इच्छा से इधर उधर घूम रहे हैं। कलियुग ने कहा-हे महाराज! क्या आप से भी कोई पृथक ईश्वर है। आप ही तो साक्षात परमेश्वर हो और कौन परमेश्वर हो सकता है? गुरु जी ने कहा-हे कलियुग! तेरा तो संसार में शासन साथ प्रभाव है। फिर यह छल कपट करने के लिए इधर आने का क्या प्रयोजन है। कलियुग ने कहा-हे महाराज! मैंने अज्ञान वश आप की परीक्षा लेने को तथा आप के दर्शनों को इधर आ गया हूं। तब गुरु जी ने कलियुग से कहा-अच्छा पहिले तूं अपने लक्षण कहो फिर यह बताओ कि तुम्हारी जो सेना है वह कैसी है? कलियुग ने कहा-हे गुरु वर! मेरी सेना का महान् सेना पति झूठ है तथा राजा मोह है तथा छोटा सेनापति हिंसा है। काम क्रोध लोभ मोह अहंकार यह मेरी सेना के महान् योद्धा हैं जो प्रत्येक पर विजय प्राप्त करने में सिद्ध हस्त हैं। यह अजय हैं तथा हस्ती सवार पर रथ सवार यह मत्सर निंदा आदिक हैं तथा तृष्णा यह सवार महार्थी हैं तथा आलस्य द्यूत मद्यपानादिक दुराचार यह भी महान् योद्धारथों की सवारी करते हैं। आशा चोरी आदिक यह मेरे पद चर योद्धा हैं। हे महाराज! मैं कहां तक कहूं। यह मेरी दुर्जय सेना किसी से भी नहीं हारती सब को जीतना इसके बायें हाथ का कार्य है। मेरे दंभ रूपी योद्धा ने तो बड़े-बड़े दिग्गज़ भी परास्त किये हैं। मेरे शासन काल के गुरु और उपदेशक पाखंडी दुराचारी होंगे तथा लोगों के घरों में उदर मूर्ति के लिये उपदेश देने जायेंगे। वेद शास्त्रों तथा सभ ग्रन्थों को त्याग कर और उन की निंदा करके अपनी ही पूजा करवाने में सिद्ध

हस्त होंगे। जो काजी लोग होंगे वह न्याय करते समय रिश्वत लेकर झूटे प्रमाण कह कर अन्याय करेंगे। हाथ में तस्वीर और मन में महान् पाप अपराध का निवास होगा, बड़े-बड़े साधु अनेक प्रकार के भेष धार संसार को मनमोहनियें बातें कथायें सुना कर खूब लूटेंगे। ब्राह्मण क्षत्री आदिक सभी वर्ण अपने अपने धर्म को त्याग कर पतित होने में ही अपनी शान समझेंगे। गेरुए वस्त्र पहनकर साधु लोग उदर शोसन के मोह में मारे मारे फिरेंगे। दिखावा बहुत होगा। परंतु मर्यादा तथा धर्म नीति की मिट्टी पलीत होगी। त्यागी साधुओं के बैंकों में हिसाब चलेंगे और उन के बाल बच्चे उन के आगे पीछे चलते नज़र आयेंगे। ब्रह्मचारियों के गृह में दो दो तीन तीन स्त्रियें होंगी। हे महाराज! मैं तो आपके समक्ष अधिक कहते भी लज्ञा अनुभव करता हूं। गुरु जी ने कलियुग की बातें सुन कर कहा-हे कलियुग! अंतिम परमात्मा के दरबार में उत्तर दोगे क्योंकि उत्तरदायित्व (जिम्मेवारी) तुम पर है यह कह कर गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया।

॥ श्री मुखवाकय॥ जिन सिकदारी तिनहि खवारी चाकर केहा डरना॥ जा सिकदारां पवहि जंजीरी त चाकर हथहु मरना॥ १ ॥ तूं जगत में सिकदार है और हम तो उसके भृत्य हैं। तुम्हें जब उत्तर देना पड़ेगा उस समय परमात्मा ने तेरा हिसाब लेने पर हमारी डयूटी लगानी है तथा हमने ही तुम से पूछना है। बताओ उस समय तुम्हारी अकड़ फूक क्या करेगी। तब कलयुग ने भयभीत होकर कहा-हे सत्पुरुषो! मैंने आप की शर्ण इसी लिये स्वीकार की है आप तो परमात्मा रूपी महाराजा धिराज के प्रधान मत्री हो जिस समय आप हिसाब लोगे उस समय आप ने मुझ पर कृपा करनी। बस यही एक बिनती हैं गुरु जी ने कहा-अच्छा जब वह समय आयेगा तो हम कुछ न कुछ तुम पर कृपा करेंगे। कलियुग ने कहा-इस में तो संदेह नहीं परंतु मुझे कैसे विश्वास हो। यदि आप

कुछ भेंट मुझ से ग्रहण करें तब मुझे विश्वास होगा कि आप मेरे पर कृपा दृष्टि करोगे। अन्यथा नहीं। उत्तर में गुरु जी ने कहा हमने तो सुखों को छोड़ कर दुख प्राप्त किया है। इस लिये हम किसी भी भेंट को स्वीकार नहीं कर सकते। तब कलियुग ने कहा-हे देवों के देव! तब मेरी तसल्ली किस प्रकार हो? गुरु जी ने कहा-अच्छा यह बताओ तुम्हारे पास क्या-क्या वस्तु है जो मुझे देने के लिए तैयार हो। कलियुग ने कहा-हे प्रभो! मेरे पास हीरे मोती माणक स्वर्ण चांदी सुन्दर प्रसाद तथा परम सुन्दर रसणियें और उदय अस्त तक का राज है, इसके अतिरिक्त अष्ट सिद्धि नवनिद्धि यह सब कुछ मेरे अधीन हैं। यह सभी वस्तु मैं आप के चरणों में अर्पण करने को उपस्थित हूं। जिस वस्तु पर आप संकेत करें वही आप की हो सकती है केवल आज्ञा की ही आवश्यकता है। तब गुरु जी ने कहा-हम इन वस्तुओं में किसी को भी नहीं स्वीकार करते यह कह कर एक पवित्र शब्द उच्चारण किया-

श्री राग महला १ ॥ मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥ कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लिपि आवै चाउ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ॥ १ ॥ हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ॥ मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥ १ ॥ रहाउ॥ धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ। मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ॥ सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ॥ गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ॥ ३ ॥ सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ॥ हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वार्तक॥ ऊपर का शब्द सुन कर कलियुग ने कहा-हे गुरु जी-मैं तो आप का शिष्य होने को आया हूं। यदि कहो तो आप के लिये एक

मोतियों का मंदिर बनवा दूं और उस में हीरें जड़वा दूं। उस मंदिर में कस्तूरी आदिक लेपन हो जाय। यदि आप ने निवास करना हो तो एक बहुमूल्य चारपाई जिस में लाल जड़े हों। वह भी आप की आज्ञा से बन सकती है।

गुरु जी ने कहा-हे कलियुग मैं अनित्य सुंदरता को नहीं चाहता। मैं तो नित्य पदार्थ जो पारब्रह्म परमेश्वर है उसी को चाहता हूं। अनित्य वस्तु स्थिर नहीं होती और जो स्थिर नहीं होती है वही दुख का कारण है और राज्य आदिक भी अनित्य है फिर इस में अभिमान तथा मत्सरता उत्पन्न हो जाती है। जो पुरुष की अधोगति का कारण है। हे कलियुग! यदि तेरी अत्यंत श्रद्धा है तो मैं तुम से दशम अवतार धारण करके सभी कुछ राज्य रिद्धि सिद्धि आदिक लूंगा अर्थात् श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के रूप में तुम्हारी भेंट सहर्ष स्वीकार कर लूंगा।

तब गुरु जी ने कहा-हे कलियुग! तुम ने अपनी सम्पदा और बिभूती तो बता दी है। इसके अतिरिक्त और भी जो कुछ तुम्हारे पास हो वह भी बताओ। मैं उसे सुनना चाहता हूं। तब कलियुग ने कहा हे कृपा नाथ गुरु देव! मेरे राज्य में भूख प्यास निद्रा आलस्य तृष्ण मस्ती पाप दुराचार चोरी यारी और निंदा आदिक से कोई होगा जो बच सकेगा। गुणी पुरुषों का अपमान होगा सत्य वकता को लोग मूर्ख कहेंगे और जो बहुत बोलेगा वह अगर मूर्ख भी होगा तो भी वह गुणी कहलायेगा। वही राजाओं के निकट स्थान प्राप्त करेगा। पापी पुरुषों के घर संतान अधिक होगी और कृष्ण के घर में धन अधिक होगा तथा ब्राह्मण लोग व्यापार करने लगेंगे तथा जमींदारा करेंगे, सूदरों का मान होगा तत्व ज्ञानी वेद वक्ता भूखे मरेंगे। राजा लोग सदैव धनहीन रहेंगे और प्रजा को लूटना उन का कर्तव्य हो जायगा। अनेक प्रकार के टैक्स लगा कर प्रजा का रक्त घोषणा किया जायगा। पती अपनी स्वरूपा नारी को त्याग

कर कुरूपा से प्रेम करेगा तथा पत्नी अपने पति को त्याग कर पर पुरुष के साथ प्रेम सम्बन्ध जोड़ेंगी। पुत्र कहेंगे हमारा पिता मूर्ख है तथा बहिन भाई के झगड़े राज्य दरबार में चलेंगे क्षणिक धन सुख तथा स्त्री सुख के लिये खून की नदियां बहा दीं जायेंगी पाखंडी भगवे वस्त्र पहिन कर लाखों रुपये एकत्र करेंगे और सद गृहस्थ रोटी कपड़े को तरसेंगे। भूख लगने पर नारियां अपना सत्तिव बेचने के लिए उद्यत हो जायेंगीं। औषधियें निरस हो जायेंगी तथा नीचों की पूजा होगी। अत, एव विद्वान ब्राह्मणों का अपमान होगा। हे गुरु वर मेरे शासन काल में यह बातें होंगी यह ईश्वरीय आज्ञा है। परंतु हे गुरुदेव! मैं चाहता हूं कि कुछ आप की सेवा करके आप से आर्शीवाद प्राप्त करूं। गुरु जी ने प्रसन्न हो कर कहा- हे कलियुग हमें तो कोई इच्छा नहीं तथा हम तुम्हें आर्शीवाद देते हैं कि तमाम युगों से तेरा प्रभाव बहुत अधिक होगा परंतु जो प्रभु कीर्ति का ज्ञान करेगा उस की भी महिमा बहुत होगी। जो प्राणी सतयुग में एक लाख वर्ष तपस्या करे तथा त्रेता में दश सहस्त्र द्वापर में एक हज़ार वर्ष तपस्या करने पर जो फल प्राप्त होता था वह तेरे युग में अति अल्प काल में ही प्रभु भगती द्वारा वही गति कलियुगी जीव प्राप्त कर लेगा जो तू हमें भेंट करना चाहता है वह भेंट हम तेरी दशम अवतार के रूप में स्वीकार करेंगे जैसा कि हम ने पहिले भी कहा है। तब हाथ जोड़ कर कलियुग ने कहा-हे महाराज! मैं आप का दर्शन करके कृत कृत्य हो गया हूं और आज से प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं आप के जो शिष्य (सिख) होंगे उन के निकट नहीं जाऊंगा और ना ही उन पर मेरा कोई प्रभाव ही पड़ेगा तथा जो भी दम्भी पाखंडी होंगे उन पर ही मेरा असर होगा। गुरु जी ने कहा-हे कलियुग! जो तुम ने यह प्रण किया है कि मैं सिखों के निकट नहीं जाऊंगा हमें यह प्रण रूपी तेरी भेंट प्रसन्नता उत्पन्न करती है। परमात्मा तेरी भावना अटल्ल रखे और हमारे शिष्यों

से तू सदैव दूर ही रहे जिस से वे (सिख) तेरे दूषित कुकृत्यों से बचे रहें। कलियुग ने फिर कहा हे गुरु जी जो आप के सेवक होंगे उन पर मेरा प्रभाव बिल्कुल नहीं होगा। यह मेरा प्रण सत्य है और जो कुछ आप मुझे आज्ञा दें वही होगा। गुरु जी ने कहा-बस जहां हमारा कीरतन गायन पाठ आदिक होता हो वहां तुम ने नहीं जाना होगा। बाहर ही ठहरना होगा। बस यही हमारी आज्ञा है। कलियुग ने कहा-हे महाराज! जहां आप की अथवा ईश्वर की महिमा की जाती हो वहां बैठ कर कुछ परलोक सुधार लूं तथा कढ़ाह प्रसाद अपने मुख में डाल कर शरीर पवित्र कर लूं। गुरु जी ने कलियुग की अपार श्रद्धा देख उसे अपना सिख बना लिया। तब कलियुग ने गुरु जी की अपार स्तुति की और कहा हे महाराज! मैं आप के जो सच्चे सिख होंगे उनके पास नहीं जाऊंगा। परंतु जो पाखंडी होंगे उन पर मेरा प्रभाव अवश्य होगा। इतनी कह कर कलियुग गुरु जी के चरणों में नमस्कार करके चला गया तथा गुरु जी वहां से भ्रमणार्थ आगे गये।

तिलंग देश की साखी

संसार को उपदेश का अंमृत पिलाते पिलाते गुरु जी तिलंग देश में आ गये तथा आसन लगा दिया। एक क्षत्री गुरु जी के निकट आकर कहने लगा-हे महाराज! आप जो कुछ आज्ञा करो सो हाज़र किया जाये। गुरु जी ने कहा-हे भक्तवर! जो कुछ परमात्मा भेज देगा हमें वही स्वीकार है। उसने अपने साथियों को कहा-कि आगे जितने अतिथि आते रहे हैं सभी कुछ न कुछ मांगते हैं परंतु यह संत परम संतोषी देखे हैं। जो किसी वस्तु की इच्छा नहीं रखते। नौकरों ने कहा इन के लिये छतीस प्रकार के भोजन सत्कार सहित लेकर आओ। यह तो परमात्मा रूप नज़र आते हैं।

आज्ञा पाकर नौकरों ने अनेक प्रकार के भोजन लाकर गुरु जी के आगे रखे। तब गुरु जी ने उस क्षत्री से पूछा कि यह जो आप के साथ आये हैं यह कौन हैं। उस क्षत्री ने कहा-हे महाराज! यह मेरे सम्बन्धी हैं। तब गुरु जी ने गाउड़ी रागु में एक शब्द कहा-

रागु गउड़ी महला १ ॥

माता मति पिता संतोखु ॥ सतु भाई करि एहु विसेखु ॥ १ ॥ कहणा है किछु कहणु न जाइ ॥ तउ कुदरति कीमति नही पाइ ॥ रहाउ ॥ सरम सुरति दुइ ससुर भए ॥ करणी कामणि करि मन लए। साहा संजोगु वीआहु विजोग। सचु संतति कहु नानक जोगु ॥ ३ ॥

॥ वार्तक ॥ यह शब्द सुन कर वह क्षत्री गुरु चरणों में पड़ गया और कहने लगा आप मेरा उधार करो तथा यह रूखा सूखा गरीब का भोजन स्वीकार करो। तब गुरु जी ने उस का भोजन कुछ अपने श्री मुख में डाला तथा कुछ प्रसाद रूप उस क्षत्री को भी खलाया। जब गुरु जी के कर कमलों का दिया उसने प्रसाद खाया तो उस की बुद्धि इक दम उज्ञवल हो गई तथा उस के घट के पट क्षण में ही उठ गये और परमानन्द में मग्न हो गया। तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज! आप ने इस पर बहुत ही शीघ्र कृपा कर दी है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह दौलत चंडी का रूप होती है। यह भला काम नहीं करने देती। जिस पर परमात्मा की कृपा होती है वह इस को बांट कर खाता है। एक तो किसी को कुछ देना और फिर उस पर नम्रता को अपनाना अर्थात् जो भी दान करना वह जिस को देना उस से नम्रता पूर्वक स्वीकार करने की भीख मांगनी यह उत्तम तथा निर्मल मन वालों का काम है तथा जो इस प्रकार करता है उस पर ईश्वर की अपार कृपा समझो क्योंकि अनेक लोग दान करते समय अभिमान करते हैं और मन में अहंकार समाया होता है इस लिये

उन की बुद्धि निर्मल नहीं होती तथा उन का दान भी तामस दान होता है।

इस के पश्चात् उस के कुटंबियों को गुरु जी ने कहा कि हम ने इसके साथ चार प्रहर बातें करनी हैं तथा तुम बाहर बैठ जाओ। जब चार प्रहर हो गये तब गुरु जी ने उसके रिश्तेदारों को कहा-हे सज्जनों! अब इस की मृत्यु होने वाली है तुम उस का सामान करो इतनी सुनकर सभी रोने लगे। फिर प्रहर के पीछे वह सिधार गया तब सम्बनधियों ने उसका बिबान बना कर तथा सभी तैयारी कर के उस की अर्थी को शमशान भूमि में ले गये और उस का संस्कार कर दिया। तब स्नान आदिक करके उस के सम्बन्धी गुरु जी को कहने लगे हे महाराज! यह आप के दर्शनों को आया था और इस की मृत्यु हो गई। आप ईश्वर के प्यारे हैं। आप इस की सद्गति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करें। गुरु जी ने उन के शब्द सुन कर मर्दाने को कहा हे मर्दाना! रबाब बजाओ तथा हम एक शब्द कहेंगे। तब मर्दाने ने रबाब बजाया और गुरु जी ने शब्द अपने श्री मुख से कहा-

रागु वडहंसु महला १ घरु ५ अलाहणीआ॥ धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ॥ मुहलति पुंनी पाई भरी जानीअड़ा घति चलाइआ॥ जानी घति चलाइआ लिखिआ आइआ रुंने वीर सबाए॥ कांइआ हंस थीआ वेछोड़ा जां दिन पुंने मेरी माए॥ जेहा लिखिआ तेहा पाइआ जेहा पुरबि कमाइआ॥ धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधे लाइआ॥ १ ॥ साहिबु सिमरहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा॥ एथै धंधा कूड़ा चारि दिहा आगै सरपर जाणा। आगै सरपर जाणा जिउ मिहमाणा काहे गारबु कीजै॥ जितु सेविऐ दरगह सुखु पाईऐ नामु तिसै का लीजै॥

आगै हुकमु न चलै मूले सिरि सिरि किआ विहाणा ॥ साहिबु सिमरिहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥ २ ॥ जो तिसु भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ साचड़ा सिरजणहारो ॥ साचा सिरजणहारो अलख अपारो ता का अंतु न पाइआ ॥ आइआ तिन का सफलु भइआ है इक मनि जिनी धिआइआ ॥ ढाहे ढाहि उसारे आपे हुकमि सवारणहारो ॥ जो तिसु भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥ ३ ॥ नानक रुंना बाबा जाणीऐ जो रोवै लाइ पिआरो ॥ वालेवे कारणि बाबा रोईऐ रोवणु सगल बिकारो ॥ रोवणु सगल बिकारो गाफलु संसारो माइआ कारणि रोवै ॥ चंगा मंदा किछु सूझै नाही एहु तनु एवै खोवै ॥ ऐथै आइआ सभु को जासी कूड़ि करहु अहंकारो ॥ नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥ यह अलाहणीयें उस के प्रथाई हुई। तब सभी आकर पांव पड़ गये। गुरु जी ने फुरमाया कि जहां यह शब्द पढ़ा जायेगा तब बारां कोस तक के प्राणी मुक्त हो जाएंगे। यह शब्द सुन कर उस के सभ भाई बंधु आकर चरणों में लग गये और कहने लगे—हे गुरु जी! आप हमारा भी उद्धार करें। तब गुरु जी ने उन लोगों को भी सिखी की दीक्षा दी और कहा-धर्म की वृती करनी। सत्य बोलना फिर ईश्वर नाम का दान दिया और कहा धार्मिक काम करो तथा जो अतिथि हो उसकी सेवा करनी॥ २१ ॥

साखी दो गावों की

एक समय श्री गुरु नानक देव चलते चलते एक गांव में जा पहुंचे वहां के लोगों ने श्री गुरु जी महाराज को किसी स्थान पर भी विश्राम

नहीं करने दिया तथा अनेक प्रकार के मजाख किये। किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहना प्रारम्भ कर दिया तथा गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह ग्राम सदैव फलता फूलता रहे। इस के पश्चात् गुरु जी किसी दूसरे ग्राम में जा पहुंचे। उस ग्राम के रहने वाले गुरु जी के निकट आये और बहुत प्रकार से सेवा की और गुरु जी के लिए श्रद्धा से भोजन भी लाये जो गुरु जी ने भाई मर्दाने को दे दिया और कुछ वहां के लोगों में प्रसाद रूप में बांट दिया। दूसरे दिन गुरु जी वहां से आगे को चल दिये तथा श्री मुख से कहा-कि यह नगर यहां से उजड़ जायेगा। तब मर्दाने ने कहा-हे गुरु देव! आप के दरबार में महान् अन्याय देखा जाता है जिस नगरी के लोगों ने आप को क्षण भर बैठने भी नहीं दिआ, उन को तो आप ने आबाद रहने का वर दे दिया तथा जहां के रहने वालों ने आप की तन मन से सेवा की है उन के लिये आप ने कहा-कि तुम बर्बाद हो जाओ यह महान् आश्चर्य है। तब गुरु जी ने फुरमाया-हे मर्दाना! यह किंचित सोचने की बात है कि जिस नगर में इस नगर का पुरुष जायेगा तब अपने सदर्श देश से अनेकों को सन्मार्ग में डालेगा तथा उन गांवों का पुरुष जहां जायेगा वहां के रहने वालों को भी भ्रष्ट करेगा। तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज! आप की बातें आप की जान सकते हो जिसे चाहो पार करो। तब गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

राग मलार महला ३ ॥

खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा ॥ खसमु विसारि खुआरी कीनी ध्रिगु जीवणु नहि रहणा ॥ प्राणी एको नामु धिआवहु ॥ अपनी पति सेती घरि जावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुध नो सेवहि तुझु किआ देवहि मांगहि लेवहि रहहि नहीं ॥ तू दाता जीआ सभना का जीआ आहिर जीउ तू ही ॥ २ ॥ गुरमुखि धिआवहि से अमृत पावहि सेई सूचे होही ॥ अहिनिसि नामु जपहु रे प्राणी मैले हछे होही ॥ ३ ॥ जेही रुति

काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही॥ नानक रुति सुहावी साई बिनु नावै रुति केही॥ ४॥

॥ वार्तक॥ यह शब्द सुन कर मर्दाने ने कहा-वाह वाह तेरी कुदरत यह कह कर नमस्कार किया। फिर श्री गुरु नानक देव जी उन सब को परम पवित्र उपदेश दे कर वहां से रवाना हुए।

साखी आसा देश की

अनेक देशों का भ्रमण करते करते गुरु नानक देव जी महाराज आसा देश में जा पहुंचे। उस देश के बन में शेख फरीद हुआ था जब नानक देव उस के पास गये तब शेख फरीद ने कहा-अलह अलह दरवेश! उत्तर में गुरु जी ने कहा-अलाह फरीद जोहद हमेश सुआओ शेख फरीद जुहदी आया तब हाथ को मिला कर बैठ गये। तब शेख जी ने गुरु जी का स्वरूप देख कर पूछा-

अके तां लोक मुकदमी अके तां अलाह लोड़॥ दुई बेड़ी ना लत धर मत वंञे वखर बोड़॥

तब गुरु जी ने उत्तर दिया-

॥ सलोक॥ दोहीं बेड़ीं लत धर दोहीं आखर चाढ़॥
कोई बेड़ी दुबदी कोई लग्गे पार॥ १॥
ना पाणी ना बेड़ीयां ना डुबे ना जाइ॥
नानक वखर सच धन सहिजे रिहा समाइ॥ २॥

॥ उत्तर शेख फकीर॥

सलोक॥

फरीदा तन रिहा मन फटिआ ताकत रही न काइ॥ उठी प्रीत तबीब की ओह कारी दारू लाइ॥ ४॥ तब गुरु जी

ने उत्तर दिया॥ सजण सच परख मुख अलावण थोथरा॥ नानक मन मझाहू लख तुदहु दूरि न सु पिरी॥ ५॥ तब शेख फरीद राग सूही में बोले॥ बेड़ा बंध न सकिओ बंधन की बेला॥ भर सरवर जब उछलै तब तरन दुहेला॥ हथ न लाई कसुंभड़े जल जासी ढोला॥ १॥ रहाउ॥ इक आपीनै पतली सह केरे बोला॥ दुधा थनी न आवही फिर होइ न मेला॥ कहे फरीद सहेलीहो एह अलाइसी॥ हंस चलसी डुमणा अहि तन ढेरी थीमी॥ १॥

गुरु जी का उत्तर—

रागु सूही॥ जप तप का बंधु बेडुला जितु लंघहि वहेला॥ ना सरवरु ना ऊछलै ऐसा पंथु सुहला॥ १॥ तेरा एको नामु मजीठडा रता मेरा चोला सद रंग ढोला॥ १॥ रहाउ॥ सजन चले पिआरिआ किउ मेला होई॥ जे गुण होवहि गंटड़ीऐ मेलेगा सोई॥ २॥ मिलिआ होइ न वीछुड़ै जे मिलिआ होई॥ आवा गउणु निवारिआ है सचा सोई॥ ३॥ हउमै मारि निवारिआ सीता है चोला॥ गुर बचनी फलु पाइआ सह के अंमृत बोला॥ ३॥ नानकु कहै सहेलीहो सहु खरा पिआरा॥ हम सह केरीआ दासीआ साचा खसमु हमारा॥ ४॥

फिर शेख फरीद बोले—

दिलहु मुहबति जिन्ह सेई सचिआ॥ जिन्हे मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ॥ रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के॥ विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए॥ १॥ रहाउ॥ आपि लीए लड़ लाइ दरि दरवेस से॥ तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से॥ २॥ परवदगार अपार अगम बेअंतु तू॥ जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं॥ ३॥ तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी॥ सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी॥ ३॥

गुरु जी का कथन—रागु सूही महला १ ॥

जा तू ता मैं सभ को तूं साहिब मेरी रास जी॥ तुध अंदर हउ सुख वसां तूं अंदर साबास जीउ॥ भाणै तखत वडिआईआ भाणै भीख उदास जीउ॥ भाणै थल सिर वहैं कवल फुलै अकास जीउ॥ भाणै भउजल लंघीऐ भाणै मंझ भरीआस जीउ॥ भाणै सो सहु रंगला सिफत रता गुणतास जीउ॥ भाणै सहु भीहावला हउ आवण जाण मुइआस जीउ॥ तूं सहु अगम अतोलवा हउ कहि कहि ढहि पईआस जीउ॥ किआ मागत किआ कहि सुणी मैं दरशन भूख पिआस जीउ॥ गुर बचनी सहु पाइआ सच नानक की अरदास जीउ॥

॥ वार्तक ॥ फिर श्री गुरु नानक देव जी और शेख फरीद जी तमाम रात इकट्ठे ही जंगल में रहे। तब एक पुरुष आया और दोनों को इकट्ठे देख कर अपने घर को गया और एक कटोरा दूध का भर कर लाया। उस कटोरे में चार मोहरां भी डाल कर ले आया। पिछली रात्रि के समय फरीद जी ने अपना भाग पी लिया तथा गुरु जी का हिस्सा रख छोड़ा।

॥ शेख फरीद का कथन॥

पहिलै पहिरै फुलड़ा फलु भी पछा राति॥
जो जागंन्हि लहंनि से साई कंनो दाति॥

॥ उत्तर गुरु नानक देव जी॥

॥ सलोक॥ दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि॥
इक जागंदे ना लहंनि इकना सुतिआ देइ उठालि॥

॥ वार्तक॥ तब श्री गुरु नानक देव जी ने कहा-हे शेख फरीद तुम कटोरे में हाथ डाल कर देख कि इस बर्तन में क्या है। फरीद ने बर्तन

में हाथ डाल कर देखा तो उस में चार अशरफीयें थीं और वह मनुष्य जो दे गया था वह तो चला गया था। तब गुरु जी ने एक शब्द कहा-

रागु तुखारी महला १ ॥

पहिलै पहरै नैण सलोनड़ीए रैणि अंधिकारी राम॥ वखरु राखु मुईए आवै वारी राम॥ वारी आवै कवणु जगावै सूती जम रसु चूसए॥ रैणि अंधेरी किआ पति तेरी चोरु पड़ै घरु मूसए॥ राखणहारा अगम अपारा सुणि बेनंती मेरीआ॥ नानक मूरखु कबहि न चेतै किआ सूझै रैणि अंधेरीआ॥ २ ॥ दूजा पहरु भइआ जागु अचेती राम॥ वखरु राखु मुईए खाजै खेती राम॥ राखहु खेती हरि गुर हेती जागत चोरु न लागै॥ जम मगि न जावहु ना दुखु पावहु जस का डरु भउ भागै॥ रवि ससि दीपक गुरमति दुआरै मनि साचा मुखि धिआवए॥ नानक मूरखु अजहु ना चेतै किव दूजै सुखु पावए॥ २ ॥ तीजा पहरु भइआ नीद विआपी राम॥ माइआ सुत दारा दूखि संतापी राम॥ माइआ सुत दारा जगत पिआरा चोग चुगै नित फासै॥ नामु धिआवै ता सुखु पावै गुरमति कालु न ग्रासै॥ जंमणु मरणु कालु नही छोडै विणु नावै संतापी॥ नानक तीजै त्रिबिधि लोका माइआ मोहि विआपी॥ ३ ॥ चउथा पहरु भइआ दउतु बिहागै राम॥ तिन घरु राखिअड़ा जुो अनदिनु जागै राम॥ गुर पूछि जागे नामि लागे तिना रैणि सुहेलीआ॥ गुरु सबदु कमावहि जनमि न आवहि तिना हरि प्रभु बेलीआ॥ कर कंपि चरण सरीरु कंपै नैण अंधुले तनु भसम से॥ नानक दुखीआ जुग चारे बिनु नाम हरि के मन वसे॥ ४ ॥ खूली गंठि उठो लिखिआ आइआ राम॥ रस कस सुख ठाके बंधि चलाइआ राम॥ बंधि चलाइआ जा प्रभ भाइआ ना दीसै ना सुणीऐ॥ आपण वारी सभसै आवै पकी खेती लुणीऐ॥ घड़ी चसे का लेखा लीजै बुरा भला सहु जीआ॥ नानक सुरि नर सबदि मिलाए तिनि प्रभि कारणु कीआ॥ ५ ॥

॥ वार्तक ॥ फिर बाबा फरीद और गुरु जी वहां से चले गये। फिर वही खुदा का बंदा वहां आया। तब उस ने अपना तबलबाज वहीं पड़ा देखा परन्तु अब वह तबलबाज स्वर्ण का बना हुआ था और उस में ऊपर तक मोहरें भरी पड़ी हैं तब वह अपने मन में पश्चाताप करने लगा तथा कहने लगा-हे मन! वे तो पहुंचे हुए साधू थे। यदि मैं शुद्ध मन से उन के निकट आता तो धर्म को पा लेता मैं तो संसार के लिये आया था, अपितु उत्तर में मैंने संसार ही प्राप्त किया है। यह कह कर तबलबाज उठा कर अपने घर को आ गया।

पश्चात् श्री गुरु नानक देव तथा फरीद जी आसा को गये। उस समय आसा का राजा शाम सुंदर था। उस का उन्हीं दिनों स्वर्गवास हुआ था। उस के सिर की खोपड़ी जलती नहीं थी अनेक यत्न करने के पश्चात् पंडितों से पूछा तब विद्वानों ने कहा कि इसने एक बार झूट बोला था उसी के फल रूप यह कष्ट भोग रहा है। उस समय आसा देश के रहने वाले सत्यवादी हुआ करते थे सभी लोक मिथ्या भाषण की बात सुन कर शोक करने लगे। फिर उन पंडितों ने कहा कि इस का कल्याण तभी होगा जब किसी संत के चरण पड़ेंगे तब मंत्रियों ने केवल एक ही दरवाजा खुला रख कर तमाम दरवाजे बंद कर लिए।

इधर गुरु जी अथवा फरीद जी आ गये। गुरु जी ने कहा-हे शेख जी! आगे आप चरण पाओ तब फरीद जी ने कहा-हे गुरु देव! मेरी क्या शक्ति है? तब गुरु जी ने अपने पवित्र चरण आगे किये। तब राजा की खोपड़ी उस समय टूट गई यह कौतुक देख कर आसा देश के तमाम नर नारी गुरु जी के चरणों में गिर गये तब श्री गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

॥ रागु मारू महला १ ॥ मिलि मात पिता पिंडु कमाइआ ॥
तिनि करतै लेखु लिखाइआ ॥ लिखु दाति जोति वडिआई ॥

मिलि माइआ सुरति गवाई॥ १ ॥ मूरख मन काहे करसहि माणा॥ उठि चलणा खसमै भाणा॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि साद सहज सुखु होई॥ घर छडणे रहै न कोई॥ किछु खाजै किछु धरि जाईऐ॥ जे बाहुड़ि दुनीआ आईऐ॥ २ ॥ सजु काइआ पटु हढाए॥ फुरमाइसि बहुतु चलाए॥ करि सेज सुखाली सोवै॥ हथी पउदी काहे रोवै॥ ३ ॥ घर घुंमणवाणी भाई॥ पाप पथर तरणु न जाई॥ भउ बेड़ा जीउ चढ़ाऊ॥ कहु नानक देवै काहू॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥ फिर उस देश के लोग अनेक भांति के पकवान रोटी आदिक ले लेकर आने लगे और फरीद जी को देने लगे जब वह रोटी वगैरा देते थे तब फरीद जी कहते थे हे भाई! मैंने भोजन खा लिया है और कुछ बांध भी लिया है तब लोगों ने कहा-हे खुदा के बंदे! मालूम होता है कि तू किसे झूटे देश का वासी है और झूट बोल रहा है तेरे पेट पर तो लकड़ी की रोटी है। यह रहस्य खुलने पर फरीद जी अचंभित हो गये और सोचने लगे कि इस देश के राजा ने एक बार झूट बोला तो उस की यह दुर्गति हुई है और मैंने तो अनेक बार झूट बोला है। मेरी गति क्या होगी। यह विचार कर फरीद उदास हो गए तब गुरु जी ने कहा-हे फरीद जी! आप में खुदा सत्य है। तब शेख जी ने विदा मांगी तब गुरु जी ने कहा एक प्रण करो। तब शेख फरीद जी ने कहा-महाराज! भला हो, तब विदाई के समय गुरु जी के कंठ में भुजा डाल कर फरीद जी प्रेम से मिले। फिर गुरु जी ने एक शब्द कहा-

सिरीरागु महला १ ॥

आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह॥ मिलि कै करहि कहाणीआ समरथ कंत कीआह॥ साचे साहिब सभि गुण अउगण सभि असाह॥ १ ॥ करता सभु को तेरै जोरि॥ एकु सबदु वीचारीऐ जा तू

ता किआ होरि ॥ रहाउ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी। सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥ पिरु रिसालू तां मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥ २ ॥ केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ॥ केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति ॥ केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥ ३ ॥ सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥ सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥ नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥ यह सुन कर शेख फरीद जी वहां से रवाना हुए तथा गुरु जी ने उस देश में अपने विचारों का धार्मिक प्रचार करके अनेकों भूले भटकों को सन्मार्ग पर चलाया। तब तमाम नर नारी गुरु जी की शर्ण प्राप्त करके अपना कल्याण करने में सफल हुए।

साखी बाढी भक्त की

श्री गुरु नानक देव जी महाराज एक बार देशाटन करते करते बाढी भक्त के घर में गये। बाढी भक्त ने गुरु जी का अत्यंत आदर सत्कार किया। जब गुरु जी उसके घर से जाने लगे तब उसके बर्तन फोड़ गये तथा उस की कुटिआ भी गिरा गये और पलंग भी तोड़ कर गये। जब गुरु जी उसके घर से जाने लगे तब भक्त कहीं बाहर गया हुआ था। मैंने (बाला) और मर्दाना ने कहा-हे महाराज! इस अनाथ ने हमारी तथा आप की इतनी सेवा की और हम उस के घर में रहे परंतु आप ने तो उसकी झुग्गी बर्तन चारपाई सभी कुछ का नाश कर दिया। इस से हमें अपार अचंभा हो रहा है। गुरु जी ने उत्तर दिया कि हमें ऐसे परम भक्त की साधारन झुगी बर्तनादिक अच्छे नहीं लगे। जैसे भगवान श्री कृष्ण के भक्त सुदामा के महिल बनवाने के लिये उस की साधारण कुटिया गिरा दी थी। उसी प्रकार हम ने भी इसे अच्छी अवस्था में लाना है। इतनी कह कर लीला के धाम गुरु नानक देव जी आगे चले।

जब यह बाढी भक्त अपनी झुगी के स्थान पर आया तो वहां अपार सुंदर प्रसाद बने हुए देखे। देखा कि अपार धन राशी है। पहिले तो वह भूल गया परंतु पीछे जब उसे ज्ञान प्राप्त हुआ तो जान गया कि भगवान की अदभुत माया है। उसी प्रकार जो उस के प्यारे भक्त हैं वह भी अपार शक्ति के स्वामी होते हैं यह सभी कृपा कालू जी के चंद बाबा नानक देव जी की है। हरन भरन जा का नेत्र फोर॥ तिस का मंत्र न जाने होर॥

जब बाढी भक्त अपने घर में गया तो उन्हें स्वर्ण सरजन के बर्तन आदिक अनेक बहुमूल्य वस्तु देखीं जो वस्तु बड़े बड़े राजाओं को भी अप्राप्त थीं। सभी ऐश्वर्य देख कर श्री गुरु जी की उसी प्रकार स्तुति करने लगा जिस प्रकार सुदामा भक्त अपनी अपार विभृति देख भगवान कृष्ण के गुणनुवाद गायन करने लगा।

बाला जी ने कहा-हे गुरु अंगद देव जी कृपालु! जो भी पुरुष श्री गुरु नानक देव जी महाराज की अनन्य भक्ति करता है वह भी भक्त बाढी की भांति समस्त ऐश्वर्य अनायास ही प्राप्त कर सकता है। ऐसी मेरी दृढ़ धारणा है। इस में संदेह नहीं है।

बाढी भक्त की इस तरह काया कल्प हुई अवस्था देख कर उस नगर के नर नारियों ने गुरु जी की शर्ण ग्रहण की तथा कहा-हे महाराज! आप कृप्या हमारे नगर में कुछ काल निवास करके हमें भी भवसागर से पार करो। उनकी प्रेम क्षद्धा देख कुछ दिन गुरु जी उनके नगर में रहे तथा उपदेश दिया कि आप धर्मशाला बनवायें बांट कर खायें तथा काम के क्रोधादिक जो वासनायें हैं उन को त्यागो तथा साधु संत की सेवा करो और अनेक प्रकार के उपदेश दिये और उन को अपना सिख बना कर उन का कल्याण किया।

गुरु जी के उपदेशानुसार प्रति दिन कीर्तन होने लगा एक सात वर्ष का लड़का प्रतिदिन कीर्तन सुनने आता था, जब कीर्तन समाप्त होता तब वह लड़का अपने घर को आता। एक दिन गुरु जी ने कहा-हे मित्रो!

कल जब यह लड़का यहां आए तो इसे पकड़ कर हमारे सन्मुख करना। जब दूसरे दिन यह लड़का आया तो उस को पकड़ कर गुरु जी के समक्ष लाया गया। गुरु जी ने कहा-हे बालक! अभी तो तुम्हारी खेलने तथा खान पान की आयु है। तू प्रातःकाल नींद को त्याग कर यहां किस लिये आता हैं? उसने कहा-हे महाराज! मुझे इस संग में तथा आप के दर्शनों से साक्षात ईश्वर का दर्शन होता है। मुझे खेल कूद से तथा निंद्रा से कहीं ज्यादा आनंद की प्राप्ति होती है। एक दिन मेरी माता ने मुझे कहा-हे पुत्र! तुम अग्नि प्रज्वलित करो और मैं आटा आदिक तैयार करती हूं। हे महाराज! मैंने चूल्हे में लकड़ी जलाई पहिले तो छोटी लकड़ी जलीं और पीछे बड़ी जलने लगी। हे गुरुदेव! तब मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि शाईद मैं इन लकड़ियों की भांति छोटी उमर में ही काल के मुख में चला जाऊं तथा मुझे बजुर्ग होने का समय ही न मिले। इस लिए मैं अल्प आयु में ही सतसंग में लगना अच्छा जानता हूं। उस छोटे से बालक की बात सुन सभी सुनने वाले हैरान हो गये तथा गुरु जी महाराज ने एक अत्यंत पवित्र शब्द उच्चारण किया-

सिरीरागु महला ५॥ घड़ी मुहत का पाहुणा काज सवारणहारु॥ माइआ कामि विआपिआ समझै नाही गावारु॥ उठि चलिया पछुताइआ परिआ वसि जंदार॥ १॥ अंधे तूं बैठा कंधी पाहि॥ जे होवी पुरबि लिखिआ ता गुर का बचनु कमाहि॥ १॥ रहाउ॥ हरी नाही नही डडुरी पकी वढणहार॥ लै लै दात पहुतिआ लावे करि तईआरू॥ जा होआ हुकमु किरसाण दा ता लुणि मिणिआ खेतारु॥ २॥ पहिला पहरु धंधै गइआ दूजै भरि सोइआ॥ तीजै झाख झखाइआ चउथै भोरु भइआ। कद ही चिति न आइओ जिनि जीउ पिंडु दीआ॥ ३॥ साधसंगति कउ वारिआ जीउ

कीआ कुरबाणु ॥ ४ ॥ जिस ते सोझी मनि पई मिलिआ पुरखु सुजाणु ॥ नानक डिठा सदा नालि हरि अंतरजामी जाणु ॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥ जब लड़के ने शब्द सुणा तो श्री गुरु जी के पवित्र चरणों पर नमस्कार किया तब बाबा जी समस्त संगत पर उस लड़के साथ अपनी अपार कृपा दृष्टि में देखा। गुरु जी ने तब फुरमाया कि हे प्यारी संगत! तुम सभी उस अकाल पुरुष की अनन्य भक्ति में लग जाओ। उसे सर्व व्यापक जानों तथा यह शरीर नाशवान मानो। ईश्वर की आज्ञा से इस जीव को यम दूत पकड़ कर ले जाते हैं। इस प्रकार उपदेश करके गुरु जी आगे की ओर रवाना हुए।

साखी बिसीयर देश की

एक समय भ्रमण करते करते गुरु नानक देव जी महाराज बिसीयर देश में जा पहुंचे। वहां नगर निवासी अपने नगर में किसी को आने नहीं देते थे। तब गुरु जी ने नगर के बाहर ही अपना आसन लगा लिया। एक धर्मात्मा जिस का नाम झंडा था उसने तीन अतिथि आये देखे तब उस ने अपनी धर्म पत्नी को कहा कि यदि कुछ घर में हो तो अतिथि सेवा के लिये मुझे दो तब स्त्री ने कहा घर में जो कुछ है वह आप ले जाओ। झंडे ने घर में देखा तो कुछ भी नहीं मिला परंतु झंडे की आदत थी कि वह अतिथि सत्कार के लिए सदैव उद्यत रहता था यदि घर में कुछ न हो तो गांव से मांग कर भी साधू अभ्यागत की सेवा करनी उस का कर्तव्य था। अब झंडा नगर में मांगने गया तो लोगों ने उसे दम्भी जाना तथा कहने लगे कि यह कारीगर संतों का नाम लेकर अपनी उदर पूर्ति करता है अब हम कुछ भी देने को तैयार नहीं हैं।

उस समय उस नगर के राजा की ओर से पहिलवानों की कुशती होनी थी वहां राजा का पहिलवान जो बहुत बली था तथा किसी से भी नहीं

हारा था। उस के साथ यदि कोई भिड़ जाय तो उसे पारितोषिक दिया जाना था। शर्त यह थी कि जो उस पहिलवान को गिरा दे उसे १००) एक सो रुपया मिलेगा और गिरने वाले को ५०) पचास रुपये राज्य कोष की ओर से दिये जाने थे। झंडे ने उस समय को गनीमत जाना तथा मन में विचारा कि मैं यदि गिर गया तो जो पचास रुपये मिलेंगे उससे तीनों अभ्यागतों को भोजन आदिक दे सकूंगा। बस यह विचार कर राजा के पहिलवान से उस ने दस्त मिलाया और कुशती के लिये तैयार हो गया। पहिलवान ने कहा-हे भाई! तुम तो मुझे पहिलवान नज़र नहीं आते फिर लड़ कैसे सकोगे। झंडे ने असली बात उसे बता दी कि मैं संतों की सेवा करनी चाहता हूं तथा जो कुछ भी मुझे प्राप्त होगा उस से साधुओं की सेवा करूंगा। उसने जब यह सुना तो यह जाना कि यह तो परमेश्वर का कोई भक्त है यह सुन कर पहिलवान का मन द्रवित हो गया। अब उस पहिलवान ने लंगोट कस कर कहा-हे भाई झंडा! आओ मेरे साथ कुश्ती करो। तब झंडा भी तैयार हो गया। जब दोनों घुलने लगे। तब पहिलवान उस झंडे से गिर गया तब राजा ने इनाम झंडे को दिया। तमाम नगर में यह चर्चा होने लगी कि झंडे ने नामी पहिलवान को पटक दिया। तब झंडे ने उन रुपयों से गुरु महाराज की सेवा दिल खोल कर की। तब गुरु जी ने अंतरयामी होते हुए सभी कार्य भली प्रकार जान कर पहिलवान को भवसागर से पार कर दिया।

तब झंडे को सतगुर नाम की खुमारी चढ़ गई फिर वह उदासानों की भांति इधर उधर फिरने लगा। फिर गुरु जी ने झंडे के सभी पाप दूर कर के उसे मुक्त फल दिया। पहिलवान का नाम मसकीन था तब गुरु जी ने अपने मुख से सलोक उच्चारण किया-

सलोकु॥ सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले॥
बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले॥ १ ॥

फिर झंडे ने गुरु जी के चरण कमलों पर नमस्कार किया।

साखी सैदो घेउ से

श्री गुरु नानक देव जी एक देश में पहुंचे वहां सैदो घेउ गुरु जी की सेवा करने लगा। गुरु जी प्रति पिछली रात्रि के समय नदी पार स्नान करने जाते तथा एकांत में बैठ कर निरंकार परमात्मा की भक्ति में लीन हो जाते थे आप तो ज्योति मिलाते थे परंतु सैदो ने यह जाना कि गुरु जी ख्वाजा खिजर की भक्ति करके यह महानता प्राप्त करते हैं अर्थात् गुरु जी खिजर की उपासना करते हैं यदि मैं भी दरया किनारे ख्वाजा खिजर की भक्ति करूं तो गुरु नानक जैसी मुझ में भी शक्ति उत्पन्न हो सकती है। यह सोच कर उस ने भी नदी किनारे आना शुरू कर दिया। एक दिन सैदो घेउ जा रहा था कि इसे एक पुरुष मिला। उस नवागत के हाथ में एक मछली थी, उसने पूछा भाई तेरा नाम क्या है? इस ने कहा मेरा नाम सैदो घेउ है। मैं प्रति दिन इस समय दरया किनारे भक्ति करने जाता हूं। इच्छा है कि खिजर मुझ में शक्ति प्रदान करे। अब मैं आप से पूछना चाहता हूं कि तुम कौन हो? वज नवगत बोला-मेरा नाम ख्वाजा खिजर है। मैं प्रति दिन इसी समय सतगुरु श्री नानक देव जी महाराज के दर्शन करने जाता हूं तथा उन की सेवा करता हूं क्योंकि गुरु नानक देव जी तो परमात्मा का साक्षात रूप है। ईश्वर में और गुरु नानक देव में कोई भी भेद नहीं है। निरंकार ने संसार का कल्याण करने के लिये श्री सतगुर नानक देव जी को भेजा है। जो ऐसा नहीं जानता वह नर पापी है। इस प्रकार कह कर ख्वाजा खिजर वहां से रवाना हुआ। सैदो घेउ हैरान होकर कहने लगा-कि हमने यह जाना था कि गुरु जी ने ख्वाजा खिजर से शक्ति ली है। यह तो हमारी सरासर भूल थी। खिजर तो स्वयं गुरु जी की सेवा पूजन करने जाता है।

एक दिन फिर इसे खिजर मिला। उस ने कहा-हे सैदो मैं तो जल रूप हां और गुरु जी पवन रूप है, मैं अनेकों बार उन से पैदा हुआ हूं और अनेकों बार उन के भीतर लीन हो गया हूं। जब खिजर से यह बातें सुनी तो सैदो घेउ गुरु जी के चरणों में आकर गिर पड़ा और त्राहि त्राहि शब्द कहने लगा। गुरु जी ने कहा-हे भाई! तुम इस समय कहां से आ रहे हो। तब उस ने ख्वाजा खिजर की तमाम गाथा कह सुनाई। तमाम कहानी सुन कर गुरु जी ने एक शब्द कहा-

गउड़ी बैरागणि महला १ ॥

रैणि गवाई सोइ कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥ हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥ १ ॥ नामु न जानिआ राम का ॥ मूड़े फिरि पाछै पछुताहि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनता धनु धरणी धरे अनत न चाहिआ जाइ ॥ अनत कउ चाहन जो गए से आए अनत गवाइ ॥ २ ॥ आपण लीआ जे मिलै ता सभु को भागठु होइ ॥ करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ ॥ ३ ॥ नानक करणा जिनि कीआ सोई सार करेइ ॥ हुकमु न जापी खसम का किसै वडाई देइ ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वार्तक अर्थ ॥ गुरु जी कहते हैं--हे भाई! यह जो जगत है सो रात्रि को सो जाता है और दिन खा पी कर गवा देता है, उस प्राणी का एक एक श्वास हीरे मोती जैसा है वह विषयों में नाश होता है तथा उस परमात्मा का नाम स्मरण नहीं करते और अंत समय इन को पश्चाताप होता है तथा अनित्य धन को धरती में गाड़ देते हैं। उसके लिये अनेकों पाप करते हैं तथा जो परमात्मा रूपी नित्य धन है। उसे कोई भी प्राप्त नहीं करता। झूठे और नाशवान धन की हर एक इच्छा करता है। अच्छी वस्तु ईश्वर कृपा के बिनां कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती। बाले ने कहा-हे गुरु अंगद देव जी! फिर महाराज ने फुरमाया कि जिस परमात्मा ने संसार उत्पन्न किया है उस ने सद उपदेष्टा हो कर

संसारी जीवों को परमात्मा के नाम जपने का सन्मार्ग प्रदान किया है जिस से जीवों का कल्याण हो।

यहु सुन कर सैदो घेउ ने कहा—हे महाराज! इस मन का कोई विश्वास नहीं है। यह उपदेश में से कुछ शब्द तो स्मरण रखता है तथा कुछ भूल जाता है। यदि आप के दर्शन प्रति दिन हों तो बेड़ा पार हो जाए। तब गुरु जी ने कहा-भाई हमारे दो स्वरूप हैं। एक सरगुण रूप है जो शरीर देख रहे हो तथा दूसरा निरगुण रूप है वह शब्द है। सरगुण रूप सदैव प्राप्त नहीं होता क्योंकि शरीर सदा नहीं है तथा शब्द का सदैव दर्शन होता रहता है और होता रहेगा यह सुन कर सैदो घेउ ने गुरु जी के चरणों में नमस्कार किया और प्रार्थना की कि मैं अज्ञानी जानता था कि आप को जो शक्ति प्राप्त है वह ख्वाजा की प्रदान की हुई है परंतु अब तो मुझे ज्ञान हो गया है कि आप साक्षात ईश्वर रूप हो तथा सभी प्रपंच आप से ही ओत प्रोत हैं। आप जिस को जगा दो वही जागता है तथा मनुष्य आप से विमुख निंद्रा और आलस्य का शिकार हो जाता है। यह सुन कर गुरु जी ने एक परम पवित्र सलोक उच्चारण किया-

सलोक महला २ ॥

अठी पहरी अठ खंडु नावा खंडु सरीरु॥ तिसु विचि नउ निधि नामु एकु भालहि गुणी गहीरु॥ करमवंती सालाहिआ नानक करि गुरु पीरु॥ चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ॥ तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ॥ ओथै अंम्रितु वंडीऐ करमी होइ पसाउ॥ कंचन काइआ कसीऐ वंनी चढ़ै चढ़ाउ॥ जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पाई ताउ॥ २॥ सती पहरी सतु भला बहीऐ पड़िआ पासि॥ ओथै पापु पुंनु वीचारीऐ कूड़ै घटै रासि॥

ओथै खोटे सटीअहि खरे कीचहि साबासि॥ बोलणु
फादलु नानका दुखु सुखु खसमै पासि॥

॥ वार्तक ॥ जब यह शब्द जनता ने सुना तब सभी नर नारी गुरु जी की शर्ण को प्राप्त हुए। तब गुरु जी ने उन सब को उपदेश दिया तथा कहा कि अतिथि की सेवा करो। नेक कमाई करो सच्च बोलो। धर्मशाला बनवाओ। प्रेम से रहो। प्रभु नाम का प्रति दिन कीर्तन करो अंदर बाहर शुद्ध रखो तथा अकाल पुरुष को सर्व व्यापक जानो फिर गुरु जी आगे चले।

साखी पंजाब आने की

अब गुरु नानक देव जी अनेकों देशों का भ्रमण करके तथा अनेकों जीवों का कल्याण करके पंजाब की ओर लौटे। मार्ग में एक निर्जन भयंकर बन आया। जहां कोई भी बस्ती नहीं थी। दस दिन पर्यंत उसी में रहे। तब मर्दाने को अत्यंत भूख लगी। तब कहने लगा-हे परमात्मा! हम तो डूम लोग हैं गावों में से मांग कर कुछ न कुछ पालन कर ही लेते थे। अब तो भूखे मरने लगे हैं। अल्लाह ने यदि मेहर कर दी तो भयानक वन से बाहर निकलेंगे नहीं तो बस इसी जंगल में फातहा पढ़ा जायेगा। यदि कोई द्रिंदा जानवर हमें मार कर खा गया तो बस अल्लाह ही मालक है। मुझे तो यही नज़र आता है कि भांग के भाड़े जान जाने वाली है। यह सुन कर गुरु जी मुस्करा कर कहने लगे-हे भाई मर्दाना! डरना उचित नहीं है। जब तक हम तेरे साथ हैं तब तक कोई तेरे निकट नहीं आ सकता जरा होशियार हो। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! होशियार यहां कैसे रहा जाये यह भयानक निरजन बन है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह उजाड़ नहीं यह तो बस्ती है। जहां परमात्मा का प्रेम पैदा हो उसे उजाड़ कहना पागलपन है तथा जहां परमेश्वर का नाम भूल

जाये उस स्थान को उजाड़ जानो। फिर गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

रागु आसा महला १ ॥

देवतिआ दरसन कै ताई दूख भूख तीरथ कीए ॥ जोगी जती जुगति महि रहते करि करि भगवे भेख भए ॥ १ ॥ तउ कारणि साहिबा रंगि रते ॥ तेरे नाम अनेका रूप अनंता कहणु न जाही तेरे गुण केते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दर घर महला हसती घोड़े छोडि विलाइति देस गए ॥ पीर पेकांबर सालिक सादिक छोडी दुनीआ थाइ पए ॥ २ ॥ साद सहज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोडे चमड़ लीए ॥ दुखीऐ दरदवंद दरि तेरै नामि रते दरवेस भए ॥ ३ ॥ खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूतु धोती कीन्ही ॥ तूं साहिबु हउ सांगी तेरा प्रणवै नानकु जाति कैसी ॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥ गुरु जी ने कहा-हे मर्दाने! तेरे बगैर बाणी पूर्ण नहीं होती इस लिये तू रबाब मेल कर बजा। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! मैं रबाब किस प्रकार बजाऊं। मैं तो भूख से व्याकुल हो रहा हूं। भूखे पेट रबाब नहीं बजाया जाता। गुरु जी ने कहा-अच्छा फिर तू किसी बस्ती में जाकर भूख का इंतजाम कर। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! मुझ में तो कहीं जाने की सामर्थ्य नहीं है मैं तो मरने लगा हूं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! हम तुम को मरने नहीं देते। तुम होशियार हो जाओ। मर्दाने ने कहा-अब होशयार कैसे हुआ जाये अब तो लबों पर श्वास हैं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तू अब इन वृक्षों के फल खा ले परंतु फल बांधने नहीं होंगे। तब गुरु जी की आज्ञा से मर्दाना फल खाने लगा। फल अत्यंत स्वाद थे। मर्दाने ने सोचा कि फिर कहीं ऐसे फल प्राप्त हों ना हों कुछ बांध लूं तो क्या हानि है? जब यात्रा में दूसरा दिन चढ़ा तब मर्दाने ने वह बांधे हुए फल निकाल कर मुंह में डाले। डालते ही मर्दाना पृथ्वी पर गिर पड़ा तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह क्या हुआ है?

तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज! मैंने आप की आज्ञा न मान कर कुछ फल बांध लिये थे। अब जब मैं उन को खाने लगा तब गिर गया हूं।

गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुम ने गलती की है। यदि तुम ने खाने ही थे तो हमारी आज्ञा प्राप्त करके खा लेता। भाई! यह फल तो विष के हैं। हमारी आज्ञा से यह अमृत रूप हो गये थे। फिर गुरु जी ने अपना चरण मर्दाने के माथे पर लगाया। बस तत्काल मर्दाना उठ कर बैठ गया और गुरु जी की स्तुति मुक्त कंठ से करने लगा तथा कहने लगा-हे महाराज! हम लोग मरासी मांग कर खाने वाले हैं और आप गुणातीत पवनहारी दयालु परिपूर्ण हो और हमारा आप का मेल असंभव है। अतः एवं आप हमें जाने की आज्ञा दें तो ठीक है। गुरु जी ने मुस्करा कर कहा-हे मर्दाना! हमारा तुम्हारे साथ प्रेम है। तुम यह बताओ कि तुम जाने से किस प्रकार रुक सकते हो? मर्दाने ने कहा-हे गुरु देव! आप यदि हमारी भूख का बंदोबस्त कर दो तो फिर यह दास सदैव आप के चरणों में ही रह सकता है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तू संसार से सुरखरु हो गया हैं। तू निहाल हैं निहाल हैं। फिर मर्दाने ने चरणों पर अपना माथा रख दिया। गुरु जी ने उठा कर उन्हें भूत भविष्य वर्तमान का ज्ञाता कर दिया धन्य हैं गुरु नानक देव जी महाराज!

अब गुरु जी उस भयानक बन से बाहर आए और मर्दाने को कहने लगे—हे मर्दाना! अब किधर जाने का विचार है। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! जैसे आप की इच्छा है वैसे करो। यदि मुझे पूछते हो तो मेरा मन घर की ओर जाने को चाहता है तब गुरु जी ने मुझे (बाले) से पूछा—हे बाला! मर्दाना क्या कहता है? मैंने कहा-हे महाराज! जैसे आप की इच्छा हो वैसे करो यदि मुझ से पूछते हो तो मर्दाना सत्य कहता है। मैं भी घर की ओर लौटने के पक्ष में हूं क्योंकि बाल बच्चों को मिलने के लिए मन चाहता है तथा इस मर्दाने की भी यही इच्छा है। घर से

आए बहुत समय व्यतीत हो चुका है मोह माया उमड रही है। मैहता कालू जी तथा माता आदिक सभी याद कर रहे होंगे। उन के लिये भी घर को लौटना उचित है। आगे जैसे आप की इच्छा हो वैसे ही हमें स्वीकार है। आप बहन जी के पास श्री चंद जी को छोड़ आये हुए हो। उसके लिये भी कोई स्थान बनाना परमावश्यक है। तब गुरु जी ने कहा-हे बाला! यहां से दो सौ कोस की दूरी पर तलवंडी है। अब गुरु जी बारां वर्ष के पश्चात् अपने नगर तलवंडी में पधारे। उस समय संवत १५७० बिक्रमी था। उस समय गुरु जी की आयु (४६) छयालीस वर्ष की थी। जब हम तीनों गांव के बाहर एक स्थान पर बैठ गये तब मर्दाने ने कहा-यदि आप की आज्ञा हो तो मैं अपने घर जा कर बाल बच्चों को मिलूं और देखूं कि कौन कौन मर गया है। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तूं भोला हैं यह तो संसार को तारने आये हैं। तू हमारी सेवा में रहे तो तुम्हारा आदमी किस प्रकार मर सकता है जाओ भली प्रकार देख कर आओ परन्तु हमारे घर में आने की बात नहीं करनी होगी। बहुत अच्छा कह कर मर्दाना अपने घर गया। घर वालों ने देखा तो सभी मर्दाने को कंठ से लगा कर मिले। वैसे तो मर्दाना डूम था परंतु गुरु महाराज के सहवास ने उसे भी पूज्य कर दिया जैसे चंदन के निकट वर्ती साधारण वृक्ष भी चंदन के तुल्य हो जाते हैं जो आता था वहीं मर्दाने का सत्कार करता था। वह सभ गुरु नानक जी का प्रताप था वहां से मर्दाना गुरु जी के घर को गया गुरु जी की माता ने जब मर्दाने को देखा तो भाग कर आई तथा मर्दाने को कंठ से लगा लिया और नेत्रों में जल भर कर कहने लगी—हे मर्दाना! कहीं नानक देव का तुम को पता हो तो बताओ आज कहां पर है? इतने में और लोग भी आ गये तथा श्री गुरु नानक देव का समाचार सभी पूछने लगे। मर्दाने ने उत्तर दिया कि मैंने श्री गुरु नानक देव को सुलतानपुर में देखा था।

आगे मुझे कोई ज्ञान नहीं है। इतनी कह कर मर्दाना वहां से चलने को तैयार हुआ। मर्दाने को शीघ्र ही लौटते देख कर माता जी को कुछ संदेह हुआ। तब कुछ वस्त्र और मिठाई लेकर माता जी भी मर्दाने के पीछे पीछे चले। माता जी ने मर्दाने से कहा—हे मर्दाना! तूं मुझे मेरे पुत्र के दर्शन करा तब मर्दाना चुप चाप चलता रहा जब दो कोस पर आये तो गुरु जी ने अपनी पूज्य माता जी को देखा तो भाग कर माता जी के चरणों पर शीश धर दिया। माता ने सारे संसार के पिता को अपना प्यारा पुत्र जान कर झट से उठाया और कंठ से लगा लिया। नेत्रों में प्रमाश्रु बहने लगे और कहने लगी-हे पुत्र! मैं तेरे बलिहार हूं। बेटा! तू तो मेरे बूढ़े नैनों का एक सहारा है। हे पुत्र! तू जिस जिस स्थान पर गया है। मैं उस स्थान पर बलिहार हूं। हे बेटा! मैं तेरे दर्शनों से अपने को धन्य मान रही हूं। अब गुरु जी के नेत्रों में भी मातृ स्नेह के आंसू आ गये। फिर प्रसन्न होकर हंसने लगे तथा मर्दाने को आज्ञा हुई कि तुम रबाब बजाओ। फिर गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-जो परम पवित्र कल्याणकारी है।

रागु वडहंसु महला १ ॥

अमली अमलु न अंबड़ै मछी नीरु न होइ॥ जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ॥ १ ॥ हंउ वारी वंञा खंनीऐ वंञा तउ साहिब के नावै॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहिबु सफलिओ रुखड़ा अंमृितु जा का नाउ॥ जिन पीआ ते त्रिपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ॥ २ ॥ मै की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि॥ तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरी पालि॥ ३ ॥ नानकु तेरा बाणीआ तू साहिबु मै रासि॥ मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥ फिर माता जी ने वस्त्र और मिठाई आगे रख दी और कहा-हे बेटा! यह खा लो। गुरु जी ने कहा-हे माता जी! मेरा तो पेट भरा हुआ है। माता जी ने कहा-हे बेटा! तूं बगैर खाए कैसे तृप्त हैं। तब गुरु जी महाराज ने एक शब्द और उच्चारण किया-

सिरीरागु महला १ ॥

सभि रस मिठे मंनीऐ सुणिऐ सालोणे ॥ खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नादि कीए ॥ छतीह अंम्रित भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥ १ ॥ बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥ जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥

फिर माता जी ने कहा-हे बेटा! यह फकीरों का बाना खिलता उतार दो और यह नवीन वस्त्र पहिन लो। तब गुरु जी ने दूसरी पउड़ी उच्चारण की-

॥ पउड़ी ॥

रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥ नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥ कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥ २ ॥ बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ॥ जितु पैधे तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥

उधर मैहता कालू जी को पता चला तो वह भी पुत्र दर्शन को घोड़े ऊपर चढ़ कर आये। गुरु जी ने पिता के चरणों पर अपना सिर रख कर प्रणाम किया तब कालू पिता ने जगतु पिता को अपने कंठ से लगा कर माथा चूमा और आंखों में प्रेम के आंसू आ गए। कहने लगा—हे पुत्र नानक! तुम घोड़े पर चढ़ कर अपने घर को चलो। गुरु जी ने उत्तर दिया—हे पिता जी! यह घोड़ा मेरे किसी काम का नहीं है। इस के पश्चात् गुरु जी ने तीसरी पउड़ी कही—

घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ॥ तरकस तीर कमाण

सांग तेगबंद गुण धातु॥ वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति॥ ३ ॥ बाबा होरु चढ़ना खुसी खुआरु॥ जितु चढ़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार॥ १ ॥

॥ वार्तक ॥ तब फिर कालू जी ने कहा-हे नानक! उठ कर घर को चलो। मैंने बड़े सुन्दर नवीन मकान बनाये हैं उस में तुम निवास करो। सभी परिवार तुम्हारा ही है। उन को मिलो क्योंकि तुम बहुत देर पीछे आये हो और जब तुम्हारी इच्छा होगी फिर चले जाना। यह सुन कर गुरु जी ने चौथी पउड़ी उच्चारण की-

पउड़ी ॥ घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु॥ हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु॥ नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु॥ ४ ॥ बाबा होरु सउणा खुसी खुवारु॥ जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार॥

॥ वार्तक ॥ कालू जी ने कहा-हे बेटा नानक! यह तो बताओ कि तुम्हारा मन किस लिये वैराग्य को प्रिय जानता है यदि तू चाहे तो मैं तेरा दूसरा विवाह करने को तैयार हूं। तब गुरु जी ने और शब्द उच्चारण किया-

रागु सूही महला १ ॥

जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइआ॥ दानि तेरै घटि चानणा तनि चंदु दीपाइआ॥ चंदो दीपाइआ दानि हरि कै दुखु अंधेरा उठि गइआ। गुण जंञ लाड़े नालि सोहै परखि मोहणीऐ लइआ॥ वीवाहु होआ सोभ सेती पंच सबदी आइआ। जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़े लाइआ॥ १ ॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता॥ इहु तनु जिन सिउ गाडिआ मनु लीअड़ा दीता॥ लीआ त दीआ मानु जिन्ह सिउ से सजन किउ वीसरहि॥ जिन्ह दिसि आइआ होहि

रलीआ जीअ सेती गहि रहहि ॥ सगल गुण अवगुण न कोई
होई नीता नीता ॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥ २ ॥

॥ फिर गुरु जी ने और शब्द कहा ॥

सलोक महला ॥ ३ ॥ सूहवीए निमाणीए सो सहु सदा सम्हालि ॥
नानक जनमु सवारहि आपणा कुलु भी छुटी नालि ॥ मः १ ॥ गुणा
का होवै वासुला कढि वास लईजै ॥ जे गुण होवन्हि साजना मिलि
साझ करीजै ॥ साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगुण चलिऐ ॥
पहिरे पटंबर करि अडंबर आपणा पिड़ मलीऐ ॥ जिथै जाइ बहीऐ
भला कहीऐ झोलि अंम्रितु पीजै ॥ गुणा का होवै वासुला कढि
वासु लईजै ॥ ३ ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥
आखण त कउ जाईऐ जे भूलड़ा होई ॥ जे होइ भूला जाइ कहीऐ
आपि करता किउ भुलै ॥ सुणे देखे बाझु कहिऐ दानु
अणमंगिआ दिवै ॥ दानु देइ दाता जगि बिधाता
नानका सचु सोई ॥ आप करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥ तब गुरु जी ने कहा-हे पिता जी! यह जो विधाता है यह कभी नहीं भूलता तथा यह संजोग वियोग उसी की इच्छा अनुसार होते हैं। माता जी कहने लगी-हे पुत्र! यह तमाम कहानियां छोड़ कर घर चलो क्योंकि अब का संयोग फिर कभी हो अथवा न हो। इस लिये समय की नाजुक हालत देख कर हमें इस से लाभ प्राप्त करना उचित है। तभी गुरु जी ने एक पवित्र शब्द उच्चारण किया-

रागु मारू महला १ ॥

पिछहु राती सदड़ा नामु खसम का लेहि ॥ खेमे छत्र सराइचे
दिसनि रथ पीड़े ॥ जिनी तेरा नामु धिआइआ तिन कउ सदि
मिले ॥ १ ॥ बाबा मै करमहीण कूड़िआर ॥ नामु न पाइआ

तेरा अंधा भरमि भुला मनु मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साद कीते दुख परफुड़े पूरबि लिखे माइ ॥ सुख थोड़े दुख अगले दुखे दुखि विहाइ ॥ २ ॥ विछुड़िआ का किआ बीछुड़ै मिलिआ का किआ मेलु ॥ साहिबु सो सालाहीऐ जिनि करि देखिआ खेलु ॥ ३ ॥ संजोगी मेलावड़ा इनि तनि कीते भोग ॥ विजोगी मिलि विछुड़े नानक भी संजोग ॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥ गुरु जी ने कहा-हे माता जी! हम फिर कभी आयेंगे अब हम उदास हो रहे हैं थोड़े दिनों तक आयेंगे। माता जी ने कहा-एक बार तुम घर चलो जिस से मन को संतोष हो। हे बेटा! तुम्हारा जाना सुन कर हमें उदासी हो जाती है यदि तुम यहां रहो तो हम श्री चंद्र आदिक को भी यहां ही बुला लें। हे पुत्र! जब तेरा जन्म हुआ था तो पंडितों ने कहा था—हे त्रिपते! यह तेरा जो पुत्र है यह अपार शक्ति का स्वामी होगा और तमाम पीर फकीर पैगंबर तथा देवता इसके समक्ष झुकेंगे परंतु हे पुत्र! मेरे मन को चाव हैं वे अभी पूर्ण नहीं हुए। हे पुत्र! वैसे मेरा क्या जोर है यदि तू रहना स्वीकार करें तो मुझे सुख होगा। आगे जैसे तेरी इच्छा।

इतने में गुरु जी का चाचा आदिक सभ परिवार वहां आ गया। गुरु जी ने चाचा लालू आदिक का यथोचित सत्कार किया। लालू बुद्धिमान पुरुष था। उस ने बैठ कर कहा-हे नानक देव! आप ने हम पर बहुत उपकार किया है जो हमें दर्शन देकर कृतार्थ किया है। तब गुरु जी ने कहा- हे पूज्य चाचा जी! परमात्मा आप पर कृपा करे। आप परिवार में अधिक बुद्धिमान हैं। मैं अपने मन की बात आप के समक्ष कहने लगा हूं। इस समय मेरा मन अति ही उदास हो रहा है। कुछ दिन इधर उधर सैर करके फिर तुरंत आप सभ का दर्शन करेंगे। इस प्रकार गुरु जी सारे परिवार को मिले। सब का सत्कार कर के माता जी के

चरणों पर नमस्कार किया तथा पिता जी को बार बार नमस्कार की और कहा हे पिता जी! हम थोड़े दिनों तक आप के पास आकर रहेंगे। फिर गुरु जी सब को धैर्य देकर भ्रमणार्थ चले गये।

साखी रावी जाने की

बाले ने कहा-हे गुरु अंगद देव जी महाराज! उस समय गुरु जी जहां जाते थे वहां के सभी जीव भवसागर से पार हो जाते थे। जैसे एक चन्दन का विटप अपने इर्द गिर्द अन्य वृक्षों को भी सुगंधित करता है। उसी प्रकार जो भी गुरु जी के निकट जाता था उस के ही भाग्य उदय हो जाते थे और वह भवजल पार कर जाता था।

चलते चलते गुरु जी एक गांव के निकट गये। वहां एक पुरुष रावी नदी पर स्नान को आता था। एक दिन उस ने देखा कि गुरु नानक देव जी बिराज रहे हैं और मर्दाना रबाब बजा रहा है। गुरु जी के मुख से पवित्र शब्द सुन कर वह पुरुष निकट आ कर गुरु जी के चरणों पर नमस्कार करके बैठ गया। कुछ काल पीछे वह उठ कर अपने घर जाकर अपनी पत्नी को कहने लगा—हे प्यारी! आज मैंने तीन संत देखे हैं यदि तू उनके लिये भोजन तैयार करे तो मैं उन को दे आऊं। मैंने प्रण किया है कि उन को खिला कर ही आप भोजन पाऊंगा। उसकी पत्नी ने पति की आज्ञा से बहुत शीघ्र भोजन तैयार किया। फिर वह भोजन लेकर गुरु जी के पास गया तथा भोजन गुरु जी के आगे रख दिया तथा प्रार्थना की-हे महाराज ! भोजन पाओ। गुरु जी ने उस का प्रेम देख कर मुझे (बाला) को कहा-हे बाला! तू इस भोजन में से चौथा भाग तो मर्दाने को दे दो और बाकी भोजन सभी में बांट दो। मैंने गुरु जी की आज्ञा का पालन किया तथा भोजन बांट दिया तथा भक्त को परमोच्च उपदेष देकर गुरु जी आगे चले।

साखी दोदा क्रोड़ीआ की

एक दिन गुरु जी ने कहा-हे बाला मर्दाना! चलो तुम को रावी नदी की सैर करायें। गुरु जी हमें साथ लेकर रावी के तट पर आ बिराजे तब मर्दाना रबाब बजाने लगा और शब्द भी पढ़ने लगा फिर मर्दाने ने कहा-महाराज! अब आगे भी चलना चाहिऐ तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! उतावला मत हो यहां एक दोदे जिमींदार रहता है। उस की धर्म पत्नी हमें जानती है। इतने में उस दोदे की धर्म पत्नी वहां आ गई और गुरु जी को बैठे देख कर बहुत ही प्रसन्न हुई। वह नारी अति निर्धन थी तथा उस के कोई पुत्र भी नहीं था। उस ने अपने घर आकर अपने पति को कहा-हे ठाकुर! एक संत रावी के तट पर आये हैं। चलो उन के दर्शन करो अब वे दोनों चले तथा गुरु जी के लिये दूध ले लिया। गुरु जी के निकट जा कर प्रणाम किया। गुरु जी ने कहा-हे दोदा! प्रसन्न हो। दोदे ने अति निम्रता से कहा-हे महाराज! आप की कृपा है। इस के उत्तर में गुरु जी ने कहा-हे दोदा! परमात्मा तुम्हारे अंग संग रहे। उस दिन से दोदे की पत्नी तो नित्य प्रति दर्शनों को आने लगी परंतु दोदा कभी कभी आता था। एक दिन दोदे की स्त्री दूध लेकर गुरु जी के दर्शनों को आई। पीछे जब दोदा अपने घर पत्नी को न पाकर श्री गुरु जी के चरणों में आया। गुरु जी ने कहा-हे दोदा! तू हमें बता तेरे मन में क्या इच्छा है? हमारे स्वामी परमेश्वर के घर में सभ कुछ है। हम तुझे उस परमात्मा से जो चाहो दिला सकते हैं तथा यदि तू दूध पीना चाहे तो यह नदी दूध की बह रही है जितना पीना चाहो पी सकते हो तब दोदा नदी का जल पीने लगा और उसे दूध का ही स्वाद आने लगा। अब दोदे को विश्वास हो गया कि गुरु जी सभी कामना पूर्ण कर सकते हैं। उस ने गल में पल्ला डाल कर गुरु चरणों में प्रार्थना

की। गुरु जी ने कहा-हे दोदा! जो कुछ चाहो मांग लो। दोदे ने कहा-हे महाराज! मैं दूध और पुत्र मांगता हूं। गुरु जी ने कहा-हे दोदा! कुछ और भी मांगो। उस ने कहा-हे महाराज! मैं दूध और पूत से भरपूर होना चाहता हूं। गुरु जी ने तीन बार कहा-कुछ और मांगो परन्तु उस ने अपार दूध पूत ही मांगा। गुरु जी ने कहा-तथास्तु। अब गुरु जी वहां निवास करने लगे। गुरु जी के दर्शनों को अनेक भक्त आते थे।

पातशाह की ओर से वहां एक थानेदार जिस का नाम क्रोड़िआ था उस ने सोचा कि यह फकीर कोई भारी जादूगर है। यह सोच कर उस ने अपने सिपाही को कहा कि तुम मेरी घोड़ी तैयार करो। उस को वहां से उठा कर आऊंगा नहीं तो उसे बांध कर हवालात में बंद करूंगा। वह थानेदार इस प्रकार के दृष्ट भाव लेकर घोड़ी पर चढ़ कर आया तो रास्ते में घोड़ी से गिर पड़ा और उस की टांग टूट गई। अब चारपाई पर पड़ा था। बहुत दिन के पश्चात् जब कुछ ठीक हुआ तो एक दिन फिर वह गुरु जी की ओर आया और मार्ग में वही बात फिर मन में आई कि या तो नानक देव को वहां से उठाऊंगा या बांध कर ले जाऊंगा। जब यह भाव मन में आये तो वहीं अंधा हो गया। तब लोगों ने कहा-हे भ्राता! अगर तू शुद्ध भावना से जाये तभी वहां जा सकेगा अन्यथा नहीं। अब क्रोड़िया थानेदार कुछ होश में आया तथा लोगों से गुरु देव की स्तुति सुन कर पैदल चल कर आया और गुरु जी के चरणों में नमस्कार करके बैठ गया। गुरु जी ने कहा-आओ भाई कैसे आये हो तब क्रोड़िया ने हाथ बांध कर प्रार्थना की कि हे महाराज! जो मैंने भूल की है उसे क्षमा करो मुझे अहंकार ने अंधा कर दिया था। आप दया के समुद्र हो तथा मैं आप से दया की भिक्षा मांगने वाला आप के द्वार पर आया हूं और यदि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करके इसी स्थान पर निवास स्वीकार करो तो मैं कुछ जमीन आप की भेटा करूंगा

तथा आप अपने नाम का यहां ग्राम बसाओ। यह मेरी हार्दिक प्रार्थना है। गुरु जी ने कहा-हे सज्जन! यह नव खंड पृथ्वी सारी ही हमारी है। हम ने भूमि का टुकड़ा क्या करना है। तब मर्दाने ने कहा-आप श्री चन्द तथा लक्ष्मी दास को इसी स्थान पर बुला कर रखो। तब गुरु जी ने बाले को कहा अच्छा तुम जाओ तथा दोनों बालकों को यहां ले आओ। आज्ञा पा कर बाला मर्दाना गये तथा श्री कालू जी को जा कर नमस्कार किया तथा रावी के किनारे गुरु जी का विश्राम भी बताया तथा कहा-कि गुरु जी ने आप लोगों को वहां बुला भेजा है। बस कालू जी ने अति प्रसन्नता से जाने की तैयारी कर कली तथा राय बुलार से छुट्टी लेने को कालू जी गये। तब राय बुलार ने कहा-हम नानक देव जी की आज्ञा को कभी टाल नहीं सकते। मैं तो श्री गुरु नानक देव को साक्षात अल्लाह ताला ही मानता हूं। फिर कालू जी को छुट्टी दे कर कहा-हे बेदी जी! मेरी ओर से गुरु जी के चरणों पर हाथ जोड़ कर नमस्कार कहनी। उधर मर्दाना अपने घर में जा कर सब से मिला और सारी बात सुनाई तथा कहा कि गुरु जी ने अपने परिवार को रावी के तट पर बुलाया है। अब तुम लोग भी वहीं चल कर रहो। मर्दाने के परिवार ने कहा-कि तुम लोग तो एक स्थान पर ठहरते ही नहीं। हमें वहां छोड़ कर आप लोग कहीं चले गये तो फिर हमारा कौन है? इस लिये हम आप के साथ जाने को तैयार नहीं हैं। तब मर्दाना जवाब लेकर कालू जी को जा मिला। अब यह लोग गुरु नानक जी को जा कर मिले। गुरु जी ने माता पिता आदिक सभी का यथोचित सत्कार किया। तब उन लोगों ने कहा हमारे तो अहोभाग्य हैं जो आप के दर्शन हुए हैं। हम लोग तो अपनी किसानी छोड़ कर आप के दर्शन को आये हैं तब श्री गुरु जी महाराज ने श्री रागु में एक शब्द उच्चारण किया—और कहा-हे पिता जी यह किसानी ही आप के कल्याण का कारण बनेगी।

सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥

एहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ सारिंग पाणी॥ मनु किरसाणु हरि रिदै जंमाइ लै इउ पावसि पदु निरबाणी॥ १॥ काहे गरबसि मूढ़े आइआ॥ पित सुतो सगल कालत्र माता तेरे होहि न अंति सखाइआ॥ रहाउ॥ बिखै बिकार दुसट किरखा करे इन तजि आतमै होइ धिआई॥ जपु तपु संजमु होहि जब राखे कमलु बिगसै मधु आस्रमाई॥ २॥ बीस सपताहरो बासरो संग्रहै तीनि खोड़ा नित कालु सारै॥ दस अठार मै अपरंपरो चीनै कहै नानकु इव एकु तारै॥ ३॥

॥ इस का परमार्थ॥

हे पिता जी! इस शरीर की खेती करो। इस में शुभ कर्मों का बीज डालो और प्रभु का नाम जप है उसे जल समझो और मन को किरसान बनाओ। प्रभु ध्यान में अपना मन लगाओ। बस फिर मोक्ष प्राप्त होगा तथा माया को मिथ्या मान कर इस का त्याग करो। हे पिता जी! इन कुटुबियों ने साथ नहीं जाना। विषयों के भोग और काम क्रोध आदिक इन का भी सर्वदा त्याग उत्तम है। जप तप संयम इनको अपनी इस खेती के रक्षक बनाओ तब तुम्हारा मन निज आश्रम में स्थित हो जायेगा। फिर परमात्मा चिंतन से मुक्ति पाओगे और जो ईश्वर का नाम सुणे और सुणाएगा उस का भी उधार होगा। माता ने कहा—हे बेटा! यदि तेरी कृपा होगी तो हमें भी ईश्वर का साक्षात्कार दर्शन हो जायेगा। कालू जी ने कहा-हे पुत्र! यह राग द्वेष ज्ञान अनेकों जन्मों से चला आंता है। ज्ञान संत महा पुरुषों की संगते और उन के प्रवचनों से उत्पन्न होता है परंतु वह ज्ञान अनेकों जन्मों के अज्ञान को कैसे काटेगा? गुरु जी

ने कहा-हे पिता जी! लकड़ी चाहे कितने ही जन्मों की पुरानी हो। उसे एक चिंगारी अग्नि की भले ही वह नवीन हो परंतु उसे जलाने की सामर्था रखती है। इसी प्रकार लकड़ी की भांति तो अज्ञान है और संतों के प्रवचन ज्ञान रूपी अग्नि के सदृश्य हैं। उस के नाश करने को पर्याप्त हैं।

यह बातें वह क्रोड़िया थानेदार भी सुन रहा था। इस परमार्थिक बातों ने उस पर बहुत ही असर किया। वह तो गुरु के चरणों में भ्रमर बन गया। कहने लगा हे महाराज! मैं एक दुर्ग बनवाना चाहता हूं। उस में जो ईंट लगानी है वह किस के नाम की होनी चाहिये। तब गुरु जी ने कहा-हे मित्र! वह ईंट करतार के नाम की होनी चाहिये अर्थात उस स्थान का नाम करतारपुर ही होना योग्य है। तब क्रोड़ीये ने कच्चा कोठा बनवा कर श्री गुरु जी के महल पक्के तैयार करवाये। तब वहां सारा परिवार बसाया गया। जब क्रोड़िया जाने लगा तो उस ने प्रार्थना की हे महाराज! जमीन की जो पैदावार आये उसे आप धर्मशाला के ही हिसाब में लगायें। फिर क्रोड़ीया गुरु जी के चरणों पर नमस्कार करके विदा हुआ।

उधर दोदे की गाय भैंसें अधिक होती जा रही थी। दिन का दूध श्री गुरु जी के अर्पण होता था तथा रात्रि का दूध अपने घर में रहता था। इतने में आश्विन के श्राद्ध आये तो मैहता कालू जी ने अपने पिता का श्राद्ध किया। जब कालू ब्राह्मणों के पैर धोने लगा तब गुरु जी ने पूछा-हे पिता जी! यह इतना भोजन का सामान किस लिए तैयार किया गया है। कालू जी ने कहा-हे नानक देव! आज मेरे पिता का श्राद्ध है। गुरु जी ने कहा-हे पिता जी! जब तक वासनाएं बंधी हुई हैं तब तक जीव स्वर्ग नर्क आदि भोगता है। जब वासनाओं से मुक्त होता है तब यह स्वयमेव मुक्त हो जाता है जैसे किसी लड़के के हाथ से डोर टूट

जाय तो वह लड़का डोर को गांठ देता है और तब तक गुड्डी उस के आश्रय होती है तथा जब टूट जाती है डोर तो वह कन कौआ भी चला जाता है सो जो अज्ञानी हैं उन के मोह की डोर पितरों के बंधन में रखती है। गुरु जी ने कहा-हे पिता जी! आप परमेश्वर का नाम लेकर अपने नेत्र मूंद लो। तब कालू जी ने वैसे ही किया और देखा कि मैं बैकुंठ लोक में बैठा हूं और श्री विष्णु जी चतुर्भुज होकर सामने बैठे हैं और उस के सभी पितर उसी बैकुंठ में कालू जी से मिल रहे हैं। उन पितरों ने कालू जी को आर्शीवाद देकर कहा हे कालू! तू धन्य है जिस के घर में श्री नानक देव जी प्रगट हुए हैं। इन्हीं की कृपा से हम सभी कल्याण को प्राप्त हुए हैं। इसी अवस्था में कालू जी बैकुंठ में एक वर्ष पर्यंत रहे हैं अत्यंत सुंदर भोजन और बैकुंठ भोग कालू जी को प्राप्त होते रहें। फिर कालू जी ने कहा-हे पितृ देव! अब मैं मात लोक में जाना चाहता हूं। आज्ञा दीजिये। जब मैं अपना यह शरीर त्यागन करूंगा तब मैं आप के निकट आ जाऊंगा इतनी कह कर कालू ने जब नेत्र खोले तो कालू जी अभी ब्राह्मणों के पैर ही धो रहे हैं तथा गुरु जी सन्मुख बैठे हैं। तब कालू जी ने कहा-हे पुत्र! जो मैंने एक कौतुक देखा है अब यदि तुम कहो तो मैं श्राद्ध करूं नहीं तो नहीं करूंगा। तब गुरु जी ने कहा-हे पिता जी! संसार की चाल है उसे करना ही होता है। जब संसारी लोक एकत्र होकर किसी रीति को बांधते हैं तो वह रीति करनी ही अच्छी होती है तथा जब संसारी समाज उस रीति को अनुचित समझ कर बंद कर दें तब वही रीति त्यागय होती है ऐसी ही मर्यादा महापुरुषों ने कथन की है फिर कालू जी ने कहा-हे नानक देव! मैं एक वर्ष भर बैकुंणठ में रहा हूं परंतु जब वहां से आया तब क्षण भर ही व्यतीत हुआ था। यह मुझे बहुत ही अचम्भा मालूम होता है। गुरु जी ने कहा-हे पिता जी! उस अकाल पुरुष की माया महान् है। उस में हैरान होने का कोई

भी स्थान नहीं है। आप परमेश्वर का नाम स्मरण करो। यह उपदेश सुन कर और विचित्र कौतुक देख कर कालू जी ने गुरु नानक देव जो को नमस्कार किया और तब से ईश्वर का रूप जान कर सदैव सतकारिक दृष्टि से देखा। अब गुरु जी उन सब को वहां छोड़ कर आगे की ओर रवाना हुए। धन्य सतिगुर नानक देव जी महाराज!

साखी राम तीर्थ पर ब्राह्मण की

भ्रमण करते करते श्री गुरु नानक देव जी महाराज पूर्णमाशी के दिन राम तीर्थ में पधारे। जब अनेकों लोग स्नान कर रहे थे और अच्छा खासा मेला था। एक ब्राह्मण स्नान करके एक शालग्राम की मूर्ती को लगा कर आगे रख कर बैठा है और स्वयं भी द्वादश तिलक लगा रखे हैं और बार बार दंडवत प्रणाम करके अपनी भक्ति प्रदर्शन कर रहा है। सवर्तयामी गुरु जी भी उस के उस पदर्शन को देखने लगे। जब ब्राह्मण आंखें बंद करके बैठा तब गुरु जी ने कहा-हे विप्रवर! तुम किस का ध्यान कर रहे हो? तब उस ने कहा—हे संत जी! मैं प्रभु शालग्राम का ध्यान करता हूं। गुरु जी ने कहा-हे मित्र! जो मूर्ती है वह तो आप के आगे पड़ी है तथा तुम उस का ध्यान नेत्र बंद करके कर रहे हो। उस ने कहा—हे संतवर! जब मैं ध्यान स्थित होता हूं तब मुझे तीनों ही लोक नज़र आते हैं। गुरु जी ने कहा—कि तीनों लोकों में जो कुछ होता है क्या वह सभी तुम्हें नज़र आता है? उसने हां कह कर फिर नेत्र बंद कर लिये।

गुरु जी ने अपने सेवक को संकेत किया कि तुम इस के आगे से मूर्ती उठा कर कहीं इधर उधर रख दो। वह सेवक उस ब्राह्मण के आगे से मूर्ती के सहित सभी सामान पूजा का उठा कर ले गया। जब उस ने नेत्र खोले तो सामान तथा मूर्ती न पाकर रोने लगा। गुरु जी ने

कहा—हे ब्राह्मण देव इस प्रकार क्यों रो रहे हो? तब उस ने कहा हे संत जी! भगवान की प्रतिमा पर्यंक के सहित कोई उठा कर ले गया है। गुरु जी ने कहा—हे विप्रवर! रोने की क्या आवश्यकता है अभी अभी आप ने कहा था कि मुझे तीनों लोक नज़र आते हैं। आप तो स्वयं देख सकते हो कि ठाकुर जी कहां पड़े हैं। क्या ठाकुरों को चुराने वाला तीन लोक से भी दूर चला गया है। तब उस ब्राह्मण की होश ठिकाने आ गई। कहने लगा हे संत जी! मैं तो अपनी पेट पूजा के लिये झूठ बोलता चला आ रहा हूं। इसी पाखंड के आश्रित मैं अपने कुटुंब की पालना करता हूं अब आप ही कृपा करो जिस ने मूर्ती ली है उस से मुझे दिला दें। आप तो सच्चे संत मालूम होते हो। यह मूर्ती ही मेरे जीवन का सहारा है। तब गुरु जी ने कहा-हे देवता! झूठ बोलना और ठगना त्याग दो। वह ईश्वर तुम्हारी पालना स्वयं करेगा। उसने कहा-हे संत जी! यदि तुम्हारी कृपा होगी तो कुछ प्राप्त हो जायगा। गुरु जी ने कहा-हे ब्राह्मण! तुझे तो तीन लोक नज़र आते हैं परंतु जहां तेरा आसन है इस के नीचे अपार धन राशि दबी हुई है। तुम को तो वह भी नज़र नहीं आती। उस ने कहा-हे संत जी। मैं झूठ बोल कर ही गुज़ारा करता आ रहा हूं। मैं क्या जानूं कि वहां पर दौलत है। तब गुरु जी ने कहा-उठ कर अपने आसन की भूमी खोदो। जब उस ब्राह्मण ने धरती खोदी तो उसे अपार धन राशि नज़र आई। तब उस ब्राह्मण ने गुरु जी के चरणों पर प्रणाम किया फिर गुरु जी ने एक परम पवित्र शब्द अपनी जिहवा से कथन किया जिसे सुन कर अनेक नर नारी का भीतर और बाहर पवित्र तथा शांत हो गया-

धनासरी महला १ घरु ३ ॥

कालु नाही जोगु नाही नाही सत का ढबु॥ थानसट जग

भरिसट होए डूबता इव जगु॥ १॥ कल महि राम नामु सारु॥ अखी त मीटहि नाक पकड़हि ठगण कउ संसारु॥ १॥ रहाउ॥ आंट सेती नाकु पकड़हि सूझते तिनि लोअ॥ मगर पाछै कछु न सूझै एहु पदमु अलोअ॥ २॥ खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही॥ स्रिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही॥ ३॥ असट साज साजि पुराण सोधहि करहि बेद अभिआसु॥ बिनु नाम हरि के मुकति नाही कहै नानकु दासु॥ ४॥

॥ शब्द का परमार्थ॥ गुरु जी ने कहा-ब्राह्मण देवता! तू जो इस पाषाण की मूर्ती की पूजा करता हैं। इसके वश में तो काल भी नहीं है जो तेरी मरने के समय रक्षा कर सके और पाषाण प्रतिमा न तो कुछ दे ही सकती है जिस से उदर भर सके। हे विप्रवर! यह ठग्गी तुझे एक दिन नर्कों में ले जायेगी। मुक्ति तो ईश्वर के नाम जपने में है। कलियुग में केवल नाम का ही आधार है। इस लिये तू राम नाम स्मरण किया कर। स्मरण के बिना सभी कुछ अधूरा है। देवी देव कोई भी इस जी को मुक्त नहीं कर सकते। स्वर्गों के सुख भी अनित्य हैं। ज्ञानी इन से भी दूर रहते हैं। कपट को त्याग कर प्रभु नाम स्मरण करो। हे ब्राह्मण! तभी तेरा भला होगा। हे ब्राह्मण! संसार में जितने भी धनी हो गुजरे है सब ने अन्न खाया जल पीआ तथा वस्त्र पहने हैं। बाकी माया तो धरती में ही दबाई गई है। उस धरती के गर्भ में अटूट धन राशि है। स्वर्ण रुपये तांबा हीरा पन्ना आदिक पेट भरने में असमर्थ्या है। यहां तो अन्न जल वस्त्र की आवश्यकता होती है बाकी का धन तो केवल पृथ्वी के ही अर्पण करने के लिए होता है। इस तत्व को जानना ही ज्ञान कहलाता है। यह तत्व ज्ञान परमात्मा के प्यारे ही प्राप्त करते हैं। साधारण नर नारी तो इसी चक्र में मारे मारे फिरते हैं जो उन से कुछ ऊपर होते

हैं वे यज्ञादिकों से स्वर्गों में जाते हैं तथा फिर यहां ही आ जाते हैं। आना जाना तभी छूटता है जब इस मृग तृष्णा से छूट जाय तथा ईश्वर चिंतन में लग जाय।

ब्राह्मण ने कहा-हे संतवर! जो यह सारा संसार है यह तो सभी माया के पीछे ही भागा फिर रहा है! ईश्वर के पीछे तो कोई नहीं जाता फिर इनकी क्या गति होगी? गुरु जी ने कहा-ब्राह्मण देवता! कलियुग में ब्राह्मण क्षत्री जो ऊंचे वर्ण के हैं वे तो धर्म से विमुख हो गये हैं वे तो पुत्रियों को मोल बेचते देखे जाते हैं। कन्याओं को बेचना महान् पाप है फिर ब्राह्मण क्षत्री मलेच्छों से मिल कर व्यापार करते हैं और चमड़ा तक बेचते हैं जो धर्म के प्रतिकूल क्रिया है और परस्त्री सेवन तो उन के फैशन में हो रहा है जो महान् पाप है पर निंदा आदिक कुकर्म इस युग में व्यवहार बन चुका है। जहां प्रभु नाम की सुधा धारा प्रवाहित होती है वहां जाकर घर की अथवा दुकान की चर्चा यह भी महां पाप है जैसे किसी महात्मा ने कहा है, कि-

॥ प्रवचन ॥ पापी भगति न भावही हरि पूजा न सुहाई। माखी चंदन परहरै जिह बिगंध तहां जाइ॥ धर्म कर रही साकता साधू मिलै निसंग। मुक्त पदार्थ पाईऐ नानक परै न भंग॥

॥ वार्तक ॥ तब ब्राह्मण ने कहा-हे महाराज! कलियुग में ऐसा ही वर्ताव हो रहा है परंतु छूटने का उपाय केवल राम नाम स्मरण ही है। तब गुरु जी ने कहा-हे ब्राह्मण! परमात्मा के नाम के बिना जीव की कभी भी मुक्ति नहीं होती फिर श्री गुरु नानक देव जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

॥ सलोक ॥ कीर्तन में चित जलावै नीत उपजै मन परतीत पिआरे॥ सगल पाप का नास होई मुख ऊजल हरि दुआरे॥ १ ॥ बिन सिमरन जो जीवना बिरथे सास पराल।

नानक हरि का सिमरन सार है होर छाड सगल जंजाल॥

॥ वार्तक॥ यह सुन कर वह ब्राह्मण देवता गुरु जी की शर्ण को प्राप्त हुआ तथा गुरु जी का शिष्य बन गया फिर गुरु जी ने उस अपने आदमी से ठाकुरों का पर्यंक मंगवा कर उस को दे दिया और कहा-हे विप्रवर! हम ने परमात्मा से तुम को बहुत धन दिला दिया है। अब तू प्रसन्न होकर प्रभु स्मरण कर। तुझे कभी भी तोट नहीं होगी। फिर गुरु जी करतार पुर आये।

साखी ब्राह्मचारी की

एक दिन गुरु नानक देव जी महाराज करतार पुर में रसोई घर में बैठे थे। एक ब्रह्मचारी ने आकर गुरु जी को अभिवादन किया। गुरु जी ने कहा-हे ब्रह्मचारी! आओ बैठो भोजन तैयार है। इच्छा हो तो भोजन पा लो। उस ब्रह्मचारी ने कहा-मैं इस पृथ्वी की बनी रसोई अंगीकार नहीं करता। मैं हाथ भर धरती खोद कर फिर गोबर का चौंका लगा कर तथा लकड़ी धोकर रोटी बनाता हूं। गुरु जी ने कच्चा अन्न दे दिया जिसे लेकर यह ब्रह्मचारी चला गया और बाहर जा कर धरती खोदने लगा यहां धरती खोदे उसी स्थान से अस्थियें निकलें। अनेक स्थान खोदे परंतु प्रत्येक स्थान से हड्डियें ही निकलीं। आखर हैरान होकर और भूख से दुखी होकर गुरु जी की शर्ण में आ गया तथा कहने लगा-हे महाराज! मैं भूखा हूं। मुझे आप अपनी रसोई में से भोजन दो ताकि मैं भूख को मिटा लूं। गुरु जी ने कहा-हे विप्र वर! यह समय अब दूर गया है। जाओ तुम अपनी मर्यादा से रसोई बनाओ। अब वह परमात्मा भली करेंगे। फिर गुरु जी ने एक शब्द का उच्चारण किया-

रागु बसंत महला १॥

सोईना का चउका कंचन कुआर॥ रुपे कीआ कारा बहु

बिसथार॥ गंगा का उदर करंते की आग॥ गरड़ा खाना दुध सिओ गाड॥ १ ॥ रे मन लेखे कबहूं न पाइ॥ जामि न भीजहि साच नाइ॥ १ ॥ रहाउ॥ दस अठ लीखे होवै पास॥ चारे वेद मुखागर पाठ॥ पुरबी नावै वरना की दात॥ वरत नेम करै दिन रात॥ २ ॥ काजी मुलां होवै सेख॥ जोगी जंगम भगवे भेख॥ को गिरही करमा की संध॥ बिन बूझै सब खड़ीअस बंध॥ ३ ॥ जेते जीअ लिखी सिरकार॥ करणीं उपर होवग सार॥ हुकम करहि मूरख गावार॥ नानक सचे के भंडार॥ ४ ॥

॥ वार्तक॥ यह शब्द सुन कर उस ब्रह्मचारी ने गुरु जी के चरणों पर अपना माथा रख करके नमस्कार किया और दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना की-हे सतगुरु देव! आप अपनी अपार कृपा करके मुझे अपना शिष्य बना कर मेरी जीवन नई को पार करो। तब श्री गुरु नानक देव जी ने मुख से एक शब्द उच्चारण किया-

॥ सलोक महला १ ॥

सचु संजमु करणी कारां नावणु नाउ जपेही॥ नानक
अगै ऊतम सोई जि पापां पंदि न देही॥ २ ॥

॥ वार्तक॥ गुरु जी ने कहा-हे ब्राह्मण! इस प्रकार का चउका लगाना चाहिये जिस से मन की मलीनता दूर हो जाय। तब कभी भी तुम्हें छोह नहीं लगेगी। यह सुन कर वह ब्रह्मचारी श्री गुरु नानक देव जी का शिष्य बन गया और परमात्मा का भजन करने लगा। धन्य गुरु नानक देव जी!

साखी दुनी चन्द क्षत्री से

एक दिन श्री गुरु नानक देव जी महाराज नगर में गये। वहां एक क्षत्री तहसील लाहौर का रहता था। वह अति धनी था। वह गुरु जी

को बहुत सत्कार के साथ अपने घर ले गया। उस दिन उस के घर में बहुत चहल पहल थी। गुरु जी ने पूछा आज आप के घर में कौन सा उत्सव है? उस ने कहा आज मेरे पिता जी का श्राद्ध है। उस के उपलक्ष में एक सौ ब्राह्मणों को भोजन खिलाया है। गुरु जी ने कहा-तेरा पिता तो आज तीन दिन का भूखा है। वह तो उस सामने वाले बन में बघिआड़ की योनी में होकर बैठा है। उस के लिये वहां भोजन ले जा डरना नहीं तुम को देख कर उस की मनुष्य बुद्धि हो जायेगी। अब दुनी चन्द भोजन लेकर वहां गया देखा कि एक वृक्ष के नीचे व्याकुल हालत में बैठा है। उस ने भोजन उस के आगे रख दिया और कहने लगा-हे पिता जी! मैंने तो आप के निमित एक सौ ब्राह्मण को भोजन दिया। हे पाठक! उस बघिआड़ की बुद्धि गुरु जी के वर से मनुष्य जैसी हो गई। दुनी चन्द ने कहा-हे पिता जी! आप तो बहुत ही उत्तम कर्म वाले थे आप को यह व्याघ्र योनी कैसे प्राप्त हुई? उस ने उत्तर दिया—हे पुत्र! मुझे कोई सच्चा गुरु नहीं मिला था। इस लिए मैं इस योनी को प्राप्त हुआ हूं। जब मेरा अंतिम समय था तो मुझे निकट से मांस की गंध आई तथा मांस के लिये मेरा मन ललचाया। जिस के परिणाम में मांसाहारी शरीर प्राप्त हुआ है। तुझे सच्चे गुरु की शर्ण लेनी चाहिये। यह कह कर उस भेड़िये ने वह भोजन खा लिया। फिर दुनी चन्द अपने घर को आया तथा पिता की दुर्गति पर उसे अत्यंत भय हुआ।

दुनी चन्द ने घर में आ कर गुरु जी के चरण पकड़ कर कहा-हे महाराज! यह माया नर्क का रूप है। मेरे पास सात लाख रुपया है। मैं आप के अर्पण करता हूं। इसे आप जहां चाहें लगायें। यह माया तो मेरा परलोक नाश कर देगी! अथवा जैसे यह मेरे लोक परलोक में सहायक बने वह मार्ग बताओ।

उस को अत्यंत दुखी देख कर गुरु जी के मन में दया का संचार

हुआ। कहने लगे-हे दुनी चन्द! इस माया को साधू अभ्यागतों और महात्माओं की सेवा में लगा दो। हम सत्य कहते हैं कि तभी यह माया तेरे साथ पयान करेगी। तब गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

सिरीरागु महला १ ॥

मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु॥ अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु॥ कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु॥ १॥ भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु॥ जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु॥ १॥

॥ रहाउ॥

सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु॥ सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार॥ हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर॥ २॥ सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि॥ गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि॥ बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोई न संगी साथि॥ ३॥ सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु॥ जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु॥ मनिमुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु॥ ४॥ सतिगुर अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ॥ साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ॥ नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ॥ ५॥ बाझु गुरु गुबान है बिनु सबदै बूझ न पाइ॥ गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ॥ तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ॥ ६॥ तूं हैं साजनु तूं सुजाणु तूं आपे मेलणहारु॥ गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावार॥ तिथै कालु न अपड़ै जिथै गुर का सबदु अपारु॥ ७॥ हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि॥ हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि॥ नानक जो तिसु भावै सो

थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि॥ ८ ॥

॥ वार्तक ॥ यह शब्द सुन कर दुनी चन्द गुरु जी के चरणों में बार बार नमस्कार करने लगा। तब गुरु जी ने उस धनी को एक सूई देकर कहा-हे मित्र! यह सूई तुम अपने पास रखो। हम दूसरे जन्म में तुझ से ले लेंगे। सूई लेकर दुनी चन्द घर आकर अपनी धर्म पत्नी को कहने लगा यह सूई गुरु जी ने दी है और कहा है कि हम परलोक में लेंगे। उस की पत्नी ने कहा-हे स्वामी! क्या यह सूई तुम्हारे साथ परलोक में जायेगी? हे स्वामी! यह शरीर तो माता के गर्भ में मिलता है तथा इस धरती पर इसे जलाया बहाया अथवा दबाया जाता है। जब शरीर भी साथ जाने का नहीं तो फिर यह साधारण सी सूई किस प्रकार साथ जाने की है? इस लिए आप सूई उन को वापस दे दो। आप के पूर्ण भाग्य हैं जो ऐसे परमेश्वर रूप संत आप के पास आये हैं। तुम उन्हीं का कथन स्वीकार करो उन की कृपा से भवसागर से तर जाओगे। दुनी चन्द ने कहा-हे प्यारी! वे तो कहते हैं कि तू साट लाख की जो सम्पदा तेरे पास है। उसे साधू सेवा में दे डालो तथा उस से भूखों की सहायता करो। तब यह सम्पदा तुम्हारे साथ जायेगी।

कुछ विचार के पश्चात् वे पत्नी पति गुरु जी की शर्ण आये तथा कहने लगे—हे गुरुदेव! अब आप हमें इस संसार सागर से पार करो। हम आप की शर्ण हैं। तब गुरु जी ने शब्द कहा-

॥ सलोक महला १ ॥

लख मण सुइना लख मण रुपा लख साहा सिरि साह॥ लख लसकर लख वाजे नेजे लखी घोड़ी पातिसाह॥ जिथै साइरु लंघणा अगनि पाणी असगाह॥ कंधी दिसि न आवई धाही पवै कहाह॥ नानक ओथै जाणीअहि साह केई पातिसाह॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥ यह सुन कर वे दोनों गुरु जी की महान् स्तुति करने

लगे। हे कृपा नाथ दयालु! आप ने हम पर इस समय अपार अनुकृपा की है जैसे आज्ञा हो हम वैसे ही श्रद्धा पूर्वक करने को उद्यत हैं। गुरु जी ने कहा-हे दुनी चन्द इस माया को जब एकत्र करना होता है तब अनेक छल बल करने पड़ते हैं और फिर भी यह दौलत साथ नहीं जाती यहां ही रह जाती है तथा जो पाप किये जाते हैं उस का फल भोगना होता है तथा जो इस से शुभ कर्म किया जाता है वही साथ जाता है। इस जीव के तीन मित्र हैं-एक परिवार दूसरा धन तथा तीसरा कर्म। जब तक शरीर में प्राण हैं तब तक धन इस का संगी है। जब प्राण निकल गये तब धन दूसरे का हो जाता है तथा परिवार का संग शमशान तक रहता है जब शरीर जल गया तो परिवार वाले घर को लौट आते हैं। तीसरा जो कर्म संगी है वह परलोक तक जाता है जैसा कर्म होगा वैसा ही उसे सुख दुख होगा। इस लिए भला कर्म करो। धन को परमार्थ में लगा दो फिर परलोक में रक्षा होगी और यश की प्राप्ति होगी। तब दुनी चन्द ने अपनी तमाम सम्पदा परमार्थ के लिए दान कर दी। पति पत्नी गुरु जी के शिष्य होकर ईश्वर स्मरण में लग गये।

फिर गुरु जी ने मर्दाने को कहा-हे मर्दाना! आज बहन जी हमें स्मरण कर रहे हैं चलो सुलतान पुर चलें। बस फिर क्या था। गुरु जी सुलतान पुर जा पहुंचे। उस समय तुलसां ने जा कर कहा-हे बहु जी! आप के भाई जी आये हैं। तब नानकी जी भाग कर आई तथा गुरु जी को नेत्रों में जल भर कर मिली। घर में लाकर बहुत सत्कार किया। गुरु जी ने कुशल मंगल पूछा। फिर जय राम जी ने आदर सत्कार किया। तब नानकी जी ने नेत्रों में जल भर कर कहा-भ्राता जी! बहुत देर के पश्चात् आप के पवित्र दर्शन हुए हैं। क्या आप ने हमें भुला दिया है आप के दर्शन से हम कृत कृत्य हो जाते हैं। जय राम ने कहा-हे गुरु देव! आप हमारे पास ही रहो तथा प्रभु स्मरण करो। इतने में श्री चंद

जी आ गये तथा प्रणाम करके निकट ही बैठ गये।

गुरु जी ने कहा-हे महाराज! हमें कुछ भ्रमण की आदत हो गई है। इस लिये किसी भी स्थान पर टिक कर बैठना हमारे लिये कठिन है। आप जब भी हमें याद करोगे तब उसी समय हम आप के पास पहुंच जायेंगे।

फिर गुरु जी ने रात्रि वहां व्यतीत की तथा प्रातःकाल जय राम नानकी जी तथा श्री चंद आदि सभी को निकट बैठा कर उपदेश दिया और अनेक प्रकार से धैर्य देकर वहां से प्रस्थान किया।

तत्पश्चात् आप करतारपुर में आकर माता जी को मिले। मर्दाने ने एक दिन कहा-हे महाराज! मेरा मन चाहता है कि मैं भी एक दो दिन अपने घर वालों को जाकर मिल आऊं। गुरु जी ने हंस कर कहा-हे मर्दाना! तेरे घर के सब राजी खुशी हैं। हम तुम को अभी मरने नहीं देंगे। यदि तुम्हारे मन में उन का बहुत मोह जागृत हुआ है तो जाओ परन्तु अधिक देरी न करनी। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! मेरे पास तो कोई वस्तु नहीं। क्या मैं उनके निकट खाली हाथ जाऊं? गुरु जी ने कहा-वहां से कंकर लेकर अपने कपड़े में बांध लो, वहां जाकर जब तू कपड़ा खोलेगा और जो कुछ मन में विचारेंगा बस वही हो जायेगा। अब मर्दाने ने रोड़ों की मुठी लेकर वस्त्र में बांध कर घर में आ गया। जब वह कपड़ा खोला तो तमाम कंकर स्वर्ण के हो गये। तब इसे अपार प्रसन्नता हुई। तमाम लोगों ने सुना कि मर्दाना डूम स्वर्ण के कंकर लाया है जो बहु मूल्य के हैं। कुछ दिन वहां रह कर मर्दाना गुरु जी के निकट आ गया तथा चरणों में लग कर प्रणाम किया॥ १०६॥

साखी घर की दासी की

एक दिन गुरु जी विश्राम कर रहे थे। तब दासी ने माता जी से

प्रार्थना की कि रसोई तैयार है। माता जी ने कहा-हे गोली! जाओ गुरु जी को जगा कर ले आओ। दासी ने आकर देखा कि जगत के स्वामी सो रहे हैं। वह प्रेमवश गुरु जी के पद की तलियों को अपनी जिव्हा से चाटने लगी। तत्क्षण इसे दिव्य दृष्टि प्रदान हो गई। उस ने उसी दिव्य दृष्टि द्वारा देखा कि गुरु जी समुंद्र तट पर एक अपने शिष्य सेवक का अटका हुआ जहाज़ पार कर रहे हैं। गोली भाग कर माता जी के निकट आकर कहने लगी-हे माता जी! गुरु जी घर में नहीं। जब आप आयेंगे तब बुला लाऊंगी। माता जी ने कहा-पगली! वह तो घर में सो रहे हैं। गोली ने कहा-नहीं माता जी वे तो समुंद्र के तट पर जा कर एक शिष्य का अटका हुआ जहाज़ किनारे लगा रहे हैं। जब गुरु जी जागे तो माता जी ने कहा-हे बेटा! यह गोली मुझे मजाख करती है। गुरु जी ने कहा-वह तो पगली है। पगलों की बात पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये। गुरु जी के कथन से वह गोली पागल हो गई परंतु गुरु जी की सेवा और दर्शनों की कृपा से उस की बुद्धि निर्मल रही।

अब गुरु जी कुछ दिन के पश्चात् चलने लगे तो मूले की पुत्री ने कहा-हे महाराज! जब आप यहां रहते हो तो हमारा राज्य होता है। इस लिये आप हमें अपने साथ ही ले चलो। गुरु जी ने फुरमाया तेरा राज्य सदैव बढ़ता रहेगा चिंता न कर। गुरु जी ने कहा हम सैद पुर जायेंगे। वहां कुछ दिन ठहर कर तुम्हारे पास आ जायेंगे। वैसे सदा ही तुम्हारे पास ही हैं चिंता त्याग दो। फिर सब को धैर्य देकर मुझे (बाला) और मर्दाने को साथ लेकर गुरु जी ने वहां से प्रस्थान किया।

साखी मीर बाबर से

बाले ने कहा-हे गुरु अंगद देव जी! गुरु नानक देव जी के साथ कुछ फकीर लोग रहने लगे। गुरु जी सैद पुर गये तो वहां पठानों के

घर में शादी थी। वहां पठान एकत्र हो कर नाच रहे थे। इधर फकीरों को भूखे देख कर गुरु जी ने कुपित हो कर एक शब्द कहा-

तिलंग महला ॥ १ ॥

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥ पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥ सरमु धरमु दुइ छपि खलोए कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ॥ काजीआ बामण की गल थकी अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥ मुसलमानीआ पढ़े कतेबा कसट महि करहि खुदाइ वे लालो ॥ जाति सनाती होरि हिदवाणीआ एहि भी लेखै लाइ वे लालो ॥ खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाइ वे लालो ॥ १ ॥ साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि आखु मसोला ॥ जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वेखै वखि अकेला ॥ सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला ॥ काइआ कपड़ु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला ॥ आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ॥ सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥ २ ॥

॥ वार्तक ॥ इस शब्द को सुन कर ब्राह्मण ने कहा-हे भाईओ! इस संत ने शब्द अत्यंत कुपित हो कर कहा है। तब उस ब्राह्मण ने सोचा कि मैं इन के चरण पकड़ कर इन से क्षमा करवाऊं। उस ने गुरु जी के चरणों पर नमस्कार करके कहा-हे महाराज! आप इस शब्द को लौटा लो। गुरु जी ने कहा-हे विप्र! जो तीर छूट जाये वे लौटता नहीं। तुम यहां से तीन कोस की दूरी पर जा रहो। जो वहां पर एक टोबा है उस पर अपने परिवार को ले जाओ। यहां रहने से मारे ही जाओगे तब ब्राह्मण अपने परिवार को बाहर ले गया। गुरु जी भी वहां से उठ कर दूर जा बैठे। तब ईश्वरेच्छा से काबल से वाहर चढ़ी उस ने सैदपुर की ईंट से ईंट बजा दी। उस लश्कर का स्वामी बाबर था। हिन्दू मुसलमान

सभी मौत के घाट उतारे गये तथा तमाम औरतें बांध ली गईं। उस नगर में बहुत ही बुरी हुई। तमाम मकानात ढेरी हो गये। गुरु जी के शब्दों ने वहां प्रलय का काल करके दिखा दिया। फकीरों को जहां दुख होता है वहां परमात्मा भयंकर प्रकोप करता है क्योंकि भगवान को उस के संत सदा प्यारे हैं। गृहस्थी को चाहिए जो पहुंचा हुआ साधू है भले ही वह किसी जाति का हो। उस की सेवा करे फिर गुरु जी वहां से उठ कर सैद पुर में आ गये और देखा वहां कतलाम हो गई है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यहां क्या हुआ है फिर गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तू रबाब बजा और हम एक शब्द कहेंगे।

आसा महला १ ॥

कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई॥
कहा सु तेगबंद गाडेरड़ि कहा सु लाल कवाई॥
कहा सु आरसीआ मुह बंके ऐथै दिसहि नाही॥ १ ॥

॥ वार्तक ॥ फिर श्री गुरु नानकदेव जी महाराज ने देखा कि मुगलों ने अनेकों पटान कतल कर दिये हैं और तमाम ओर बाबर की दुहाई मच रही है तब आप बाबर के लश्कर में चले गये।

बाबर दिन के समय तो बादशाही करता था और रातों को पाओं में बेड़ी डाल कर परमात्मा की उपासना करता था और पांच बार निमाज गुजारता था। सारे कुरान का पाठ करना फिर भोजन करता था।

गुरु जी बाबर के फौजी कैम्प में चक्र लगा रहे थे। गुरु जी ने बंदीओं को देखा तो आप के हृदय में दया का संचार हो आया। मर्दाने को आज्ञा हुई कि रबाब बजाओ। जब मर्दाना रबाब बजाने लगा तो गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

आसा महला १ ॥

खुरासान खसमाना कीआ हिन्दुस्तान डराइआ॥
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चढ़ाइआ॥
एती मार पई कुरलाणे तैं की दरदु न आइआ॥ १ ॥

॥ वार्तक॥ जब यह शब्द बाबर ने सुने तो हुकम दिया इस को हाज़र करो। सिपाही गुरु जी को साथ लेकर बाबर के सामने हाजर हुए। बाबर ने कहा-हे संत! वही शब्द एक बार फिर कहो। तब गुरु जी ने ऊपर का शब्द फिर कहा। इसके पश्चात् बाबर ने फिर कहा हे संत! मुझे भांग खाने का शौक है। मैं चाहता हूं कि आप भी इसे इस्तेमाल करें। यह कह कर भांग का स्वर्ण प्याला गुरु जी के आगे किया। गुरु जी ने उत्तर दिया हे बाबर! मैंने वह भांग पी है जिस का नशा कभी भी नहीं उतरता। फिर मर्दाने को आज्ञा हुई कि तुम रबाब बजाओ तथा गुरु जी ने शब्द कहा-

तिलंग महला १ घरु २ ॥

भउ तेरा भांग खलड़ी मेरा चीतु॥ मै देवाना भइया अतीतु॥
कर कासा दरसन की भूख॥ मै दरि मागउ नीता नीत॥ १ ॥

॥ वार्तक॥ जब यह पवित्र शब्द बाबर ने सुना तो बहुत ही प्रसन्न हुआ और कहने लगा हे संत! हमारी भांग तो अच्छे कूंडे आदिक में घुटती छनती है। परन्तु आप तो साधनहीन संत हो फिर किस प्रकार अपनी भांग को घोटते छानते हो? तब गुरु जी ने शब्द कहा—

॥ शब्द॥ भौ की भांग सिफत का कूंडा त्रान का कीआ डंडा॥ सचा सबद अमृत मद पीआ तब हूआ अमल अखंडा॥ बाबर कलंदर प्याला पीओ॥ उतर न जावे कबहूं खीओ।

॥ वार्तक ॥ बाबर ने जब यह शब्द सुना तो समझ लिया कि यह तो कोई पहुंचा हुआ परम संत है। फिर बाबर कहने लगा—हे संत! तुम को जिस वस्तु की आवश्यकता हो मांग लो। मैं तुम को जागीर दे सकता हूं। फिर गुरु जी ने मर्दाने को कहा-रबाब बजाओ और स्वयं शब्द कहा-

॥ शब्द ॥ ऐसा दीआ एक खुदाइ ॥ जिस का दीआ सभ कोई खाइ ॥ १ ॥ इकदाता सभ जगत भिखारी ॥ तिस को छाड अवर कौ मांगै तिन अपनी सगली पति हारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साह बादसाह सभ तिस के कीए ॥ तिस के साथ न कोइ रलीए ॥ २ ॥ मानुख की जो लेवे ओट ॥ दीन दुनी है ताकउ तोट ॥ ३ ॥ कहि नानक सुण बाबर मीर ॥ तुझ ते मांगे सो अहिमक फकीर ॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥ जब श्री गुरु जी महाराज के यह शब्द सुणे तो बाबर जान गया कि यह तो कोई सच्चा साधु है। इस से तो उस खुदा ताला के मेल का हाल पूछना उचित है। फिर गुरु जी को कहने लगा-हे संत जी! हमारे मुसलमानी धर्म में तो यह लिखा है कि हजरत मुहंमद जी खुदा के दोस्त हैं। उन की सिपारिश से बहिश्त नसीब होगी। मैं पूछता हूं कि आप के धर्म में क्या कुछ ठीक है। तब गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

॥ शब्द श्री गुरु नानक देव जी ॥

एको साहिब एक खुदाइ ॥ खालक सचा बेपरवाह ॥ कई मुहंमद खड़े दरबार ॥ पार न पावहि बेशुमार ॥ रसूल रसाल दुनीयां में आया ॥ जब चाहया तब पकड़ मंगाया ॥ इओं सही किया है नानक बंदे ॥ पाक खुदा और सब गंदे ॥

॥ वार्तक ॥ यह सुण कर बाबर चुप होकर कुछ सोचने लगा तब

गुरु जी ने उन बंदियों की ओर देख कर मन में दया का संचार किया। तब मर्दाने ने आज्ञा दी कि तुम रबाब बजाओ और स्वयं शब्द उच्चारण किया-

रागु आसा महला १ ॥

जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु॥ से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि॥ महला अंदरि होदिआ हुणि बहिण ने मिलन्हि हदूरि ॥ १ ॥ आदेसु बाबा आदेसु ॥ आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ करि करि देखहि वेस ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जदहु सीआ वीआहीआ लाड़े सोहनि पासि ॥ हीडोली चढ़ि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥ उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि ॥ २ ॥ इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खड़ीआ ॥ गरी छुहारे खांदीआ माणन्हि सेजड़ीआ ॥ तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥ ३ ॥ धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥ दूता नो फुरमाइआ लै चले पत गवाइ ॥ जे तिसु भावै देइ वडिआई जे भावै देइ सजाइ॥ ४॥ अगो दे जे चेतिऐ तां काइतु मिलै सजाइ॥ साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ॥ बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ॥ ५ ॥ इकना वखत खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ॥ चउके विणु हिंदुवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ॥ रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खुदाइ॥ ६ ॥ इक घरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख॥ इकन्हा एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख॥ जो तिसु भावै सो थीऐ नानक किआ मानुख॥ ७॥

॥ वार्तक ॥ इस शब्द के उच्चारण के अंत में श्री गुरु जी ब्रह्म ज्योति में लीन हो गए। तब बाबर ने कहा—कि इस संत को क्या हो गया

है। लोगों ने कहा कि यह साधु वजिद में आया हुआ है। बाबर ने कहा-हे मित्रो! खुदा आगे दुआ करो जिस से यह संत अपनी सही हालत में फिर आ जाये तब श्री गुरु जी ने कहा-हे बाबर! अगर तू अपने परमात्मा की कृपा चाहता हैं तो जितने बंदी हैं उन को छोड़ दो और मुख से कहो कि तुम को क्या चाहिये। तब मीर बाबर ने कहा-कि हे महाराज! मेरी बादशाही पुश्त दर पुश्त चले। तब गुरु जी ने कहा-जाओ तुम्हारी बादशाही देर तक चलेगी। तब बाबर ने सभ कैदी छोड़ दिये तथा उन को सत्कार से विदा किया। तब गुरु नानक देव बाबर पर अति प्रसन्न होकर वहां से विदा हुए फिर करतारपुर में एक वर्ष भर तक निवास किया।

साखी ब्रह्मचारी की

अब श्री गुरु नानक देव जी महाराज करतार पुर में ही निवास करने लगे। लंगर प्रारम्भ हो गया। प्रत्येक अतिथि की सेवा होने लगी। गुरु जी की कीर्ति चारों ओर फैल गई। एक दिन एक पुरुष गुरु जी के पास आकर कहने लगा—हे प्यारे सतगुर! मैं एक अत्यंत ही निर्धन आप की जाति का बेदी हूं। मेरा सिवाय एक लड़के के और कोई नहीं। अब मेरी कन्या का विवाह है आप मेरी सहायता करें क्योंकि आप हमारी कुल में एक महा पुरुष हैं और सभी कुछ करने की सामर्थ्य आप में सुणी जाती है। आप मेरा यह महान् कार्य सिद्ध करो। गुरु जी दयालु थे कहने लगे—हे भ्राता! जिस वस्तु की तुम को आवश्यकता है वह हमें बताओ। उस ने सभी चीज लिख कर गुरु जी को दे दी। गुरु जी ने अपने शिष्य जिस की जाति अनंद थी और नाम भगीरथ था। उसे आज्ञा दी कि यह सभी वस्तु लाहौर से जा कर ले आओ। इतना ध्यान रहे कि लाहौर में केवल एक ही रात्रि रहना अगर दूसरी रात लाहौर

में रहोगे तो तुम्हारा जन्म बिगड़ जायेगा।

भगीरथ के मन में भय हो गया। वह भागता हुआ लाहौर जा पहुंचा। वहां एक बाणीयें की दुकान थी उसे जा कर भगरीथ ने कहा, भाई! यह वस्तु हमें शीघ्र दे दो क्योंकि मैंने लाहौर में नहीं रहना कहीं बाहर ही विश्राम करूंगा। उस बाणीयें ने कहा-हे भाई! और वस्तु तो मिल जायेगी परंतु इतनी जल्दी चूड़ा नहीं बन सकता। उस बाणीयें ने कहा-यदि तू एक रात रहे तो चूड़ा बन सकता है। भगरीथ ने कहा-यदि मैं एक रात और रहूं तो मेरा जन्म बिगड़ेगा। इस लिये आज ही मैंने लौटना है। बाणीयें ने कहा-हे भाई! यदि किसी का स्वामी सख्त होता है तो वह नाराज़ होता है परंतु तुम कहते हो मेरा जन्म बिगड़ता है। वह अजीब है कलियुग में ऐसा कौन है जिस की आज्ञा न मानने से जन्म ही बिगड़ जाये। तब भगरीथ ने कहा—हे मित्र! मेरा सतगुर ऐसा ही है। तब बाणीयें ने कहा-तब तो मैं भी तुम्हारे साथ चल कर तुम्हारे गुरु का दर्शन करूंगा। एक चूड़ा रंगा हुआ है यदि तुम्हारा गुरु सत्य में महापुरुष होगा तो मैं भी उसे अपना गुरु धारण कर लूंगा। यदि मेरा मन उनको मान लेगा तो फिर मैं मूल्य नहीं लूंगा और यदि मन न माना तो फिर मैं सभी मूल्य ले लूंगा।

वे दोनों चलते चलते करतार पुर आ गये तथा गुरु जी के चरणों पर नमस्कार किया। जब बाणीयें ने गुरु जी के दर्शन किये तो उस के हृदय के कपाट खुल गये। गुरु जी के दर्शनों ने बाणीयें को निहाल कर दिया। अब वह बाणीयां तीन वर्ष तक गुरु जी की सेवा में ही रहा। बाणी कंठ की और कुछ पुस्तकें लिखवा कर अपने साथ ले गया।

फिर एक बार बाणीयें ने सौदागरी की और उस नगर में गया जहां राजा शिव नाभ राज करता था। वह बाणीयां दिन को तो माल बेचे और रात्रि को कीर्तन करता था तथा प्रहर रात्रि रहते स्नान करता और

जपुजी का पाठ करता यह उस की दैनिक क्रिया थी अर्थात् उस की दिन चर्चा गुरु जी की आज्ञानुसार थी। गुरु जी की आज्ञा है कि जो सिख रहत बहत में पूर्ण हो वह सिख इसी जीवन में मुक्त होता है और जब वह मृत्यु को पाता है तब उस की सदगति होती है इस प्रकार वह बाणीयां प्रत्येक दृष्टी कोण से गुर मर्यादा के अनुसार चलता था। मन मत करने वाले लोग सूर्य चढ़े तब स्नान करते और एकादशी पूर्णमाशी मंगल आदिक के व्रत रखते थे। उन के सभी काम दिखावे के होते देख कर यह बाणीयां उन से कुछ उदास रहता था और इन अडंबरों की ओर उस का झुकाव नहीं था क्योंकि गुरु जी महाराज पाखंडवाद के विरोधी थे तथा धर्म मर्यादा के कारण संसार में प्रकट हुए थे अत एवं वे पाखन्डी बाणीयें को भ्रष्ट कहने लगे। एक दिन कुछ शरारती पुरुषों ने राजा शिव नाभ को कहा-हे राजन! यह बाणीयां हिंदू होकर भी धर्म मर्यादा के उल्ट चलता है। इस ने कभी व्रत आदिक शुभ कर्म नहीं किये। राजा ने बाणीयें को अपने दरबार में बुला लिया। तब बाणीयें ने राजा का यथोचित सत्कार किया। तब राजा ने पूछा—हे सेठ! तू हिंदू होकर व्रत नेम आदिक जो शास्त्र मर्यादा है उसे पूर्ण क्यों नहीं करता। बाणीयें ने उत्तर दिया-हे राजन! जिस वस्तु की प्राप्ति के लिये ब्रत आदिक क्रियायें की जाती हैं। वह वस्तु तो मैंने प्राप्त कर ली है अब मुझे इन ब्रत आदिक नियमों की आवश्यकता नहीं है। राजा ने कहा-वह कौन सी वस्तु है जिस के मिल जाने से ब्रत आदिक जो शास्त्र विहित कर्म हैं उन को न करना ठीक है। तब बाणीयें ने उत्तर दिया कि हे महाराज! एक महापुरुष के दर्शनों से सभी कामनायें पूर्ण हो गई हैं। राजा ने कहा कि तुम को विश्वास हो गया है? उस सेठ ने कहा-हे राजन! उस मेरे सतगुर के दर्शनों से ही तमाम विश्वास हाथ जोड़ कर सन्मुख उपस्थित हो जाते हैं क्योंकि जहां साक्षात ईश्वर ही प्राप्त हो जाए वहां विश्वास आदिक

का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। राजा ने कहा-कलियुग में तो एक भी नहीं है जिस के दर्शनों से मुक्ति प्राप्त हो जाये तब बाणियें ने कहा-हे राजन! यह मत कहो-क्योंकि मेरे सतगुर देव श्री नानक देव प्रत्यक्ष मुक्ति के दाता है। तब राजा ने कहा- मैं उन की बाणी सुनना चाहता हूं अब उस बाणियें ने गुरु जी की पवित्र बाणी सुनाई तो राजा परम प्रसंन्न हो गया और उस बाणियें के साथ राजा शिव नाभ सिख बन गया तथा गुरु दर्शनों को चल दिया जब चलने लगा तो बाणियें ने कहा-हे राजन! श्री गुरु जी तो पावन रूप हैं। जहां सच्चे मन से आहवान करो वहीं पर प्रकट हो जाते हैं। वह घट घट की जानने वाले हैं। यदि आप श्रद्धा से बुलाओ तो महाराज स्वयं प्रकट हो जाते हैं। तब राजा ने कहा-हे मित्र! गुरु जी तलवंडी राए भोए के रहने वाले हैं तथा आज कल करतार पुर रावी नदी के किनारे निवास करते हैं। यहां उनका जो स्मरण करे वहां ही दर्शन देते हैं। राजा ने कहा कि मेरी इच्छा तो तुम्हारे साथ ही जाने की है। बाणियें ने कहा-हे राजन! तुम विश्वास करो तथा मन से गुरु जी का स्मरण करो। गुरु जी इसी स्थान पर प्रगट होंगे। यह बात मेरे पूर्ण अनुभव की है। हे राजन! मेरी बात मानो तुम्हारी मनो कामना अवश्य ही पूर्ण होगी। इतनी कह कर वह गुरु जी का सेवक बाणीयां अपना जहाज़ भर कर वहां से पश्चिम की ओर चला गया।

बाणियें के जाने के पश्चात् राजा शिव नाभ गुरु जी के दर्शनों का ललायन कहने लगा। हर समय गुरु जी का ही चिंतन स्मरण करता रहे।

राजा ने कुछ समय के पश्चात् कुछ कुटनीयां तैयार की उनको हुकम दिया कि जो भी साधू संत यहां आये उस को पतित करने में कोई कसर न छोड़ो तथा उस की भली प्रकार परीक्षा लेकर मुझे बताओ कि वह कैसा साधू है। राजा ने सोचा कि यदि कोई उत्तम साधू होगा तो वे

इन के कटाक्षों में नहीं फसेंगा। यदि कोई साधारण कलियुगी साधू होगा तो उस का भी पता चल जायेगा। यदि गुरु नानक जी इधर आ जाये तो भी हमें पता चल जायेगा।

उधर गुरु जी ने कहा-हे बाला, मर्दाना! हमारा तो विचार है कि कुछ और भ्रमण करें तथा राजा शिव नाभ को उसके राज में दर्शन देकर कृतार्थ करें।

अब गुरु जी तथा मैं (बाला) और मर्दाना राजा शिव नाभ के नगर में आये और एक बाग जो सूखा हुआ था। वहां आसन विछा कर बैठ गए। गुरु जी के पवित्र चरण जब बाग में आये तो उसी समय वह सूखा बाग हरा हो गया। फूल कलियें पैदा हो गई। उस बाग के माली ने जब अपना बाग सर सब्ज देखा तो अत्यंत प्रसन्न हुआ। फिर उस ने देखा कि एक महापुरुष आसन पर बैठा है और दो सेवक सेवा कर रहे हैं। उस ने गुरु जी के चरणों में नमस्कार करके कहा-आज मेरे अहोभाग्य हैं जो आप ने मुझे दर्शन दिये हैं फिर वह माली राजा शिव नाभ को जाकर कहने लगा-हे राजन! एक संत बाग में आया है जिस की कृपा से मुदतों का सूखा बाग फिर से हरा हो गया है। मुझे ऐसा मालूम होता है कि संत ईश्वर का ही रूप है। बागबान की बात सुन कर राजा ने वे कुटनियें बुला कर कहा-जाओ बाग में जो सन्त आया है। उस की परीक्षा लेकर मेरे पास आकर परिणाम बताओ।

राजा की आज्ञा से कुटनीयें बाग में छतीस प्रकार के पकवान लेकर गईं तथा गुरु जी के आगे रख कर कहने लगीं-हे महाराज! हम आप की चरण सेविका हैं तथा आप इस मिठाई फलादिक को प्रसन्न होकर खायें। फिर कुटनीयें अनेक प्रकार के कटाक्ष करने लगीं जिन को देख देख कर इंद्रादिक देवता भी मोह को प्राप्त हो जाए। वे कुटनीयें नेत्रों के संकेत द्वारा गुरु जी पर अपनी कामेच्छा प्रगट करने लगी। उस समय

गुरु जी ने एक पवित्र शब्द कहा-

॥ शब्द श्री गुरु नानक देव जी का॥

जग कौणा नाम नहीं चीत॥ नाम बिसार गिरे देख भीत॥
मनूआ डोले चीत अनीत॥ जग सिओ तूटी झूठ प्रीत॥ १ ॥
काम क्रोध बिख बजर भार॥ नाम बिना कैसे गुन चार॥
घरि बालू का घूंमन घेर॥ बरसनि पानी बुदा बुदा हेर॥ मात
बूंद ते धर चक फेर॥ सरब जोति नावै की चेर॥ २ ॥ सरब
उपाउ गुरू सिर मोर॥ भगत करो पग लागउ तोर॥ नाभ
तरउ चाहा तुझ ओर॥ नाम दुराइ चले से चोर॥ ३ ॥ पति
खोइ विखि चंचल पाई॥ साच नाम पति सिउ घर जाइ॥
जो कुछ कीनो प्रभु रजाइ॥ भउ मानै निरभउ मेरी माइ॥
४ ॥ कामन चाहे सुंदर भोग॥ पाठ फूल मीठे रस रोग॥ खेलै
बिगसै तेतो रोग॥ प्रभ सरनागत कीनस भोग॥ ५ ॥ कापड़
पहिर सु अधिक सीगार॥ माटी फूली रूप बिकार॥ आसा
मनसा बांधो बार॥ नाम बिना सूनां घर बार॥ ६ ॥ गाछहु
पुत्री राज कुमार॥ नाम भणो सच दोत अपार॥ पिर सेवहु
प्रभ प्रेम पिआर॥ गुर सेवहु प्रभ त्रिखा निवार॥ ७ ॥ मोहन
मोहि लीआ मन मोहि॥ गुर कै सबद पछानो तोहि॥ नानक
ठांढे चाहे प्रभु दुआर॥ तेरे नाम संतोखे क्रिपा धार॥ ८ ॥

॥ वार्तक ॥ उन कुटनीयों ने जब यह अष्टपदी श्रवण की और गुरु जी का पवित्र दर्शन किया जो उन के हृदय की कामाग्नि शांत हो गई तथा मन में शांत सागर लहरें लेने लगा और उनके हृदय में ब्रह्म ज्ञान उत्पन्न हो गया तथा खोटी दुर वासना नष्ट हो गई। अब वे सभी राजा शिव नाभ के निकट आकर कहने लगी-हे राजन! आप हमारे पिता हैं हमें आप अब उस दृष्टि से न देखो तथा हमें उसी कामुक हंसी से न

बुलाओ। राजा हैरान होकर कहने लगा-हे ईश्वर यह क्या सुण देख रहा हूं। यह तो मेरी प्रसन्नता पर हर समय आसक्त रहा करती थी आज इन को क्या हो गया है। जो इस प्रकार शब्द कह रही हैं। फिर राजा ने कहा-आप लोगों को क्या हो गया है। उन कुटनीयों ने कहा-हे राजन! आज हम ने बाग के भीतर एक महापुरुष को देखा जिस के दर्शन मात्र से हमारे भाग्य उदय हो गये हैं तथा मन में पवित्रता की गंगा बहि निकली है। तमाम तृष्णा मिट गई हैं तथा हम नर्क से बच गई हैं परम संतोश हमें अनायास ही मिल गया है। उनकी बात सुण कर राजा शिव नाभ उसी समय बाग की ओर चला गया।

राजा शिव नाभ ने बाग में जाकर देखा तो एक संत जिस के मुख पर आलौकिक ज्योति है बैठा है फिर राजा परीक्षा के लिये पीठ देकर खड़ा हो गया। तब गुरु जी भी दो दिन खड़े ही रहे तथा राजा भी गुरु जी के पीछे अच्युत रूप से खड़ा रहा। जब गुरु जी बैठ गये तब राजा भी बैठ गया। फिर गुरु जी ने कहा-हे राजन! कहो अच्छे हो। तब राजा ने कहा- हे गुरु देव! आपकी कृपा से सभी कुशल मंगल है। राजा ने उस बाणीयें से लिख लिया था कि गुरु जी बेदी क्षत्री हैं और करतारपुर निवास करते हैं तथा जन्म स्थान राय बोलार है। राजा के मन में आई पहिले पता करें कि आया यही गुरु है जिस का जिकर उस बाणीयें ने किया था अथवा यह कोई दूसरा है फिर राजा ने कहा-हे महाराज! आप का नाम क्या है? तब गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

राग मारू महला १ ॥

गुसाई तेरा कहा नामु कैसे जाती॥ जो तउ भीतरि महलि
बुलावहि पूछउ बात निरंती॥ १ ॥ रहाउ॥

फिर राजा ने कहा-क्या आप योगी हैं?॥

श्री मुखवाक॥ जोगी जुगति नामु निर माईलु ताकै मैलु न राती॥
प्रीतम नाथु सदा सचु संगे जनम मरण गति बीती॥ २॥

तब राजा ने कहा-क्या आप ब्राह्मण हैं?

उत्तर-ब्राहमण गिआन धिआन इसनानी हरि गुण पूजे पाती॥
एको नाम एको नारायण त्रिभवन एको जोती॥

राजा ने कहा-क्या आप क्षत्री हैं?

उत्तर-जिहवा डंडी इहु घटु छाबा तोले नामु अजाची॥ एको हाटु साहु सभना सिरि बणजारे इक भाती॥ ४॥

वार्तक—राजा का कथन

राजा ने कहा-हे महाराज! आप सीधी भाषा में हमें कुछ बताओ क्योंकि आप का कथन मेरी समझ से बाहर की बात है क्योंकि महापुरुषों की बातें तो महापुरुष ही जान सकते हैं। मैं आप से पूछना चाहता हूं कि आप कौन सी धरती के निवासी हैं? तब गुरु जी ने शब्द फुरमाया—

श्री मुखवाक॥

ऊपरि गगनु गगन परि गोरखु ता का अगमु गुरु पुनवासी॥
गुर बचनी बाहरि घरि एको नानकु भइआ उदासी॥ ५॥

वार्तक—राजा का कहना

इस शब्द को सुन कर राजा का मन शांत हो गया। तब राजा शिव नाभ गुरु जी की तीन प्रदक्षिणा करके चरणों मे पड़ गया। फिर राजा ने प्रार्थना की कि आप दयालु तथा ईश्वर स्वरूप हैं। आप मुझ दास की कुटिया को पवित्र करने चलो। सब प्रकार आप की कृपा है। गुरु जी ने कहा- हे राजन! एक धर्मशाला का निर्माण करो। तब हम आप

के गृह में आयेंगे।

तब राजा ने थोड़े ही दिनों में धर्मशाला बनवा दी। फिर राजा गुरु जी को लेने के लिये बाग में आया तब क्या देखा कि गुरु जी महाराज वहां नहीं हैं। राजा को तब गुरु जी के वियोग में मूर्छा आ गई। तब लोगों ने देखा कि गुरु जी नवीन धर्मशाला में बिराजमान हैं। जब राजा ने सुना तो तत्काल भाग कर धर्मशाला में आया और गुरु जी के चरणों पर नमस्कार करने लगा। राजा की श्रद्धा और भक्ति देख कर प्रसन्न हो कर १५७४ बिक्रमी में एक चारपाई प्रदान की। राजा को बहुत प्रसन्नता हुई।

उस समय संगल द्वीप में सात राजा राज्य करते थे। गुरु जी की कृपा से तमाम संगल द्वीप में राजा शिव एक ही राजा सर्वोपरि माना गया और अटल राज करने लगा। उस समय गुरु जी की आयु उनचास वर्ष की थी। उस समय गुरु जी ने प्राण संगली उच्चारण की। वागा पटन-बिदूर आदिक नगरों में लंगर प्रथा चलाई फिर गुरु जी पंजाब देश को लौट आये तथा परिवार ने गुरु जी के दर्शन किये।

एक दिन गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! पाक पटन में शेख फरीद के स्थान पर एक शेख ब्रह्मा है वह हमें बहुत याद करता है और परमात्मा का प्यारा है। चलो उस का दीदार कर आयें। उस की आयु भी बहुत है तब गुरु जी पाक पटन की ओर रवाना हुए।

साखी शेख ब्रह्मा की

अब गुरु जी पाक पटन के बाहर तीन कोस पर जा बैठे। एक दिन शेख का एक आदमी लकड़ी लेने आया। उस ने गुरु जी को बैठे देखा। उस समय गुरु जी ने शब्द उच्चारण किया तथा मर्दाने ने रबाब बजाई।

सलोक महला १ ॥

आपे पटी कलम आपि उपरि लेखु भि तूं॥ एको कहीऐ नानका दूजा काहे कू॥

उस लकड़ी वाले कामल ने जब यह शब्द सुना तो कहने लगा-हे महाराज! इस मिरासी को कहो कि इस शब्द को दोबारा कहे। गुरु जी की आज्ञा से शब्द को दोबारा सुन कर कामल ने याद कर लिया तथा पीर को आकर कहने लगा-हे पीर जी! आज हम को एक खुदा का प्यारा मिला है जहां से मैं लकड़ी लाता हूं। वहां उस ने आसन लगाया हुआ है उस के साथ रबाबी है वह बहुत ही सुन्दर शब्द गाता है। उस का नाम नानक है। पीर ने कहा क्या तुम ने कोई बैंत सीखा है? तो सुनाओ। कामल ने कहा हां एक शब्द मैंने सीखा है-वह कह रहा था।

आपे पटी कलम आपि उपरि लेखु भि तूं॥
एको कहीऐ नानका दूजा काहे कू॥

तब पीर ने कहा—मैं चाहता हूं कि जिस ने यह शब्द कहा है उस का दीदार भी किया जाय। अरे बेटा! जिस ने यह शब्द कहा है वह परमात्मा का प्यारा है। मुझे उस के पास ले चल, उस के साथ मैं कुछ खुदाई बातें करना चाहता हूं।

तब पालकी पर सवार हो कर पीर कामल को साथ लेकर वहां आया जहां गुरु जी का आसन था। पीर ने कहा-हे बाबा नानक! सलामो लेकम। उत्तर में गुरु जी ने कहा-हे पीर जी उस अलेख को सलाम है। गुरु जी ने कहा हे पीर जी! आज खुदा की हम पर मेहरबानी है जो आप के दीदार हुए हैं।

तब दोनों परस्पर सत्कार के पश्चात् बैठ गये। फिर दोनों में बात चीत प्रारम्भ हुई।

पीर कहने लगा कि आप का एक बैंत सुन कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। मैंने सोचा जिस ने यह बैंत कहा है उस के दर्शन भी करने चाहिए। अब आप इस बैंत का रहस्य बताने की कृपा करो। मैं कृत कृत्य होऊंगा। आप ने फुरमाया है कि-

एको कहीऐ नानका दूजा काहे कू॥
इक साहिब ते दुई नहीं॥
केहड़ा सेवां केहड़ा रहीं॥

परंतु हिंदू कहते हैं वह परमात्मा हम में है और मुसलमान कहते हैं कि उस का वास हम में है आप कहो कि खुदा का वास कहां और कहां नहीं। तब गुरु जी ने कहा, हे पीर जी!

इकी साहिब ते इक हद॥ इको सेवहु हूजे रद॥ दूजा काहे सिमरिए जम्मे ते मरि जाइ॥ इको सिमरहु नानका जल थल रहिआ समाइ॥

तब गुरु जी ने सलोक कहा, तब पीर ने पूछा-

पाड़ पटोला धज करी कंबलड़ी पहिरेउ॥ जिनी वेसी सहु पाईए सेई वेस करेउ॥ गुरु जी का उत्तर॥ काउ पड़ोला पाड़नी कंबली पहिरेइ॥ घरहि बैठिआं सहु पाईऐ जे नीअत रास करेइ॥ घरही मुंद विदेस पिर नित झूरे संभाले॥ मिल दिआं ढिल न होवई जे नीअत रास करेइ॥ यह उत्तर सुन कर पीर ने पूछा-नढी वांत न राविआ वडी थी मुई आस॥ धन कूकेंदी गोर मैं तै सह न मिलि आस॥ गुरु जी का उत्तर॥ महल कुचजी मड़वड़ी काली मनहु कसुध॥ जे गुण होवनि ता पिरु रवै नानक अउगुण मुंध॥ १॥

॥ भावार्थ॥ हे पीर जी! यदि औरत घर में हो और मर्द प्रदेश गया हो और औरत मर्द के लिए घर के अंदर ही बैठी रहे तब औरत पति की और पति औरत का। यदि औरत तो औगणहारी हो तथा अपने

पति पर विश्वास न हो तो वह औरत पति की नहीं, वह तो दूसरों की होती है। यदि औरत धैर्य से बैठी रहे तब उस का धैर्य उसकी इच्छा पूर्ण करता है। यदि औरत सुचज्जी हो परंतु पति से डरे तथा महिलों से सुगंधी आती हो उस पर अधिक प्रसन्न होता है। यदि औरत में दुरगंधि हो तो पति उस पर प्रसन्न नहीं होता तथा उस पर कृपा नहीं करता। यदि अधिक दुरगंधि हो तो पति उस के निकट भी नहीं आता। हे पीर जी! यह देह अच्छी नहीं जो अपने स्वामी की सार नहीं जानती। बुरियाई का नाम दुरगंध है यदि अहंकार है तो उस का नाम महा दुरगंध कहा है यदि यह सभी दुर्गुण जिस में हो तो बताओ उसे पिया किस प्रकार मिलेगा। सच्चा स्वामी तो गुणों के साथ ही प्राप्त होता है, तब पीर ने पूछा-

पीर का कथन॥

कवन सु अखर कवण गुण कवण सु मणीआ मंत॥
कवण सु वेसो हउ हरी जित वस आवै कंत॥ १॥

गुरु नानक देव जी का उत्तर॥

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु॥
ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु॥ १२६॥
सेवा करहै कंत की कंत तिस का होइ॥
सभे सैयां छड के कंत किसी पहि होइ॥ १॥

इस का परमार्थ॥ हे पीर जी जो झुकना है यह प्रत्येक के लिये उत्तम है बस उस का नाम अक्षर है और भली बुरी बात सुन कर आगे से उत्तर न देना इस का खिवणा है तथा ईश्वर की ओर से सुख दुख जो भी मिल जाये तथा बाणी द्वारा जब कभी बोलणा पड़े, तभी भला बोले इस का नाम मणीआं कहा जाता है। ऐसे लक्षणों वाली पति को पा लेती है, सभी को छोड़ कर पति देव उसी के बन जाते हैं अर्थात जो

पति की सेवा करती है तब पति उसी का बन जाता है।

जो सेवा करे कंत की तां कंत तिसी का होइ॥
गरबी कंत न पाईऐ भावें खरी सुवालिउ होइ॥

हे पीर जी! मूल तो सच्ची सेवा है सेविका ही को पति परमात्मा का दीदार होता है। परंतु यदि सेवा में अहंकार है तो ऊपर से कितनी भी सुंदर हो उस पर परमात्मा प्रसन्न नहीं होता। यह अटल सिद्धांत है, वही त्यागता (छुटड़) कही जाती है। हे पीर जी! यह सच्च है कि सेवा ही ईश्वर का साक्षात कार होता है, यह सुन कर शेख ब्रह्मा गुरु जी के चरणों पर गिर गया और कहने लगा, धन्य हो गुरु नानक आप धन्य हैं। आप की कृपा से हमें इलाही ज्ञान की प्राप्ति हो गई है। आज हम ने जीवन लाभ प्राप्त किया है, आज खुदा का दीदार हुआ है। गुरु जी ने कहा-हे पीर जी! जैसे रूप और काम में प्रीति है तथा लोभ में धन की प्रीति है उसी प्रकार जो ईश्वर प्रस्त इन्सान है उन की प्रीति परमार्थ की बातों में होती है। जैसे भूखे को भोजन प्रिय है, निंद्रा के समय पलंग पर बिछा बिस्त्र अच्छा लगता है। उसी प्रकार उसके भक्तों को उसी की बातें भली लगती है और बातें उस को अच्छी नहीं लगती। ईश्वर की चर्चा के सिवाय खामोश रहना बहुत अच्छा है।

तब पीर जी ने कहा-हे गुरुदेव! आप कृप्या एक काती प्रदान करो, जिस से हलाल किया हुआ हराम न हो जाए। तब गुरु नानक देव जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

सलोक श्री गुरु नानक देव जी॥ सच काती सच सभ सार॥ घाड़त तिस की अपर अपार॥ सच की साण लई चिलकाइ॥ गुण की थेके विच समाइ॥ तिस का कुठा होवे सेख॥ लोहू लबि निकथा देख॥ हक हलाल लगै इकि जाइ॥ नानक दर दीदार समाइ॥ १॥

वार्तक॥ हे शेख जी! खून के स्थान पर जिस के लोभ हैं जब तक

लोभ है तब तक यह हराम है। जब इस में से लोभ निकल जाय तब यह हलाल हो जाता है। फिर प्रसन्न होकर शेख ने कहा-हे गुरु नानक देव जी! यह समय उस परमात्मा की अपार कृपा से मिला है। यदि अब भी शंकाओं का समाधान न हुआ तब और कहां होगा। इस लिए मैं एक बात और पूछना चाहता हूं। गुरु जी ने कहा-जो कुछ आप पूछना चाहो उसे भली प्रकार पूछिये हमारी ओर से उत्तर दिया जायेगा। तब शेख ने कहा-हे गुरु जो यह माया तो छल और जीव यह लोभी हैं, इस माया को किस प्रकार छला जाय। तब उत्तर में गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया—

सिरीरागु महला १ घरु ५ ॥ अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै॥ जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जिउ टल पलै॥ १ ॥ बिनु तेल दीवा किउ जलै॥ १ ॥

हे शेख जी यह माया किसी से छली नहीं जाती क्योंकि जीव मन से माया निकल नहीं सकती। यह मनुष्य लोभी है। भली समझ कर रखता है। शेख ने कहा बगैर तेल के दीवा किस प्रकार जलेगा और बगैर दीवा जले के प्रकाश किस प्रकार हो। तब गुरु जी ने कहा-

कुरान कतेब कमाईऐ॥ भौ वटी इत तन लाईऐ॥ सच बूझण आण जलाइए॥ बिन तेल दीवा इउं जलै॥ कर चानण साहिब त्यों मिलै॥

हे शेख जी! संयम करने से सत्य का दीपक जलता है। तब साहिब को मिलता है। शेख ने कहा—हे गुरु वर! आप जो बातें कर रहे हैं ऐसे प्रतीत होता है जैसे आप के भीतर से खुदा बोल रहा है।

साखी एक सिक्ख की

चलते चलते श्री गुरु जी एक नगर में पहुंचे। वहां एक सिख का घर था, जब यह सिख बाहर आया तो उसने देखा एक संत बैठा है

और रबाबी उस के आगे बैट कर रबाब बजा रहा है और शब्द पढ़ रहा है, उस सिख ने गुरु जी के चरणों पर नमस्कार करके कहा—हे गुरु देव आप धर्मशाला में पधारें, तब गुरु जी ने हमें आज्ञा दी कि आप चलो इसकी आशा पूर्ण करें। यह कह कर गुरु जी उस सिख के घर के बाहर जा बैठे। वह सिख ने अति निर्धन था, एक बार उसे रोटी मिलती और एक बार नहीं मिलती थी। उस की एक स्त्री तथा एक बच्चा था, उसने यथा शक्ति गुरु जी को प्रसाद करवाया। दूसरे दिन उस सेवक का कहीं हाथ न पड़े और न ही कोई सामान था, उस ने अपने घर में जाकर अपने सिर के बाल काट डाले और उनकी सेली बना कर बाजार में ले गया। उसे बेच कर उस ने अन्न खरीदा। प्यारे पाठक! इतना स्मरण रहे कि वह सिख ने अभी पहुल नहीं लिया था। यदि पहुल ली होती तो वह सिर के बाल न उतारता। उसने अपनी पत्नी को कहा कि तुम भोजन तैयार करो। जब उस ने चूल्हे में आग जला कर भीतर बर्तन लेने गई तब उसका लड़का खेलता-खेलता चूल्हें में गिर कर जल गया और वहां मर गया। उस स्त्री ने उस लड़के को कपड़े में लपेट कर भीतर रख छोड़ा तथा अपने पति को खबर नहीं दी क्योंकि पति को बतलाने से विघ्न पड़ने का भय था कि कहीं वे अतिथि बगैर खाये ही न चले जायें। भोजन तैयार हो चुकने पर उसने पति को कहा—हे स्वामी! भोजन तैयार है। उस ने गुरु जी को आकर कहा—हे महाराज! भोजन तैयार है, आप चल कर भोजन खा लो। गुरु जी घर में गये, जब भोजन परोसा गया तो गुरु जी ने उस स्त्री को कहा—कि तुम अपने बालक को बुलाओ। तब उस स्त्री ने कहा—हे महाराज! वह कहीं सो रहा होगा आप भोजन खा लो। फिर गुरु जी ने कहा—हे देवी! तेरे बालक का नाम क्या है? उस ने कहा—उस का नाम लाल है। तब गुरु जी ने कहा—हे बेटा लालो! बाहर आओ। बस

इस आवाज़ में एक शक्ति थी कि वह बालक खेलता खेलता तथा हंसता हुआ बाहर आ गया। बस इस महत्त को देख कर वह सिखनी तो गुरु जी के चरणों पर गिर गई और कहने लगी हे सर्वशक्तिमान गुरु देव! आप धन्य हो।

फिर दूसरे दिन वह तंगी साहमने थी। तब उस जोड़े ने अपने पुत्र को बेचने का ईरादा किया। श्री गुरु जी ने कहा—आप का बालक कहां है। उसे हमारे पास रहने दीजिये। सिख ने हाथ जोड़ कर कहा—हे अंतर्यामी! कौन सी बात है जो छुपी हुई है? आप सब कुछ जानते हैं। यह कह कर बालक को गुरु जी के हाज़र कर दिया। गुरु जी ने बालक से पुछा—हे बेटा! तेरे माता पिता तुझे बेचना चाहते हैं। बताओ दूसरे घर जा कर चक्की पीसोगे तथा पानी भरा करोगे? लड़के ने उत्तर दिया जो मेरी प्रालध में होगा, वही होकर रहेगा। जब मैं खरीदा ही गया तब मेरा क्या उजर हो सकता है। जो कुछ हुकम होगा वही करूंगा। गुरु जी ने लड़के का उत्तर सुण कर कहा—हे परमात्मा! धन्य हैं जीव जो हमेशां आप की रजा को खिड़े मस्तक सहते हैं और उफ नहीं करते, धन्य है इस लड़के जैसे जो सदैव प्रभु की इच्छा पर शीश झुकाते हैं। वह जहां स्वयं धन्य है वहां उस के माता पिता भी धन्यवाद के पात्र हैं। उस लड़के को गुरु जी ने अपने कंठ से लगा लिया तथा उस समय एक शब्द उच्चारण किया॥ मारू महला १ ॥ मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा॥ गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइआ तितु लागा॥ १ ॥ तेरे लाले किआ चतुराई॥ साहिब का हुकमु न करणा जाई॥ १ ॥ रहाउ॥ मा लाली पिउ लाला मेरा हउ लाले का जाइआ। लाली नाचै लाला गावै भगति करउ तेरी राइआ॥ २ ॥ पीअहि त पाणी आणी मीरा खाहि त पीसण जाउ॥ पखा फेरी पैर मलोवा जपत रहा तेरा नाउ॥ ३ ॥ लूण हरामी नानकु लाला बखसिहि तुधु वडिआई॥

आदि जुगादि दइआ पति दाता तुधु विनु मुकति न पाई॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ वार्तक ॥ यह सुण कर वे सिख गुरु जी के चरणों में गिर गया। तब गुरु जी ने उपदेश दिया—हे भाई! धर्म की कमाई करो। आये गये सिख अथवा साधु सन्त की सेवा करो। दसवंद निकालो सत्य बोलो। नाम स्मरण करो। इस से तुम्हारा लोक परलोक उज्ज्वल होगा। तब सभी सेवकों ने गुरु जी के चरण धो कर पहुल ली और नाम स्मरण में लग गये। सत्य बोलना तथा नेक कमाई करनी यह उन्हों ने अपने जीवन का लक्ष बना लिया। गुरु महाराज! सब को सुमार्ग पर लगा कर आगे गये।

साखी आरती सोहले की

एक दिन गुरु नानक देव जी परमात्मा के ध्यान में मस्त थे। क्या देखा कि निरंकार परमात्मा कह रहे हैं कि हे नानक! संसार के लोग पाप कर्म में लगे हुए हैं तथा सुकर्म की ओर किसी का भी ध्यान नहीं परंतु जीव के कर्मों को परमात्मा के दरबार में लिखा जाता देखा गया। उस कौतुक को देख कर गुरु जी के मन में दया आई। तब उस परमेश्वर ने कहा—हे नानक देव! मुझे तो कोई स्मरण ही नहीं करता। प्रत्येक प्राणी माया के पीछे भाग रहा है। हे नानक! जैसे तुम चाहो मैं वही करने को तैयार हूं। तब गुरु जी ने कहा-हे पिता! आप फिर भी दयालू हैं संसार की रक्षा करनी आप का लक्ष है। आप अपने नाम की लज्जा रखने के लिए जीवों का कल्याण ही करना। तब निरंकार ने कहा—हे नानक! यह लोग तो मेरा नाम कभी भी नहीं लेते। वह तो मुझे जानते ही नहीं। वे लोग तो अहंकार में डूबे हुए हैं। जब मैं उनको कुछ भूख प्यास की तकलीफ देता हूं। तब वे लोक कुछ मेरे अर्पण दान पुन्य करते और मेरा स्मरण करने लग जाते हैं। हे नानक! अभी तो इन प्राणियों की

उमर अल्प है, फिर भी यह मुझे भूले हुए हैं। तब गुरु जी ने कहा हे सर्व शक्तिमान! आप ने मुझे धर्म की रक्षा के लिए संसार में भेजा है। मैं संसार को सन्मार्ग पर लगाऊंगा परंतु आप ने अपनी ओर से संसारी जीवों पर दया ही करनी क्योंकि जीव अलपज्ञ है भूलनहार है। तब करतार ने कहा—हे नानक! मैं तेरा कथन अवश्य ही मानूंगा। अब मैं तुम को आज्ञा देता हूं कि तुम सारे संसार को मेरा नाम जपाओ तथा सन्मार्ग पर लगाओ। मेरे नाम का चक्कर तमाम संसार में फेर दो। हे नानक! जो प्राणी बताए मार्ग पर चलेगा। उसे मैं इस संसार से कीर्ति दिला कर मरने पर अपने पवित्र धाम में स्थान दूंगा और जो तुम्हारे बताये मार्ग पर नहीं चलेंगे वे संसार में दुखी रह कर मरने के पीछे नर्कों में वास करेंगे तथा जो तेरा नाम जपेगा तथा तेरे बताये मार्ग पर अग्रसर होगा उसे सन्सार के सभी सुख सहिजे ही प्राप्त होंगे। इस में रंचक संदेह नहीं है। हे प्यारे नानक! तू सदैव मुझे ही स्मरण करता हैं। इस लिये मैं तेरा नाम जपने वाले को अपना नाम जपने वाला जान कर उसे उत्तम से उत्तम गति प्रदान करूंगा। तेरा जो भक्त होगा उसे अपना भक्त मानूंगा क्योंकि तू मेरा ही रूप हैं। तुझ में और मुझ में भेद नहीं। तेरा नाम लेने वाले को यम नही पकड़ेगा। यह करतार के शब्द सुन कर गुरु नानक देव जी ने नमस्कार किया।

अब गुरु जी सभी काम छोड़ कर प्रभु नाम स्मरण का प्रचार करने लगे तथा जो आता उसे सन्मार्ग पर चलाते। भलाई का उपदेश देते थे। संसारी जीवों को गुरु जी ने कहा-हे मित्रो! इस घोर कलियुग में सब से बढ़ कर प्रभु नाम स्मरण ही मोक्ष का दाता है। इस लिये यदि सुख चाहते हो तो प्रभु नाम स्मरण में लग जाओ, इस के ऊपर गुरु जी ने एक पवित्र शब्द भी उचारण किया-

गउड़ी दीपकी महला १ ॥ जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ

बीचारो॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो॥ १॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ॥ १॥ रहाउ॥ नित नित जीअड़े समालीअन देखैगा देवणहारु॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु॥ २॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करु पावहु तेलु॥ देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु॥ ३॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि॥ ४॥

इस का परमार्थ॥ सुणों मित्रो जो परमेश्वर की शक्तियों तथा कृपाओं का स्मरण करेगा, वही सुख और मुक्ति को प्राप्त करेगा। जहां संत लोक हो वहां बैठो तथा ईश्वर का नाम स्मरण करो और परमात्मा के सोहणे सोहले गाओ, फिर यह विचार करो कि चौरासी लाख योनियें हैं सभी का परमात्मा पालन पोषण करता है परमेश्वर की कृपा अपार है परमेश्वर का स्मरण ही अच्छा है। हे भाई! वह परमेश्वर अपार और असीस वा अनीह है। उस की महिमा को संत लोक ही जानते हैं उन संतों की सेवा करके उस से तुम आर्शीवाद प्राप्त करो। इसी में प्रभु प्रसन्न होते हैं। परमात्मा के दरबार में सभी का हिसाब है कि अमुक जीव इतनी देर संसार में रहेगा और इस समय वापस बुला लिया जायेगा। जो मेरा भक्त है वह मर कर मुझे प्राप्त कर लेगा और जीवित संसार में आनंद मानेगा। हे जीव! यदि तुमने परमात्मा को विसार दिया तो तू महान दुखदायक नर्कों में जायेगा, जब प्राणी ने नाम जपने का विश्वास दिलाया था, तभी परमात्मा ने उसे संसार में भेजा था। इसे उस प्रभु का नाम स्मरण करना उचित था परंतु इस जीव ने माया के लोभ से परमेश्वर को भुला दिया। जैसे किसी कुंवारी को एक दिन कोई विवाह कर ले जाता है, उसी प्रकार इस जीव को एक दिन यमदूत ले जायेगा। तब इस का कोई भी चारा नहीं चलेगा। आओ हम सभी मिल

कर उस प्रभु की आरती गाएं और अपना जन्म सफल करें।

रागु धनासरी महला १ ॥ गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराई फूलंत जोती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ ॥ भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तुही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनु मोहि आही पिआसा ॥ क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा ॥ ४ ॥

परमार्थ ॥ गुरु जी फुरमाते हैं—हे प्रभु! आकाश और धरती जो हैं वह दोनों मंडल हैं अर्थात यह दोनों आप की आरती करने के थाल हैं। चांद और सूर्य की उन में ज्योति जल रही है। आकाश के जो सितारे हैं वे सभी थाल के मोती हैं और पवन का चवर हो रहा है और जितनी बनराय हैं वह भी आप को पुष्प अर्पण करने में लगी हैं। हे भव सागर से पार करने वाले परमात्मा माया को दूर करके मुझे अपने चरणों में लगा ले। यह आरती आप की हर समय हो रही है और अनाहद शब्द जो हो रहा है वह दशम द्वार की सूचना दे रहा है। संसार के जीवों के मुख तथा नैनों में आप की ज्योति ही चमक रही है। उन से ही वह उजाला है। हे प्रभु! आप के हजारों वर्ण हैं। अनेकों गंधर्व आप की स्तुति के गीत गा रहे हैं और अनेकों देवता आप को नेति नेति कह कर ध्यान धरते हैं परंतु आप के पार को नहीं पाते। हे नाथ! आप घट घट में निवास कर रहे हो कोई स्थान भी आप के बिना नहीं है। आप

अनादि हैं। हे प्रभु! अधिक क्या कहें। यदि कहते ही जायें, तो मन नहीं भरता। परंतु ग्रंथ का विस्तार अधिक होने का भय है इस लिये यहां ही समाप्त करता हूं। हे नाथ! आप के चरणों का ध्यान हमें कभी न भूले।

फिर उस सर्व शक्तिमान परमात्मा ने कहा—हे नानक! मैं तेरे ऊपर अत्यंत प्रसन्न हूं। तू मेरा नाम जपा कर तमाम संसार को सद उपदेश देकर अच्छे मार्ग पर लगा रहे हो। इस में मैं तेरी अधिक सिफत नहीं कर सकता क्योंकि संसार का उपकार करना तेरा कर्तव्य है क्योंकि संसार में तूं इसी लिये गया हुआ हैं और मेरी जो आज्ञा है उसे तुम पालन करने में रात्रि दिवस एक कर रहे हो। इस लिये मैं तुम पर बहुत ही प्रसन्न हूं। अधिक क्या कहूं। तू मुझे बहुत ही प्यारा हैं तेरा प्रत्येक कर्तव्य मुझे प्रिय है।

इधर गुरु जी के मन में यह विचार था कि कलयुग के जीव भारी कुकर्म में लगे हुए हैं तथा कलि काल में केवल नाम स्मरण ही भव सागर से पार होने का एक जहाज़ है। परमेश्वर के नाम का स्मरण कराना। यह एक सब से उत्तम काम है, इसी से संसार का कल्याण है तथा संसार के भले में अपना भला है। वह विचार कर सतिगुर श्री नानक देव जी महाराज उस अकाल पुरुष की आज्ञा मान कर इस संसार में जीवों से प्रभु नाम स्मरण कराना ही अपना परम ध्येय बना गये हैं, उन की कृपा से जीवों का कल्याण है।

साखी संतों से

भ्रमण करते करते श्री गुरु जी महाराज पूर्व देश में पहुंच गये। वहां आप को कुछ महा पुरुष मिले। उन्हों ने गुरु जी को प्रणाम करके फिर कहा—हे बाबा जी राम राम! गुरु जी ने कहा आओ संतो सत्य राम

बैठो। उन्होंने बैठ कर कहा हम आप के नाम पर बलिहार हैं। उन्हों ने कहा कि यदि आप की आज्ञा हो तो हम कुछ प्रार्थना करने आये हैं। हमें एक शंका है। गुरु जी ने कहा—हे महाराज! आप निःसंकोच जो कहना हो सो कहो। उन्हों ने कहा—अनेकों पुण्य करते हैं अनेक हवन यज्ञ करते हैं तथा अनेकों तीर्थ यात्रा करते हैं। उन को कौन कौन सा फल होगा। क्या उन की मुक्ति होगी अथवा नहीं होगी। तब गुरु जी ने एक शब्द कहा-

भैरउ महला १ ॥

जगन होम पुंन तप पूजा देह दुखी नित दुख सहै॥ राम नाम बिनु मुकति न पावसि मुकति नामि गुरमुखि लहै॥ राम नाम बिनु बिरथै जगि जनमा॥ बिखु खावै बिखु बोली बोलै बिनु नावै निहफलु मरि भ्रमना॥ रहाउ॥ पुसतक पाठ बिआकरण वखाणै संधिआ करम तिकाल करै॥ बिनु गुरु सबद मुकति कहा प्राणी राम नामु बिनु उरझि मरै॥ २ ॥ डंड कमंडल सिखा सूतु धोती तीरथि गवनु अति भरमनु करै॥ राम नाम बिनु सांति न आवै जपि हरि हरि नाम सु पारि परै॥ ३ ॥ जटा मुकटु तनि भसम लगाई बसतर छोडि तनि नगनु भइआ॥ राम नाम बिनु त्रिपति न आवै किरत के बांधे भेखु भइआ॥ ४ ॥ जेते जीअ जंत जलि थलि महिअलि जत्र कत्र तू सरब जीआ॥ गुर प्रसादि राखि ले जन कउ हरि रस नानक झोलि पीआ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरु जी कहते हैं—हे संतो! चाहे कोई हवन यज्ञ करे चाहे तीर्थों पर जाए, योगी सन्यासी चाहे ब्रह्मचारी बने। चाहे नांगा और करवत कराये, चाहे सारी पृथ्वी फिरे देवी देवताओं का पूजन करे। बहुत तपस्या

भी करे, फिर प्रभु के नाम स्मरण के बिना यह जीव मुक्त नहीं होता। मुक्ति तभी होगी जब सतगुरु जी के चरणों का सहारा लेकर शुद्ध मन से राम नाम का स्मरण करे तब इस का जन्म सुधरता है नहीं तो यह आवागमन में ही पड़ा रहता है। परमेश्वर के नाम बिना यह जीव विष खाता है और विष ही पान करता है तथा विष ही बोलता है इस विष व्यवहार का क्या फल होगा। यह बार बार जन्मता मरता है, तथा अनेकों दुख पाता है तथा अनेकों योनिआं में यह भटकता है। तब महा पुरुषों ने कहा एक पुस्तकें पढ़ते हैं एक तीन काल संध्या बंधन तर्पण आदिक करते हैं, क्या उन की मुक्ति होगी या नहीं। गुरु जी ने कहा-यदि चारों वेद पढ़े, चाहे तीन वार संध्या आदिक छक अठारह बार अठारह पुराण पढ़े। तब भी मुक्ति नहीं होगी, मुक्ति तभी होगी जब गुरु के चरणों के आश्रित होकर नाम समरण करे। फिर संतों ने कहा-यदि गृहस्थ को त्याग कर बन में चला जाय तो क्या मुक्ति होगी अथवा नहीं। गुरु जी ने कहा-सभ कुछ त्याग कर दंड कमंडल लेकर बनों में भी चला जाय तो भी नाम समरण के बिना मुक्ति नहीं मिलती भले ही सारे संसार का भ्रमण करे चाहे सात समुंद्रों में स्नान करे परंतु नाम नहीं जपता तो इस का कल्याण नहीं हो सकता। मुक्ति तो केवल शुद्ध हृदय से प्रभु नाम जपने से ही मिलेगी, फिर सन्तों ने कहा—एक जटा जूट बना कर फिरते हैं एक तन पर भस्म रमा लेते हैं एक वस्त्र रंगा कर पहिनते हैं एक कान छिदा लेते हैं। गुरु जी ने कहा-हे संतो! इन आडंबरों में मुक्ति नहीं। मुक्ति तो सतगुर की शर्ण में जाकर नाम समरण में है, जब प्राणी अहंकार को त्याग कर परमेश्वर चिंतन करता है तब इस की मुक्ति होती है। नगर फिरने से कोई मुक्ति नहीं हुई और न ही होगी, फिर संतों ने कहा—जो जल थल में रहते हैं उन की मुक्ति कैसे होती है। गुरु जी ने कहा-हे सन्तों जल थल में रहने वालों का भी पालन पोषण करने

वाला यह परमात्मा ही है। वे भी जब परमेश्वर को याद करते हैं तब वे भी मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं, गुरु जी ने कहा—हम ने तो अपना अनुभव कह दिया है आगे उस की गति वही जानता है। उसकी गति अपार है वह परमात्मा अनंत है उस को क्या स्वीकार है यह तो वही जानता है। वह सर्व शक्तिमान है जो चाहे कर सकता है, उस को रोकने वाला कोई भी नहीं है।

यह सुण कर वे संत धन्य हो, कह कर गुरु जी के चरणों में प्रणाम करने लगे। कहने लगे—हे महाराज! आप जो साक्षात परमात्मा हो हमें भवजल से पार करो। गुरु जी ने कहा—आप एक मन हो कर नाम स्मरण करो, तब वह परमेश्वर आप का कल्याण करेगा। इस में संदेह नहीं है। तब वे संत गुरु जी के शिष्य हो कर नाम जपने लगे। फिर गुरु जी वहां से आगे चले।

साखी अरब देश के बादशाह से

एक दिन मर्दाने ने कहा-हे गुरु जी! अरब देश कैसा है, गुरु जी ने कहा—हे मर्दाना! क्या तेरा मन अरब देश को देखने को चाहता है। यदि तुझे इच्छा है तो हम तुम को वहां ले चलेंगे। बस गुरु जी हम दोनों को लेकर अरब में जा पहुंचे। उस देश का बादशाह उस समय लाज वरद नाम का था। वह बहुत ही ज़ालम था, जो कोई हिन्दुस्तान का निवासी वहां आ जाता तो बादशाह उसकी गर्दन उड़ा देता था। जब लोग बहुत दुखी हुए तब उन्हों ने ईश्वर के दरबार में प्रार्थना की तथा उन की पुकार ईश्वर के दरबार में स्वीकार हो गई।

एक दिन गुरु नानक जी के प्रति आकाश बाणी हुई कि हे नानक! मैं तेरे ऊपर अति प्रसन्न हूं। मैं तुझे यह खलीता भेज रहा हूं। वह खलीता तो गुरु जी ने ले लिया उस खलीते पर ईश्वरीय भाषा के अक्षर थे।

अरशी तुर्की अर्बी फारसी तथा हिन्दी के अक्षर थे। वह खिलता पहिन कर गुरु जी उस नगर के बाहर जा बैठे। जब लोगों ने देखा तब बादशाह से कहा—हे जहां पनाह! बाहर एक संत बैठा है। उसके गले में चोला है। उस पर तो कुरान शरीफ के तीस पारे लिखे हुए हैं। तब बादशाह ने वजीर को कहा-तुम जाओ और उस फकीर के गले से वह खिलता उतार कर ले आओ, तब वजीर गुरु जी के पास आया कहने लगा-हे साईं जी! यह खिलता उतार कर हमें दे दो, क्योंकि बादशाह का यही हुकम है यदि तुम ने शाही हुकम न माना तो बादशाह तुम को दुख देगा। वजीर का संकेत पा कर नौकरों ने वह कुरता उतारना चाहा पर वह बदन से कौन उतार सकता था। खिलता नहीं उतरा। जब सभी ताकत लगा कर थक गये तब उन्हों ने बादशाह से जाकर कहा—हे जहां पनाह! खिलता नहीं उतरने का। तब बादशाह ने अति क्रोध के साथ कहा के तुम उस हिन्दू फकीर को दरया में ढुबो दो, बस वजीर ने अपने नौकरों को हुकम दिया कि इस फकीर को दरया में डुबो दो। तब नौकरों ने किया कि गुरु जी को बहते दरया में डुबो दिया। देखने वाले तमाशा देखते रहे, परंतु अचंबा यह था कि न तो गल का कुरता ही भीगा और न ही गुरु जी को जल ने स्पर्श किया। वरुण देवता ने गुरु जी को अपने हाथों पर उठा लिया तथा गुरु जी के चरणों पर नमस्कार किया। जब वरुण ने गुरु जी को आदर के साथ किनारे पर बैठा दिया तब सभी लोग अचंभे में आ गये।

जब बादशाह ने ऊपर की बात सुनी तब फिर महान क्रोध में आकर हुकम दिया कि उस फकीर को आग में जला दो। वजीर ने गुरु जी के इर्द गिर्द लकड़ी इक्ट्ठी करके आग लगा दी। उसी समय अग्नि देव ने गुरु जी के चरणों पर नमस्कार किया तथा आग में गुरु जी का कुछ भी बिगड़ने नहीं दिया फिर देखने वाले लोग अत्यंत ही प्रेशान हो गये।

बादशाह ने यह भी तमाम बात सुनी तो कहने लगे—यह फकीर कोई जादूगर है। इसे किसी पहाड़ के ऊपर से गिरा कर खत्म कर दो। वजीर ने एक बहुत ऊंचे पहाड़ से गुरु जी को नीचे पटक दिया। पवन देवता ने गिरते हुए गुरु जी को अपने हाथों पर रख लिया तथा रंचक भी चोट नहीं लगी तथा एक फूलों के सुन्दर मंच पर गुरु जी को सब ने बैठे देखा। देख कर लोग भयभीत हो गये। लोगों ने बादशाह को कहा कि वह साधू अभी तक जीवित है। तब बादशाह ने वजीर को बुलाकर कहा कि यह साधू कोई भारा जादूगर है। इसे कोई बड़ा सा गहरा गढ़ा खोद कर उस में डाल कर ऊपर मिट्टी पत्थर आदिक डाल कर दबा दो। वजीर ने वैसे ही किया गुरु जी को एक गढ़े में डाल कर हज़ारों मनों के पत्थर आदिक डाल दिये तथा फिर सबी अपने अपने घरों को आ गए।

जब दूसरे दिन लोक उधर गए तब उन्हों ने गुरु जी को वहीं चौंकड़ा मारे हुए बैठे देखा। अनेक जो बुद्धिमान थे, कहने लगे कि भाई! जिस का भगवान रक्षक हो उस को कौन मार सकता है। फिर लोगों ने बादशाह को गुरु जी का जिंदा निकलना बताया तो फिर बादशाह ने वजीर को कहा कि उस फकीर को मेरे साहमने लाकर उस की ग्रीवा उतारी जाये। अब गुरु जी को बादशाह के साहमने लाकर कतल करने लगे। तब जो भी शस्त्र चलाते थे। वह एक भी बाबा जी को आघात नहीं पहुंचाता था। बादशाह को अत्यंत क्रोध हुआ फिर हुकम दिया कि इस को सूली पर चढ़ा दिया जाए। जब जल्लाद उसे सूली पर चढ़ाने लगे, तब वह सूली सब्ज हो गई जैसे सूखा वृक्ष हरा हो जाता है, सभी लोग और वजीर हैरान हो गये तथा भयभीत हो गये, कहने लगे हे खुदावंद! यह फकीर क्या बला है जो आग पानी पत्थर शस्त्र और सूली आदिक से भी नहीं मरता और न ही इस के कंठ से कुरता ही उतरता

है। यह क्या माजरा है?

इधर जो बादशाह के दरबार में बुद्धिमान थे, उन्होंने कहा—हे जहां पनाह! यह फकीर तो कोई महापुरुष नज़र आता है। ऐसा मालूम होता है, परमात्मा ने फकीर का रूप धार रखा है क्योंकि अग्नि जल पवन आदिक सभी इसकी आज्ञा को मानते हैं। हमें तो यह मालूम होता है कि यह साधू नहीं परमात्मा ही है। तुम्हारी परीक्षा लेने आया है। इधर तो यह बातें हो रही थी उधर मर्दाने ने और मैंने (बाले) गुरु जी से प्रार्थना की कि हे गुरुदेव! यह बादशाह अत्यंत पापी है। इसे दंड अवश्य ही देना चाहीये। तब गुरु जी ने हंस कर उत्तर दिया—हे बाला और मर्दाना! जो कुछ प्यारे की इच्छा है वही हो रहा है। हमें तो उस परमेश्वर की आज्ञा है कि हम संसार को अच्छे मार्ग पर लगायें। जैसी किसी की प्रकृति होती है वह वैसा ही कर्तव्य करता है और जिस की रक्षा ईश्वर करता है उस को कौन मारन वाला है, जो पुरुष जैसा कर्म करता है उस का फल वह परमात्मा ही देता है। हमारा किसी से कोई वैर विरोध नहीं है जो पाप करेगा उस का उत्तर दायत्व उसी पर ही होगा। हे मर्दाना! तुम शांत रहो जो कुछ होता है, उसे देखते जाओ।

मनुष्य की प्रकृति ही ऐसी है कि जब इस से कोई महान कुकर्म हो जाय तब स्वभाविक इसे अपने कृत्य से ग्लानी हो जाती है तथा पश्चाताप से जलने लग जाता है। बादशाह की आंख खुली तब वह नंगे पैर और कट में कपड़ा डारे तथा मुख में घास लेकर श्री गुरु जी के चरणों में उपस्थित हुआ तथा त्राहिमां त्राहिमां के शब्द कहने लगा-हे महाराज! मैं अधम हूं, पापी हूं, आप मुझे क्षमा कर दें। मैं भारी गुनाहगार हूं और आप बखशनहार हैं मुझ पर कृपा करो। मैं आप का दास हूं फिर कांपता कांपता बादशाह गुरु जी महाराज के ऊपर ही गिर गया, तथा फिर हाथ बांध कर कहने लगा—हे खुदा के रूप फकीर जी! आप

मेरे सहित मेरे देश को क्षमा कर दो। मेरे तो भय से प्राण सूख रहे हैं। आप दयालु हो, सभी कुछ आप के ही वश में हैं फिर बहु मूल्य भेंट गुरु जी के आगे रख कर लाख प्रकार से प्रार्थना की और कहा कि आगे से जैसे आप की आज्ञा होगी वैसे ही किया जाएगा।

गुरु जी ने कृपा करके कहा—हे बादशाह! हम तब तेरे पर प्रसन्न होंगे जब तू यह प्रण करे कि मैं आगे से किसी मनुष्य को दुख नहीं दूंगा तथा पक्षपात को छोड़ कर सदैव न्याय करूंगा। नेक रहूंगा यदि तुम ने प्रण करके फिर भी वैसा ही बुरा कर्तव्य रखा तो याद रखो फिर तुम को भारी दोज़ख में डाल दिया जाएगा और फिर कभी तुम्हारे ऊपर कृपा नहीं की जायेगी। बादशाह ने कहा—हे गुरुदेव! अब तो मुझ में एक तिनका भी तोड़ने की सामर्थ्य नहीं है। जैसे आप आज्ञा दोगे उसी प्रकार समस्त आयु भर करूंगा। यह मेरा सच्चा प्रण है। गुरु जी ने कहा—देखो उस परमात्मा का नाम जपो और अपने देश में लंगर की प्रथा चलाओ। गरीबों की पालना करो, पापों को दूर से ही त्याग दो। न्याय करो, सिपारश न मानों। तब बादशाह ने गुरु जी की सभी आज्ञायें स्वीकार की तथा उसी दिन गुरु जी का शिष्य बन गया। जब देश का बादशाह ही गुरु जी का मुरीद हुआ तो फिर प्रजा कब पीछे रहने लगी थी क्योंकि कहा है कि यथा राजा तथा प्रजा। इस प्रमाण के अनुसार सभी जनता श्री गुरु नानक देव जी महाराज की शिष्य हो गई, अब गुरु जी कुछ दिन उस बादशाह के महिमान रह कर फिर भ्रमण पर चले गये।

साखी एक पठान की

एक बार गुरु जी भ्रमण करते करते पठानों की बस्ती में जा पहुंचे गांव के बाहर एक हुजरा था। मर्दाने ने पूछा—हे महाराज! यह हुजरा यहां किस ने बनवाया है। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! इसी गांव का

एक पठान है उसी ने यह हुजरा बनवाया है। वह इसी जगा आकर शाम की निमाज पढ़ता है और उस को यहां बड़े बड़े आलम लोग मसले सुनाते हैं। परंतु उस के मन में रंचक भी दया नहीं आती। दिन के समय वह नगरों को लूट लेता है। हम उस को मिलने के लिये इधर आए है। परंतु ऐसे पुरुष को मिलना अच्छा नहीं होता परंतु हमें तो दूसरों के कुकृत्यों पर दया आ जाती है।

इतनी बात हो रही थी तब शाम हो गई तब वह पठान बड़े अहंकार के अन्दर आया हुआ इस हुजरे में आ गया। काजी मुल्लां जो उस के साथ थे, सभी ने निमाज के पश्चात् मसले कहने आरम्भ किये। तब वह पठान सुन सुन कर धन्य अल्लाह! धन्य है खुदा! इस किसम के शब्द कहने लगा। गुरु जी जो निकट ही बैठे थे, उस की ओर देख कर हंसने लगे। तब उस पठान ने कहा—हे फकीर! हम खुदा का नाम ले रहे हैं और तुम हंस रहे हो। यह हंसी गैर वाजब है, तब श्री गुरु जी ने एक शलोक उच्चारण किया-

॥ सलोक महला १ ॥

हरणां बाजां ते सिकदारां इन पढ़िआ नाउ ॥ फादी लगी जात फहाइन अगे नाही थाउ ॥ सो पढ़िआ सो पंडित बीना जिनी कमाया नाउ ॥ पहिलों दे जढ़ अंदर जंमै उपरि होवे छाउ ॥ राज सीह मुकदम कुते ॥ जाइ जगाइन बैठे सुते ॥ चाकर नहिंदा पाइन घाउ ॥ रत पित कुतिहो चट जाहु ॥ जिथे जीआं होसी सार ॥ नकी वडी लाइत बार ॥

॥ वार्तक ॥ जब उसने गुरु जी के मुख से यह सलोक सुना तो कहने लगा—हे फकीर साईं! क्या ईश्वर का नाम जपने से छुटकारा नहीं होगा तो और किस प्रकार से छुटकारा हो सकता है? गुरु जी ने कहा—

हे पठान! तू भूला हुआ हैं। यहां तो तू मसले सुनता और खुदा का नाम भी लेता हैं, तथा नगर में जाकर तू पूरा पूरा मक्कार बन जाता हैं तथा गरीबों का खून पीता है। इन फरेबी कर्मों के लिये परमात्मा तुझ को दंड देगा और फरिश्ते तुम को नर्कों में डाल देंगे। पठान ने कहा-हे साईं! मैं तो आपना लाभ देख कर खुदा का नाम लेता हूं। फिर अंतर्यामी श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने एक और शब्द उच्चारण किया-

मलार महला १ ॥

सउ मणु हसती घिउ गुडु खावै पंजि सै दाणा खाइ ॥ डकै फूकै खेह उडावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ अंधी फूकि मूई देवानी ॥ खसमि मिटी फिरि भानी ॥ अधु गुहाला चिड़ी का चुगणु गैणि चढ़ी बिललाइ ॥ खसमै भावै ओहा चंगी जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ सकता सीहु मारे सै मिरिआ सभ पिछै पै खाइ ॥ होइ सताणा घुरै न मावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ अंधा किस नो बुकि सुणावै ॥ खसमै मूलि न भावै ॥ अक सिउ प्रीति करे अक तिडा अक डाली बहि खाइ ॥ खसमै भावै ओहो चंगा जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ नानक दुनीआ चारि दिहाड़े सुखि कीतै दुखु होई। गला वाले हैनि घणेरे छडि न सकै कोई ॥ मखी मिठै मरणा ॥ जित तू रखहि तिन नेड़ि न आवै तिन भउ सागरु तरणा ॥

॥ वार्तक ॥ जब यह सलोक गुरु जी ने सुनाया तब पठान ने गुरु जी के चरणों पर सिर रख दिया और कहा—हे महाराज! हम ने जाना कि राज्य में आनंद है परंतु अब जाना है कि राज्य के पश्चात् नर्क होगा। यह भारी दुख है। अब हमारी सद गति कैसे होगी। यह सुन कर गुरु जी ने एक परम पवित्र सलोक उच्चारण किया-

॥ महला १ ॥

राजु मालु रूपु जाति जोबनु पंजे ठग ॥ इनी ठगीं जगु ठगिआ किनै न रखी लज ॥ एना ठगन्हि ठग से जि गुर की पैरी पाहि ॥ नानक करमा बाहरे होरि केते मूठे जाहि ॥ १ ॥

॥ वार्तक ॥ यह सलोक सुन कर पठान श्री गुरु जी के चरणों पर गिर गया और कहने लगा—साधू तो परमात्मा के प्यारे होते हैं। आप मेरा गुनाह माफ करो, हे महाराज! मैं तो आप की शर्ण हूं। गुरु जी ने कहा-हे भाई! आज तुम को क्षमा किया जाता है परंतु आगे से कोई बुरा काम नहीं करना होगा नेकी के मार्ग पर सदैव चलना होगा। तब वह पठान श्री गुरु नानक देव जी के दरबार में शिष्य हो गया। इस प्रकार उसका कल्याण करने के लिये तथा उसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए गुरु जी उसके घर में ठीक नौ मास व्यतीत करके उस पर अति प्रसन्न होकर उसे अभयदान दिया। अब गुरु जी ने कहा—कि आप लोग जो कुछ मांगना चाहो मांग लो, उन्हों ने कहा—हे गुरु जी! आप अपनी कृपा से वह वस्तु हमें दो जिस को हमारी आगे की संतान भी देख कर आप की दया स्मरण रखे। गुरु जी ने कहा—आप कढ़ाह प्रसाद बनवाओ जिस में मैदा चीनी और घी बराबर का हो, उन्हों ने एक हिन्दू हलवाई से कढ़ाह प्रसाद बनवाया तथा गुरु जी के आगे रखवा दिया। गुरु जी ने कहा—तुम लोग इस पर एक चादर डालो जब चादर डाली गई। तब गुरु जी ने कहा—तुम बैठ कर वाहिगुरु वाहिगुरु का जाप करो। उन पठानों ने वैसे ही किया फिर गुरु जी ने मुझे कहा—हे बाला! यह चादर उठा कर इन को दे दो। मैंने चादर उतार कर उन लोगों को दे दी, गुरु जी ने आज्ञा दी कि तुम कढ़ाह प्रसाद इन लोगों में बांट दो जब चादर उठाई गई तो उस कढ़ाह में एक पंजे का निशान लगा हुआ देखा तब गुरु जी ने उस से कहा—नाम जपना! चादर डाल कर प्रभू से बिनती करनी। जब चादर उतरने पर पंजे का निशान

देखो। तो जान लेना कि तुम्हारा कार्य अवश्य ठीक होगा और फिर कढ़ाह को बांट देना। यदि पंजा न लगा तो फिर वह कढ़ाह प्रसाद नहीं बांटना। पठानों में आज तक यही रीति है। वे सभी पठान गुरु जी के शिष्य बन गये। उन का उद्धार करके श्री गुरु जी महाराज वहां से रवाना हुए।

साखी भक्तों के साथ

एक दिन गुरु जी के पास कुछ भक्त लोग आये और कहने लगे—हे महाराज! हम ने कुछ पूछना है अगर आज्ञा हो तो हम पूछें। गुरु जी ने कहा—हे भगवान के प्यारो! जो कुछ आप की इच्छा हो वह पूछो। उन्हों ने कहा—हे महाराज! यह जीव जो कुछ पुण्य पाप करता है और जो यह माया के पीछे भागा भागा फिरता है, क्या यह किसी की प्रेरणा से करता है अथवा यह स्वयं स्वतंत्र रूप से करता है? इस के उतर में श्री गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

राग बिलावल महला १ ॥ मन का कहिआ मनसा करै ॥ ईह मन पाप पुन्न उचरै ॥ माया मद माते त्रिपत न आवै ॥ त्रिपत मुकत मन साचा भावै ॥ १ ॥ तन धन चलत सब देख अभिमाना ॥ बिन नावै किछ संग न जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कीजै रस भोग खुसीआ मन केरी ॥ धन लोका तनु भसमै ढेरी ॥ खाकू खाक रलै सब फैल ॥ बिन सबदै नहीं उतरै मैल ॥ २ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरु जी कहते हैं—हे राम के भक्तो! यह प्राणी भक्ति भी करता है। योग भी करता है और धन को एकत्र करके खज़ाने में भर लेता है, धन माया के जो आनंद है वह इसके साथ नहीं जाते तथा शरीर भस्म हो जाएगा और दौलत को अन्य लोग ले जायेंगे। धन के लिए जो इसने

पाप किए, वे सभी इस को नर्क में जा गिरायेंगे। परमात्मा के नाम के बगैर इसका कोई मित्र नहीं होगा। जब तक यह परमात्मा का भजन और गुरु की शर्ण प्राप्त नहीं करेगा। तब तक इस की मैल दूर नहीं होगी, ईश्वर भजन से इस का छुटकारा होगा।

फिर उन्होंने पूछा—हे महाराज! यह प्राणी जिस योनी में जाता है, तथा जिस में नाचता है। यह उस नाचने से किस प्रकार छूटेगा। फिर गुरु जी ने पउड़ी कही-

॥ पउड़ी ॥

गीत नाद धन ताल सकूरे॥ त्रिहु गुण ऊपजै बिनसै दूरे॥ दूजी दुरमति दरद न जाइ॥ छूटै गुरमुखि दारू गुण गाइ॥ ३ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरु जी कहते हैं—हे भक्त जनों! मरने वाले को गीत नाद ताल पखावज बजाये जाते हैं तब वह प्राणी उनके ही कारण नाचता है और यह प्राणी जो योनी में पड़ता है। इसी करके काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तथा ममता के लिए अनेकों योनिओं में जाता है। बार बार इस का नाश होता है तथा बार बार यह उपजता है। अब का विछुड़ा हुआ फिर नहीं मिलेगा। इन प्राणियों की आयुएं अनेकों वर्षों की हैं, जैसे लाखों वर्ष तक पाषाण की आयु है। यह उन से भ्रमण करता रहता है। इस प्रकार मनुष्य जन्म का गया हुआ प्राणी बहुत ही दूर चला जाता है, दुमर्ति बड़ा भारी रोग है फिर भक्त कहने लगे—हे गुरु जी! इस जीव का यह दुमर्ति रोग किस प्रकार दूर होता है? गुरु जी ने कहा—इस का इलाज प्रभु का नाम है, जब यह नाम स्मरण करता है, तब यह रोग अपने आप ही दूर हो जाता है। फिर उन भक्तों ने कहा—हे गुरु जी! एक वैष्णव कहलाते हैं तथा एक तपसवी तथा एक पंडित कहलाते हैं

और एक जैनी आदिक हैं इन में से उत्तम कौन हैं? फिर गुरु जी ने पउड़ी कही।

॥ पउड़ी ॥

धोती ऊजल तिलकु गलि माला ॥ अंतरि क्रोधु पढ़हि नाट साला ॥
नामु विसारि माइआ मद पीआ ॥ बिनु गुर भगति नाही सुखु थीआ ॥ ४ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरु जी ने कहा—हे भक्तो! यह सभी नट की विद्या है, जैसे नट नाटक करता है वे वैसा ही प्रतीत होता है। जैसे धोती पहिननी मालायें धारन करनी, तिलक आदिक यह वैष्णवों के स्वांग हैं। नट की भांति जब इस के मन में काम आदिक ममता माया रहती है तब क्या यदि बाहर का स्वांग कर लिया तो क्या? उस परमात्मा की अनन्य भक्ति के बिना भक्त नहीं कहला सकते।

फिर उन्हों ने कहा—हे गुरु जी! जो मुख से तो किसी को गुरु कहते हैं परंतु गुरु आज्ञा की अवहेलना करते हैं, उन की क्या गति होगी? फिर गुरु जी ने आगे की पउड़ी उचारण की-

॥ पउड़ी ॥

सूकर सुवान गरधभ मंजारा ॥ पसू मलेछ नीच चंडाला ॥
गुर ते मुहु फेरे तिन्ह जोनि भोगईऐ ॥ बंधनि बाधिया आईऐ जाईऐ ॥ ५ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरु जी कहते हैं जो गुरु जी की आज्ञा नहीं मानते वे प्राणी सूर चंडाल कौवा कुत्ता आदिक की योनि को पाते हैं अन्य बहुत सी पशु योनियें हैं उन में जाएंगे तथा भूत प्रेतादिक बनेंगे। यह सभ योनियें निषिद्ध मानी गई हैं। गुरु की अवहेलना से यही योनिएं प्राप्त होती हैं।

फिर उन्हों ने कहा—हे महाराज! जो सतगुर को प्राप्त करके सदैव उन के सन्मुख रहते हैं उनकी क्या गति होगी? कृपया यह भी बता दो। फिर गुरु जी ने आगे एक पउड़ी श्री मुख से उच्चारण की-

॥ पउड़ी ॥

गुर सेवा ते लहै पदारथु ॥ हिरदै नामु सदा किरतारथु ॥ साची दरगह पूछ न होइ ॥ माने हुकमु सीझै दरि सोइ ॥ ६ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरु जी ने कहा-हे भगवान भक्तो! जो प्राणी उस परमात्मा की भक्ति तन, मन, धन लगा कर करते हैं। उस का यह जन्म सफल होगा, जो प्रेम रूपी उत्तम पदार्थ है उसको मिलेगा। उस परमेश्वर की कृपा से उस की अंतरात्मा भी परम पवित्र हो जायेगी, तथा मुक्तधाम में उस को कोई रुकावट नहीं होगी और परमात्मा के दरबार में उस प्राणी का मान होगा। हे भक्तो! उस परमधाम में वही जाऐंगे जिन्हों ने उस भगवान के नाम का स्मरण किया है। फिर उन्हों ने पूछा—हे महाराज! जो उस परम पुरुष को जानना चाहें तो वह कौन सा यत्न करे? फिर गुरु जी ने एक पउड़ी और उच्चारण की-

॥ पउड़ी ॥

सतिगुरु मिलै त तिस कउ जाणै ॥ रहै रजाई हुकमु पछाणै ॥ हुकमु पछाणि सचै दरि वासु ॥ काल बिकाल सबदि भए नासु ॥ ७ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरु जी ने फुरमाया—हे मित्रो! यह प्राणी पहिले गुरु जी के बताये मार्ग पर चल कर उस परमात्मा की पहिचान करे। सुख दुखादि द्वंदों को एक समान जाने तब इस जीव को उसका प्रासार प्राप्त होता है।

फिर वह बोले—हे महाराज! जो प्राणी गृहस्थाश्रम में रह कर परमेश्वर की सेवा करता है उसे किस प्रकार करना उचित है, फिर श्री गुरु जी ने आगे की पवित्र पउड़ी उच्चारण की-

॥ पउड़ी ॥

रहै अतीतु जाणै सभु तिस का ॥ तनु मनु अरपै है इहु जिस का ॥
ना ओहु आवै ना ओहु जाइ ॥ नानक साचे साचि समाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरु जी फुरमाने लगे—हे मित्र! गृहस्थी को उचित है कि वह गृहस्थ में इस प्रकार रहे जैसे कोई अतीत आलसी बैठ जाता है। उसे प्रथम दिन यह ज्ञान होता है कि मेरा इस नगरी में कोई भी नहीं है। एक परमेश्वर ही मेरा है बाकी सभी दूसरे हैं। मेरे और यह नगरी भी दूसरों की है। मैं एक निराश हूं। सिवाय उस के और मेरा कोई भी नहीं है तथा मैं तो उस परमात्मा का हूं। यदि कोई ईश्वर अर्पण रोटी देगा तो मैं खाऊंगा, नहीं तो यह रात्रि स्वयं विहाय जायेगे। इस प्रकार गृहस्थी को जानना चाहिये अर्थात् धन द्वारा सुख तथा अन्न वस्तु सभी परमात्मा के जाने। ऐसा गृहस्थी मोक्ष प्राप्त करता है तब सभी गुरु जी के चरणों पर गिरे और स्तुति की। गुरु जी ने कहा—ईश्वर स्मर्ण करो, फिर वे शिष्य हो गये। धन्य गुरुदेव!

साखी मिर्ग की

एक समय श्री गुरु नानक देव जी महाराज एक गांव में गये। गांव के बाहर एक मृग देखा जो खेती की ओर भूखी दृष्टि से देख रहा था। खेती के स्वामी ने उस खेती में एक फाही लगा रखी थी, जिस को हिरण बिलकुल नहीं जानता था। अब वह हिरण उसी खेती में चला

गया तथा खेती को अभी चरणे ही लगा था कि उसी समय उस फाही में उस की चारों टांगें फंस गई। उस समय श्री गुरु जी महाराज कुछ अजीब सी अवस्था में हो गये, मन में विचार कर कहने लगे—हे मृग! यदि तूं इस बेगाने खेत में भूख मिटाने न जाता तो तूं कभी बंधन में न आता। इस फंसे हुए मृग को देख कर कहा—हे मन! तुझे कुछ ज्ञान होना चाहिये। तुम को भी यमदूतों ने इसी प्रकार अपने काबू करना है, जिस प्रकार इस मृग को खेती के स्वामी ने पकड़ा है। अपने इन उत्तम विचारों में श्री गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

आसा महला १ छंत घरु ३ ॥

तूं सुणि हरणा कालिआ की वाड़ीऐ राता राम॥ बिखु फल मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम॥ फिरि होइ ताता खरा माता नाम बिनु परतापए॥ ओहु जेब साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकए॥ हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझहि बिसारिआ। सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिया॥ १ ॥

॥ परमार्थ ॥

श्री गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं—हे मन! जो काला हरण है सो तूं है। मैं तुझ को शिक्षा देता हूं कि जो वस्तु त्याज्य है उसे न कर। यदि तू उस की दी वस्तु को पाएगा तो वह अंमृत है और यदि तू त्याज्य वस्तु को अंगीकार करेगा तो तू फाही में फसेगा। जिस प्रकार यह हरण काबू आ गया है उसी प्रकार तू भी दुखी होगा तथा तू परमेश्वर के हुकम की अवहेलना करेगा। तब तेरा इसी हरण के समान बुरा हाल होगा। उस भगवान के सिवा तेरा कोई रक्षक नहीं है। सो तूं परमेश्वर का स्मरण कर तब तू यम धाम के दंड से बचेगा।

साखी भ्रमर की

एक दिन सतगुरु नानक देव जी एक सुंदर तालाब के तट पर जा बैटे। वहां गुरु जी ने अनेक कमल फूल खिले हुए देखे, जिस पर एक भ्रमर गुजारा कर रहा था, तथा उन पुष्पों की सुगंधी में मस्त होकर उनका मधुपान कर रहा था। जब सायं काल हुआ तो वह भ्रमर एक खिले हुये कमल पुष्प पर बैठ गया। जब रात्रि काल हुआ तो वह कमल पुष्प मिट गया, तथा भ्रमर उसी में बंदी हो गया। तब श्री गुरु जी उस भ्रमरे को निमित करके अपने मन को शिक्षा देते हैं जिस से समस्त संसार को उपदेश हो जाए, तब गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

छंत महला १ ॥ भवरा फूलि भवंतिआ दुखु अति भारी राम॥ मै गुरु पुछिआ आपणा साचा वीचारी राम ॥ बीचारि सतगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रातओ॥ सूरजु चढ़िआ पिंडु पड़िआ तेलु तावणि तातओ॥ जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिन बेतालिआ॥ सचु कहै नानक चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ॥

॥ परमार्थ॥

गुरु जी फुरमाते हैं-हे मेरे मन! तू ने भवरे का खेल देखा है जे सुगंधी के लोभ में अपने प्राणों से हाथ धो बैठा है, तूं भी इसी भ्रमर की भान्ति माया का बंदी बन कर अपने प्राण गवा बैठेगा, यह लालच महान बुरी बला है, तथा तूं पाप कर्म की सजा पायेगा। माया की प्रीति से उसी भ्रमर के सदृश्य तुझे कष्ट प्राप्त होगे जैसे किसी कड़ाहे में तेल तपता है उसी प्रकार हे मेरे मन! तू भी अग्नि में ही जलाया जाएगा। जैसे बेताल को अत्यंत पीटा जाता है उसी प्रकार तेरी भी गति होगी। यदि तू माया के साथ ही मोह करता रहा, तब तेरा कोई भी सहायक नहीं होगा। तुझे उचित है कि परमात्मा के साथ प्रेम कर।

साखी झीवर के जाल की

एक समय श्री गुरु जी एक नदी के तट पर जा बैठे वहां एक झीवर ने नदी के भीतर मछली पकड़ने को जाल डाल रखा था, बहुत सी मछलियें उस जाल में आ गई। तब उन को काबू करके वह झीवर अपने घर की ओर रवाना हुआ। तड़पती मछलियें गुरु जी ने देखी तब आप ने मन को निमित बना कर संसार को उपदेश दिया—

आसा महला १ ॥

मेरे जीअड़िआ परदेसीआ कितु पवहि जंजाले राम॥
साचा साहिबु मनि वसै की फासहि जम जाले राम॥
मछुली विछुंनी नैण रुंनी जालु बधिकि पाइआ॥
संसारु माइआ मोहु मीठा अंति भरमु चुकाइआ॥
भगति करि चितु लाइ हरि सिउ छोडि मनहु अंदेसिआ॥
सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअड़िआ परदेसीआ॥ ३ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरु जी फरमाते हैं—हे मेरे मन! यह तमाशा देख के जो मछली पाताल में थी, उसे जाल लगा कर झीवर अपने घर को ले गया है। हे मन! तू भी इसी प्रकार यमदूतों को हाथ लग जायेगा। यहां तेरा अपना सिवाए प्रभु के और कोई भी नहीं है। इस लिए ईश्वर स्मरण कर। जब मछलिएं जो अचेत और अज्ञान में थी उन को झीवर ले गया है। उसी प्रकार तू भी मोह माया में अचेत हो रहा है। तो तुझे यमदूत झीवर की भांति पकड़ लेंगे। तब तू मछलियों की भांति विरलाप करेगा परंतु सभी व्यर्थ होगा। जब अंत समय होगा तब तेरा यह प्रसाद उत्तर जाएगा, इस लिए तू प्रथम ही परमेश्वर का भजन कर तब तेरा कल्याण

होगा। इस के पश्चात् उस नदी के तट पर ही चलते चलते गुरु जी आगे की ओर रवाना हुए।

साखी नदी के प्रवाह की

तब श्री गुरु महाराज उस नदी के प्रवाह की ओर जा रहे थे। तब क्या देखा कि उस नदी के प्रवाह के दो भाग हो गये हैं। जो एक दक्षिण की ओर तथा दूसरा पूर्व की ओर जा रहा है। यह देख कर श्री गुरु जी संसार को निम्नलिखित शब्द से परम मनोहर उपदेश देते हैं—

छंत महला १ ॥ नदीआ वाह विछुंनीआ मेला संजोगी राम ॥
जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जागी राम ॥
कोई सहजि जाणै हरि पछाणै सतिगुरू जिनि चेतिआ ॥
बिनु नाम हरि के भरमि भूले पचहि मुगध अचेतिआ ॥
हरि नामु भगति न रिदै साचा से अंति धाही रुंनिआ ॥
सचु कहै नानकु सबदि मेलि चिरी विछुंनिआ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरु जी प्रवचन करते हैं कि हे मेरे मन! यह जो तू नदी का परवाह बिछुड़ता देख रहा हैं। अब यह प्रालब्ध से ही मिलेगा। यदि ईश्वर की इच्छा हुई तो मेल होगा नहीं तो वियोग तो तुम्हारे समय ही हैं। इस से यह पता चलता है कि परमेश्वर से मिला रहो। यदि विछोड़ा हो गया तब फिर ऐसा समय फिर बने, अथवा न बने अर्थात् मनुष्य शरीर फिर मिले या न मिले समय निकल गया तो ईश्वर की आज्ञा से तुझे चौरासी लाख योनी में धकेला जायेगा। जो प्राणी मीठा अधिक खाता है यदि वह ईश्वर अर्पण किए बगैर खा लेता है तो वह विष के तुल्य होता है। इस बात को उत्तम पुरुष जानते हैं। हे मन! स्मरण का परम सुख

है। वह तुझे तब अनुभव होगा तूं ईश्वर स्मरण में लग जायेगा तथा जिस ने प्रथम गुरु शर्ण प्राप्त नहीं की। उसे सच्चे सुख का तो अनुभव हो नहीं सकता, जो अचेत तथा अज्ञानी हैं वे माया के मोह में भरे हुए हैं। वह सभी नर्कगामी हैं। हे मन! तूं उस प्रभु का स्मरण कर।

जब यह गुरु जी का उत्तम उपदेश बाले ने श्री गुरु अंगद देव जी को सुनाया। तब गुरु अंगद देव जी अपने ही स्वरूप में लीन हो गए और तमाम संगत परम प्रसन्न हुई तथा गुरु अंगद देव जी के चरण कमलों में नमस्कार करके जाती जाती कहने लगी हे भाई बाला! तुम धन्य हो! जिस ने परम सतिगुरु नानक देव जी के सभी कौतक नैनों से देखे तथा श्रोत्रों द्वारा श्रवण किए हैं। इन कौतुकों को जो प्राणी श्रद्धा से पढ़ेगा अथवा सुनेगा वह परम धाम को प्राप्त करेगा। धन्य गुरु नानक देव!

साखी शहु सुहागण की

एक दिन श्री गुरु नानक देव जी एक नगर में गये। एक माता के घर में जा बैठे। उसी नगर में एक फकीर रहता था। जिस दिन चंद्रमा चढ़ता था, उस दिन उस के घर में बहुत जनता जाती थी। बहुत लोग अनेक प्रकार की भेंट बाजों की ध्वनी में लेकर आते थे। उस फकीर के मकान पर एक खासा मेला लग जाता था। यदि कोई पूछे कि आज क्या है तब उत्तर मिलता कि इस घर में शहु ने आना है और फकीर कहता था कि मेरे मकान में कोई भी न आए और घर में फूलों की शैय्या बना रखता था तथा इत्रर गुलाब आदिक छिड़कता था। उस रोज यह फकीर किसी को अपना मुख नहीं दिखाता था और न ही किसी का मुख देखता था तथा मकान के भीतर ही तमाम रात्रि बैठा रहता

था तथा बुरका पहिनता और अपने को स्त्री समझता था। यह बातें तमाम जनता में होती थी। उधर उस घर में श्री गुरु जी महाराज बिराजमान थे। उस बुढ़िया ने स्वच्छ भोजन तैयार करके गुरु जी के आगे रख कर प्रार्थना की—हे महाराज! इस रूखी सूखी रोटी को ग्रहन करें। तब गुरु जी ने कहा भोजन तो हम पा लेंगे, परंतु यह नगर में शोर किस बात का है? तब उस देवी ने कहा—हे महाराज! इस नगर में एक फकीर रहता है, वह कहता है कि शुक्ल पक्ष की दूज को घर में शहु आता है। वह बात सुन कर गुरु जी ने मुझे और मर्दाने को कहा-चलो! हम भी उस फकीर को देखें और शहु सुहागण का दीदार करें। तब हम लोग गुरु जी के साथ उस फकीर के द्वार पर जा कर खड़े हो गये। देखा बहुत दुनियां खड़ी है तथा किसी को भीतर नहीं जाने दिया जाता। अब गुरु जी ने भीतर जाना चाहा तो लोगों ने रोक दिया। तब गुरु जी ने उस के दरबानों को कहा-हे भाई! फकीर जी को कहो कि बाहर साधू खड़े हैं और तुम्हारा दीदार मांग रहे हैं, तब फकीर ने उन दरबानों को कहा—भाई मैंने तो आज अपने शहु का दीदार करना है, आज मैंने किसी को दर्शन नहीं देना। जब दरबानों से सुना के वह फकीर इन्कार करता है तब हमें गुरु जी ने कहा सुनो मित्रो यहां कुछ भी नहीं है यहां झूठ स्वांग है, यदि इसको शहु का दीदार हो जाता तो वे बुरके में शहु को पहिचान लेता। तब गुरु जी वहां से उठ कर एक पहाड़ी पर जा बैठे तब उधर जनता में दैव योग से लड़ाई हो पई। कोई झंडा उतार कर ले गया तो कोई नगारे उठा कर भाग गया। लड़ाई में सभी साज वाज वाजद रहम ब्रहम हो गया। अनेकों को सख्त चोटें आई खून की होली खेली गई। उस फकीर का मेला नष्ट हो गया अब उस फकीर की चारों ओर निंदा होने लगी, महिमा पलों में घट गई, तमाम दुनियां उस फकीर को झूठा कहने लगी।

एक महीने के पश्चात् गुरु जी उसी बुढ़ीया के घर में आए और पूछने लगे। हे बुढ़िया! आज भी चांद की पहिली है। उस फकीर के यहां आज मेला नहीं लगा? उस ने उत्तर दिया कि हे महाराज! उस फकीर का सभी नाटक बिल्कुल झूठा ही निकला।

एक दिन गुरु जी शहर के बाहर गए, तब एक लंगड़ा आदमी नगर के बाहर इधर उधर मांगता मिला। वह गुरु जी को देखते ही चरणों में आ गिरा। गुरु जी ने उस लंगड़े पिंगले की ओर कृपा दृष्टि से देखा तब उस के सभी अंग ठीक हो गये। उसने गुरु जी की महान स्तुति की, अब गुरु जी उसे कहने लगे—हे मित्र! यदि तुम को कोई पूछे कि तुम्हारे हाथ पैर किस ने ठीक किये हैं तो तुमने कहना कि मेरे हाथ पैर ठीक करने वाला वही शहु सुहागण जी है। बस जब उसे पूछा जाता तो वह शहु सुहागण का ही नाम लेता था फिरता-फिरता यह शहु सुहागण को भी जा मिला। शहु सुहागण के पूछने पर उसने कहा कि मेरे हाथ पैर शहु सुहागण फकीर ने ठीक किए हैं। शहु सुहागण ने कहा-हे भाई! वह कहां है। उस ने कहा कि वह तो एक बुढ़िआ के घर में रह रहे हैं। तब वह झूठा फकीर उस पिंगले के साथ गुरु जी के पास आया तो बस देखते ही चरणों पर गिर पड़ा और हाथ बांध कर बेनती करने लगा और कहने गला—हे महाराज! आप मुझे क्षमा कर दो। मैं भूला हुआ था। मुझे क्षमा करो सत्य बात तो यह है कि मैंने आप को पहिचाना नहीं था, गुरु जी ने दया दृष्टी करते हुए कहा—हे मित्र! प्रत्येक बुरके में उस शहु को जान कर और सभी को दीदार देना लेना अच्छा है जब तू परमेश्वर का भजन करेगा तब वह सच्चा शहु तेरे बिन बुलाये तेरे पास स्वयं चला आएगा। फिर गुरु जी के चरणों पर नमस्कार करके तथा आज्ञा लेकर वह शहु सुहागण फकीर अपने ठिकाने जा बैठा।

उधर वह पिंगला शहु सुहागण का प्रचार कर रहा था, तब उस

का उजड़ा मेला फिर से लगने लगा। तब गुरु जी की कृपा समझ कर वह शहु सुहागण फकीर गुरु जी का शिष्य बन कर नाम जपने लगा। तब श्री गुरु जी ने वहां एक सलोक उच्चारण किया—

॥ सलोकु महला १ ॥

तुधु भावै ता वावहि गावहि तुधु भावै जलि नावहि॥
जा तुधु भावहि ता करहि बिभूता सिंडी नादु वजावहि॥
जा तुधु भावै ता पढ़हि कतेबा मुला सेख कहावहि॥
जा तुधु भावै ता होवहि राजे रस कस बहुतु कमावहि॥
जा तुधु भावै ता तेग वगावहि सिर गुंडी कटि जावहि॥
जा तुध भावै ता जाहि दिसंतरि सुणि गला घर आवहि॥
जा तुधु भावै नाइ रचावहि तुधु भाणे तूं भावहि॥
नानकु एक कहै बेनंती होरि सगले कुड़ु कमावहि॥ १ ॥

॥ वार्तक ॥

यह सलोक सुन सभी लोग गुरु जी के चरणों पर गिर कर प्रणाम करने लगे तब गुरु जी उन पर अपनी कृपा दृष्टि करके तथा अनेकों की कामना पूर्ण करके चल दिये।

साखी एक सिक्ख के साथ

बाले ने कहा—हे गुरु अंगद देव जी! श्री गुरु नानक देव जी महाराज संसारी जीवों का कल्याण करते चले जा रहे थे, तब मार्ग में एक सिख से भेंट हो गई। उस ने प्रार्थना की कि हे महाराज! सिखी उत्तम है अथवा फकीरी उत्तम है? तब गुरु जी ने कहा—हे सिख! पहिले तू हमारा काम कर, अमुक नगर में एक हमारा सिख रहता है। हमारा लिखा संदेश

उस को देना और भोजन भी उसी के घर में खाना, जब तू लौट कर आएगा तब तुझे तेरे प्रश्न का उत्तर दे दिया जायेगा। तब उस ने हाथ जोड़ कर कहा—हे महाराज! जैसे आप की आज्ञा। तब गुरु जी ने एक आज्ञा पत्र लिख कर दे दिया। तब वह सिक्ख आज्ञा पत्र लेकर चल दिया। गुरु जी के बताए नगर में जाकर पूछने लगा हे भाई! अमुक सिक्ख का घर कौन सी ओर है? पूछता पूछता वह उस सिक्ख को जा मिला। तब उस सिक्ख ने इसका आदर सत्कार सहित कुशल मंगल पूछा, परंतु वह सिक्ख घर से अति निर्धन था। कभी अन्न मिलता कभी न मिलता था, उस सिक्ख के घर में एक लड़की थी। उस लड़की का एक साहूकार एक हज़ार रुपया देता था और कन्या मांगता था। परंतु यह लड़की देने को तैयार नहीं था उस सिख ने आ कर कहा—हे प्यारे! भोजन तैयार है, सो आप भोजन कर लो, उस ने कहा—हे मित्र! यह आज्ञा पत्र गुरु जी ने तुझे भेजा है। पहिले इसे पढ़ लो, उस ने हुकम नामा लेकर नेत्रों से लगाया और अपने सिर पर रख लिया। जब खोल कर पढ़ा तो उस पर लिखा था कि—दो सौ रुपया हमारी भेंट और पचास रुपये इस सिक्ख की भेंट करो, जो हमारा हुकम नामा तुम्हारे पास लाया है। वह हुकम नामा लेकर अपनी पतनी के पास आ कर कहने लगा—हे गुरु की प्यारी! यह गुरु जी का आज्ञा पत्र है अब क्या किया जाये। उस ने कहा- हे स्वामि अब चिंता की क्या बात है। हमारा तन मन धन स्र्वस्व गुरु जी का है और हमारी कन्या भी गुरु जी की है और अमुक शाहुकार लड़की का एक हज़ार रुपया देता है, आप उस से जितने रुपये दर्कार है लेकर उस से कन्या विवाह दो।

उधर हुकम नामा लाने वाला सिख सोचने लगा—हे भगवान! यह तो अत्यंत दरिद्री है। गुरु जी के लिए रुपया कहां से लायेगा? इधर यह विचार रहा था। उधर वह सिख शाहूकार के घर गया तथा सत

श्री अकाल कह कर बैठ गया। शाहूकार ने पूछा—आओ किस प्रकार तुम्हारा आना हुआ। सिक्ख ने कहा- आप मुझे अढ़ाई सौ रुपया दे दो तथा मेरी कन्या से विवाह कर लो। उस धनी ने उसे ढाई सौ रुपया देकर उसे विदा किया। वह उस हुकम नामा लाने वाले के निकट आया। उस ने हुकम नामे की भेंट दो सौ रुपये किये और पचास लाने वाले को देकर कहा—प्रसाद पाओ। भोजन खा कर वह सिक्ख वहां से लौट कर गुरु जी के निकट आया, उस रुपया वाले सिक्ख ने अपने अहोभाग्य जाने और सत्कार पूर्वक विदा किया।

मार्ग में उस सिक्ख ने कहा-धन्य हैं गुरु जी के सिक्ख और धन्य हैं गुरु जी महाराज! इतने में रास्ते में उसे फकीर मिला। यह उस के पास छाया देख कर बैठ गया। उस फकीर के पास एक सौदागर आया। उस सौदागर ने एक थाल भोजन का धर नमस्कार किया और एक दोशाला फकीर के ऊपर दे दिया। दो घड़ी के पश्चात् एक और मुसाफिर आया उस फकीर के आगे भोजन मिठाई का थाल धरा धराया उठा लिया तथा दोशाला भी उतार कर चलता बना। फकीर ने अपने मुख से देने वाले को आर्शीवाद नहीं दिया तथा ले जाने वाले को बुरा नहीं कहा—आए का हर्ष नहीं किया और गए का शोक नहीं किया। एक रस रहा।

चार घड़ी बैठ कर वह सिक्ख उठ कर चल दिया। मार्ग में उस सिक्ख को रात हो गई। तब वह एक वृक्ष के नीचे जा बैठा। उस वृक्ष पर पक्षियों का जोड़ा रहता था। वह पक्षी भी गुरु जी के श्रद्वालु थे। पक्षी ने उस सिक्ख को देख कर अपनी स्त्री से पूछा—कि हमारे घर यह अतिथि आया है, यदि यह भूखा रहा तो हमें पाप लगेगा। पक्षी की मादा ने कहा—हे भले! यदि दिन का समय होता तो हम कुछ उपाय करते। परंतु इस समय तो हमारा शरीर हाजर है। इतना कह कर पक्षी की मादा एक अग्नि की चिंगारी चोंच में पकड़ कर लाई। वह चिंगारी उस सिक्ख के

आगे फैंक दी। फिर कुछ सूखे तिनके डाल दिये। अब आग जली तो उस का उजाला हुआ। सिक्ख ने इधर उधर से सूखी लकड़ी एकत्र करके एक बड़ी सी अग्नि जला ली। पक्षी की स्त्री ने कहा—हे स्वामी! अब मैं इस में जा गिरती हूं और यह मुझे उस में भून कर खा लेगा। बस फिर क्या था, वह पक्षी की मादा उस अग्नि में जा गिरी। पक्षी ने देख कर कहा—मेरी मादा तो मुक्त हो गई है तथा मैं जीवित रह कर क्या करूंगा। यह विचार कर पक्षी भी उस में जा गिरा। वह मनुष्य दोनों को भून कर खा गया और शयन करने लगा। प्रात : वह सिख गुरु जी के पास आ गया। नमस्कार करके बैठ गया।

गुरु जी ने कहा—हे प्यारे! क्या तुझे प्रश्न का उत्तर मिला है अथवा नहीं। उस ने कहा—हे सर्व शक्तिमान गुरु देव! धन्य हो आप और धन्य हैं आप के सिक्ख। गुरु जी ने कहा—हे भाई! यदि गृहस्थी सिक्ख बनता है, तो उस हुकम नामा मानने वाला जैसा बने अथवा उस पक्षियों जैसा बने और यदि फकीर होना है तो उस फकीर जैसा बनना उचित है। तब उस सिख ने प्रार्थना करके कहा—हे गुरुदेव! यह तो दोनों ही काम कठिन हैं। आप मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि करके मेरी भूल को क्षमा कर दो। तब गुरु जी ने उसे दिव्य दृष्टि देकर उस के कपाट खोल दिए जिस से वह ब्रह्मज्ञानी हो गया। तब गुरु जी ने उसे परम पवित्र उपदेश दिया और प्रभु नाम स्मर्ण का उपदेश दिया और कहा—हे प्रियवर! इस से तुम्हारा जीवित तो यश होगा और मरने के पश्चात् तेरी मुक्ति होगी। यह तू निश्चय कर मान।

❊ ❊ ❊

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ चौथी उदासी ॥

॥ आगे साखी वीरां नाउ मलार से ॥

एक बार श्री गुरु नानक देव जी धनासरी देस के आगे को चले। एक चारपाई गुरु जी ने बनवाई, उस पर मर्दाना रबाबी और सीहो और घिहो यह हम चारों बैठे हुए थे। उस समय गुरु जी की समाधी लग गई, जब गुरु जी की उत्थान अवस्था हुई तब सिखों ने प्रार्थना की कि हे महाराज! आप का ध्यान किधर गया है। तब गुरु जी ने कहा—हमारा मन उठ खड़ा हुआ। तब मर्दाने ने कहा—आप अब किधर जाओगे। गुरु जी ने कहा—वीरां नाम का मलार है और आगे के गांव में उस का घर है उस से मिल कर देखेंगे, फिर मैं (बाला) और मर्दाना चलते चलते वहां जा पहुंचे। वहां जाकर मर्दाने ने पूछा—भाई वीरां मलार कहां रहता है? लोगों ने कहा- वह जो सामने घर है। तब गुरु जी उसी स्थान पर जा पहुंचे जहां वीरां बैठा था। गुरु जी ने कहा—हे वीरां उस अलेख को सलाम है तब वीरां ने नमस्कार करके पूछा—आप कौन हैं? और कहां से आ रहे हो तथा हम से क्या कुछ काम है? गुरु जी ने कहा—हम आप से दो बातें परमात्मा पंथ की पूछने के लिए आये हैं। उस ने कहा—आप इन लोगों से पूछ लो। हम से क्या पूछते हो? हम लोग तो निर्धन सब्जी बेचने वाले हैं, हमें आत्म वस्तु का क्या पता हो सकता है? मर्दाने ने कहा—हे मित्र! यह नानक देव निरंकार है, जो कुछ तुम जानते हो सो कहो। तब उस ने कहा—हमारे अहोभाग्य जो इन के दर्शन हुए हैं। वीरां ने कहा—हे महाराज! आप कृप्या यह बताओ कि वह परमात्मा कैसा है? और उस का निवास कहां है, मुसलमान

कहते हैं कि हजरत मुहंमद खुदा के निकटवरती है तथा हिन्दू कहते हैं कि ब्रह्मा विष्णु महेश उस परमात्मा का रूप हैं, राम चंदर तथा कृष्ण यह परमात्मा हुए हैं, आप कृप्या यह मुझे बताओ कि यह परमात्मा हैं अथवा ईश्वर कोई और ही है यह सुन कर श्री गुरु देव ने सलोक कहा-

सलोक महला १ ॥

जित दर लख मुहंमदा लख ब्रहमे बिशन महेश ॥
लख लख राम वडीरीअहि लख राही लख वेस ॥

गुरु जी ने कहा- उस दरबार में लाखों ब्रह्मा विष्णु महेश पड़े हैं और अनेकों मुहंमद भी वहां पड़े हैं। हे भाई! उस के दरबार में अनेकों राम बड़ाई पा रहे हैं और अनेकों प्रकार के भेस उस के मार्ग में हैं।

लख लख ओथे जती है सतीअह ते सन्यास ॥

तथा अनेकों वहां सती निवास करते हैं और कई लाख वहां यती हैं और अनेकों लाख सन्यासी वहां है।

लख लख ओथे गोरखा लख लख नाथां नाथ ॥

यहां लाखों गोरख हैं। लाखों नाथ वहां फिरते हैं।

लख लख ओथे आसना गुरु चेले रहिरास ॥

वहां लाखों आसन धारी हैं और अनेकों लाल गुरु चेले वहां हैं।

लख लख देवी देवते दानों लख निवास ॥

हे भाई मलार! उस निरंकार के दरबार में लाखों देवी देवता हैं तथा लाखों ही दावन हैं और लाखों देव हैं।

लख पीर पैकंबर अउलीऐ लख काजी मुलां शेख ॥

वहां लाखों पीर पैकंबर हैं। मुल्लां काजी भी लाखों हैं। वहां लाखों शेख फिर रहे हैं।

किसे शांत न आईआ बिन सतिगुर के उपदेश ॥

सुन भाई वीरां! यह सब आप ही आप कहलाये हैं और यकीन करो जिन्हों ने गुरु का आश्रय नहीं लिया और अदीक्षित हैं, उपदेश से वंचित हैं, उन को शांति प्राप्त नहीं होती। हे मित्र! गुरु के बगैर सद गति नहीं।

साधक सिद्ध अगणित हैं केते लख हजार॥

और जो साधक सिद्ध हैं, उन की तो गणना ही नहीं। वे सभी अपार बेशुमार हैं। गिणती ही नहीं है।

एतड़िआं अपवित्र है बिन सतिगुर के शब्द विचार॥

हे भ्राता! यदि कभी इतने पाठ पढ़े और अमल बगैर तथा गुरु कृपा के बिना यह सभी अपवित्र हैं, क्योंकि उसके बिना गति नहीं होती।

सिर नाथा के इक नाथ सतिनाम करतार॥

हे मित्र! जितने अवतार नाथ देवी देवता इन के ऊपर जो उस प्रभु का नाम है वही सभी का नाथ है।

नानक ताकी कीमति ना पवै बेअंत बे शुमार॥

तब गुरु नानक देव जी कहते हैं हे मलार! उस करतार की कीमत मुझ नानक से नहीं पाई जाती क्योंकि उस का अंत नहीं है और शुमार भी कोई नहीं। मलार ने कहा—हे गुरु देव! जैसे आप की इच्छा वही सत्य है और आप धन्य हैं, फिर वीरा मलार से श्री गुरु नानक देव जी विदा हुए तथा संगत को गुरु दर्शन से अपार प्रसन्नता हुई। मलार के सहित सभी का कल्याण करके सतिगुर श्री नानक देव जी आगे की ओर रवाना हो गये।

साखी पीर जलाल दीन

भाई बाला कहने लगा—एक दिन श्री गुरु नानक देव जी समुंद्र के तट पर उस स्थान पर गये जहां पीर जलाल दीन समुंद्र के जल पर अपना मुसल्ला विछा कर खेला करता था। उस पीर ने गुरु जी को

देख कर कहा—असलामो लेकम। गुरु जी ने कहा—हे पीर! उस अलेख को सलाम है। शिष्टाचार के पश्चात् पीर और गुरु जी हाथ से हाथ मिला कर प्रेम पूर्वक बैठ गये। पीर ने कहा—हे गुरु नानक! आप हमारे साथ समुंद्र की सैर को चलो, तब गुरु जी ने कहा—हे जलाल कुरैशी! क्या सैर करते करते समुंद्र में कुछ देखा भी है तब पीर ने कहा—हां एक दिन एक मीनार देखा था। गुरु जी ने कहा-अच्छा उस मीनार की खबर लाओ। गुरु जी का कथन मान कर पीर ने अपना मुसल्ला समुंद्र जल पर विछा कर ऊपर बैठ गया, जाते जाते वहां पहुंचा जहां एक मीनार था। उस स्थान पर बीस आदमी बैठे देखे। पीर ने उस को सलाम किया तथा प्रेम पूर्वक बैठ गया। जब रात्री काल हुआ तो आकाश से ईकीस थाल रसोई के उतरे। फकीरों ने भोजन बांट कर खाया तथा ईश्वर की भक्ति में सारी रात व्यतीत की। प्रातः सभी फकीर चले गये, वहां केवल पीर ही रह गया।

पीर ने देखा कि समुंद्र के अथाह पानी में एक जहाज़ डुबने लगा है। फकीरां का हृदय नम्र होता है। पीर ने कहा—हे परमात्मा! इस जहाज़ में जो मुसाफिर हैं। उस में से कोई तो अपने पुत्रादिक को छोड़ कर आया है। इस लिये हे मालक दया कर ! जिस से जहाज़ को क्षती न पहुंचे। ईश्वर कृपा से जहाज़ बच गया, जब रात्रि हुई तो वही बीस फकीर वहां आ गये। फिर आकाश से भोजन आया, परंतु अब तो भोजन उन्हीं बीस फकीरों के लिये था। पीर के लिये नहीं था। उन्होंने बांट कर खा लिया। पीर भूखा ही रह गया। तमाम रात उन्हों ने बंदगी में गुजारी। प्रातः वह वहां से रवाना हुए। दूसरे दिन पीर ने देखा कि मिनार गिरने लगा है। उस समय पीर ने कहा—कि यह मिनार गिरे नहीं। बस फकीर के शब्दों से वह मिनार नहीं गिरा जब फिर रात्रि हुई तो वे फकीर फिर आ गए। परंतु अब की बार खाना नहीं उतरा। तब

फकीरों ने कहा-हे भाई! मालूम होता है कि किसी मन्द भाग्य प्राणी ने ईश्वरीय कर्मों में कंटक बन दिखाया है। तब पीर ने कहा—भराताओ ! दो काम मैंने किए हैं। एक तो डूबते जहाज़ को बचाया है तथा एक गिरता मीनार गिरने से रोक लिया है। उन्हों ने कहा-भाई! तुम्हारा नाम क्या है, और कौन होते हो तुम हमें अपना परिचय दो। पीर ने कहा—मेरा नाम पीर जलाल दीन है। उन्होंने कहा—हे भ्राता! यहां पीरों और बादशाहों के लिये कोई स्थान नहीं है क्योंकि पीर और पातशाह इन के लिये दुनियां में स्थान है। यहां तो परमात्मा के प्यारे ही समय व्यतीत कर सकते हैं। अब पीर ने अपना मुसल्ला पानी के ऊपर विछा दिया और स्वयं उस पर बैठ गया। परंतु वह मुसल्ला चलता नहीं था। तब वहां फकीर आए, उन्हों ने मुसल्ले पर पीर को बैठे देखा और कहा—हे भाई! तुम यहां क्यों बैठे हो? पीर ने कहा—हे मित्रो! मेरा मुसल्ला चलता नहीं। मैं सोच रहा हूं कि अब क्या करूं? उन्हों ने कहा-हे पीर! तुम श्री गुरु नानक देव जी को स्मरण करो, तब तुम्हारा मुसल्ला पूर्ववत चलने लगेगा। पीर ने कहा—आप अपना परिचय दो। उन्हों ने कहा—हम श्री गुरु नानक देव जी के शिष्य (सेवक) हैं। अब पीर ने गुरु जी को स्मरण किया। तब वह मुसल्ला चल पड़ा तथा गुरु जी के पास आ गया। पीर ने गुरु जी को नमस्कार किया तथा आज्ञा ले कर बैठ गया। गुरु जी ने कहा—सुनाओ पीर जी सैर में क्या कुछ देखा है। पीर ने कहा—हे महाराज! आप अंतरयामी हो, सभ कुछ आप जानते हैं। मैं तो आप के शिष्यों की कृपा से वापस आ गया हूं, नहीं तो मेरा वापस आना असंभव था। तब श्री गुरु जी ने एक शब्द फुरमाया-

शब्द॥ लख उलांभे दिवस के राती मिलन सहंस॥
सिफत सलाहण छड के करंगी लगा हंस॥ १ ॥

॥ वार्तक ॥

गुरु जी ने कहा—हे पीर जी! यहां कर्म कुरंग हैं, यहां हंसों की मनाही है। यहां न बैठ, यह सुन कर पीर ने गुरु जी के चरण चूम लिये, तथा अपना मुसल्ला फैंक दिया। गुरु जी ने कहा—हे जलाल दीन। जाओ पहिले किसी अच्छे गुरु की भाल करो। पीर ने कहा—हे महाराज! मैं कौन सा गुरु देखूं। गुरु जी ने फुरमाया सब का गुरु वहीं सतिगुरु है फिर गुरु जी से आज्ञा लेकर जलाल दीन एक ओर को चल दिया और गुरु जी एक ओर रवाना हो गये।

साखी सिद्ध मंडली की

एक बार गुरु जी समुंद्र के भीतर जहां रेतीला सा टापू है वहां जा पहुंचे। गुरु जी ने वहां सिद्ध मंडली को बैठे देखा। गुरु जी ने उन को आदेश किया। उन में से गुरु गोरख नाथ ने कहा आदेश है उस अलेख प्रभु को। गोरख नाथ ने गुरु जी का स्वागत करके आसन पर बिठाया और-कुशल मंगल पूछा।

वहां सिद्ध लोग भंडारा तैयार कर रहे थे। गोरख ने कहा—हे भरथरी! तुम जाकर जल ले आओ, वहां जो देग बन रही थी उस में चौसठ डोल पानी पड़ता था, चौसठ मन का डोल भरथरी अपने पर उठा कर ला रहा था। तब भरथरी ने पूर्व की ओर देखा तो उसे कुरंग की कतार आती नजर पड़ी। भरथरी ने एक कुरंग को कुरंगी के साथ कलोल करते देखा। उस समय भरथरी ने कहा—अरे कामी कुरंगी तुझे काम पीड़ित कर रहा है। तुझ को नर्क में जाना होगा। कुरंग ने कहा—हे भरथरी! मैं पापी नहीं हूं। यह कमल पत्ती राजा जूना की पुत्री है। दो बार आगे यह मेरे साथ विवाही गई है। तीसरी वार हमारा इसका

संयोग है, यदि तू कल वहां जा पहुंचेगा, तब तेरा बचाव होगा यदि नहीं जाएगा तब तूं नर्कगामी होगा। भरथरी ने यह बात सुन कर दुखी होकर पूछा—कि हे कुरंग! वह स्थान यहां से कितनी दूर है? कुरंग ने उत्तर दिया कि वह स्थान नब्बे करोढ़ कोस की दूरी पर है। तब भरथरी ने कहा—हे भाई कल तक तो पूरी नहीं हो सकती। तब कुरंग ने कहा-यदि तुम न पहुंचोगे तब नर्क में जाना होगा। यह सुन कर भरथरी रोने लगा, अंत में भरथरी गोरख नाथ के निकट गया, तो अपने सिर से देग उतारी नहीं गई। जो देग प्रति दिन उतार लेता था वह आज नहीं उतरती थी तब भरथरी ने कहा—हे सिद्धो! यह मेरे सिर से देग उतार दो। गोरख नाथ की आज्ञा मान कर सिधों ने देग उतार दी, भरथरी को गोरख ने कहा—हे पुत्र! आज तेरा मुख उदास क्यों है? तब भरथरी ने कहा—आज मुझे अत्यंत कठिन काम बन पड़ा है। यदि आप मेरा कार्य कर दो तो ठीक है, नहीं तो मुझे नर्कों में गिरना होगा! गोरख ने कहा, हे भरथरी! वह कौन सा काम है, तब भरथरी ने कुरंग की सभी बात गोरख नाथ के प्रति कह दी। कहा कि यदि कोई इस काम को कर दे, तो मैं नर्क से बच सकता हूं। तब गोरख नाथ ने अपने सिद्धों से कहा कि आप में कोई ऐसा है, जो भरथरी काम का कर सके। सिद्धों ने पूछा कि कितने कोस का मार्ग है तब भरथरी ने कहा—उनानवें क्रोड़ कोस का अंतर हैं। यह सुन कर सभी ने कहा कि यह तो अत्यंत कठिन है। तब रोने लग गया, उस मसय गुरु नानक देव जी ने भरथरी को कहा—हे भरथरी तुम रोवो नहीं, चलो हम तेरे साथ चलते हैं। हम तुम को नर्क में नहीं जाने देंगे।

फिर गुरु जी सीस कलंदरी रूप खड़े हो गये। गुरु जी ने मृग चरम की सवारी की। मर्दाने ने रबाब की सवारी की और भरथरी ने डंडे की सवारी की। गोरख आदिक को आदेश करके सभी आकाश मार्ग में

उड़े तथा सूर्य से चार जोजन ईधर गये तो धरती पर जा उतरे। उस समय डेढ़ पहर दिन शेष था। जब जूना पति राजा के नगर पहुंचे। और एक बाग में गये! तब गुरु जी ने कहा—हे भरथरी! हम स्नान करने जाते हैं! और तू इस बाग में चला जा तब भरथरी उस बाग में चला गया। आगे कवलपति राणी का महल था और वह रानी बारी में बैठी हुई देखी। रानी ने भरथरी को देख कर गोली को कहा—हे गोली! वह जो साधू बाग में टहल रहा है। इसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ! रानी ने भरथरी के पैर में पदम देखा और तभी उठ कर भरथरी का कपड़ा पकड़ा कर खड़ी हो गई। तब भरथरी ने कहा—अरी हम तो साधू हैं बताओ तू हमें क्या कहती हैं। रानी ने कहा, तुम साधु नहीं हो। तुम तो महाराज भरथरी हो, हे राजन! दो बार आगे मैं तेरी रानी रह चुकी हूं। अब तीसरी बार संयोग है। अब तुम जा नहीं सकते। मैं तेरी प्रतीक्षा ही कर रही हूं, यह बातें सुन कर गोलियें उस की माता के पास गई और कहा कि बाग में एक जोगी आया है तथा आपकी पुत्री ने उसे पकड़ रखा है तथा उसी साधू के साथ जाना चाहती है। हम ने यह सूचना तुम को दे दी है। जब रानी ने वह खबर सुनी तो उसने अपने पति को तमाम बात बता दी। राजा ने उस साधू को पकड़ने का हुकम दे दिया। हुकम की पालना वजीर ने की और साधू को राजा के सन्मुख पेश किया गया। राजा ने आज्ञा दी कि इस को टुकड़े टुकड़े करके नदी में बहा दो। बस फिर क्या था भरथरी के टुकड़े टुकड़े करके नदी में फैंक दिये गये।

मर्दाने ने गुरु जी को कहा—हे महाराज! भरथरी को टुकड़े टुकड़े करके नदी में बहा दिया है। गुरु जी ने कहा—हे मर्दाना! भरथरी मरने का नहीं! उधर भरथरी फिर से सावधान होकर उसी धौलर पर जा बैठा। राजा को फिर सूचना मिली कि वही साधू फिर राज कुमारी के महलों

में देखा गया है। राजा ने फिर उसे पकड़ कर मंगवा लिया तथा एक चिता में बैठा कर उसे आग लगा दी गई। गुरु जी को मर्दाने ने कहा—हे गुरु देव! भरथरी को चिता में जला दिया है। गुरु जी ने कहा—हे मर्दाना! भरथरी जले गा नहीं। इधर भरथरी फिर चिता में उढ़ कर राज कुमारी के महिलों में जा बैठा।

राजा ने फिर हुकम दिया कि उस साधू को गढ़े में डाल दो और ऊपर एक दीवार खड़ी कर दो। राजा के हुकम की पालना की गई। मर्दाने ने कहा—हे गुरु जी! भरथरी को गढ़े में डाल कर ऊपर दीवार चिना दी गई है। गुरु जी ने कहा- हे मर्दाना! भरथरी मरने का नहीं है उधर फिर भरथरी राज कुमारी के महलों में चला गया। राजा को फिर सूचना मिली। तब राजा ने वजीर से पूछा कि क्या बात है। वजीर ने कहा—हे राजन! यह फकीर कोई जादूगर नज़र आता है। अब तो उसे रस्सी से बांध कर सूली पर लटकाया जाय तो अच्छा है। साधू को रस्सी से बांध कर ढोल बजते में सूली चढ़ाने चले। मर्दाने ने सब समाचार गुरु जी को सुना दिया, तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! अब भरथरी की रक्षा हमें करनी होगी, अब गुरु जी सूली के निकट जा कर खड़े हो गये। जब गुरु जी ने सूली की ओर देखा तो वह सूली सर सब्ज हो गई। राजा ने हैरान होकर पूछा वह जो न्या साधू आया है जिस के आने से सूली सब्ज हो गई है यह कौन है? उस राजा ने मर्दाने से गुरु जी का परिचय पूछा। मर्दाने ने कहा—हे राजन! यह सिख कलंदर रूपी गुरु नानक देव हैं और जिसको सूली दी जा रही है। यह राजा गंधर्व सेन का पुत्र महाराज भरथरी है। राजे ने कहा—यह लोग हम से क्या चाहते हैं? मर्दाने ने कहा—हे राजन! जो तुम्हारी कन्या है। यह भरथरी के साथ इस से पूर्व दो बार विवाही गई है, अब यह तीसरी बार तेरी कन्या को लेने के लिये आये हैं। बस उसी समय जूना राजा

श्री गुरु जी के चरणों पर गिर गया और हाथ जोड़ कर कहने लगा—हे प्यारे गुरु देव! आप मेरे योग्य जो सेवा हो वह कहो मैं तो आप के चरणों का दास हूं। गुरु जी ने कहा—हे राजन! आप अपनी कन्या भरथरी को दे दो। आज की रात्रि में तेरी कन्या तथा भरथरी का संयोग है। तब राजा ने कहा—हे महाराज! लोक लज्ञा को सन्मुख रख कर प्रार्थना है कि कुछ बारात आदिक का प्रबंध हो हमें प्रसन्नता हो जाएगी। क्योंकि मैं आखिर राजा हूं। गुरु जी ने कहा—हे राजन! तू बारात के स्वागत का सामान कर बारात आएगी। यह सुन कर राजा अपने घर की ओर चला गया।

इधर गुरु जी ने परमेश्वर से प्रार्थना की हे महाराज! जो आप के पास जो छेनवें क्रोड़ मेघ माला है उन के जो अधिष्टा देवता हैं उन को कृप्या हमारे पास भेज दो। बस फिर क्या था देवताओं की बारात सज गई। वाजे वजाने वाले नृत्य मंगल करने वाले सभी देवता आ गये।

उधर राजा को सूचना मिली, हे राजन! बारात इतनी है कि तुम्हारे राज्य में उनके बेठने को भी स्थान नहीं है। राजा ने सोचा कि मैं यदि अपने सारे राज्य की सामग्री भी जुटा लूं तब भी एक समय का भोजन एकत्र नहीं हो सकता, तब राजा ने अपने कंठ में कपड़ा डाला और श्री गुरु नानक देव जी महाराज के चरणों में आ गिरा और कहने लगा, हे गुरु देव! यह आप की अपार माया तो मेरी बेइजती करने पर तुल गई है। गुरु जी ने कहा—हे राजन! बारात की मांग तुमने ही की थी। सो हमने बारात एकत्र कर ली है, परंतु हे राजन! तुम चिन्ता क्यों करते हो। जहां से बारात आई है वहां से ही इन को खुराक आ जाएगी। फिर गुरु जी ने निरंकार के प्रति प्रार्थना की—हे कृपालु ! आप इस बारात के जीवन के लिये सामान भी भेजो। बस छतीस प्रकार के भोजन जो परम पवित्र तथा स्वाद थे, अपने आप ही एकत्र हो गए। खूब स्वागत

किया गया। आधी रात्रि के समय भरथरी का विवाह हो गया। राजा ने कहा, हे महाराज! यह तिल पुष्प सहित मेरी कन्या को स्वीकार करके ले जाओ। गुरु जी ने कहा—हे राजा! यह दहेज की वस्तु नहीं चाहिये, राजा यह सुन कर मौन ही हो गया, फिर कवल—पति गुरु जी के चरणों में पढ़ गई और कहने लगी-हे गुरुदेव! मैं तो आप की दासी हूं। मैं तो आप के चरणों की सेवा करूंगी। गुरु जी ने कहा—हे कवल पती! यदि तूं दस हज़ार वर्ष तपस्या करे तो फिर तू हमारे साथ समाएगी। यह सुन कर कवल पती चुप हो गई, और एक दुपटा मर्दाने को देकर कहा—हे मर्दाना! यह मेरी सहदानी है इसे तू अपने साथ ले जा।

अब वहां से विदा हुइ तब मर्दाने का रबाब चलता नहीं था। उस समय गुरु जी ने कहा—हे मर्दाना! यदि कोई वस्तु किसी गृहस्थी की तुम्हारे पास है तो वह लौटा दो। मर्दाने ने कहा—हे महाराज! मेरे पास रानी का दिया हुआ एक दुपटा है। गुरु जी ने कहा—दिखाओ तो, जब देखा गया तो वह दुपटा दस हज़ार रुपये कीमत का पाया गया। मर्दाने ने कहा—हे महाराज! मैं किस मुंह से ले आया हूं और अब किस मुंह से वापस करूं। गुरु जी ने मर्दाने के मुख पर हाथ फेरा तो मर्दाने का दाढ़ा सफैद हो गया। तब गुरु जी ने कहा—हे मर्दाना! जाओ उस मुंह से लाये थे और इस मुंह से वापस कर आओ। जब मर्दाना दुपटा दे आया, तब गुरु जी ने कहा कहो मर्दाना वह वस्त्र लौटा दिया क्या। मर्दाने ने कहा—हे गुरुदेव! आप की आज्ञा का पालन किया गया है, इस के पश्चात् सभी वहां से उड़ कर सिद्ध मंडली में आ गये।

सभी को आदेश किया कुशल मंगल पूछा, गोरख नाथ ने कहा—हे भाई! सभी काम आप की कृपा से हो गया है, फिर गुरु जी ने गोरख नाथ से विदा मांगी। तब गोरख नाथ ने कहा—आप कुछ समय और ठहरने की कृपा करो। गुरु जी ने कहा—हे गोरख जी! हम रमते हैं.

इस लिए हमें जाने की आज्ञा दो। बस फिर गुरु जी सभी सिद्धों से प्रेम पूर्वक मिल कर वहां से रवाना हुए।

साखी कलकत्ता की

भ्रमण करते करते श्री गुरु नानक देव जी कलकत्ता नगर में चले गये। आगे देखा कि नगर में बिमारी फैली हुई है राजा भी बीमार है तब लोगों ने कहा—हे महाराज! आप हमारी इस बुरी हालत को देखो। हम सभी दुखी हो रहे हैं। गुरु जी के आने की खबर तमाम नगर में दी गई, तब अनेक नर नारी गुरु जी के पास आने लगे, अनेकों को सुख शांति प्राप्त होने लगी। यह खबर राजा को भी हुई, तब राजा भी पालकी में बैठ कर दर्शनों को आया तथा हाथ जोड़ कर कहने लगा—हे महाराज! मेरे पेट में दर्द रहता है आप कृपा करके मेरा रोग दूर करो, तब गुरु जी ने कहा—हे मर्दाना! तू रबाबा बजा। मर्दाना रबाब बजाने लगा, तब गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया-

रागु भैरउ असटपदीआ महला १ घरु २ ॥

आतम महि राम रामु महि आतमु चीनसि गुर बीचारा॥
अंम्रित बाणी सबदि पछाणी दुख काटै हउ मारा॥ १ ॥

॥ वार्तक ॥

श्री गुरु जी ने कहा—हे राजन! आत्मा में ही राम का निवास है। उसे पहिचानो और हे राजन! पूर्ण गुरु धारण करो जिस से तुम्हारे सभी रोग दूर हों। गुरुबाणी का जप करो। मन में सत्य को स्थान दो। सदेव अपने मन को निर्मल रखो। तब तुम्हारा सभी रोग दूर हो जाएगा। यह सुन कर राजा गुरु जी के चरणों पर गिर कर प्रार्थना करने लगा—हे महाराज! आप अंतर्यामी हो, आप मुझ पर भी कृपा करके अपना सेवक

बनाओ। यह कह कर राजा गुरु जी का सेवक बन गया। उस के तमाम रोग जाते रहे। नगर निवासी भी गुरु जी के सेवक बने। नगर से बिमारी सभी दूर हो गई। सभी लोग प्रभु कीर्तन आदि शुभ गुणों को धारण करने लगे। राजा ने एक अति सुंदर धर्मशाला बनवाई तथा गुरु जी की अपार कृपा से गुरबाणी का प्रवाह चलने लगा फिर गुरु जी ने राजा को परम पवित्र उपदेश दिया।

एक दिन वहां एक सन्यासी आ गया। जिस के सिर पर लंबी-लंबी जटायें थी। हाथ मे डंडा और कमंडल था। धोती गमछा और शरीर पर भस्म लगाई हुई थी। वह साधू गुरु जी के पास आकर कहने लगा, आप कौन हैं? आप ने तो विष्णु महेश आदि का पूजन हटा कर वाहिगुरु वाहिगुरु का स्मरण सिखाना अपना धेय बना रखा है। गुरु जी ने सन्यासी की बात सुन कर मर्दाने को कहा—हे मर्दाना! जरा रबाब तो बजाओ। मर्दाना रबाब बजाने लगा, गुरु जी ने शब्द कहा-

॥ राग भैरउ महला १ ॥

जग न होम पुन्न तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै॥ राम नाम बिन मुकत न पावसि मुकत नाम गुरू मुख लहै॥ राम नाम बिन बिरथे सब जनमा॥ विष खावे बिस बोली बोलै बिन नावै निहफल मरि भ्रमना॥ २॥ रहाउ॥

॥ वार्तक ॥

जब यह शब्द गुरु जी के पवित्र मुख द्वारा सुना तब यह सन्यासी गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा, मैं आप का हूं। जैसे आप मुझे रखो वैसे ही रहूंगा। तब गुरु जी ने उस सन्यासी को उपदेश दिया, हे संत जी! बगैर प्रभु नाम के कभी मुक्ति नहीं होती। उस सन्यासी ने कहा आप मेरे गुरु हो, गुरु जी ने कहा—हे मित्र! तुम पर परमात्मा प्रसन्न है, जाओ तुम्हारा कल्याण होगा। राजा को फिर उपदेश करके

बहुत ही हैरानी है। पीर ने कहा हैरानी किस बात की है बताओ! सिद्धि ने कहा-हे पीर जी! एक हिन्दू साधू ने नदी पर स्नान करते करते कुफर के शब्द कहे हैं। पीर ने कहा-हे पुत्र! उस काफर ने क्या बका है? सिद्धि ने कहा-आप ने तो चौदह तबक कहे हैं तथा कुरान शरीफ में चौदय तबकों का जिकर है। उस ने तो लख लख कहे हैं। यह महान असत्य सुन कर आया हूं। पीर ने कहा वह हिन्दू फकीर अब कहां है सिद्धि ने कहा वह दरिया पर स्नान कर रहा है। पीर ने कहा-जाओ उसे मेरे पास बुला लाओ। सिद्धि दरिया की ओर चला! परंतु गुरू जी तो पहिले ही इसी ओर चले आ रहे थे। सिद्धि ने कहा-हे संत जी! मेरे पीर साहिब आप को याद कर रहे हैं आप चलिये। गुरु जी ने कहा-हे मित्र! हम तो पहिले ही तुम्हारे पीर को मिलने जा रहे हैं। चलो- अब गुरु जी पीर को आकर मिले। तब गुरु जी की ओर देख कर पीर ने पूछा-

उते बन्दे पतीअड़े इते अचाइन॥

गुरु जी ने उत्तर दिया-

गल अपार संधीआ जो मंमे से देन॥

तब पीर सय्यद जलाल दीन ने उठ कर हाथ चूमा और कहिणे लगा—

यार सलामा लेकम वरा खुदाई सच कह॥
दरगह की बिसेख आग सुणाई सच मू॥

तब गुरु जी ने कहा-

पीर सुनाऊं सच अगों दरगाह सोहन सचीआं॥
झूठीआं नाही टाउ फेर चौरासी हटीआं॥

तब फिर सिद्धि ने कहा-पीर सलामत जी! मेरी बात तो व्यर्थ ही रही, आप दोनों तो परस्पर ही लग गये तब पीर ने कहा-कहो बेटा! तू क्या कहता हैं? तब सिद्धि ने कहा-हे पीर सलामत! आप ने भी तो चौदह ही लिखे हैं और कुरान में भी चौदह ही कहे गये हैं तथा सभी

पैकंबर भी चौदह ही मानते हैं और इस फकीर ने तो लाखों ही कहे हैं। मैं कहता हूं कि यह फकीर (नानक देव) तो खिलाफ बोल रहा है अथवा आप ही खिलाफ कहते हो? पीर ने कहा हे बेटा खिलाफ कोई भी नहीं जिसे चौदह का ज्ञान है वह चौदह ही कहेगा और जिन को लाखों का ज्ञान प्राप्त हुआ है वे लाखों ही कहते हैं।

फिर पीर ने गुरु जी को कहा-हे नानक देव! लाखों के आगे क्या है। तब गुरु जी ने कहा-लाखों के आगे तो अंत है उस आगे मुझे ज्ञान नहीं है। पीर ने सिद्धि को कहा-हे बेटा! इस नानक देव को भी लाखों तक का ही पता है। इस के आगे तो इसे भी कुछ पता नहीं है। तब सिद्धि ने कहा कि इस ने गुरमुख शब्द का प्रयोग किया है। उसका भाव मेरी समझ में नहीं आया। पीर ने गुरु जी से पूछा कि आप के गुरमुख शब्द का क्या भावार्थ है। गुरु जी ने कहा-हे पीर! मैं क्या जानूं। तब पीर ने कहा-हे महात्मा नानक अब मौन न धारो। गुरु जी ने मुस्करा कर कहा-हे पीर! मैं तो आप से पता लेने आया हूं। पीर ने कहा-हे नानक! यदि हमारे पक्ष की बात हो तो हमारे बहुत से विद्यार्थी बताने को उद्यत हो जायें। परंतु यह प्रश्न तो आप के संप्रदाय का है। इस का ज्ञान तो तुम को होना उचित है। गुरु जी ने कहा-हे पीर, मैं तो आप से कुछ पूछने के लिये आया था, तब पीर ने सभी सिद्धियों को बुलाया और कहा कि यह संत हमारे आश्रय में हैं अतः जब तक मैं न आऊं तब तक तुम ने इन की आज्ञा माननी होगी। किसी बात पर अवज्ञा नहीं करनी। तब पीर ने कहा-अच्छा हम चलते हैं। गुरु जी ने कहा-आप कहां जा रहे हैं? पीर ने कहा- मैं गुरुमुखों का भावार्थ जानने के लिये जा रहा हूं। गुरु जी ने कहा-हे पीर! कहां जाओगे? तब पीर ने कहा-हम अमुक स्थान पर जायेंगे और गुरुमुखों का नाम समझ कर आयेंगे। गुरु जी ने कहा- आप ने समुंद्र मार्ग से जाना। तब पीर ने

अपने कंठ में एक कठा डाला और सिर पर कुलह पहिना, हाथ में आसा ले लिया। पाओं में कौसे पहिन ली और मुसल्ला बगल में दबा लिया और मक्के की ओर रवाना हो गये।

साखी गुरमुखां की

भाई बाले ने पूछा-हे गुरुदेव! मक्का वहीं है जहां भाई मर्दाना गया था। गुरु जी ने कहा-हां वही मक्का है। तब बाले ने कहा-हे गुरु जी! वह पीर मक्के में जाकर किस से पूछ कर आयेगा? गुरु जी ने कहा-हे बाला! यह पीर भक्ति में स्वयं पूर्ण है परंतु इस का जो पीर है वह पूर्ण नहीं है।

इतने में सय्यद जलाल ने कहा-हे खुदावंद! यदि यह जहाज़ पहाड़ से जा लगे तो हम इस पहाड़ की भी सैर कर लें। इतने में देव इच्छा में जहाज पहाड़ से जा लगा। जहाज में से आवाज़ आई-भाई! जिस ने उतरना हो वह जहाज़ से उत्तर सकता है। पीर तत्क्षण उत्तर कर उस पर्वत पर चढ़ गया। ऊपर बहुत सुन्दर स्थान देखा जहां साय्या बिछी है और मसन्द भी सुंदर बिछ रही है। सामग्री सभी हैं परंतु वहां रहने वाला कोई भी नहीं है, तब पीर ने मन में सोचा यह पदार्थ अकेले नहीं है, यहां अवश्य कोई आएगा फिर सय्यद जलाल उत्तर कर समुंद्र की सैर करने लगा। समुंद्र में वर्षा होती देख कर सय्यद ने कहा-हे खुदा! जहां वर्षा की आवश्यकता है वहां तो एक बूंद नहीं गिरती अथवा जहां आवश्यकता नहीं है वहां प्रतिक्षण वर्षा होती रहती है। पीर के इन शब्दों से वर्षा हट गई। तब पीर फिर पर्वत पर चला गया। तब वहां देखा कि बहुत से महात्मा जन अपने अपने आसनों पर बैठ कर ईश्वर की भक्ति में लीन हो रहे हैं, तब पीर भी उनके निकट बैठ गया। अर्धरात्रि के समय देव कृपा से उ्न के लिए भोजन के थाल उतरे। तब एक ने

उठ कर अपने गुरु को नमस्कार किया- गुरु जी ने कहा-अरे, भोजन आया है या नहीं। उस ने उत्तर दिया हां महाराज, भोजन तो आ गया है, परंतु हमें संतोष नहीं हुआ। गुरु जी ने कहा कि संतुष्ट क्यों नहीं हुए। तब उस ने कहा-हे महाराज! एक धरती का साधु आया है, उस के लिये भोजन नहीं आया। तब गुरु ने कहा-उसने परमेश्वर की इच्छा नहीं मानी होगी। इतने में भोजन पाकर सभी चले गये और जाते नज़र नहीं आये। जलाल सय्यद रात्रि को विश्राम करके प्रातः फिर समुंद्र की ओर गया। क्या देखता है कि ग्राह जहाज को खींचे लिए जा रहा है और जहाज डूबता जा रहा है। तब जलाल ने कहा-हे खुदा, इस जहाज में वह भी हैं जो अपने परिवार से विछुड़ कर आये हैं। वे भी हैं, जिन्हों ने ऋण लेकर सामान भरा है। अगर यह जहाज़ डूब गया तो तेरे हाथ क्या आएगा। यह बात सय्यद ने कही तो वह जहाज़ डूबने से बच गया।

प्रातः फिर सय्यद उस स्थान पर गया, जहां साधू थे। आज किसी के लिए भी भोजन नहीं उत्तरा, साधू हैरान होकर अपने गुरु के निकट गए और गुरु को कहा-हे गुरु जी, कल वाला जो अतिथि है, वह आज भी भूखा ही रहा है। गुरु ने कहा-अच्छा उनको यहां बुला लाओ, हम देखेंगे कि उस से कौन सा अपराध हुआ है। वह संत सय्यद को बुला कर ले गया, तब उस महा पुरुष ने पूछा-हे भाई तू कौन हैं और अपने आने जाने का परिचय दे। सय्यद ने कहा- हे महाराज! मैं उच्च से आ रहा हूं और मक्का जा रहा हूं। महा पुरुष ने कहा- हे संत! मक्के में जाने का क्या प्रयोजन है तब सय्यद ने कहा-हे महाराज! मैं गुरमुखों के लक्षण पूछने जा रहा हूं और साथ ही देखूंगा कि गुरमुख लोक किस प्रकार के होते हैं, उस संत ने कहा हे भाई! तुम्हारी आयु कितनी है। सय्यद ने कहा-यह तो मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं है। उस संत ने कहा-अच्छा यह बताओ कि तुम इन दो दिनों को छोड़ कर क्या आगे भी कभी भूखे

रहे हो अथवा नहीं। सय्यद ने कहा-हे महाराज! मैं अपनी आयु में कभी भी भूखा नहीं रहा, यही दो दिन भूखे व्यतीत किए हैं, फिर उस सन्त ने कहा-हे भाई! तू अपने पाप प्रकट कर। जलाल ने कहा-हे महाराज! मैं तो इन दो दिनों में समुंद्र की सैर ही करता हूं और तरंगें ही देखता रहा हूं। एक दिन वर्षा होती देख कर कहा था हे ईश्वर! तू यह क्या करता हैं। जहां आवश्यकता नहीं वहां तो वर्षा कर रहा हैं और जहां जरूरत है वहां बूंद भी नहीं बरसाता। मेरे इन शब्दों से वर्षा बंद हो गई थी फिर दूसरे दिन एक जहाज़ डुबते देखा। मैंने कहा-हे खुदावंद! इस जहाज़ में अनेक प्राणी हैं जो परिवार को छोड़ कर आ रहे हैं, तथा अनेकों ने ॠण लेकर माल भर रखा है। भला जहाज़ डुबो कर तेरे हाथ क्या आयेगा? तब जहाज़ डुबने से बच गया था, जब सय्यद ने यह बात सुनाई तो उस महापुरुष ने कहा-हे मित्रो! इस मन्मुख पुरुष को धक्के मार कर बाहर निकाल दो क्योंकि यह मिथ्यावादी है अतः हमारे निकट रहने योग्य नहीं है, तब सय्यद ने कहा-हे महाराज! मैंने कौन सा पाप किया है? तथा मैंने कौन सी बुराई की है, उस महात्मा ने कहा-अरे मूर्ख! उस परमात्मा सर्व शक्तिमान की इच्छा है तू उस पर समोलोचना करने वाला हैं तथा उसे दयालु नहीं मानता, तेरे ही कथन से सभी काम उलट पुलट हुए हैं तथा तू उस का परिकव प्रेमी नहीं है, जो गुरमुख होते हैं वह उस की इच्छा पर प्रसन्न होते हैं जो पुरुष जगदीश्वर के प्रत्येक कर्तव्य को सर्हप ग्रहण करे, तथा उस की इच्छा पर निर्भर रहे। उस के किसी भी काम में हाथ न डाले, मन इच्छा को इच्छा पर न्योछावर कर दे। प्रत्येक स्थान पर परमात्मा को माने। हे भाई! जिन में यह लक्षण पाये जाएं वह गुरमुख कहलाने के अधिकारी होते हैं और जो प्राणी उसकी आज्ञा न माने तथा उस पर संदेह भाव रखें, उसी को विमुख तथा मनमुख कहा जाता है। संत जलाल ने कहा-हे

महाराज! मेरे अहोभाग्य हैं जो मेरे संशय इसी स्थान पर दूर हो गये हैं। मैं तो इसी का उत्तर लेने के लिये मक्का जा रहा था, मन में विचार था कि मैं अपने मजहब के विद्वानों से मिल कर इसी शंका को दूर करूं कि विमुख और गुरमुख में क्या भेद है। तब इस संत ने कहा-पीर! क्या तुम अपने स्थान पर भी किसी को छोड़ कर आये हो? तब जलाल ने कहा-जी मैं एक दरवेश को वहां छोड़ कर आया हूं। उस संत ने कहा-सुनो भाई! जिस साधु को तुम अपने स्थान पर छोड़ आए हो, वह सब कुछ जानते हैं तथा सर्वा अंतर्यामी हैं, उन की शर्ण में होने से तुम सभी सुख प्राप्त कर सकते हो। यहां तक कि वह परम पुरुष त्रिकालज्ञ तथा मोक्ष प्रदाता हैं। सय्यद ने कहा-आप ने मुझ पर अपार कृपा की है, मैं आप का कृतज्ञ हूं।

फिर उस महा पुरुष ने कहा-हे मित्र! अब यदि कोई ईश्वरेच्छा से जहाज़ इधर आ जाए तो तुम उस पर सवार होकर वापस चले जाओ। अकस्मात एक जहाज़ उधर आ गया। सय्यद जलाल उस पर चढ़ कर अपने स्थान पर आ गया। श्री गुरु नानक देव जी से मिल कर पीर जलाल बहुत प्रसन्न हुआ।

श्री गुरु जी-कहो सय्यद जी! आप गुरमुखों का परिचय लेने गये थे। सो उस के बारे क्या पता लेकर आए हो?

सय्यद-हे श्री गुरु नानक देव! जो कुछ मैं समझ कर आ रहा हूं वह आप भली प्रकार जानते ही हो। जो परमेश्वर की इच्छा पर प्रसन्न रहे। दुख सुख को एक जैसा जाने। उसे ही गुरमुख कहा जाता है और जो इस के उलट आचरण करे वही विमुख है।

गुरु जी-हे सय्यद यह ज्ञान तुम्हें कहां से प्राप्त हुआ है?

सय्यद-हे महाराज! मैंने उस ज्ञान के साथ साथ आप की पहिचान भी प्राप्त कर ली है। आप अंतर्यामी जगत के आधार रूप हैं। आप

सभी कुछ जानने वाले सर्वज्ञ हैं। यह दोनों ज्ञान एक महा पुरुष की कृपा से मुझे प्राप्त हुये हैं, इतना कह कर सय्यद ने तमाम बातें ब्योरे वार कर सुना दी।

फिर कुछ दिनों के पश्चात् श्री गुरु जी ने कहा-हे प्यारे सय्यद अब हम जाना चाहते हैं, उस ने कहा-हे महाराज! कुछ दिन और कृपा करो। फिर सय्यद ने श्री गुरु जी से अनेक परमार्थ की बातें की और संतोष प्राप्त किया, फिर मर्दाने ने पूछा—हे गुरु देव! उस पर्वत पर जो साधू थे, जहां से हम ने ज्ञान प्राप्त किया है। वे साधू कौन थे, गुरु जी ने कहा—हे मर्दाना! वे जो साधू वहां थे, वे सभी महा ऋषि नारद जी के शिष्य थे। वे पूर्ण साधू हैं। फिर मर्दाने ने कहा—हे गुरु देव! आप का विचार किधर की सैर का है? गुरु जी ने उत्तर दिया—हे मर्दाना! आज तक हम ने अपना इरादा कभी भी नहीं बनाया। उस प्यारे की जिधर आज्ञा हो हम उधर ही चले जाते हैं। जहां जगदीश ले जाए उधर ही जाना हमारा लक्ष्य है। धन्य श्री गुरु नानक देव!

साखी कंधार देश की

वहां से श्री गुरु नानक देव जी महाराज तथा मैं और मर्दाना गंगा नदी के तट पर पहुंचे, वहां एक मुगल पठान फकीर था। उस का मित्र अली था वह गुरु जी को मिला, उस फकीर ने प्रश्न किया—

शुभा नामा चिदारी।

तब गुरु जी ने उत्तर दिया—

हमारा नाम निरंकारी।

उस ने कहा-मायने फहि मीदम।

तब गुरु जी ने कहा-मां बंदा खुदायमा।

उसने कहा-शुमा पीर गुफतम? मां पीर जिंदा यह उत्तर गुरु जी

ने दिया। फिर मुगल पूछने लगा शुमा पीर जिंदा पीर तब गुरु जी ने कहा-आर आर।

मुगल ने कहा—मा इतकाद नेस्त। गुरु जी—चे गुफतम। मुगल—पैदाइश दे गुरदह जी। गुरु जी—यह कुदाय पीर कुल आलम मुरीद।

श्री गुरु नानक फकीर खबर दार आहा। तब वह मुगल गुरु जी के चरणों पर गिर गया।

फिर गुरु जी ने कहा—खुदाय दिगर सखा दार॥ मुगल—शुमा पीर मा मुरीद। गुरु जी—गुफल शुमा नाम बाबा वली कंधारी।

तब उस मुगल ने नमस्कार किया। फिर उस मुगल से ईश्वरीय बातें करके गुरु जी वहां से विदा हुए और कहने लगे- हे बाला तथा मर्दाना! चलो तुम्हें एक और फकीर के दर्शन करायें। फिर वहां से आप चलते चलते वली कंधारी के पास आ पहुंचे।

साखी वली कंधारी की

बाले ने कहा-हे गुरु अंगद देव जी महाराज! फिर हम दोनों गुरु जी के साथ चलते चलते वली कंधारी के स्थान पर आ गये। उस समय वली कंधारी के निकट शर्फ पठान दक्षिणी बैठा था, तब गुरु जी ने कहा-हे वली कंधारी! असलामों लेकम। वली कंधारी ने उत्तर दिया—व लेकुम सलाम! आईये तशरीफ रखिये। पीर जी शर्फ हाजी हुई लुतफ हुआ बखशीश हुआ। गुरु जी ने कहा-लुतफ खुदाय बंदा गुम राही करम बखश इलाही। तब शरफ पठान बोला पुरथी शरफ गुफत नानक दरुस्त माइना बोले कुलाह चि हवाल। तब गुरु जी ने कहा-कुलाह कुल एक खुदाइ। सब ते ते परवाह। सिफत धरे एक एक निशाना। सब ते होई

रहे बेगाना। गुफत नानक दरुस्त माइना। समझे तब खुले आइना।

फिर शर्फ ने पूछा — कफ़नी चिकार करदी।

गुरु जी ने पूछा-कफ़नी खौफ खुदाइ का देख मरदा होय तजे सभ भेस जलम जहान अलाह ने किया। खलक एक अवर नहीं दूआ। गुफत नानक सुन शर्फ इआणे। दरुस्त माइना जो इक पछाणै। शर्फ पुर्सी दसे लीरां चिकरदी तां।

गुरु जी ने कहा—

से सालम कुल जहान। चार कतेब छुटे कुरान।
शरा शरीयत मानों नाहीं। शरीअत मारफत दाव माहीं।
बाहरों शाही अंदरों लाल। गुफ्त नानक दर पहुंचे हाल।

फिर शर्फ कहने लगा-

पुरशीद कमर मुक्ता ही हवाल।

तब श्री गुरु नानक देव जी ने कहा-

मुक्त मेहर खुदाइदी शाहद पीर बताइ। दूजे सेती फाकरा करहु ता पावहु राह निआइ। ऐसी रहणी जे रहैं तां होवे दरुस्त ईमान। जर जुलम न किसी पर करो पकड़ हकड़ हलीमी खान गुफत नानक सुण शर्फ आजजी मुकान।

तब फिर शर्फ ने कहा—गोदड़ी चिकार फकरां कन्न।

तब गुरु नानक देव जी ने कहा-

गोदड़ी ज्ञान समझे एक खुदाय॥ सरी सबूरी सच तागा पाय॥ साध पीर मिल सीविये पाट न कबहू जाय॥ सब ते नीच कहाईऐ तौ कुल अंग समाय॥ गुफत नानक सुण शर्फ चलो हुकम रजाटा॥

फिर शर्फ पुरशीद कौस चिकार करदी॥

गुरु जी ने उत्तर दिया -

कौंस का मन बिंद कर कहीं निकल न आवे॥ पीर नसीहत राखीए

आपणे वर आवे॥ लगन सगन तब जागई जब इक दिखावै॥ दिल दलील उठे नई कोई मन ईमान मिलावै॥ मुफत नानक शर्फ सुण तब फकर कहावे॥

फिर शर्फ पुरशीदु टीकर फरमूद॥

फिर उतर में गुरु जी ने फुरमाया-

टीकरा ऊजू को नाद भीष लेहु॥ नांगों एक खुदाय हैं पीर फुरमायश एहु॥ दूजा दिन ते दूर कर कर पैदा न पैद॥ एसो मसलत होई रहु कबहुं न पड़ीऐ कैद॥ गुफत नानक शर्फ कीते पर कहा गुमान॥ फकर मारफत तउ मिलै दूजा गिड़े निशान॥ तब फिर शर्फ मुरशाद, बैरागा चि फुरमाय॥ फिर श्री गुरु नानक देव जी कहने लगे—

बैराग ने ऐंब होइ रहें। कीए को कीआ ही कहैं। करण हारे की सिफत बताय। मतलब पूरा करे खुदाय। गुफत नानक सुण शर्फ इंजाने। पीर पकड़े तब एक पछानें।

शेख शर्फ पठान बिदर नगर का था। वह बाबा वली कंधारी के पास कुछ शंकाओं को उत्तर लेने के लिये आया था, यह बातें कंधार में हुई। जब गुरु जी से शंका दूर हुई तब वह गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा और कहने लगा—

शुमा पीर बामुरीद। तब गुरु जी ने कहा—तू अपने बिंदुर नगर में जाकर निवास कर। तब शर्फ ने कहा—हे पीर नानक! हमें आप का दीदार फिर कब तक होगा? गुरु जी ने कहा-तुम आपने हृदय में ही दीदार कर लिया करो। भूल न जाना। शर्फ ने कहा-हे प्यारे पीर! दीदार तो दिल में होगा। फिर भी ऐसा भाग्य कहां है। गुरु जी ने कहा-यदि ऐसी ही भावना है तो सुनो। एक शाहजादा मिरासी होगा। उस का दीदार करोगे तो बस हमारा ही दीदार होगा। यह बात सत्य कर मानना तब शर्फ ने कहा वह कब और कहां होगा। तब गुरु जी ने कहा-वह

जो सूरमा नगर है वहां मर्दाने का पुत्र शहजादा होगा। हम उसे वहां छोड़ आऐंगे। फिर गुरु जी ने कहा-अब वली कंधारी का दीदार करीए।

फिर वली कंधारी ने कहा-हम से कुछ कौल इकरार करो। गुरु जी ने कहा-हमारा यह कौल है दावा दूर करो सन्यास रबाबी वगैरा जितने भी फिरके हैं, सभी खुदा के हैं। यह विश्वास करे तब वह सच्चा फकीर है, वली कंधारी कहने लगा जब आप का दीदार हुआ है तब से यह दावा दूर हो गया है, फिर कहा-हे गुरु जी! आप हमें अपने साथ ही ले चलो। गुरु जी ने कहा- हे वली! हमने आप को यही रखना है। वली ने कहा-जैसे आप की इच्छा। गुरु जी ने फुरमाया कि यह सारा मुलक तुम्हारा ही है।

आगे साखी और चली

गुरु जी महाराज मुझे (बाला) और मर्दाने को संग लेकर चलते चलते उपदेश करते जा रहे थे, मर्दाने ने कहा—हे महाराज! आप ने वली कन्धारी पर अपार कृपा की है, इस का कारण हम सुनना चाहते हैं। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह वली कंधारी हमारा प्यारा मित्र है। इस ने त्रेता युग में बहुत सेवा की थी, फिर मैं (बाले) पूछा—हे महाराज! जब यह वली कंधारी त्रेता युग में आप का मित्र रह चुका है, तभ यह इस जन्म में मुसलमान कैसे हो गया। गुरु जी ने उत्तर दिया—हे बाला! इस ने उस जन्म में कुत्ते को मारा था, उस के फल से उसे मुसलमान बनना पड़ा और हम ने इस के साथ इकरार किया था और दीना नाथ से भी हम ने इकरार किया था। वली के साथ शेख शर्फ भी पूर्ण हो गया है। मर्दाने ने पूछा—हे महाराज! शेख शर्फ भी क्या वली के दर्जे को पहुंचा है अथवा कुछ त्रुटि है। तब गुरु जी ने कहा—हे मर्दाना। वली कंधारी से अनेकों का भला होगा क्योंकि वली कंधारी गुरु श्रेणी में

हैं। मर्दाने ने पूछा—हे महाराज! दीना नाथ की क्या स्थिति है। गुरु जी ने कहा-दीना नाथ तो पहिले ही पूर्ण है। दीना नाथ की बिंहगम भक्ति है, और हमारी पंख भक्ति है। मर्दाने ने पूछा उसकी भक्ति बिहंगम भक्ति किस प्रकार हुई? गुरु जी ने कहा उसे माया नहीं लगी, तब उसकी भक्ति बिहंगम है उसे तो जन्म से ही हानि लाभ नहीं और गृहस्थ भी नहीं, जब बड़ा होगा तब गृहस्थ करेगा। उस की संतान महा पुरुष होगी, हमें तो पहिले ही गृहस्थ हुआ है, इस लिये हमारी भक्ति पंख है—मर्दाने ने कहा-हे महाराज! क्या काबल नगर में भी कोई महा पुरुष है अथवा नहीं। गुरु जी ने कहा—हां एक है, परंतु पठानों में है और बाबू खेले के शरीर में है। परंतु उसे अभी हवा नहीं लगी। मर्दाने ने कहा क्या आप उस को मिलोगे या नहीं। गुरु जी ने उत्तर दिया कि हमने उसे जरूर मिलना है। तब मैं और मर्दाना तथा गुरु जी बाबू खेल में चले गए। वहां एक खाली दुकान पर जा बैठे। वहां एक पठान आया और कहने लगा, अरे गुंचे तुम कौन हो? गुरु जी ने कहा-हम खुदा के बंदे हैं। फिर उस ने कहा-अरे गुंचे। बंदे तो सभी खुदा के हैं परंतु यहां बैठे हो। किस से तुम्हारा कौन सा काम है? गुरु जी ने कहा-हम फकीर हैं तथा यहां हमारा मित्र है। उस ने कहा- उस का नाम बताओ तथा वह कौन होता है। गुरु जी ने उत्तर दिया कि वह क्षत्री है तथा उसका नाम माणा है। फिर उस पठान ने कहा अरे गुंचे उस माणे के बाप का क्या नाम है? गुरु जी ने कहा-उस के बाप का नाम खाण चंद है। तब उस पठान ने कहा-चलो मैं तुम को उस के पास ले चलता हूं। गुरु जी ने कहा-हम जाने को तैयार नहीं है। वह स्वयं यहां आ जाएगा।

फिर उस पठान ने उस क्षत्री माणे को जाकर कहा-अरे लाला दो फकीर तुम्हारे आशना आये हुए हैं और बाज़ार में बैठे हैं तथा कहते हैं, खाण चंद क्षत्री का बेटा माणा हमारा मित्र है, मैंने उन को यहां

ले आने को कहा-तब उन्हों ने इन्कार किया और कहा कि माणा स्वयं यहां आएगा। उसी माणे ने कहा-मेरा तो कोई वाकिफ नहीं है। पठान ने कहा-वे तुम्हारा ही नाम लेते हैं नहीं तो हम अपने घर से रोटी ले जाते। जब यह सुणा तो माण चन्द ने सोचा मैं चलूं तो सही, परंतु अच्छा, फिर कुछ सोच कर माण चंद दो सेर मेवा लेकर गुरु जी के पास गया। जाकर देखा तो गुरु जी बैठे हैं। माणे ने जाकर कहा, हे संत जी! पैरी पए। फिर मेवा भेंट किया। गुरु जी ने कहा, आओ हे माण चंद! सत्य करतार आओ बैठ जाओ। फिर माणे ने कहा, हे महाराज! साधु तो सभी के मित्र होते हैं और संतों का प्रत्येक पुरुष सेवक है। परंतु लौकिक मर्यादा से मैं पूछना चाहता हूं कि आप कब से मेरे परिचित हैं? गुरु जी ने कहा, हे माण चंद तुम को स्वयं मेरा पता चल जाएगा। उस ने कहा, आप का शुभ नाम क्या है? गुरु जी ने कहा, मेरा नाम नानक निरंकारी है और इस का नाम बाला है। एक हमारा मिरासी है वह बाहर है। माणे ने कहा, आप का देश कौन सा है? गुरु जी ने कहा—हे प्यारे! हमारा देश आदिक सभी कुछ तुझे मालूम हो जाएगा। तब गुरु जी ने एक मनोहर शब्द कहा-

॥ शब्द ॥ देस हमारा बेगम पुर कहाइ॥ तिस वतन सो आए॥ राजा तिस का एकः कार हैं तिस ने ईहां पठाए॥ माण चंद को राह बताया निर्मल मार्ग पाया॥ नानक कहे सुण माण चन्द जी हम तुम कउ तभी बुलाया॥ तब माण चंद ने कहा-तुम तो और ही बातें करते हो, यह बातें व्यवहारिक नहीं। गुरु जी ने कहा हे माण चंद! यह बातें सत्य हैं बाकी की बातें असत्य हैं फिर गुरु जी ने शब्द कहा-

राग तिलंग महला १ ॥

जिनि कीआ तिनि देखिआ किआ कहीऐ रे भाई॥ आपे जाणै करे आपि जिनि वाड़ी है लाई॥ १ ॥ राइसा पिआरे का राइसा जितु सदा सुखु होई॥ १ ॥ रहाउ॥ जिनि रंगि कंतु न राविआ सा पछो रे ताणी॥ हाथ पछोड़ै सिरु धुणै जब रैणि विहाणी॥ २ ॥ पछोतावा ना मिलै जब चुकैगी सारी॥ ता फिरि पिआरा रावीऐ जब आवैगी वारी॥ ३ ॥ कंतु लीआ सोहागणी मै ते बधवी एह॥ से गुण मुझै न आवनी कै जी दोसु धरेह॥ ४ ॥ जिनी सखी सहु राविआ तिन पूछउगी जाय॥ पाइ लगउ बेनती करउ लेउगी पंथु बताए॥ ५ ॥ हुकमु पछाणै नानका भउ चंदनु लावै॥ गुण कामण कामणि करै तउ पिआरे कउ पावै॥ ६ ॥ रसीया होवे मुसक का तब फूल पछाणै॥ जो दिलि मिलिआ सु मिलि रहिआ मिलिआ कहीऐ रे सोई ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ बाती मेलु न होई॥ ७ ॥ धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै कउ धावै॥ गुर परसादी जाणीऐ तउ अनभव पावै॥ ८ ॥ पाना वाड़ी होइ घरि खरु सार न जाणै॥ रसीआ होवै मुसक का तब फूलु पछाणै॥ ९ ॥ अपिउ पीवै जो नानका भ्रमु भ्रमि समावै॥ सहजे सहजे मिलि रहै अमरा पद पावै॥१०॥

॥ वार्तक॥ फिर माण चंद ने कहा-हे गुरु जी! इस जीव का भला कैसे हो? गुरु जी ने कहा-हे भाई! इस जीव का भला तबी होता है जब इस की परमेश्वर में अनन्य भक्ति होती है, तब माण चंद ने कहा-आप कोई विधि बताओ। जैसे अनन्य भक्ति उत्पन्न हो जाय। गुरु जी ने कहा-सुनो! भूख और नंगेपन की परवाह न करें। एक करतार का ध्यान करें। अगर ईश्वर दिल से निकले तो महान दुखी हो जायं। तब माण चन्द कहने लगा आप धन्य हैं। यह कह कर चरणों पर गिर

गया। तब़ गुरु जी ने अपने हाथ का डंडा दिया और कहा कि इस डंडे को होशियार होकर रखें। माण चन्द ने वह डंडा सिर आंखों से लगाया। उस के प्रताप से माण चन्द के ज्ञान चक्षु खुल गए। श्री गुरु नानक देव जी की कृपा से उसका उद्धार हो गया, फिर गुरु जी ने उत्तम उपदेश दिया। फिर गुरु जी वहां से चल कर काबल धरती पर गए और वहां अनेकों जीवों का कल्याण किया, फिर गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! चलो अब तुम को सिंध प्रदेश की सैर करावें। फिर मुझे (बाले) और मर्दाने को साथ लेकर गुरु जी वहां से रवाना हुए।

साखी बाल गुंदाई के टिल्ले की

वहां से श्री गुरु नानक देव जी बाल गुंदाई के टिल्ले पर जा बिराजे। बाल गुंदाई के टिल्ले से आधा कोस की दूरी पर आप ने आसन जमाया। बाल गुंदाई पर एक संत रहा करता था। वस्त्र और भोजन तैयार करवा कर रख छोड़ता था। प्रत्येक अतिथि की सेवा किया करता था। यदि कोई साधू अतिथि आता सुने तो उस के सत्कार को पालकी घोड़ा आदि भेज कर उसे भोजन खिलाने को बुला भेजता था, उस ने गुरु जी का आना सुना। आप ने साथी तपस्वियों को कहा कि तुम जाकर उन को आदर सहित ले आओ। तपस्वियों ने गुरु जी को आ कर कहा-हे महाराज! आप आश्रम में चलो क्योंकि बादल बरसने वाला है। गुरु जी ने उत्तर दिया—भाई! हम तो अतीत साधु हैं जहां गुजरती है वहां ही गुजार लेते हैं! तुम को मंदिर में आराम है और हम यहां ही प्रसन्न हैं। उन्हों ने बाल गुंदाई को जा कर कहा कि बाहर तीन साधू आये हैं। हम ने बहुत कहा है परंतु वे आते नहीं हैं। तब वह नाथ स्वयं गुरु जी के पास आया, उस ने गुरु जी को आदेश कहा—तब गुरु जी ने कहा-आदेश उस अकाल पुरुष को है। आओ बाल गुंदाई जी बैठो। बाल गुंदाई ने कहा-हे महाराज! आप का शुभ नाम क्या है? गुरु जी

ने कहा-हे नाथ! हमारा नाम नानक निरंकारी है। नाथ ने कहा-हे नानक निरंकारी! आप मेरे मंदर में चलो क्योंकि ऊपर वर्षा आने वाली है, फिर नाथ ने गुरु जी को नमस्कार किया। गुरु जी ने कहा-हम अतीत हैं जहां बीती वहां ही बिता ली। मंदिर खोजने की हमारी मर्यादा नहीं। बाल गुंदाई ने कहा सत्य है फकीर की यही मर्यादा होनी चाहिये परंतु यदि अकाल पुरुष कोई सहूलत प्रदान करे तो स्वीकार करनी भी साधू मर्यादा है। इस लिए आप को मंदिर में चलना ही उचित है। गुरु जी उस के साथ हो लिए, पहिले तो उस नाथ ने गुरु जी को नाना प्रकार के मंदिर दिखाये और फिर घोड़े वस्त्रादिक दिखाये फिर भोजनालय आदिक दिखाये। देख कर गुरु जी ने कहा-हे नाथ जी! राज्य ठाठ का क्या देखना, नाथ ने कहा हे नानक देव! यह सभी उस अकाल पुरुष की माया है, हम तो केवल सेवा करने वाले हैं। संतों की, अतिथियों की सेवा करना हमारा धर्म है तथा हमारे लिए तो भखड़े की रोटी यह पड़ी है और निमक के बिना यह साग भाजी है। हम और कुछ भी अंगीकार नहीं करते। गुरु जी ने कहा! हे बाल गुंदाई। आप तो सच्चे योगी हैं। आप ने भली ही समझी है, गृहस्थ को त्याग कर योगी होना और फिर रस न छोड़ने इन में योगी होने का क्या लाभ है? महात्माओं के दो ही लक्षण हैं। १. परमात्मा के साथ मन का लगाना। २. संसारी पदार्थों से मन को मोड़ना और सभी में पूर्ण ईश्वर को जानना तथा भूखे नंगे को अन्न वस्त्र देना, आप तो पूर्ण साधू हैं।

तब उस नाथ ने गुरु जी से अनेक प्रकार के प्रश्न किए तथा पूर्ण उत्तर सुन कर गुरु जी के चरणों पर नमस्कार किया। रात्रि के समय विश्राम कर के प्रातः गुरु जी ने नित्य कर्म करके बाल गुंदाई से विदा मांगी। उस ने कहा—हे नानक देव! उदास होने का तो कोई कारण नहीं, आप कुछ दिन यहां विश्राम करो, आप की बातों से मन प्रसन्न होता

है। फिर गुरु जी ने उन सब को कृपा दृष्टि से देखा तो सभी आनंदित हुए। फिर गुरु जी वहां से चल दिये।

साखी एक राजा की

बाले ने कहा—हे गुरु अंगद देव जी! एक बार हमें साथ लेकर गुरु जी महाराज एक ऐसे देश में पहुंचे, जहां पर न तो वहां अन्न था और न ही वहां अग्नि थी। यह दोनों वस्तु वहां नहीं थी, वे लोग दुंबा मार कर उसके मास पर पत्थर रख कर सूर्य का जप करते थे। जिस से वह मांस पक जाता था, फिर उसे खाते थे। अतिथि की सेवा भी मांस से ही करते थे। उस नगर के बाहर गुरु जी जा बैठे, एक अयाली (दुंबे चारने वाला) वहां आया, उस ने गुरु जी को नमस्कार करके कहा-हे संत जी! यदि आप की आज्ञा हो तो मैं एक दुंबा मारता हूं। आप उसे खाना। यदि मैं इस प्रकार आप की सेवा न करूं तो मुझे मेरा स्वामी क्रुद्धत होकर दंड देगा और कहेगा कि तुम ने अतिथियों को भूखे क्यों रखा यह हमारे नगर का नियम है। हमारे देश में अन्न और अग्नि दोनों ही नहीं होते। गुरु जी ने कहा-जैसे तुम्हारी मर्यादा करो, तब वह एक दुंबा मार कर उस का मांस एक पत्थर पर रख कर उस के ऊपर दूसरा पत्थर रख कर सूर्य का जाप करने लगा। सवा प्रहर बीतने पर मास बन गया। तब उसने प्रार्थना की कि आप इसे स्वीकार करो! गुरु जी ने कहा-इस दुंबे की खाल और अस्तियें एकत्र करो। जब एकत्र की गई तब गुरु जी ने कहा-हे दुंबे! उठ कर घास खाओ, बस वह दुंबा सावधान होकर घास चरने लगा। यह कौतुक देख कर अयाली हैरान हो गया, तब गुरु जी ने अयाली को कहा-हे मित्र! तू नगर में जा कर किसी बड़े आदमी को कह कि चलो बाहर एक संत तुम को बुला रहा है और परमात्मा से तुम को अन्न अग्नि लेकर दिखाएगा। उस अयाली

ने नगर के एक धनी से कहा कि बाहर एक संत बैठा है उस ने दुंबे को दुबारा जीवत किया है तथा अब वह कहता है कि मैं इस नगर के निवासियों को अग्नि और अन्न परमात्मा से दिला सकता हूं।

यह सुन कर वह धनी गुरु जी के पास आकर प्रणाम करके बैठ गया। गुरु जी ने कहा-हे मित्र! साधू के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिये। आप थोड़ा सा अन्न ले आओ। उसी धनी ने कहा-महाराज! हमारे यहां अन्न नहीं होता। हां यदि कहें तो मैं राजा से जा कर कह देता हूं तब वह धनी राजा के निकट गया और कहिने लगा-हे राजन! नगर के बाहर एक साधू है। वह कहता है कि मैं परमात्मा से तुम लोगों को अन्न और अग्नि दिलवा दूंगा तब राजा अपने मंत्री को साथ लेकर गुरु जी के पास आया और नमस्कार किया। गुरु जी ने कहा-हे राजन! यदि तुम लोग ईश्वर की भक्ति सच्चे दिल से ग्रहण करो तो वह परमात्मा सभी कुछ दे देगा। तब तमाम प्रजा के साथ राजा गुरु जी का शिष्य हो गया।

फिर गुरु जी ने कहा-हे राजन नगर से अन्न ले आओ तब सारे नगर से एक सेर भर अन्न मिला। गुरु जी की आज्ञा से वह अन्न बो दिया। जब वह पक गया तो गुरु जी ने कहा-इसे काट कर गोह लो। जब सभी काम पूर्ण हो गया तब गुरु कृपा से अपार अन्न हो गया फिर गुरु जी ने कहा-हे राजन! इसी प्रकार समय पर उस ईश्वर का नाम ले कर अन्न बोया करो तब वह ईश्वर कोई त्रुटि नहीं आने देगा। फिर गुरु जी ने पत्थर पर पत्थर मार कर उन को अग्नि प्रदान कर दी। तब उस नगर में सभी ओर धन्य गुरु नानक देव के जयकारे होने लग गये। सभी नर नारी गुरु जी के चरणों में लग गये। गुरु जी ने कहा-अतिथि की सेवा करो। गरीब की पालना करो। ईश्वर स्मरण करो तब तुम सब का कल्याण होगा। इस के पश्चात् गुरु जी वहां से चलने लगे, तब

लोग उदास हो गये फिर गुरु जी ने कुछ समय वहां व्यतीत किया फिर सब को प्रसन्न करके श्री गुरु नानक देव वहां से रवाना हुए।

साखी भुटंतर देश की

श्री गुरु नानक देव जी चलते चलते एक नगर में जा पहुंचे और नगर के बाहर एक स्थान पर जा बैठे। जो कोई आता था। वह दर्शन करके वहीं बैठ जाता था तथा जाने का नाम न लेता था, नगर में यह चर्चा होने लगी कि एक संत आये हैं वे न तो किसी से कुछ मांगते हैं और न ही किसी से बात करते हैं। बहुत ही संतोषी हैं, यह बातें उस नगर के राजा ने भी सुनी। राजा ने बहुत ही अच्छी अच्छी वस्तु लेकर गुरु जी के आगे रख दी और नमस्कार किया। उस देश की मर्यादा थी राजा वहां का घास खोदा करता था तथा राजे के कपड़े जटके थे। गुरु जी ने कहा-हे राजन! तुम यह सभी वस्तु उठा कर ले जाओ और ईश्वर अर्पण गरीबों में बांट दो। राजा ने गुरु जी की आज्ञा मान सभी वस्तु ले जा कर गरीबों को बांट दी, फिर राजा ने हाथ जोड़ कर कहा-हे महाराज! आप ने हमें दर्शन देकर हमारे जन्म जन्म के पापों को दूर कर दिया है। आप को तो किसी भी वस्तु की इच्छा नहीं है आप उपकारी हैं, परंतु मैं आप की शर्ण हूं। आप का यहां प्रदपर्ण हमारे कल्याण के लिए हुआ है। तब गुरु जी ने कृपा करके कहा-हे राजन! आप अपनी इच्छा कहो। राजा ने कहा-हे महाराज! मेरे देश में चावल और पशम यह दो ही वस्तु होती हैं और कुछ नहीं होता। आप कृपा करो तो मेरे देश में अन्नादिक भी उत्पन्न हो जाया करे और कपास भी पैदा हो, फिर राजा अपनी प्रजा के सहित गुरु जी का सेवक बन गया। गुरु जी ने कृपा करके कहा-हे राजन! तेरे देश में सभी प्रकार की वस्तु होगी। गुरु जी के कृपा वाक्यों से उस देश में सभी वस्तु होने लगी, फिर गुरु जी

ने राजा तथा उस की प्रजा को उत्तम उपदेश दिया। अब गुरु जी वहां से चलने को तैयार हुए, तब सभी लोग उदास हो गये। सब ने कहा-हे महाराज! आप के आने से सभी प्रकार का आनंद हो रहा है। कृपया यहां ही निवास करो। तब गुरु जी ने फुरमाया-हे राजन! तेरे देश में अनेक प्रकार के खनिज पदार्थ उत्पन्न होंगे। हम ने उस परमात्मा से तुझे बहुत सा ऐश्वर्य ले दिया है। कपास, चांदी, स्वर्ण आदिक सभी वस्तु होगी परम आनंद रहेगा, परंतु हमारे उपदेश के अनुसार सदैव चलते रहना। जब उसी प्रकार लोग उदास देखे, तो गुरु जी ने कहा-हे राजन! तुम्हारे तरह और संसारी भी हमें चाहते हैं और हम सारे संसार के लिए हैं। इस प्रकार सब को पवित्र उपदेश में प्रसन्न कर के जगत के स्वामी गुरु नानक देव जी ने वहां से प्रस्थान किया।

साखी समुंद्र के ग्राम बहाने की

चलते चलते श्री गुरु नानक देव जी समुंद्र तट पर चले गये तथा एक गांव में जा डेरा डाला। वहां की जनता ने गुरु जी का अपार सत्कार किया। जब वहां छः मास हो गये तब वहां के तमाम लोग तैयारी करने लगे तो उन्हों ने गुरु जी को कहा-हे महाराज! अब आप भी चलने की तैयारी करो। देखो तमाम जनता अपना सामान उठा कर इस नगर के बाहर हो रही है। अब किसी और स्थान पर निवास किया जाएगा क्योंकि छः मास के पश्चात् समुंद्र हमारे गांव को बहा ले जाता है। छः मास के पश्चात् हम फिर इस को अबाद करते हैं। गुरु जी ने कहा-हे भाई यदि समुंद्र तुम्हारे गांवों को न बहाये तब तुम हमारे शिष्य बन कर अपना भला करोगे? उन्हों ने कहा-हे महाराज! अगर तुम्हारी कृपा हो तो हम आप के शिष्य हो जायेंगे। गुरु जी ने कहा-अच्छा अब तुम जाओ और हम यहां ही रहेंगे। जब तुम छः मास के पीछे आओगे तब

तुम्हारे यह मकान ऐसे ही होंगे अर्थात बहेंगे नहीं। तब सभी चले गये परंतु गुरु जी वहां ही बैठे रहे। कुछ दिनों के पीछे समुंद्र की लहरें उठीं। तब गुरु जी ने अपना चरण आगे किया। समुंद्र गुरु जी के चरण चूम कर पीछे हट गया और अपने ठिकाने पर चला गया, सभी घर वैसे ही बने रहे।

जब वहां के निवासी छः मास के पीछे वहां आये तो सभ ने अपने अपने घर वैसे ही देखे। सभी इकट्ठे होकर गुरु जी के पास आ कर स्तुति करने लगे। अब उन्हों ने सुंदर भेंट गुरु जी के आगे अर्पण करके प्रार्थना की-हे गुरु देव! आप हमें अपनी शर्ण में ले लो। तब गुरु जी ने अपने चरणों के जल की उन को पाहुल प्रदान की और उपदेश दिया कि ईश्वर का नाम जपो धर्मशाला बनवाओ, शब्द कीर्तन करो, अतिथि की सेवा करो।

इस के पश्चात् जितने भी समुंद्र तट के ग्राम थे, सभी में उपदेश अमृत वरसाया और सभी को ईश्वर अनन्य भक्ति सिखलाई। फिर कुछ समय वहां निवास किया, तथा पश्चात् वहां से गुरु जी अपने देश को चल दिये।

साखी अपने देश आने की

एक दिन गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! अब किधर जाने का विचार है, मर्दाने ने कहा-हे गुरु देव! जिधर को आप की इच्छा हो उधर ही टीक है। हम तो आप के अनुयाई हैं, फिर गुरु जी मुझे कहने लगे-हे बाला! तुम बताओ अब किधर चला जाय। मैंने हाथ बांध कर कहा-हे कृपा सागर! आप जहां ले चलोगे उधर ही चले जाऐंगे, बस फिर क्या था गुरु जी की आज्ञा से हम ने आंखें बंद की जब क्षण के पीछे खोलीं तो हम रावी नदी के तट पर थे, तब गुरु जी ने कहा कि यहां

से अजिते को हम ने साथ ले चलना है। तब अजिता आ मिला। उस ने गुरु जी को प्रणाम किया। गुरु जी कहने लगे-भाई! एक अबदुल रहमान फकीर डल्ले के चक्क में रहता है, हम उसे मिलना चाहते हैं। वह हम से घी मांगता रहा है। तब अजिते ने कहा-हे महाराज! चलो, तब गुरु जी ने कहा अजिता तुम आंखे बंद कर, जब सब ने आंखें मुंदीं तो सभी यहां से डल्ले के चक्क में आ गये। तब गुरु नानक देव जी अबदुल रहिमान के पास दो कोसों पर जा बैठे और अजिते को कहा-तुम जा कर मीआं जी को कहो कि तुम्हें नानक निरंकारी बुला रहा है परंतु मान से कहना। अब अजिते ने मीएं को संदेश दिया तो मीआं फौरन ही चल पड़ा तथा और भी लोग उस के साथ आए। गुरु जी ने कहा देखा मीआं आ रहा है परंतु लोगों को दुआई देता आ रहा है और लोगों को लौटाता भी आता है, यह देख कर गुरु जी ने एक सलोक कहा-

सलोक महला १ ॥ देन्हि दुआई से मरहि जिन कउ देनि सि जाहि॥ नानका हुकमु न जापई किथै जाइ समाहि॥

यह सुन कर मीआं कुछ चमका, आगे जा कर सलाम की। तब गुरु जी ने कहा-हे मीआं जी! कहो राजी खुशी हो? तब उस ने उत्तर दिया हां साईं लोक जी! हम अच्छे भले हैं फिर गुरु जी ने कहा-हे मीआं जी! आप ने कैसे कहा—कि कराड़ी ने घी जमां कर रखा है। परंतु हम ऐसे लेंगे जैसे किसी साग भाजी पर खट्टे की फांक निचोड़ ली जाती है और फोक को फैंक दिया जाता है जब मीएं ने यह सुना तो खाली हो बैठा। कहने लगा-मैं तो कुछ लेने को आया था परंतु अपनी भी दे बैठा हूं।

उस मीएं साथ एक और मीयां आया था। इसके मन में आया कि यह क्या कहेगा कि हिन्दू के आगे अपनी भी करामात खतम करवा

आया है। इतने में दूसरा भी आ गया और हंकार के साथ गुरु जी के निकट जा बैठा। तब गुरु जी ने एक दृष्टि से उस की भी सत्ता खींच ली वह भी खाली हो गया। मीएं ने कहा-भाई! शेष नाग के नीचे आ पड़े हैं। देखें खुदा जिंदा भी रखता है या नहीं अब तो जिंदा रहने की फिकर है। करामात लुट जाने का भय नहीं है। गुरु जी ने देखा कि मीआं बहुत ही हताश हो रहा और भयभीत है। गुरु जी ने कहा कि मीयां! यदि समुंद्र में छपड़ी पड़ गई तो क्या अचंभा है? परंतु इतने शब्द नहीं कहने चाहिये। जिस की वस्तु हो उसी के पास चली जाय तो क्या अचंभा है। जब यह कहा तो फिर उन की करामात उन के पास ही चली गई। बस फिर वह सबी गुरु जी के चरणों में भ्रमरे बन गये और कहिने लगे-हे महाराज! आप हमारे हुजरे में चलें। तब गुरु जी कृपा करके मीएं अबदुल रहिमान के साथ चल पड़े। मार्ग में चलते चलते गुरु जी ने धरती की ओर देखा वहां स्वर्ण की मोहरें बन गई तब गुरु जी ने कहा-मीयां जी! हम रास्ता भूल गये हैं। मार्ग तो दाएं हाथ रह गया है। मीएं ने कहा-अच्छा अब आप दायें ही चले चलो। रास्ते में मीएं ने देखा कि मण मण भर की ढीमें पड़ी हैं आखिर गुरु जी हुजरे में जा बैठे।

मीएं ने गुरु जी की अपार सेवा की। गुरु जी ने कहा-हे मीआं जी! आप हुजरे में अब तक किस मर्यादा से निवास करते हो? मीयें ने कहा-हे गुरु जी! मैं तो छः महीने के पश्चात् हुजरे से बाहर आता हूं। तो फिर एक लोटा पानी और एक सेर भर जौं लेकर हुजरे के भीतर चला जाता हूं। तब गुरु जी ने कहा-हे अजिते! आज से हम भी एक मुष्टी भर बालू ही खाया करेंगे जब यह सुना तो मीयें ने गुरु जी को प्रणाम किया और कहा-हे गुरु जी! आप ने हम लोगों पर अपार कृपा की है, हम लोग आगे से आप के सेवक बन गए हैं और हम अपने

अहोभाग्य मानते हैं। हम भूले हुए थे आप हमें क्षमा करो। गुरु जी ने कहा-हे मीयां जी! आगे से तुम को बक्षीश दान मिल गया है और तुम ने पूर्ण गुरु को प्राप्त कर लिया है। तुम्हारा जन्म सफल हो गया है। फिर मीयें ने गद गद होकर गुरु जी के चरणों का बोसा लिया। गुरु जी ने उस पर अपार प्रसन्न होकर उसे अपनी शर्ण में लेकर उस का पाप मुक्त करके फिर वहां से प्रस्थान किया।

साखी मर्दाने के साथ

गुरु जी महाराज हम दोनों को साथ लेकर चलते चलते एक नगर में पहुंचे तब मर्दाने ने कहा-हे गुरुदेव! यदि आप आज्ञा दें तो मैं इस धरती में जाकर कुछ खाने के लिये ले आऊं। गुरु जी ने कहा-हे भाई मर्दाना! जैसे तेरे मन में आवे वैसा कर। अब मर्दाना नगर में चला गया। उन लोगों से मर्दाने ने रस्त (कच्चा भोजन) मांगा। तब लोगों ने भोजन का सामान तो दे दिया परंतु सब को कह दिया इसको अग्नि और जल न दिया जाय। मर्दाने ने जिस से आग पानी मांगा। उसी ने इन्कार कर दिया। अब मर्दाना उदास होकर गुरु जी के पास आ बैठा। अंतर्यामी गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना इस स्थान से पत्थर उठाओ जब मर्दाने ने पत्थर उठाया तो उस के नीचे से अत्यंत सुंदर तालाब निकल आया। जिस में निर्मल जल भरा हुआ देखा गया। फिर आज्ञ दी। हे मर्दाना! तू इस तालाब में रोटी बना बना कर छोड़ता जा और जो बाकी दाल चावल आदिक हैं वह सभी किसी वस्त्र में बांध कर पानी में डाल दे और ईश्वर का स्मरण कर। तब मर्दाने ने गुरु जी की आज्ञा का पालन करते हुए सभी कुछ पानी में डाल दिया और ईश्वर का स्मरण भी किया। एरंतु मर्दाना उदास हो कर कहने लगा—हे महाराज! यह सारा अनाज हमारा तो व्यर्थ हो गया है। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तू परमेश्वर से प्रार्थना कर और कहो कि हे ईश्वर! यदि हमारा अन्न निकल आये

तो हम आप के नाम एक रोटी दान करेंगे जब मर्दाने ने गुरु जी की आज्ञा मान कर वैसे ही प्रार्थना की तो सभी तमाम रोटियें और दाल चावल पके पकाये बाहर आ गये। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! इसी प्रकार जो ईश्वर के निमित कुछ देकर प्रार्थी होता है उस का डूबा हुआ धन भी उसे प्राप्त हो जाता है। तब मर्दाना श्री गुरु जी के चरणों पर गिर प्रणाम करने लगा।

अब यह चर्चा सारे नगर में होने लगी—कि यह तो फकीर कोई महान शक्तिमान है। हम ने तो आग पानी नहीं दिया था परंतु उस ने तालाब निकाल लिया है और उसी के द्वारा अन्न भी तैयार करवा लिया है। यह तो कोई महा पुरुप है। तब वहां का राजा अपने अहलकार लेकर गुरु जी के चरणों में आकर प्रार्थना करने लगा। हे महाराज! हम लोक बहुत ही निकृष्ट हैं तथा आप दयालु हैं। हम पर कृपा करो और जो हम से भूल हो गई है उसे क्षमा कर दो। तब गुरु जी ने कहा-

सलोकु॥ वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाइ॥
अंतरि बाहरि संगि है नानक काइ दुराइ॥ १॥

॥ अर्थात परमात्मा सर्व व्यापक है। कोई स्थान उससे रिक्त नहीं है वह सदैव अंग संग है उस अंतर्यामी से कोई भी बात छुपी नहीं है। तुम भी उसी का स्मरण करो तब तुम्हारा भी कल्याण होगा। तब राजा तथा प्रजा सभी गुरु जी के शिष्य हो गये। फिर गुरु जी ने फुरमाया कि एक धर्मशाला बनवाओ तथा लंगर और कीर्तन प्रति दिन करना प्रारम्भ करो, अतिथि सेवा को सदैव करो। फिर तुम्हारा लोक परलोक भला होगा, इतना कह कर गुरु जी वहां से रवाना हुए।

साखी आगे और चली

फिर भाई बाले ने कहा-हे गुरु अंगद देव जी! वैसे तो सतगुरु श्री

नानक देव जी महाराज के सहस्त्रों पवित्र से पवित्र जगह उद्धारक कर्म है, परंतु प्रत्येक लीला में एक बात प्रत्यक्ष हो रही है कि संसार का कल्याण करना गुरु जी का मुख्य मंतव था, इसके अतिरिक्त संसार से आडंबर का नाश करना भी कल्याण में छुपा हुआ एक रहस्य है। गुरु जी के सुंदर कृत्यों का जो भी पाठ करेगा तथा स्मरण करता रहे वह पुरुष के भवसागर तरने को एक जहाज़ के सदृश्य है। यह सुन कर श्री अंगद देव जी ने कहा-हे भाई बाला! आप धन्य हो जिन्हों ने श्री गुरु जी महाराज के साथ रह कर उन के संसार उद्धारन सुकृत्यों को अपने नेत्रों द्वारा देखा, तथा गुरु जी के मनोहर उपदेशों द्वारा अपने कानों को पवित्र किया है। अब हमारा मन चाहता है कि हम श्री गुरु नानक देव जी की पवित्र और सुंदर कथा मन भर कर सुने। अब आप यह बताओ कि आगे गुरु जी ने क्या कुछ किया और कहां कहां की जनता को संसार सागर से पार किये हैं। कृप्या सुनाने का कष्ट करो।

भाई बाला का कथन

भ्रमण करते करते गुरु जी महाराज एक पठान के देश में गये और बाहर रोड़ी पर आसन जमा लिया। वहां एक रुहेला पठान आ पहुंचा तब गुरु जी ने हमें कहा कि तुम (बाला) और मर्दाना गुप्त होकर खेलो और स्वयं गुरु जी बारां वर्ष की अवस्था धारण करके बैठ गये। इतने में वह पठान निकट आ पहुंचा और गुरु जी को अकेले देख कर आप को पकड़ कर ले गया। अपने घर जाकर अपनी धर्म पत्नी को कहने लगा-हे खुदा की बंदी आज यह हिन्दु लड़का मेरे हाथ आया है, मैं इस की बहुत ही कीमत वसूल करूंगा।

देख तो यह लड़का कैसा सुंदर है उस की औरत देख कर बहुत ही प्रसन्न हुई और कहने लगी कि इस लड़के को तो मैं अपने पास ही

रखूंगी, इस को बेचना नहीं है। तब उस पठान ने कहा-हे भली लोक इस के दो घोड़े मिलते हैं, औरत ने कहा-जैसे आप की इच्छा।

वह पठान गुरु जी को जो बालक बने हुए थे, बेचने के लिए बाज़ार निकल गया, असल बात यह थी कि वे लोग अत्यंत नास्तिक तथा पीर मुरशद से मुनकर थे। उन को सन्मार्ग पर लाने के लिए गुरु जी उस देश में गये थे। तब उस पठान ने गुरु जी के दो घोड़े ले लिए। मैं और मर्दाना चाहे गुप्त थे। परंतु गुरु जी के ही अंग संग रहते थे, जो पठान गुरु जी को अपने घर खरीद कर ले गया था, उस की औरत ने गुरु जी को देखा तब गुरु जी उसे बहुत ही अच्छे लगे। प्रसन्न होकर कहने लगी, इसको तो हम अपने घर में रखेंगे। पठान ने कहा-इसे कौन सी सेवा दी जाय। पठानी ने कहा-इसे घर का पानी भरने पर ही लगाऊंगी। अब गुरु जी को पानी भर कर लाने को कहा गया। जब घड़ा लेकर गुरु जी खूह पर गये, तो ख्वाजा खिजर ने गुरु जी को पहचान कर प्रणाम किया। गुरु जी ने कहा-ख्वाजा खिजर जब तक हम आज्ञा न दें तब तक तुम ने किसी को जल नहीं देना होगा। गुरु जी की आज्ञा स्वीकार करके नगर के तमाम खूहों का जल सुका दिया अब गुरु जी खाली घड़ा लेकर पठान के घर को आ गये, तथा पठान को कहा-मीआं जी खूह में तो पानी का निशान तक नहीं है। पठान ने कहा-तुम दूसरे खूह से ले आओ। दूसरे खूह से भी गुरु जी खाली ही लौटे तथा कहने लगे कि वहां भी पानी नहीं है। अंत नहीं है। अंततो गत्वा सारे नगर में त्राहि त्राहि मच गई। सभी ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि हे ईश्वर! क्या तू ने हम सब को प्यासे मारने का विचार कर रखा है? अभी अभी हम ने कल तमाम खूहों में पानी देखा था, परंतु आज क्या हो गया। जो तमाम खूह सूख गये हैं? अब तमाम जनता दिलगीर होने लगी सारे नगर में एक गुरु जी ही थे, जो प्रसन्न नज़र आते थे। बाकी ई मरता

मुंह कुमलाए हुए थे। लोगों ने पठान से कहा-हे मिआं! एक तुम्हारा गुलाम ही खुश नज़र आ रहा है बाकी तो तमाम नर नारी दुखी हो रहे हैं। यह गुलाम कहां से लाये हो। उस पठान ने कहा-इसे तो मैं कल ही खरीद कर लाया हूं। काम को तो बहुत ही होशियार है और खाता पीता भी कुछ नहीं और हर समय प्रसन्न रहता है। उन में कुछ बुद्धिमान भी थे, वे सभी गुरु जी के चरणों में आ गिरे कहने लगे आप तो कोई महा पुरुष हो। आप हम पर कृपा करो नहीं तो हम सभी पानी से प्यासे मौत के मुख में चले जायेंगे। तब गुरु जी ने कहा देखो यदि गुरु नानक मिशन को मान कर तुम शिष्य बनो तब तुम को पानी मिलेगा। तब उन्हों ने शिष्य होना माना तब गुरु जी ने ख्वाजा खिजर को कहा कि अब इन को पानी दे दो। गुरु जी की आज्ञा मान कर ख्वाजा खिजर ने प्रत्येक कूप में पानी भेज दिया। तब गुरु जी ने अपने को भी प्रकट किया, और तमाम प्रदेश गुरु जी का सेवक हो गया। गुरु जी ने उन को उत्तम उपदेश से कृतार्थ किया और अनेक धर्मशालायें बनवाई। सभी लोग रात्रि को कीर्तन करने लगे और बाणी का पाठ कंठ करने लगे, फिर गुरु जी ने कहा देखो जैसे हम को पकड़ा है ऐसे किसी को फिर नहीं पकड़ना अपितु प्रत्येक की सेवा करना।

अब गुरु जी से उस पठान ने क्षमा मांगी, तब गुरु जी ने कहा-हे मित्र! जितनी कीमत में तुम ने हमें खरीदा है, उस से अधिक तुम को मिल जाय तब हम तुम को छोड़ कर जायेंगे। उस पठान ने बहुत अनुभय विनय की और कहा हे महाराज! जो कुछ भी हमारा है तथा जो कुछ भी मेरे देश वासियों का है। सभी आप का है, आप हमें क्षमा करें। जहां भी आप की इच्छा हो जा सकते हो, आप को कोई भी प्रतिबंध नहीं है।

गुरु जी ने कुछ सोच कर कहा-अच्छा वह जो सामने टिल्ला है।

वहां जाकर एक पत्थर को उखाड़ लो। संकेत किये हुए टीले से जब पत्थर उखाड़ा गया तो नीचे उस के हीरे लालों का भरा हुआ धन कोष देखा। गुरु जी ने कहा - जितना धन चाहो यहां से ले लो तथा अब हमें जाने दो। सभी ने चरण वंदना की और गुरु जी फिर उस रोड़ी स्थान पर बैठे।

एक बार वही रुहेला जो पहिले गुरु जी को पकड़ कर ले गया था, फिर आया उसने गुरु जी को बाल अवस्था में देखा तो फिर पकड़ कर ले गया। घर में जब पठानी ने देखा तो पहचान कर बोली यह तो वही लड़का है। मैं तो इसे अपने घर में ही रखूंगी, अब उस पठान ने सोचा कि मेरी औरत तो इस पर ही आसक्त हो रही है। दूसरे रोज़ वह पठान गुरु जी को साथ लेकर किसी दूसरे नगर में चला गया और गुरु जी को बेच कर कुछ घोड़े ले आया। जिस ने गुरु जी को खरीदा था वह आप को अपने घर में ले गया, और घर का सभी काम गुरु जी को सौंप दिया। गुरु जी ने दूसरे दिन उस नगर का अन्न पानी और अग्नि तीनों वस्तु बंद कर दिये। तब सभी नर नारी हैरान हो गये, सभी परमात्मा से प्रार्थना करने लगे—हे खुदा! यह क्या कहर नाजल हुआ है जो सभी कुछ हमारा रुक गया है। अब सभी लोग इकट्ठे होकर अपने पीर मुरशद मनाने लगे, सभी ने बहुत ही ज़ोर लगाया परंतु कुछ भी न बना, तब गुरु जी ने अपने पठान से कहा-यदि तुम गुरु नानक धर्म को स्वीकार करो तो सभी वस्तु तुम को प्राप्त हो जायेगी। यदि तुम अपने ही पीर फकीर मनाते रहे तो तुम को कुछ भी मिलने का नहीं। उस पठान ने लोगों को बुला कर कहा-कि मैं जो गुलाम कल खरीद कर लाया हूं। वह कहता है कि गुरु के शिष्य बनो तब यह खुदा का कहर दूर होगा नहीं तो कभी भी नहीं होगा। लोगों ने कहा-भाई मरता

क्या नहीं करता चलो इस गुलाम की बात ही मान कर देख लो, वह सभी गुरु जी के शिष्य हो गये। गुरु जी ने अपने पवित्र पावं धो कर चरणामृत पिलाया। तब सभी पदार्थ उन को भली प्रकार प्राप्त हो गये, तब सभी ने गुरु जी की अपार स्तुति की। गुरु जी ने उस को सत्य-दया अतिथि सत्कार साधू संत की सेवा, धर्मशाला का बनाना, सभ से प्रेम आदिक पवित्र उपदेश किया। पहिली प्रकार उस पठान को पत्थर के नीचे से अपार धन दिलाया। उस मुगल ने हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और कहा-हे महाराज! अब आप पर कोई भी प्रतिबन्ध नहीं है। हे महाराज! मैं आप को किस मुख से कहूं कि आप चले जायें, जाना और रहना यह तो आप की इच्छा पर है। गुरु जी ने कहा-हे भाई! यह माया सब तेरी है तू इस को संभाल ले। हम तो अब जायेंगे। तब गुरु जी ने उन पठानों को प्रसन्न करके फिर उसी रोड़ी के ऊपर आ बैठे। दूसरे दिन वहीं रुहेल फिर आया। उस ने फिर गुरु जी को जो बालक बने बैठे थे फिर ले गया और किसी और नगर में आप को बेच आया। जो ले गया उस की औरत गुरु जी को अत्यंत ही चाहने लगी। जो गुरु जी को खरीद कर ले गया था, उसने गुरु जी को कहा-हे लड़के! तू हमारे दुंबे चराने जाया कर। गुरु जी ने कहा-हे मालक! मुझ में एक ऐब है कि मैं जिस दुंबे को छड़ी लगा दूं वह दुंबा मर जाता है। इसी लिये मेरे मां बाप ने मुझे घर से निकाला हुआ है अगर तुम्हें विश्वास नहीं तो तुम मेरी परीक्षा लेकर देख लो। पठान ने कहा-अच्छा इस दुंबे को छड़ी लगाओ। जब गुरु जी ने उसे छड़ी लगाई तब वह दुंबा उसी क्षण मर गया। अब उस पठान ने कहा-लड़के! अब इस दुंबे को जीवित कर के दिखा। फिर मैं तुम को और कोई काम दे दूंगा। गुरु जी ने उस मरे हुए दुंबे को कहा-हे दुंबे; चर। बस वह दुंबा उठ

कर घास चरने लग पड़ा। फिर उस मुगल ने कहा-हे लड़के! आज से तू मेरे बाग की हिफाजत किया कर। तब गुरु जी ने कहा-हे मुगल! मेरे जाने से तुम्हारा बाग सूख जाएगा। परंतु मुगल न माना। वह गुरु जी को साथ लेकर बाग में गया। तब उसी क्षण सारा बाग सूख गया। तब मुगल ने कहा-हे लड़के तू बाग से बाहर आ जा। जब गुरु जी बाहर निकले तो उसी क्षण बाग पहिले की भांति सब्ज हो गया। परंतु गुरु जी की अपार माया ने पठान की बुद्धि नाश कर रखी थी, उस ने अभी तक भी गुरु जी को नहीं पहिचाना। फिर उस मुगल ने कहा-हे बालक! तू मेरे दाने पीसने का काम करो। गुरु जी ने कहा-मुझे तो स्वीकार है परंतु आटा कहां से प्राप्त करोगे क्योंकि जन्म से लेकर आज तक मेरा पेट नहीं भरा है, मेरा आहार सौ मन दैनिक है। उस पठान ने कहा-इस कोटा में सौ मन कणक है उसे तुम पीसो। फिर मैं देखूंगा कि आटा किधर चला जाता है। फिर दूसरे नौकरों से कहा-तुम इस लड़के को गंदम निकाल कर दे दो, अंततोगत्वा सभी कणक चक्की में डाली गई। गुरु जी ने हाथ भी नहीं लगाया, परंतु चक्की चलती रही और एक तोला भी आटा नहीं निकला, जब यह दृश्य मुगलानी ने देखा तो उसने शोर मचाना शुरु कर दिया। हे मालक! यह लड़का तुम कहां से ले आये हो, इस ने तो हमारा घर तबाह कर दिया है। पठानो का शोर सुन कर लोग इकट्ठे हो गये। इतने में वह पठान भी आ गया, जब उस ने यह कौतुक देखा तो हैरान होकर कहने लगा कि यह लड़का तो कोई औलिया अथवा पैगंबर है। जब वे सभी गुरु जी के पांव पर गिर कर कहने लगा-हे महाराज! हमें क्षमा कर दो और आज से तुम स्वतंत्र हो जिधर आप की इच्छा हो जा सकते हो। गुरु जी ने कहा-हे भाई जितने रुपये तुम्हारे खर्च हुए हैं, उनसे दुगणे जब

तुम्हें मिलेंगे तब हम जायेंगे। गुरु जी लक्ष्मी देते थे, परंतु मुगल नहीं लेता था। फिर गुरु जी ने अपनी रोटी में एक लाल निकाल कर दिया और कहा कि यदि तुम्हें इस लाल का मूल्य कम मिले तो यह लाल मेरे पास लौटा कर ले आना। लाल लेकर वह मुगल एक जौहरी के पास गया। उस जौहरी ने कहा-भाई इस की कीमत तो मेरे पास नहीं है। अपितु जितने रुपये तुम को दर्कार हो सो ले जा सकते हो। अब वह मुगल लाल लेकर गुरु जी के पास आकर कहने लगा, हे महाराज! यह लाल आप ही ले लो तब मुझे प्रसन्नता होगी। तब गुरु जी ने कहा-हे भाई! आप तो लोगों को बेच कर पेट पूजा करते थे जिस से तुम्हें नर्क भोगना पड़ना था परंतु अब तो उस परमात्मा की तुम पर कृपा हो गई तथा तुम को लाल देकर कुकर्म से बचा लिया है।

बस फिर क्या था। वह मुगल गुरु जी के चरणों में गिर गया तथा गुरु जी का शिष्य हो गया। देखा देखी बहुत से मुगल गुरु जी के शिष्य बन गये, और सभी वाहिगुरु नाम स्मरण करने लगे। गुरु जी ने उनको दिव्य उपदेश दिया तथा कहा कि किसी जीव को न पकड़ो और न ही बेचो। अतिथि की सेवा करो। दीनों पर दया करो परमात्मा को सर्वव्यापक जान कर पाप से बचो। धर्मशाला बनवाओ कीर्तन नित्य लंगर नित्य प्रति लगा रहना चाहिऐ। सत्य बोलो पर स्त्री को माता जानों पर धन को माटी मानो तथा अपने समान सब प्राणी जान कर सभी से प्रेम करो दशमांश दान देना मनुष्य का कर्तव्य है। इस प्रकार परमोत्म उपदेश देकर गुरु जी वहां से रवाना हुए। उन का कल्याण करके जगत के स्वामी गुरु जी फिर उसी रोड़ी पर जा कर अपना आसन बिछा कर बैठ गये।

साखी काबल की मसीत की

एक दिन गुरु जी महाराज हमें साथ लेकर काबल में जा पहुंचे और एक मसीत में जा बैठे। जब वहां का काजी आया तो उस ने गुरु जी को कहा-आप लोग हिन्दू नज़र आ रहे हो तथा यह मसीत एक प्रसिद्ध मुल्लां की है। गुरु जी ने कहा-हे भाई! हम तो इसी स्थान पर बैठेंगे। तब वह काजी गुरु जी को बहुत ही कहने लगा के तुम निकल जाओ। तब गुरु जी ने कहा-हे काजी! क्या तुम इस मसीत को रख लोगे। तब उस ने कहा-कि भला मसीत कहां जायेगी और इसे कौन ले जाएगा। तब गुरु जी ने कहा-हे काजी! अहंकार न करो। फिर उसी क्षण गुरु जी उस मसीत पर चढ़ बैठे और वह मसीत काबल के इर्द गिर्द चक्कर लगाने लगी। यह देख कर काबल निवासी हैरान हो गया। तब मसीत का स्वामी काजी भी आ गया। देख कर हैरान हो गया और कहने लगा-हे मित्रो! यह तो कोई पहुंचा हुआ साधू कामल फकीर है और करामात का धनी है, यह कह कर कुछ आदमी साथ लेकर और अपने हाथ बांध कर प्रार्थना करने लगा-हे खुदा के दोस्त! तुम को जिस ने जन्म दिया है, वह धन्य माता है। उसी की दुहाई दे कर प्रार्थना करता हूं कि इस मस्जिद को खड़ी कर दो। फिर गुरु जी ने सभ के सामने मसीत को खड़ी कर दिया। फिर तो सभी लोग गुरु जी के चरणों में जा गिरे। तब गुरु जी ने मुसलमानों को कहा कि तुम दायां पैर पूजो तथा हिन्दूओं को कहा-कि तुम बांया पैर पूजो! यह सुन कर गुरु जी ने अपने औगुन कहला कर अपने शिष्य किये उन सभ ने गुरु जी की आज्ञा का पालन किया तथा सभ को कहा—कि

तुम सत्य नाम का जप किया करो। फिर आप ने एक पवित्र शब्द उचारण किया-

॥ शब्द ॥

मुल्लां दिल सिउ दिलहि मिलाव॥ तब भेद साहिब का पावै॥ १ ॥ खालक खसम खैर अर खूबी इस दिल में तसबी तोसा। दिल दे अंदर चढ़ी शरीनी शकर खंड समोसा॥ २ ॥ दिल में तालब तीर्थ कीआ दिल में मुहंमद जाना। दिल में हसत हुसैन फातमा दिल ही में मौलाना॥ ३ ॥ दिल में मेहर मुहबत काबा। दिल में गोर सतानी॥ इक हलाल दो दिल भीतर खाइ पछान पछानी। दिल में ज्ञान कथा अर पूजा दिल महि रसूलु। नानक खोजी दिल में खोजे तां दरगह पवहि कबूलु॥ ४ ॥

अर्थ-वार्तक

उपरोक्त शब्द का गुरु जी ने खालसा उत्तर दे कर उन को परम कृतार्थ किया।

फिर गुरु जी ने अपनी सूरत शक्ल अजीब सी बना ली। जैसे कोई नीम वैरागी सा होता है। एक पैर में बड़ा सा जुती का पैर पहिना तथा एक पैर में खड़ावां और ऊपर एक भगवी चादर ओढ़ ली। एक चादर लक्क में बांध ली सिर पर टोपी पहिन ली, मस्तक पर तिल लगा लिया। तब अपने मन की मौज से इधर उधर घूमने लगे और गले में अघुए रंग का चोला पहिन लिया। गुरु जी को देखने वाले कुछ तो हिन्दू कहते और कुछ मुसलमान समझते थे। हिन्दू मिल कर प्रणाम करता तो वैसा हिन्दूओं जैसा उत्तर देते थे, तथा मुसलमान के सलामो लेकम कहने

पर मुसलमानी उत्तर देते थे, इस शक्ल में गुरु जी ईश्वर का उपदेश देते फिरते, जो कोई गुरु जी का दर्शन करता सो निहाल हो जाता था। गुरु जी का यह उपदेश था कि पहिरावा चाहे कैसा भी हो, परंतु मन में परमात्मा की अनन्य भक्ति चाहिये बाहर का दिखावा उस के दरबार में कोई ताकत नहीं रखता, यदि बाहर से साफ सुथरा हो और दिखाने के लिए माला चऊदिक लगाने से कोई मोक्ष को नहीं पाता। इस प्रकार कह कर गुरु जी आगे रवाना हुए।

साखी मूले क्षत्री की

गुरु जी फिरते फिरते एक दिन मूला नामक क्षत्री के घर जा पहुंचे, मूले की स्त्री ने गुरु जी को देखा तो भाग कर भीतर चली गई। जाकर पति को कहने लगी जी, आप का एक दौसत जिस का नाम नानक है वह बुरी हालत में आया है। आगे तो घोड़ी पालकी पर सवार होकर आता था, और पौशाक भी अच्छी होती थी परंतु आज तो ऐसे मालूम होता है जैसे किसी ने उसे लूट लिया है और ऐसा मालूम होता है कि तुम से कुछ मांगने के लिए ही आया है। अब तुम छुप जाओ।

इतने में गुरु जी ने मूले को आवाज़ दी। तब मूला भीतर कोठरी में जा छुपा। अब गुरु जी ने उस की स्त्री से पूछा कि बीबी जी मूला कहां है। तब उस ने कहा-मूला तो घर नहीं है। तब गुरु जी ने ज़ोर से कहा-हे मूला! हम तो तुम को मिलने के लिए आए हैं और तू आगे से छिप कर बैठ गया हैं। तब मूले के कर्तव्य पर एक सलोक कहा-

सलोक॥ नालि किराड़ा दोसती कूड़ै कूड़ी पाइ॥
मरणु न जापै मूलिआ आवै किते थाइ॥

यह सलोक उच्चारण करके गुरु जी पीछे लौट पड़े और आकर

बाहर बैठ गये।

उधर मूला जब कोठरी में छुपने गया तब उसे वहां जाते ही सर्प ने काट खाया। भाग कर बाहर आकर कहने लगा-हे भली लोग वह साधू किधर गया है? वह कहने लगी-वह तो बाहर चला गया। अब मूला बाहर की ओर चला परंतु उसे अब जहर का विष चढ़ने लगा, अब मूले को एक चारपाई पर डाल कर गुरु जी के पास ले जाया गया। अब यह बात प्रसिद्ध हो गई कि गुरु जी मिलने आए थे, परंतु मूला कोठरी में जा छुपा तथा वहां उसे सर्प ने काट लिया है जिस से उस की मौत हो गई है। फिर लोगों ने गुरु जी से फुर्याद की, हे महाराज! मूले से भूल हो गई है। आप कृपा करके प्राण दान दीजिये। आप तो दयालु तथा काल के भी काल हो। यमराज तो आप का एक साधारण सा अनुचर है। गुरु जी ने कहा-हे मित्रो! मूला तो मर चुका है, सर्प के डसे की मुक्ति नहीं होती परंतु इस की मुक्ति अवश्य होगी। अंत

समय इस ने हमारा दर्शन किया है। हम इस की सद गति जरूर करेंगे। अब तुम इसे शीघ्र घर ले जाओ। उस समय अंतिम स्वास थे। मूले को लोग घर ले आये। जहां आते ही उस के प्राण पंखेरू उड़ गये, परंतु गुरु जी के वर से उस की मुक्ति हो गई। उधर लोग श्री गुरु जी का यश गायन करने लगे फिर उस का अंतिम संस्कार किया गया। तथा गुरु जी ने उन सभ नर नारियों को श्री मुख से पवित्र उपदेश दिया और चल दिये।

एक दिन गुरु जी ने मुझे कहा-हे बाला! चलो तुम्हें कशमीर की सैर करा लायें। मैंने कहा-हे सर्वेश्वर! जैसे आप की इच्छा, तब गुरु जी ने कहा-कशमीर की धरती महात्मा कशयप की बनाई हुई है। जैसे शिव जी ने कांशी पुरी की रचना की है जैसे सर्व तीर्थों में कांशी पुरी

उत्तम तीर्थ है। उस प्रकार कशमीर में अमर नाथ का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। वहां शिव शंकर सदैव निवास करते है, यह कह कर गुरु जी ने कशमीर की यात्रा की तैयारी की।

साखी पंजे साहिब की

कशमीर की ओर जाते जाते श्री गुरु जी ने सिंध नदी से २० कोस की दूरी पर एक बड़ी भारी पहाड़ी के निकट जाकर जहां हसन अबदाल नगर है वहां कुछ बाहर की ओर अपना आसन लगा लिया। तब भाई मर्दाने को प्यास लगी। गुरु जी को कहने लगा, हे महाराज! पानी तो कहीं नज़र नहीं आता, परंतु मैं तो प्यास से व्याकुल हो रहा हूं। गुरु जी ने मर्दाने की ओर देख कर कहा-हे भाई मर्दाना! वह जो सामने ऊंची पहाड़ी है, उस पर एक मुसलमान फकीर जिस का नाम वली कंधारी है रहता है उस के पास पानी है और निकट कहीं पानी नहीं है, उस के निकट जा कर पानी की याचना कर। वह तुझे मुसलमान भाई जान कर पानी पिला देगा, मर्दाना कठिनता से वली कंधारी के निकट गया। उस ने अपने लिये एक पानी का कुंड भर रखा था, मर्दाने ने हाथ जोड़ कर पानी मांगा तब वली ने कहा-तू कहां से प्यास का मारा चला आ रहा हैं, इधर आने का पहिले कारन बता। यह भी बता कि तुम्हारे साथ कौन कौन हैं और तेरा नाम क्या है? तब मर्दाने ने कहा-हे वली जी, हमारे साथ श्री गुरु नानक देव जी महाराज हैं जिन को हिन्दु लोग सतगुरु मानते हैं और मुसलमान जिन को पीरों के पीर जानते हैं वह हमारे साथ हैं। वह कशमीर की ओर जाते जाते इसी पहाड़ी के निकट नीचे आकर बैठे हैं। मैं उन का मिरासी हूं मेरा नाम मर्दाना है। मैं गुरु जी के साथ रह कर शब्द गाया करता हूं। गुरु जी की उपमा

सुनकर वली जल कर कोयला हो गया। कहने लगा-हे मर्दाना! यदि तुम्हारा नानक इतना ही बड़ा है तो जहां बैठा है क्या वहां पानी नहीं मंगवा सकता? प्यासे को पानी देना पुण्य है परंतु मैं तुझे पानी देने को तैयार नहीं हूं। अपने गुरु को जा कर कहो वह तुझे स्वयं पानी मंगवा कर देगा। मर्दाना अति दुखी होकर वापस आया तथा गुरु जी को आद्योपति कथा सुनाई तथा कहा कि आप का यश सुन कर वली बहुत दुखी हुआ है और पानी नहीं दिया। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुर्क तो तुर्क को भाई मानता है। तुम निम्रता से पानी मांगो। फिर मर्दाना वली के पास जा कर कहने लगा, हे पीर जी! मैं आप का इस्लामी भाई हूं। आप कृप्या पानी पिलाओ। वली ने फिर क्रोध से कहा-हे मर्दाना! तुम गुरु की तारीफ तो बहुत करते हो तो क्या उस में एक प्यासे की प्यास बुझाने की भी ताकत नहीं। उसी से जल लो। भाई मर्दाना! फिर वापस आ गया और प्रार्थना करने लगा। हे महाराज! वह तो पानी नहीं देता तथा मेरे प्राण प्यास से निकले जा रहे हैं। तब गुरु जी ने कृपा करके अपने हाथ की लकड़ी उस पर्वत के ऊपर मारी उसी क्षण उस पहाड़ी में से शीतल निर्मल पानी बैहने लगा और उधर जो जल वली ने एकत्र किया हुआ था। वह सभी उसी पहाड़ में चला गया और कुंड सारे का सारा सूख गया। यह अवस्था देख कर वली कंधारी बहुत ही घबराया और कूपित होकर एक महान शिला अपने तप के बल से नीचे की ओर लुड़का दी। जिधर गुरु जी ने आसन जमा रखा था उधर ऊपर से शिला (पहाड़ का टुकड़ा) गिरा दी। वह शिला मार्ग के वृक्षों को तोड़ती तोड़ती नीचे की ओर आ रही थी। गुरु जी ने देखा तब अपना हाथ ऊंचा कर लिया। उस शिला में गुरु जी के हाथ की हथेली खुब गई तथा शिला उसी स्थान पर रुक गई। ऊपर से वली कंधारी ने सब कुछ देखा तथा शर्मिंदा होकर देखने लगा तथा गुरु जी की महत्ता

को मान गया। भागा भागा आया और गुरु जी के चरणों पर गिर कर प्रार्थना करने लगा। तब गुरु जी ने वली को कहा-हे मित्र! पहिले अहंकार त्यागो, तब तुम्हारा कल्याण होगा। इस प्रकार वली का तप्त हृदय शांत करके गुरु जी आगे की और रवाना हुए।

साखी कशमीर के पाली की

अब गुरु जी कशमीर की आलौकिक मनोहर भूमि में जा पहुंचे, एक पर्वत पर गुरु जी ने आसन लगाया। गुरु जी को एक ही स्थान पर बैठे बैठे बारह दिन व्यतीत हो गये। किसी ने जल तक भी नहीं पूछा, तेरहवें दिन एक अयाली पशु चारता चारता आ गया और कहने लगा, आप कौन हैं? तब गुरु जी ने कहा-तुमको हम क्या नज़र आ रहे हैं? उसने कहा-आप कोई भले पुरुष नहीं नज़र आते जो नगर से बाहर चोरों ओर डकैतों की भांति निवास कर रहे हो, यदि तुम साधु होते तो अवश्य किसी नगर में जाते। गुरु जी ने कहा-हे भाई! भले ही हम कोई हो आप अपने घर को जाओ, हम से उलझने का कोई भी लाभ नहीं। परमात्मा इधर ले आया तो हम इधर आ गये हैं, तब अयाली ने हंस कर लौटना चाहा, देखा तो सारा ही अयाल (इज्जड़) मरा पड़ा है। अब वह हैरान होकर कहने लगा, जा खुदा! यह अभी अच्छे भले थे, अभी अभी इन को क्या हो गया है अब उसे ज्ञान हुआ कहने लगा यह सभ उसी फकीर की करनी का फल है। अब मैं उस साधू के निकट जा कर अपनी भूल की क्षमा करवाऊंगा नहीं तो मेरा बुरा हाल होगा क्योंकि जिन के पशु हैं वह मुझे क्या कहेगा और मेरी औलाद का पालन पोषण किस प्रकार होगा। यह विचार कर कशमीरी ने आ कर गुरु जी के चरण पकड़ लिए और क्षमा की प्रार्थना करने

लगा। गुरु जी ने कहा-हे भाई! अब क्या बात है? तब उस ने कहा-हे दयालु! मेरा गुजारा दुंबे चरा चरा कर ही होता है मेरे दुंबे अभी अच्छे भले थे। जब मैंने आप का दीदार किया, जा कर देखा तो सभी मरे पड़े थे। अब मैं घर जाऊं तो दुंबों का मालक मेरा बहुत ही बुरा हाल करेगा। अब मैं निराश होकर आप की शर्ण आया हूं। आप उस परमात्मा के प्यारे हैं तथा दयावान हैं, अब आप ही कृपा करो। उस का गिड़गिड़ाना देख कर दयालु गुरु जी के मन में दया आ गई। कहने लगा-हे भाई! तू प्रत्येक दुंबे के कान में धन्य श्री वाहिगुरु! यह शब्द कहो। जब अयाली ने इसी प्रकार गुरु जी की आज्ञा पालन की तो एक एक दुंबा उठ कर चरने लग गया। इसी प्रकार वह सावधान हो गये, अयाली हैरान हो कर गुरु जी के चरण पकड़ कर कहने लगा-हे अंतर्यामी आप मेरे पर मेहर करो। फिर वह अयाली सारी रात गुरु जी की सेवा में ही रहा।

उधर दूसरा दिन निकल आया, इज्जड़ के मालक ने सोचा कि कल का इज्जड़ गया हुआ अभी तक नहीं लौटा चल कर पता करूं, उस ने वहां आकर देखा तो दुंबे चर रहे हैं और अयाली गुरु जी की सेवा में लगा हुआ है। उस ने भी गुरु जी को प्रणाम किया, गुरु जी को रब्बी मस्ती में मस्त देखा तथा अयाली भी मस्त देखा। उस ने गुरु जी से कहा-हे महाराज! यह अयाली और दुंबे सभी रात्रि के समय घर आ जाया करते थे परंतु इस रात्रि को नहीं आए, मैं इस की भाल करते इधर आ गया हूं इस बहाने मुझे आप के पवित्र दर्शन हो गए हैं। तब अयाली ने कहा-हे मालक! यह जो संत जी हैं यह तो साक्षात ईश्वर का रूप हैं, परमात्मा इन के घर में है। शायद आप को कोई संदेह हो, यदि हो तो मेरी बात सत्य मानो और यकीन करो। उस ने कहा कि

हे अयाली, तू जो इस संत की स्तुति करते हो, सो तुम को यह ज्ञान किस प्रकार है? तब अयाली ने सारी बात आद्योपांत सुनाई। जिस प्रकार वह गुरु जी के निकट आया और कहा कि तुम कोई चोर या डाकू हो, फिर दुंबों का मरना फिर जीवत होना सभी बात विस्तार से कही। तब गुरु जी ने कहा कि अब तुम अपने दुंबे ले जाओ, तब वे अपने पशु ले गया।

अब सारे नगर में यह चर्चा होने लगी कि यह जो साधू है वह परमेश्वर का ही रूप है तथा यहां के लोगों ने उन को पानी तक भी नहीं पूछा। तब सभी लोग गुरु जी के चरणों में आ पड़े और क्षमा प्रार्थना करने लगे-हे महाराज! हम ने आप की सेवा कुछ भी नहीं की। हम बहुत ही पापी और अधम हैं। आप दयालु हो हम आप के बच्चे हैं। माता पिता और गुरु हमेशां संतान पर कृपा करते हैं सो आप कृपा करो। तब दयालु गुरु जी ने उन की बुराई क्षमा कर दी और उनको उत्तम उपदेश दिया तथा नाम जपने का पवित्र उपदेश दिया और उन को नेक रास्ते पर डाला। वह सभी गुरु जी के शिष्य बन गये।

एक साधू कशमीर में निवास करता था। उस ने गुरु नानक देव जी महाराज की स्तुति सुनी। उस ने गुरु जी के दर्शन की लालसा की। उस पंडित के गले में शालग्राम की प्रतिभा थी तथा पूजा का सामान सदैव उस के बगल में रहता था। वह कटर सनातन धर्मी हिन्दू साधू था, उस ने श्री गुरु नानक देव जी महाराज को राम राम कहा और आसन पर बैठ गया। गुरु जी ने कहा—हे पंडित जी! आप ने कोई गुरु भी धारण किया है अथवा नहीं। उस ने कहा हे संत जी! आप जिस को कहो मैं उसे गुरु धारण करने को तैयार हूं जिस से मन एकाग्र हो जाय। तब गुरु जी ने कहा-हे पंडित जी! मन तो गुरु धारण किये

बगैर कभी एकागर नहीं होता तथा आप ने जो गुरु के लिये पूछा है सो आप उद्यान में चले जाओ वहां साधु मिलेंगे उन से भली प्रकार गुरु का पता मिल जायगा। अब वह पंडित बन में गया। वहां उसे चार साधू बैठे हुए मिले, नमस्कार करके एक ओर बैठ गया। उन में एक ने पूछा-हे पंडित जी! आप अपने आने का कारण बताओ, तब उस ने कहा-मैं गुरु की भाल कर रहा हूं। यदि आप कुछ जानते हैं तो कृप्या बताओ कि मैं किस को गुरु धारण करूं? उन्हों ने संकेत करके कहा, हे ब्राह्मण देवता! वह जो ऊंचा मकान है उसमें तुम्हारा गुरु है। आप उसके पास जाओ। ब्राह्मण वहां गया तो जब मकान के भीतर देखा तो एक परम सुंदरी औरत रक्त वर्ण के सुंदर वस्त्र पहिने बैठी नज़र आई वह अपने ही ध्यान में खेल रही थी। उन के पावों में जूता था उस ने जूती फैंकी। वह जूता इस पंडित के सिर पर लगा। वहां से रोता चिल्लाता वह पंडित फिर उन्हीं संतों के पास आया। उन्हों ने पूछा कि क्या आप को गुरु मिला है। तब उस ने तमाम वारता सुना दी। उन्होंने कहा-हे मित्र जिस की तुम पूजा कर रहे हो वह तो माया है। इतनी बात सुन कर वह पंडित फिर लौट कर गुरु जी के पास आया और गुरु नानक देव जी के चरण पकड़ लिए और जो कुछ सामान वह उठाई फिरता था वह सभी फैंक दिया, सभी पुस्तकें लुटा दीं और श्री गुरु नानक देव जी का शिष्य बन गया। तब गुरु जी ने उस नमित एक सलोक उच्चारण किया—

॥ सलोक श्री गुरु जी ॥

गुरु मिलिऐ मन रहसीऐ जिउ वुठे धरन सीगार॥ सभ दिसे हरिआवली सर भरे सुभर ताल॥ अंदर रचे रंग जिउ मजीठै लाल

गुलाल॥ कमल बिगसै सच मन गुर कै सब्द निहाल॥ मनमुख दूजी तरफ है वेखहु नदरि निहाल॥ फाही फाथे मृग जिउ सिर दिसै जमकाल॥ खुधिआ त्रिशना निंदा बुरी काम क्रोध विकराल॥ एनी अखी नदरि न आवही जिचर सबद न करे पिआर॥ तुध भावै संतोखआ चूकै आज जंजाल॥ मूल रहै गुर सेविआ गुर पउड़ी बोहिथ॥ नानक लगी तत लै तूं सचा मन सच॥ १ ॥

॥ वार्तक ॥

जब यह शब्द गुरु जी ने उच्चारण किया तब और कशमीरी पंडित मिल कर गुरु जी के निकट आ बैठे और कहने लगे-हे महाराज! हम सभी वेद पाठ करते हैं और पुराणों को श्रवण करते हैं परंतु मन से अहंकार नहीं जाता, आप ऐसी कृपा करो जिस से हमारा अहंकार दूर हो जाए। तब गुरु जी ने उन की प्रार्थना सुन कर पंडितों के नमित एक शब्द उच्चारण किया।

॥ सिरीरागु महला १ ॥

लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु॥
पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु॥
रस कस आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार॥ १ ॥

॥ परमार्थ ॥

श्री गुरु नानक देव जी फुरमाते हैं—हे पंडित जी! लोभ इस शरीर में कुत्ते की भांति है। झूठ चंडाल है और ठगी कर्मी मुर्दे के समान है तथा परनिंदा चूहड़ी के सदृश्य है, मल अग्नि के तुल्य है, रस कस आदि बुरे कर्म है। बताओ परमात्मा का नाम भीतर कैसे प्रवेश कर सकता

है जब तक सतंसग न हो तब तक मन की शुद्धि नहीं हो सकती उत्तम कर्म करने वाला उत्तम होता है, तथा नीच कर्म करने वाला नीच कहलाता है। हे पंडित जी! नाम स्मरण करने से तथा नाम जपने एवम मनन करने से शरीर में शांति का वास होता है और वही मुक्ति को प्राप्त होता है, वह सुन कर यह पंडित जी श्री गुरु जी के चरणों पर पड़ गये और गुरु जी के शिष्य हो गए। गुरु जी ने फुरमाया हे, मित्र! विद्या का अभिमान नहीं करना। संतों की सेवा अतिथि सन्मान सदैव करना उत्तम है नाम जपना दान करना मिथ्या भाषण नहीं करना। यह परम धर्म कहा है, यह कह कर गुरु जी वहां से चले।

साखी अजिते रंधावे की

एक दिन श्री गुरु नानक देव जी नगर करतार पुर एकांत में बैठे थे। उस समय आप ने एक शब्द कहा-

सिरीरागु महला १ ॥
कोटि कोटि मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥
चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ १ ॥

॥ वार्तक ॥

यह शब्द जब गुरु जी ने वैराग्यपूर्ण कहा—तब इसे अजिते रंधावे ने भी सुना। सुन कर भयभीत हो गया। गुरु जी को उस ने पूर्ण वैराग्य में देखा। अत्यंत उदासी में देख कर वह हाथ जोड़ कर बैठ गया। गुरु जी को वैराग्य में देख कर बहुत ही उदास हो गया। जब दो घड़ी इसी प्रकार व्यतीत हुई तो उस ने गुरु जी को दया में देखा। गुरु जी ने कहा-हे

बेटा! तुम भयभीत क्यों हो रहे हो? अजिते ने कहा-हे महाराज! आप का पवित्र शब्द सुन कर मेरे मन में अनेकों प्रकार की बातें आई हैं। तब गुरु जी ने कहा—हे बेटा! जो कुछ तेरे मन में है सो तू हम से कहो, हमारी ओर से उत्तर पूर्ण दिया जायेगा। तब उस ने कहा—हे गुरु देव! यदि आप दयालु हुए हैं तो कृपया मुझे ऊपर के शब्द का भाव समझाओ। तब गुरु जी ने कहा-हे अजिते! तू धन्य हैं जिसने यह प्रशन किया है। शिष्य और पुत्र तेरे जैसे ही होने चाहिये। जिस के द्वारा सिखी का उद्धार हो। अब तू इस पद का विचार हम से ध्यानपूर्वक सुन। यदि कोई कहे कि मैं उस बेशुमार की कीमत पा लूं तो कभी भी नहीं पाई जाती, अनेकों लोग यत्न करते हैं। यदि कोई कहे कि मैंने पवन का आहार किया है। तो यह नहीं होता। जब तक चंद्र सूर्य एक गुफा में न हो तब तक स्वप्न में भी सोना नहीं प्राप्त होता और सत्य पुरुष का जी निवास है सो उस के निज स्थान में है। यदि उसे देख ले तो बस आवा गवन से वह प्राणी रहित हो जाता है। निज स्थान का भाव यह है कि घट में ही उस परम पुरुष का निवास है जो इस उत्तम रहस्य को जान जाता है। परमात्मा सर्व व्यापक है परंतु किसी ने देखा नहीं है कि वह परमात्मा किस रंग रूप में है। सत्य बात तो यह है कि उस अलेख का कोई भी पार नहीं पा सकता, चाहे कोई कितना भी चतुर हो परंतु उस अगाध परमात्मा की गति को कोई भी नहीं लिख सकता। तमाम पृथ्वी कागज़ बन जाए और जितने वृक्ष हैं वे सभी कलम का रूप धारण कर लें तथा जितने समुंद्र हैं वे सभी स्याही अर्थात दवात बन जायें और शारदा जैसे वक्ता कहने वाले हों और लेखक गणेश जैसे हों, और जितनी पृथ्वी की आयु है तब तक लिखते चले जायें, तो भी उस परमात्मा की महिमा का पार नहीं पा सकते।

अब अजिते ने कहा—हे महाराज! जो वेदादिक शब्द ग्रंथो के कहे

अनुसार आचरण करके कहते हैं कि हम ने उसे प्राप्त कर लिया है। इस का क्या तात्पर्य है? यह संसार अनेकों ही उलझनों में पच पच कर मर रहा है। मुझे तो यथार्थ कहने की कृपा करें, तब गुरु जी ने एक सलोक उच्चारण किया-

॥ सलोक महला १ ॥

न भीजै रागी नादी बेदि ॥ न भीजै सुरती गिआनी जोगि ॥
न भीजै सोगी कीतै रोजि ॥ न भीजै रूपी मांली रंगि ॥ न
भीजै तीरथि भविऐ नंगि ॥ न भीजै दांती कीतै पुंनि ॥
न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ॥ न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि
सूर ॥ न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ लेखा लिखीऐ मन
कै भाइ ॥ नानक भीजै साचै नाइ ॥

॥ वार्तक ॥

हे अजिता! वह परमात्मा अगम्य अपार है, वह वेपरवाह वेदादिक के बंधनों से मुक्त है। यदि कोई कहे कि मैं अपार बली योद्धा तथा पंडित हूं। मैं उसी बल से उस तक पहुंच सकता हूं। यह बिलकुल असत्य है। वह तो केवल अनुभव का विषय है। संसार की किसी चतुराई से वह ईश्वर जाना नहीं जाता। वेद शास्त्र योगाभ्यास आदिक सभी मनुष्य कृत श्रेणियें हैं परंतु वह अपार परमात्मा इन से दूर है। उपरोक्त सभी कुछ तीन गुणों का जाल है। हे भाई! जती रह कर सत्य भाषण करना उत्तम है। चिंता और निंदा इन से दूर रह कर सभी कुछ उस की समझ कर निश्चित रहना उत्तम है।

॥ सलोक महला १ ॥

जूटि न रांगी जूटि न वेंदी ॥ जूटि न चंद सूरज की भेदी ॥

जूठि न अंनी जूठि न नाई ॥ जूठि न मीहु बरिहऐ सभ थाई ॥
जूठि न धरती जूठि न पाणी ॥ जूठि न पउणै माहि समाणी ॥
नानक निगुरिआ गुणु नाही कोइ ॥ मुहि फेरिऐ मुहु जूठा होइ ॥ १ ॥

॥ वार्तक ॥

अर्थ—हे अजिते! राग वेदी चन्द सूर्यादिक स्थान सभी उसी परमात्मा के हैं अतः मिथ्या नहीं है। जूटा तो वही है जिसने गुरु शब्दों से अपना मुख फेर लिया है तथा जो गुरु से हीन प्राणी है उन की क्या गति होगी? गुरु जी से विछुड़े हुए प्राणी फिर कभी भी गुरु जी से नहीं मिल सकते। यह सुन कर अजिते ने अचंभे में आ कर पूछा-हे गुरुदेव! आप का चिन्ह रूप रंग यही है अथवा और भी कोई है? तब गुरु जी ने कहा-हे अजिता! तुम ने अच्छी बात पूछी है यह किसी समय दूसरे प्राणियों के काम आने वाला प्रश्न है। जैसे कोई नट अपना वेष बदलता है और पहिचाना नहीं जाता। उसी प्रकार गुरु भी वेष बदलता है तथा जाना नहीं जाता कि यह गुरु है अथवा कोई और है?

॥ सलोक ॥ धुंधूकार अजब है एको एक हरिराय ॥ आया आप उकास कर नानक दरस दिखाय ॥ ४ ॥

॥ वार्तक ॥

हे अजिते! प्रलय में एक निरंकार ही रहेगा। उस समय अकेला था दूसरा कोई नहीं था। फिर वह अपनी इच्छा से अनेक रूप हो गया। उस के अनेकों कर्म है, अनेकों ही दृश्यों में सुभायमान हो रहा है तथा गुरु के रूप में भी वही सर्व शक्तिमान व्यापक है। जिस को उस का दर्शन हो जाता है उन को ही पूर्ण विश्वास होता है।

सलोक ॥ हे बवेक एह नाहीं दीसै कपटी भगत ॥ राग पाइ रागणी गावै किसे न आवे गुरू की मत ॥ सरापहु अंतर लै बोरे जीवन दी यह गति ॥ कहु नानक प्रभु अगम अगोचर कौण जुगतां दी होय भगत ॥ ६ ॥

परमार्थ ॥

हे भाई अजिते! कलियुग में धर्म क्षीण होगा तथा कपटी भगत होंगे। संसार में कहलाने का लालच हृदय में होगा, राग रागनी परमार्थ के लिये न होकर केवल उदर पूर्ती के लिये स्वरें लगायेंगे। खान पान के मेले लगेंगे, गुरु का अर्थ कोई कोई जानेगा। संसार भोगों में लग जायेगा, शब्द की भाल कोई कोई करेगा। जो भी संसार में बुराई है, उसकी ओर संसार लग जायेगा तथा भलाई से लोगों को घृणा हो जाएगी।

हे अजिता! घर घर में आसन और पलंग विछा कर गुरु बन कर बैठ जाऐंगे तथा प्रत्येक को अपनी पूजा करवाने का चसका पड़ जाएगा, नकली गुरु संसार को ठगना प्रारंभ कर देंगे। फिर समय पाकर वह प्रभु स्वयं पाप का संहार करेंगे। जहां जहां पाप होंगे, वहां वहां उन का संहार होगा, धर्म उदय होगा।

हे अजिता! कलयुग के लंपट पुरुष सुख के लिये मन्नते मानेंगे। मिथ्या स्थानों की पूजा करेंगे। पीरों की कबरों पर जा कर नाक रगड़ेंगे और चौरासी का भ्रमण करेंगे। कलियुग के गुरु गुसाईं भी वैसे ही होंगे। उन का अपना उधार तो कठिन होगा तो वह दूसरों का उधार क्या करेंगे परंतु यह निर्वाद सत्य है कि गुरु के बिना किसी का भी उद्धार नहीं होगा संसार की गति खेल तमाशों तथा गीतों की ओर देख कर मैं एक सुझाव रखता हूं कि तमाम किस्म के हास्य वा विलासादिक भी गुरु शर्ण प्राप्ति के द्वारा भी हो सकते हैं। जैसे अच्छे अच्छे भोजन गुरु

जी के अर्पण करके फिर प्रसाद स्वरूप उन में से जो कुछ प्राप्त हो उसे ग्रहण करना तथा गुरु जी के गीत गाना तथा गुरु सेवा संतुष्ट हो कर विचारना आदिक सांसारिक भोगों में छुपा हुआ नर्क है और गुरु सेवा से परमात्मा की प्राप्ति तथा र्स्वगादिक लोकों की प्राप्ति निश्चित है। इस लिये सांसारिक सुखों का मार्ग त्याग कर सतगुरु का बतलाया हुआ मार्ग ग्रहण करना ही कल्याण मार्ग है।

॥ सलोक ॥

फंदी दर वाजार देवाने॥ पसरे केसू फूल फुलाने॥
करे मोह त्रिय लावै अंग॥ नानक चौरासी का पावै संग॥

भावार्थ—हे अजिते! वे किस प्रकार के पुरुष होंगे जो कोई गुरु के जानने वाला साधू होगा उस का संग करेंगे और जो वाज़ारी कार्य करेंगे। जैसे वाज़ार में जो कूजड़े और भठयारे लड़ते हैं। वैसे ही वे लोग भी लड़ेंगे और पागलों की भांति बातें करेंगे और बिखरी पंखड़ियों वाले पुरुष की भांति आपस में मिल बैठना त्याग देंगे। वे अपनी अथवा पर स्त्री से मोह करेंगे तथा गुरु से वेमुख हो जायेंगे। वे चौरासी लाख योनियों में भटकेंगे। तब अजिते ने कहा—हे गुरुदेव! जो आप के सिख होंगे, आप के ही गुणानुवाद गायेंगे, उन का आप लक्षण कहो। फिर जगत के स्वामी गुरु जी फुरमाने लगे-

सलोक ॥

लुकमे जग्ग गिरासिआ लुकमे की महिमा खूब॥
लुकमे विचहु गिरासिआ कली काल फाया सिंध करतूब॥
गदहा कड़के निकले बहि बहि हीगहि बान॥
फिट अबेहा खाया सिर भार शैतान॥

परमार्थ ॥

हे भाई अजित्ते! इस कलियुग में जो सच्चे गुरु के सिख होंगे, उन की गिणती साधारण ही होगी। एक ऐसा समय भी आयेगा, कि जहां पर टुकड़ा होगा वही के ही रहेंगे और उसी के ही गीत गाऐंगे अर्थात धनाड गुरु धारण करेंगे मन में यह भाव होगा कि धनी गुरु धारण करने से हमारा हलवाह भांड़ा चलता रहेगा। इस प्रकार की सिखी कलियुग में नज़र आयेगी, जिस का खाऐंगे उसी के गीत गायेंगे। जैसे जंगल का शेर तमाम उमर भर खान पान में लगा रहता है उस के मन में कभी भी परलोक का भय उत्पन्न नहीं होता। परंतु जब वह किसी शिकारी के जाल में फंस जाता है तब उसे खान पान तथा जंगल की मौज बहार सभी भूल जाती है उसे अपने प्राणों की पड़ी होती है, इसी प्रकार विषय भोगों में पड़े हुए प्राणी को जब यमदूत पकड़ते हैं तब इसे सभी सुख स्वप्न भूल जाते हैं और फिर घोर पश्चाताप होता है। उस समय यह प्राणी अपने को कोसता है, और कहता है कि मेरे खाये पिये को धिक्कार है। जो मैं न किसी पूज्य गुरु की शर्ण ली, और न ही अपना उद्धार किया। परंतु 'अब पछताये क्या होत जब चिड़िआं चुग गई खेत।'

फिर अजिते ने कहा-हे महाराज! जो किसी की सेवा करता है क्या उस की सेवा निष्फल जाती है, अथवा उस का कोई फल भी होता है, कृप्या यह आप जरूर ही बतायें, इस पर गुरु जी ने फुरमाया-

सलोक ॥ सेवक मोहनि विचोले ॥ काग जोन विष्टा रोले ॥ करै सेवा सतिगुर ना भावै ॥ सो सेवक सेवा खोइ जावै ॥ लिखिआ लेख नाही धरि रंग ॥ नानक तिस ते चुपे चंग ॥ ३३ ॥

॥ परमार्थ ॥

हे मित्रो! जो पुरुष सेवा करके अहंकार करता है कि अमुक सेवा मैंने की है तथा मैं आज बड़ा हो गया हूं। ऐसा पुरुष कौवे की योनी में पड़ता है और विष्टा खाने को मिलता है। जो गुरु को कुछ देकर मन में यह कहता है कि मैंने गुरु को यह वस्तु दी है और गुरु तो मेरे आश्रित ही है यह सोचता है तथा गुरु की आज्ञा मानता नहीं है। ऐसा शिष्य गुरु के मन को अच्छा नहीं लगता, तथा उसकी हुई सेवा निष्फल हो जाती है। ऐसे आदमी देखा देखी सेवा करते हैं, उनको कुछ भी फल नहीं होता। इस सेवा से तो सेवा न करनी ही अच्छी है, अगर शुद्ध हृदय से कर्तव्य जान कर प्रेम भाव से सेवा करता है तो उसे अवश्य ही उत्तम फल की प्राप्ति होती है।

अजिते ने कहा-हे महाराज! कलियुग के भीतर जो पाखंडी साधु होंगे, और उन की पूजा किस प्रकार होती है। आप कृपा करके यह बताओ, तब गुरु जी ने फुरमाया-

॥ सलोक ॥

साध कहाइ मुख बुरा जो बोले॥ जीआं घात कर अनर्थ तोलै॥
लहै सजाइ दरगहि नाहि ढोई॥ कहै नानक तिन मिलिआ मुकत न होई॥

हे भाई अजिते! कलियुग में जिन की अधिक पूजा होने लगेगी वह बुरे चाल चलन करके खोटी बाणी बोलने लगेंगे। वह तो साधु समझ कर पूजे जायेंगे परंतु वे स्वयं बुरे शब्द बोलेंगे। उन के मन दया से हीन होंगे। ऐसे सभी अंत को नर्कों में निवास करेंगे तथा उन को पूजने वाले चौरासी में भटकेंगे। फिर अजिते ने कहा—हे महाराज! जो सच्चे संत हैं, उनकी क्या पहिचान होती है कृपा करके बताओ। तब गुरु जी ने कहा-

सलोकु ॥

साध की महिमा बेद न जानहि ॥ ओह गरभ जान नहीं आए ॥ एह बुरा न बोलन कुबचन न बोलहि गुरमुख शब्द समाए ॥ सदा हजूर रहें रंग राते माते सदा खुमारी ॥ राग निरंतर मिलहि निवासी सहिज लगी धुनकारी ॥ गुफते बाणी की बिरला बूझै कछु नं जाइ कहिणा ॥ कहु नानक तिन होइ परापति जिस पुरब लिखे का लहिणा ॥

परमार्थ– हे भाई अजिते! साधु की महिमा वेद भी नहीं जानता। वेद में तो तीन गुणों की ही चर्चा भरी पड़ी है। वह चतुर्थ गुण को नहीं पहिचानता, चतुर्थ जो गुण है वह तो साक्षात साधु ही है। उन की वेद को भी कोई खबर नहीं है, महात्माओं को तो वह अकाल पुरुष ही जानता है, अथवा संतों की महिमा को संत जन ही जानते हैं ऐसे संतों को प्रभु नाम की खुमारी रात दिन चढ़ी रहती है। संसार की सुधि उनके निकट नहीं आती, और संसार के लोक जिन को निंदा आदिक प्रिय होते हैं वह लोग उन सच्चे साधुओं की निंदा करते हैं। फिर अजिते ने पूछा-हे भगवान! उत्तम दानादिक जो कर्म हैं वह किस प्रकार करने योग्य हैं। गुरु जी ने कहा-हे प्यारे! मैं तुम को सूत्र रूप से बताता हूं। वे इस प्रकार हैं, कि जो जप दान पुन्य आदिक सकान कर्म हैं उन से स्वर्ग प्राप्ति तो है परंतु अगर वे कर्म निष्काम किये जायें तो बहुत ही अच्छे हैं। निष्काम कर्म करने वाला प्रभु को प्यारा है तथा जो कामना को छोड़ कर दान है वह तो उस परमात्मा को अति ही प्यारा है। ऐसा दानी भी गर्भ योनि में फिर कभी नहीं आता और मुक्त हो जाता है। इसी का नाम परमार्थ है।

हे प्यारे अजिते रंधावे! ध्यान से सुन। एक समय ऐसा भी आयेगा, जब बाबा जी का दर्शन भली किस्मत से ही होगा। बाबा अपने वैराग्य में होगा और कोई सिख पुत्र निकट नहीं आयेगा। बाणी जो बाबा जी

की है वह अगम्य और अगाध है। परंतु यह पांच महिलों में ही होगी। जब गुरु पांचवां चोला धारण करेगा, तब उस पर मोहर लगेगी। उसके पीछे गुरु भाणे का पति होगा। उस समय गुरु किसी और ही लीला में दृष्टि गोचर होगा। फिर जब गुरु नवम चोला धारण करेगा और छठी पातशाही बाबर की होगी। उस समय हे अजिते! एक बड़ा भारी कौतुक होगा।

सलोक॥

मलेच्छ जामा बहुत होई कै करे हिन्दुआं पर जोर। एक वरन सभ सृष्टि होइ वरतै होवै धुन्धू घोर। हिन्दू धर्म के कारण करोंगा भारी सांग॥ नावां जामा पलट के दसवां पहिरों पांग। जैकार करे सब जगत में ओही नानक शाह॥ सन्त जनों के कारने दुष्टि मारे धाई॥ ३९॥

परमार्थ॥

हे अजिते! एक समय ऐसा आने वाला है, जब मलेच्छ लोग हिन्दुओं पर घोर अत्याचार करेंगे तथा मलेछ पातशाह कहेगा कि मेरे सम्पूर्ण राज्य में सभी एक वर्ण हो जायें। हिन्दु पीर मन्दिर आदिक सभी नाश करने पर कमर को बांध लेंगे। तब सभी हिन्दु धर्म स्थान बन्द हो जायेंगे। उस समय धर्मात्मा हिन्दु अत्यन्त दुखी हो जायेंगे और सन्तों को अत्यन्त कष्ट होगा। उस समय गुरुदेव सन्तों की रक्षा तथा गौ ब्राह्मणों के दुख दूर करने का भार अपने ऊपर लेगा। उस समय गुरु अपनी देह अर्पण कर देगा तथा धर्म की लज्ञा रखेगा। परन्तु हे अजिता! संसार के कृतघ्न लोग फिर भी गुरु की निंदा करेंगे कहेंगे कि गुरु के पास कोई सिद्धि होती तो प्रकट करता और जो ज्ञानी गुरसिख होंगे वह तो गुरु की शोभा करेंगे तथा कहेंगे कि गुरु जी ने परोपकार के लिये अपना आप

बलिदान किया है तथा सदैव कृतज्ञ रहेंगे। यदि उस समय गुरु जी धर्म की रक्षा न करेंगे तो सभी हिन्दु मलेच्छ हो जायेंगे। फिर वही गुरु दशम अवतार धारण कर के अन्य नीति को हस्त गत करेंगे तथा कोई धर्म विरोधी होगा, उस का खात्मा करेंगे तथा नवीन धर्म की नींव रखी जाएगी।

॥ सलोक ॥

बाबा पहिले मैहल से दसवां प्रगटी आइ॥
जिस नो बखशे नानका तिस को देइ बुझाइ॥ ४०॥

हे अजित! इस पहिले रूप से जो दशम रूप होगा वह निराला ही होगा और जो मध्य में चोले होंगे। उन के द्वारा शब्दों में प्रचार किया जायगा तथा दशम चोले में गुरु अपने को प्रगट करेगा तथा नवीन मार्ग जो हिन्दू तथा मुसलमानों से न्यारा ही होगा, प्रगट करेगा। उसी मार्ग पर चलने वाले नर नारी उत्तम गति को प्राप्त करेंगे! परंतु उस परम धर्म की जो मर्यादा होगी वह कठिन होगी। अनेक नर नारी उस पर चलना कठिन मानेंगे, मन में श्रद्धा परंतु कठिनता उन लोगों को रुकावट पैदा करेगी। फिर भी संसार की आत्मा उसी पवित्र धर्म की ओर अवश्य ही अग्रसर होगी, उस समय दशम अवतार के पीछे तुरक लोग पड़ जायेंगे, परंतु धर्मावतार दशम गुरु उन के हाथ नहीं लगेगा तथा संसार का कल्याण करेगा।

उस समय अजिते ने कहा—हे महाराज! बाबर की बादशाही कैसे प्राप्त हो गई, तब श्री गुरु जी ने एक सलोक कहा-

सलोक ॥

बाबर धाणा काबलों आया हिन्दोस्तान॥ पहिले मारया सैदपुर होई बहुत कतलाम॥ रहिदे बंदी कीती उस सौंपे

फेर शेतान॥ अगों दे जे चेतीऐ तां क्यों होईऐ परेशान॥
गुरु देख न सकिआ वंद को बहुती मिले सजाइ॥ बाबर
को फुरमाया सभ बंदी देइ छुडाइ। बाबर चरनी ढह पिआ
मुझ को करो दुआइ॥ पातशाही चिर ताईं करहुं फेर न काहें
जाइ॥ बाबर की बेनती सुनी सतिगुर भये दयाल॥ पातशाही
चिर तीकर दितिआ नानक नदरि निहाल॥ ४२॥

॥ सलोक का अर्थ॥

हे अजिते! पहले बाबर ने काबल से आ कर हिन्दोस्तान को जीता, उस समय हम सैद पुर में थे। सैद पुर के लोग अत्यंत निर्दयी थे तथा किसी पीर फकीर को नहीं मानते थे। गुरु की आज्ञा से वे मारे गए और अनेक बंदी किये गए, उन बंदियों को देख कर गुरु को कुछ दया का संचार हुआ। तब गुरु ने शब्दों द्वारा बाबर को बुलाया, और शब्दों द्वारा ही गुरु ने बाबर को भयभीत किया तब बाबर ने कहा—हे महाराज! आप मुझ पर कृपा करो। तब गुरु ने कहा—हे बाबर! यह जितने भी बंदी हैं इन को छोड़ दें। बाबर ने कहा—हे कृपालु! मैं इन को छोड़ देता हूं परंतु मैं चाहता हूं कि मेरा राज्य चिरकालीन तक रहे। गुरु जी ने तथास्तु कहा और फुरमाया। हे बाबर! तेरा राज्य बहुत देर तक रहेगा। फिर जब गुरु की इच्छा होगी तब और को राज दिया जाएगा और हे बाबर! तेरी संतान सिखी भी धारण करेगी। परंतु कुछ कुछ विरोधी भी रहेंगे। हे अजिते! जब गुरु दशम अवतार धारेगा, तब संसार में शोर बहुत होगा तथा गुरु की ओर से दुष्टों को दंड का विधान होगा, जब नीच लोग भयभीत हो जायेंगे। फिर गुरु संसार में से अपने शिष्य चुन लेगा। जैसे रेत में से स्वर्ण चुना जाता है उसी प्रकार अपने असली सिख गुरु चुन लेगा तथा नियम इतने कठोर होंगे जिस की पालना साधारण पुरुष कर ही नहीं सकेंगे। जब संसारी उन कठिन नियमों

को पाल कर एकत्र होकर अरदास करेंगे, तब गुरु को बहुत ही प्रसन्नता होगी।

हे अजिते! गुरु जी का अवतार संसार से पार करने के लिए एक जहाज़ के तुल्य है। जिस प्रकार समुंद्र का पानी खारा होता है, उसी प्रकार संसार सागर भी पापों के कारण खारा है। जो गुरु बाणी के जहाज़ चढ़ेगा, वह संसार सागर को पार कर जायेगा। जैसे जहाज़ पर चढ़ने वाला अथाह समुंद्र को पार कर लेता है और जो गुरु विमुख होगा उसे जहाज़ की प्राप्ति कभी भी नहीं होगी। जब जहाज़ ही नहीं मिला, तब समुन्द्र को तैरना हो ही नहीं सकता। हे अजिते! गुरु जी के सिख ही संसार सागर से पार होंगे, उन की लाख चौरासी मिट जायेगी। सिख को उचित होगा कि किसी भी सिख की निंदा न करे, और मन का दृढ़ हौंसला न त्यागे तथा सिदक में रहे, ललचाये नहीं। ऐसे सिख को जो सूली होनी होगी, वह गुरु की दया से सूल हो जाएगी। यह गुरु के अधीन है। हे रंधावा! जो सत पुरुषों के बचन होते हैं वे अमिट हो जाते हैं तथा गुरु बाणी सहायता करती है। हे अजिते! गुरु की आज्ञा पालन करने वालों के लिए नर्क नहीं है। नर्क तो विमुख नर नारियों के लिये रचे गये हैं, हे रंधावे! जो संसार को मुख लगाते हैं, उन को संसार की लजा मार लेती है। परंतु जो संसार को त्याग कर गुरु शर्ण प्राप्त करते हैं उनके अहोभाग्य होते हैं तथा परम सुख उन्हों के भाग में लिखा होता है। हे भाई! गुरु के दशहों चोले प्रत्येक सिख की मनो कामना पूर्ण करने वाले एक जैसे हैं। जो इन में कुछ भेद मानेगा वह मूर्ख होगा, भेद दृष्टि से विश्वास की हानि होती है। विश्वासहीनता से आतमा निर्बल होती है। निर्बलता से विश्वास दूर होता है तथा यह जीव लाख चौरासी में भटकता रहता है और कल्याण नहीं पाता।

हे अजिता! इस कलिकाल में अनेक चतुर अपने अपने मत चला

कर जीवों को गुमराह करेंगे। उन से बच कर रहणा गुरमुख सिख का परम कर्तव्य होगा। भाई! कलियुग है इस में तो कपट प्रधान होगा।

सलोक॥

धुंधूकार जो वरतना ना हिन्दु ना मुसलमान॥ राम रहीम न जाणसी ना को कह सलाम॥ गायत्री ना तरपण ना फाईताना दरुद॥ ना तीरथ ना देहरा ना देवी को पूज॥ गुरमुख कोई ना जानसी ना को लए उपदेश॥ इको बरतण वरती है ना को करे अदेस॥ वेद कतेब न जाणसन न दवारा न मसीत॥ रोजा बांग न वरत नेम ना को कहे हदीस॥ कोई ना किस को जाणसी ना को करे सलाम॥ नानक सरब वरतदा जिस कोटी मधी जाण॥

॥ वार्तक॥

हे अजिते! जब गुरुदेव इस धरती से अदृष्ट हो जाएंगे। तब संसार में कोई किसी की बात नहीं मानेगा और महान अंधकार फैल जायेगा, राम को मानने वाले न तो हिन्दू रहेंगे और न ही रहीम को मानने वाले मुसलमान ही नज़र आयेंगे। गायत्री तर्पण जप तप ज्ञान संजप पूजा तीर्थ धर्मशाला मंदिर न बांग निमाज कुछ भी नहीं रहेगा। सभी संसार कुमार्ग गामी हो जायगा, लोक लजा तथा परलोक भय सभी के हृदय से लोप हो जायेगा, हां कहीं कहीं कोई परमार्थ का नाम लेगा। उस समय एक भक्त प्रकट होगा। जो नील वस्त्र पहिने तथा अपने भीतर से ही सत्योपदोरा की पुस्तकें उच्चारण करेगा। उस की सहायता के लिये वह सर्व शक्तिमान स्वयं पधारेगा।

तब अजिते रंधावे ने प्रार्थना की हे महाराज! वह नील वस्त्रधारी कौन भक्त होगा, फिर गुरु जी ने प्रवचन किया है अजिते ध्यान से सुन—

सलोक॥

निह कलंक होइ उतरसी महा बली अवतार॥
संत रछिआ युग युग करे दुष्टां करे संहार॥
नवां धरम चलायसी जग होम होवहि वार॥
नानक कलयुग तारसी कीरतन नाम अधार॥

॥ परमार्थ॥

हे अजिते! एक समय आएगा, जब धर्म के पीछे मलेछ लोग हाथ धो कर पड़ जायेंगे, अंधकार वरत जाएगा। वहां पुण्य कर्म होता होगा, वहीं उस का नाश करने को पापी पहुंच जाएंगे। मलेछों की तूती बजने लगेगी। उस समय एक संत प्रभु पूजन करेगा। तब उस के घर में एक अत्यंत नीच नारी होगी। जो लोगों के आगे जा कर निंदा करेगी। उस के कारण उस संत को एक दैव्य दुख देगा। उस संत की रक्षा के लिये गुरु जी अवतार लेंगे। जहां कहीं संत का दोषी होगा, चुन चुन कर मारा जाएगा और नवीन धर्म को चलायेगा। दुष्टों का संहार करेगा तथा चौरासी जामे कलियुग में पूर्ण होंगे।

तब अजिते ने कहा-हे गुरु देव! आप मुझे क्षमा कर दो मैंने आप के सन्मुख बहुत सी बातें कही हैं। गुरु जी ने कहा-हे मित्र! तेरी बातें तो महान मंत्र है। इन से संसार का महान कल्याण होगा, इसे सुनने पढ़ने वाला मोक्ष को प्राप्त करेगा। इस में कोई भी सन्देह नहीं है परंतु श्रद्धा और भक्ति पूर्ण हो। श्रद्धा तथा प्रेम के चप्पू ही नौका को पार करने के प्रधान साधन होते हैं।

सलोक॥

अमर बचन गुरु देव दे जिह जन रिदे बसाव॥

मुक्त भुगत अर माल धन जुगों जुगलर खाय॥
शब्द अखर जिस मन बसै खिन महि होय उधार॥
पुन परमारथ नानका जिस लगे तरे संसार॥
गोसट सतिगुरु निरंकार जी नाल जिते रंधावे किया उचार॥
जो सिख पढ़ै प्रीत कर सोई उतरै पार॥ दोहरा॥
जन्म मरन ताका मिटै पढ़ै चु प्रीत लगाय॥
जीवन तिस का सफल है नानक नाम धिआय॥
नानक मूरत नाम जी जपिआं सभ दुख दूर॥
नानक तिस बलिहारने जो सदा रहिंदे हजूर॥
॥ गोष्ट अजिते रंधावे की समाप्त॥

साखी समुंद्र की

एक दिन मर्दाने ने कहा—हे महाराज! मेरा मन चाहता है कि समुंद्र में जो लंका है वहां का भ्रमण किया जाए। गुरु जी ने कहा-अच्छा आप लोग अपने नेत्र बंद करो जब मैं और मर्दाने ने नेत्र बंद करके क्षण पीछे खोले तब हम लोग गुरु जी के साथ महान समुंद्र तट पर खड़े थे। अब गुरु जी ने कहा कि तुम लोग समुंद्र के जल पर वाहिगुरु जप करते पैदल ही चले आओ, हे गुरु अंगद देव जी! हम लोग गुरु जी के पीछे पीछे उसी प्रकार जा रहे थे, जैसे सूखी पृथ्वी पर चला जाता है। आगे आगे गुरु जी ओम् सोहं का जप करते चले जा रहे थे, तब मर्दाने ने सोचा कि हम भी ओम् सोंह का जप क्यों न करें। अब मर्दाना भी ओम् सोंह की रट लगाने लगा, बस वह लगा गोते खाने। गुरु जी ने पीछे देखा तो हंस कर कहने लगे, हे मर्दाना! शिष्य का धर्म है कि वह गुरु के बताये मार्ग पर चले, इस लिये तू वाहिगुरु ही जप तेरा उसी में कल्याण है। जब मर्दाने ने वाहिगुरु नाम की रट लगाई तब

फिर पूर्व प्रकार पानी पर चलने लगा, गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुम जब कभी मनमानी करते हो तभी तुम्हें कष्ट होता है। यदि हमारी आज्ञा में रहो तो तुम्हें कदापि दुख न हो। गुरु की करनी की ओर ध्यान देना शिष्य का कर्तव्य नहीं। शिष्य का कर्तव्य तो गुरु आज्ञानुगामी होना है, इसी प्रकार चलते चलते हम लोग मान सरोवर पर जा पहुंचे। जहां परम सुंदर मोतियों का भोग लगा रहे हंस विद्यमान थे, उस दृश्य को देख कर मर्दाना गद गद हो गया तथा कहने लगा हे गुरु! आप धन्य हैं।

फिर गुरु जी की आज्ञा से आंखें बंद कर जब क्षण के पश्चात् खोली तो हम ने हारु नगर के निकट अपने को पाया। हारू देश का पातशाह एक योगी का सिख था, वह योगी सरेवड़ा था और अपने आप को वह योगी परमेश्वर कहता था और राजा उस की आज्ञा के भीतर रहता था, उस ने राजा को यह निश्चय दिला रखा था कि मेरे बगैर दूसरा कोई भी परमेश्वर वगैरा नहीं है। मैं ही सभी कुछ हूं। जो कुछ तुम मुझ से मांगो उसी वस्तु को मैं देने वाला हूं यह योगी मंत्र यंत्र तन्त्रादिक द्वारा हर एक की मनो कामना पूर्ण करता था। पुत्र पौत्र धन द्वारा यहां तक कि यदि बारश की आवश्यकता हो तो वे योगी बारश बरसा देता था। गुरु जी ने उस नगर के बाहर जाकर आसन लगा लिया। शनै शनै ख्याति बढ़ती गई। एक दिन राजा प्रजा दोनों ही गुरु जी के निकट गये। सभी ने गुरु जी को प्रणाम किया। गुरु जी ने कहा-हे राजन! एक बात सुनी गई है कि तुम लोग परमेश्वर को नहीं जपते। तब राजा ने कहा-हे महाराज! हमारा जो गुरु है वही ईश्वर है। उसके अतिरिक्त और कोई भी परमात्मा नहीं है। तब गुरु जी ने कहा-हे राजन! आप लोगों का व्यवहार किस प्रकार चलता है। राजा ने कहा-हे संत जी! हमें जल अग्नि प्रकाश पुत्र धन आदिक जिस वस्तु की आवश्यकता होती है। वह सभी कुछ गुरु देव जी कृपा से हमें प्राप्त हो जाता है।

भाव यह है कि हमारी सभी कामनाएं वे गुरु देव ही पूर्ण कर देते हैं। जब यह बात गुरु जी ने सुनी, तब गुरु जी ने उस योगी की सारी शक्ति खींच ली। उस से वर्षा रुक गई। जब सभी लोग पानी न मिलने से दुखी हुए यहां तक कि पीने को भी पानी न रहा। तब राजा ने प्रजा के चन्द बड़े आदमी लेकर योगी के पास जाकर कहने लगे-हे योगी जी! हम लोग तो मारे प्यास से मरने लगे हैं, कृप्या वर्षा करो तब योगी ने बहुत यन्त्र मन्त्र किए। परंतु कुछ पार न बसाई राजा प्रजा निराश होकर श्री गुरु जी के निकट आकर प्रार्थना करने लगे। गुरु जी ने कहा-हे राजन! मींह तभी बरसेगा जब तुम लोग वाहिगुरु जी से प्रार्थना करोगे, सत्य नाम का जप करो। कढ़ाह प्रसाद बनवा कर संगत में बांटो, कीर्तन करो तब परमात्मा तुम्हारी मन इच्छा पूर्ण करेंगे। जब गुरु जी की आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन करके दिखाया गया तब बहुत वर्षा होने लगी। तब अनेकों ने प्रार्थना की-हे महाराज! आप हमारे पास ही रहो, फिर इस के पश्चात् गुरु जी के अनेकों शिष्य बने। राजा भी गुरु जी का शिष्य बन गया। फिर गुरु जी ने अपने पवित्र मिशन का उपदेश दिया। फिर गुरु जी ने उन सब को सेवक बना लिया, सब को कीर्तन करवा कर सद उपदेश दिया तथा कहा-हे सज्जनो! कोई जन्म तथा मरन वाला ईश्वर नहीं होता। स्मर्ण तो उसी अयोनी का करना उत्तम है अन्य का भजन अथवा स्मर्ण लाभ के स्थान पर हानि ही होगी, तब राजा ने जवाहर का थाल भर कर गुरु जी की भेंट किया। गुरु जी ने कहा-हे राजन! हमारे पास नाम धन है, इस धन की अब हमें आवश्यकता नहीं। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! इन में से दो चार हीरे ही उठा लो कभी काम ही आयेंगे। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यह तो दुखों का रूप है और अरे मर्दाने हम ने तो तुम को नाम के हीरों का खजाना दिया है। क्या तुझे उससे तृप्ति नहीं हुई। मर्दाने को ततक्षिण ज्ञान हो गया। तब

उस ने गुरु जी के चरणों में बार बार नमस्कार की और क्षमा याचना की, फिर गुरु जी ने उन सभी को उपदेश देकर आगे की ओर प्रस्थान किया।

साखी सिक्खों के साथ हुई

एक दिन बहुत से देशों के नर नारियों का कल्याण करके श्री गुरु जी अपने आसन पर बैठे हुए थे, तब चार सिक्ख गुरु जी के चरणों पर नमस्कार करके बैठ गये, तब उन्होंने पूछा-हे महाराज! सन्तों की सेवा करने से क्या लाभ होता है कृपा करके हमें बताओ। तब कृपा के सागर गुरु जी कहने लगे-हे गुरमुखो! एक ब्राह्मण गंगा के तट पर रहता था, वहां एक ठाकुर जी का मंदिर था वहां सन्त लोग आया करते थे क्योंकि वहां संतों की सेवा बहुत होती थी। वहां संतजन बैठ कर ज्ञान की चर्चा करते थे। उस ब्राह्मण का डेरा ठाकुरद्वारे के निकट ही था, जो सन्त आता था, उस का दर्शन उस ब्राह्मण को होता था। वह ब्राह्मण चमड़े की डालें बना कर बेचा करता था, सन्तों का दर्शन भी वह श्रद्धा से नहीं करता था। साधारण रूप से संत मंदिर में आते थे तब अचानक उन का दर्शन हो जाया करता था। जब उसकी जीवन यात्रा पूर्ण होने को आई, तब धर्मराज ने अपने दूतों को आज्ञा दी कि उस पापी ब्राह्मण को पकड़ कर ले आओ और उसे पीटते हुए लाना, क्योंकि उसने मनुष्य तन व्यर्थ ही खो दिया है। धर्मराज के दूत उस ब्राह्मण को बड़ी बड़ी हथकड़ियों तथा बेड़ियों से बांध कर और मार्ग में खूब मारते हुए घसीट कर ले आये। धर्मराज ने हुकम दिया कि इसे कुंभी पाक नर्क में डाल दो, उस उर्वा का मुख तो एक घट जितना है। परंतु नीचे से वह अनेकों योजनों में है, जब उस को फैंका गया तब उस का शब्द हुआ, जैसे किसी कूप में ईंट फैंको तो उस का प्रति शब्द

होता है। उस नर्क में अनेकों जीवों के रोने कुरलाने की आवाज़ आ रही थी और भयानक दुर्गंधि भी थी। जब उसे फैंका गया तो दुर्गंधि एक दम दूर हो गई तथा जो उन जीवों को जलन होती थी वह भी जाती रही। जब यह कौतुक देखा तो चित्र गुप्त ने कहा-हें! यह क्या वही ब्राह्मण है अथवा कोई दूसरा ही ले आये हो। इन के गिरने से नर्कों की अग्नि ठंडी हो गई देखो कहीं भूल से कोई महा पुरुष तो नहीं फैंका गया। यमदूतों ने कहा-हे महाराज! यह तो वही ब्राह्मण है जिस ने अपना धर्म त्याग कर वृती ग्रहण कर रखी थी। सुरापान करता था। मांस मछली आदिक सभी का सेवन करता रहता था।

उधर नर्कों में तमाम जीव उस की शर्ण में आ गये। तब यमराज ने आज्ञा दी कि उस के कर्मों को फिर से देखा जाए। जब लेखा देखा गया तो पता चला कि यह मनुष्य आयु भर संतों के दर्शन करता रहा है और अनेकों संतों की चरण धूड़ी इस के शरीर पर पड़ती रही है। इस लिये इस का शरीर पर्म पवित्र हो गया है। तब धर्मराज की आज्ञा से उसको वहां से निकलने के लिए यमदूत आये। कहने लगे-हे भाई! हम ने भूल से तुम को यहां धकेल दिया है। अब तुम निकल आओ। तब उस ने कहा-मैं तो तब तक नहीं निकलूंगा जब तक तुम इन सब को बाहर नहीं निकालोगे। दूतों ने धर्मराज को कहा-हे महाराज! वह तो सारा नर्क खाली करवाने को मांगता है, वह तो बाहर नहीं निकलता। धर्मराज ने कहा अच्छा उस का कहना मान कर सब को निकाल लाओ। तब सभी को मात लोक में भेजा गया और उस ब्राह्मण को बैकुंठ की ओर रवाना किया गया, फिर वह परमात्मा का भजन करने लगा। गुरु जी ने कहा-हे मित्रो! यह है संतों के दर्शन का फल। तब उन सिखों ने गुरु जी के चरणों पर नमस्कार किया तथा परम स्तुति की। कहने लगे-हे महाराज! अब हमारा संशय दूर हुआ है तथा आज हमारा

कल्याण हो गया है। हे गुरुदेव! आप में और परमात्मा में कोई भी भेद नहीं है। उस समय गुरु जी ने एक सलोक कहा।

मारु महला ५ ॥

मोहनी मोहि लीए त्रै गुनीआ॥ लोभि विआपी झूठी दुनीआ॥ मेरी मेरी करि कै संची अंत की बार सगल ले छलीआ॥ १ ॥ निरभउ निरंकारु दइअलीआ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपलीआ॥ २ ॥ रहाउ॥ एकै स्रमु करि गाडी गडहै॥ एकहि सुपनै दामु न छडहै॥ राजु कमाइ करी जिनि थैली ता कै संगि न चंचलि चलीआ॥ २ ॥ एकहि प्राण पिंड ते पिआरी॥ एक संची तजि बाप महितारी॥ सुत मीत भ्रात ते गुहजी ता कै निकटि न होई खलीआ॥ ३ ॥ होइ अउधूत बैठा लाइ तारी॥ जोगी जती पंडित बीचारी॥ ग्रिहि मढ़ी मसाणी बन महि बसते ऊठि तिना कै लागी पलीआ॥ ४ ॥ काटे बंधन ठाकुरि जा के॥ हरि हरि नामु बसिओ जीअ ताकै॥ साध संगि भए जन मुकते गति पाई नानक नदरि निहलीआ॥ ५ ॥

गुरु जी के इस उपदेश को सभी संगत सुन रही थी, उस में एक क्षत्री बैठा था जो चार क्रोड़ रुपये की संपदा का स्वामी था। परंतु किसी को भी एक कौड़ी नहीं देता था और न ही कुछ पुण्य करता था। जब उस ने गुरु जी के मुख से शब्द सुणा तो उस का हृदय कांप गया। उस ने गुरु जी के चरण पकड़ कर कहा-हे महाराज! आप कुछ मुझे भी उपदेश करो जिस से मेरा भी कल्याण हो। तब गुरु जी ने कहा-मित्र! क्षत्री तेरे जैसा ही धनी था उसने जो कष्ट पाया था वह तुम को सुनाता हूं। उस के पास जो धन था। उस के ऊपर बैठा रहता था। किसी को

निकट नहीं आने देता था न ही किसी को खिलाता और न आप ही खाता था। जब अंत समय आया तब प्रभु का हुकम हुआ इसे केशों से पकड़ जमीन पर मारो। जब उसे यमदूतों ने पकड़ा तब उस ने पूछा तुम कौन हो? तब उन को उत्तर मिला हम यमदूत हैं तथा तुम को धर्मराज सन्मुख ले जायेंगे। उस ने कहा-आप मेरी एक बात सुनो। दूतों ने कहा-बताओ उस ने कहा-आप मेरी संपदा का चतुर्थ भाग ले लो और मुझ को छोड़ दो, यह सुन कर दूतों ने उसे बहुत ही मारा। अब उस ने कहा-तुम आधा धन ले लो। उन्हों ने कहा-हम धन लेने नहीं आये हम तुम्हें लेने को आए हैं। तब उस ने कहा-अच्छा तुम मेरी संपदा के तीन हिस्से ले लो मुझे छोड़ दो। फिर उसे यमदूतों ने बहुत मारा। तब उसने कहा अच्छा भाई! सारा धन ले लो परंतु मुझे छोड़ दो। यमदूत बोले तू पागल हैं। अरे यदि तीन लोकों की संपदा भी मिले तो भी हमारे को स्वीकार नहीं है। हम तो तुम को ही लेकर जायेंगे तब उस धनी ने कहा-अच्छा ईश्वर के लिये मुझे इस धन से दो चार बातें कर लेने दो। तब यमदूतों ने लक्ष्मी के पास ले जाकर खड़ा कर दिया। उस ने दौलत को कहा-हे दौलत! मैंने तुम्हारी बहुत सेवा की है तथा सब से अधिक मैंने तुझ से प्यार किया है और दिन रात तेरी रक्षा करता रहा हूं। मन में विचार था कि तू मेरे अंत समय में काम आएगी। कष्ट में सहायक बनेगी। हे लक्ष्मी! मैंने तुम्हें खाया भी नहीं। अपना आप भूखा रख कर भी मैंने तुझ से प्रेम किया है, मैं तुझ को सब से अधिक मानता रहा हूं। अब तू उसी स्थान पर पड़ी है, दो चार कदम मेरे साथ तो चल। लक्ष्मी ने कहा-अरे अधम जीव! तू ने मेरे लिये कोई सुकर्म भी नहीं किया और न ही तू ने अपने किसी मित्र संबंधी के हितार्थ ही मुझ को लगाया और न ही गुरु अर्पण किया। न यज्ञ न हवन। कोई भी उपकार का कार्य तूने मेरे लिये नहीं किया न किसी निर्धन को कपड़ा

जूता ही लेकर दिया। अरे तूने तो कोई धर्मशाला भी नहीं बनवाई न कूप लगवाया और बहन भाई को भी देकर सहायता नहीं की और नीच किसी को खिलाना तो एक ओर तुमने अपने तन के लिये ही मुझे नहीं हिलाया। अरे पापी अगर तू मुझे भले काम में लगाता, तो मैं तुझे बैकुंठ में ले चलती जहां तुझे अपार सुख मिलता अरे नीच जैसे तू मुझे तमाम उमर धरती में दबाये बैठा रहा है वैसे मैं भी तुझे अनंत काल तक नर्कों में डाल रखूंगी। इतनी कह कर लक्ष्मी अन्तर ध्यान हो गई तथा यमदूत उसे मारते पीटते धर्म राज के सन्मुख ले गये। तब धर्मराज ने उसे घोर नर्क में डाल दिया।

गुरु जी ने कहा-जो माया को इस प्रकार दबायेगा, तो उस का वही हाल होगा। जो ऊपर की कथा में भली प्रकार कहा गया है। यह सुन कर वह क्षत्री भयभीत हो गया। कहने लगा-हे महाराज! अब आप मेरा कल्याण करो। गुरु जी ने कहा-हे मित्र! तू अब एक धर्मशाला बनवा। उस में संतों की सेवा कर लंगर लगवा, अतिथि की सेवा कर ईश्वर स्मर्ण कर, नाम जपना, कीर्तन करना और धर्म चर्चा नित्य प्रति सुनना यही अपनी दैनिक क्रिया बना तब तेरा कल्याण होगा। जिस ने धन एकत्र करके रखा है तथा कोई पुण्य कर्म नहीं किया उसे यह लक्ष्मी नर्कों में डाल देगी। यह मो्हनी है मोह करके पुरुष का घात करती है माया छल रूप है जो इसे ईश्वर अर्पण लगाता है उसी का यह कल्याण करती है और जो इसे संभाल कर छोड़ जाता है उसकी यह दुश्मन है। इस का सद् उपयोग ईश्वर अर्पण लगाना है। तब यह परलोक में सुख देती है, नहीं तो वह नर्कों की टिकट है। सतसंग साधू संग और पुण्य कर्म करने से यह मित्र बनती है, नहीं तो यह महान दुश्मन है तथा किसी के साथ नहीं जाती, यहां ही रह कर इस जीव को नर्क में पहुंचाती है। इस के पश्चात् गुरु जी वहां से आगे चले।

बाघ की साखी

एक समय समुंद्र तट पर मैं (बाला) और गुरु जी बैठे हुए थे, तथा सन्मुख बैठ कर मर्दाना शब्द पढ़ रहा था। सामने थोड़ी दूर पर एक लाश पड़ी थी। वहां एक बघियाड़ आया और मृतक को देख कर लौट गया। थोड़ी दूर जा कर फिर लौट आया और मृतक का सिर और छाती सूंघ कर चला गया। फिर आया और मृतक के हाथ पैर सूंघ कर चला गया। फिर लौट कर मृतक के कान और रसना सूंघ कर हट गया। तब मर्दाने ने हैरान हो कर गुरु जी से पूछा-हे महाराज! यह भूखा बाघ इस मृतक को सूंघ कर क्यों चला गया है? तब गुरु जी ने मर्दाने की बात सुन कर बाघ को अपने निकट बुला कर कहा-हे बाघ! तुम भूखे हो इस मृतक का मांस क्यों नहीं खाते। उसने कहा-हे महात्मन! आप के दर्शनों से मेरा मन शुद्ध हो गया है। मैंने इसके तमाम अंग सूंघ कर देखे हैं कोई भी अंग इस का पवित्र नहीं है। रसना से तो इसने कभी नाम नहीं जपा। कानों से कथा व उपदेश नहीं सुना। पैरों से यह पापी कभी किसी मंदिर गुरद्वारे तक नहीं गया और न ही तीर्थ यात्रा की है। मन से इस ने किसी का भला नहीं चाहा। हे भगवान! अधिक क्या कहूं इस का कोई भी अंग उत्तम नहीं है। इस का मांस खाने वाला अधोगति को जायगा क्योंकि नीच है। हे महात्मन! इस के मांस को खा कर प्राण रक्षा करने से तो भूखे मर जाना ही उत्तम है। गुरु जी ने प्रसन्न हो कर उस मृतक और उस बाघ की ओर देखा तब उन दोनों की कल्याण हो गई। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! जो प्राणी पुरुष शरीर धारण करके भी भला काम, परमात्मा का स्मरण आदिक शुभ कर्म नहीं करते उन का होना निष्फल तथा व्यर्थ होता है। मनुष्य देह उत्तम गति प्राप्त करने को मिलती है, जो ऐसा अमूल्य समय को पाकर

भी कुछ नहीं करते उन के समान संसार में कौन मूर्ख है। उस की कभी भी सद्गति नहीं होती, यह सुन कर मैं और मर्दाने ने गुरु जी को नमस्कार किया।

साखी राक्षसों की

एक बार हम लोग गुरु जी के साथ एक गहण बन में जा बैठे। वहां अनेकों राक्षस फिरते देखे! मर्दाने का मुख पीला पड़ गया। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुम को क्या हुआ है? मर्दाने ने कहा-हे महाराज! यह जो राक्षस हैं यह तो हमें खा जाएंगे। हे महाराज! आप तो निर्भय हो और न ही आप को कोई मार सकता है। परंतु हम लोग तो बस इन का एक ही ग्राम हो जायेंगे। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तू रबाब के साथ शब्द पढ़ फिर तेरे निकट कोई नहीं आएगा। जब मर्दाना रबाब के साथ शब्द गान करने लगा तब राक्षसों ने कहा-हे ईश्वर! तू धन्य हैं जो परिश्रम के बिना ही हमें अहार भेज दिया है। उन में जो विशाल कार्य सरदार था, उसने कहा-हे मित्रो! आज खुशी का दिन है, जो हमें मनुष्य का मांस खाने को मिला है, इन को खा कर भूख दूर करो। जब वह निकट आये तो उनको शब्द की आवाज़ सुनाई दी। तब उन का मन परम शांत हो गया। वे सभी गुरु जी के निकट आ कर बैठते गए। तब उस शब्द का भोग पड़ा तो उन्हों ने गुरु जी के चरणों में प्रेम सहित प्रणाम किया। सरदार ने कहा-हे संत जी! हम तो तामस तन के जीव हैं और हम लोग मनुष्यों का मांस खाने वाले हैं। परंतु आप का दर्शन करके हमें शांति हो गई है हमें यह निश्चय हो गया है कि आप केपवित्र शब्द से हमें उत्तम गति मिलेगी। तो हे संत जी आप हम पर कृपा करके हमारी सद्गति करो, हे महाराज! हम तो आप को मारने आये थे, परंतु आप के मनोहर गीत ने हमें सार्थक कर दिया है। अब हमें विश्वास

हो गया है कि आप की कृपा से हमारा तो अवश्य ही कल्याण होगा। आप दया के समुंद्र हो। कृप्या हमारी मुक्ति करो। गुरु जी ने कहा-हे भाई! तुम सत्य नाम प्रभु का स्मरण करो और हारूं नगर में जाओ वहां हम सिखी का सागर लगा आये हैं। वहां उन लोगों के साथ सतसंग करो और धर्मशाला में सेवा किया करो, और प्रभु नाम जपा करो, तब तुम लोगों की अवश्य ही सद्‌गति होगी। वहां प्रसाद जो (कढ़ाह प्रसाद) मिले उसे खाने से तुम्हारे पाप दूर होंगे। फिर तुम्हारी मुक्ति होगी। यह कह कर गुरु जी आगे की ओर चले।

साखी लंका नगर की

बाला कहने लगा-हे महाराज! मैंने एक दिन श्री गुरु नानक देव जी महाराज के आगे प्रार्थना की कि हे गुरु जी! मेरा मन चाहता है कि राजा राम चंद्र जी ने जिस लंका को जीत कर तथा रावण को मार कर भारत की शान को चार चांद लगाये थे उस लंका को देखूं। तब गुरु जी ने कहा-हे बाला और मर्दाना! तुम दोनों नेत्र बंद करो। जब हम ने अपने नेत्र बंद करके क्षण के पश्चात् खोले तो हम रामेश्वर के स्थान पर सागर के किनारे खड़े थे। मर्दाने ने वहां शिव मंदिर देख कर गुरु जी से पूछा-हे महाराज! यह शिव मंदिर कैसा है? तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! जब राम चंदर ने लंका पर चढ़ाई की थी, तब यहां राम जी ने जीतने की कामना से शिव की पूजा की थी। फिर बानरां की सहायता से एक विशाल पुल बांधा गया था, उसी पुल के द्वारा बांदर सेना समुंद्र पार गई थी। मैंने (बाले ने) कहा-हे महाराज! यदि राम चंद्र चाहते तो समुंद्र को सुखा सकते थे, तथा सेना को पार ले जाते। तब गुरु जी ने कहा-हे बाला! राम भगवान मर्यादा पुरुपोतम थे। यदि समुंद्र को सुखा देते तो अनंत जीव जो समुन्द्र में ही निवास

करते हैं वे सभी व्यर्थ ही मर जाते। श्री राम चंद्र जी ने यह विचार कर तथा दयातुर हो कर पुल बांधना ही उत्तम जाना यह सुन कर बाले ने श्री गुरु नानक देव जी के चरणों पर प्रणाम किया।

फिर गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! चलो आप लोगों को लंका दिखा लायें। मर्दाने ने कहा-हे गुरु जी पुल पर से ही चल पड़ते हैं तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! पुल पर से नहीं जाया जाएगा, क्योंकि पुल तो भगवान राम की आज्ञा से आती बार तोड़ दिया गया था। अब हमें लंका में किसी दूसरे तरीके से जाना पड़ेगा, तब गुरु जी समुंद्र के जल के ऊपर से चल पड़े तथा पीछे पीछे हम सतिनाम वाहिगुरु का स्मरण करते चलने लगे जब हम लंका के निकट पहुंचे तो वहां अनेकों राक्षस फिरते देखे। मर्दाना उन को देख कर डर गया। अंर्तयामी गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! इस देह को अनिस जान कर ईश्वर स्मरण कर।

इतने में दो राक्षस गुरु जी पास आए तथा वे कहने लगे भाई! तुम कौन हो और कहां से आ रहे हो? गुरु जी ने कहा-हे मित्रो! हम भगवान राम के दूत हैं और विभीषण को मिलने आये हैं। उन्हों ने राजा विभीषण को जा कर कहा-कि तीन आदमी आप से मिलना चाहते हैं, वे कहते हैं कि हम राम चन्द के दूत हैं। विभीषण ने जब वह सुना-तब मंत्री को साथ लेकर नंगे पैर गुरु जी के निकट पहुंचा। गुरु जी के चरणों में प्रणाम करके फल पुष्पादिक भेंट आगे रखे। तब गुरु जी ने कहा-हे विभीषण जी! आप कब से राम भगवान से जुदा हुए हो। विभीषण ने कहा-हे संत जी! जुदाई तब होती है जब मन से भूला जाय। हे संत जी! मैं तो एक क्षण भर के लिये भी भगवान राम को नहीं भूलता, हे महाराज! जब मैंने राम भगवान के दर्शन किये तो मैंने यह समझा कि राज्य भोग आदिक अंध कूप कर भांति है प्रथम भेंट में भगवान ने कहा-आओ लंका पति। मैंने प्रभु से प्रार्थना की हे महाराज! मुझे राज्य

का लोभ नहीं है, भगवान ने कहा-हे विभीषण! जब तुम पहिले घर से चले थे तब तुम्हारे मन में राज्य पद की इच्छा थी। हे भक्त राज! हमारी यह मर्यादा है कि पहिले किसी भक्त को जो प्रथम कामना हो उसे पूर्ण करते हैं, पीछे निष्कामना प्रदान करके उसे मोक्ष का अधिकारी बनाते हैं। तब मैंने भगवान राम के चरणों पर प्रणाम किया।

तब गुरु जी कहने लगे हे विभीषण! आप धन्य हो तथा आप चिरायु हो और जीवन मुक्त हो, तब विभीषण ने कहा हे संतवर! परमात्मा में और संतों में कोई भी भेद नहीं होता। इस लिये आप परमेश्वर रूप हैं आप कृप्या मुझे ऐसा उपदेश करो जिस से मेरी आत्मा को शांति प्राप्त हो। गुरु जी फुरमाने लगे-हे भक्तवर! समुंद्र रूपी भवजल है जिस पर संतों के प्रवचन पुल के समान हैं अविद्या रूपी लंका को प्रभु ने लूटा। राम ने क्रोधादिक दुष्टों को मारा तथा नाम रूपी गरुड़ ने मोह माया के सांपों को हनन किया है नाम की महिमा यह है कि पत्थर हृदयों को नाम के महामंत्र ने तार दिया है। हे राजन! तुम को तो राम रूपी गुरु प्राप्त हुए हैं, उन्हीं का बताया परमात्मा के नाम का महामंत्र है। उसी के द्वारा तुम्हारा कल्याण हुआ है तथा उसके ही द्वारा तुम्हें मोक्ष पद की प्राप्ति होगी, मैंने तुम्हारे सामने यह अध्यात्म विचार रखा है। आशा है कि यह विचार तुम्हारे मन में शांति का संदेश लेकर जाएगा।

यह सुन विभीषण ने गुरु जी के चरणों पर प्रेम से नमस्कार किया, बाले ने कहा-हे भगतराज! यहां लंका में सुना है कि बीर हनुमान जी रहते हैं। तब विभीषण ने कहा-हे महाराज! हनुमान जी तो रावण की चिखा के ऊपर ही बैटे रहते हैं यदि आप कहो तो मैं उन को बुला लाता हूं परंतु उस ने भगवान राम रूप को नमस्कार करना है और किसी के आगे उस ने अपना शीश नहीं झुकाना। तब गुरु जी ने कहा-हम उसको भगवान राम के दर्शन करायेंगे। तब विभीषण ने हनुमान जी को

बुलाया। इधर गुरु जी ने अपना रूप राम का बनाया, और मुझे (बाला) लक्ष्मण बनाया और मर्दाने को सीता का रूप बना दिया। हनुमान जी को बुलाया। इधर गुरु जी के चरणों पर नमस्कार किया, तब गुरु जी ने कहा हे महांबीर! तू हमें सदैव सर्व व्यापक माना कर। हे हनुमान! जितने भी संसार के जीव हैं सभी में व्यापक राम होने से राम रूप ही हैं, हे भक्तवर! जितने भी सुग्रीव जांमवान आदिक सैनिक थे सभी में राम सता विराजमान थी उसी राम की शक्ति ने रावण, कुंभकरण आदिक का संहार किया है तथा संसार का कल्याण किया है, प्रभु राम सृष्टि को उत्पन्न करने, पालन तथा संहार करने वाले हैं। तब हनुमान ने कहा हे महाराज! मैं उपासना के बल से आप को जानता हूं। आप तो भगवान ही हैं ज्ञानीओं में श्रेष्ट होने के नाते भी आप महान हैं, तथा मैं तो आपका दासनुदास हूं। आप ही राम हैं तथा राम होने के नाते आप मेरे धनिष्ट हो। मुझ पर आप की कृपा बनी रहे। बस यह मेरी हार्दिक अभिलाषा है। तब हनुमान जी ने श्री गुरु जी महाराज को नमस्कार करके एवं आज्ञा लेकर अपने स्थान पर चल गये और विभीषण भी गुरु जी को प्रणाम करके चला गया, फिर गुरु जी भी वहां से किसी अन्य स्थान को रवाना हुए।

साखी मर्दाने के चलाने की

एक बार श्री गुरु नानक देव जी महाराज समुंद्र के तट पर खड़े थे तब मर्दाने ने पूछा हे गुरु जी! आप घर को कब तक जाओगे। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! जब हमें वह परमात्मा ले जायेगा तभी जायेंगे। परंतु यदि तू उतावला है तो तुम्हें मे हम अभी ले जा सकते हैं। तब मर्दाने ने निराश सा होकर कहा-हे महाराज! आप तो मुझे अभी ही अपने से विछोड़ना चाहते हो। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुम ने

स्वयं ही घर को याद किया है। तब मर्दाने ने कहा-हे गुरुदेव! मैंने तो साधारण रूप से बात की थी। तब गुरु जी ने कहा-हे भाई बाला! चलो क्योंकि मर्दाना अब हम से विछुड़ना चाहता है। मर्दाने ने कहा-हे महाराज! मुझे अपने साथ ही रखना, देखना कहीं मुझे त्याग न देना। हे महाराज! आज मुझे दो पुरुष मिले थे। उन्हों ने मुझे पुष्प दिये हैं। वह पुष्प कुमलाने वाले नहीं हैं। तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! वे दोनों गंधर्व थे जो तुम को लेने के लिए आए हैं। तब तुम आगे चलो, जब हम बैकुंठ को जायेंगे तब तुम को भी अपने साथ ले चलेंगे। मर्दाना बोला-हे गुरुदेव! जैसे आप की इच्छा परंतु आप यह तो बता दो कि मेरा शरीर किस स्थान पर छूटेगा। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! तुम्हारी देह किसी भली जगह पर ही छूटेगी। उस समय हम तेरे पास ही होंगे। हे मर्दाना! जब ब्राह्मण शरीर छोड़ता है तो उस का संस्कार जल में करते हैं क्षत्री का अग्नि में होता है वेश्य का पवण में संस्कार होता है तथा शूद्र को मिट्टी में दबा दिया जाता है, अब तुम जैसे कहो वैसे ही तुम्हारा संस्कार किया जाए, यदि तुम चाहो तो तुम्हारी कबर बना दी जाय। तब मर्दाने ने कहा! हे गुरुदेव! चमड़े की कबर से निकाल कर फिर ईंट पत्थर की कबर में पड़ना नहीं चाहता। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! क्या तुम ने ब्रह्म को पहिचाना है? मर्दाने ने कहा-हे महाराज! आप की कृपा से जो कुछ ईश्वर ने दिखाया है वह मैंने देखा है। मर्दाने ने कहा जो यहां जलाये जाते हैं वे पवित्र हो जाते हैं, और जिन को यहां दबाया जाता है, उनको आगे फिर जलाया जाता है, सो मेरी प्रार्थना है कि मेरा दाह संस्कार किया जाय।

यह बातें करते करते गुरु जी दरबेला नगर में आ पहुंचे। मर्दाने ने पूछा-हे गुरु जी! क्या मेरा शरीर यहां छूटेगा? तब गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना! यहां तेरी संतान रहेगी और तुम को हम खुरम नगर में ले चलते

हैं, वहां तेरी मृत्यु होगी क्योंकि खुरम नगर में तुम्हारा अन्न जल अभी शेष रहता है। पांचवें दिन मर्दाने ने वहां आकर सुरमे खाए। जब तीन घड़ी दिन रहा तो गुरु जी ने मर्दाने से पूछा-हे मर्दाना! बताओ आतमा की क्या अवस्था है। मर्दाने ने उत्तर दिया-हे गुरुदेव! अब तो तैयारी है क्योंकि मेरी नाभी में से स्वासों की ग्रन्थी खुल गई है, अब मेरे नबे स्वास बाकी रहते हैं। तब बाले को गुरु जी ने कहा-तुम गिनते जाओ, जब स्वास हो गए। तब मर्दाने की देह ठंडी हो गई। गुरु जी ने हाथ लगा कर देखा तो मर्दाने के प्राण पंखेरु उड़ चुके थे, तब मैंने (बाले) कहा-हे महाराज! मर्दाना तो समाप्त हो चुका है। तब गुरु जी ने करतार को नमस्कार दिया और कहा-बाला! उस ईश्वर के रंग देखो। इस पर प्रभु की बहुत कृपा थी। मैंने कहा-हे महाराज! करतार धन्य है और आप भी धन्य हो। जिस के ऊपर आप की कृपा हो, उस पर करतार की कृपा कैसे न हो।

फिर गुरु जी की आज्ञा से खुरमे की लकड़ी एकत्र हो गई, फिर गुरु जी ने कपड़े की तीन चादर बनाईं। एक मर्दाने के लिये तथा एक अपने लिये और एक मेरे लिये, यह तीनों कफन तैयार करवाए। फिर मर्दाने का संस्कार भली प्रकार विधि के साथ किया गया। गुरु जी ने स्वयं अपने हाथ से मर्दाने को जलाया। फिर मुझे कहा-हे बाला! इस स्थान पर मर्दाने की संतान को ला कर बसाना ही उत्तम है, मैंने कहा-हे गुरुवर! जैसे आप की इच्छा।

साखी आगे और चली

एक दिन श्री गुरु नानक देव जी महाराज बैठे हुए थे, मुझे कहने लगे-हे बाला! आज पखो के रंधावे जाना चाहते हैं, परंतु मूले का स्वभाव अत्यंत कठोर है, तब मैंने कहा-हे महाराज! अब तो हमने बहुत ही भ्रमण

कर लिया है अब तो श्री चंद्र, लक्ष्मी दास और माता चोणी जी आदिक को चाहिए। आप वहां विश्राम करना और मैं आप की आज्ञा लेकर तलवंडी जाऊंगा तब गुरु जी ने कहा-हे बाला! तुम कुछ दिन और हमारे साथ रहो, एक दिन गुरु जी अजिते रंधावे के कूप पर जा बैठे, अजिते ने गुरु जी को देखा। उस ने गुरु जी को प्रणाम किया। गुरु जी ने मौन समाधी लगा ली। जब समाधी से उठे तब गुरु जी ने देखा उस की भी वही समाधी है, तब गुरु जी ने कहा-हे प्रभु के प्यारे उठो, तीसरी बार कहने से वह उठ बैठा। तब गुरु जी ने कहा-हे अजिते! जो कुछ भी तुम मांगो वह तुम्हें हम देंगे, उस ने कहा-आप सभी कुछ जानते हैं कहने की बात नहीं। तब गुरु जी ने कहा-हे भाई! काम तो पूर्ण ही है जा तू कर्मों का बली है, अब तू राय बुलार से हज़ार कदम आगे हो गया हैं। उस की दृष्टि देह में नहीं खुली परंतु तेरी खुल गई है। अब अजिते के कपाट खुल गये, अजिते का शरीर दिव्य भांति का हो गया।

एक दिन रंधावा बकरियें चराता आ रहा था तब गुरु जी ने मुझे कहा-हे बाला! वह जो भेड़ बकरी चरा रहा है उसे मेरे पास ले आओ। तब उस बूढ़े ने गुरु जी को आकर प्रणाम किया, गुरु जी ने कहा-हे भाई! तू कौन हैं, उस ने कहा मैं जाट हूं। मैं संधू रंधावे का पुत्र हूं और आप के निकट रहता हूं। उस ने कहा-हे महाराज! आप ने मुझे बुलाया है परंतु कहा कुछ भी नहीं, और अब कहते हो जाओ। गुरु जी ने कहा बाला किसी दिन को साधू होगा, और इस की गद्दी चलेगी। जब दूसरे दिन बूढ़ा अपने घर को जाने लगा, तब याद आया कि गुरु जी के दर्शन करने हैं परंतु खाली हाथ जाना अच्छा नहीं तब उसने ताजे माखन का कटोरा भर कर गुरु जी के आगे रख दिया, गुरु जी ने कहा-हे नींगर! यह कहां से लेकर आये हो, तब बूढ़े ने कहा-हे महाराज! यह मैं अपने

घर से ला रहा हूं। गुरु जी ने कहा-हे भाई! तुमने कोई घर बनाया हुआ है, उस ने कहा हे गुरु जी! मेरे माता पिता अभी हैं। गुरु जी ने कहा नींगर! तुम को पिता मारेगा तो यह सुन कर उसके मन में कुछ वैराग सा हो गया और रोने लग गया। गुरु जी ने कहा-भाई तू रोता क्यों हैं उसने कहा-कि मेरा पिता भले ही मुझे मारे उस की मुझे चिंता नहीं है परंतु मुझे क्यों पृथ्क कर रहे हो। गुरु जी कहने लगे हे बाला! देखो तो यह क्या कह रहा है? बाले ने कहा हे भाई! गुरु जी जो कुछ भी फुरमा रहे हैं उसी में तेरा भला है। उस ने कहा हे बाला, गुरु जी तो पूर्ण संत हैं इस में और परमात्मा में कोई भेद नहीं है परंतु आप दीपक जला कर उसे फिर बुझाना चाहते हैं। जब उस ने यह शब्द कहे तब गुरु जी ने कहा हे भाई! तू पहिले भगवान के आगे नमस्कार कर। उसने नमस्कार किया तो गुरु जी ने कहा-हे भाई प्रातः काल उठ कर स्नान कर के ईश्वर का नाम स्मरण किया कर। उस ने कहा-हे गुरुदेव आप का दर्शन करके जन्म जन्मांतर की मैल दूर हो गई, अब आप मुझे दोबारा स्नान की क्यों आज्ञा दे रहे हैं। गुरु जी ने कहा-हे मित्र तुम्हारी ओर देख कर और लोग भी स्नान करेंगे, और तुझे मिल कर अन्य अनेकों का उद्धार होगा, तू गुर-मर्यादा को चलाने वालों में सरदार होगा, जो तेरे दर्शन करेंगे उन का भी भला होगा। यह कह कर गुरु जी करतार पुर की ओर रवाना हो गये।

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

एक समय श्री गुरु नानक देव जी करतार पुर में बैठे थे। आप के मन में कुछ तरंग उत्पन्न हुई कि हम ने बहुत भ्रमण किया। ईश्वर की आज्ञा थी कि जीवों का कल्याण करो। वह भी किया। अब मन में आता है कि अपने अंग से अंगद को उत्पन्न करूं उसे सर्वशक्ति प्रदान करके संसार के लिए मुक्ति का मार्ग खोल दूं। इधर मन में यह विचार हुआ।

उधर निरंकार की ओर से निमंत्रण हुआ कि हे नानक देव! तुम हमारे पास आओ। तब गुरु जी ने कहा-हे भगवान! आप की आज्ञा थी कि तुम्हारा पंथ चलेगा तथा मेरे नाम का अर्थात् परमात्मा के नाम का उपदेश संसार को दो ताकि कलयुग के जीव नाम रूपी जहाज़ पर चढ़ कर भवसागर को तरें, सो हे कृपा नाथ! आप कोई योग्य पुरुष भेजो, मैं उसे आपका पवित्र संदेश सुना कर तथा अपना उतराधिकारी बना कर आप स्वयं आप के चरणों में उपस्थित हो जाऊं। तब प्रभु ने कहा-हे नानक देव! जब मैंने बावन अवतार धारण किया तब मैंने विलोचन ऋषि को अपना गुरु नियत किया था, वही विलोचन पीछे देवताओं का और ऋषिओं का भी गुरु रहा। फिर वह तपस्या भी करता रहा। त्रेता युग में ठाकुर जी ने उस से भक्ति भी करवाई थी। तब करतार ने कहा-हे विलोचन तुम कलियुग में जन्म लेकर कलि के जीवों का कल्याण करो, संसार में भक्ति को स्थापन करो और गुरु नानक की मर्यादा का पूर्ण प्रचार करो।

प्रभु आज्ञा पाकर विलोचन जी विदा हुए तथा कलियुग में आप ने जन्म लिया। पंजाब की भूमि पर मत्ते की सराय में त्रेहन क्षत्री वंश में श्री लाला फेरू राम जी के घर में आप ने जन्म लिया, जन्म से ही आप को श्रेष्ट बुद्धि ईश्वर की देन थी। चौदा वर्ष की आयु में आप का विवाह खडूर नगर में हो गया, जब आप अठारह वर्ष के हुए तब आप के गृह में पुत्र हुआ जिस का नाम दासु था, फिर बीबी अमरो और सभराई हुई। गुरु जी की महिला का नाम भराई था, आप का मेल जोल गुरु घर के प्रेमियों के साथ था। जिस से आप ने बाणी कंठ की तथा शब्द गाने लगे, आप के नगर में बहुत से लोग देवी के भक्त थे। आप का नाम लहिणा रखा गया था। एक दिन एक सिख से शब्द सुन कर लहिणे ने कहा-हे भाई! यह शब्द किस ने लिखा है, उस ने

कहा-हे मित्र! यह बाणी सतगुरु नानक देव जी ने उच्चारण की हुई है। अब लहिणे के मन में गुरु नानक के दर्शनों की इच्छा पैदा हो गई।

जब नवरात्रों के दिन आये तो संगत देवी के दर्शनों को त्यार हुई, लोगों ने लहिणे को कहा-हे मित्र! चलो दुर्गा यात्रा करें, उन लोगों के साथ लहिणा भी दुर्गा दर्शनों को चल पड़ा। चलते चलते यह लोग करतारपुर पहुंचे, किसी ने नगर वासियों से पूछा भाई! यह नगर किस का है और इस नगर का नाम क्या है? नगर निवासी ने कहा-यह गांव श्री नानक जी का है। एक ने कहा-हे भक्तवर! तुम जिस नानक की बाणी गाया करते हो यह नगर उसी का है। उधर गुरु नानक जी को अनुभव हूआ कि मेरा उतराधिकारी मेरे ही नगर में आया है। तब गुरु जी घर से निकल कर बाहर आकर एक ओर एकांत में खड़े हो गये तब लहिणा इन के पास आ कर कहने लगा-हे भाई! क्या मुझे गुरु नानक देव जी का दर्शन भी हो सकता है? तब गुरु जी ने कहा-हे मित्र! तू मेरे साथ चल मैं तुझे गुरु नानक पास ले चलता हूं।

अब गुरु जी के साथ लहिणा महलों की ओर को आये। महलों के द्वार पर गुरु जी ने कहा-हे मित्र! जो सामने वृक्ष हैं उस के साथ तू अपनी घोड़ी बांध दे जब वह घोड़ी बांधने गया तो गुरु जी एक दरवाजे से भीतर जाकर एक चबूतरे पर आसन जमा कर ध्यान में मस्त होकर बैठ गये।

इधर घोड़ी बांध कर लहिणा भीतर गया तो गुरु जी को आसन पर बैठा देख कर हैरान हो गया। सोचने लगा कि यह तो वही है जो मुझे यहां तक लेकर आया है। यदि मुझे पता चल जाता कि मुझे यहां तक ले जाने वाले गुरु जी हैं तो मैं सत्कारपूर्वक घोड़ी पर चढ़ा कर लाता। इस प्रकार का पश्चाताप् करके लहिणा गुरु जी के पवित्र चरणों पर गिर गया। अब गुरु जी ने पूछा-भाई! तेरा नाम क्या है, उस ने

उत्तर दिया हे महाराज! मेरा नाम लहिणा है, गुरु जी सुन कर मुस्कराये और कहने लगे भाई तू लहिणा और हम ने तुम्हारा देना है आज से तुम्हारा नाम अंगद रखा जाता है, आज से तू मेरा अंग है और कभी भी जुदाई न होगी। अब तुम जाओ और कल इसी स्थान पर आना, अंगद ने सोचा यह तो कोई महा पुरुष है।

अब लहिणे से अंगद बन कर जब अपने संग में आया तो साथियों को कहने लगा-हे मित्रो! मेरी आप को राम राम है। साथियों ने कहा-क्या तुम दुर्गा के भवन तक नहीं जायोगे? उस ने उत्तर दिया, मुझे जब इसी जगह भगवान मिल जाए तो मैंने वहां जाकर क्या करना है। साथियों ने कहा-हे लहिणा हमारा क्या बनेगा। तब अंगद ने उत्तर दिया, जब तुम लौट कर यहां आओगे तब तुम्हारा भी कल्याण होगा। अब लहिणा उन को आगे विदा कर स्वयं अपने घर में आ गया, घर वालों ने पूछा आप लौट क्यों आये हैं। उस ने कहा मैं संग को आगे विदा कर आया हूं, परंतु अब मैं नहीं जाऊंगा। यह सुन कर सभी चुप हो गये। लहिणा का मन गुरु चरणों में था। श्री गुरु जी के बिना लहिणा को चैन कहां। तमाम रात तड़प कर व्यतीत की। प्रातः काल लहिणे ने अपने भाणजे को कहा-कि एक मण भर अनाज ले आओ। अब लहिणा वह भोझ उठा कर चल पड़ा।

अब लहिणा करतारपुर आकर गुरु धाम में गया। आगे माता चोणी जी बैठे थे, उन्हों ने पूछा-भाई तू कौन हैं, तथा कैसे आया हैं। आप ने उत्तर दिया मैं शिष्य होने आया हूं तथा यह भेंट आप स्वीकार करें, माता जी ने वह गठड़ी भीतर रख कर कहा-कि आप तो सामने वाले खेत में गये हैं। लहिणा तुरंत गुरु जी के निकट पहुंच गया। चरणों पर प्रणाम किया। बस गुरु जी ने उसे उठा कर अपने कंठ से लगा लिया फिर क्या था ज्योति के साथ ज्योति मिल गई। लहिणे ने सेवा से कहा-हे

महाराज! मुझे भी सेवा बखशो। गुरु जी ने कहा अच्छा यह पुल उठा कर ले चलो, जब पुल उठाया तो उस को कीचड़ लगा था। उस से लहिणे का सुंदर कुड़ता भीग गया। माता चोणी जी ने लहिणे की कमीज कीचड़ में लथ पथ देख कर कहा-हे गुरुदेव! आप का स्वभाव भी तो विचित्र है इस बेचारे को गीला घास उठवा दिया जिस से इस के वस्त्र खराब हो गये हैं। किसी और साधारण नौकर को चुका देते। यदि आप इसी प्रकार की सेवा लोगों से करायेंगे तो दुबारा कौन आयेगा। गुरु जी ने कहा-हे भोली यह कीचड़ नहीं यह तो केसर है। तिनकों की गठड़ी नहीं है यह तीन लोक का राज्य छत्र है। इसका नाम अंगद है। यह मेरे अंग से पैदा हुआ है। जब यह बात अंगद ने सुनी तो गद गद होकर गुरु जी के चरणों में लग गया। तब गुरु जी ने अंगद को उठा कर अपने कंठ से लगा कर उसे परिपूर्ण कर दिया। उस के हृदय के कपाट खुल गये। तब अंगद देव जी गुरु जी में मग्न रहने लगे।

उधर उसके संगी दुर्गा परस कर लौटे तो सभी गुरु जी के चरणों में प्रणाम करने आये। गुरु जी ने सभी को उपदेश देकर विदा किया। परंतु अंगद जी वहां रहे अब गुरु जी की अनन्य भक्ति सेवा करनी अंगद जी की नित्य क्रिया हो गई।

एक दिन अंगद देव जी गुरु जी के लिये जल लेकर आ रहे थे, तब एक लड़की सोलां वर्ष की आयु परम सुन्दरी लाल वस्त्र पहने अंदर से बाहर को जा रही थी। उस से अंगद जी ने पूछा कि तुम कौन हो? उसने कहा-मैं दुर्गा भवानी हूं मैं नानक द्वार की सेवा करके लौट रही हूं। सुन भाई जो कुछ मैं अपने परम भक्तों को प्रदान करती हूं। वह सभी कुछ मैं इसी नानक से मांग कर ले जाती हूं तथा अपने भक्तों को दे देती हूं। यह सुन कर लहिणा तो अवाक रह गया तब से उस की श्रद्धा गुरु चरणों में और भी अधिक हो गई। सोने पर सोहागे का

काम हो गया। एक दिन अंगद जी गुरु जी को मुठी चापी कर रहे थे तब क्या देखा कि गुरु जी के पवित्र शरीर पर कुछ दाग पड़ रहे हैं जैसे कंटक लगे हों। अंगद जी ने पूछा-हे महाराज! यह कंटकों के दाग आपके पवित्र देह पर आज क्यों देख रहा हूं। गुरु जी ने कहा-हे अंगद मेरा प्रण है कि जहां कोई बाणी में से सोहले का पाठ करे तो मैं उसी ही स्थान पर जा पहुंचता हूं। इस समय एक सिख जो भेड़ बकरी चारने वाला है, वह आरती सोहला गाता है और साथ साथ भेड़ बकरी चरा रहा है। वहां कंटक सहित वृक्ष हैं वह मेरे बदन में चुभ रहे हैं क्योंकि मैं उसके साथ साथ आरती सोहिला सुनता जा रहा हूं। तब श्री अंगद देव जी ने कहा-हे कृपा नाथ! आप धन्य हो।

दूसरे दिन अयाली सिख को मिल कर अंगद जी ने कहा-हे प्यारे! तूं आरती सोहिला अपने पलंग पर बैठ कर पढ़ा कर, फिर सारी व्यतीत वारता सुनाई और सभी को कहा कि आप सोते समय अपने अपने घर में बैठ कर आरती सोहला पढ़ा करो, गुरु जी तुम्हारे सदा अंग संग रहेंगे। तब सारी संगत ने श्री अंगद जी का कथन स्वीकार किया और अपने अपने घर को रवाना होने से पहिले गुरु जी के जगत उदारक पवित्र चरणों में प्रणाम करने लगे पश्चात् गुरु जी के जयकारे बुला करके अपने अपने घर की ओर रवाना हुए।

अंगद देव जी तीन वर्ष तक गुरु नानक देव जी की सेवा करके और गुरु आज्ञा पाकर मते की सराय अर्थात अपने घर की ओर रवाना हुए।

जब लहिणा घर पहुंचा तो लोगों ने पूछा हे लहिणा! क्या तुम देवी की यात्रा को नहीं गये और इतनी देर नानक देव जी के पास ही रहे हो। हरिके नगर के अनेक नर नारी लहिणा के निकट एकत्र हो गए उन के मन में यह चाव था कि लहिणा श्री गुरु नानक देव जी के निकट रह कर आया है, एक तख्तमल चौधरी था जो लहिणे का परम मित्र

था उसे भी श्री गुरु नानक देव जी की बाणी से प्रेम था, उसने सुना कि लहिणा गुरु जी की सेवा में रह कर आया है तब वह भी यह विचार कर मिलने को आया कि गुरु नानक देव पूर्ण पुरुष हैं उस के निकट रह कर लहिणा भी अवश्य पूर्ण हो गया होगा। जब चौधरी ने लहिणा जी के चरणों में नमस्कार करना चाहा तो लहिणे ने तख्तमल्ल को गले से लगा कर कहा-हे मित्र! मित्रों को कंठ से लगाया जाता है तुम मेरे चरणों पर क्यों पड़ रहे हो। उस चौधरी ने कहा-हे भाई लहिणा! तुम एक महापुरुष के संसर्ग से आ रहे हो, तो अवश्य ही तुम भी महापुरुष हो गए होंगे। इस लिये आप के चरण स्मरण में ही कल्याण है, लहिणे ने कहा-चौधरी देखने और सुनने में बहुत अंतर है। एक बार तुम भी श्री गुरु नानक के दर्शन अवश्य करो, तब आप को अत्यंत सुख होगा। लहिणा (अंगद देव) ने एक शब्द सूही राग में उच्चारण किया-

राग सूही महला २ ॥

जिन भाउ भांडे भाउ तिनां सवारसी ॥
सूखी करे पसाउ दुख विसारसी ॥
सहसा मूले नाहि सरपर तारसी ॥
तिना मिलिआ गुर आइ जिन कउ लीखिआ ॥
अमृत हरि का नाउ देवे दीखिआ ॥
चालहि सतिगुर भाइ भवहि न भीखिआ ॥
जा कउ महिल हजूर दूजे निवे किस ॥
दर दरवानी नाहि मूले पुछ तिस ॥
छुटै ताके बोल साहिब नदरि जिस ॥
घल्ले आणे आप जिसु नाही दूजा मते कोइ ॥
ढाहि उसारे साजि जाणे सभ सोइ ॥
नाउ नानक बखसीस नदरी करमु होइ ॥

॥ वार्तक ॥

जब श्री अंगद देव जी गुरु जी से विदा होकर घर जाने लगे थे तब श्री गुरु नानक देव जी ने कहा-हे भाई! तूं मेरे निकट ही निवास कर उसी बात को स्मरण करके अंगद देव जी ने शीर्घ ही गुरु जी के निकट आकर चरणों पर नमस्कार किया। तब श्री गुरु जी ने अपनी दिव्य ज्योति का संचार श्री अंगद देव जी में भी कर दिया, तब अंगद देव ने कहा-हे मेरे प्यारे गुरु देव आप सर्वज्ञ और सर्वकला पूर्ण हैं। हे प्रभु! आप की कृपा दृप्टि मोक्ष का फल देने वाली है और आप अद्वितीय हैं तथा अपार हैं।

एक दिन प्रातः काल सूर्यादय के एक पहर पूर्व श्री गुरु जी महाराज स्नानादिक करके और वस्त्र पहन कर इस प्रकार ईश्वर स्तुति करने लगे। जगदीश्वर परम धाम परमेश्वर परमात्मा आप धन्य हैं आप की स्तुति शिव ब्रह्मा विष्णु इन्द्र कुबेर आदि भी नहीं कर सकते। तब मेरे जैसा तुच्छ जीव आप की स्तुति करने में किस प्रकार सामर्थ्य हो सकता है। मैं तो आप के दासों का भी दास हूं। आप की महिमा अपार तथा अनीह है। हे सर्व जगत संचालक निरगुण निरंकार जगत के उत्पन्न करने वाले परमात्मा आप की महिमा का दिगदर्शन सूर्य चंद्र तथा पवन नक्षत्रादिक द्वारा प्रकट हो रहा है, वृक्षों में आप का स्वरूप हरित वर्ण द्वारा दृष्टिगोचर हो रहा है पुप्पों की सुगंधि आप की महिमा दरसा रही है, समुंद्र की गहिराई तथा बड़े बड़े पर्बतों की ऊंचाई आप की महिमा मुकत कंठ से गायन कर रही है, हे अनाथों के नाथ! यह सम्पूर्ण जगत नारी स्वरूप है। इस में आप ही एक पुरुप हैं। जगत प्रकृति है, तथा आप परिपूर्ण ब्रह्मा हैं। आप ही बाज रूप होकर संसार का महान क्षेत्र उत्पन्न करने में सामर्थ हैं। हे कृपा के सागर वाहिगुरु! सूर्य चंदर आदिक अधार बिनां जिस के आश्रित खड़े ही नहीं अपितु आप की शक्ति का प्रदर्शण कर

रहे हैं, वह शक्ति आप का ही प्रत्यक्ष रूप है। हे सर्वव्यापक! बिना आप की सता के यह जगत एक क्षण के लिये भी स्थिर नहीं रह सकता। हे देवन के देव परमात्मा! जितने भी देवता हैं, सभी आप के द्वार के द्वारपाल हैं आप ही उन सब के भूपा हैं। हे कृपालु! मैं अधिक कया कहूं। हे ईश्वर आप अजन्मे ही संसार की माया से आप दूर हो। आप अनादि अचिंत हो, अगाध हो, अनीह हो, अपार हो, अतीत हो, अभेद हो। हे परमात्मा! इस संसार में प्रतयेक जीव का एक ही आधार है। वह है आप का नाम। जो स्वरूप से हीन होकर भी स्वरूपवान है। जो हाथ पांव के बिना भी सभी काम करने में सामर्थ है वही परमेश्वर है यह मेरी भावना आप के प्रति सदैव बनी रहे। हे प्रभु! आप यह मुझ को वर प्रदान कीजिये। मैं आप से कभी भी विमुख न हो सकूं। प्रतिक्षण आप की महिमा को गायन करता रहा करूं और स्वास स्वास आप का पवित्र नाम आनंदपूर्वक जपता रहूं। यह मेरी हार्दिक अभिलाषा है। आप इस को पूर्ण करो।

श्री गुरु जी महाराज ने प्रार्थना की आड़ में जब इस पवित्र उपदेश को कथन किया, तब श्री अंगद देव जी ने गुरु के चरण कमलों पर अत्यंत श्रद्धा से प्रणाम किया तथा कहा हे गुरु देव! जो परमेश्वर के प्यारे एक पहर भी उस का स्मरण करते हैं वे धन्य हैं तथा जिन के मन में निरंतर वाहिगुरु का निवास होता है। उनकी महिमा कौन कह सकता है, उसके चरणों पर मेरी कोटि नमस्कार है। गुरु जी ने कहा-हे प्यारे पुत्र अंगद! हम ने तुम्हारे सिर पर हाथ रखा है, बेटा तुम भी उस परमात्मा की स्तुति करो। तब अंगद देव जी ने कहा-हे महाराज! जिस के सिर पर आप का पवित्र हाथ हो वह जीव तो जीवन मुक्त हो जाता है। जो महा पुरुष परमात्मा के नाम निसिदिन रंगे हुए हैं, जिन का खान पान तथा अन्य क्रियावें सभी उसी को अपर्ण हैं जो यह जानते हैं कि

सभी कुछ करने तथा कराने वाला वाहिगुरु ही है, उस की आज्ञा के बगैर जो कुछ भी कार्य नहीं मानते वह महा पुरुष धन्य हैं। उसकी भी जिस पर कृपा होती है, वे भी इस संसार को अनायास ही तर जाते हैं। संसार में रहते हुए भी संसार से बाहर रहते हैं जैसे कमल का पुष्प पानी में सदैव रहता हुआ भी पानी की लाग से दूर है। जल का अंश उस पर अपना प्रभाव नहीं रख सकता, वे महा पुरुष निरलेप होते हैं। वैसे तोखान पानादिक समस्त क्रिया ये उस का भी साधारण पुरुषों की भांति ही होती है। परंतु उन के मनोरथ साधारण नहीं होते उन में असाधारणता पाई जाती है। वह असाधारणता प्रत्येक दृष्टिगोचर नहीं होते उसे देखने के लिये भी दिव्य चक्षु की आवश्यकता है तथा वे दिवज चक्षु आप जैसे महा पुरुषों की ही कृपा से प्राप्त होते हैं, हे गुरु देव! प्रमात्मा के गुणानुवाद गायन करने तथा आप के गुणानुवाद गायन करने की एक ही बात है, क्योंकि आप में और परमेश्वर में कोई भेद नहीं है। वह ईश्वर नानक है तथा नानक ही ईश्वर है। जैसे जल और जल की तरंगे तो सही है केवल नाम का ही भेद है। वह भेद भी पदार्थ रूप है जैसे किसी ने पानी कह दिया और किसी ने जल कह दिया। वास्तव में वस्तु एक ही है ऐसे ही नानक देव तथा वाहिगुरु पदार्थ में एक ही है केवल नाम में भेद दृष्टि गोचर होता है। यह भेद भी दृष्टि का विकार है, जिस की दृष्टि त्रिकार शून्य है उन को यह भेद भी नजर नहीं आता। जैसे पीत वर्ण के चश्मा लगाने से वस्तु पीत वर्ण की नज़र आती है, यथार्थ में वह वस्तु पीतवर्ण की नहीं होती, जब चश्मा उतारा जाय तब वे वस्तु पीत वर्ण की नहीं होती। उसी प्रकार जब तक भेद दृष्टि इस जीव की होती है, तब तक ही इसे नानक और निरंकार में भेद नज़र आता है। जब भेद दृष्टी दूर हो जाती है। तब उसे नानक और निरंकार एक ही नज़र आते हैं, हे गुरु देव! आप धन्य हैं।

हे महाराज! जिन पर ईश्वर की अपार कृपा होती है। उनको ही आप जैसे सवर्ज्ञ गुरु प्राप्त होते हैं। फिर उस जीव को स्वयं ही सभी कुछ प्राप्त हो जाता है, वही पुरुष गुरु बाणी से प्रेम करता है और प्रातः काल निदरा आलस्य को त्याग कर परमेश्वर से प्रेम करता है और प्रभु चिंतन करता है, गुरुदेव! मैं अधिक क्या कहूं। अधिक कथन से दृष्टा पाई जाती है। हे प्रभु! आप की अपूर्व कृपा मुझ दास पर सदैव काल इसी प्रकार बनी रहे।

एक दिन प्रातः काल श्री गुरु नानक देव जी तथा अंगद देव जी रावी में स्नान करने गये। शीत बहुत पड़ रही थी रावी के ठंडे जल में जब गोता लगाया। तब अंगद देव जी को अत्यंत सर्दी लगी। जिस से वह अचेत हो गये। उधर श्री गुरु नानक देव जी महाराज स्नान कर के रावी के जल में ही खड़े होकर ध्यान में मगन हो गये। जब श्री गुरु जी बाहर आये तब अंगद जी को अचेत पाया। फिर गुरु जी ने अपना दक्षिण चरण अंगद देव जी के शरीर को लगा कर कहा-हे बेटा! चेतना प्राप्त करो। उठो अब लौटना है। हे पुत्र! मैं जो कुछ भी कर रहा हूं वह सभी कुछ तुम्हारे लिये ही कर रहा हूं। जो भंडार मैं तुझ को दूंगा वह भंडार तेरे से सभी संगत प्राप्त करेगी। उठो जल्दी करो। यह सुन कर श्री अंगद देव जी तुरंत चेतना में आ गये।

साखी महान कौतक

एक समय बहुत वर्षा हुई तथा गुरु जी के लंगर में अन्न के अभाव से चौंका चूल्हा ठंडा ही रहा। जब तीन दिन के पश्चात् वर्षा हटी। तब संगत ने कहा हे महाराज! सभ लोग भूख से व्याकुल हो रहे हैं। गुरु जी ने श्री चंद्र जी से कहा-हे बेटा! बाहर जो किकर का वृक्ष है वहां जाकर किकर के वृक्ष को ज़ोर से हिलाओ ऊपर से बहुत बढ़िया मिठाई

गिरेगी, उसे लाकर संगत में बांट दो। श्री चंद्र जी ने कहा-हे पिता जी कभी किकर के वृक्ष भी मिठाई देते हैं। फिर लक्ष्मी दास जी को गुरु जी ने वही आज्ञा दी, उस ने भी कहा पिता जी आप भोली बातें करते हैं। मिठाई वृक्षों पर नहीं होती। इस प्रकार जब दोनों पुत्रों ने इन्कार किया तब गुरु जी ने अंगद देव जी की ओर देखा। अंगद जी तुरंत उठ कर चल दिये। जब किकर पर चढ़ कर उसे ज़ोर से हिलाया तब लड्डू पेड़ा अमृती रसगुल्ला मेसू बालूशाही अनेकों किस्म की मिठाई गिरी जो तमाम जनता ने बड़े प्रेम से खाई। गुरु जी ने कहा हे भाई! तूं कृत कृत्य हैं, अंगद देव जी ने गुरु चरणों में नमस्कार कर कहा-हे महाराज! यह सभी आप की कृपा का स्वरूप है, हे महाराज! नहीं तो मुझ में क्या सामर्थ्य है, गुरु जी ने कहा-मैंने तुम को अपनी ज्योति में मिला लिया है। तब सभी लोग प्रसन्नता से सत्य श्री अकाल के गगन भेंदी जयकारे लगाने लगे। धन्य श्री गुरु नानक देव जी महाराज!

महा प्रस्थान की साखी

भाई बाले ने कहा-हे महाराज अंगद देव जी! अब हम सब की सतगुर श्री नानक देव जी महाराज की महा यात्रा सुनने की इच्छा है कृप्या आप सुनायें अर्थात् महाराज का महा प्रस्थान किस प्रकार हुआ, अंगद देव जी ने कहा-आप यह साखी भाई बुढ़ा जी से सुनो तो अच्छा है, क्योंकि जैसे आप को एक बार गुरु जी ने तलवंडी भेज दिया था उसी प्रकार गुरु जी ने मुझे खडूर में भेज दिया था और भाई बुढ़ा जी ने महाराज की अंतिम लीला देखी है। इस लिये उन से सुनना उचित है। तब भाई बाले ने कहा-हे भाई बुढ़ा जी! आप पूर्ण सिख हैं तथा श्री गुरु नानक देव जी के परम प्यारे हैं आप हम लोगों पर कृपा कर के उन्हों के चलाने की साखी कहने की कृपा करें।

भाई बुढ़ा जी कहने लगे, एक दिन नानक देव जी के पिता श्री कालू जी ने कहा-हे बेटा नानक! मुझे रात्रि के समय स्वप्न में पितरों ने कहा है कि तुम बैकुंठ में आ जाओ। तब गुरु जी ने कहा हे पिता जी! जहां आप की इच्छा हो वहां रहो, कालू जी ने कहा-हे बेटा! तेरी कृपा से हम लोग शरीर से तो न्यारे है, जन्मना और मरना यह तो शरीर का धर्म हैं, हमें तो तुम्हारे दर्शनों की लालसा रहती है। गुरु जी ने कहा हे पिता जी! आप बैकुंठ को चलो, तथा हम भी तुम्हारे पीछे पीछे आते हैं, यह सुन कर कालू बेदी ने अपनी तमाम सम्पदा आधी तो अपने दोनों पोत्रों को अर्थात् श्री चंद्र तथा लक्ष्मी दास को दे दी, और आधी संम्पदा दान कर दी, तथा रावी नदी के तट पर आसन लगा कर स्वास नियम प्रारम्भ कर दिया, दशम द्वारे के रिंडसे अपने प्राण त्यागन किये, तब गुरु जी ने अपने पिता जी के शरीर का अंतिम संस्कार बहुत ही श्रद्धा से किया। अनेकों प्रकार के दान दिये, साधुओं गरीबों को भोजन वस्त्र आदिक दिये गये, उन के चतुर्थ दिन को माता तृप्ता जी ने भी अपना नश्वर शरीर त्याग दिया उसी प्रकार रावी के तट पर गुरु जी ने माता का भी अंतिम संस्कार विधिवत किया, दान पुण्यादिक सभी काम प्रेम भाव से किया गया, गुरु जी ने तमाम संगत को प्रेम सुंदर उपदेश दिया।

गुरु जी करतार पुर में एक पिपल के नीचे अपना पलंग बिछा कर बैठे रहते थे। गुरु जी के घर में एक कमलिआ सिख सेवक था। वह घास लेने बन को गया तो उसे तीन योगी मिले उन्हों ने कमले को बुला कर कहा-हे कमलिआ! वे जो मिट्टी का ढेला पड़ा है इसे उठा कर हमारी ओर से गुरु नानक देव जी को हमारा संदेश देना। उस ने कहा जी मैं घास खोद कर ले जाऊंगा तब आप का संदेश दे दूंगा। तब एक योगी ने अपने योग बल से वहां घास का ढेर लगा दिया, और कहा

ले भाई! जितना तुम्हें घास चाहिये उतना उठा ले। कमलिये ने घास उठा लिया और मिट्टी का ढेला भी ले लिया। गुरु जी के निकट आ कर घास फैंक दिया और मिट्टी का ढेला गुरु जी के आगे रख दिया। गुरु जी ने कहा हे कमलिये! आज तो तुम बहुत ही शीघ्र आ गये हो। क्या घास किसी दूसरे का ले आये हो तब कमलिये ने कहा कि बाहर जंगल में तीन योगी मिले हैं, उन्होंने यह मिट्टी का ढेला दिया है और कहा है कि गुरु जी को हमारा संदेश दे देना। सो मैंने संदेश आप को दे दिया है। गुरु जी ने तीन बार कहा हे कमलिये हमारा संदेश लाये हो। फिर कहा हे कमलिये साधारण को बुला कर ले आओ। कहना कि दो बाही और मुंज का वाण ले करके शीघ्र ही आओ। गुरु जी प्रसाद भी साधारण के घर से ही खाया करते थे तथा वस्त्र भी साधारण के दिये हुए ही पहना करते थे। कमलिये ने साधारण को जाकर कहा हे साधारण! आप को गुरु जी बुला रहे हैं, दो बाहीं और मुंज का वाण साथ लेकर जल्दी ही चलो। उस ने कहा हे भाई! मैं भोजन कर लूं कमलिये ने कहा-यह तो आप को आज्ञा नहीं है अच्छा खा लो अंत में साधारण गुरु जी के निकट जा कर प्रणाम करके कहने लगा हे महाराज! इतने उतावले भाव से आप ने किस लिये याद किया है। गुरु जी ने कहा-हे साधारण! कमलिये ने हमें महा यात्रा का संदेश ला कर दिया है तू हमारे साथ बेले में चल। तब गुरु जी और साधारण दोनों बेले में गये। गुरु जी का अपना खेत जो आठ बीघा में होगा। वहां जाकर कहा-हे साधारण! वह स्थान कैसा है? साधारण ने कहा-हे महाराज! यह स्थान तो उत्तम है। गुरु जी ने कहा हमारी लकड़ी यहां एकत्र करनी। परंतु यह बात किसी को नहीं कहनी फिर गुरु जी ने लौट कर कहा हमारी चादरें धो लाओ। तब साधारण जा कर चादरें धो कर ले आया। गुरु जी ने कहा इसे हमारी कोठरी में रख छोड़ और हमारा

घर अच्छी प्रकार पोच कर ठीक कर दे। परंतु जपु साहिब का पाठ करते रहना। साधारण ने वैसे ही किया। जब मकान ठीक हो गया तब साधारण ने गुरु जी के आगे प्रार्थना की कि हे महाराज! आप चल कर देख लो। गुरु जी देख कर अति प्रसन्न हुए। तब साधारण को गुरु जी ने आर्शीवाद दिया।

आगे साखी और चली

एक दिन गुरु जी महाराज करतार पुर में धर्मशाला में बिराजमान थे तो विचार हुई कि अब हमें उस निरंकार परमात्मा के पास पहुंचना उचित है। उधर श्री परमात्मा सच्चखंड में सभा लगा कर बैठे थे, तमाम मुक्त जीव हाथ बांध अपने अपने स्थान पर खड़े थे। भगवान ने कहा-हे भक्तो! मेरा परम प्यारा भक्त जिस का नाम नानक देव है, वह मेरे लोक में आना चाहता है। तब सभी ने कहा-हे महाराज! नानक देव तो आप का परम भक्त है उस की इच्छा पूरी करो। फिर सारे जगत के स्वामी परमात्मा ने अपने पवित्र दूतों को आज्ञा की कि जाओ नानक देव को आदर सत्कार के साथ लेकर आओ। वह भगवान के दूत श्री गुरु जी के निकट आ कर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगे-हे महाराज! आप के मन में बैकुंठ जाने की जो विचार हुई, उसी को पूरा करने के लिये परम ब्रह्म परमात्मा की आज्ञा मान कर हम लोग आप के पास उपस्थित हुए हैं कि आप बैकुंठ लोक में हमारे साथ पधारो, आप के निवास के लिये सच्चखंड में महल बनवा कर सजाये गए हैं। तब गुरु जी ने कहा-हे मेरे स्वामी! आप धन्य हो! आप बगैर कौन है जो मुझ दास की कामनायें पूर्ण करे, यह कह कर सेवकों के साथ जाकर गुरु जी ने भगवान के चरणों पर नमस्कार की तब परमात्मा ने कहा-आओ प्यारे नानक! तू तो मेरा परम भक्त हैं, तेरे मन में मुझे मिलने की इच्छा थी, सो हम

ने पूर्ण कर दी है। तब गुरु जी ने कहा-हे प्रभु आप धन्य हो। आप के बिना मेरे मन को कौन जान सकता है तथा मैं तो आप के चरणों का दास हूं। तब निरंकार ने कहा-हे नानक! तुम ने अपने उतराधिकारी अंगद को यही समझाना कि तुम्हारे सदृश्य मेरे नाम स्मरण में संसार को लगाये और जो पद्धिति तुम ने अपनाई है उस से इधर उधर नहीं होना, फिर गुरु जी करतार की बात भली प्रकार समझ कर वापस मात लोक में लौट आये तथा फिर उसी समय श्री अंगद देव को बुला कर सभी बात समझा दी और पांच पैसे नारियल अंगद देव जी के आगे रख कर तथा परिक्रमा करके गुरु नानक देव जी ने अंगद देव के चरणों पर प्रणाम किया, तथा अंगद देव जी ने गुरु जी को नमस्कार किया और कहा हे महाराज! आप ने मुझे नमस्कार किया है इस से तो मुझे पाप लगेगा। गुरु जी ने कहा-हे अंगद देव! तुम अपना स्वरूप पहिचानो, मेरी और तेरी चैतनय कला एक हुई है। जैसे सौ घट पानी का है परंतु सूर्य एक है परंतु प्रत्येक घट में प्रतिबिंब पृथक है। वैसे ही सर्व शरीरों में परमात्मा एक जैसा ही विराजमान है, तुम तो पूर्ण ज्ञान को जानते हो, जिस ज्ञान शक्ति का संचार आप में हुआ है हम ने तो उसे ही नमस्कार किया है। इतनी कह कर गुरु नानक देव जी ने गुरु अंगद को कंठ से लगा लिया और गुरु गद्दी पर बैठा दिया और तमाम संगत को आज्ञा हुई कि इस को नमस्कार करो तथा हमारा रूप जानो, फिर गुरु जी ने अपने पुत्रों को बुलाया परंतु उन्होंने देर कर दी। फिर भाई बूढ़े को आज्ञा हुई कि अंगद देव को तिलक लगा दो, तिलक किया गया।

फिर गुरु जी ने कहा-हे अंगद देव! अब तुम खडूर में जा कर निवास करो, क्योंकि यहां रहने से परस्पर वाद विवाद का भय है। श्री चंद्र आदिक तुम से झगड़ा करेंगे। तब अंगद जी ने कहा-हे महाराज! मैं

आप की अंतिम यात्रा के समय आ जाऊं। गुरु जी ने कहा-हम तुम्हारे भीतर से हो कर ही जायेंगे परमात्मा की यही आज्ञा है। जैसे परमात्मा की हमें आज्ञा हुई वैसे हम ने किया तुम ने भी इसी प्रकार करना होगा। ईश्वर नाम स्मरण तथा दीनों पर दया, श्रद्धा प्रेम और परमात्मा पर पूर्ण विश्वास बांट कर खाना चोरी व्यभिचारी से दूर रहना तथा सत्य बोलना यही मनुष्य जीवन का महान कर्तव्य है। अब हम उस महान ज्योति का दर्शन करने के लिए महा यात्रा कर रहे हैं। यदि आप ने कुछ और पूछना हो तो निःसंकोच पूछीये।

गुरु जी के यह वाक्य सुन अंगद देव का मन पसीज गया उन के नेत्रों में आंसू आ गए। तब गुरु जी ने उपदेश द्वारा उनको शांत किया, फिर गुरु जी ने स्नान किया और अंगद देव को रवाना किया, अंगद देव अनेक दिन पूर्व गुरु से बिछुड़ कर खडूर में आ गये तथा गुरु नानक देव करतार पुर में ही बिराजते रहे, नित्य कीर्तन उपदेश आदिक होता रहता था, संगत मिल कर जपुजी का पाठ, आसा की वार, आरती, सोहिला आदिक पूर्ण कार्य करते। गुरु जी ने अपने मुखारबिंद से परमेश्वर का जाप कहा जो परमेश्वर सतचितआनंद रूप है और तीन गुणों से रहित है। जन्म मरण हानि लाभ सुख से अतीत हैं। सांसारिक विकारों से परे है ऐसे ईश्वर को जपने वाला ईश्वर में ही समा जाएगा तथा महान में जाकर स्वयं महान हो जाएगा।

इस के पश्चात् गुरु जी ने एक परदा तनवां दिया और सभी सामान अपने निकट रख लिया। धरती पर बिस्त्र बिछा कर तथा दो चादरें ओड़ कर पदमासन लगा कर बैठ गए और भीतर किसी को न आने का आदेश दिया। जब एक प्रहर रात्रि शेष रह गई तब श्री गुरु नानक देव जी महाराज ध्यान में लीन हो गए। तब श्री पारब्रह्म परमेश्वर स्वयं गुरु जी के निकट आये जब भगवान कनात में पहुंचे महान प्रकाश जनता

ने अपने नेत्रों द्वारा देखा। बैकुंठ में जो मुक्त पुरुष थे वह सभी गुरु जी का स्वागत करने के लिए तथा दर्शनों के लिए उत्सक हो रहे थे सभ ने आश्चर्य हो कर देखा कि एक महान भगत को सर्वकला पूर्ण भगवान स्वयं लेने को गए हैं। आज तक यमदूत पापियों को लाने के लिए जाते हैं तथा महापुरुषों को ईश्वर के पारपद जाया करते हैं परंतु श्री गुरु नानक देव जी को सर्व शक्तिमान परमात्मा स्वयं मात लोक के करतारपुर कसबे में पधार रहे हैं। यह अचंभा नहीं तो और क्या है? धन्य हैं श्री गुरु नानक देव जिन को ईश्वर स्वयं लेकर पधारे हैं। ब्रह्मा विष्णु महेश दिनेश गणेश शेष आदिक तेतीस करोड़ देवता भी परमात्मा के साथ करतारपुर में पधारे। कहां तक कहा जाये सिद्ध पक्ष गंधरव योगी यति तथा अपसरायें भी श्री गुरु जी के पवित्र दर्शनों को उपस्थित हुए। तब गुरु जी ध्यानावस्था से उत्थान अवस्था में हो कर भगवान को नमस्कार करने लगे तथा कहने लगे मेरे अहोभाग्य हैं जो आज मैं अजन्मे भगवान को चर्म चक्षुओं द्वारा देख रहा हूं। मैं एक तुछ जीव हूं तथा स्वयं परमात्मा मेरे निकट पधार रहे हैं यह मेरे परम भाग्य हैं। जब प्रभु ने कहा-हे नानक देव! तुम ने मुझे भक्ति की जंजीरों से कस कर बांध लिया है। मुझे केवल भक्ति ही प्यारी है, मैं न तो उच्च वर्ण देखता हूं तथा मैं न विद्या देखता हूं। आचार विचार व्यवहार आदिक नहीं देखता। मुझे धन-बल ऐश्वर्य तथा सुंदरता वा बुद्धि कुछ भी नहीं भाते। मैं तो प्रेम भक्ति को देखने वाला हूं। सो हे नानक! तेरे में प्रेम भक्ती का सागर ठाठें मार रहा है, जिस पर मैं प्रसन्न हो कर तेरे दर्शनों को चला आ रहा हूं। मुझे अपने आप से भी अपने भक्त अधिक प्रिय होते हैं, मैं भक्तों के लिये जो कुछ नहीं करना होता वह भी करने को तैयार हो जाता हूं। भक्तों के लिए अनेक बार अवतार भी धारण कर लेता हूं। तुम्हारा दर्शन करके मैं अपने को धन्य मानने लग जाता हूं।

अब मैं तुम को अपने लोक में रखूंगा जो नर नारी तेरी पवित्र बाणी पढ़ेगा अथवा सुनेगा, उसे भी मुक्ति प्रदान करूंगा। संमत विक्रमी १५९६ अश्विन वदी दशमी के दिन श्री गुरु जी को साथ लेकर सर्व शक्तिमान परमात्मा अपने बैकुंठ लोक चले गये अर्थात अशिवन वदि दशमी के दिन १५९६ संमत में गुरु नानक देव जी महाराज का महा प्रस्थान हुआ। प्रहर रात्रि शेष थी जब गुरु जी महाराज की पवित्र ज्योति उस महान ज्योति में तदाकार हो गई, जैसे घट का जल समुंद्र के जल में अभेद हो जाता है। सारे परिवार में शोक के बादल छा गए, सभी के नेत्रों से जल बहने लगा। तब मुसलमान पठान मिल कर दर्शनों को आ गए, हिन्दूओं ने कहा-हे मित्रो! अब आप का समय नहीं है, क्योंकि गुरु जी तो सदैव के लिए हमें विछोड़ा दे गए हैं। उन्होंने कहा-नहीं नहीं यह तो हमारे पीर मुर्शद थे, हमें इनके दीदार से कोई भी नहीं रोक सकता। हम तो इनका सभी काम इसलाम के मुताबक करेंगे, हिन्दूओं ने कहा नहीं नहीं श्री गुरु नानक देव जी पूर्ण हिन्दू थे। क्षत्री के सूर्य थे मुसलमानों को कोई अधिकार नहीं है। इन को विधि के अनुसार जलाया जायेगा, कौन है जो इन को अंध मत के कहे। हिन्दुओं और मुसलमानों में इसी विवाद में जब झगड़ा बढ़ने लगा तब कुछ समझदारों ने दोनों ओर के आवेश में आए हुए हिन्दूओं तथा मुसलमानों में शांति का उपदेश दिया और कहा चलो भीतर चल कर प्रथम गुरु जी का अंतिम दर्शन तो करें।

जब सब लोग भीतर आए जहां गुरु जी का पांच भौतिक पवित्र शरीर पड़ा था। वहां आकर देखा तो बस केवल चादर ही चादर थी शरीर का कहीं नाम तक नहीं था, हिन्दू और मुसलमान दोनों ही अवाक रह गए। सभी झगड़ा दूर हो गया, और परेशानी से एक दूसरे की ओर देखने लगे। जो निरपक्ष सेवक थे वे एक ही बार बोल उठे धन्य हैं श्री

गुरु नानक देव धन्य आप की लीला! कोई कहे हैरान होने की कोई बात नहीं है गुरु जी तो साक्षात पूर्ण ब्रह्म थे। कोई कहे महाराज आप को किसी मजहब का बंधन बांध नहीं सकता था हिन्दू और मुसलमान इन को परस्पर झगड़ते देख कर गुरु जी ने स्वयं सभी फैसला कर दिया है, झगड़ा तो शरीर का था सो गुरु जी तो अपना शरीर भी साथ ही ले गये हैं तांकि शरीर न होगा तो दोनों पक्ष नहीं झगड़ेंगे। धन्य श्री गुरु नानक देव! फिर दोनों ही कौमों के नेता एकत्र हो कर गुरु जी के गुणानुवाद गायन करने लगे। अब पशचाताप की ओर ध्यान गया। हिन्दूओं ने कहा-भाई! हमारे हाथ में हीरा आया था, हम पहिचान नहीं सके और हम कोई भी सेवा न कर सके, यह हमारे अति दुर्भाग्य हैं, भवसागर के मल्लाह को पा कर भी हम मूर्ख जीव गुरु जी के उपकार से वंचित रह गये, हा! शोक महा शोक! फिर मुसलमान बोले कि गुरु जी तो हमें जनत में ले जाने के लिए आए थे। अल्लाह में और आप में कोई भी फर्क नहीं था। हाय! हम ने कोई भी फायदा नहीं उठाया। हम पूरे नाअहिल साबत हुए जो बाबा जी की पहिचान नहीं कर सके। इस प्रकार दोनों कौमें पश्चाताप कर रही थी। फिर यह कहने लगे भाई! गुरु जी ने तो दोनों कौमों को एक जैसा दिव्य उपदेश दिया है। दोनों को ही भवसागर से पार उतारा है। धन्य है वे लोग जो बाबा श्री गुरु नानक जी के पवित्र उपदेश को मान कर उन के हो गए हैं।

अंततोगत्वा-गुरु जी की चादर के दो टुकड़े किए गए। आधी हिन्दूओं ने लेकर विमान बना कर चिता में विधि अनुसार जला दी तथा आधी को मुसलमानों ने शर्ह के मुताबिक दफन कर दिया तथा दोनों ने अपने अपने मत के अनुसार सभी कार्य पूर्ण कीए। श्री गुरु नानक देव जी महाराज इस शरीर के सहित ही बैकुंठ को गए हैं। यह कथा बाबा बुढ़ा जी ने श्री अंगद देव जी तथा भाई बाले की उपस्थिती में

जनता को सुनाई। तब गुरु अंगद देव जी ने फुरमाया हे सज्जनों! जो भाग्यवान पुरुष श्री गुरु जी के उपदेश को मानेगा और बाणी पढ़ेगा धर्म कर्म में मन लगायेगा श्री गुरु जी की साखियें (लीला) सुनेगा या सुनायेगा। वह नर नारी मुक्ति को प्राप्त करेगा और अंत में श्री गुरु जी के पवित्र धाम में जाएगा फिर भाई बाला ने प्रेम से प्रणाम किया और कहा-इन महान पवित्र साखियों को लिखने लिखाने वाला भी मोक्ष पायेगा।

जन्म साखी भूमिका

संमत १५२० विक्रम से आज तक जितनी भी जन्म साखियें श्री गुरु नानक देव जी की बन चुकी हैं भले ही उन के लेख परस्पर मिलते नहीं हैं। फिर भी उदेश्य सभी का एक ही है। गुरु जी का जन्म अनेकों पुस्तकों में और नानकप्रकाश के लेखक भाई संतोख सिंह जी ने कार्तिक पूर्णमाशी का लिखा है तथा भाई मणि सिंह जी और वलायत वाली साखी में गुरु जी का जन्म वैशाख शुद्धि तृतीया का लिखा पाया जाता है।

जहां तक खोज का संबंध है वहां तक गुरु नानक देव का जन्म वैशाख शुद्धि तृतीया का ही सिद्ध होता है। परंतु जो बात सत्य अथवा प्रवाह रूप से प्रचलित हो जाय उस को बदलना अत्यंत कठिन हो जाता है। यदि कोई वीर उसे ठीक करने की चेष्टा करता है तो साधारन जन समूह उसका अनुकरण नहीं करता। अतः उस का परिश्रम सफल नहीं होता परंतु हमें विश्वास है कि वर्तमान सिख नेता तथा नेतृत्व करने वाली संस्थायें एकत्र होकर इसका निर्णय कर दें तो कठिन नहीं है।

ऊपर के लिखे को पढ़ कर हमारे ऊपर शंका होगी कि यदि वैशाख का जन्म निश्चित है तो जन्म साखी में कार्तिक को क्यों लिखा गया

है। उत्तर में प्रार्थना है कि अनेकों जन्म साखियें में दो जन्म साखियें प्रख्यात हैं एक तो भाई मणी सिंह जी की ओर दूसरी भाई बाला जी की। मणी सिंह जी की तो श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के समय में बनी थी और जो दूसरी भाई बाले की है उसे श्री गुरु अंगद देव वाली भी कहा जाता है। यह गुरु अंगद देव जी के चरणों में बैठ कर भाई बाला ने लिखी थी।

जो भाई बाला ने लिखी है वह तो प्रेम के वश होकर तथा अपनी स्मृति के अनुसार लिखी गई है, और जो मणी सिंह की है वह एक ऐसे समय में लिखी गई है जिस समय सभी निर्णय करके लिखने का समय मिलता था। इस लिए वही लेख ठीक मालूम होता है क्योंकि श्री दशमेश जी ने अनेक इतिहास और अनेक अनुवाद रचे तथा रचाये हैं। जन्म साखी के लेखक मणी सिंह जी को भी गुरु गोबिंद सिंह जी ने यह आज्ञा प्रदान की हो कि जो बात लिखो वह निर्णय करके लिखो तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। दूसरे हम ने यह भाई बाले अथवा गुरु अंगद देव जी की जन्म साखी छापी है, इस लिए प्राचीन लिखे को नहीं बदला।

जब कभी हम भाई मणी सिंह वाली जन्म साखी अच्छी प्रकार निर्णय कर के छापेंगे तब इसका निर्णय करेंगे। वैसे साखियें तो बहुत मिलती हैं परंतु सत्यवान गुरु जी का धर्मोपदेश निमृता आदिक जो परम गति के साधन कहे गए हैं वे सभी में एक जैसे ही पाए जाते हैं। भेद इतना ही है कि जो साखियें विरोधियों के हाथ पड़ गई, तथा जिन में उन विरोधियों के पंथ अथवा गुरु पीर आदिक की कमज़ोरी प्रकट करने वाली साखियें थी, उन में उन्होंने गोल माल कर दी। जिससे उन के रूप पीरों की निर्बलता दृष्टिगोचर न हो सके, उदाहरणार्थ जब यह जन्म साखी हंदालियों के हाथ आई तब उन्हों ने अपने गुरु हंदाल को बड़ा

सिद्ध करने के लिये श्री गुरु नानक देव जी के ऊपर अयोग्य अक्षेप कर दिये इसी प्रकार गुरु नानक जी से कबीर को बड़ा बनाने के लिये उन लोगों (कबीर पंथीओं) ने श्री नानक देव जी से कबीर को बड़ा सिद्ध करते हुए कुछ अंड बड लिख दिया। अभी अभी एक और पंथ वाले ने एक जन्म साखी के कुछ और ही मन-मर्जी के अर्थ कर दिए, प्यारे सज्ननों! यदि कोई श्री गुरु जी का जीवन इतिहास कोई अनन्य सेवक छपवाये तो यह कभी भी संभव नहीं कि उपरोकत त्रुटियों को जान बूझ कर स्थान दे।

हम तो यह बताना चाहते हैं कि गुरु नानक देव जी ने एक ऐसे समय अवतार लिया था, जब महान अंधकार छाया हुआ था, उस काले समय में गुरु जी का संसार में आना प्रमोक्ष योगी था, गुरु जी उस समय अकाल पुरुष की आज्ञा से इसी अंधकार को दूर करने के लिए धरती पर पधारे थे, जिस से कुरीतियों तथा अधर्म का नाश हो, तथा सत्य धर्म का प्रचार हो और जगत का कल्याण हो, इस पर श्री भाई गुरदास जी कहते हैं—

जुग गरदी क्या होवे हे उलटे जुग कया होइ वरतारा। उठे गिआन जगत विचें वरते पाप भ्रष्ट संसारा। वरना वरन न भावनी लहि खहि मर्न बांस अंगिआरा। निंदा चाले वेद की समझन नहीं अज्ञान गुबारा। वेद ग्रंथ गुर हटहै जिस लग भवजल पार उतारा। सतिगुर बाझ न बूझीऐ जिचर धरेन गुर अवतारा। गुर परमेश्वर इक है साचा फाह जगत वणजारा। चढ़े सूरज मिट जाय अंधारा॥

॥ वार्तक ॥ ऊपर के प्रमाण से सिद्ध होता है कि गुरु जी का अवतार अदभुत कर्मो के लिये हुआ था, आप के उपदेश प्रत्येक जाति तथा संप्रदाय के पुरुषों के लिये समान रूप से थे, और ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार थे। इसी लिए गुरु जी को मुसलमान आलम अपना पीर मानते थे तथा अन्य धर्मों में भी गुरु जी का सन्मान दृष्टि से देख कर आप

की प्रशंसा करते थे। श्री गुरु जी ने ग्रंथ साहिब के भीतर भी इस बात की पुष्टी की है कि जो कुछ भी अंकाल पुरुष परमात्मा का आदेश होता रहा वही उपदेश संसार के प्रति गुरु जी ने अपने प्रवचनों द्वारा दिया है। इस पर प्रमाण एक वाक्य है।

तिलंग महला १ ॥

जैसी मै आवै खमस की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥

फिर—जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥ आदि...

अंत में हम श्रद्धालु सज्ञनों के आगे प्रार्थना करते हैं कि यह जन्म साखी तथा आगे जो दसम पातशाही तक सभी गुरु साहिबान का प्रसंग लिखा है, उसे प्रेम पूर्वक पढ़ें और जो बातें श्री गुरु जी से मिलती हुई देखें वह अपने हृदय में धारण करके हमारे परिश्रम को सफल करें।

श्री गुरु अंगद देव जी महाराज पातशाही २

आप का जन्म संमत १५६१ विक्रमी वैशाख शुकला एकम को फेरु मल्ल त्रेहण क्षत्री के घर में कसबा मत्ते की सरांय में मालवा प्रदेश पंजाब में हुआ। आप का प्रथम नाम लहिणा था, जब प्रथम गुरु जी ने इन को गुरुगद्दी प्रदान की तब आप का नाम लहिणा से अंगद रखा गया।

इन के पिता पितामह दुर्गा के उपासक थे। आप भी अपने पूर्वजों की भांति जब एक बार दुर्गा के दर्शन को संग के साथ चले। तब श्री गुरु नानक देव जी की स्तुति सुनके रास्ते में ही ठहर गये। जब आप ने गुरु जी का दर्शन किया आप का मन शांत हो गया, फिर जब आप ने वैपणों देवी के लिए यात्रा का विचार किया, तो गुरु जी के पवित्र द्वार पर ही देवी वैपणों का दर्शन हो गया जैसा कि पहिले कहा गया है।

देवी ने जब यह कहा कि मैं भी गुरु नानक के दरबार की एक

भिक्षुक हूं। तब से आप के हृदय में गुरु सेवा का समुंद्र लहरें लेने लगा। अब लहिणा जी गुरु सेवा में ही रहने लगे। तीर्थ यात्रा का विचार छोड़ दिया।

एक दिन की बात है कि फर्श के ऊपर एक चूहा मरा पड़ा था, गुरु जी ने अपने पुत्रों को कहा कि इस चूहे को बाहर फैंक दो। तब गुरु जी के पुत्र अभी सोच ही रहे थे कि लहिणा जी ने उस मरे चूहे को बाहर फैंक दिया, यह प्रथम आज्ञा पालन था।

एक दिन एक सुलेमानी पाषाख का एक कटोरा गुरु जी ने एक गंदे कीचड़ के टिब्बे में फैंक दिया, तथा पुत्रादिक को निकालने का आदेश दिया। तब किसी ने भी उस गंदे टिब्बे में उतरने का इरादा न किया, उस समय भी लहिणा जी ने ततक्षण वस्त्रों सहित उस गंदे जोहड़ में से वह कटोरा बाहर लाकर रख दिया।

एक दिन एक मुर्दा दरिया में बहता आ रहा था, गुरु जी ने परीक्षा के लिये सभी को कहा कि इस मुर्दो को खा लो। तब सभी पुत्रादिक वहां से चले गये। उस समय लहिणा जी ने हाथ जोड़ कर कहा-हे गुरुदेव! मुर्दे को पांव की अथवा सिर की ओर से जिधर से आप की आज्ञा हो मैं खाने को तैयार हूं। इस प्रकार की अनेक परीक्षाओं में जब लहिणा उत्तीर्ण हुआ तब गुरु नानक देव जी ने योग्य समझ कर आश्विन कृष्णा पंचमी १५८६ विक्रम के पवित्र दिवस को पांच पैसे और नारियल जैसे कि मर्यादा है वह लहिणे (अंगद देव) के आगे रख कर अपना उतराधिकारी नियत कर दिया और नियमानुसार अंगद देव जी को नमस्कार किया।

फिर गुरु अंगद देव जी खडूर गांव में चले गये। वहां पर आप तपस्या करने लगे उस स्थान का नाम अब तपयाना साहिब है। संवत १५९० विक्रम को गुरु अंगद जी ने गुरुमुखी अक्षरों का निर्माण किया

तथा बाले से गुरु नानक देव जी की लीलायें सुन कर लिखवाई। जो यह जन्म साखी के रूप में आप के हाथ में हैं।

गुरु अंगद जी सदैव रात्रि के दो बजे सो कर उठते थे और चार घड़ी दिन चढ़े तक आप ध्यान में मस्त रहते थे। उसके पश्चात् कीर्तन होता था और तमाम दिन भर लंगर जारी रखते थे। आप की अनेक लीलायें हैं परंतु पुस्तक के आकार बढ़ जाने के भय में लिखी नहीं गई।

अंत में आप ने संवत् १६०९ विक्रमी में गुरगद्दी का उतराधिकारी तथा पूर्ण योग्य जान कर श्री अमर दास जी को चेत्र शुकला एकम के दिन मर्यादानुसार नियत कर दिया और तमाम सिख संगत से भी अमर दास को नमस्कार कराया। आप दो वर्ष ९ मास से अधिक गुरुगद्दी पर बैठे। ४७ वर्ष ११ मास की आयु में चेत्र शुक्ला चतुर्थी बुधवार के दिन सं: १६०९ विकर्म को खडूर साहिब में यह शरीर त्यागन् कर दिया।

श्री गुरु अमर दास जी महाराज पातशाही ३

श्री गुरु अमर दास जी का जन्म संवत् १५२६ विक्रमी वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को गांव बासरके (ज़िला अमृतसर) में श्री तेज भान भल्ला क्षत्री के घर में हुआ था।

जब आप गुरु अंगद जी की सेवा में लग गये थे उस समय आप की आयु ६२ वर्ष की थी। इतनी आयु की अवस्था में आप में अपार पुरुषार्थ था। आप प्रातः काल उठ कर जल की गागर भर कर ब्यास नदी से लाते और उस से गुरु अंगद देव जी को नित्य स्नान करवाते थे, ब्यासा नदी गुरु निवास से तीन कोस की दूरी पर बहती थी उसके पश्चात् आप लकड़ी काट कर सिरपर उठा कर लाते थे और लंगर (रसोई) के बर्तन आप स्वयं साफ करते थे। इस प्रकार सारा दिन सेवा में ही व्यतीत करते थे।

एक दिन पौष मास में वर्षा और पवन का बहुत ज़ोर था, और रात्रि अंधेरी थी, उस समय आप पानी की गागर ला रहे थे, मार्ग में एक जुलाहे का घर था, घर से बाहर एक गढ़हा था, आप अंधेरे के कारण गढ़हे में गिर गये, भीतर से जुलाहे ने पूछा कि आवाज़ कैसी आई है तब जुलाही ने कहा-और कौन इस समय घर से निकलता है, वही अमरू नथावां (जिसका कोई स्थान न हो) होगा इस अमरू को रात दिन चैन नहीं आता। यह जुलाहे की बात सुन कर श्री अमरदास कुछ भी विरकत नहीं हुये, और जल की गागर उठा कर उसी प्रकार वाहिगुरु का जप करते चले आये। अमरदास जी के जीवन में यह घटना अत्यंत ख्याति प्राप्त कर चुकी है।

अंतर्यामी गुरु अंगद देव जी ने प्रातः दीवान में पूछा-हे अमर दास! रात्रि को जुलाही ने क्या शब्द कहे थे। अमर दास ने हाथ बांध कर कहा-हे गुरुदेव! आप सर्वज्ञ हो, उस समय गुरु जी ने रात्रि पूर्ण घटना संगत के सन्मुख सुनाई और अमर दास जी को निम्नलिखित वर दिया।

गुरु अमर दास नथावों का थांव और निमाणों का मान और निओटों की ओट, निधरों की धरि तथा निगतों की गति है। तथाः

चैत्र शुकला एकम सः १६०९ विक्रमी को अपना उतराधिकारी श्री अमर दास जी को नियत किया, और मर्यादानुसार नमस्कार करके उसे गोबिंदवाल जो गुरु जी ने स्वयं ही बसाया था, वहां भेज दिया।

संवत् १६१४ बिक्रमी को आप ने बावली साहिब को बनाना आरंभ किया और १६१६ विक्रमी में कड़ टूटा। इस के बारे गुरु खालसा तारीख वालों ने निम्न प्रकार लिखा है—

उधर बादशाह अकबर चितौड़ में जय मल फता से युद्ध कर रहा था परंतु चितौड़ का दुर्ग नहीं टूटता था उस समय किसी ने बादशाह को परामर्श दिया कि गुरु नानक की गद्दी पर जो इस समय गुरु है

उसका नाम गुरु अमरदास है। यदि उस को संत मानो तो तुम्हारा काम सफल हो जाएगा। उधर अकबर ने मंनत मंनी इधर चितौड़ का दुर्ग सर हो गया था तब अकबर बादशाह पंजाब में आया तो गोबिंदवाल में गुरु जी के दर्शन करके कृत्य कृत्य हो गया। उस समय बादशाह ने पांच सौ मोहर गुरु जी के अर्पण की जो गुरु जी ने गरीबों को बांट दी थी।

एक बार गुरु जी दीवान में उपदेश कर रहे थे तब एक स्त्री के रोने की आवाज़ आई। दरयाफत करने पर पता चला कि एक वेचारी विधवा स्त्री है उस का एक ही पुत्र था जो तईये के ताप से मर गया है। तब गुरु जी के मन में दया आ गई। तब कृपा करके उनका पुत्र जीवित कर दिया और आगे से फुरमाया कि किसी का पुत्र तईये बुखार से यहां पर नहीं मरेगा तईये को बंदी कर लिया।

एक बार गुरु जी ने अपने पुत्रों और सिखों की थड़े चबूतरे, बनाने की आज्ञा दी। तब सब ने बनाये तथा गुरु जी ने परीक्षा के रूप में कहा कि यह किसी काम के नहीं हैं तथा गिरा दिये गये। इसी प्रकार २१ बार परीक्षा ली गई। इस के मध्य में सभी अनुतीर्ण हो गए परंतु राम दास जी ने बदस्तूर चबूतरा बनाना जारी रखा बस गुरु जी उस पर प्रसन्न हो गए और भादरपद शुक्ला १३ त्रयौदशी को सं. १६३१ बिक्रमी में अपना उतराधिकारी विधिपूर्वक राम दास जी को नियत कर दिया।

गुरु अमरदास जी जो सदैव सवा प्रहर एक खूंटी को पकड़ कर तपस्या कीया करते थे फिर जनता में उपदेश करते थे जो आप ने बावली बनवाई उस की चौरासी सीढ़ियें हैं। अब वहां गुरु घर के प्रेमी प्रत्येक पौड़ी पर स्नान करके जपुजी के चौरासी पाठ करते हैं तथा उस की चौरासी कट जाती है। गुरु अमर दास जी महाराज ३१ वर्ष ३ मास

१३ दिन गुरयाई करके १०५ वर्ष ४ मास संपूर्ण आयु भोग कर संवत १६३१ विक्रमी भाद्रपद की पूर्णमाशी को गोइंदवाल विखे ज्योति जोत समा गये अर्थात आप का महा प्रस्थान हुआ।

श्री गुरु राम दास जी महाराज पातशाही ४

श्री गुरु राम दास जी संवत् १५९१ विक्रम कार्तिक वदी २ को हरदास मल्ल क्षत्री के घर में लाहौर चूना मन्डी में पैदा हुए। संवत् १६६१ विक्रम में लाहौर की संगत के साथ श्री राम दास जी गोइंदवाल गये। जब आप ने गुरु अमर दास जी के दर्शन किये तो बस फिर वहां ही रहे।

श्री गुरु अमर दास जी ने श्री राम दास जी को हर प्रकार से योग्य देख कर संवत् १६३१ विः में अपना उतराधिकारी नियत कर दिया, और उनके निर्बाह के लिये संवत् १६२९ विक्रम को कुछ जमीन मोल लेकर राम दास जी के नाम पर रामदास पुर बसाया। इस समय अमृतसार के नाम से प्रख्यात है।

राम दास जी महाराज के तीन पुत्र थे, जिन के नाम पृथ्वी चंद, महा देव तथा अर्जुन देव था, परंतु सब से अधिक पिता जी को परमेश्वर रूप जानने वाले केवल अर्जुन देव ही थे, अंत में गुरु गद्दी भी इन को ही प्राप्त हुई है।

एक बार गुरु जी ने अपने भाई के पुत्र के विवाह में अर्जुन देव को लाहौर भेजा और कहा कि जब तक हम न बुलायें तब तक तुम ने लाहौर में ही रहना होगा, तब श्री अर्जुन देव जी आज्ञा पालन करने के लिये एक वर्ष तक लाहौर में ही रहे, वियोग का वर्ष एक सौ वर्ष जितना था, अंत में अर्जुन देव जी ने एक पत्र लिखा जो माझ महला ५ से मशहूर है।

माझ महला ५ ॥ मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ बिलप
करे चात्रिक की निआई ॥ त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु
दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई
गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

यह पत्र एक लाहौरी सिक्ख के हाथ अर्जुन देव जी ने अमृतसर भेजा तब पृथी चंद ने उस से पत्र लेकर गुम कर दिया। यह विचार कर लिया कि यदि यह पत्र पिता जी ने पढ़ा तो अर्जुन देव को बुला कर उस को अपना उतराधिकारी नियत कर देंगे।

फिर उस सिख को कहा कि चिट्टी गुरु जी को सुनाई गई है परंतु उन्हों ने कोई उत्तर नहीं दिया। यह कह कर उस सिक्ख को विदा कर दिया। उस सिक्ख ने वही उत्तर अर्जुन देव को दे दिया। फिर बीस दिन के पश्चात् एक पत्र और लिखा-

माझ महला ५ ॥ तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ चिरु होआ देखे सारिंग पाणी ॥ धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥ २ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

यह पत्र लिख कर एक सिक्ख को कहा कि इसे ले जाओ। उस पत्र का भी वही परिणाम हुआ। अब तीसरा पत्र लिखा गया-

माझ महला ५ ॥ इक घड़ी न मिलते ता कलियुगु होता ॥
हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥ मोहि रैणि न विहावै
नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥ ३ ॥ हउ घोली
जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

यह चिट्ठी लिख कर ताकीद की गई कि इसे श्री गुरु महाराज के हाथ में देनी, उस सिक्ख ने यह चिट्ठी श्री गुरु रामदास जी के हाथ में जा कर दे दी। गुरु जी ने जब चिट्ठी पर अंक तीसरा देखा तो पृथी चंद से पूछा, तब पृथी चंद ने साफ इन्कार कर दिया कहा मेरे पास कोई

पत्र नहीं आया। फिर गुरु जी ने कहा-यदि है, तो हमें दे दो, तब उस ने कहा-क्या कोई हुंडी थी जो मैंने अपने पास रख कर लाभ उठाना था गुरु जी ने उस चिट्ठी लाने वाले की गवाही ली, उस ने कहा-मैं दो पत्र इस से पूर्व दे गया हूं। परंतु पृथी चंद ने फिर भी इन्कार ही किया और कहा-आप मुझे झूठी तोहमत लगा कर बदनाम करने पर तुले हुए हो और अर्जुन को गुरु गद्दी देने के लिए यह सब चालें चल रहे हो, यदि आप ने उसे गद्दी दे भी दी तो देख लेना मैं सुख का एक श्वास भी नहीं लेने दूंगा।

गुरु जी ने उस की तलाशी की आज्ञा दी। जब संगत ने उस की तलाशी ली तो दोनों चिट्ठियें उस की जेब से निकल आईं। अब पृथी चंद अनेक अयोग्य शब्द कहता हुआ अपने घर को चला गया।

फिर लाहौर से श्री अर्जुन देव को बुला कर आज्ञा दी कि इस शब्द को पूर्ण करो। फिर श्री अर्जुन देव जी ने चतुर्थ चरण कहा-

माझ महला ५ ॥

भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ॥ प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ॥ सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ॥ ४॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ॥ १॥ रहाउ॥

यह शब्द सुन कर श्री गुरु रामदास जी महाराज अत्यंत प्रसन्न हुए, भादर पद शुक्ला द्वितीया १६३६ विक्रम को अमृतसर में दीवान लगा कर मर्यादा के अनुसार अपना उतराधिकारी जगत गुरु अर्जुन देव जी महाराज को नियत करके स्वयं श्री गुरु राम दास जी ने महा प्रस्थान किया।

गुरु राम दास जी महाराज सं: १५१९ विक्रम के दिन कार्तिक वदी

द्वितीया को प्रकट हुए। ९ वर्ष ११ मास १६ दिन गुरुयाई करके ४९ वर्ष १० मास १६ दिन की आयु भोग कर भादर पद शुक्ला तृतीया १६३८ को गोइंदवाल में ज्योति जोत समा गये।

श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज पातशाही ५

श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने वैशाख शुक्ला ७ सप्तमी सं: १६२० विक्रमी को श्री गुरु राम दास जी के गृह में गोइंदवाल कसबा में अवतार धारन किया। आप ने अनेकों बड़े बड़े कार्य किये हैं आप ने कूप तालाबादिक अनेकों निर्माण किए हैं और गुरुओं की पवित्र बाणी का संग्रह किया। १६४१ विक्रम में आप ने संतोष सर (अमृतसर) बनवाना आरम्भ किया, माघ संवत् १६४४ वि: में दरबार साहिब अमृतसर की नींव रखी। संवत् १७०७ विक्रम में अहमद शाह दुरानी ने इस मंदिर को बारूद से उड़ा दिया। इस लिये ११ वैशाख संवत १७२१ विक्रम में फिर बुढ़ा दल ने इस की नींव रखी।

फिर आप ने १६४७ विक्रम को कुछ जमीन मोल ले कर तरन तारन बनवाया और १६५१ में कस्बा करतार पुर बसाया था, और लाहौर बावली साहिब बनवाया, फिर अमृतसर की कार सेवा करवाई गई।

एक बात प्रख्यात है कि वजीर खां नायब वजीर को जलोधर की बीमारी हो गई थी उस समय बाबा बुढ़ा जी जैसे महा पुरुष श्री कार सेवा में सिर पर टोकरी धर कर सेवा में लगे हुए थे, उस समय वजीर खां ने गुरु जी की सेवा में प्रार्थना की, कहने लगा हे महाराज! आप मेरे पर कृपा करो, तब गुरु जी ने भाई बुढ़ा जी से कहा भाई जी यह वजीर साहिब क्या कहते हैं? उस समय बाबा बुढ़ा जी ने टोकरी जो गीली मिट्टी से भरी हुई थी, वह वजीर खां के पेट पर दे मारी। उस के लगने से सभी बिमारी दूर हो गई। तब से एक सुखमणी का पाठी

गुरु जी से मांग कर वह अपने साथ ही ले गया उस से वजीर खां प्रत्येक दिन सुखमणी साहिब सुनता रहा और कढ़ाह प्रसाद करवाता रहा।

पश्चात् अमृतसर में रामसर के तट पर बैठ कर गुरु बाणी का संग्रह किया गया और अपनी बाणी भी उच्चारण करके गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को पुस्तक का रूप प्रदान किया, इस महान कार्य में लग भग दो वर्ष लगे। गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र बाणी पर एक महात्मा के विचार ध्यान से श्रवण करने योज्ञ हैं।

कबित ॥ तेज भरी शांत भरी दैव गुण क्रांति भरी, आछी बहु भांति भरी ज्ञान के समाज की। इस गुण वादि भरि शक्ति अहिलाद भरी, अमृत सो सुहावु भरी रक्षक है लाज की। ओज भरी शक्ति भरी भाउ भरि भक्ति भरी भारी अनुरक्कि भरी ध्वसनी कपाज की। राग भरी योग भरी भोग भरी भोग भरी, पुन्य में प्रयोग भरी बाणी ग्रंथ महाराज की।

वार्तक ॥ संवत् १६५५ विः में जब आप ने श्री चंद्र जी के दर्शन बार्ट गांव में जाकर किये, तो आदि गुरु पुत्र मान कर आप ने श्री चंद जी के आगे अत्यंत प्रेम से भेंट रखी, तब श्री चंद्र जी ने आमोद से पूछा कि आप ने अपनी दाढ़ी इतनी लंबी किस लिए की है? उत्तर में गुरु जी ने कहा-कि आप जैसे महात्माओं की चरण धूड़ी साफ करने के लिये मैंने अपनी दाढ़ी लंबी की है।

चंदू सुहाई जो दिल्ली में रहा करता था। उस की कन्या का रिश्ता जब संगत के कहे अनुसार गुरु जी ने न लिया। तब चंदू ने अनेकों प्रकार के छल कपट और भय गुरु जी को दिये और उस समय के बादशाह की ओर से भी दबाव डाला गया परंतु रघु कुल रीति सदा चली आई प्राण जायें पर वचन जा जाई ॥

महा पुरुषों के बचन अटल और अचल होते हैं इसी प्रथा के अनुसार गुरु जी ने अनेक कष्ट सहन किये। यहां तक कि अपने प्राण भी

न्योछावर कर दिये परंतु भयभीत होकर अथवा लोभ वश अपने शब्द नहीं बदले। चंदू नीच ने जो कष्ट गुरु अजुर्न देव जी को दिये, उन को स्मरण करके तो बड़े से बड़ा धैर्य वाला भी अधीर हो जाता है। उन का वर्णन अत्यंत कठिन हैं

दिग दर्शन मात्र-चंदू महा नीच सेवा करने के बहाने गुरु जी को अपने घर ले गया तथा कहने लगा कि यदि आप मेरी लड़की का नाता नहीं लोगे, तो मैं आप को कष्ट दूंगा। गुरु जी ने उच्चारण किया-

त्रिया तेल रण सूरमा होत न दूजी वार॥

फिर गुरु ग्रंथ साहिब में भी लिखा हुआ है।

निसि बासर नखिअत्र बिनासी रवि ससिअर बेनाधा॥ गिरि बसुधा जल पवन जाएगा इक साधु बचन अटलाधा॥ अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाधा॥ चार बिनासी खटहि बिनासी इक साधु बचन निहचलाधा॥

यह शब्द सुन कर चंदू ने अनेकों कष्ट देने प्रारंभ कर दिये। तपी रेत गुरु जी के पवित्र तन पर डाली गई और तपे हुए तवों उपर गुरु जी को बिठा कर नीचे आग जलाई गई और अनेकों उपद्रव किये जो लिखने से मन कांप जाता है, जब पापी ने यह निश्चय किया कि कल इन को गाय की खाल में डाल कर ऊपर से सी दिया जाएगा। गुरु जी यह बात सुन कर दुखी हुए, हिन्दू मर्यादा का नाश होते देखना गुरु जी ने उचित नहीं समझा। तब आप ने दूसरे दिन प्रातः काल ही उठ कर दरया रावी के तट पर जा कर धैर्य से जल समाधि द्वारा अपने प्राण त्याग दिये।

इस घटना से कुछ दिन पूर्व गुरु जी ने दरबार लगा कर अपने सुपुत्र हरगोविंद जी को प्रत्येक दृष्टिकोन से संयोग्य जान कर और संगत की सम्मति मान कर अपना अतराधिकारी नियत कर दिया।

गुरु जी महाराज १७ वर्ष ४ मास की आयु में सिंहासन पर बैठे २५ वर्ष ९ मास गुरुगद्दी की शोभा बढ़ा कर ४३ वर्ष १ मास की आयु भोग कर ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्थी के दिन संवत् १६६३ विक्रमी को लाहौर नगर में महा प्रस्थान कर गये।

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी महाराज पातशाही ६

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब की लीला इस स्थान पर संक्षेप ही लिखूगा क्योंकि आप की लीला अपार है तथा पुस्तक के बढ़ जाने का भय है।

आप आषाड़ वदि एकम संवत १६५२ विक्रम को वडाली गांव जिला अमृतसर में गुरु अर्जुन देव जी के गृह में प्रकट हुए और वैशाख वदी सप्तमी १६६३ विक्रम को गद्दी पर बिराजे। गुरगद्दी का तिलक मिलते समय आप ने दो तलवारें धारण की। एक मीरी की और एक पीरी की। आप ने युद्ध समग्री एकत्र की थी तथा जनता में वीरता भर दी फिर पाप के विरुद्ध आन ने अनेकों महान युद्ध किये तथा किधर्मा राज नीति के अनेकों स्थानों पर नीचा दिखाया फिर आप ने अकाल बुंगा बनवाया भाव यह है कि आप ने सत्य धर्म की रक्षा करने वाले सूरबीर पैदा किये। इन की अनेक लीलाओं में यह भी बात स्मर्ण रखने वाली है कि लोहगढ़ (अमृतसर) के युद्ध में आप ने लकड़ी की तोप बना कर उस से पूर्ण काम लिया। इस के अतिरिक्त और भी महान कार्य किये, जो यदि यहां पर लिखे जायें तो एक बहुत बड़ी पुस्तक बन जाये।

आप ग्यारह वर्ष की आयु में गुरु गद्दी पर बिराजे तथा ३७ वर्ष १० मास गुरु गद्दी पर रह कर ४८ वर्ष ९ मास की आयु में चैत्र शुक्ला पंचमी संवत १६९० विक्रम कीरत पुर नगर में महा प्रस्थान कर गये। इस से प्रथम सयोग्य जान कर अपना उतराधिकारी श्री गुरु हरि राय

जी को नियत कर गये थे।

श्री गुरु हरि राय साहिब जी पातशाही ७

श्री गुरु हरिराय जी बाल्यकाल से ही सतोगुणी थे, भजन करना सदोपदेश करना लंगर लगाना आदिक आप की दैनिक क्रिया थी, इतना स्मरण रहा कि श्री गुरु नानक देव जी महाराज तक भजन पाठ तथा लंगर (गरीबों के लिये मूल्य के बिना रोटी का प्रबंध) यह नियम पूर्णतया पालन करके दिखाया है।

जो आप की शरण आ जाए उस की रक्षा करनी आप ने अपना मुख्य कर्म माना हुआ था, एक बार राजा तारा चंद का दीवान जिस का नाम सोहणू था, वह भाग कर गुरु जी के पास आ गया। तब गुरु जी ने राजा की दी हुई जागीर त्यागनी और तारा चंद का राज्य से निकल आना स्वीकार कर लिया परंतु शरण आये हुए सोहणू को नहीं धकेला, इन्हीं गुरु महाराज के आशीर्वाद से पटियाला नाभा जींद के फूल बंसी राजे अब तक राज्य करते चले आ रहे थे।

एक बार बादशाह औरंगजेब ने आप को दिल्ली में बुलाया। आप ने अपने पुत्र रामराय को दिल्ली भेज दिया राम राय ने ७२ करामात (आलौकिक) कार्य बादशाह को दिखाई और बादशाह के रोहब में आ कर श्री गुरु नानक देव के महा वाक्य को उल्टा कर ब्यान किया अर्थात् मिट्टी मुसलमान की के स्थान पर मिट्टी बेईमान की कह दिया, इस पर हरि राय जी ने कुपित हो कर शाप दे दिया कि बस राम राय आज से हमारे सन्मुख नहीं आए, फिर जब आप ने महा प्रस्थान निकट जाना था, तब १७१८ विक्रम में अपने छोटे सपुत्र श्री हरि कृष्ण जी को अपना उतराधिकारी विधी-पूर्वक नियत कर दिया, आप माघ शुदी १३ त्रयोदशी संवत् १६८७ विः को बाबा गुरदिता जी के घर कीर्तपुर में

पैदा हो कर १७०० विक्रमी को गद्दी पर बैठे। १७ वर्ष ६ मास गुरुयाई करके ३१ वर्ष ८ मास की आयु भोग कर कार्तिक वदि ८ संवत् १७१८ विः को कीरतपुर में ज्योति जोत समा गये।

श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी पातशाही ८

श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी आयु में भले ही सभी गुरु साहिबान से छोटी आयु के थे, परंतु तेज प्रताप और शांति में महान थे, रामराय जो गुरु जी ने त्याग दिया था, वह फिर बादशाह के पास जाकर फ़ुरयाद करने लगा कि गद्दी का मैं अधिकारी था, परंतु मुझे वंचित किया गया है, उसकी फ़ुरयाद को सुन कर बादशाह ने गुरु जी को दिल्ली में बुला भेजा। आप ने फ़ुरमाया कि हम दिल्ली में तो जायेंगे परंतु हम ने मलेच्छ बादशाह के सन्मुख नहीं जाना और न ही उसे अपना दर्शन करवाना है, इस से पूर्व औरंगजेब जो एक धर्मांध पापी बादशाह था, उस ने अनेकों हिन्दू संत धर्मात्मा मौत के घाट उतार दिये थे और लाखों हिन्दू मुसलमान कर लिये थे, इस लिये बहुत से धर्मात्मा चिंतातुर हो गए थे, परंतु गुरु जी सब को धैर्य देकर दिल्ली की ओर रवाना हो गये।

दिल्ली के बादशाह की ओर से आप का स्वागत हुआ और राजा जय सिंघ गुरु जी का सेवक बन गया, उस समय दिल्ली में ज्वर का प्रकोप था जो कोई बीमार गुरु जी का चरणामृत पान करता था वह आरोग्य हो जाता था। गुरु जी ने अपना महा प्रस्थान निकट जान कर (११००) एक सहस्र और एक शत रुपये का कढ़ाह प्रसाद बांटा, तथा विधि के अनुसार पांच पैसे नारयल रख कर मस्तक झुका कर मुख से फ़ुरमाया कि हमारा उतराधिकारी बाबा बकाले में तेग बहादुर है, फिर नश्वर तन को छोड़ दिया। श्री गुरु हरि कृष्ण जी महाराज श्रावण वदि नवमी संवत् १७१२ विक्रम को कीरत पुर में गुरु हरि राय जी के ग्रह

में उत्पन्न हुए और १७१८ विक्रम को गुरुगद्दी पर बिराजे। ३ वर्ष ५ मास ११ दिन गुरु गद्दी पर रह कर आठ वर्ष ८ मास ९ दिन की सारी आयु भोग कर चैत्र सुदी चतुर्थी संवत् १७२१ विक्रम को दिल्ली में ही महाप्रस्थान कर गये।

श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज पातशाही ९

जिस समय गुरु हरि कृष्ण जी बाबा बकाला कह कर परलोक वासी हुए तब अनेक संगत समूह बकाले में आ कर गुरु जी की भाल करने लगी। उस समय गुरु तेग बहादर जी छिपे रहा करते थे तो बकाला में अनेकों गुरु बन कर बैठ गए थे अंत में मखण शाह लुबाने ने गुरु तेग बहादुर जी की भाल कर ही ली। यह कथा बहुत ही लंबी है। संक्षेप यह है कि उस ने पांच सौ स्वर्ण मुदरा भेंट करने की प्रतिज्ञा की थी। जब उस ने बहुत से गुरु बने देखे तो दो दो मोहरें रख कर प्रणाम किया। सभी ने ले ली। जब गुरु तेग बहादर के आगे भी दो मोहरें रखी तब उन्हों ने कहा कि बाकी (४९८) चार सौ अठानवें कहां हैं बस इसी परीक्षा ने मखण शाह के नेत्र खोल दिए। उस ने शोर मचा दिया कि असली गुरु मिल गया है तब सभी ने स्वीकार करके नमस्कार किया। संवत १७२१ विक्रम में गुरु गद्दी का तिलक बाबा गुरुदिता जी ने दे दिया और गुरु हरि कृष्ण जी की ओर से नमस्कार किया। १७२२ विक्रम में आप ने आनंद पुर बसाया और उसी नगर में निवास करने लगे फिर गुरु जी ने देशार्टन किया जो संक्षेप से लिखा जाता है। जब गुरु जी देशार्टन से संसार का कल्याण कर रहे थे तब आप ने मुसलमान हकूमत की ओर से हिन्दूओं पर अत्याचार होता देखा तथा उसी के लिये स्वयं भी कष्ट उठाए। आसाम में राजा राम राय आप का सेवक बना। १७२३ विक्रम में पटने से सूचना मिली कि आप के गृह में पुत्र उत्पन्न हुआ

है। १७२६ विक्रम में आप आनंद पुर आ गए तथा सारा परिवार पटने से आनंद पुर में बुला लिया।

उस समय बादशाह औरंगजेब हिन्दू धर्म को नाश करने पर तुला हुआ था। इतिहास लेखक इस प्रकार कथन करते हैं-

औरंगजेब ने यह हुकम किया कि कोई हिन्दू राज्य के कार्य में किसी उच्च स्थान पर नियत न किया जाए तथा हिन्दूओं पर जजीया (कर) लगा दिया गया। इस के अतिरिक्त अनेकों नवीन टैक्स केवल हिन्दूओं पर लगाये गये। इस भय से अनेकों हिन्दू मुसलमान हो गए। शंख पूजा आर्ती सभी हिन्दू धर्म कार्य बंद कर दिये। मंदिर गिराये गये, मसजिदें बनवाई गई अनेकों धर्मात्मा मरवा दिये गये। बादशाह के संकेत से अनेकों हाकम जो मुसलमान थे मन मानी करते और हिन्दूओं को दुखी करने लग गये। कलमां पढ़ो अथवा कतल हो जाओ। इस भाव का खुले रूप में प्रचार होने लगा। खखे, खोजे , बवे, ककेजई, रंगट, जाट, राजपूत, अराईं, गखड़, कंबोज, भट्टी, आदिक उसी समय के बने हुए मुस्लमान हैं उसी समय की उकती है कि सवा मन यज्ञोपवीत रोज़ाना उतार करके औरंगजेब रोटी खाता था। उसी समय कशमीर के ब्राह्मण गुरु जी के दरबार में आए तथा अपनी करुणा कहानी सुनाई। धर्म नाश को गुरु जी ने सुना और किसी गूढ़ विचार में गुरु जी लीन हो गए। उस समय बालक गोबिंद राय जी जिन की आयु उस समय ७ वर्ष थी पिता जी के निकट आकर कहने लगे-हे पिता जी! आप किस विचार में हो। गुरु जी ने फुरमाया-हे बेटा! इस समय हकूमत की ओर से हिन्दू जनता पर घोर अत्याचार हो रहा है और हिन्दू जनता को मुसलमान किया जा रहा है। कुरान और तलवार सामने है यह लोग हमारी शरण आये हैं। इस समय किसी महात्मा का बलिदान होना होगा। यह सुन कर दशमेश स्वभाविक कहने लगे-हे पिता जी! आप से बढ़ कर कौन

महात्मा है?

यह उत्तर सुन कर गोबिंद जी को सुयोग्य जान कर कशमीरियों को कह दिया कि तुम बादशाह को कहो कि हमारा पीर तेग बहादुर है, यदि वह मुसलमान हो जाए तो हम सभी इसलाम स्वीकार कर लेंगे, तब लोगों ने यही किया।

तब बादशाह ने गुरु जी को दिल्ली में बुला भेजा। गुरु जी गए तो आप को बंदी बना कर कहा कि या तो मुसलमान बनो, नहीं तो कोई करामात दिखाओ। यह झगड़ा बहुत दिन चलता रहा, गुरु जी का एक सेवक जिस का नाम मती दास था, उसे आरे से चिरवा कर मार डाला, और दूसरे सेवक भाई दयाले को देगचे में पकाया गया। फिर गुरु जी को बादशाह ने कहा कि यदि तुम मुसलमान होना स्वीकार न करोगे तो कल को यही अवस्था तुम्हारी होगी। गुरु जी ने बलि दिवस निकट जान कर अपना उतराधिकारी मार्ग शीर्ष शुक्ला पंचवीं सं. १७३१ विक्रम को गुरु गोबिंद जी को नियत करके विधि पूर्वक भेंट आनंद पुर में भेज दिया, तथा सलोक उच्चारण किया-

सलोक ॥ चिंता ताकी कीजिए जो अनहोणी होइ ॥
इह मारग संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥

ऐसे अनेक शब्द उच्चारण किए। प्रातः काल स्नान पाठ से अभी गुरु जी आनंद विभोर ही थे, तब पापी जल्लाद ने बादशाह के हुकम से तलवार मार कर गुरु जी का शीश तन से अलग कर दिया। गुरु जी के बलिदान ने जनता में रोष पैदा कर दिया, अतः बदला लेने की धुन सवार हो गई। अनेकों शूरबीर धर्म के ऊपर न्योछावर होने को तैयार होने लगे। गुरु जी के बलिदान ने समय को ही बदल दिया, घर घर में गुरु जी की पवित्र याद के गीत गाये जाने लगे। लोग त्राहि त्राहि करने लगे। सारे भारत में अंधकार छा गया।

गुरु तेग बहादुर जी वैसाख वदि पंचमी १६७८ विक्रम में अमृतसर में श्री गुरु हरि गोबिंद जी के घर प्रकट हुऐ, चैत्र शुक्ला चतुर्दशी १७१८ विक्रम को गद्दी पर बिराजे। १४ वर्ष ५ मास १२ दिन गुरुयाई करके ५४ वर्ष ४ दिन आयु भोग कर १७३२ विक्रम मार्ग शीर्ष शुक्ला पंचमी को महा प्रस्थान कर गए। महा यात्रा स्थान दिल्ली है।

श्री गुरु कलगीधर गोबिंद सिंघ जी पातशाही १०

जब सिक्खों ने गुरु तेग बहादर जी का सिर ला कर आनंदपुर में दिया तो गुरु दशमेश जी ने पिता का अंतिम संस्कार विधि पूर्वक करके गुरुगद्दी संभाल ली और इस शब्द का उच्चारण किया-

तेगु बहादर के चलत भयो जगत मै सोक॥
है है है सब जग भयो जै जै जै सुरलोक॥ पुनह॥
धर्म हेत साका जिन कीआ॥ सीस दीआ पर सिररु
न दीआ॥ साधन हेत इति जिन करी॥
सीस दीआ पर सी न उचरी॥

ऐसे अनेक वाक्य कहे।

आप गुरु साहिब पोह सुदी सप्तमी १७२३ विक्रम को गुरु तेग बहादर जी के घर में पटने नगर में प्रकट हुए। संवत् १७३२ विक्रम मार्ग शीर्ष शुक्ला पंचमी को गुरयाई ली और अनेक अदभुत लीलायें करके सारी आयु ४२ वर्ष दो मास कम भोग कर १७६५ विक्रम कार्तिक शुक्ला पंचमी श्री अबचल नगर में महा प्रस्थान कर गये।

प्रिय पाठको! श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अनेक ही लीलायें हैं। यदि वे सब की सब लिखी जायें तो इस ग्रंथ से दुगना तिगना ग्रंथ और बन सकता है परंतु हम ने उन तमाम को छोड़ कर केवल एक कौतुक जो चमकौर का है वही केवल लिखना है, क्योंकि उस को छोड़ने

में हम आसमर्थ हैं, वह हमें बार बार स्मरण आ रहा है, इस लिये वही प्रसंग संक्षेप से लिख कर ग्रंथ को समाप्त किया जायेगा।

गुरु साहिब को हिन्दू धर्म से अपार प्रेम था, और साथ ही ज़ुलम के विरुद्ध अपनी तलवार उठानी आप का मुख्य ध्येय था, परंतु गुरु जी मुसलमान जाति से कभी भी घृणा नहीं करते थे। आप तो ज़ुलम के विरुद्ध थे। आप के मन में किसी जाति से द्वेष नहीं था। यदि आप मुसलमान जाति से द्वेष रखते तो पांच सौ मुसलमान पठान जो बुद्धू शाह ने गुरु जी के पास नौकर करवाये थे उन को क्यों रखते। यदि हिन्दूओं के पक्षपात में होते तो मसंदों को तेल में क्यों जलाते। सिद्ध होता है कि गुरु जी पाप के वैरी थे। किसी जाति के दुश्मन नहीं थे। आप का अवतार धर्म की रक्षा तथा पाप के नाशार्थ हुआ था। धर्म प्रचार करना गुरु जी का पर्म लक्ष्य था जैसा कि आप के शब्दों से प्रकट है।

श्री मुखवाकय बचित्र नाटक में से॥

हम एह काज जगत मो आए॥ धर्म हेत गुरुदेव पठाए॥
जहां जहां तुम धर्म बिथारो॥ दुष्ट दोखियन पकर पछारो॥
इहै काज धरा हम जनमं॥ समझ लेहू साधू सब मनमं॥
धर्म चलावन संत उबारन॥ दुष्ट सभन को मूल उपारन॥

गुरु जी अकाल पुरुप की ओर से जिस कार्य के लिये आए थे उसी को पूर्ण करने में लगे रहे। गद्दी पर बैठते ही संगत को आज्ञा दी कि हमारे लिए घोड़ा और शस्त्र जो अच्छे लाएगा वही हमारी कृपा का पात्र बनेगा।

इस आज्ञा को सुन कर सुंदर घोड़े और शस्त्र एकत्र होने लग गये। गुरु जी ने सेना संग्रह आरंभ कर दिया। इस आज्ञा को सुन कर आसाम का राजा राम राय का पुत्र कर्ण राय आनंदपुर में आया उसने पंच कला

शस्त्र भेंट किया, एक चंदन की चौकी अर्पण की, पांच दरयाई घोड़े एक परसादी हाथी भेंट किये। जब सेना बहुत एकत्र हो गई तब गुरु जी ने सोचा कि हिन्दू अत्यंत भयभीत हो गए हैं तथा मुसलमानों से डरते हैं इस लिए एक तीसरा पंथ बनाया जाये। यही सोच कर केस गढ़ में दरबार लगा कर संवत १७५६ विक्रम में १ वैशाख को खालसा पंथ बनाया। उस समय सीस देने के लिए केवल पांच योद्धा ही उतीर्ण हुए।

गुरु जी ने कनात में गुप्त रूप से पांच बकरे रखे थे। फिर हाथ में तलवार लेकर कहा-कोई वीर है जो अपना सिर मुझे दे। यह सुन कर बहुत लोग वहां से चुपके चुपके चल दिये। सब से प्रथम भाई दया सिंघ क्षत्री ने कहा-मैं उपस्थित हूं। उसे गुरु जी कनात में ले गये, तथा एक बकरा मार कर खून से लथ पथ तेग लेकर और उस दया सिंह को भीतर ही बैठा कर बाहर आ गये और फिर कहा-क्या कोई और भी वीर है जो हमें अपना सिर दे। तब एक जाट जिस का नाम धर्म राय था, उस ने कहा-हे महाराज मैं हाज़र हूं। इसी प्रकार मोहकम सिंघ छींबा और हिम्मत सिंघ चीवर, साहिब सिंघ नाई बार बार आगे आए। सभी को गुरु जी कनात के अंदर बैठा कर बकरा मार कर बाहर आने की लीला करते रहे, अंत में उन पांचों को नवीन वस्त्र धारन करवा कर बाहर ले आये, उस समय गुरु जी ने कहा कि श्री गुरु नानक देव जी के समय केवल एक अंगद देव जी ही उर्तीण हुए थे, अब गुरु कृपा से पांच अतीर्ण हो गए हैं। इस लिए हमें विश्वास है कि हमारी अवश्य विजय होगी, फिर अमृत पिलाया और स्वयं पान किया, इसी आशय से कहा है-वाहु वाहु गोबिंद सिंघ आपे गुर चेला॥ भाई गुरदास जी लिखते हैं–

गुरू वर अकाल के हुकम सिउ उपजिओ बिगिआना। तद सहिजे रचया खालसा साबत मर्दाना। इओं उठे सिंघ भभकार कर सभ जग

डरपाना। मढ़ी गोर देवल मसीए ढाहि कीए मैदाना। बेद पुरान पट शास्त्रन फुन मिटे कुराना। बांग सलादात हटाय मारे सुलताना। मीर पीर सभ छप गए सभ मजहब उलटाना। मलवाने काजी पढ़ थके कुछ मरम न जाना। लख पंडत ब्राहमण जोत की बिख सिउ उरझाना। फूल पथर पूज कर अत ही भरमाना। इओं दोनों फिरके कपट में रच रहे निदाना। तासर मजहब खालसा उपजयो परधाना। जिन गुरु गोबिन्द के हुक्म सिउ गहि खड़ग दिखाना। तिह सभ दुश्मण की भेट कर अकाल जपाना। फेर ऐसा हुकम अकाल का जग में प्रगटाना। तब सुंनत कोइ न कर सके कांपत तुरकाना। इउं उम्मत सभ मुहम्मदी खप गई निदाना। तद फते डंक जग में कर दुख दुंद मिटाना। तीसरा पंथ चलाईअन वड सूर गहेला। वाहु वाहु गोबिंद सिंघ आपे गुर चेला॥

पुनह॥ ओह गुरु गोबिंद होइ प्रगटिआ दसवें अवतारा॥ जिन अलख अकाल निरंजन जपिओ करतारा॥ जिन पंथ चलाओ खालसा धरतेज करारा॥ सिर केस धार गहि खड़ग को सभ दुष्ट पछारा॥ सील जंत की कछ पहिर पकड़ हथ्यारा॥ सच्च फतहि बुलाई गुरु की जोतिओ रण भारी॥ सभ दैंत श्ररणि को घेर कर कीओ पचिहारा॥ तब सहजे प्रगटिओ जगत में गुर जाप अपारा॥ इओं उपजे सिंघ भुजंगीए नील अंबर धारा॥ तुरक दुष्ट सभ छै कीए हरि नाम उचारा॥ तिन आगे कोइ न ठहिरिओ भागे सरदारा॥ तिह राजे शार अभी रहे होए सभ छारा॥ फेर सुन कर ऐसी धरक को कांपे गिर भारा॥ सभ धरती हल चल भई छाडे घर बारा॥ इउं ऐसी दुंद कलेश में खपिओ संसारा॥ तह त्रिन सतिगुर को नहीं भै काटन हारा॥ गहि ऐसे खड़ग दिखाईऐ को सकै न झेला॥ वाह गुरु गोबिंद सिंघ आपे गुर चेला॥

सवा लाख से एक लड़ाऊं॥ तबै गोबिन्द सिंघ नाम कहाऊं॥
चिड़ीअन ते मैं बाज तुड़ाऊं॥ तबै गोबिन्द सिंघ नाम कहाऊं॥

वातर्क॥ पंथ स्थापना के पश्चात् गुरु जी ने आनंदगढ़, होल गढ़ आदिक किलों की रचना की और भंगाणी आदिक युद्ध भी अनेक किए। यहां बताने की बात यह है कि गुरु जी ने भारतीय हिन्दू जाति पर कितना भारी उपकार किया है। यह बात बलपूर्वक कहने में कोई अतिश्योक्त नहीं है कि यदि गुरु गोबिंद सिंघ जी न होते तो भारत में एक भी हिन्दू नज़र न आता। शोक है कि जिस गुरु जी ने अपना पिता तथा राज्य सुख और अपने जिगर के टुकड़े युद्ध में वीर गति को प्राप्त करते स्वयं देखे तथा गुलाब पुष्प के सदृष्य दो सुकुकार दीवार में चिनवा दिये जिस ने लाखों से अपना एक एक वीर उत्साह से टकरा दिया। जिस ने धर्म रक्षा पर अनेकों शूरबीर बलिदान कर दिए तथा जिस के अमृत की शक्ति ने धर्म पर न्योछावर होना सिखाया। शरीर के बंद बंद कटवा कर भी जिस के वीर खालसा ने सी तक नहीं की। ज़िस ने मुर्दा हो रहे हिन्दूओं को पांच घूंट अमृत के पिला कर असमत्व प्रदान कर दिया। जिस ने अपनी समस्त आयु दुखों के बन में व्यतीत कर दी। जो प्यारे देश की स्वतंत्रता के लिये नंगे पांव पहाड़ियों तथा कंटक पूर्ण बनो में इधर उधर फिरता रहा। घर को त्याग कर देश विदेश में भ्रमण करता रहा, जिस ने उस परमेश्वर के अतिरिक्त किसी के आगे अपना मस्तक नीचे नहीं किया, जिस ने चिड़िओं से खूंखार बाजों के छक्के छुड़वा दिए, सत्य तो यह है कि जिस ने भारत की लज्ञा का जहाज़ जो डूबने के निकट था, उसे किनारे लगा कर दिखा दिया। उस की हमने क्या कदर पाई।

प्यारे पाठको! गुरु जी के कष्टों की गाथा महान है जिसे पूर्ण तथा लिखने की शक्ति मेरे जैसे तुच्छ लेखक में नहीं है, यदि कुछ किंचित मात्र है भी तो यहां स्थानाभाव से लिखने में लेखक अपने को विवश पा रहा है, परंतु हृदय में गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज का अपार कृपा का समुंद्र लहरें ले रहा है। धन्य थे माता गुजरी जी के लाल श्री दशमेश

पिता गुरु गोबिंद सिंघ जी कलगीधर।

यद्यपि गुरु जी ने अनेकों युद्ध कीए परंतु लेखक अपने पूर्व कृत प्रण के अनुसार गुरु जी का एक युद्ध लिखने पर उत्साहित हो रहा है। इसके पश्चात् यह समाप्त की जाएगी। ध्यान देकर सुनें। गुरु जी की महिमा तो शेश गणेश भी नहीं लिख सकते।

चमकौर का युद्ध

इस युद्ध के पूर्व गुरु जी ने अनेकों युद्ध किये थे, जिस में पहाड़ी हिन्दू राजे भी गुरु जी के विरुद्ध लड़ने के लिए आए थे, परंतु गुरु जी के लक्ष्य भेदी महानतम तीरों की बौछार के आगे उन का ठहरना असम्भव था। वह धर्म विद्रोही शाह औरंगजेब के अधीन थे।

सत्य बात तो यह है कि यदि यह बाइस धाग पर्वतीय राजे महाराजे गुरु जी के विरुद्ध न लड़ कर धर्म के पक्ष में युद्ध करते तो आज भारत का मान चित्र किसी और ही प्रकार से दृष्टिगोचर होता परंतु हाय री गृह कला! तेरा सत्यनाश हो। तू ने बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी उन पर्वतीय नरेशों ने अनेक बार मुंह की खाई तथा संसार से अपना काला मुख लेकर यम लोक को चले गये।

गुरु जी का एक एक तीर दो दो कोस पर दुष्ट दल दलन कर रहा था उस समय दिल्ली के बादशाह ने लाहौर के सूबे दिलावर खां को और जबरदस्त खां तथा पेशावर के सूबे नजाबत खां को एक असाधारण हुकम भेजा कि तुम्हें अनेक वर्ष युद्ध करते व्यतीत हुए हैं परंतु मुट्ठी भर सिख तुम अपने अधीन नहीं कर सके। अब तुम गुरु गोबिंद सिंघ को शीघ्र ही हमारे सन्मुख हाज़र करो वरना तुम्हारा कल्याण नहीं है।

ऊपर के शाही हुकम के अनुसार उन सूबों ने अनगिणत सेना एकत्र कर ली। पहाड़ी राजा जो हिन्दू कहलाते थे, वे भी तुर्क सेना की ओर

हो गये। यह समस्त सेना १० लाख हो गई।

इस सेना ने आनंदपुर को चारों ओर से घेर लिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास केवल (१०,०००) दस हज़ार सेना थी, जो तुर्की सेना के घेरे में घिर गई थी, अंत में २२ ज्येष्ठ संवत् १७६१ विक्रम को दुश्मनों ने काली घटा की भांति किले पर धावा बोल दिया। अब बहादुर सिंह भी वीरत्व प्राप्त करने के लिए सामने आये। एक एक वीर ने अनेकों यवनों को धराशाई किया, यवन सेना ने अनेक आक्रमण किए, परंतु दुर्ग पर विजय न पा सके। तब मुसलमान सेना ने लड़ना छोड़ कर केवल किले के मार्ग बंद कर दिये, ता कि बाहर से राशन आदिक भीतर न जा सके। यद्यपि किले के भीतर अन्न सामग्री पर्याप्त थी, परंतु पांच मास तक घेरा पड़ा रहने से वह समाप्त होने लगी। एक एक मुठी चने खाकर भी वीर सिखों ने अदभुत युद्ध किया। अब गुरु जी ने देखा कि यहां से निकलना अत्यंत कठिन है, तब बहुत सा सामान सतलुज नदी में फैंक दिया, हाथी घोड़े आदिक भूख से व्याकुल होकर मरने लगे। गुरु जी प्रत्येक मोर्चे पर स्वयं जा कर सेना को उत्साहित करते थे। सिख वीर अब भूख से व्याकुल हो गये।

उधर देश बरबाद होने लगा। खाध सामग्री का अभाव हो गया। तब मुसलमान अफसरों ने एक पत्र गुरु जी की ओर भेजा। वह पत्र इस प्रकार था।

॥ पत्र ॥ वीरवर गोबिंद सिंघ हम कुरान शरीफ की कसम खा कर कहते हैं कि आप यदि दुर्ग हमारे हवाले कर दो, तथा अपनी जान और धन सामान लेकर यदि निकल जाओ तो हमें कोई भी उजर नहीं होगा, तथा हम तुम्हें कभी भी नहीं रोकेंगे। हमें पूर्ण आशा है कि आप इस अपार जन संहार को बंद करने के लिए इस दुर्ग को हमारे हवाले करके स्वयं शक्ति से प्रस्थान कर जाओगे।

यह पत्र गुरु जी तक पहुंचा दिया गया, गुरु जी ने मुसलमानों की कसमों पर विश्वास तो नहीं किया परंतु मसंदों ने माता जी को विवश कर दिया और कहा गया कि यदि आप किला नहीं छोड़ते तो हम लोग बिना आप की आज्ञा के चले जायेंगे, क्योंकि भूखे मरने से तो लड़ के मरना कहीं अच्छा है। गुरु जी ने कहा-भाई! पांच दिन और निर्वाह करो, मुसलमान सैना जाने ही वाली है यदि अब बाहर निकलोगे तो बुरी प्रकार मारे जाओगे, मुसलमानों की कसम पर विश्वास नहीं करना चाहिए। यदि परीक्षा लेनी है तो लो हम एक आज्ञा पत्र भेजते हैं, गुरु जी ने उन को लिखा कि सामान निकालने के लिए तुम ऊंट घोड़े आदिक भेज दो हम किला छोड़ देंगे। उन लोगों ने खचर ऊंट आदिक बहुत ही प्रसन्न हो कर भेज दिये, गुरु जी ने कूड़ा करकट प्याले टूटे हुए मिट्टी के बर्तन उन पर लाद कर बाहर भेज दिए। अभी थोड़ी दूर गए थे कि बस मुसलमान सेना लूटने पर आ गई, और सभी कुछ लूट लिया। परंतु जब लूट का माल देखा तो सभी लजित हो गए, यह परीक्षा लेकर गुरु जी ने सिखो को धैर्य दिया इस से सिख वीर दो दिन और लड़े। परंतु भूख ने सब कुछ भुला दिया और स्वयं किला छोड़ कर बाहर जाने को तैयार हो गए, उस समय गुरु जी ने फुरमाया कि यदि आप मेरी आज्ञा नहीं मानते तो मुझे लिख कर दे दो।

भूखा आदमी कौन सा पाप नहीं करता, (२००) दो शतक सिखों ने बेदावा लिख दिया और स्वयं चले गये। गुरु जी ने बेदावे का कागज़ अपनी जेब में रख लिया, और १५ मार्ग शीर्ष १७६१ विक्रम को मातायें और पुस्तकें डालों में रख कर भाई धर्म सिंघ और भाई मोहकम सिंघ ईशर सिंघ मिलखा सिंघ जवाहर सिंघ आदिक सरदारों को साथ करके सिरमौर के राजा की ओर प्रस्थान किया और गुलाब राय तथा श्याम सिंघ को पत्र देकर राज की ओर भेज दिया।

फिर यथा योग्य प्रसाद पा कर गुरु जी महाराज सिखों के सहित एवमं अपने सुपुत्रों को साथ लेकर प्रातः आनंदपुर से प्रस्थान किया। जब कीरतपुर से कुछ आगे गए तो मुसलमानों ने हमला कर दिया, बहुत सी सेना तो नगर और किला लूटने में लग गई। शेष सेना गुरु जी के पीछे भागी, अब गुरु जी सरसा नदी के तट पर पहुंचे तो उस समय नदी में बहुत पानी आया हुआ था, वहां सामान के सहित रुकना पड़ा इतने में शाही सेना आ गई।

गुरु जी ने साहिबजादे के नेतृत्व में बहुत से शूरवीर सिख युद्ध के लिये आगे किये और अनेक वैरी मार कर कुछ मार्ग बनाया। परंतु नदी के चढ़ाव ने किसी को पार नहीं जाने दिया। अनेकों सिख नदी की धार में वह गए, और कुछ तलवार की धार में वीर गति को प्राप्त कर गए। सामान लूटा गया। माता साहिबां जी के रथ और डोले उसी स्थान पर ही रह गए। माताओं और सिख वीरों ने अत्यंत कठिनाई से पार किया। किसी प्रकार का नियम न रहा। जिधर किसी को मार्ग मिला उधर को ही चला गया बड़ी माता जी तथा दो साहिबजादे एक खच्चर पर सवार करा कर उनके घर का सेवक जिस का नाम गंगू ब्राह्मण था, वह अपने गांव (खेड़ी मुरिणडा के निकट) में ले गया, उस पापी ने माता के पास जवाहरात देख कर तथा महान लालच वश होकर उन्हों पकड़वा दिया। गुरु जी की दोनों पत्नियों को पुरुष वेष करवा कर जुवाहर सिंघ आदिक ने दिल्ली में पहुंचा दिया वहां उन का अपना घर था, इन के साथ बीबी भागो दो गोलियां तथा भाई मनी सिंघ जी गये।

इधर दोनों बड़े साहिबजादे तथा दया सिंघ आदिक एक सौ सवार और गुरु जी नदी पार हो कर रोपड़ की ओर आए, रोपड़ के पठानों ने आप को घेरना चाहा परंतु गुरु जी उन का मूंह मोड़ कर आगे चले गए, फिर चमकौर में कच्ची गढ़ी में दाखल हो गए। यहां गुरु जी के

साथ केवल चालीस सिंघ थे, और दोनों सुपुत्र थे बाकी वीर एक पहाड़ी की दरार में उदे सिंघ के नेतृत्त में बहुत देर तक युद्ध करते वीर गति को प्राप्त कर गए, गुरु जी एक एक सिख को बाहर भेजते थे, वह एक वीर अनेकों को यमधाम पहुंचा कर वीर गति प्राप्त होता गया। अब सिंघ थोड़े से शेष रह गए। फिर गुरु जी के बड़े सुपुत्र ने आज्ञा मांगी, तब गुरु जी ने उसे क्षत्रित्व का उपदेश देकर विदा किया। साहिब सिंघ तथा मोहकम सिंघ भी साहिबजादे अजीत सिंघ के साथ रण भूमि में आए। यह युद्ध देखने वाला था साहिबजादा रण में इस प्रकार ललकार रहा था। जैसे हस्तियों के समूह में एक शेर दहाड़ रहा हो। जो सामने आया उस ने पानी नहीं मांगा। साहिबजादे की तेग उस यवन सेना में इस प्रकार चमक रही थी जैसे कृष्ण घटाओं के पूर्ण वेग से बिजली चमकती है इस प्रकार अनेकों पापियों को मार कर यह सभी वीर गति को प्राप्त कर गये।

जब बड़े भाई को इस प्रकार कार्य करते एवम दुष्ट संहार करके कीर्ति प्राप्त करते देखा, तब छोटा साहिबजादा जुझार सिंघ कब पीछे रहने वाला था उसने भी आज्ञा मांगी। गुरु जी ने उस का मुख धुला कर स्वयं दस्तार सजा कर उपदेश का अमृत पिलाया। छोटी सी तलवार देकर तथा पीठ पर थापी देकर कहा-बेटा! हमारा स्वस्व धर्म पर न्योछावर होने के लिए ही संसार में प्रकट हुआ है जाओ वैरी दल को दलन करके वीर गति प्राप्त करो। संसार में यश और परलोक में जुगति हासल करो। बालक अभी अल्पब्यस्क था जब शाही सेना विशाल देखी तो कुछ अधीर होकर युद्ध से लौट आया और आ कर गुरु जी से पानी पीने के लिए मांगा। गुरु जी ने कहा-हे पुत्र! तेरे लिए अब यहां पर पानी नहीं है। तेरे पीने योग्य पानी तो तेरे अगर्ज भ्राता के पास है। यह सुन कर सिंघ ललकार करके गुरु पुत्र दुशमनों पर टूट पड़ा। हिम्मत सिंघ नंद सिंघ,

आलम सिंघ इन वीरों ने गुरु पुत्र का साथ दिया। अस्मत खां, नाहर खां तथा और बहुत बहुत से ज़ालमों को पछाड़ कर पुत्र ने वीर गति प्राप्त की।

इतने में रात हो गई गुरु जी ने चार सिंघों को कहा कि तुम चारों ओर तीर चलाते रहो और स्वयं अपने सभी वस्त्र संत सिंघ को देकर उसी स्थान पर रहने की आज्ञा दी और स्वयं नंगे पैर भेष बदल कर गुरु जी रवाना हुए। रात्रि के समय अनेक दुर्गम स्थानों को पार करते हुए तथा अनेकों कष्ट झलते और उच्च के पीर बन कर बहुत दिनों के पश्चात् आलमगीर गांव में पहुंचे वहां मनी सिंघ के भाई निगाहिया सिंघ ने सेवा की और एक घोड़ा भेंट किया। उस पर गुरु जी सवार हो कर सीलो आणी गांव में आए और कुछ आदमी भेज कर छोटे साहिबजादों की खबर मंगवाने का प्रयत्न किया।

छोटे गुरु पुत्रों का बलिदान

जब गुरु गोबिंद सिंघ जी आनंदपुर से चले तो उस समय गुरु पुत्र जोरावर सिंघ की आयु आठ वर्ष और छोटे पुत्र फतह सिंघ की आयु छः वर्ष की थी आप दोनों बड़ी माता गुजरी जी के साथ अपार धन राशी लेकर अपने घर के रसोईए ब्राह्मण गंगू के साथ उस के नगर खेड़ी में आ गए। उस गंगू ने माता जी का धन तो स्वयं हजम कर लिया और नाजम सरहंद को खबर करके माता जी को और गुरु पुत्रों को पकड़वा दिया। सूबा सरहंद ने माता जी को ठंडे बुर्ज में बंदी कर लिया। फिर सूबे ने कहा कि यदि तुम मुसलमान हो जाओगे तो बचे रहोगे नहीं तो बहुत ही बुरी मौत मारे जाओगे। साहिबजादों ने गर्ज कर कहा-अरे नीच हम गुरु हरगोबिंद के प्रयोत्र तथा गुरु तेग बहादर के पोत्र और एवम गुरु कलगीधर गोबिंद सिंघ के पुत्र हैं। वह कौन सी

शक्ति है जो हम पर अपना प्रभाव डाल सके तथा हमारे पवित्र धर्म को हम से छीन सके। स्वल्य जीवन के लिए पतित होकर मरना कायरों का काम होता है।

यह मुंह तोड़ उत्तर सुन कर सूबा सरहंद ने हुकम दिया कि इन दोनों को दीवार में चिना कर मारा जाय। बस उसी समय दोनों गुरु पुत्रों को दीवार में चिनाना प्रारंभ हो गया। जब दीवार पेट तक आई तब फिर सूबे ने कहा यदि मुसलमान हो जाओ तो तुम स्वतंत्र जीवन जिन में पूर्ण भोग सामग्री होगी वह प्रदान की जायेगी। मगर वे पुत्र गुरु गोबिन्द सिंघ के थे। वही करारा उत्तर तथा पहिले से भी कुछ तेज उत्तर सूबे को मिला। फिर दीवार चिनी जाने लगी। जब दीवार कंधों तक आई तब फर सूबे ने कहा-हे बालको! अब भी समय है, बस मुसलमान बन कर अपने प्राण बचा लो, और शाही मान प्राप्त कर लो। उधर से फिर इन्कार हुआ तब गुरु पुत्रों ने कहा-अरे पापी यह वृथा की बकवास बंद कर तथा जो पाप तू ने करना है उसे शीघ्र पूरा कर। वह देख मेरे भाई जी मुझे अपने निकट बुला रहे हैं। तेरे पापी को देखने से महान पाप लग रहा है।

उधर माता ने सुना कि मेरे सुपुत्र के दुलारों को दीवार में चुनाया जा रहा है। तब माता गुजरी जी ठंडे बुरज से छलांग मार कर अपने प्राणों को पति चरणों में ले गई। उधर गुरु जी ने बच्चों को दीवार में चुने जाना तथा पूज्या माता का बलिदान सुना तो फुरमाने लगे, हे संगत! वे मरे नहीं। वे तो सदैव के लिये अमर हो गए हैं, जब तक संसार में चद्र सूर्य हैं, तब तक उन के पवित्र नाम पर पुष्प वर्षा होती रहेगी और पापी सूबे सरहंद अथवा गंगू जैसों के नाम पर संसार थूकेगा, जो धर्मात्मा धर्म के ऊपर न्योछावर होते हैं, उन के नाम की रक्षा धर्म करता है। शूरबीरों को शूरबीर मारते आए हैं परंतु इन पापियों ने निर्दोष

बच्चों का वध किया है। इन को एक दिन पश्चाताप अवश्य ही होगा। इस का फल यह होगा कि पापी जालम राज्य शीघ्र ही नाश हो जायेगा तथा इधर की ईंटें सतलुज से पार जा लगेगी। गुरु जी के शब्द पूर्ण हुए। सरहंद की ईंट से ईंट बज गई, तथा अंग्रेज़ ने सरहंद के महलों की ईंटें फरोख की जो ईधर आ लगीं। माझा प्रांत के सिखों ने गुरु जी को सन्देश भेजा कि आप ने हकूमत से टक्कर लेकर उचित नहीं किया। अब भी यदि आप चाहो तो हम बादशाह से आप की सुलह करवा देते हैं, गुरु जी ने उत्तर दिया-भाई! आप कुछ गल्ती पर हो मैं संसार में राज्य सुख के लिए नहीं आया। मैं तो पिता के पद चिन्हों पर चल कर धर्म मर्यादा पालन करूँगा तो उन मझैल सिखों के होश ठिकाने आ गये।

इधर सूबा सरहंद बहुत सी सेना लेकर गुरु जी से लड़ने को चला। तब यह मझैल सिंह क्रोध में आ गए उन्होंने प्रण किया और कहा-

सूरा सो पहिचानिये जो लरै दीन के हेत॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहु न छाडै खेत॥

अर्थात् जब एक दिन निश्चय मरना है तो क्यों न गुरु जी के लिए ही यह नश्वर शरीर त्याग कर दिया जाय इस विचार के केवल चालीस पुरुष और एक स्त्री जिस का नाम माई भागो था यही मैदान में गरजे। यहां की पवित्र भूमि जहां मुक्तसर बसा हुआ है। यह धरती निर्जन कटक पूर्ण बन था। यहां मोर्चा लगा कर चालीस वीर छुप कर बैठ गये।

इधर मुसलमान सेना जब निकट आई तो बहादुर सिंघों ने बंदूकें दाग दीं। मुगल फौज घबरा गई। अब महान संग्राम आंरभ हो गया। उधर हज़ारों और इधर गुरु के ४० सिंघ सिपाही थे। सिंघ वीर तलवारों लेकर वैरी सैना के टुकड़े टुकड़े करने लगे। उधर गुरु जी ऊचे स्थान पर बैठ कर यह दृश्य देख रहे थे तथा अपनी ओर से भी कुछ वीर भेजे

और स्वयं भी तीरों की बौछार करने लगे।

अंत में सूबा सरहंद अपने अनेकों साथी यम लोक भिजवा कर भाग गया क्योंकि उस स्थान से ३० कोस की दूरी पर ही जल मिल सकता था एक छव (पानी का जोहड़) निकट था जो गुरु जी के अधिकार में था, इस के अतिरिक्त गुरु जी की शेर वृष्टी ने मुसलों के पांव उखेड़ दीए और भाग निकले।

इस संग्राम में ४० सिंघ बलिदान हुए। गुरु जी अब उन वीरों के निकट आकर अपने दोपटे से उन वीर गति प्राप्त योद्धाओं के मुख पोछने लगे तथा धन्य धन्य शब्द उच्चारण करने लगे तथा पांच हज़ारी दश हज़ारी यह पदवियें श्री मुख से प्रदान की। इन में महां सिंघ नाम का, एक योद्धा अभी सिस्क रहा था, गुरु जी ने उस के मुख में जल डाला। जब उसे कुछ होश हुई, तब गुरु जी ने कहा हे बीर वर! कुछ वर मांगो। उस ने कहा-हे महाराज! आनंदपुर में जो भुल से सिखों ने बेदावा लिखा था, वह क्षमा करके फाड़ दो, और टूटी हुई फिर जोड़ लो, बस मैं यही चाहता हूं। तब गुरु जी ने प्रसन्न होकर कहा-

धन्य है सिक्खी

यह कह कर वह बेदावे का कागज फाड़ दिया, फिर युद्ध में लड़ कर घायल हुई एक स्त्री का आप ने उपकार किया। वह ठीक हो गई तब गुरु जी इस देवी को अपने साथ ले गये, दूसरे दिन उन वीरों का अंतिम संस्कार किया तथा उनको मुक्ते शब्द से सुशोभित किया, मुक्ते का अर्थ है, जिन को मोक्ष धाम प्राप्त हुआ हो तथा उस स्थान का नाम मुक्तसर रखा, यहां आज तक माघ की संक्रांति को मेला लगता है।

फिर गुरु जी वहां से अनेक स्थानों पर सद् उपदेश देते हुए दक्षिण में अबचल नगर में जा पहुंचे।

एक दिन गोदावरी नदी के पार माधो दास नामी बैरागी साधु के स्थान पर गुरु जी गए उस के जादू वाले पलंग पर बैठ गए। उस समय बैरागी कहीं बाहर गया हुआ था, उस ने आकर पलंग उलटाने का प्रयत्न किया, तथा सफल न हुआ। अंत में गुरु जी के चरणों पर आकर गिर गया। गुरु जी ने पूछा तुम कौन हो? उस ने उत्तर दिया मैं तो (बंदा) हूं। यदि तूं बंदा है तो सेवा कर। उस ने कहा मेरा सिर भी तुम्हारे आगे हाजर है। कुछ दिन के पश्चात् गुरु जी ने खालसा सेना का सेनापति बना कर बंदे को पांच तीर देकर उपदेश दिया कि यती रहना गुरु नहीं बनना खालसा की सम्मती से चलना और सत्य बोलना यह बातें कभी नहीं भूलना। यदि इन के उल्ट आचरण करेगा तो तुम्हारा नाश हो जाएगा। जाओ पापीओं का संहार करो, यह आज्ञा पा कर बंदा पंजाब की ओर आया तथा गुरु जी सत्य नाम का उपदेश करने लगे।

कहते हैं कि एक बार बहादुर शाह गुरु जी के दरबार में आया और एक बहुमूल्य हीरा भेट करके गोल कंडा की ओर चला गया था, गुरु जी ने वह हीरा नदी में फैंक दिया, जब बादशाह कुछ निराश हुआ तो गुरु जी ने बादशाह को वह नदी का घाट ही हीरों से भरा दिखाया। उस घाट का नाम आज तक हीरा घाट ही प्रख्यात है।

गुरु जी को बंदे की सफलता तथा दुष्टों के नाश की सूचना मिलती रही और दो मुसलमान सेवक गुल खां तथा अताउल खां गुरु जी के निकट रहा करते थे, इन के पिता को गुरु हरिगोबिन्द जी ने युद्ध में मारा था, यह दोनों ही ताक में रहते थे।

एक दिन गुरु जी अपने शामयाने में सो रहे थे, तब नमक हराम गुल खां को समय मिल गया, उसने गुरु जी के पेट में कटार घोंप दी। जखम उसी वक्त सिलाया गया, एक दिन जब जख्म अभी कच्चा ही था, तब गुरु जी ने एक कठोर धनुष का चिला चढ़ाया, ज़ोर लाने से

टांके टूट गए। संवत् १७६५ विक्रम कार्तिक शुक्ला ५ पंचमी को गुरु जी ने स्नान किया। नवीन वस्त्र धारण किये, घोड़े को सजाया गया। स्वयं शस्त्र पहिन कर दीवान लगाया और गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश करके विधि पूर्वक पांच पैसे नारयल भेंट करके नमस्कार किया और श्री मुख से प्रसन्न होकर उच्चारण किया।

दोहरा॥ आज्ञा भई अकाल की तबी चलायो पंथ॥
सभ सिखन को हुकम है गुरु मानीयो ग्रंथ॥

फिर अपार कढ़ाह प्रसाद बांटा गया। चंदन की एक विशाल चिता बनाई गई। उस के ईर्द गिर्द कनात लगा दी गई, फिर आप घोड़े पर चढ़ कर चिता की ओर आये। फिर तमाम सिखों को आज्ञा दी कि कनात के भीतर कोई न आए और हमारी चिता कोई भी नहीं फोले, और हमारी समाधी न बनाई जाये। यह हुकम करके स्वयं कनात के भीतर चले गए फिर भीतर से आवाज़ आई-

श्री वाहिगुरु जी का खालसा॥
वाहिगुरु जी की फतह॥

अंत में गुरु जी महाराज के चरणों में प्रार्थना की जाती है कि हे कलगीधर महाराज! जिस प्रकार आप ने कष्ट सहन करके पंथ का सृजन किया है उसी प्रकार आप इस की रक्षा करो तथा आप सिक्खों के भीतर अपने दिव्य गुणों का संचार कर दो। हे पिता! हम आप को कभी न भूलें।

जो बोले सो निहाल॥ सत्य श्री अकाल॥

॥ संपूर्ण ॥